Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

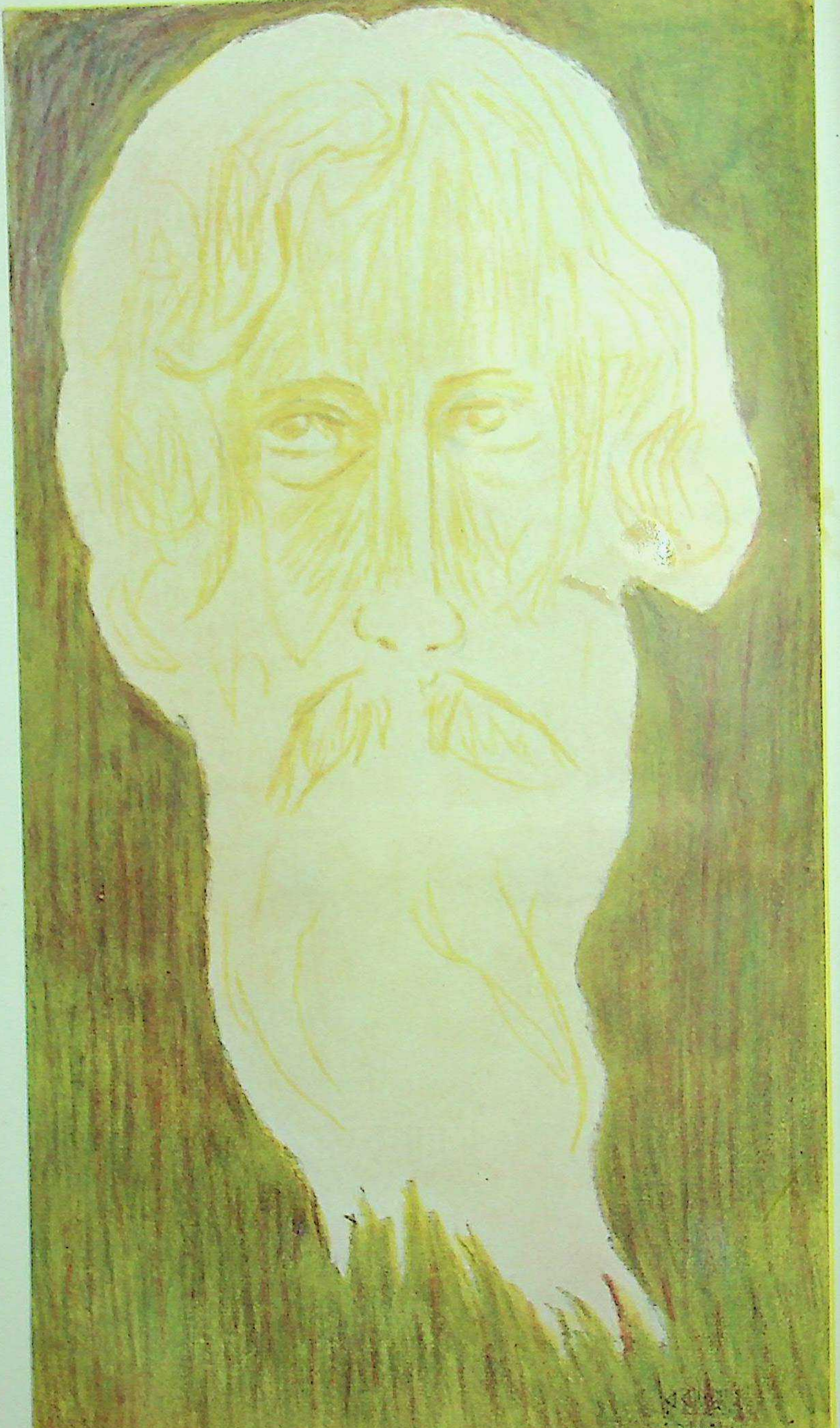

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

लिप्यन्तर

श्रीमती कणिका विश्वास

साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gora (novel) by Rabindranath Tagore. Devanagari transliteration by Dr. Kanika Biswas. Frontispiece: Self-portrait in colour by Rabindranath. Sahitya Akademi, New Delhi (1962). Price: *de luxe* edition, Rs. 12·50; ordinary, Rs. 10·00.

आमुख : रवीन्द्रनाथ ठाकुर—स्व-रचित चित्र
(श्रीमती नन्दिता कृपालानी के सौजन्य से)

© साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन

मुद्रक : ज्ञानेन्द्र शर्मा
जनवाणी प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्राइवेट लि०
३६, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता - ७

मूल्य
विशेष संस्करण १२.५० रुपये
सामान्य संस्करण १० रुपये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रावण मासेर सकालवेलाय मेघ काटिया गिया निर्मल रौद्रे कलिकातार आकाश भरिया गियाछे। रास्ताय गाड़िघोड़ार विराम नाइ, फेरिओयाला अविश्राम हाँकिया चलियाछे, याहारा आपिसे कालेजे आदालते याइबे ताहादेर जन्य बासाय बासाय माछ-तरकारिर चुपड़ि आसियाछे ओ रान्नाघरे उनान ज्वालाइबार धोंया उठियाछे—किन्तु तबु एत बड़ो एइ ये काजेर शहर कठिन-हृदय कलिकाता, इहार शत शत रास्ता एवं गलिर भितरे सोनार आलोकेर धारा आज येन एकटा अपूर्व यौवनेर प्रवाह बहिया लइया चलियाछे।

एमन दिने बिना-काजेर अवकाशे विनयभूषण ताहार बासार दोतलार बारान्दाय एकला दाँड़ाइया रास्ताय जनतार चलाचल देखितेछिल। कालेजेर पड़ाओ अनेकदिन चुकिया गेछे, अथच संसारेर मध्येओ प्रवेश करे नाइ, विनयेर अवस्थाटा एइरूप ; सभासमिति चालानो एवं खबरेर कागज लेखाय मन दियाछे—किन्तु ताहाते सब मनटा भरिया उठे नाइ। अन्तत आज सकालवेलाय की करिबे ताहा भाबिया ना पाइया ताहार मनटा चंचल हइया उठितेछिल। पाशेर बाड़िर छातेर उपरे गोटा-तिनेक काक की लइया डाकाडाकि करितेछिल एवं चड़ुइ-दम्पति ताहार बारान्दार एक कोणे बासा-निर्माण-व्यापारे परस्परके किचिमिचि शब्दे उत्साह दितेछिल—सेइ समस्त अव्यक्त काकलि विनयेर मनेर मध्ये एकटा कोन् अस्पष्ट भावावेगके जागाइया तुलितेछिल।

आलखाल्ला-परा एकटा बाउल निकटे दोकानेर सामने दाँड़ाइया गान गाहिते लागिल—

खाँचार भितर अचिन् पाखि कम्ने आसे याय,
धरते पारले मनोबेड़ि दितेम पाखिर पाय।

विनयेर इच्छा करिते लागिल, बाउलके डाकिया एइ अचिन पाखिर गानटा लिखिया लय। किन्तु भोर-रात्रे येमन शीत शीत करे अथच गायेर कापड़टा टानिया लइते उद्यम थाके ना, तेमनि एकटा आलस्येर भावे बाउलके डाका हइल ना, गान लेखाओ हइल ना, केवल ओइ अचेना पाखिर सुरटा मनेर मध्ये गुन् गुन् करिते लागिल।

एमन समय ठिक ताहार बासार सामनेइ एकटा ठिकागाड़िर उपरे एकटा मस्त जुड़िगाड़ि आसिया पड़िल एवं ठिकागाड़िर एकटा चाका भाङिया दिया दृक्पात ना करिया वेगे चलिया गेल। ठिकागाड़िटा सम्पूर्ण उल्टाइया ना पड़िया एक पाशे कात हइया पड़िल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय ताड़ाताड़ि रास्ताय बाहिर हइया देखिल, गाड़ि हइते एकटि सतेरो-आठारो वत्सरेर मेये नामिया पड़ियाछे, एवं भितर हइते एकजन वृद्धगोछेर भद्रलोक नामिबार उपक्रम करितेछेन।

विनय ताँहाके धराधरि करिया नामाइया दिल, एवं ताँहार मुख विवर्ण हइया गेछे देखिया जिज्ञासा करिल, "आपनार लागे नि तो ?"

तिनि "ना, किछु हयनि" बलिया हासिबार चेष्टा करिलेन ; से हासि तखनइ मिलाइया गेल एवं तिनि मूर्छित हइया पड़िबार उपक्रम करिलेन। विनय ताँहाके धरिया फेलिल ओ उत्कण्ठित मेयेटिके कहिल, "एइ सामनेइ आमार बाड़ि ; भितरे चलुन।"

वृद्धके बिछानाय शोयानो हइले मेयेटि चारि दिके ताकाइया देखिल, घरेर कोणे एकटि जलेर कुँजा आछे। तखनि सेइ कुँजार जल गेलासे करिया लइया वृद्धेर मुखे छिटा दिया वातास करिते लागिल एवं विनयके कहिल, "एकजन डाक्तार डाकले हय ना ?"

बाड़िर काछेइ डाक्तार छिल। विनय ताहाके डाकिया आनिते बेहारा पाठाइया दिल।

घरेर एक पाशे टेबिलेर उपरे एकटा आयना, तेलेर शिशि ओ चुल आँचड़ाइबार सरञ्जाम छिल। विनय सेइ मेयेटिर पिछने दाँड़ाइया सेइ आयनार दिके एकदृष्टे चाहिया स्तब्ध हइया रहिल।

विनय छेलेवेला हइतेइ कलिकातार बासाय थाकिया पड़ाशुना करियाछे। संसारेर सङ्गे ताहार याहा-किछु परिचय से-समस्तइ बइयेर भितर दिया। निःसम्पर्कीया भद्र स्त्रीलोकेर सङ्गे ताहार कोनो दिन कोनो परिचय हय नाइ।

आयनार दिके चाहिया देखिल, ये मुखेर छाया पड़ियाछे से की सुन्दर मुख। मुखेर प्रत्येक रेखा आलादा करिया देखिबार मतो ताहार चोखेर अभिज्ञता छिल ना। केवल सेइ उद्‌विग्न स्नेहे आनत तरुण मुखेर कोमलतामण्डित उज्ज्वलता विनयेर चोखे सृष्टिर सद्यःप्रकाशित एकटि नूतन विस्मयेर मतो ठेकिल।

एकटु परेइ वृद्ध अल्पे अल्पे चक्षु मेलिया "मा" बलिया दीर्घनिश्वास फेलिलेन। मेयेटि तखन दुइ चक्षु छल्‌छल् करिया वृद्धेर मुखेर काछे मुख निचु करिया आर्द्रस्वरे जिज्ञासा करिल, "बाबा, तोमार कोथाय लेगेछे।"

"ए आमि कोथाय एसेछि" बलिया वृद्ध उठिया बसिबार उपक्रम करितेइ विनय सम्मुखे आसिया कहिल, "उठबेन ना—एकटु विश्राम करुन, डाक्तार आसछे।"

तखन ताँहार सब कथा मने पड़िल ओ तिनि कहिलेन, "माथार एइखानटाय एकटु वेदना बोध हच्छे, किन्तु गुरुतर किछुइ नय।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेइ मुहूर्तेइ डाक्तार जुता मच्‌मच् करिते करिते आसिया उपस्थित हइलेन; तिनिओ बलिलेन, "विशेष किछुइ नय।" एकटु गरम दुध दिया अल्प ब्राण्डि खाइबार व्यवस्था करिया डाक्तार चलिया याइतेइ वृद्ध अत्यन्त संकुचित ओ व्यस्त हइया उठिलेन। ताँहार मेये ताँहार मनेर भाव बुझिया कहिल, "बाबा व्यस्त हच्छ केन। डाक्तारेर भिजिट ओ ओषुधेर दाम बाड़ि थेके पाठिये देब।" बलिया से विनयेर मुखेर दिके चाहिल।

से की आश्चर्य चक्षु। से चक्षु बड़ो कि छोटो, कालो कि कटा, से तर्क मनेइ आसे ना—प्रथम नजरेइ मने हय, एइ दृष्टिर एकटा असन्दिग्ध प्रभाव आछे। ताहाते संकोच नाइ, द्विधा नाइ, ता एकटा स्थिर शक्तिते पूर्ण।

विनय बलिते चेष्टा करिल, "भिजिट अति सामान्य, सेजन्ये—से आपनारा—से आमि—"

मेयेटि ताहार मुखेर दिके चाहिया थाकाते कथाटा ठिकमतो शेष करितेइ पारिल ना। किन्तु भिजिटेर टाकाटा ये ताहाके लइतेइ हइबे, से-सम्बन्धे कोनो संशय रहिल ना।

वृद्ध कहिलेन, "देखुन, आमार जन्ये ब्राण्डिर दरकार नेइ—"

कन्या ताँहाके बाधा दिया कहिल, "केन, बाबा, डाक्तारबाबु ये ब'ले गेलेन।"

वृद्ध कहिलेन, "डाक्तारेरा अमन बले थाके, ओटा ओदेर एकटा कुसंस्कार। आमार येटुकु दुर्बलता आछे एकटु गरम दुध खेलेइ याबे।"

दुध खाइया बल पाइले वृद्ध विनयके कहिलेन, "एबारे आमरा याइ। आपनाके बड़ो कष्ट दिलुम।"

मेयेटि विनयेर मुखेर दिके चाहिया कहिल, "एकटा गाड़ि।"

वृद्ध संकुचित हइया कहिलेन, "आबार केन ओँके व्यस्त करा। आमादेर बासा तो काछेइ, एटुकु हेँटेइ याब।"

मेयेटि बलिल, "ना, बाबा, से हते पारे ना।"

वृद्ध इहार उपर कोनो कथा कहिलेन ना एवं विनय निजे गिया गाड़ि डाकिया आनिल। गाड़िते उठिबार पूर्वे वृद्ध ताहाके जिज्ञासा करिलेन, "आपनार नामटि की।"

विनय। आमार नाम विनयभूषण चट्टोपाध्याय।

वृद्ध कहिलेन, "आमार नाम परेशचन्द्र भट्टाचार्य। निकटेइ ७८ नम्बर बाड़िते थाकि। कखनो अवकाशमतो यदि आमादेर ओखाने यान तो बड़ो खुशि हब।"

मेयेटि विनयेर मुखेर दिके दुइ चोख तुलिया नीरवे एइ अनुरोधेर समर्थन करिल। विनय तखनइ सेइ गाड़िते उठिया ताँहादेर बाड़िते याइते प्रस्तुत छिल,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु सेटा ठिक शिष्टाचार हइबे कि ना भाबिया ना पाइया दाँड़ाइया रहिल। गाड़ि छाड़िबार समय मेयेटि विनयके छोटो एकटि नमस्कार करिल। एइ नमस्कारेर जन्य विनय एकेबारेइ प्रस्तुत छिल ना, एइजन्य हतबुद्धि हइया से प्रतिनमस्कार करिते पारिल ना। एइटुकु त्रुटि लइया बाड़िते फिरिया से निजेके बार बार धिक्कार दिते लागिल। इँहादेर सङ्गे साक्षात् हइते विदाय हओया पर्यन्त विनय निजेर आचरण समस्तटा आलोचना करिया देखिल—मने हइल, आगागोड़ा ताहार समस्त व्यवहारेइ असभ्यता प्रकाश पाइयाछे। कोन् कोन् समये की करा उचित छिल, की बला उचित छिल, ताहा लइया मने मने केवलइ वृथा आन्दोलन करिते लागिल। घरे फिरिया आसिया देखिल, ये रुमाल दिया मेयेटि ताहार बापेर मुख मुछाइया दियाछिल सेइ रुमालटि बिछानार उपर पड़िया आछे। सेटा ताड़ाताड़ि तुलिया लइल। ताहार मनेर मध्ये बाउलेर सुरे ओइ गानटा बाजिते लागिल—

खाँचार भितर अचिन् पाखि कम्ने आसे याय।

वेला बाड़िया चलिल, वर्षार रौद्र प्रखर हइया उठिल, गाड़िर स्रोत आपिसेर दिके वेगे छुटिते लागिल, विनय ताहार दिनेर कोनो काजेइ मन दिते पारिल ना। एमन अपूर्व आनन्देर सङ्गे एमन निविड़ वेदना ताहार वयसे कखनो से भोग करे नाइ। ताहार एइ क्षुद्र बासा एवं चारि दिकेर कुत्सित कलिकाता मायापुरीर मतो हइया उठिल; ये-राज्ये असम्भव सम्भव हय, असाध्य सिद्ध हय, एवं अपरूप रूप लइया देखा देय, विनय येन सेइ नियम-छाड़ा राज्ये फिरितेछे। एइ वर्षाप्रभातेर रौद्रेर दीप्त आभा ताहार मस्तिष्केर मध्ये प्रवेश करिल, ताहार रक्तेर मध्ये प्रवाहित हइल, ताहार अन्तःकरणेर सम्मुखे एकटा ज्योतिर्मय यवनिकार मतो पड़िया प्रतिदिनेर जीवनेर समस्त तुच्छताके एकेबारे आड़ाल करिया दिल। विनयेर इच्छा करिते लागिल, निजेर परिपूर्णताके आश्चर्यरूपे प्रकाश करिया देय, किन्तु ताहार कोनो उपाय ना पाइया ताहार चित्त पीड़ित हइते लागिल। अत्यन्त सामान्य लोकेर मतोइ से आपनार परिचय दियाछे—ताहार बासाटा अत्यन्त तुच्छ, जिनिसपत्र नितान्त एलोमेलो, बिछानाटा परिष्कार नय, कोनो-कोनो दिन ताहार घरे से फुलेर तोड़ा साजाइया राखे किन्तु एमनि दुर्भाग्य, सेदिन ताहार घरे एकटा फुलेर पापड़िओ छिल ना; सकलेइ बले, विनय सभास्थले मुखे मुखे येरूप सुन्दर वक्तृता करिते पारे काले से एकजन मस्त वक्ता हइया उठिबे, किन्तु सेदिन से एमन एकटा कथाओ बले नाइ याहाते ताहार बुद्धिर किछुमात्र प्रमाण हय। ताहार केवलइ मने हइते लागिल, 'यदि एमन हइते पारित ये सेइ बड़ो गाड़िटा यखन ताँहादेर गाड़िर उपर आसिया पड़िबार उपक्रम करितेछे आमि विद्युद्वेगे रास्तार माझखाने आसिया अति अनायासे सेइ उद्दाम जुड़ि घोड़ार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लागाम धरिया थामाइया दिताम।' निजेर सेइ काल्पनिक विक्रमेर छबि यखन ताहार मनेर मध्ये जाग्रत हइया उठिल तखन एकबार आयनाय निजेर चेहारा ना देखिया थाकिते पारिल ना।

एमन समय देखिल एकटि सात-आट बछरेर छेले रास्ताय दाँड़ाइया ताहार बाड़िर नम्बर देखितेछे। विनय उपर हइते बलिल, "एइ ये, एइ बाड़िइ बटे।" छेलेटि ये ताहारइ बाड़िर नम्बर खुँजितेछिल से-सम्बन्धे ताहार मने सन्देहमात्र हय नाइ। ताड़ाताड़ि विनय सिँड़िर उपर चटिजुता चट् चट् करिते करिते निचे नामिया गेल; अत्यन्त आग्रहेर सङ्गे छेलेटिके घरेर मध्ये लइया ताहार मुखेर दिके चाहिल। से कहिल, "दिदि आमाके पाठिये दियेछे।" एइ बलिया विनयभूषणेर हाते एक पत्र दिल।

विनय चिठिखानि लइया प्रथमे लेफाफार उपरटाते देखिल, परिष्कार मेयेलि छाँदेर इंरेजि अक्षरे ताहार नाम लेखा। भितरे चिठिपत्र किछुइ नाइ, केवल कयेकटि टाका आछे।

छेलेटि चलिया याइबार उपक्रम करितेइ विनय ताहाके कोनोमतेइ छाड़िया दिल ना। ताहार गला धरिया ताहाके दोतलार घरे लइया गेल।

छेलेटिर रङ ताहार दिदिर चेये कालो, किन्तु मुखेर छाँदे कतकटा सादृश्य आछे। ताहाके देखिया विनयेर मने भारि एकटा स्नेह एवं आनन्द जन्मिल।

छेलेटि बेश सप्रतिभ। से घरे ढुकिया देयाले एकटा छबि देखियाइ जिज्ञासा करिल, "ए कार छबि।"

विनय कहिल, "ए आमार एकजन बन्धुर छबि।"

छेलेटि जिज्ञासा करिल, "बन्धुर छबि? आपनार बन्धु के।"

विनय हासिया कहिल, "तुमि ताके चिनबे ना। आमार बन्धु गौरमोहन, ताँके गोरा बलि। आमरा छेलेवेला थेके एकसङ्गे पड़ेछि।"

"एखनो पड़ेन?"

"ना, एखन आर पड़ि ने।"

"आपनार स-ब पड़ा हये गेछे?"

विनय एइ छोटो छेलेटिर काछेओ गर्व करिबार प्रलोभन संवरण करिते ना पारिया कहिल, "हाँ, सब पड़ा हये गेछे।"

छेलेटि विस्मित हइया एकटु निश्वास फेलिल। से बोध हय भाबिल, एत विद्या सेओ कत दिने शेष करिते पारिबे।

विनय। तोमार नाम की।

"आमार नाम श्रीसतीशचन्द्र मुखोपाध्याय।"

विनय विस्मित हइया कहिल, "मुखोपाध्याय?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताहार परे एकटु एकटु करिया परिचय पाओया गेल। परेश बाबु इहादेर पिता नहेन—तिनि इहादेर दुइ भाइबोनके छेलेवेला हइते पालन करियाछेन। इहार दिदिर नाम आगे छिल 'राधारानी'—परेश बाबुर स्त्री ताहा परिवर्तन करिया 'सुचरिता' नाम राखियाछेन।

देखिते देखिते विनयेर सङ्गे सतीशेर खुब भाव हइया गेल। सतीश यखन बाड़ि याइते उद्यत हइल विनय कहिल, "तुमि एकला येते पारबे ?"

से गर्व करिया कहिल, "आमि तो एकला याइ।"

विनय कहिल, "आमि तोमाके पौंछे दिइ गे।"

ताहार शक्तिर प्रति विनयेर एइ सन्देह देखिया सतीश क्षुब्ध हइया कहिल, "केन, आमि तो एकला येते पारि।" एइ बलिया ताहार एकला यातायातेर अनेकगुलि विस्मयकर दृष्टान्तेर से उल्लेख करिते लागिल। किन्तु तबु ये विनय केन ताहार बाड़िर द्वार पर्यन्त ताहार सङ्गे गेल ताहार ठिक कारणटि बालक बुझिते पारिल ना।

सतीश जिज्ञासा करिल, "आपनि भितरे आसबेन ना ?"

विनय समस्त मनके दमन करिया कहिल, "आर-एकदिन आसब।"

बाड़ि फिरिया आसिया विनय सेइ शिरोनामा-लेखा लेफाफा पकेट हइते बाहिर करिया अनेकक्षण देखिल—प्रत्येक अक्षरेर टान ओ छाँद एकरकम मुखस्थ हइया गेल; तार परे टाका-समेत सेइ लेफाफा बाक्सेर मध्ये यत्न करिया राखिया दिल। ए कयटा टाका ये कोनो दुःसमये खरच करिबे एमन सम्भावना रहिल ना।

२

वर्षार सन्ध्याय आकाशेर अन्धकार येन भिजिया भारि हइया पड़ियाछे। वर्णहीन वैचित्र्यहीन मेघेर निःशब्द शासनेर निचे कलिकाता शहर एकटा प्रकाण्ड निरानन्द कुकुरेर मतो लेजेर मध्ये मुख गुँजिया कुण्डली पाकाइया चुप करिया पड़िया आछे। काल सन्ध्या हइते टिप् टिप् करिया केवलइ वर्षण हइयाछे; से-वृष्टिते रास्तार माटिते कादा करिया तुलियाछे किन्तु कादाके धुइया भासाइया लइया याइबार मतो बल प्रकाश करे नाइ। आज वेला चारटे हइते वृष्टि बन्ध आछे, किन्तु मेघेर गतिक भाल नय। एइरूप आसन्न वृष्टिर आशंकाय सन्ध्यावेलाय निर्जन घरेर मध्ये यखन मन टेके ना एवं बाहिरेओ यखन आराम पाओया याय ना सेइ समयटाते दुटि लोक एकटि तेतला बाड़िर स्याँत्सेंते छाते दुटि बेतेर मोड़ार उपर बसिया आछे।

एइ दुइ बन्धु यखन छोटो छिल तखन इस्कुल हइते फिरिया आसिया एइ छाते छुटाछुटि खेला करियाछे; परीक्षार पूर्वे उभये चित्कार करिया पड़ा आवृत्ति करिते-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करिते एइ छाते द्रुतपदे पागलेर मतो पायचारि करिया बेड़ाइयाछे; ग्रीष्मकाले कालेज हइते फिरिया रात्रे एइ छातेर उपरेइ आहार करियाछे, तार परे तर्क करिते करिते कतदिन रात्रि दुइटा हइया गेछे एवं सकाले रौद्र आसिया यखन ताहादेर मुखेर उपर पड़ियाछे तखन चमकिया जागिया उठिया देखियाछे, सेइखानेइ मादुरेर उपरे दुइजने घुमाइया पड़ियाछिल। कालेजे पास करा यखन एकटाओ आर बाकि रहिल ना, तखन एइ छातेर उपरे मासे एकबार करिया ये हिन्दुहितैषी सभार अधिवेशन हइया आसियाछे एइ दुइ बन्धुर मध्ये एकजन ताहार सभापति एवं आर-एकजन ताहार सेक्रेटरि।

ये छिल सभापति ताहार नाम गौरमोहन; ताहाके आत्मीयबन्धुरा गोरा बलिया डाके। से चारि दिकेर सकलके येन खापछाड़ा रकमे छाड़ाइया उठियाछे। ताहाके ताहार कालेजेर पण्डितमहाशय रजतगिरि बलिया डाकितेन। ताहार गायेर रङटा किछु उग्ररकमेर सादा, हलदेर आभा ताहाके एकटुओ स्निग्ध करिया आने नाइ। माथाय से प्राय छय फुट लम्बा, हाड़ चओड़ा, दुइ हातेर मुठा येन बाघेर थाबार मतो बड़ो; गलार आओयाज एमनि मोटा ओ गम्भीर ये हठात् शुनिले "के रे" बलिया चमकिया उठिते हय। ताहार मुखेर गड़नओ अनावश्यक रकमेर बड़ो एवं अतिरिक्त रकमेर मजबुत; चोयाल एवं चिबुकेर हाड़ येन दुर्गद्वारेर दृढ़ अर्गलेर मतो; चोखेर उपर भ्रूरेखा नाइ बलिलेइ हय एवं सेखानकार कपालटा कानेर दिके चओड़ा हइया गेछे। ओष्ठाधर पातला एवं चापा; ताहार उपरे नाकटा खाँड़ार मतो झुँकिया आछे। दुइ चोख छोटो किन्तु तीक्ष्ण; ताहार दृष्टि येन तीरेर फलाटार मतो अतिदूर अदृश्येर दिके लक्ष्य ठिक करिया आछे अथच एक मुहूर्तेर मध्येइ फिरिया आसिया काछेर जिनिसकेओ विद्युतेर मतो आघात करिते पारे। गौरके देखिते ठिक सुश्री बला याय ना, किन्तु ताहाके ना देखिया थाकिबार जो नाइ, से सकलेर मध्ये चोखे पड़िबेइ।

आर ताहार बन्धु विनय साधारण बाङालि शिक्षित भद्रलोकेर मतो नम्र, अथच उज्ज्वल; स्वभावेर सौकुमार्य ओ बुद्धिर प्रखरता मिलिया ताहार मुखश्रीते एकटि विशिष्टता दियाछे। कालेजे से बराबरइ उच्च नम्बर ओ वृत्ति पाइया आसियाछे; गोरा कोनोमतेइ ताहार सङ्गे समान चलिते पारित ना। पाठ्य-विषये गोरार तेमन आसक्तिइ छिल ना; विनयेर मतो से द्रुत बुझिते एवं मने राखिते पारित ना। विनयइ ताहार वाहन हइया कालेजेर परीक्षा कयटार भितर दिया निजेर पश्चाते ताहाके टानिया पार करिया आनियाछे।

गोरा बलितेछिल, "शोनो बलि। अविनाश ये ब्राह्मदेर निन्दे करछिल ताते एइ बोझा याय ये, लोकटा बेश सुस्थ स्वाभाविक अवस्थाय आछे। एते तुमि हठात् अमन क्षापा हये उठले केन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय। की आश्चर्य। ए सम्बन्धे ये कोनो प्रश्न चलते पारे ताओ आमि मने करते पारतुम ना।

गोरा। ता यदि हय तबे तोमार मने दोष घटेछे। एक दल लोक समाजेर बाँधन छिँड़े सब विषये उल्टोरकम करे चलबे आर समाजेर लोक अविचलितभावे तादेर सुविचार करबे, ए स्वभावेर नियम नय। समाजेर लोक तादेर भुल बुझबेइ, तारा सोजा भावे येटा करबे एदेर चोखे सेटा बाँका भावे पड़बेइ, तादेर भालो एदेर काछे मन्द हये दाँड़ाबेइ, एइटेइ हओया उचित। इच्छामतो समाज भेङे बेरिये याओयार यतगुलो शास्ति आछे एओ तार मध्ये एकटा।

विनय। येटा स्वाभाविक सेइटेइ ये भालो, ता आमि बलते पारि ने।

गोरा एकटु उष्ण हइया उठिया कहिल, "आमार भालोय काज नेइ। पृथिवीते भालो दु-चारजन यदि थाके तो थाक् किन्तु बाकि सबाइ येन स्वाभाविक हय। नइले काजओ चले ना, प्राणओ बाँचे ना। ब्राह्म हये बाहादुरि करबार शख यादेर आछे अब्राह्मरा तादेर सब काजेइ भूल बुझे निन्दे करबे, एटुकु दुःख तादेर सह्य करतेइ हबे। ताराओ बुक फुलिये बेड़ाबे आर तादेर विरुद्ध पक्षओ तादेर पिछन पिछन बाहवा दिये चलबे, जगते एटा घटे ना, घटलेओ जगतेर सुविधे हत ना।"

विनय। आमि दलेर निन्देर कथा बलछि ने—व्यक्तिगत—

गोरा। दलेर निन्दे आबार निन्दे किसेर! से तो मतामत-विचार। व्यक्तिगत निन्देइ तो चाइ। आच्छा, साधु पुरुष, तुमि निन्दे करते ना?

विनय। करतुम। खुबइ करतुम, किन्तु सेजन्ये आमि लज्जित आछि।

गोरा ताहार डान हातेर मुठा शक्त करिया कहिल, "ना, विनय, ए चलबे ना, किछुतेइ ना।"

विनय किछुक्षण चुप करिया रहिल; तार परे कहिल, "केन, की हयेछे। तोमार भय किसेर।"

गोरा। आमि स्पष्टइ देखते पाच्छि, तुमि निजेके दुर्बल करे फेलछ।

विनय ईषत् एकटुखानि उत्तेजित हइया कहिल, "दुर्बल! तुमि जान, आमि इच्छे करले एखनइ ताँदेर बाड़ि येते पारि—ताँरा आमाके निमंत्रणओ करेछिलेन—किन्तु आमि याइ नि।"

गोरा। किन्तु एइ ये याओ नि, सेइ कथाटा किछुतेइ भुलते पारछ ना। दिनरात्रि केवल भाबछ, 'याइ नि, याइ नि, आमि ताँदेर बाड़ि याइ नि'—एर चेये ये याओयाइ भालो।

विनय। तबे कि येतेइ बल।

गोरा निजेर जानु चापड़ाइया कहिल, "ना, आमि येते बलि ने। आमि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोमाके लिखे पड़े दिच्छि, येदिन तुमि याबे सेदिन एकेबारे पुरोपुरिइ याबे। तार परदिन थेकेइ तादेर बाड़ि खाना खेते शुरू करबे एवं ब्राह्मसमाजेर खाताय नाम लिखिये एकेबारे दिग्विजयी प्रचारक हये उठबे।

विनय। बल की! तार परे?

गोरा। आर तार परे! मरार बाड़ा तो गाल नेइ। ब्राह्मणेर छेले हये तुमि गो-भागाड़े गिये मरबे, तोमार आचार विचार किछुइ थाकबे ना, कम्पास-भाङा काण्डारीर मतो तोमार पूर्व-पश्चिमेर ज्ञान लोप पेये याबे--तखन मने हबे, जाहाज बन्दरे उत्तीर्ण कराइ कुसंस्कार, संकीर्णता--केवल ना-हक भेसे चले याओयाइ यथार्थ जाहाज चालानो। किन्तु ए-सब कथा निये बकाबकि करते आमार धैर्य थाके ना--आमि बलि, तुमि याओ। अधःपातेर मुखेर सामने पा बाड़िये दाँड़िये थेके आमादेर सुद्ध केन भये भये रेखे दियेछ।

विनय हासिया उठिल ; कहिल, "डाक्तार आशा छेड़े दिलेइ ये रोगी सब समये मरे ता नय। आमि तो निदेन-कालेर कोनो लक्षण बुझते पारछि ने।"

गोरा। पारछ ना?

विनय। ना।

गोरा। नाड़ी छाड़े छाड़े करछे ना?

विनय। ना, दिब्यि जोर आछे।

गोरा। मने हच्छे ना ये, श्रीहस्ते यदि परिवेषण करे तबे म्लेच्छेर अन्नइ देवतार भोग?

विनय अत्यन्त संकुचित हइया उठिल ; कहिल, "गोरा, बस्, एइबार थामो।"

गोरा। केन, एर मध्ये तो आब्रुर कोनो कथा नेइ। श्रीहस्त तो असूर्यम्पश्य नय। पुरुषमानुषेर सङ्गे यार शेक्‌ह्याण्ड चले सेइ पवित्र करपल्लवेर उल्लेखटि पर्यन्त यखन तोमार सह्य हल ना, तदा नाशंसे मरणाय संजय!

विनय। देखो, गोरा, आमि स्त्रीजातिके भक्ति करे थाकि--आमादेर शास्त्रेओ--

गोरा। स्त्रीजातिके ये भावे भक्ति करछ तार जन्ये शास्त्रेर दोहाइ पेड़ो ना। ओके भक्ति बले ना, या बले ता यदि मुखे आनि तो मारते आसबे।

विनय। ए तुमि गायेर जोरे बलछ।

गोरा। शास्त्रे मेयेदेर बलेन, पूजार्हा गृहदीप्तयः। ताँरा पूजार्हा केनना गृहके दीप्ति देन, पुरुषमानुषेर हृदयके दीप्त करे तोलेन ब'ले विलिति विधाने ताँदेर ये मान देओया हय ताके पूजा ना बललेइ भालो हय।

विनय। कोनो कोनो स्थले विकृति देखा याय बले कि एकटा बड़ो भावेर उपर ओरकम कटाक्षपात करा उचित।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा अधीर हइया कहिल, "विनु, एखन यखन तोमार विचार करबार बुद्धि गेछे तखन आमार कथाटा मेनेइ नाओ—आमि बलछि, विलिति शास्त्रे स्त्रीजाति सम्बन्धे ये-समस्त अत्युक्ति आछे तार भितरकार कथाटा हच्छे वासना। स्त्रीजातिके पुजो करबार जायगा हल मार घर, सतीलक्ष्मी गृहिणीर आसन—सेखान थेके सरिये एने ताँदेर ये स्तव करा हय तार मध्ये अपमान लुकिये आछे। पतङ्गेर मतो तोमार मनटा ये-कारणे परेशबाबुर बाड़िर चारि दिके घुरछे, इंरिजिते ताके ब'ले थाके 'लाभ्'—किन्तु इंरेजेर नकल क'रे ओइ लाभ् व्यापारटाकेइ संसारेर मध्ये एकटा चरम पुरुषार्थ बले उपासना करते हबे, एमन बाँदरामि येन तोमाके ना पेये बसे!"

विनय कषाहत ताजा घोड़ार मतो लाफाइया उठिया कहिल, "आः, गोरा, थाक्, यथेष्ट हयेछे।"

गोरा। कोथाय यथेष्ट हयेछे! किछुइ हय नि। स्त्री आर पुरुषके तादेर स्वस्थाने बेश सहज करे देखते शिखि नि बलेइ आमरा कतकगुलो कवित्व जमा करे तुलेछि।

विनय कहिल, "आच्छा, मानछि, स्त्रीपुरुषेर सम्बन्ध ठिक ये जायगाटाते थाकले सहज हते पारत आमरा प्रवृत्तिर झोंके सेटा लङ्घन करि एवं सेटाके मिथ्ये करे तुलि, किन्तु एइ अपराधटा कि केवल विदेशेरइ। ए-सम्बन्धे इंरेजेर कवित्व यदि मिथ्ये हय तो आमरा ओइ ये कामिनीकांचनत्याग निये सर्वदा बाड़ाबाड़ि करे थाकि सेटाओ तो मिथ्ये। मानुषेर प्रकृति या निये सहजे आत्मविस्मृत हये पड़े तार हात थेके मानुषके बाँचाबार जन्ये केउ वा प्रेमेर सौन्दर्य-अंशकेइ कवित्वेर द्वारा उज्ज्वल करे तुले तार मन्दटाके लज्जा देय, आर केउ वा ओर मन्दटाकेइ बड़ो करे तुले कामिनीकांचनत्यागेर विधान दिये थाके; ओ दुटो केवल दुइ भिन्न प्रकृतिर लोकेर भिन्नरकम प्रणाली। एकटाकेइ यदि निन्दे कर तबे अन्यटाकेओ रेयात करले चलबे ना।"

गोरा। नाः, आमि तोमाके भुल बुझेछिलुम। तोमार अवस्था तेमन खाराप हय नि। एखनो यखन फिलजफि तोमार माथाय खेलछे तखन निर्भये तुमि लाभ् करते पार, किन्तु समय थाकते निजेके सामले नियो—हितैषी बन्धुदेर एइ अनुरोध।

विनय व्यस्त हइया कहिल, "आः, तुमि कि पागल हयेछ। आमार आवार 'लाभ्'। तबे ए कथा आमाके स्वीकार करतेइ हबे ये, परेश बाबुदेर आमि येटुकु देखेछि एवं ओंदेर सम्बन्धे या शुनेछि ताते ओंदेर प्रति आमार यथेष्ट श्रद्धा हयेछे। बोध करि ताइ ओंदेर घरेर भितरकार जीवनयात्राटा किरकम सेटा जानबार जन्ये आमार एकटा आकर्षण हयेछिल।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा। उत्तम कथा, सेइ आकर्षणटाइ सामले चलते हबे। ओंदेर सम्बन्धे प्राणीवृत्तान्तेर अध्यायटा नाहय अनाविष्कृतइ रइल। विशेषत, ओंरा हलेन शिकारि प्राणी, ओंदेर भितरकार व्यापार जानते गिये शेषकाले एतदूर पर्यन्त भितरे येते पार ये तोमार टिकिटि पर्यन्त देखबार जो थाकबे ना।

विनय। देखो, तोमार एकटा दोष आछे। तुमि मने कर, यत किछु शक्ति ईश्वर केवल एकला तोमाकेइ दियेछेन, आर आमरा सबाइ दुर्बल प्राणी।

कथाटा गोराके हठात् येन नूतन करिया ठेकिल; से उत्साहवेगे विनयेर पिठे एक चापड़ मारिया कहिल, "ठिक बलेछ—ओइटे आमार दोष—आमार मस्त दोष।"

विनय। उः, ओर चेयेओ तोमार आर-एकटा मस्त दोष आछे। अन्य लोकेर शिरदाँड़ार उपरे कतटा आघात सय तार ओजनबोध तोमार एकेबारेइ नेइ।

एमन समये गोरार बड़ो वैमात्र भाइ महिम ताहार परिपुष्ट शरीर लइया हाँपाइते हाँपाइते उपरे आसिया कहिलेन, "गोरा!"

गोरा ताड़ाताड़ि चौकि छाड़िया उठिया दाँड़ाइया कहिल, "आज्ञे।"

महिम। देखते एलेम, वर्षार जलधरपटल आमादेर छातेर उपरे गर्जन करते नेमेछे कि ना। आज व्यापारखाना की। इंरेजके बुझि एतक्षणे भारत-समुद्रेर अर्धेकटा पथ पार करे दियेछ? इंरेजेर विशेष कोनो लोकसान देखछि ने, किन्तु निचेर घरे माथा धरे बड़ोबउ पड़े आछे, सिंहनादे तारइ या असुविधे हच्छे।

एइ बलिया महिम निचे चलिया गेलेन।

गोरा लज्जा पाइया दाँड़ाइया रहिल—लज्जार सङ्गे भितरे एकटु रागओ ज्वलिते लागिल, ताहा निजेर वा अन्येर 'परे ठिक बला याय ना। एकटु परे से धीरे धीरे येन आपन-मने कहिल, "सब विषयेइ, यतटा दरकार आमि तार चेये अनेक बेशि जोर दिये फेलि, सेटा ये अन्येर पक्षे कतटा असह्य ता आमार ठिक मने थाके ना।"

विनय गोरेर काछे आसिया सस्नेहे तार हात धरिल।

२

गोरा ओ विनय छात हइते नामिया याइबार उपक्रम करितेछे, एमन समय गोरार मा उपरे आसिया उपस्थित हइलेन। विनय ताँहार पायेर धुला लइया प्रणाम करिल।

गोरार मा आनन्दमयीके देखिले गोरार मा बलिया मने हय ना। तिनि छिप्छिपे पातला, आँटसाँट; चुल यदि वा किछु किछु पाकिया थाके बाहिर हइते देखा याय ना; हठात् देखिले बोध हय, ताँहार वयस चल्लिशेरओ कम।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुखेर बेड़ अत्यन्त सुकुमार, नाकेर ठोंटेर चिबुकेर ललाटेर रेखा के येन यत्ने कुँदिया काटियाछे ; शरीरेर समस्तइ बाहुल्यवर्जित—मुखे एकटि परिष्कार ओ सतेज बुद्धिर भाव सर्वदाइ प्रकाश पाइतेछे। रङ श्यामवर्ण, गोरार रङेर सङ्गे ताहार कोनोइ तुलना हय ना। ताँहाके देखिबामात्रइ एकटा जिनिस सकलेर चोखे पड़े—तिनि शाड़िर सङ्गे शेमिज परिया थाकेन। आमरा ये-समयेर कथा बलितेछि तखनकार दिने मेयेदेर जामा वा शेमिज परा यदिओ नव्यदले प्रचलित हइते आरम्भ हइयाछे तबु प्रवीणा गृहिणीरा ताहाके नितान्तइ खृस्टानि बलिया अग्राह्य करितेन। आनन्दमयीर स्वामी कृष्णदयालबाबु कमिसेरियेटे काज करितेन, आनन्दमयी ताँहार सङ्गे छेलेवेला हइते पश्चिमे काटाइयाछेन, ताइ भालो करिया गा ढाकिया गाये कापड़ देओया ये लज्जा वा परिहासेर विषय, ए संस्कार ताँहार मने स्थान पाय नाइ। घरदुयार माजिया घषिया, धुइया मुछिया, राँधिया बाड़िया, सेलाइ करिया, गुनति करिया, हिसाब करिया, झाड़िया, रौद्रे दिया, आत्मीयस्वजन-प्रतिवेशीर खबर लइया तबु ताँहार समय येन फुराइते चाहे ना। शरीरे असुख करिले तिनि कोनोमतेइ ताहाके आमल दिते चान ना ; बलेन, "असुखे तो आमार किछु हबे ना, काज ना करते पेले बाँचब की करे।"

गोरार मा उपरे आसिया कहिलेन, "गोरार गला यखनइ निचे थेके शोना याय तखनइ बुझते पारि, विनु निश्चयइ एसेछे। क'दिन बाड़ि एकेबारे चुपचाप छिल—की हयेछे बल् तो, बाछा। आसिस नि केन। असुख-विसुख करे नि तो?"

विनय कुण्ठित हइया कहिल, "ना, मा, असुख—ये वृष्टिबादल!"

गोरा कहिल, "ताइ बइ कि! एर परे वृष्टिबादल यखन धरे याबे तखन विनय बलबेन, ये रोद पड़ेछे। देवतार उपर दोष दिले देवता तो कोनो जवाब करेन ना—आसल मनेर कथा अन्तर्यामीइ जानेन।"

विनय कहिल, "गोरा, तुमि कि बाजे बकछ!"

आनन्दमयी कहिलेन, "ता सत्यि, बाछा, अमन करे बलते नेइ। मानुषेर मन कखनो भालो थाके, कखनो मन्द थाके, सब समय कि समान याय! ता निये कथा पाड़ते गेले उत्पात करा हय। ता आय, विनु, आमार घरे आय, तोर जन्ये खाबार ठिक करेछि।"

गोरा जोर करिया माथा नाड़िया कहिल, "ना, मा, से हच्छे ना। तोमार घरे आमि विनयके खेते देब ना।"

आनन्दमयी। इस, ताइ तो! केन, बापु, तोके तो आमि कोनो दिन खेते बलि ने—एदिके तोर बाप तो भयंकर शुद्धाचारी हये उठेछेन, स्वपाक ना हले खान ना। विनु आमार लक्ष्मी छेले, तोर मतो ओर गोंड़ामि नेइ, तुइ केवल ओके जोर करे ठेकिये राखते चास।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा। से कथा ठिक, आमि जोर करेइ ओके ठेकिये राखब। तोमार ओइ खृस्टान दासी लछमियाटाके ना विदाय करे दिले तोमार घरे खाओया चलबे ना।

आनन्दमयी। ओरे गोरा, अमन कथा तुइ मुखे आनिस ने। चिरदिन ओर हाते तुइ खेयेछिस ओ तोके छेलेवेला थेके मानुष करेछे। एइ सेदिन पर्यन्त ओर हातेर तैरि चाटनि ना हले तोर ये खाओया रुचत ना। छोटोवेलाय तोर यखन वसन्त हयेछिल लछमिया ये करे तोके सेवा करे बाँचियेछे से आमि कोनोदिन भुलते पारब ना।

गोरा। ओके पेनशन दाओ, जमि किने दाओ, घर करे दाओ, या खुशि करो, किन्तु ओके राखा चलबे ना, मा!

आनन्दमयी। गोरा, तुइ मने करिस, टाका दिलेइ सब ऋण शोध हये याय! ओ जमिओ चाय ना, बाड़िओ चाय ना, तोके ना देखते पेले ओ मरे याबे।

गोरा। तबे तोमार खुशि ओके राखो। किन्तु विनु तोमार घरे खेते पाबे ना। या नियम ता मानतेइ हबे, किछुतेइ तार अन्यथा हते पारे ना। मा, तुमि एतबड़ो अध्यापकेर वंशेर मेये, तुमि ये आचार पालन करे चल ना ए किन्तु——

आनन्दमयी। ओगो, तोमार मा आगे आचार पालन करेइ चलत; ताइ निये अनेक चोखेर जल फेलते हयेछे——तखन तुमि छिले कोथाय। रोज शिव गड़े पुजो करते बसतुम आर तोमार बाबा एसे टान मेरे फेले फेले दितेन। तखन अपरिचित बामुनेर हातेओ भात खेते आमार घेन्ना करत। सेकाले रेलगाड़ि बेशि दूर छिल ना——गरुर गाड़िते, डाकगाड़िते, पालकिते, उटेर उपर चड़े कत दिन धरे कत उपोस करे काटियेछि। तोमार बाबा कि सहजे आमार आचार भाङ्ते पेरेछिलेन। तिनि स्त्रीके निये सब जायगाय घुरे बेड़ातेन बले ताँर साहेब-मनिबरा ताँके वाहवा दित, ताँर माइनेइ बेड़े गेल——ओइ जन्येइ ताँके एक जायगाय अनेक दिन रेखे दित, प्राय नड़ाते चाइत ना। एखन तो बुड़ो-वयसे चाकरि छेड़े दिये राश राश टाका निये तिनि हठात् उलटे खुब शुचि हये दाँड़ियेछेन, किन्तु आमि ता पारब ना। आमार सात पुरुषेर संस्कार एकटा एकटा करे निर्मूल करा हयेछे——से कि एखन आर बललेइ फेरे?

गोरा। आच्छा, तोमार पूर्वपुरुषदेर कथा छेड़े दाओ——ताँरा तो कोनो आपत्ति करते आसछेन ना। किन्तु आमादेर खातिरे तोमाके कतकगुलो जिनिस मेने चलतेइ हबे। नाहय शास्त्रेर मान नाइ राखले, स्नेहेर मान राखते हबे तो।

आनन्दमयी। ओरे, अत करे आमाके की बोझाच्छिस। आमार मने की हय से आमिइ जानि। आमार स्वामी, आमार छेले, आमाके निये तादेर यदि पदे पदे केवल बाधते लागल तबे आमार आर सुख की निये। किन्तु तोके कोले नियेइ आमि आचार भासिये दियेछि ता जानिस? छोटो छेलेके बुके तुले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निलेइ बुझते पारा याय ये जात निये केउ पृथिवीते जन्माय ना। से-कथा येदिन बुझेछि सेदिन थेके ए कथा निश्चय जेनेछि ये, आमि यदि खृस्टान ब'ले छोटो जात ब'ले काउके घृणा करि तबे ईश्वर तोकेओ आमार काछ थेके केड़े नेबेन। तुइ आमार कोल भरे आमार घर आलो करे थाक्, आमि पृथिवीर सकल जातेर हातेइ जल खाब।

आज आनन्दमयीर कथा शुनिया विनयेर मने हठात् की एकटा अस्पष्ट संशयेर आभास देखा दिल। से एकबार आनन्दमयीर ओ एकबार गोरार मुखेर दिके ताकाइल किन्तु तखनइ मन हइते सकल तर्केर उपक्रम दूर करिया दिल।

गोरा कहिल, "मा, तोमार युक्तिटा भालो बोझा गेल ना। यारा विचार क'रे शास्त्र मेने चले तादेर घरेओ तो छेले बेंचे थाके, आर ईश्वर तोमार सम्बन्धेइ विशेष आइन खाटाबेन, ए बुद्धि तोमाके के दिले।"

आनन्दमयी। यिनि तोके दियेछेन बुद्धिओ तिनि दियेछेन। ता, आमि की करब बल्! आमार एते कोनो हात नेइ। किन्तु, ओरे पागल, तोर पागलामि देखे आमि हासब कि काँदब ता भेबे पाइ ने। याक्, से-सब कथा याक्। तबे विनय आमार घरे खाबे ना ?

गोरा। ओ तो एखनइ सुयोग पेलेइ छोटे, लोभटि ओर षोलो आना। किन्तु, मा, आमि येते देब ना। ओ ये बामुनेर छेले, दुटो मिष्टि दिये से कथा ओके भोलाले चलबे ना। ओके अनेक त्याग करते हबे, प्रवृत्ति सामलाते हबे, तबे ओ जन्मेर गौरव राखते पारबे। मा, तुमि किन्तु राग कोरो ना। आमि तोमार पायेर धुलो निच्छि।

आनन्दमयी। आमि राग करब! तुइ बलिस की। तुइ या करछिस ए तुइ ज्ञाने करछिस ने, ता आमि तोके बले दिलुम। आमार मने एइ कष्ट रइल ये, तोके मानुष करलुम बटे किन्तु—याइ होक गे, तुइ याके धर्म बले बेड़ास से आमार माना चलबे ना—ना हय, तुइ आमार घरे आमार हाते नाइ खेलि—किन्तु तोके तो दु सन्धे देखते पाब, सेइ आमार ढेर। विनय, तुमि मुखटि अमन मलिन कोरो ना, बाप ; तोमार मनटि नरम, तुमि भाबछ, आमि दुःख पेलुम—किछु ना, बाप। आर-एकदिन निमन्त्रण करे खुब भालो बामुनेर हातेइ तोमाके खाइये देब—तार भावना की! आमि किन्तु, बाछा, लछमियार हातेर जल खाब, से आमि सबाइके बले राखछि।

गोरार मा निचे चलिया गेलेन। विनय चुप करिया किछुक्षण दाँड़ाइया रहिल ; ताहार पर धीरे धीरे कहिल, "गोरा, एटा येन एकटु बाड़ाबाड़ि हच्छे।"

गोरा। कार बाड़ाबाड़ि।

विनय। तोमार।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा। एक चुल बाड़ाबाड़ि नय। येखाने यार सीमा आमि सेइटे ठिक रक्षे करे चलते चाइ। कोनो छुतोय सूच्यग्रभूमि छाड़ते आरम्भ करले शेषकाले किछुइ बाकि थाके ना।

विनय। किन्तु, मा ये।

गोरा। मा काके बले से आमि जानि। आमाके कि से आबार मने करिये दिते हबे। आमार मार मतो मा क'जनेर आछे। किन्तु आचार यदि ना मानते शुरु करि तबे एकदिन हयतो माकेओ मानब ना। देखो, विनय, तोमाके एकटा कथा बलि, मने रेखो, हृदय जिनिसटा अति उत्तम किन्तु सकलेर चेये उत्तम नय।

विनय किछुक्षण परे एकटु इतस्तत करिया बलिल, "देखो, गोरा, आज मार कथा शुने आमार मनेर भितरे किरकम एकटा नाड़ाचाड़ा हच्छे। आमार बोध हच्छे, येन मार मने की एकटा कथा आछे, सेइटे तिनि आमादेर बोझाते पारछेन ना, ताइ कष्ट पाच्छेन।"

गोरा अधीर हइया कहिल, "आः, विनय, अत कल्पना निये खेलिओ ना—ओते केवलइ समय नष्ट हय, आर कोनो फल हय ना।"

विनय। तुमि पृथिवीर कोनो जिनिसेर दिके कखनो भालो करे ताकाओ ना, ताइ येटा तोमार नजरे पड़े ना, सेटाकेइ तुमि कल्पना बले उड़िये दिते चाओ। किन्तु आमि तोमाके बलछि, आमि कतबार देखेछि, मा येन किसेर जन्ये एकटा भावना पुषे रेखेछेन—की येन एकटा ठिकमतो मिलिये दिते पारछेन ना—सेइ जन्ये ओंर घर करनार भितरे एकटा दुःख आछे। गोरा, तुमि ओंर कथागुलो एकटु कान पेते शुनो।

गोरा। कान पेते यतटा शोना याय ता आमि शुने थाकि—तार चेये बेशि शोनबार चेष्टा करले भुल शोनबार सम्भावना आछे बले से चेष्टाइ करि ने।

४

मत हिसाबे एकटा कथा येमनतरो शुनिते हय, मानुषेर उपर प्रयोग करिबार वेलाय सकल समय ताहार सेइ एकान्त निश्चित भावटा थाके ना—अन्तत विनयेर काछे थाके ना—विनयेर हृदयवृत्ति अत्यन्त प्रबल। ताइ तर्केर समय से एकटा मतके खुब उच्चस्वरे मानिया थाके किन्तु व्यवहारेर वेला मानुषके ताहार चेये बेशि ना मानिया थाकिते पारे ना। एमन-कि, गोरार प्रचारित मतगुलि विनय ये ग्रहण करियाछे ताहा कतटा मतेर खातिरे आर कतटा गोरार प्रति ताहार एकान्त भालोबासार टाने ताहा बला शक्त।

गोरादेर बाड़ि हइते बाहिर हइया बासाय फिरिबार समय वर्षार सन्ध्याय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यखन से कादा बाँचाइया धीरे धीरे रास्ताय चलितेछिल तखन मत एवं मानुषे ताहार मनेर मध्ये एकटा द्वन्द्व बाधाइया दियाछिल ।

एखनकार कालेर नानाप्रकार प्रकाश्य एवं गोपन आघात हइते समाज यदि आत्मरक्षा करिया चलिते चाय तबे खाओया-छोंओया प्रभृति सकल विषये ताहाके विशेष भावे सतर्क हइते हइबे, एइ मतटि विनय गोरार मुख हइते अति सहजेइ ग्रहण करियाछे, ए लइया विरुद्ध लोकदेर सङ्गे से तीक्ष्णभावे तर्क करियाछे; बलियाछे, शत्रु यखन केल्लाके चारि दिके आक्रमण करियाछे तखन एइ केल्लार प्रत्येक पथ-गलि, दरजा-जानला, प्रत्येक छिद्रटि बन्ध करिया प्राण दिया यदि रक्षा करिते थाकि, तबे ताहाके उदारतार अभाव बले ना ।

किन्तु आज ओइ ये आनन्दमयीर घरे गोरा ताहार खाओया निषेध करिया दिल, इहार आघात भितरे भितरे ताहाके केवलइ वेदना दिते लागिल ।

विनयेर बाप छिल ना, माकेओ से अल्पवयसे हाराइयाछे ; खुड़ा थाकेन देशे, एवं छेलेवेला हइतेइ पड़ाशुना लइया विनय कलिकातार बासाय एकला मानुष हइयाछे । गोरार सङ्गे बन्धुत्वसूत्रे विनय येदिन हइते आनन्दमयीके जानियाछे सेइ दिन हइते ताँहाके मा बलियाइ जानियाछे । कतदिन ताँहार घरे गिया से काड़ाकाड़ि करिया उत्पात करिया खाइयाछे ; आहार्येर अंशविभाग लइया आनन्दमयी गोरार प्रति पक्षपात करिया थाकेन, एइ अपवाद दिया कतदिन से ताहार प्रति कृत्रिम ईर्षा प्रकाश करियाछे । दुइ-चारि दिन विनय काछे ना आसिलेइ आनन्दमयी ये कतटा उत्कण्ठित हइया उठितेन, विनयके काछे बसाइया खाओयाइबेन एइ प्रत्याशाय कतदिन तिनि ताहादेर सभाभङ्गेर जन्य उत्सुकचित्ते अपेक्षा करिया बसिया थाकितेन, ताहा विनय समस्तइ जानित । सेइ विनय आज सामाजिक घृणाय आनन्दमयीर घरे गिया खाइबे ना, इहा कि आनन्दमयी सहिते पारेन ना विनय सहिबे ।

'इहार पर हइते भालो बामुनेर हाते मा आमाके खाओयाइबेन, निजेर हाते आर कखनो खाओयाइबेन ना—ए-कथा मा हासिमुख करिया बलिलेन ; किन्तु ए ये मर्मान्तिक कथा ।' एइ कथाटाइ विनय बार बार मनेर मध्ये तोलापाड़ा करिते करिते बासाय पौंछिल ।

शून्य घर अन्धकार हइया आछे ; चारि दिके कागजपत्र बइ एलोमेलो छड़ानो; देयाशालाइ धराइया विनय तेलेर शेज ज्वालाइल—शेजेर उपर बेहारार करकोष्ठी नाना चिह्ने अंकित ; लिखिबार टेबिलेर उपरे ये एकटा सादा कापड़ेर आवरण आछे ताहार नानान जायगाय कालि एवं तेलेर दाग ; एइ घरे ताहार प्राण येन हाँपाइया उठिल । मानुषेर सङ्ग एवं स्नेहेर अभाव आज ताहार बुक येन चापिया धरिल । देशके उद्धार, समाजके रक्षा, एइ-समस्त कर्तव्यके से कोनोमतेइ स्पष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं सत्य करिया तुलिते पारिल ना—इहार चेये ढेर सत्य सेइ अचिन पाखि ये एकदिन श्रावणेर उज्ज्वल सुन्दर प्रभाते खाँचार काछे आसिया आबार खाँचार काछ हइते चलिया गेछे। किन्तु सेइ अचिन पाखिर कथा विनय कोनोमतेइ मने आमल दिबे ना, कोनोमतेइ ना। सेइजन्य मनके आश्रय दिबार जन्य, ये आनन्दमयीर घर हइते गोरा ताहाके फिराइया दियाछे सेइ घरटिर छबि मने आँकिते लागिल।

पङ्केर काज करा उज्ज्वल मेजे परिष्कार तक् तक् करितेछे ; एक धारे तक्तपोशेर उपर सादा राजहाँसेर पाखार मतो कोमल निर्मल बिछाना पाता रहियाछे ; बिछानार पाशेइ एकटा छोटो टुलेर उपर रेड़िर तेलेर बाति एतक्षणे ज्वालानो हइयाछे ; मा निश्चयइ नाना रङेर सुता लइया सेइ बातिर काछे झुंकिया काँथार उपर शिल्पकाज करितेछेन, लछमिया निचे मेजेर उपर बसिया ताहार बाँका उच्चारणेर बांलाय अनर्गल बकिया याइतेछे, मा ताहार अधिकांशइ काने आनितेछेन ना। मा यखन मने कोनो कष्ट पान तखन शिल्पकाज लइया पड़ेन—ताँहार सेइ कर्मनिविष्ट स्तब्ध मुखेर छबिर प्रति विनय ताहार मनेर दृष्टि निबद्ध करिल ; से मने मने कहिल, 'एइ मुखेर स्नेहदीप्ति आमाके आमार समस्त मनेर विक्षेप हइते रक्षा करुक। एइ मुखइ आमार मातृभूमिर प्रतिमास्वरूप हउक,आमाके कर्तव्ये प्रेरण करुक एवं कर्तव्ये दृढ राखुक।' ताँहाके मने मने एकबार 'मा' बलिया डाकिल एवं कहिल, 'तोमार अन्न ये आमार अमृत नय, ए कथा कोनो शास्त्रेर प्रमाणेइ स्वीकार करिब ना।'

निस्तब्ध घरे बड़ो घड़िटा टिक् टिक् करिया चलिते लागिल ; घरेर मध्ये विनयेर असह्य हइया उठिल। आलोर काछे देओयालेर गाये एकटा टिक्टिकि पोका धरितेछे—ताहार दिके किछुक्षण चाहिया चाहिया विनय उठिया पड़िल एवं एकटा छाता लइया घर हइते बाहिर हइल।

की करिबे सेटा मनेर मध्ये स्पष्ट छिल ना। बोध हय आनन्दमयीर काछे फिरिया याइबे, एइमतोइ ताहार मनेर अभिप्राय छिल। किन्तु कखन एक समय ताहार मने उठिल, 'आज रविवार, आज ब्राह्मसभाय केशवबाबुर वक्तृता शुनिते याइ।' ए कथा येमन मने ओठा अमनि समस्त द्विधा दूर करिया विनय जोरे चलिते आरम्भ करिल। वक्तृता शुनिबार समय ये बड़ो बेशि नाइ ताहा से जानित, तबु ताहार संकल्प विचलित हइल ना।

यथास्थाने पौंछिया देखिल, उपासकेरा बाहिर हइया आसितेछे। छाता-माथाय रास्तार धारे एक कोणे से दाँड़ाइल—मन्दिर हइते सेइ मुहूर्तेइ परेशबाबु शान्त-प्रसन्नमुखे बाहिर हइलेन। ताँहार सङ्गे ताँहार परिजन चार-पाँचटि छिल—विनय ताहादेर मध्ये केवल एकजनेर तरुण मुख रास्तार ग्यासेर आलोके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षणकालेर जन्य देखिल—ताहार परे गाड़िर चाकार शब्द हइल एवं एइ दृश्यटुकु अन्धकारेर महासमुद्रेर मध्ये एकटि बुद्बुदेर मतो मिलाइया गेल।

विनय इंरेजि नभेल यथेष्ट पड़ियाछे किन्तु बाङालि भद्र घरेर संस्कार ताहार याइबे कोथाय? एमन करिया मनेर मध्ये आग्रह लइया कोनो स्त्रीलोकके देखिते चेष्टा करा ये सेइ स्त्रीलोकेर पक्षे असम्मानकर एवं निजेर पक्षे गर्हित, ए कथा से कोनो तर्केर द्वारा मन हइते ताड़ाइते पारे ना। ताइ विनयेर मनेर मध्ये हर्षेर सङ्गे सङ्गे अत्यन्त एकटा ग्लानि जन्मिते लागिल। मने हइल, 'आमार एकटा येन पतन हइतेछे।' गोरार सङ्गे यदिच से तर्क करिया आसियाछे तबु, येखाने सामाजिक अधिकार नाइ सेखाने कोनो स्त्रीलोकके प्रेमेर चक्षे देखा ताहार चिर-जीवनेर संस्कारे बाधिते लागिल।

विनयेर आर गोरार बाड़ि याओया हइल ना। मनेर मध्ये नाना कथा तोलपाड़ करिते करिते विनय बासाय फिरिल। परदिन अपराह्णे बासा हइते बाहिर हइया घुरिते घुरिते अवशेषे यखन गोरार बाड़िते आसिया पौंछिल, तखन वर्षार दीर्घ दिन शेष हइया सन्ध्यार अन्धकार घन हइया उठियाछे। गोरा सेइ समय आलोटि ज्वालाइया लिखिते बसियाछे।

गोरा कागज हइते मुख ना तुलियाइ कहिल, "की गो विनय, हाओया कोन् दिक थेके बइछे।"

विनय से-कथाय कर्णपात ना करिया कहिल, "गोरा, तोमाके एकटा कथा जिज्ञासा करि—भारतवर्ष तोमार काछे खुब सत्य? खुब स्पष्ट? तुमि तो दिनरात्रि ताके मने राख; किन्तु किरकम करे मने राख।"

गोरा लेखा छाड़िया किछुक्षण ताहार तीक्ष्ण दृष्टि लइया विनयेर मुखेर दिके चाहिल—ताहार परे कलमटा राखिया चौकिर पिठेर दिके ठेस दिया कहिल, "जाहाजेर काप्तेन यखन समुद्रे पाड़ि देय तखन येमन आहारे-विहारे काजे-विश्रामे समुद्रपारेर बन्दरटिके से मनेर मध्ये रेखे देय आमार भारतवर्षके आमि तेमनि करे मने रेखेछि।"

विनय। कोथाय तोमार सेइ भारतवर्ष?

गोरा बुके हात दिया कहिल, "आमार एइखानकार कम्पासटा दिनरात येखाने काँटा फिरिये आछे सेइखाने, तोमार मार्श्‌म्यान साहेबेर 'हिस्ट्रि अव इण्डिया'र मध्ये नय।"

विनय। तोमार काँटा येदिके, सेदिके किछु-एकटा आछे कि।

गोरा उत्तेजित हइया कहिल, "आछे ना तो की। आमि पथ भुलते पारि, डुबे मरते पारि, किन्तु आमार सेइ लक्ष्मीर बन्दरटि आछे। सेइ आमार पूर्णस्वरूप भारतवर्ष—धने पूर्ण, ज्ञाने पूर्ण, धर्मे पूर्ण—से भारतवर्ष कोथाओ नेइ!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आछे केवल चारि दिकेर एइ मिथ्येटा ! एइ तोमार कलिकाता शहर, एइ आपिस, एइ आदालत, एइ गोटाकतक इँटकाठेर बुद्‌बुद ! छो: !"

बलिया गोरा विनयेर मुखेर दिके एकदृष्टे किछुक्षण चाहिया रहिल ; विनय कोनो उत्तर ना करिया भाबिते लागिल। गोरा कहिल, "एइ येखाने आमरा पड़छि शुनछि, चाकरिर उमेदारि करे बेड़ाच्छि, दशटा-पाँचटाय भूतेर खाटुनि खेटे की ये करछि तार किछुइ ठिकाना नेइ, एइ जादुकरेर मिथ्ये भारतवर्षटाकेइ आमरा सत्य बले ठाउरेछि बलेइ पँचिश कोटि लोक मिथ्ये मानके मान ब'ले, मिथ्ये कर्मके कर्म ब'ले, दिनरात विभ्रान्त हये बेड़ाच्छि--एइ मरीचिकार भितर थेके कि आमरा कोनोरकम चेष्टाय प्राण पाब ! आमरा ताइ प्रतिदिन शुकिये मरछि। एकटि सत्य भारतवर्ष आछे--परिपूर्ण भारतवर्ष, सेइखाने स्थिति ना हले आमरा की बुद्धिते की हृदये यथार्थ प्राणरसटा टेने निते पारब ना। ताइ बलछि, आर समस्त भुले, केताबेर विद्ये, खेताबेर माया, उञ्छवृत्तिर प्रलोभन सब टान मेरे फेले दिये सेइ बन्दरेर दिकेइ जाहाज भासाते हबे--डुबि तो डुबब, मरि तो मरब। साधे आमि भारतवर्षेर सत्य मूर्ति, पूर्ण मूर्ति, कोनोदिन भुलते पारि ने।"

विनय। ए-सब केवल उत्तेजनार कथा नय ? ए तुमि सत्य बलछ ?

गोरा मेघेर मतो गर्जिया कहिल, "सत्यइ बलछि।"

विनय। यारा तोमार मतो देखते पाच्छे ना ?

गोरा मुठा बाँधिया कहिल, "तादेर देखिये दिते हबे। एइ तो आमादेर काज। सत्येर छबि स्पष्ट ना देखते पेले लोके आत्मसमर्पण करबे कोन् उपछायार काछे। भारतवर्षेर सर्वाङ्गीण मूर्तिटा सबार काछे तुले धरो--लोके ता हले पागल हये याबे। तखन कि द्वारे द्वारे चाँदा सेधे बेड़ाते हबे। प्राण देबार जन्ये ठेलाठेलि पड़े याबे।"

विनय। हय आमाके संसारेर दश जनेर मतो भेसे चले येते दाओ, नइले आमाके सेइ मूर्ति देखाओ।

गोरा। साधना करो। यदि विश्वास मने थाके ता हले कठोर साधनातेइ सुख पाबे। आमादेर शौखिन पेट्रियट्‌देर सत्यकार विश्वास किछुइ नेइ, ताइ ताँरा निजेर एवं परेर काछे किछुइ जोर करे दाबि करते पारेन ना। स्वयं कुबेर यदि ताँदेर सेधे वर दिते आसेन ता हले ताँरा बोध हय लाटसाहेबेर चाप्‌राशिर गिल्‌टि करा तक्‌माटार चेये वेशि आर किछु साहस करे चाइतेइ पारेन ना। ताँदेर विश्वास नेइ, ताइ भरसा नेइ।

विनय। गोरा, सकलेर प्रकृति समान नय। तुमि निजेर विश्वास निजेर भितरेइ पेयेछ, एवं निजेर आश्रय निजेर जोरेइ खाड़ा करे राखते पार, ताइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्येर अवस्था ठिक बुझते पार ना। आमि बलछि, तुमि आमाके या हय एकटा काजे लागिये दाओ, दिनरात आमाके खाटिये नाओ—नइले तोमार काछे यतक्षण थाकि, मने हय, येन एकटा की पेलुम ; तार परे दूरे गेले एमन किछु हातेर काछे पाइ ने येटाके आँकड़े धरे थाकते पारि।

गोरा। काजेर कथा बलछ ? एखन आमादेर एकमात्र काज एइ ये, या-किछु स्वदेशेर तारइ प्रति संकोचहीन संशयहीन सम्पूर्ण श्रद्धा प्रकाश करे देशेर अविश्वासीदेर मने सेइ श्रद्धार सञ्चार करे देओया। देशेर सम्बन्धे लज्जा करे करे आमरा निजेर मनके दासत्वेर विषे दुर्बल करे फेलेछि ; आमादेर प्रत्येके निजेर दृष्टान्ते तार प्रतिकार करले तार पर आमरा काज करबार क्षेत्रटि पाब। एखन ये-कोनो काज करते चाइ, से केवल इतिहासेर इस्कुल-बइटि धरे परेर काजेर नकल हये ओठे। सेइ झुँटो काजे कि आमरा कखनो सत्यभावे आमादेर समस्त प्राणमन दिते पारब। ताते केवल निजेदेर हीन करेइ तुलब।

एमन समय हाते एकटा हुँका लइया मृदुमन्द अलस भावे महिम आसिया घरे प्रवेश करिलेन। आपिस हइते फिरिया जलयोग सारिया, एकटा पान मुखे दिया एवं गोटाछयेक पान बाटाय लइया, रास्तार धारे बसिया महिमेर एइ तामाक टानिबार समय। आर-किछुक्षण परेइ एकटि एकटि करिया पाड़ार बन्धुरा जुटिबे, तखन सदर दरजार पाशेर घरटाते प्रमारा खेलिबार सभा बसिबे।

महिम घरे ढुकितेइ गोरा चौकि छाड़िया उठिया दाँड़ाइल। महिम हुँकाय टान दिते दिते कहिल, "भारत-उद्धारे व्यस्त आछ, आपातत भाइके उद्धार करो तो।"

गोरा महिमेर मुखेर दिके चाहिया रहिल। महिम कहिलेन, "आमादेर आपिसेर नतुन ये बड़ोसाहेब हयेछे—डालकुत्तार मतो चेहारा—से बेटा भारि पाजि। से बाबुदेर बले बेबुन ; कारओ मा मरे गेले छुटि दिते चाय ना, बले 'मिथ्ये कथा'; कोनो मासेइ कोनो बाङालि आमलार गोटा माइने पाबार जो नेइ, जरिमानाय जरिमानाय एकेबारे शतछिद्र करे फेले। कागजे तार नामे एकटा चिठि बेरियेछिल ; से-बेटा ठाउरेछे आमारइ कर्म। नेहात मिथ्ये ठाओराय नि। काजेइ एखन आबार स्वनामे तार एकटा कड़ा प्रतिवाद ना लिखले टिँकते देबे ना। तोमरा तो युनिभारसिटिर जलधि मन्थन करे दुइ रत्न उठेछ ; एइ चिठिखाना एकटु भालो करे लिखे दिते हबे। ओर मध्ये छड़िये दिते हबे even-handed justice, never-failing generosity, kind courteousness इत्यादि इत्यादि।"

गोरा चुप करिया रहिल। विनय हासिया कहिल, "दादा, अतगुलो मिथ्या कथा एक निश्वासे चालाबेन ?"

महिम। शठे शाठ्यं समाचरेत्। अनेक दिन ओदेर संसर्ग करेछि,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमार काछे किछुइ अविदित नेइ। ओरा या मिथ्या कथा जमाते पारे से तारिफ करते हय। दरकार हले ओदेर किछु बाधे ना। एकजन यदि मिछे बले तो शेयालेर मतो आर सब-कटाइ सेइ एक सुरे हुक्काहुया करे ओठे ; आमादेर मतो एकजन आर-एकजनके धरिये दिये वाहवा निते चाय ना। एटा निश्चय जेनो, ओदेर ठकाले पाप नेइ यदि ना पड़ि धरा।

बलिया हाः हाः हाः करिया महिम टानिया टानिया हासिते लागिलेन ; विनयओ ना हासिया थाकिते पारिल ना।

महिम कहिलेन, "तोमरा ओदेर मुखेर उपर सत्यि कथा बले ओदेर अप्रतिभ करते चाओ! एमनि बुद्धि यदि भगवान तोमादेर ना देबेन तबे देशेर एमन दशा हबे केन। एटा तो बुझते हबे, यार गायेर जोर आछे बाहादुरि करे तार चुरि धरिये दिते गेले से लज्जाय माथा हेंट करे थाके ना। से उल्टे तार सिँधकाटिटा तुले परम साधुर मतोइ हुंकार दिये मारते आसे। सत्यि किना बलो।"

विनय। सत्यि बइ कि।

महिम। तार चेये मिछे कथार घानि थेके बिनि पयसाय ये तेलटुकु बेरोय तारइ एक-आध छटाक तार पाये मालिश करे यदि बलि, 'साधुजि, बाबा परमहंस, दया करे झुलिटा एकटु झाड़ो, ओर धुलो पेलेओ बेंचे याब', ता हले तोमारइ घरेर मालेर अन्तत एकटा अंश हयतो तोमारइ घरे फिरे आसते पारे, अथच शान्ति-भङ्गेरओ आशङ्का थाके ना। यदि बुझे देख तो एकेइ बले पेट्रियटिज्म्। किन्तु, आमार भाया चटछे। ओ हिँदु हये अवधि आमाके दादा बले खुब माने, ओर सामने आज आमार कथागुलो ठिक बड़ो भायेर मतो हल ना। किन्तु की करब, भाइ, मिछे कथा सम्बन्धेओ तो सत्यि कथाटा बलते हबे। विनय, सेइ लेखाटा किन्तु चाइ। रोसो, आमार नोट लेखा आछे, सेटा निये आसि।

बलिया महिम तामाक टानिते टानिते बाहिर हइया गेलेन। गोरा विनयके कहिल, "विनु, तुमि दादार घरे गिये ओंके ठेकाओ गे। आमि लेखाटा शेष करे फेलि।"

५

"ओगो शुनछ? आमि तोमार पुजोर घरे ढुकछि ने, भय नेइ। आह्निक शेष हले एकबार ओ घरे येयो ; तोमार सङ्गे कथा आछे। दुजन नूतन संन्यासी यखन एसेछे तखन किछुकाल तोमार आर देखा पाब ना जानि, सेइजन्ये बलते एलुम। भुलो ना, एकबार येयो।"

एइ बलिया आनन्दमयी घर-करनार काजे फिरिया गेलेन।

कृष्णदयालबाबु श्यामवर्ण दोहारा गोछेर मानुष, बेशि लम्बा नहेन। मुखेर मध्ये बड़ो बड़ो दुइटा चोख सब चेये चोखे पड़े, बाकि प्राय समस्तइ काँचापाका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोंफे दाड़िते समाच्छन्न। इनि सर्वदाइ गेरुया रङेर पट्टवस्त्र परिया आछेन, हातेर काछे पितलेर कमण्डलु, पाये खड़म। माथार सामनेर दिके टाक पड़िया आसितेछे, बाकि बड़ो बड़ो चुल ग्रन्थि दिया माथार उपरे एकटा चूड़ा करिया बाँधा।

एकदिन पश्चिमे थाकिते इनि पल्टनेर गोरादेर सङ्गे मिशिया मद-मांस खाइया एकाकार करिया दियाछेन। तखन देशेर पूजारी पुरोहित वैष्णव संन्यासी श्रेणीर लोकदिगके गाये पड़िया अपमान कराके पौरुष बलिया ज्ञान करितेन; एखन ना-मानेन एमन जिनिस नाइ। नूतन संन्यासी देखिलेइ ताहार काछे नूतन साधनार पन्था शिखिते बसिया यान। मुक्तिर निगूढ़ पथ एवं योगेर निगूढ़ प्रणालीर जन्य इँहार लुब्धतार अवधि नाइ। तान्त्रिक साधना अभ्यास करिबेन बलिया कृष्णदयाल किछुदिन उपदेश लइतेछिलेन, एमन समय एकजन बौद्ध पुरोहितेर सन्धान पाइया सम्प्रति ताँहार मन चञ्चल हइया उठियाछे।

इँहार प्रथम स्त्री एकटि पुत्र प्रसव करिया यखन मारा यान तखन इँहार वयस तेइश बछर। मातार मृत्युर कारण बलिया, राग करिया छेलेटिके ताँहार श्वशुरबाड़ि राखिया कृष्णदयाल प्रबल वैराग्येर झोंके एकेबारे पश्चिमे चलिया यान एवं छय मासेर मध्येइ काशीवासी सार्वभौम महाशयेर पितृहीना पौत्री आनन्दमयीके विवाह करेन।

पश्चिमे कृष्णदयाल चाकरिर जोगाड़ करिलेन एवं मनिबदेर काछे नाना उपाये प्रतिपत्ति करिया लइलेन। इतिमध्ये सार्वभौमेर मृत्यु हइल; अन्य कोनो अभिभावक ना थाकाते स्त्रीके निजेर काछे आनियाइ राखिते हइल।

इतिमध्ये यखन सिपाहिदेर म्युटिनि बाधिल सेइ समय कौशले दुइ-एकजन उच्चपदस्थ इंरेजेर प्राणरक्षा करिया इनि यश एवं जायगिर लाभ करेन। म्युटिनिर किछुकाल परेइ काज छाड़िया दिलेन एवं नवजात गोराकेलइया किछुदिन काशीते काटाइलेन। गोरार वयस यखन बछर पाँचेक हइल तखन कृष्णदयाल कलिकाताय आसिया ताँहार बड़ो छेले महिमके ताहार मामार बाड़ि हइते निजेर काछे आनाइया मानुष करिलेन। एखन महिम पितार मुरुब्बिदेर अनुग्रहे सरकारि खाताञ्जिखानाय खुब तेजेर सङ्गे काज चालाइतेछे।

गोरा शिशुकाल हइतेइ ताहार पाड़ार एवं इस्कुलेर छेलेदेर सर्दारि करित। मास्टार-पण्डितेर जीवन असह्य करिया तोलाइ ताहार प्रधान काज एवं आमोद छिल। एकटु वयस हइतेइ से छात्रदेर क्लाबे 'स्वाधीनता हीनताय के बाँचिते चाय हे' एवं 'विंशति कोटि मानवेर वास' आओड़ाइया, इंरेजिभाषाय वक्तृता करिया, क्षुद्र विद्रोहीदेर दलपति हइया उठिल। अवशेषे यखन एक समय छात्रसभार डिम्ब भेद करिया गोरा वयस्कसभाय काकलि विस्तार करिते आरम्भ करिल तखन कृष्णदयालबाबुर काछे सेटा अत्यन्त कौतुकेर विषय बलिया मने हइल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाहिरेर लोकेर काछे गोरार प्रतिपत्ति देखिते देखिते बाड़िया उठिल ; किन्तु घरे काहारओ काछे से बड़ो आमल पाइल ना। महिम तखन चाकरि करे——से गोराके कखनो वा 'पेट्रियट-जेठा' कखनो वा 'हरिश मुखुज्जे दि सेकेण्ड' बलिया नानाप्रकारे दमन करिते चेष्टा करियाछिल। तखन दादार सङ्गे गोरार प्राय माझे माझे हाताहाति हइबार उपक्रम हइत। आनन्दमयी गोरार इंरेज-विद्वेषे मने मने अत्यन्त उद्वेग अनुभव करितेन ; ताहाके नानाप्रकारे ठाण्डा करिबार चेष्टा करितेन किन्तु कोनो फलइ हइत ना। गोरा रास्ताय घाटे कोनो सुयोगे इंरेजेर सङ्गे मारामारि करिते पारिले जीवन धन्य मने करित।

एदिके केशवबाबुर वक्तृताय मुग्ध हइया गोरा ब्राह्मसमाजेर प्रति विशेषभावे आकृष्ट हइया पड़िल ; आबार एइ समयटातेइ कृष्णदयाल घोरतर आचारनिष्ठ हइया उठिलेन। एमन-कि, गोरा ताँहार घरे गेलेओ तिनि व्यतिव्यस्त हइया उठितेन। गुटि दुइ-तिन घर लइया तिनि निजेर महल स्वतन्त्र करिया राखिलेन। घटा करिया सेइ महलेर द्वारेर काछे 'साधनाश्रम' नाम लिखिया काष्ठफलक लट्काइया दिलेन।

बापेर एइ काण्डकारखानाय गोरार मन विद्रोही हइया उठिल। से बलिल, 'आमि ए-समस्त मूढ़ता सह्य करिते पारि ना——ए आमार चक्षुशूल।' एइ उपलक्ष्ये गोरा ताहार बापेर सङ्गे समस्त सम्पर्क विच्छिन्न करिया एकेबारे बाहिर हइया याइबार उपक्रम करिया छिल, आनन्दमयी ताहाके कोनो रकमे ठेकाइया राखियाछिलेन।

बापेर काछे ये-सकल ब्राह्मणपण्डितेर समागम हइते लागिल गोरा जो पाइलेइ ताँहादेर सङ्गे तर्क बाधाइया दित। से तो तर्क नय, प्राय घुषि बलिलेइ हय। ताँहादेर अनेकेरइ पाण्डित्य अति यत्सामान्य एवं अर्थलोभ अपरिमित छिल ; गोराके ताँहारा पारिया उठितेन ना, ताहाके बाघेर मतो भय करितेन। इँहादेर मध्ये केवल हरचन्द्र विद्यावागीशेर प्रति गोरार श्रद्धा जन्मिल।

वेदान्तचर्चा करिबार जन्य विद्यावागीशके कृष्णदयाल नियुक्त करिया छिलेन। गोरा प्रथमेइ इँहार सङ्गे उद्धतभावे लड़ाइ करिते गिया देखिल, लड़ाइ चले ना। लोकटि ये केवल पण्डित ताहा नय, ताँहार मतेर औदार्य अति आश्चर्य। केवल संस्कृत पड़िया एमन तीक्ष्ण अथच प्रशस्त बुद्धि ये हइते पारे, गोरा ताहा कल्पनाओ करिते पारित ना। विद्यावागीशेर चरित्रे क्षमा ओ शान्तिते पूर्ण एमन एकटि अविचलित धैर्य ओ गभीरता छिल ये, ताँहार काछे निजेके संयत ना करा गोरार पक्षे सम्पूर्ण असम्भव छिल। हरचन्द्रेर काछे गोरा वेदान्तदर्शन पड़िते आरम्भ करिल। गोरा कोनो काज आधाआधि रकम करिते पारे ना, सुतरां दर्शन-आलोचनार मध्ये से एकेबारे तलाइया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घटनाक्रमे एइ समये एकजन इंरेज मिशनारि कोनो संवादपत्रे हिन्दुशास्त्र ओ समाजके आक्रमण करिया देशेर लोकके तर्कयुद्धे आह्वान करिलेन। गोरा तो एकेबारे आगुन हइया उठिल। यदिच से निजे अवकाश पाइलेइ शास्त्र ओ लोकाचारेर निन्दा करिया विरुद्ध मतेर लोकके यत रकम करिया पारे पीड़ा दित, तबु हिन्दुसमाजेर प्रति विदेशी लोकेर अवज्ञा ताहाके येन अंकुशे आहत करिया तुलिल।

संवादपत्रे गोरा लड़ाइ शुरु करिल। अपर पक्षे हिन्दुसमाजके यतगुलि दोष दियाछिल गोरा ताहार एकटाओ एवं एकटुओ स्वीकार करिल ना। दुइ पक्षे अनेक उत्तर चालाचालि हइले पर सम्पादक बलिलेन, 'आमरा आर बेशि चिठिपत्र छापिब ना।'

किन्तु, गोरार तखन रोख चड़िया गेछे। से 'हिण्डुयिज्म्' नाम दिया इंरेजिते एक बइ लिखिते लागिल; ताहाते ताहार साध्यमतो समस्त युक्ति ओ शास्त्र घाँटिया हिन्दुधर्म ओ समाजेर अनिन्दनीय श्रेष्ठत्वेर प्रमाण संग्रह करिते बसिया गेल।

एमन करिया मिशनारिर सङ्गे झगड़ा करिते गिया गोरा आस्ते आस्ते निजेर ओकालतिर काछे निजे हार मानिल। गोरा बलिल, 'आमार आपन देशके विदेशीर आदालते आसामिर मतो खाड़ा करिया विदेशीर आइनमते ताहार विचार करिते आमरा दिबइ ना। विलातेर आदर्शेर सङ्गे खुँटिया खुँटिया मिल करिया आमरा लज्जाओ पाइब ना, गौरवओ बोध करिब ना। ये-देशे जन्मियाछि से-देशेर आचार, विश्वास, शास्त्र ओ समाजेर जन्य परेर ओ निजेर काछे किछुमात्र संकुचित हइया थाकिब ना। देशेर याहा किछु आछे ताहार समस्तइ सबले ओ सगर्वे माथाय करिया लइया देशके ओ निजेके अपमान हइते रक्षा करिब।'

एइ बलिया गोरा गङ्गास्नान ओ सन्ध्याह्निक करिते लागिल, टिकि राखिल, खाओया-छोंओया सम्बन्धे विचार करिया चलिल। एखन हइते प्रत्यह सकाल-वेलाय से बाप-मायेर पायेर धुला लय; ये महिमके से कथाय कथाय इंरेजि भाषाय 'क्याड' ओ 'स्नब' बलिया अभिहित करिते छाड़ित ना, ताहाके देखिले उठिया दाँड़ाय, प्रणाम करे—महिम एइ हठात्-भक्ति लइया ताहाके याहा मुखे आसे ताहाइ बले, किन्तु गोरा ताहार कोनो जवाब करे ना।

गोरा ताहार उपदेशे ओ आचरणे देशेर एकदल लोकके येन जागाइया दिल। ताहारा येन एकटा टानाटानिर हात हइते बाँचिया गेल; हाँफ छाड़िया बलिया उठिल, 'आमरा भालो कि मन्द, सभ्य कि असभ्य ताहा लइया जवाबदिहि कारओ काछे करिते चाइ ना—केवल आमरा षोलो आना अनुभव करिते चाइ ये आमरा आमराइ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु, कृष्णदयाल गोरार एइ नूतन परिवर्तने ये खुशि हइलेन ताहा मने हइल ना। एमन-कि, तिनि एकदिन गोराके डाकिया बलिलेन, "देखो बाबा, हिन्दुशास्त्र बड़ो गभीर जिनिस। ऋषिरा ये धर्म स्थापन करे गेछेन ता तलिये बोझा ये-से लोकेर कर्म नय। आमार विवेचनाय, ना बुझे ए निये नाड़ाचाड़ा ना कराइ भालो। तुमि छेलेमानुष, बराबर इंरेजि पड़े मानुष हयेछ, तुमि ये ब्राह्मसमाजेर दिके झुँकेछिले सेटा तोमार ठिक अधिकारेर मतोइ काज करेछिले। सेइजन्येइ आमि ताते किछुइ राग करि नि बरञ्च खुशिइ छिलुम। किन्तु, एखन तुमि ये-पथे चलेछ एटा ठिक भालो ठेकछे ना। ए तोमार पथइ नय।"

गोरा कहिल, "बलेन की, बाबा। आमि ये हिन्दु। हिन्दु धर्मेर गूढ़ मर्म आज ना बुझि तो काल बुझब ; कोनोकाले यदि ना बुझि तबु एइ पथे चलतेइ हबे। हिन्दुसमाजेर सङ्गे पूर्वजन्मेर सम्बन्ध काटाते पारि नि बलेइ तो ए जन्मे ब्राह्मणेर घरे जन्मेछि, एमनि करेइ जन्मे जन्मे एइ हिन्दुधर्मेर ओ हिन्दुसमाजेर भितर दियेइ अवशेषे एर चरमे उत्तीर्ण हब। यदि कखनो भुले अन्य पथेर दिके एकटु हेलि आबार द्विगुण जोरे फिरतेइ हबे।"

कृष्णदयाल केवलइ माथा नाड़िते नाड़िते कहिलेन, "किन्तु, बाबा, हिन्दु बललेइ हिन्दु हओया याय ना। मुसलमान हओया सोजा, खृस्टान ये-से हते पारे—किन्तु हिन्दु !—बास् रे। ओ बड़ो शक्त कथा।"

गोरा। से तो ठिक। किन्तु, आमि यखन हिन्दु हये जन्मेछि तखन तो सिंहद्वार पार हये एसेछि। एखन ठिकमतो साधन करे गेलेइ अल्पे अल्पे एगोते पारब।

कृष्णदयाल। बाबा तर्के तोमाके ठिकटि बोझाते पारब ना तबे तुमि या बलछ सेओ सत्य। यार येटा कर्मफल, निर्दिष्ट धर्म, ताके एकदिन घुरे फिरे सेइ धर्मेर पथेइ आसते हबे—केउ आटकाते पारबे ना। भगवानेर इच्छे। आमरा की करते पारि। आमरा तो उपलक्ष्य।

कर्मफल एवं भगवानेर इच्छा, सोऽहंवाद एवं भक्तितत्त्व समस्तइ कृष्णदयाल सम्पूर्ण समान भावे ग्रहण करेन ; परस्परेर मध्ये ये कोनो प्रकार समन्वयेर प्रयोजन आछे ताहा अनुभवमात्र करेन ना।

६

आज आह्निक ओ स्नानाहार सारिया कृष्णदयाल अनेकदिन परे आनन्दमयीर घरेर मेजेर उपर निजेर कम्बलेर आसनटि पातिया सावधाने चारि दिकेर समस्त संस्रव हइते येन विविक्त हइया खाड़ा हइया बसिलेन।

आनन्दमयी कहिलेन, "ओगो, तुमि तो तपस्या करछ, घरेर कथा किछु भाब ना, किन्तु आमि ये गोरार जन्ये सर्वदाइ भये भये गेलुम।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृष्णदयाल। केन, भय किसेर।

आनन्दमयी। ता आमि ठिक बलते पारि ने। किन्तु, आमार येन मने हच्छे, गोरा आजकाल एइ ये हिंदुयानि आरम्भ करेछे ए ओके कखनोइ सइबे ना, ए-भावे चलते गेले शेषकाले एकटा की विपद घटबे। आमि तो तोमाके तखनइ बलेछिलुम, ओर पइते दियो ना। तखन ये तुमि किछुइ मानते ना ; बलले, गलाय एकगाछा सुतो परिये दिले ताते कारओ किछु आसे याय ना। किन्तु, शुधु तो सुतो नय, एखन ओके ठेकाबे कोथाय।

कृष्णदयाल। बेश। सब दोष बुझि आमार। गोड़ाय तुमि ये भुल करले। तुमि ये ओके कोनोमतेइ छाड़ते चाइले ना। तखन आमिओ गोंयार-गोछेर छिलुम, धर्मकर्म कोनो किछुर तो ज्ञान छिल ना। एखन हले कि एमन काज करते पारतुम।

आनन्दमयी। किन्तु याइ बल, आमि ये किछु अधर्म करेछि से आमि कोनोमते मानते पारब ना। तोमार तो मने आछे, छेले हबार जन्ये आमि की ना करेछि—ये या बलेछे ताइ शुनेछि—कत मादुलि, कत मन्तर नियेछि से तो तुमि जानइ। एकदिन स्वप्ने देखलुम, येन साजि भरे टगरफुल निये एसे ठाकुरेर पुजो करते बसेछि—एक समय चेये देखि साजिते फुल नेइ, फुलेर मतो धब्धबे एकटि छोट्ट छेले! आहा, से की देखेछिलुम, से की बलब! आमार दुइ चोख दिये जल पड़ते लागल ; ताके ताड़ाताड़ि कोले तुले निते याब आर घुम भेङे गेल। तार दश दिन ना येतेइ तो गोराके पेलुम—से आमार ठाकुरेर दान—से कि आर कारओ ये आमि काउके फिरिये देब। आर-जन्मे ताके गर्भे धारण करे बोध हय अनेक कष्ट पेयेछिलुम ताइ आज से आमाके 'मा' बलते एसेछे। केमन करे कोथा थेके से एल भेबे देखो देखि। चारि दिके तखन मारामारि काटाकाटि, निजेर प्राणेर भयेइ मरि, सेइ समय रात-दुपुरे सेइ मेम यखन आमादेर बाड़िते एसे लुकोल तुमि तो ताके भये बाड़िते राखतेइ चाओ ना—आमि तोमाके भाँड़िये ताके गोयालघरे लुकिये राखलुम। सेइ रात्रेइ छेलेटि प्रसव करे से तो मारा गेल। सेइ बाप-मा-मरा छेलेके आमि यदि ना बाँचातुम तो से कि बाँचत। तोमार की। तुमि तो पाद्रिर हाते ओके दिते चेयेछिले। केन, पाद्रिके दिते याब केन। पाद्रि कि ओर मा बाप, ना ओर प्राणरक्षा करेछे। एमन करे ये छेले पेयेछि से कि गर्भे पाओयार चेये कम। तुमि याइ बल, ए छेले यिनि आमाके दियेछेन तिनि स्वयं यदि ना नेन तबे प्राण गेलेओ आर-काउके निते दिच्छि ने।

कृष्णदयाल। से तो जानि। ता, तोमार गोराके निये तुमि थाको, आमि तो कखनो ताते बाधा दिइ नि। किन्तु, ओके छेले बले परिचय दिये तार परे ओर पइते ना दिले तो समाजे मानबे ना। ताइ पइते काजेइ दिते हल। एखन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केवल दुटि कथा भाबबार आछे। न्यायत आमार विषयसम्पत्ति समस्त महिमेरइ प्राप्य——ताइ——

आनन्दमयी। के तोमार विषयसम्पत्तिर अंश निते चाय। तुमि यत टाका करेछ सब तुमि महिमके दिये येयो, गोरा तार एक पयसाओ नेबे ना। ओ पुरुषमानुष, लेखापड़ा शिखेछे, निजे खेटे उपार्जन करे खाबे; ओ परेर धने भाग बसाते याबे केन। ओ बेंचे थाक्, सेइ आमार ढेर; आमार आर कोनो सम्पत्तिर दरकार नेइ।

कृष्णदयाल। ना, ओके एकेबारे वञ्चित करब ना, जायगिरटा ओकेइ दिये देब; काले तार मुनफा बछरे हाजार टाका हते पारबे। एखन भावनार कथा हच्छे ओर विवाह देओया निये। पूर्वे या करेछि ता करेछि, किन्तु एखन तो हिन्दुमते ब्राह्मणेर घरे ओर बिये दिते पारब ना——ता, एते तुमि रागइ कर आर याइ कर।

आनन्दमयी। हाय हाय, तुमि मने कर, तोमार मतो पृथिवीमय गङ्गाजल आर गोबर छिटिये बेड़ाइ ने बले आमार धर्मज्ञान नेइ। ब्राह्मणेर घरे ओर बियेइ वा देब केन, आर राग करबइ वा की जन्ये।

कृष्णदयाल। बल की। तुमि ये बामुनेर मेये।

आनन्दमयी। ता हइ ना बामुनेर मेये। बामनाइ करा तो आमि छेड़ेइ दियेछि। ओइ तो महिमेर बियेर समय आमार खृस्टानि चाल बले कुटुम्बरा गोल करते चेयेछिल; आमि ताइ इच्छे करेइ तफात हये छिलुम, कथाटि कइ नि। पृथिवीसुद्ध लोक आमाके खृस्टान बले, आरओ कत की कथा कय——आमि समस्त मेने नियेइ बलि, 'ता, खृस्टान कि मानुष नय। तोमराइ यदि एत उँचु जात आर भगवानेर एत आदरेर, तबे तिनि एकबार पाठानेर, एकबार मोगलेर, एकबार खृस्टानेर पाये एमन करे तोमादेर माथा मुड़िये दिच्छेन केन।'

कृष्णदयाल। ओ-सब अनेक कथा, तुमि मेयेमानुष से-सब बुझबे ना। किन्तु, समाज एकटा आछे, सेटा तो बोझ; सेटा तोमार मेने चलाइ उचित।

आनन्दमयी। आमार बुझे काज नेइ। आमि एइ बुझि ये, गोराके आमि यखन छेले बले मानुष करेछि तखन आचारविचारेर भड़ं करते गेले समाज थाक् आर ना थाक् धर्म थाकबे ना। आमि केवल सेइ धर्मेर भयेइ कोनोदिन किछु लुकोइ ने——आमि ये किछु मानछि ने, से सकलकेइ जानते दिइ आर सकलेरइ घृणा कुड़िये चुप करे पड़े थाकि। केवल एकटि कथाइ लुकियेछि तारइ जन्ये भये भये सारा हये गेलुम, ठाकुर कखन की करेन। देखो, आमार मने हय, गोराके सकल कथा बले फेलि, तार परे अदृष्टे या थाके ताइ हबे।

कृष्णदयाल व्यस्त हइया बलिया उठिलेन, "ना ना, आमि बेंचे थाकते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोनोमतेइ से हते पारबे ना। गोराके तो जानइ। ए कथा शुनले से की ये करे बसबे, ता किछुइ बला याय ना। तार परे समाजे एकटा हुलस्थूल पड़े याबे। शुधु ताइ ? एदिके गवर्मेन्ट की करे ताओ बला याय ना। यदिओ गोरार बाप लड़ाइये मारा गेछे, ओर माओ तो मरेछे जानि, किन्तु सब हाङ्गामा चुके गेले म्याजेस्टरिते खबर देओया उचित छिल। एखन एइ निये यदि एकटा गोलमाल उठे पड़े ता हले आमार साधन-भजन समस्त माटि हबे, आरओ की विपद घटे बला याय ना।"

आनन्दमयी निरुत्तर हइया बसिया रहिलेन। कृष्णदयाल किछुक्षण परे कहिलेन, "गोरार विवाह सम्बन्धे आमि एकटा परामर्श मने मने करेछि। परेश भटचाज आमार सङ्गे एकसङ्गे पड़त। से स्कुल इन्स्पेक्टरि काजे पेन्शन निये सम्प्रति कलकाताय एसे बसेछे। से घोर ब्राह्म। शुनेछि, तार घरे अनेकगुलि मेयेओ आछे। गोराके तार बाड़िते यदि भिड़िये देओया याय तबे यातायात करते करते परेशेर कोनो मेयेके तार पछन्द हये येतेओ पारे। तार परे प्रजापतिर निर्बन्ध।"

आनन्दमयी। बल की। गोरा ब्राह्मर बाड़ि यातायात करबे ? सेदिन ओर आर नेइ।

बलिते बलिते स्वयं गोरा ताहार मेघमन्द्र स्वरे 'मा' बलिया घरेर मध्ये प्रवेश करिल। कृष्णदयालके एखाने बसिया थाकिते देखिया से किछु आश्चर्य हइया गेल। आनन्दमयी ताड़ाताड़ि उठिया गोरार काछे गिया दुइ चक्षे स्नेह विकीर्ण करिते करिते कहिलेन, "की, बाबा, की चाइ।"

"ना विशेष किछु ना, एखन थाक्" बलिया गोरा फिरिबार उपक्रम करिल।

कृष्णदयाल कहिलेन, "एकटु बोसो, एकटा कथा आछे। आमार एकटि ब्राह्मबन्धु सम्प्रति कलकाताय एसेछेन ; तिनि हेदोतलाय थाकेन।"

गोरा। परेशबाबु नाकि।

कृष्णदयाल। तुमि ताके जानले की करे।

गोरा। विनय ताँर बाड़िर काछेइ थाके, तार काछे ताँदेर गल्प शुनेछि।

कृष्णदयाल। आमि इच्छा करि, तुमि ताँदेर खबर निये एसो।

गोरा आपन मने एकटु चिन्ता करिल, तार परे हठात् बलिल, "आच्छा, आमि कालइ याब।"

आनन्दमयी किछु आश्चर्य हइलेन।

गोरा एकटु भाबिया आबार कहिल, "ना, काल तो आमार याओया हबे ना।"

कृष्णदयाल। केन।

गोरा। काल आमाके त्रिवेणी येते हबे।

कृष्णदयाल आश्चर्य हइया कहिलेन, "त्रिवेणी !"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा। काल सूर्यग्रहणेर स्नान।

आनन्दमयी। तुइ अवाक करलि, गोरा। स्नान करते चास कलकातार गङ्गा आछे। त्रिवेणी ना हले तोर स्नान हबे ना—तुइ ये देशसुद्ध सकल लोकके छाड़िये उठलि।

गोरा ताहार कोनो उत्तर ना करिया चलिया गेल।

गोरा ये त्रिवेणीते स्नान करिते संकल्प करियाछे ताहार कारण एइ ये, सेखाने अनेक तीर्थयात्री एकत्र हइबे। सेइ जनसाधारणेर सङ्गे गोरा निजेके एक करिया मिलाइया देशेर एकटि बृहत् प्रवाहेर मध्ये आपनाके समर्पण करिते ओ देशेर हृदयेर आन्दोलनके आपनार हृदयेर मध्ये अनुभव करिते चाय। येखाने गोरा एकटुमात्र अवकाश पाय सेखानेइ से ताहार समस्त संकोच, समस्त पूर्वसंस्कार, सबले परित्याग करिया देशेर साधारणेर सङ्गे समान क्षेत्रे नामिया दाँड़ाइया मनेर सङ्गे बलिते चाय, 'आमि तोमादेर, तोमरा आमार।'

७

भोरे उठिया विनय देखिल, रात्रिर मध्येइ आकाश परिष्कार हइया गेछे। सकालवेलाकार आलोटि दुधेर छेलेर हासिर मतो निर्मल हइया फुटियाछे। दुइ-एकटा सादा मेघ नितान्तइ बिना प्रयोजने आकाशे भासिया बेड़ाइतेछे।

बारान्दाय दाँड़ाइया आर-एकटि निर्मल प्रभातेर स्मृतिते यखन से पुलकित हइया उठितेछिल एमन समय देखिल, परेश एक हाते लाठि ओ अन्य हाते सतीशेर हात धरिया रास्ता दिया धीरे धीरे चलियाछेन। सतीश विनयके बारान्दाय देखिते पाइयाइ हाततालि दिया 'विनयबाबु' बलिया चीत्कार करिया उठिल। परेशओ मुख तुलिया चाहिया विनयके देखिते पाइलेन। विनय ताड़ाताड़ि निचे येमन नामिया आसिल, सतीशके लइया परेशओ ताहार बासार मध्ये प्रवेश करिलेन।

सतीश विनयेर हात धरिया कहिल, "विनयबाबु, आपनि ये सेदिन बललेन, आमादेर बाड़िते याबेन, कइ, गेलेन ना तो?"

विनय सस्नेहे सतीशेर पिठे हात दिया हासिते लागिल। परेश सावधाने ताँहार लाठिगाछटि टेबिलेर गाये ठेस दिया दाँड़ कराइया चौकिते बसिलेन ओ कहिलेन, "सेदिन आपनि ना थाकले आमादेर भारि मुशकिल हत। बड़ो उपकार करेछेन।"

विनय व्यस्त हइया कहिल, "की बलेन, कीइ वा करेछि।"

सतीश हठात् ताहाके जिज्ञासा करिल, "आच्छा, विनयबाबु, आपनार कुकुर नेइ?"

विनय हासिया कहिल, "कुकुर? ना, कुकुर नेइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतीश जिज्ञासा करिल, "केन, कुकुर राखेन नि केन ?"

विनय कहिल, "कुकुरेर कथाटा कखनो मने हय नि ।"

परेश कहिलेन, "शुनलुम, सेदिन सतीश आपनार एखाने एसेछिल, खुब बोध हय विरक्त करे गेछे । ओ एत बके ये, ओर दिदि ओके बक्तियार खिलिजि नाम दियेछे ।"

विनय कहिल, "आमिओ खुब बकते पारि, ताइ आमादेर दुजनेर खुब भाव हये गेछे । की बल, सतीशबाबु !"

सतीश ए कथार कोनो उत्तर दिल ना ; किन्तु पाछे ताहार नूतन नामकरण लइया विनयेर काछे ताहार गौरवहानि हय सेइजन्य से व्यस्त हइया उठिल । एवं कहिल, "बेश तो, भालोइ तो । बक्तियार खिलिजि भालोइ तो । आच्छा, विनयबाबु, बक्तियार खिलिजि तो लड़ाइ करेछिल ? से तो बांलादेश जिते नियेछिल ?"

विनय हासिया कहिल, "आगे से लड़ाइ करत, एखन आर लड़ाइयेर दरकार हय ना, एखन से शुधु वक्तृता करे । आर बांलादेश जितेओ नेय ।"

एमनि करिया अनेकक्षण कथावार्ता हइल । परेश सकलेर चेये कम कथा कहियाछिलेन ; तिनि केवल प्रसन्न शान्त मुखे माझे माझे हासियाछेन एवं दुटो-एकटा कथाय योग दियाछेन । विदाय लइबार समय चौकि हइते उठिया बलिलेन, "आमादेर आटात्तर नम्बरेर बाड़िटा एखान थेके बराबर डान-हाति गिये——"

सतीश कहिल, "उनि आमादेर बाड़ि जानेन । उनि ये सेदिन आमार सङ्गे बराबर आमादेर दरजा पर्यन्त गियेछिलेन ।"

ए कथाय लज्जा पाइबार कोनोइ प्रयोजन छिल ना, किन्तु विनय मने मने लज्जित हइया उठिल । येन की-एकटा ताहार धरा पड़िया गेल ।

वृद्ध कहिलेन, "तबे तो आपनि आमादेर बाड़ि जानेन । ता हले यदि कखनो आपनार——"

विनय । से आर बलते हबे ना——यखनइ——

परेश । आमादेर ए तो एकइ पाड़ा, केवल कलकाता बलेइ एतदिन चेनाशोना हय नि ।

विनय रास्ता पर्यन्त परेशके पौंछाइया दिल । द्वारेर काछे किछुक्षण से दाँड़ाइया रहिल । परेश लाठि लइया धीरे धीरे चलिलेन, आर सतीश क्रमागत बकिते बकिते ताँहार सङ्गे सङ्गे चलिल ।

विनय मने मने बलिते लागिल, 'परेशबाबुर मतो एमन वृद्ध देखि नाइ, पायेर धुला लइते इच्छा करे । आर, सतीश छेलेटि की चमत्कार । बाँचिया थाकिले ए एकजन मानुष हइबे——येमन बुद्धि, तेमनि सरलता ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइ वृद्ध एवं बालकटि यतइ भालो होक, एत अल्पक्षणेर परिचये ताहादेर सम्बन्धे एतटा परिमाणे भक्ति ओ स्नेहेर उच्छ्वास साधारणत सम्भवपर हइते पारित ना। किन्तु, विनयेर मनटा एमन अवस्थाय छिल ये, से अधिक परिचयेर अपेक्षा राखे नाइ।

ताहार परे विनय मने मने भाविते लागिल, 'परेशबाबुर बाड़िते याइतेइ हइबे, नहिले भद्रता रक्षा हइबे ना।'

किन्तु, गोरार मुख दिया ताहादेर दलेर भारतवर्ष ताहाके बलिते लागिल, 'ओखाने तोमार यातायात चलिबे ना। खबरदार।'

विनय पदे पदे ताहादेर दलेर भारतवर्षेर अनेक निषेध मानियाछे। अनेक समय द्विधा बोध करियाछे, तबु मानियाछे। आज ताहार मनेर भितरे एकटा विद्रोह देखा दिल। ताहार मने हइते लागिल, भारतवर्ष येन केवल निषेधेरइ मूर्ति।

चाकर आसिया खबर दिल, आहार प्रस्तुत—किन्तु एखनो विनयेर स्नानओ हय नाइ। बारोटा बाजिया गेछे। हठात् एक समये विनय सजोरे माथा झाड़ा दिया कहिल, "आमि खाब ना, तोरा या।" बलिया छाता घाड़े करिया रास्तार बाहिर हइया पड़िल; एकटा चादरओ काँधे लइल ना।

बराबर गोरादेर बाड़िते गिया उपस्थित हइल। विनय जानित, आमहार्स्ट स्ट्रीटे एकटा बाड़ि भाड़ा लइया हिन्दुहितैषीर आपिस बसियाछे। प्रतिदिन मध्याह्ने गोरा आपिसे गिया समस्त बांलादेशे ताहार दलेर लोक येखाने ये आछे सबाइके पत्र लिखिया जाग्रत करिया राखे। एइखानेइ ताहार भक्तरा ताहार मुखे उपदेश शुनिते आसे एवं ताहार सहकारिता करिया निजेके धन्य मने करे।

सेदिनओ गोरा सेइ आपिसेर काजे गियाछिल। विनय एकेबारे येन दौड़िया अन्तःपुरे आनन्दमयीर घरे आसिया उपस्थित हइल। आनन्दमयी तखन भात खाइते बसियाछिलेन एवं लछमिया ताँहार काछे बसिया ताँहाके पाखा करितेछिल।

आनन्दमयी आश्चर्य हइया कहिलेन, "की रे विनय, की हयेछे तोर?"

विनय ताँहार सम्मुखे बसिया पड़िया कहिल, "मा, बड़ो खिदे पेयेछे, आमाके खेते दाओ।"

आनन्दमयी व्यस्त हइया कहिलेन, "तबेइ तो मुशकिले फेललि बामुन ठाकुर चले गेछे—तोरा ये आबार—"

विनय कहिल, "आमि कि बामुन ठाकुरेर रान्ना खेते एलुम। ता हले आमार बासार बामुन की दोष करले। आमि तोमार पातेर प्रसाद खाब, मा! लछमिया, दे तो आमाके एक ग्लास जल एने।"

लछमिया जल आनिया दितेइ विनय ढक् ढक् करिया खाइया फेलिल। तखन आनन्दमयी आर-एकटा थाला आनाइया निजेर पातेर भात सस्नेह सयत्ने माखिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेइ थाले तुलिया दिते थाकिलेन एवं विनय बहुदिनेर बुभुक्षुर मतो ताहाइ खाइते लागिल ।

आनन्दमयीर मनेर एकटा वेदना आज दूर हइल । ताँहार मुखेर प्रसन्नता देखिया विनयेरओ बुकेर एकटा बोझा येन नामिया गेल । आनन्दमयी बालिशेर खोल सेलाइ करिते बसिया गेलेन ; केयाखयेर तैरि करिबार जन्य पाशेर घरे केयाफुल जड़ो हइयाछिल ताहारइ गन्ध आसिते लागिल ; विनय आनन्दमयीर पायेर काछे ऊर्ध्वोत्थित एकटा हाते माथा राखिया आधशोया रकमे पड़िया रहिल एवं पृथिवीर आर समस्त भुलिया ठिक सेइ आगेकार दिनेर मतो आनन्दे बकिया याइते लागिल ।

८

एइ एकटा बाँध भाङिया याइतेइ विनयेर हृदयेर नूतन वन्या आरओ येन उद्दाम हइया उठिल । आनन्दमयीर घर हइते बाहिर हइया रास्ता दिया से येन एकेबारे उड़िया चलिल ; माटिर स्पर्श ताहार येन पाये ठेकिल ना ; ताहार इच्छा करिते लागिल, मनेर ये-कथाटा लइया से ए कयदिन संकोचे पीड़ित हइयाछे ताहाइ आज मुख तुलिया सकलेर काछे घोषणा करिया देय ।

विनय ये-मुहूर्ते ७८ नम्बरेर दरजार काछे आसिया पौंछिल ठिक सेइ समयेइ परेशओ विपरीत दिक दिया सेखाने आसिया उपस्थित हइलेन ।

"आसुन आसुन, विनयबाबु, बड़ो खुशि हलुम ।" एइ बलिया परेश विनयके ताँहार रास्तार धारेर बसिबार घरटाते लइया गिया बसाइलेन । एकटि छोटो टेबिल, ताहार एक धारे पिठओयाला बेञ्चि, अन्य धारे एकटा काठेर ओ बेतेर चौकि ; देयाले एक दिके यिशुखृस्टेर एकटि रङकरा छबि एवं अन्य दिके केशव-बाबुर फोटोग्राफ । टेबिलेर उपर दुइ-चारि दिनेर खबरेर कागज भाँज करा, ताहार उपरे सीसार कागज-चापा । कोणे एकटि छोटो आल्मारि, ताहार उपरेर थाके थियोडोर पार्कारेर बइ सारि सारि साजानो रहियाछे देखा याइतेछे । आल्मारिर माथार उपरे एकटि ग्लोब कापड़ दिया ढाका रहियाछे ।

विनय बसिल । ताहार बुकेर भितर हृत्पिण्ड क्षुब्ध हइया उठिल; मने हइते लागिल, ताहार पिठेर दिकेर खोला दरजा दिया यदि केह घरेर भितरे आसिया प्रवेश करे ।

परेश कहिलेन, "सोमवारे सुचरिता आमार एकटि बन्धुर मेयेके पड़ाते याय ; सेखाने सतीशेर एकटि समवयसि छेले आछे, ताइ सतीशओ तार सङ्गे गेछे । आमि तादेर सेखाने पौंछे दिये फिरे आसछि । आर एकटु देरि हलेइ तो आपनार सङ्गे देखा हत ना ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खबरटा शुनिया विनय एकइ काले एकटा आशाभङ्गेर खोंचा एवं आराम मनेर मध्ये अनुभव करिल। परेशेर सङ्गे ताहार कथावार्ता दिव्य सहज हइया आसिल।

गल्प करिते करिते एके एके परेश आज विनयेर समस्त खबर जानिते पारिलेन। विनयेर बाप-मा नाइ ; खुड़िमाके लइया खुड़ा देशे थाकिया विषयकर्म देखेन। ताहार खुड़तुतो दुइ भाइ ताहार सङ्गे एक बासाय थाकिया पड़ाशुना करित ; बड़ोटि उकिल हइया ताहादेर जेला कोर्टे व्यवसाय चालाइतेछे, छोटोटि कलिकाताय थाकितेइ ओलाउठा हइया मारा गियाछे। खुड़ार इच्छा, विनय डेपुटि म्याजिस्ट्रेटिर चेष्टा करे, किन्तु विनय कोनो चेष्टाइ ना करिया नाना बाजे काजे नियुक्त आछे।

एमनि करिया प्राय एक घण्टा काटिया गेल। बिना प्रयोजने आर बेशिक्षण थाकिले अभद्रता हय, ताइ विनय उठिया पड़िल ; कहिल, "बन्धु सतीशेर सङ्गे आमार देखा हल ना, दुःख रइल; ताके खबर देबेन, आमि एसेछिलुम।"

परेशबाबु कहिलेन, "आर-एकटु बसलेइ तादेर सङ्गे देखा हत। तादेर फेरबार आर बड़ो देरि नेइ।"

एइ कथाटुकुर उपरे निर्भर करिया आबार बसिया पड़िते विनयेर लज्जा बोध हइल। आर-एकटु पीड़ापीड़ि करिले से बसिते पारित ; किन्तु परेश अधिक कथा बलिबार वा पीड़ापीड़ि करिबार लोक नहेन, सुतरां विदाय लइते हइल। परेश बलिलेन, "आपनि माझे माझे एले खुशि हब।"

रास्ताय बाहिर हइया विनय बाड़िर दिके फिरिबार कोनो प्रयोजन अनुभव करिल ना। सेखाने कोनो काज नाइ। विनय कागजे लिखिया थाके ; ताहार इंरेजि लेखार सकले खुब तारिफ करे। किन्तु गत कयदिन हइते, लिखिते बसिले लेखा माथाय आसे ना। टेबिलेर सामने बेशिक्षण बसिया थाकाइ दाय ; मन छट्‌फट् करिया उठे। विनय ताइ आज बिना कारणेइ उलटा दिके चलिल।

दु पा याइतेइ एकटि बालककण्ठेर चीत्कार ध्वनि शुनिते पाइल, "विनयबाबु, विनयबाबु!"

मुख तुलिया देखिल, एकटि भाड़ाटे गाड़िर दरजार काछे झुँकिया पड़िया सतीश ताहाके डाकाडाकि करितेछे। गाड़िर भितरेर आसने खानिकटा शाड़ि, खानिकटा सादा जामार आस्तिन, येटुकु देखा गेल ताहाते आरोहीटि ये के ताहा बुझिते कोनो सन्देह रहिल ना।

बाङालि भद्रतार संस्कार अनुसारे गाड़िर दिके दृष्टि रक्षा करा विनयेर पक्षे शक्त हइया उठिल। इतिमध्ये सेइखानेइ गाड़ि हइते नामिया सतीश आसिया ताहार हात धरिल ; कहिल, "चलुन, आमादेर बाड़ि।"

3

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "आमि ये तोमादेर बाड़ि थेके एखनि आसछि।"

सतीश। वा, आमरा ये छिलुम ना, आवार चलुन।

सतीशेर पीड़ापीड़ि विनय अग्राह्य करिते पारिल ना। बन्दीके लइया बाड़िते प्रवेश करियाइ सतीश उच्चस्वरे कहिल, "बाबा, विनयबाबुके एनेछि।"

वृद्ध घर हइते बाहिर हइया ईषत् हासिया कहिलेन, "शक्त हाते धरा पड़ेछेन, शीघ्र छाड़ा पाबेन ना। सतीश, तोर दिदिके डेके दे।"

विनय घरे आसिया बसिल, ताहार हृत्पिण्ड वेगे उठिते पड़िते लागिल। परेश कहिलेन, "हाँपिये पड़ेछेन बुझि! सतीश भारि दुरन्त छेले।"

घरे यखन सतीश ताहार दिदिके लइया प्रवेश करिल तखन विनय प्रथमे एकटि मृदु सुगन्ध अनुभव करिल, ताहार परे शुनिल परेशबाबु बलितेछेन, "राधे, विनयबाबु एसेछेन। एँके तो तुमि जानइ।"

विनय चकितेर मतो मुख तुलिया देखिल, सुचरिता ताहाके नमस्कार करिया सामनेर चौकिते बसिल। एबार विनय प्रतिनमस्कार करिते भुलिल ना।

सुचरिता कहिल, "उनि रास्ता दिये याच्छिलेन। ओंके देखबामात्र सतीशके आर धरे राखा गेल ना, से गाड़ि थेके नेमेइ ओंके टेने निये एल। आपनि हयतो कोनो काजे याच्छिलेन—आपनार तो कोनो असुविधे हय नि?"

सुचरिता विनयके सम्बोधन करिया कोनो कथा कहिबे विनय ताहा प्रत्याशाइ करे नाइ। से कुण्ठित हइया व्यस्त हइया बलिया उठिल, "ना, आमार कोनो काज छिल ना, असुविधे किछुइ हय नि।"

सतीश सुचरितार कापड़ धरिया टानिया कहिल, "दिदि, चाबिटा दाओ–ना। आमादेर सेइ आर्गिनटा एने विनयबाबुके देखाइ।"

सुचरिता हासिया कहिल, "एइ बुझि शुरू हल! यार सङ्गे बक्तियारेर भाब हबे तार आर रक्षे नेइ—आर्गिन तो ताके शुनतेइ हबे—आरओ अनेक दुःख तार कपाले आछे। विनयबाबु, आपनार एइ बन्धुटि छोटो किन्तु एर बन्धुत्वेर दाय बड़ो बेशि—सह्य करते पारबेन कि ना जानि ने।"

विनय सुचरितार एइरूप अकुण्ठित आलापे केमन करिया बेश सहजे योग दिबे कोनोमतेइ भाबिया पाइल ना। लज्जा करिबे ना, दृढ़ प्रतिज्ञा करियाओ कोनो प्रकारे भाङाचोरा करिया एकटा जवाब दिल, "ना, किछुइ ना—आपनि से—आमि—आमार ओ बेश भालोइ लागे।"

सतीश ताहार दिदिर काछ हइते चाबि आदाय करिया आर्गिन आनिया उपस्थित करिल। एकटा चौका काचेर आवरणेर मध्ये तरङ्गित समुद्रेर अनुकरणे नील-रङ-करा कापड़ेर उपर एकटा खेलार जाहाज रहियाछे। सतीश चाबि दिया दम लागाइतेइ आर्गिनेर सुरे-ताले जाहाजटा दुलिते लागिल एवं सतीश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकबार जाहाजेर दिके ओ एकबार विनयेर मुखेर दिके चाहिया मनेर अस्थिरता संवरण करिते पारिल ना।

एमनि करिया सतीश माझखाने थाकाते अल्प अल्प करिया विनयेर संकोच भाङिया गेल, एवं क्रमे सुचरितार सङ्गे माझे माझे मुख तुलिया कथा कहाओ ताहार पक्षे असम्भव हइल ना।

सतीश अप्रासङ्गिक हठात् एक समय बलिया उठिल, "आपनार बन्धुके एकदिन आमादेर एखाने आनबेन ना?"

इहा हइते विनयेर बन्धु सम्बन्धे प्रश्न उठिया पड़िल। परेशबाबुरा नूतन कलिकाताय आसियाछेन, ताँहारा गोरा सम्बन्धे किछुइ जानितेन ना। विनय ताहार बन्धुर कथा आलोचना करिते करिते उत्साहित हइया उठिल। गोरार ये किरूप असामान्य प्रतिभा, ताहार हृदय ये किरूप प्रशस्त, ताहार शक्ति य किरूप अटल, ताहा बलिते गिया विनय येन कथा शेष करिते पारिल ना। गोरा ये एकदिन समस्त भारतवर्षेर माथार उपरे मध्याह्नसूर्येर मतो प्रदीप्त हइया उठिबे—विनय कहिल, 'ए विषये आमार सन्देहमात्र नाइ।'

बलिते बलिते विनयेर मुखे येन एकटा ज्योति देखा दिल, ताहार समस्त संकोच एकेबारे काटिया गेल। एमन-कि, गोरार मत सम्बन्धे परेशबाबुर सङ्गे दुइ-एकटा वादप्रतिवादओ हइल। विनय बलिल, "गोरा ये हिन्दुसमाजेर समस्तइ असंकोचे ग्रहण करते पारछे तार कारण, से खुब एकटा बड़ो जायगा थेके भारतवर्षके देखछे। तार काछे भारतवर्षेर छोटोबड़ो समस्तइ एकटा महत् ऐक्येर मध्ये, एकटा वृहत् संगीतेर मध्ये, मिले सम्पूर्ण हये देखा दिच्छे। से-रकम करे देखा आमादेर सकलेर पक्षे सम्भव नय बले भारतवर्षके टुकरो टुकरो करे विदेशी आदर्शेर सङ्गे मिलिये तार प्रति केवलइ अविचार करि।"

सुचरिता कहिल, "आपनि कि बलेन जातिभेदटा भालो।"

एमनभावे कहिल येन ओ-सम्बन्धे कोनो तर्कइ चलिते पारे ना।

विनय कहिल, "जातिभेदटा भालोओ नय, मन्दओ नय। अर्थात्, कोथाओ भालो, कोथाओ मन्द। यदि जिज्ञासा करेन, हात जिनिसटा कि भालो, आमि बलब, समस्त शरीरेर सङ्गे मिलिये देखले भालो। यदि बलेन, ओड़बार पक्षे कि भालो, आमि बलब, ना—तेमनि डाना जिनिसटाओ धरबार पक्षे भालो नय।"

सुचरिता उत्तेजित हइया कहिल, "आमि ओ-समस्त कथा बुझते पारि ने। आमि जिज्ञासा करछि, आपनि कि जातिभेद मानेन।"

आर कारओ सङ्गे तर्क उठिले विनय जोर करियाइ बलित, 'हाँ, मानि।' आज ताहार तेमन जोर करिया बलिते बाधिल। इहा कि ताहार भीरुता अथवा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'जातिभेद मानि' बलिले कथाटा यतदूर पौंछे आज ताहार मन ततदूर पर्यन्त याइते स्वीकार करिल ना—ताहा निश्चय बला याय ना। परेश पाछे तर्कटा बेशिदूर याय बलिया एइखानेइ बाधा दिया कहिलेन, "राधे, तोमार माके एवं सकलके डेके आनो—एँर सङ्गे आलाप करिये दिइ।"

सुचरिता घर हइते बाहिर हइया याइतेइ सतीश ताहार सङ्गे बकिते बकिते लाफाइते लाफाइते चलिया गेल।

किछुक्षण परे सुचरिता घरे प्रवेश करिया बलिल, "बाबा, मा तोमादेर उपरेर बारान्दाय आसते बललेन।"

९

उपरे गाड़िबारान्दाय एकटा टेबिले शुभ्र कापड़ पाता, टेबिल घेरिया चौकि साजानो। रेलिङेर बाहिरे कार्निसेर उपरे छोटो छोटो टबे पाताबाहार एवं फुलेर गाछ। बारान्दार उपर हइते रास्तार धारेर शिरीष ओ कृष्णचूड़ा गाछेर वर्षाजलधौत पल्लवित चिक्कणता देखा याइतेछे।

सूर्य तखनओ अस्त याय नाइ; पश्चिम आकाश हइते म्लान रौद्र सोजा हइया बारान्दार एक प्रान्ते आसिया पड़ियाछे।

छाते तखन केह छिल ना। एकटु परेइ सतीश सादा-कालो-रोंयाओयाला एक छोटो कुकुर लइया आसिया उपस्थित हइल। ताहार नाम खुदे। एइ कुकुरेर यतरकम विद्या छिल सतीश ताहा विनयके देखाइया दिल। से एक पा तुलिया सेलाम करिल, माथा माटिते ठेकाइया प्रणाम करिल, एकखण्ड बिस्कुट देखाइतेइ लेजेर उपर बसिया दुइ पा जड़ो करिया भिक्षा चाहिल। एइरूपे खुदे ये ख्याति अर्जन करिल सतीशइ ताहा आत्मसात् करिया गर्व अनुभव करिल—एइ यशोलाभे खुदेर लेशमात्र उत्साह छिल ना; वस्तुत यशेर चेये बिस्कुटटाके से ढेर बेशि सत्य बलिया गण्य करियाछिल।

कोनो एकटा घर हइते माझे माझे मेयेदेर गलार खिल्‌खिल् हासि ओ कौतुकेर कण्ठस्वर एवं ताहार सङ्गे एकजन पुरुषेर गलाओ शुना याइतेछिल। एइ अपर्याप्त हास्यकौतुकेर शब्दे विनयेर मनेर मध्ये एकटा अपूर्व मिष्टतार सङ्गे सङ्गे एकटा येन ईर्षार वेदना वहन करिया आनिल। घरेर भितरे मेयेदेर गलार एइ आनन्देर कलध्वनि वयस हओया अवधि से एमन करिया कखनो शुने नाइ; एइ आनन्देर माधुर्य ताहार एत काछे उच्छ्वसित हइतेछे, अथच से इहा हइते एत दूरे। सतीश ताहार कानेर काछे की बकितेछिल विनय ताहा मन दिया शुनितेइ पारिल ना।

परेशबाबुर स्त्री ताँहार तिन मेयेके सङ्गे करिया छाते आसिलेन; सङ्गे एकजन युवक आसिल, से ताँहादेर दूर आत्मीय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेशबाबुर स्त्रीर नाम वरदासुन्दरी। ताँहार वयस अल्प नहे किन्तु देखिलेइ बोझा याय ये, विशेष यत्न करिया साज करिया आसियाछेन। बड़ोवयस पर्यन्त पाड़ागेंये मेयेर मतो काटाइया हठात् एक समय हइते आधुनिक कालेर सङ्गे समान वेगे चलिबार जन्य व्यस्त हइया पड़ियाछेन ; सेइजन्यइ ताँहार सिल्केर शाड़ि बेशि खस्खस् एवं उँचु गोड़ालिर जुता बेशि खट्खट् शब्द करे। पृथिवीते कोन् जिनिसटा ब्राह्म एवं कोन्टा अब्राह्म ताहारइ भेद लइया तिनि सर्वदाइ अत्यन्त सतर्क हइया थाकेन। सेइजन्यइ राधारानीर नाम परिवर्तन करिया तिनि सुचरिता राखियाछेन। कोनो-एक सम्पर्के ताँहार एक श्वशुर बहुदिन परे विदेशेर कर्मस्थान हइते फिरिया आसिया ताँहादिगके जामाइषष्ठी पाठाइयाछिलेन—परेशबाबु तखन कर्मउपलक्षे अनुपस्थित छिलेन। वरदासुन्दरी एइ जामाइषष्ठीर उपहार समस्त फेरत पाठाइयाछिलेन। तिनि ए-सकल व्यापारके कुसंस्कार ओ पौत्तलिकतार अङ्ग बलिया ज्ञान करेन। मेयेदेर पाये मोजा देओयाके एवं टुपि परिया बाहिरे याओयाके तिनि एमनभावे देखेन, येन ताहाओ ब्राह्मसमाजेर धर्ममतेर एकटा अङ्ग। कोनो ब्राह्म-परिवारे माटिते आसन पातिया खाइते देखिया तिनि आशङ्का प्रकाश करियाछिलेन ये, आजकाल ब्राह्मसमाज पौत्तलिकतार अभिमुखे पिछाइया पड़ितेछे।

ताँहार बड़ो मेयेर नाम लावण्य। से मोटासोटा, हासिखुशि, लोकेर सङ्ग एवं गल्पगुजब भालोबासे। मुखटि गोलगाल, चोख दुटि बड़ो, वर्ण उज्ज्वल श्याम। वेशभूषार व्यापारे से स्वभावतइ किछु ढिला, किन्तु ए-सम्बन्धे ताहार मातार शासने ताहाके चलिते हय। उँचु गोड़ालिर जुता परिते से सुविधा बोध करे ना, तबु ना परिया उपाय नाइ। विकाले साज करिबार समय मा स्वहस्ते ताहार मुखे पाउडार ओ दुइ गाले रङ लागाइया देन। एकटु मोटा बलिया वरदासुन्दरी ताहार जामा एमनि आँट करिया तैरि करियाछेन ये लावण्य यखन साजिया बाहिर हइया आसे तखन मने हय, येन ताहाके पाटेर बस्तार मतो कले चाप दिया आँटिया बाँधा हइयाछे।

मेजो मेयेर नाम ललिता। से बड़ो मेयेर विपरीत बलिलेइ हय। ताहार दिदिर चेये से माथाय लम्बा, रोगा, रङ आर-एकटु कालो ; कथावार्ता बेशि कय ना, से आपनार नियमे चले, इच्छा करिले कड़ा कड़ा कथा शुनाइया दिते पारे। वरदासुन्दरी ताहाके मने मने भय करेन, सहजे ताहाके क्षुब्ध करिया तुलिते साहस करेन ना।

छोटो लीला, ताहार वयस बछर दशेक हइबे। से दौड़धाप-उपद्रव करिते मजबुत ; सतीशेर सङ्गे ताहार ठेलाठेलि मारामारि सर्वदाइ चले। विशेषत खुदे नामधारी कुकुरटार स्वत्वाधिकार लइया उभयेर मध्ये आज पर्यन्त कोनो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मीमांसा हय नाइ। कुकुरेर निजेर मत लइले से बोध हय उभयेर मध्ये काहाकेओ प्रभुरूपे निर्वाचन करित ना; तबु दुजनेर मध्ये से बोध करि सतीशकेइ किञ्चित् पछन्द करे। कारण, लीलार आदरेर वेग संवरण करा एइ छोटो जन्तुटार पक्षे सहज छिल ना। बालिकार आदरेर चेये बालकेर शासन ताहार काछे अपेक्षाकृत सुसह छिल।

वरदासुन्दरी आसितेइ विनय उठिया दाँड़ाइया अवनत हइया ताँहाके प्रणाम करिल। परेशबाबु कहिलेन, "एँरइ बाड़िते सेदिन आमरा——"

वरदा कहिलेन, "ओः। बड़ो उपकार करेछेन——आपनि आमादेर अनेक धन्यवाद जानबेन।"

शुनिया विनय एत संकुचित हइया गेल ये, ठिकमतो उत्तर दिते पारिल ना।

मेयेदेर सङ्गे ये युवकटि आसियाछिल ताहार सङ्गेओ विनयेर आलाप हइया गेल। ताहार नाम सुधीर। से कलेजे बि० ए० पड़े। चेहाराटि प्रियदर्शन, रङ गौर, चोखे चशमा, अल्प गोंफेर रेखा उठियाछे। भावखाना अत्यन्त चञ्चल——एकदण्ड बसिया थाकिते चाय ना, एकटा किछु करिबार जन्य व्यस्त। सर्वदाइ मेयेदेर सङ्गे ठाट्टा करिया विरक्त करिया ताहादिगके अस्थिर करिया राखियाछे। मेयेराओ ताहार प्रति केवलइ तर्जन करितेछे, किन्तु सुधीरके नहिले ताहादेर कोनोमतेइ चले ना। सार्कास देखाइते, जुयलजिकाल गार्डेने लइया याइते, कोनो शखेर जिनिस किनिया आनिते सुधीर सर्वदाइ प्रस्तुत। मेयेदेर सङ्गे सुधीरेर असंकोच हृद्यतार भाव विनयेर काछे अत्यन्त नूतन एवं विस्मयकर ठेकिल। प्रथमटा से एइरूप व्यवहारके मने मने निन्दाइ करिल, किन्तु से निन्दार सङ्गे एकट येन ईर्षार भाव मिशिते लागिल।

वरदासुन्दरी कहिलेन, "मने हच्छे, आपनाके येन दुइ-एक बार समाजे देखेछि।"

विनयेर मने हइल, येन ताहार की एकटा अपराध धरा पड़िल। से अनावश्यक लज्जा प्रकाश करिया कहिल, "हाँ, आमि केशवबाबुर वक्तृता शुनते माझे माझे याइ।"

वरदासुन्दरी जिज्ञासा करिलेन, "आपनि बुझि कलेजे पड़छेन ?"

विनय कहिल, "ना, एखन आर कलेजे पड़ि ने।"

वरदा कहिलेन, "आपनि कलेजे कतदूर पर्यन्त पड़ेछेन ?"

विनय कहिल, "एम० ए० पास करेछि।"

शुनिया एइ बालकेर मतो चेहारा युवकेर प्रति वरदासुन्दरीर श्रद्धा हइल। तिनि निश्वास फेलिया परेशेर दिके चाहिया कहिलेन, "आमार मनु यदि थाकत तबे सेओ एतदिन एम० ए० पास करे बेर हत।"

वरदार प्रथम सन्तान मनोरञ्जन नय बछर वयसे मारा गेछे। ये कोनो युवक कोनो बड़ो पास करियाछे वा बड़ो पद पाइयाछे, भालो बइ लिखियाछे वा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोनो भालो काज करियाछे शोनेन, वरदार तखनइ मने हय, मनु बाँचिया थाकिले ताहार द्वाराओ ठिक एइगुलि घटित। याहा हउक, से यखन नाइ तखन वर्तमाने जनसमाजे ताँहार मेये तिनटिर गुणप्रचारइ वरदासुन्दरीर एकटा विशेष कर्तव्येर मध्ये छिल। ताँहार मेयेरा ये खुब पड़ाशुना करितेछे, ए कथा वरदा विशेष करिया विनयके जानाइलेन। मेम ताँहार मेयेदेर बुद्धि ओ गुणपना सम्बन्धे कबे की बलिया-छिल ताहाओ विनयेर अगोचर रहिल ना। यखन मेये-इस्कुले प्राइज दिबार समये लेप्टेनेन्ट गवर्नर एवं ताँहार स्त्री आसियाछिलेन, तखन ताँहादिगके तोड़ा दिबार जन्य इस्कुलेर समस्त मेयेदेर मध्ये लावण्यकेइ विशेष करिया बाछिया लओया हइयाछिल—एवं गवर्नरेर स्त्री लावण्यके उत्साहजनक की एकटा मिष्ट-वाक्य बलियाछिलेन ताहाओ विनय शुनिल।

अवशेषे वरदा लावण्यके बलिलेन, "ये-सेलाइटार जन्ये तुमि प्राइज पेयेछिले सेइटे निये एस तो, मा।"

एकटा पशमेर सेलाइ-करा टियापाखिर मूर्ति एइ बाड़िर आत्मीय-बन्धुदेर निकट विख्यात हइया उठियाछिल। मेमेर सहयोगिताय एइ जिनिसटा लावण्य अनेक दिन हइल रचना करियाछिल—एइ रचनाय लावण्येर निजेर कृतित्व ये खुब बेशि छिल, ताहाओ नहे—किन्तु नूतन-आलापी मात्रकेइ एटा देखाइते हइबे सेटा धरा कथा। परेश प्रथम प्रथम आपत्ति करितेन, किन्तु सम्पूर्ण निष्फल जानिया एखन आर आपत्तिओ करेन ना। एइ पशमेर टियापाखिर रचनानैपुण्य लइया यखन विनय दुइ चक्षु विस्मये विस्फारित करियाछे तखन बेहारा आसिया एकखानि चिठि परेशेर हाते दिल।

चिठि पड़िया परेश प्रफुल्ल हइया उठिलेन; कहिलेन, "बाबुके उपरे निये आय।"

वरदा जिज्ञासा करिलेन, "के।"

परेश कहिलेन, "आमार छेलेवेलाकार बन्धु कृष्णदयाल ताँर छेलेके आमादेर सङ्गे परिचय करबार जन्ये पाठियेछेन।"

हठात् विनयेर हृत्पिण्ड लाफाइया उठिल एवं ताहार मुख विवर्ण हइया गेल। ताहार परक्षणेइ से हात मुठा करिया वेश एकटु शक्त हइया बसिल—येन कोनो प्रतिकूल पक्षेर विरुद्धे से निजेके दृढ़ राखिबार जन्य प्रस्तुत हइया उठिल। गोरा ये एइ परिवारेर लोकदिगके अश्रद्धार सहित देखिबे ओ विचार करिबे, इहा आगे हइतेइ विनयके येन किछु उत्तेजित करिया तुलिल।

१०

खुन्चेर उपर जलखाबार ओ चायेर सरञ्जाम साजाइया चाकरेर हाते दिया सुचरिता छाते आसिया बसिल एवं सेइ मुहूर्ते बेहारार सङ्गे गोराओ आसिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रवेश करिल। सुदीर्घ शुभ्रकाय गोरार आकृति आयतन ओ साज देखिया सकलेइ विस्मित हइया उठिल।

गोरार कपाले गङ्गामृत्तिकार छाप, परने मोटा धुतिर उपर फिताबाँधा जामा ओ मोटा चादर, पाये शुँड़-तोला कट्कि जुता। से येन वर्तमान कालेर विरुद्धे एक मूर्तिमान विद्रोहेर मतो आसिया उपस्थित हइल। ताहार एरूप साजसज्जा विनयओ पूर्वे कखनो देखे नाइ।

आज गोरार मने एकटा विरोधेर आगुन विशेष करियाइ ज्वलितेछिल। ताहार कारणओ घटियाछिल।

ग्रहणेर स्नान-उपलक्ष्ये कोनो स्टीमार-कोम्पानि काल प्रत्युषे यात्री लइया त्रिवेणी रओना हइयाछिल। पथेर मध्ये मध्ये एक-एक स्टेशन हइते बहुतरो स्त्रीलोक यात्री दुइ-एकजन पुरुष-अभिभावक सङ्गे लइया जाहाजे उठितेछिल। पाछे जायगा ना पाय एजन्य भारि ठेलाठेलि पड़ियाछिल। पाये कादा लइया जाहाजे चड़िबार तक्ताखानार उपरे टानाटानिर चोटे पिछले केह वा असम्वृत अवस्थाय नदीर जलेर मध्ये पड़िया याइतेछे; काहाकेओ वा खालासि ठेलिया फेलिया दितेछे; केह वा निजे उठियाछे किन्तु सङ्गी उठिते पारे नाइ बलिया व्याकुल हइया पड़ितेछे; माझे-माझे दुइ-एक पसला वृष्टि आसिया ताहादिगके भिजाइया दितेछे; जाहाजे ताहादेर बसिबार स्थान कादाय भरिया गियाछे। ताहादेर मुखे चोखे एकटा त्रस्तव्यस्त उत्सुक सकरुण भाव—ताहारा शक्तिहीन अथच ताहारा एत क्षुद्र ये जाहाजेर माल्ला हइते कर्ता पर्यन्त केहइ ताहादेर अनुनये एतटुकु साहाय्य करिबे ना, इहा निश्चय जाने बलिया ताहादेर चेष्टार मध्ये भारि एकटा कातर आशङ्का प्रकाश पाइतेछे। एइरूप अवस्थाय गोरा यथासाध्य यात्रीदिगके साहाय्य करितेछिल। उपरेर फार्स्टक्लासेर डेके एकजन इंरेज एवं एकटि आधुनिक धरनेर बाङालिबाबु जाहाजेर रेलिं धरिया परस्पर हास्यालाप करिते करिते चुरुट मुखे तामाशा देखितेछिल। माझे माझे कोनो यात्रीर विशेष कोनो आकस्मिक दुर्गति देखिया इंरेज हासिया उठितेछिल एवं बाङालिटिओ ताहार सङ्गे योग दितेछिल।

दुइ-तिनटा स्टेशन एइरूपे पार हइले गोरार असह्य हइया उठिल। से उपरे उठिया ताहार वज्रगर्जने कहिल, "धिक तोमादेर! लज्जा नाइ!"

इंरेजटा कठोर दृष्टिते गोरार आपादमस्तक निरीक्षण करिल। बाङालि उत्तर दिल, "लज्जा! देशेर एइ-समस्त पशुवत् मूढ़देर जन्यइ लज्जा।"

गोरा मुख लाल करिया कहिल, "मूढ़ेर चेये बड़ो पशु आछे यार हृदय नेइ।"

बाङालि राग करिया कहिल, "ए तोमार जायगा नय—ए फार्स्ट क्लास।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "ना, तोमार सङ्गे एकत्रे आमार जायगा नय—आमार जायगा ओइ यात्रीदेर सङ्गे। किन्तु, आमि बले याच्छि, आर आमाके तोमादेर एइ क्लासे आसते बाध्य कोरो ना।"

बलिया गोरा हन् हन् करिया निचे चलिया गेल। इंरेज ताहार पर हइते आराम-केदारार दुइ हाताय दुइ पा तुलिया नभेल पड़ाय मनोनिवेश करिल। ताहार सहयात्री बाङालि ताहार सङ्गे पुनराय आलाप करिबार चेष्टा दुइ-एकबार करिल, किन्तु आर ताहा तेमन जमिल ना। देशेर साधारण लोकेर दले से नहे, इहा प्रमाण करिबार जन्य खान्सामाके डाकिया जिज्ञासा करिल, मुरगिर कोनो डिश् आहारेर जन्य पाओया याइबे किना।

खान्सामा कहिल, "ना, केवल रुटि माखन चा आछे।"

शुनिया इंरेजके शुनाइया बाङालिटि इंरेजि भाषाय कहिल, "Creature comforts सम्बन्धे जाहाजेर समस्त बन्दोबस्त अत्यन्त याच्छेताइ।"

इंरेज कोनो उत्तर करिल ना। टेबिलेर उपर हइते ताहार खबरेर कागज उड़िया निचे पड़िया गेल। बाबु चौकि हइते उठिया कागजखाना तुलिया दिल किन्तु थ्यांक्स् पाइल ना।

चन्दननगरे पौंछिया नामिबार समय साहेब सहसा गोरार काछे गिया टुपि एकटु तुलिया कहिल, "निजेर व्यवहारेर जन्य आमि लज्जित—आशा करि, आमाके क्षमा करिबे।"

बलिया से ताड़ाताड़ि चलिया गेल।

किन्तु, शिक्षित बाङालि ये साधारण लोकदेर दुर्गति देखिया विदेशीके डाकिया लइया निजेर श्रेष्ठताभिमाने हासिते पारे, इहार आक्रोश गोराके दग्ध करिते लागिल। देशेर जनसाधारण एमन करिया निजेदेर सकलप्रकार अपमान ओ दुर्व्यवहारेर अधीने आनियाछे, ताहादिगके पशुर मतो लाञ्छित करिले ताहाराओ ताहा स्वीकार करे एवं सकलेर काछेइ ताहा स्वाभाविक ओ संगत बलिया मने हय, इहार मूले ये एकटा देशव्यापी सुगभीर अज्ञान आछे ताहार जन्य गोरार बुक येन फाटिया याइते लागिल। किन्तु, सकलेर चेये ताहार एइ बाजिल ये, देशेर एइ चिरन्तन अपमान ओ दुर्गतिके शिक्षित लोक आपनार गाये लय ना—निजेके निर्ममभावे पृथक करिया लइया अकातरे गौरव बोध करिते पारे। आज ताइ शिक्षित लोकदेर समस्त बइ-पड़ा ओ नकल-करा संस्कारके एकेबारे उपेक्षा करिबार जन्यइ गोरा कपाले गङ्गामृत्तिकार छाप लागाइया ओ एकटा नूतन अद्भुत कट्कि चटि किनिया, परिया, बुक फुलाइया ब्राह्म-बाड़िते आसिया दाँड़ाइल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय मने मने इहा बुझिते पारिल, गोरार आजिकार एइ ये साज इहा युद्धसाज। गोरा की जानि की करिया बसे, एइ भाबिया विनयेर मने एकटा भय, एकटा संकोच एवं एकटा विरोधेर भाव जागिया उठिल।

वरदासुन्दरी यखन विनयेर सङ्गे आलाप करितेछिलेन तखन सतीश अगत्या छातेर एक कोणे एकटा टिनेर लाटिम घुराइया निजेर चित्त विनोदने नियुक्त छिल। गोराके देखिया ताहार लाटिम घोरानो बन्ध हइया गेल ; से धीरे धीरे विनयेर पाशे दाँड़ाइया एकदृष्टे गोराके देखिते लागिल एवं काने काने विनयके जिज्ञासा करिल, "इनिइ कि आपनार बन्धु ?"

विनय कहिल, "हाँ।"

गोरा छाते आसिया मुहूर्तेर एक अंश काल विनयेर मुखेर दिके चाहिया आर येन ताहाके देखितेइ पाइल ना। परेशके नमस्कार करिया से असंकोचे एकटा चौकि टेबिल हइते किछु दूरे सराइया लइया बसिल। मेयेरा ये एखाने कोनो एक जायगाय आछे ताहा लक्ष्य करा से अशिष्टता बलिया गण्य करिल।

वरदासुन्दरी एइ असभ्येर निकट हइते मेयेदिगके लइया चलिया याइबेन स्थिर करितेछिलेन, एमन समय परेश ताँहाके कहिलेन, "एँर नाम गौरमोहन, आमार बन्धु कृष्णदयालेर छेले।"

तखन गोरा ताँहार दिके फिरिया नमस्कार करिल। यदिओ विनयेर सङ्गे आलोचनाय सुचरिता गोरार कथा पूर्वेइ शुनियाछिल, तबु एइ अभ्यागतटिइ ये विनयेर बन्धु, ताहा से बुझे नाइ। प्रथम दृष्टितेइ गोरार प्रति ताहार एकटा आक्रोश जन्मिल। इंरेजि-शेखा कोनो लोकेर मध्ये गोंड़ा हिंदुयानि देखिले सह्य करिते पारे, सुचरितार सेरूप संस्कार ओ सहिष्णुता छिल ना।

परेश गोरार काछे ताँहार बाल्यबन्धु कृष्णदयालेर खबर लइलेन, ताहार परे निजेदेर छात्र-अवस्थार कथा आलोचना करिया बलिलेन, "तखनकार दिने कलेजे आमरा दुजनेइ एक जुड़ि छिलुम, दुजनेइ मस्त कालापाहाड़--किछुइ मानतुम ना--होटेले खाओयाटाइ एकटा कर्तव्य कर्म बले मने करतुम। दुजने कतदिन सन्ध्यार समये गोलदिघिते बसे मुसलमान दोकानेर काबाब खेये, तार परे किरकम करे आमरा हिन्दुसमाजेर संस्कार करब, रातदुपुर पर्यन्त तारइ आलोचना करतुम।"

वरदासुन्दरी जिज्ञासा करिलेन, "एखन तिनि की करेन ?"

गोरा कहिल, "एखन तिनि हिन्दु-आचार पालन करेन।"

वरदा कहिलेन, "लज्जा करे ना ?"

रागे ताँहार सर्वाङ्ग ज्वलितेछिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा एकटु हासिया कहिल, "लज्जा कराटा दुर्बल स्वभावेर लक्षण। केउ केउ बापेर परिचय दिते लज्जा करे।"

वरदा। आगे तिनि ब्राह्म छिलेन ना ?

गोरा। आमिओ तो एक समये ब्राह्म छिलुम।

वरदा। एखन आपनि साकार उपासनाय विश्वास करेन ?

गोरा। आकार जिनिसटाके बिना कारणे अश्रद्धा करब, आमार मने एमन कुसंस्कार नेइ। आकारके गाल दिलेइ कि से छोटो हये याय। आकारेर रहस्य के भेद करते पेरेछे।

परेशबाबु मृदुस्वरे कहिलेन, "आकार ये अन्तविशिष्ट।"

गोरा कहिल, "अन्त ना थाकले ये प्रकाशइ हय ना। अनन्त आपनाके प्रकाश करबार जन्यइ अन्तके आश्रय करेछेन--नइले ताँर प्रकाश कोथाय। यार प्रकाश नेइ तार सम्पूर्णता नेइ। वाक्येर मध्ये येमन भाव तेमनि आकारेर मध्ये निराकार परिपूर्ण।"

वरदा माथा नाड़िया कहिलेन, "निराकारेर चेये आकार सम्पूर्ण, आपनि एमन कथा बलेन ?"

गोरा। आमि यदि नाओ बलतुम ताते किछुइ आसत येत ना। जगते आकार आमार बलार उपर निर्भर करछे ना। निराकारइ यदि यथार्थ परिपूर्णता हत तबे आकार कोथाओ स्थान पेत ना।

सुचरितार अत्यन्त इच्छा करिते लागिल, केह एइ उद्धत युवकके तर्के एकेबारे परास्त लाञ्छित करिया देय। विनय चुप करिया बसिया गोरार कथा शुनितेछे देखिया ताहार मने मने राग हइल। गोरा एतइ जोरेर सङ्गे कथा बलितेछिल ये, एइ जोरके नत करिया दिबार जन्य सुचरितार मनेर मध्येओ येन जोर करिते लागिल।

एमन समये बेहारा चायेर जन्य कात्‌लिते गरम जल आनिल। सुचरिता उठिया चा तैरि करिते नियुक्त हइल। विनय माझे माझे चकितेर मतो सुचरितार मुखेर दिके चाहिया लइल। यदिच उपासना सम्बन्धे गोरार सङ्गे विनयेर मतेर विशेष पार्थक्य छिल ना, तबु गोरा ये एइ ब्राह्म-परिवारेर माझखाने अनाहूत आसिया विरुद्ध मत एमन असंकोचे प्रकाश करिया याइतेछे, इहाते विनयके पीड़ा दिते लागिल। गोरार एइप्रकार युद्धोद्यत आचरणेर सहित तुलना करिया वृद्ध परेशेर एकटि आत्मसमाहित प्रशान्त भाव, सकल प्रकार तर्कवितर्केर अतीत एकटि गभीर प्रसन्नता, विनयेर हृदयके भक्तिते परिपूर्ण करिया तुलिल। से मने मने बलिते लागिल--मतामत किछुइ नय, अन्तःकरणेर मध्ये पूर्णता, स्तब्धता ओ आत्मप्रसाद, इहाइ सकलेर चेये दुर्लभ। कथाटार मध्ये कोन्‌टा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सत्य कोन्‌टा मिथ्या ताहा लइया यतइ तर्क कर ना केन प्राप्तिर मध्ये येटा सत्य सेइटाइ आसल। परेश सकल कथावार्तार मध्ये मध्ये एक-एकबार चोख बुजिया निजेर अन्तरेर मध्ये तलाइया लइतेछिलेन—इहा ताँहार अभ्यास—ताँहार सेइ समयकार अन्तर्निविष्ट शान्त मुखश्री विनय एकदृष्टे देखितेछिल। गोरा ये एइ वृद्धेर प्रति भक्ति अनुभव करिया निजेर वाक्य संयत करितेछिल ना, इहाते विनय बड़ोइ आघात पाइतेछिल।

सुचरिता कयेक पेयाला चा तैरि करिया परेशेर मुखेर दिके चाहिल। काहाके चा खाइते अनुरोध करिबे ना-करिबे ताहा लइया ताहार मने द्विधा हइतेछिल। वरदासुन्दरी गोरार दिके चाहियाइ एकेबारे बलिया बसिलेन, "आपनि ए-समस्त किछु खाबेन ना बुझि!"

गोरा कहिल, "ना।"

वरदा। केन। जात याबे?

गोरा बलिल, "हाँ।"

वरदा। आपनि जात मानेन?

गोरा। जात कि आमार निजेर तैरि ये मानब ना। समाजके यखन मानि तखन जातओ मानि।

वरदा। समाजके कि सब कथाय मानतेइ हबे।

गोरा। ना मानले समाजके भाङा हय।

वरदा। भाङले दोष की।

गोरा। ये-डाले सकले मिले बसे आछि से डाल काटलेइ वा दोष की।

सुचरिता मने मने अत्यन्त विरक्त हइया कहिल, "मा, मिछे तर्क करे लाभ की। उनि आमादेर छोंया खाबेन ना।"

गोरा सुचरितार मुखेर दिके ताहार प्रखर दृष्टि एकबार स्थापित करिल। सुचरिता विनयेर दिके चाहिया ईषत् संशयेर सहित कहिल, "आपनि कि—"

विनय कोनोकाले चा खाय ना, मुसलमानेर तैरि पाँउरुटि-बिस्कुट खाओयाओ अनेक दिन छाड़िया दियाछे, किन्तु आज ताहार ना खाइले नय। से जोर करिया मुख तुलिया बलिल, "हाँ, खाब वइ कि।" बलिया गोरार मुखेर दिके चाहिल। गोरार ओष्ठप्रान्ते ईषत् एकटु कठोर हासि देखा दिल। विनयेर मुखे चा तितो ओ विस्वाद लागिल, किन्तु से खाइते छाड़िल ना।

वरदासुन्दरी मने मने बलिलेन, "आहा, एइ विनय छेलेटि बड़ो भालो।"

तखन तिनि गोरार दिक हइते एकेबारेइ मुख फिराइया विनयेर प्रति मनोनिवेश करिलेन। ताइ देखिया परेश आस्ते आस्ते गोरार काछे ताँहार चौकि टानिया लइया ताहार सङ्गे मृदुस्वरे आलाप करिते लागिलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एमन समय रास्ता दिया चिनेबादामओयाला गरम चिनेबादामभाजा हाँकिया याइतेइ लीला हाततालि दिया उठिल ; कहिल, "सुधीरदा, चिनेबादाम डाको।"

बलितेइ छातेर बारान्दा धरिया सतीश चिनाबादामओयालाके डाकिते लागिल।

इतिमध्ये आर-एकटि भद्रलोक आसिया उपस्थित हइलेन। ताँहाके सकलेइ पानुबाबु बलिया सम्भाषण करिल, किन्तु ताँहार आसल नाम हारानचन्द्र नाग। दलेर मध्ये इँहार विद्वान ओ बुद्धिमान बलिया विशेष ख्याति आछे। यदिओ स्पष्ट करिया कोनो पक्षइ कोनो कथा बले नाइ, तथापि इँहार सङ्गेइ सुचरितार विवाह हइबे, एइ प्रकारेर एकटा सम्भाव्ना आकाशे भासितेछिल। पानुबाबुर हृदय ये सुचरितार प्रति आकृष्ट हइयाछिल, ताहाते काहारओ सन्देह छिल ना एवं इहाइ लइया मेयेरा सुचरिताके सर्वदा ठाट्टा करिते छाड़ित ना।

पानुबाबु इस्कुले मास्टारि करेन। वरदासुन्दरी ताँहाके इस्कुल-मास्टार मात्र जानिया बड़ो श्रद्धा करेन ना। तिनि भावे देखान ये, पानुबाबु ये ताँहार कोनो मेयेर प्रति अनुराग प्रकाश करिते साहस करेन नाइ से भालोइ हइयाछे। ताँहार भावी जामातारा डेपुटिगिरिर लक्ष्यवेधरूप अति दुःसाध्य पणे आवद्ध।

सुचरिता हारानके एक पेयाला चा अग्रसर करिया दितेइ लावण्य दूर हइते ताहार मुखेर दिके चाहिया एकटु मुख टिपिया हासिल। सेइ हासिटुकु विनयेर अगोचर रहिल ना। अति अल्प कालेर मध्येइ दुइ-एकटा विषये विनयेर नजर बेश एकटु तीक्ष्ण एवं सतर्क हइया उठियाछे—दर्शननैपुण्य सम्बन्धे पूर्वे से प्रसिद्ध छिल ना।

एइ ये हारान ओ सुधीर ए बाड़िर मेयेदेर सङ्गे अनेक दिन हइते परिचित, एवं एइ पारिवारिक इतिहासेर सङ्गे एमन भावे जड़ित ये ताहारा मेयेदेर मध्ये परस्पर इङ्गितेर विषय हइया पड़ियाछे, विनयेर बुकेर मध्ये इहा विधातार अविचार बलिया बाजिते लागिल।

एदिके हारानेर अभ्यागमे सुचरितार मन येन एकटु आशान्वित हइया उठिल। गोरार स्पर्धा येमन करिया हउक केह दमन करिया दिले तबे ताहार गायेर ज्वाला मेटे। अन्य समये हारानेर तार्किकताय से अनेकवार विरक्त हइयाछे, किन्तु आज एइ तर्कवीरके देखिया से आनन्देर सङ्गे ताँहाके चा ओ पाँउरुटिर रसद जोगाइया दिल।

परेश कहिल, "पानुबाबु, इनि आमादेर—"

हारान कहिलेन, "ओंके विलक्षण जानि। उनि एक समये आमादेर ब्राह्मसमाजेर एकजन खुब उत्साही सभ्य छिलेन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइ बलिया गोरार सङ्गे कोनोप्रकार आलापेर चेष्टा ना करिया हारान चायेर पेयालार प्रति मन दिलेन।

सेइ समये दुइ-एकजन मात्र बाङालि सिभिल सार्भिसे उत्तीर्ण हइया ए देशे आसियाछेन। सुधीर ताँहादेरइ एकजनेर अभ्यर्थनार गल्प तुलिल। हारान कहिलेन, "परीक्षाय बाङालि यतइ पास करुन, बाङालिर द्वारा कोनो काज हबे ना।"

कोनो बाङालि म्याजिस्ट्रेट वा जज डिस्ट्रिक्टेर भार लइया ये कखनो काज चालाइते पारिबे ना, इहाइ प्रतिपन्न करिबार जन्य हारान बाङालि चरित्रेर नाना दोष ओ दुर्बलतार व्याख्या करिते लागिलेन।

देखिते देखिते गोरार मुख लाल हइया उठिल ; से ताहार सिंहनादके यथासाध्य रुद्ध करिया कहिल, "एइ यदि सत्यइ आपनार मत हय तबे आपनि आरामे एइ टेबिले वसे बसे पाँउरुटि चिबोच्छेन कोन् लज्जाय।"

हारान विस्मित हइया भुरु तुलिया कहिलेन, "की करते बलेन।"

गोरा। हय बाङालि-चरित्रेर कलङ्क मोचन करुन, नय गलाय दड़ि दिये मरुन गे। आमादेर जातेर द्वारा कखनो किछुइ हबे ना, ए कथा कि एतइ सहजे बलबार। आपनार गलाय रुटि बेधे गेल ना ?

हारान। सत्य कथा बलब ना ?

गोरा। राग करबेन ना, किन्तु ए-कथा यदि आपनि यथार्थइ सत्य बले जानतेन ताहले अमन आरामे अत आस्फालन करे बलते पारतेन ना। कथाटि मिथ्ये जानेन बलेइ आपनार मुख दिये बेरोल—हारानबाबु, मिथ्या पाप, मिथ्या निन्दा आरओ पाप, एवं स्वजातिर मिथ्या निन्दार मतो पाप अल्पइ आछे।

हारान क्रोधे अधीर हइया उठिलेन। गोरा कहिल, "आपनि एकलाइ कि आपनार समस्त स्वजातिर चेये बड़ो। राग आपनि करबेन—आर आमादेर पितृपितामहेर हये आमरा समस्त सह्य करब !"

इहार पर हारानेर पक्षे हार माना आरओ शक्त हइया उठिल। तिनि आरओ सुर चड़ाइया बाङालिर निन्दाय प्रवृत्त हइलेन। बाङालि समाजेर नानाप्रकार प्रथार उल्लेखे कहिलेन, "ए समस्त थाकते बाङालिर कोनो आशा नेइ।"

गोरा कहिल, "आपनि याके कुप्रथा बलछेन से केवल इंरेजि बइ मुखस्थ करे बलछेन ; निजे ओ-सम्बन्धे किछुइ जानेन ना। इंरेजेर समस्त कुप्रथाकेओ यखन आपनि ठिक एमनि करेइ अवज्ञा करते पारबेन तखन ए सम्बन्धे कथा कबेन।"

परेश एइ प्रसङ्ग बन्ध करिया दिबार चेष्टा करिलेन, किन्तु क्रुद्ध हारान निवृत्त हइलेन ना। सूर्य अस्त गेल ; मेघेर भितर हइते एकटा अपरूप आरक्त आभाय समस्त आकाश लावण्यमय हइया उठिल ; समस्त तर्केर कोलाहल छापाइया विनयेर प्राणेर भितरे एकटा सुर बाजिते लागिल। परेश ताँहार सायंकालीन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपासनाय मन दिबार जन्य छात हइते उठिया बागानेर प्रान्ते एकटा बड़ो चाँपागाछेर तलाय बाँधानो वेदीते गिया बसिलेन ।

गोरार प्रति वरदासुन्दरीर मन येमन विमुख हइयाछिल हारानओ तेमनि ताँहार प्रिय छिल ना । एइ उभयेर तर्क यखन ताँहार एकेबारे असह्य हइया उठिल तिनि विनयके डाकिया कहिलेन, "आसुन, विनयबाबु , आमरा घरे याइ ।"

वरदासुन्दरीर एइ सस्नेह पक्षपात स्वीकार करिया विनयके छात छाड़िया अगत्या घरेर मध्ये याइते हइल । वरदा ताँहार मेयेदेर डाकिया लइलेन । सतीश तर्केर गतिक देखिया पूर्वेइ चिनाबादामेर किञ्चित् अंश संग्रहपूर्वक खुदे कुकुरके सङ्गे लइया अन्तर्धान करियाछिल ।

वरदासुन्दरीर विनयेर काछे ताँहार मेयेदेर गुणपनार परिचय दिते लागिलेन । लावण्यके बलिलेन, "तोमार सेइ खाताटा एने विनयबाबुके देखाओ-ना ।"

बाड़िर नूतन-आलापीदेर एइ खाता देखानो लावण्येर अभ्यास हइयाछिल । एमन-कि, से इहार जन्य मने मने अपेक्षा करिया थाकित । आज तर्क उठिया पड़ाते से क्षुण्ण हइया पड़ियाछिल ।

विनय खाता खुलिया देखिल, ताहाते कवि मूर एवं लंफेलोर इंरेजि कविता लेखा । हातेर अक्षरे यत्न एवं परिपाट्य प्रकाश पाइतेछे । कवितागुलिर शिरोनामा एवं आरम्भेर अक्षर रोमान छाँदे लिखित ।

एइ लेखागुलि देखिया विनयेर मने अकृत्रिम विस्मय उत्पन्न हइल । तखनकार दिने मूरेर कविता खाताय कपि करिते पारा मेयेदेर पक्षे कम बाहादुरि छिल ना । विनयेर मन यथोचित अभिभूत हइयाछे देखिया वरदासुन्दरी ताँहार मेजो मेयेके सम्बोधन करिया बलिलेन, "ललिता, लक्ष्मी मेये आमार, तोमार सेइ कविताटा—"

ललिता शक्त हइया उठिया कहिल, "ना, मा, आमि पारब ना । से आमार भालो मने नेइ ।"

बलिया से दूरे जानालार काछे दाँड़ाइया रास्ता देखिते लागिल ।

वरदासुन्दरी विनयके बुझाइया दिलेन, मने समस्तइ आछे, किन्तु ललिता बड़ चापा, विद्या बाहिर करिते चाय ना । एइ बलिया ललितार आश्चर्य विद्या-बुद्धिर परिचय-स्वरूप दुइ-एकटा घटना विवृत करिया बलिलेन, ललिता शिशुकाल हइतेइ एइरूप ; कान्ना पाइलेओ मेये चोखेर जल फेलिते चाहित ना । ए-सम्बन्धे बापेर सङ्गे इहार सादृश्य आलोचना करिलेन ।

एइबार लीलार पाला । ताहाके अनुरोध करितेइ से प्रथमे खुब खानिकटे खिल् खिल् करिया हासिया, ताहार परे कल्—टेपा आर्गिनेर मतो अर्थ ना बुझिया "Twinkle twinkle little star" कविताटा गड़गड़ करिया एक निश्वासे बलिया गेल ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइबार संगीतविद्यार परिचय दिबार समय आसियाछे जानिया ललिता घर हइते बाहिर हइया गेल।

बाहिरेर छाते तर्क तखन उद्दाम हइया उठियाछे। हारान तखन रागेर माथाय तर्क छाड़िया गालि दिबार उपक्रम करितेछेन। हारानेर असंहिष्णुताय लज्जित ओ विरक्त हइया सुचरिता गोरार पक्ष अवलम्बन करियाछे। हारानेर पक्षे सेटा किछुमात्र सान्त्वनाजनक वा शान्तिकर हय नाइ।

आकाशेर अन्धकार एवं श्रावणेर मेघ घनाइया आसिल ; बेलफुलेर माला हाँकिया रास्ता दिया फेरिओयाला चलिया गेल। सम्मुखेर रास्ताय कृष्णचूड़ा-गाछेर पल्लवपुञ्जेर मध्ये जोनाकि ज्वलिते लागिल। पाशेर बाड़िर पुकुरेर जलेर उपर एकटा निविड़ कालिमा पड़िया गेल।

सान्ध्य उपासना शेष करिया परेश छाते आसिया उपस्थित हइलेन। ताँहाके देखिया गोरा ओ हारान उभयेइ लज्जित हइया क्षान्त हइल। गोरा उठिया दाँड़ाइया कहिल, "रात हये गेछे, आज तबे आसि।"

विनयओ घर हइते विदाय लइया छाते आसिया देखा दिल। परेश गोराके कहिलेन, "देखो, तोमार यखन इच्छा एखाने एसो। कृष्णदयाल आमार भाइयेर मतो छिलेन। ताँर सङ्गे एखन आमार मतेर मिल नेइ, देखाओ हय ना, चिठिपत्र लेखाओ बन्ध आछे, किन्तु छेलेवेलार बन्धुत्व रक्तेर सङ्गे मिशिये थाके। कृष्णदयालेर सम्पर्के तोमार सङ्गे आमार सम्बन्ध अति निकटेर। ईश्वर तोमार मङ्गल करुन।"

परेशेर सस्नेह शान्त कण्ठस्वरे गोरार एतक्षणकार तर्कताप येन जुड़ाइया गेल। प्रथमे आसिया गोरा परेशके बड़ो एकटा खातिर करे नाइ। याइबार समय यथार्थ भक्तिर सङ्गे ताँहाके प्रणाम करिया गेल। सुचरिताके गोरा कोनोप्रकार विदायसम्भाषण करिल ना। सुचरिता ये सम्मुखे आछे इहा कोनो आचरणेर द्वारा स्वीकार कराकेइ से अशिष्टता बलिया गण्य करिल। विनय परेशके नतभावे प्रणाम करिया सुचरितार दिके फिरिया ताहाके नमस्कार करिल एवं लज्जित हइया ताड़ाताड़ि गोरार अनुसरण करिया बाहिर हइया गेल।

हारान एइ विदायसम्भाषण-व्यापार एड़ाइया घरेर मध्ये गिया टेबिलेर उपरकार एकटि 'ब्रह्मसङ्गीत' बइ लइया ताहार पाता उल्टाइते लागिलेन।

विनय ओ गोरा चलिया याइबामात्र हारान द्रुतपदे छाते आसिया परेशके कहिलेन, "देखुन, सकलेर सङ्गेइ मेयेदेर आलाप करिये देओया आमि भालो मने करि ने।"

सुचरिता भितरे भितरे अत्यन्त क्रुद्ध हइयाछिल, ताइ से धैर्य सम्वरण करिते पारिल ना ; कहिल, "बाबा यदि से-नियम मानतेन ता हले तो आपनार सङ्गेओ आमादेर आलाप हते पारत ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारान कहिलेन, "आलाप-परिचय निजेदेर समाजेर मध्येइ बद्ध हले भालो हय।"

परेश हासिया कहिलेन, "आपनि पारिवारिक अन्तःपुरके आर एकटुखानि बड़ो करे एकटा सामाजिक अन्तःपुर बानाते चान। किन्तु आमि मने करि, नाना मतेर भद्रलोकेर सङ्गे मेयेदेर मेशा उचित ; नइले तादेर बुद्धिके जोर करे खर्व राखा हय। एते भय किम्बा लज्जार कारण तो किछुइ देखि ने।"

हारान। भिन्न-मतेर लोकेर सङ्गे मेयेरा मिशबे ना, एमन कथा बलि ने, किन्तु मेयेदेर सङ्गे किरकम व्यवहार करते हय से भद्रता ये एँरा जानेन ना।

परेश। ना, ना, बलेन की। भद्रतार अभाव आपनि याके बलछेन से एकटा संकोच मात्र—मेयेदेर सङ्गे ना मिशले सेटा केटे याय ना।

सुचरिता उद्धत भावे कहिल, "देखुन पानुबाबु, आजकेर तर्के आमादेर समाजेर लोकेर व्यवहारेइ आमि लज्जित हच्छिलुम।"

इतिमध्ये लीला दौड़िया आसिया 'दिदि', 'दिदि' करिया सुचरितार हात धरिया ताहाके घरे टानिया लइया गेल।

११

सेदिन तर्के गोराके अपदस्थ करिया सुचरितार सम्मुखे निजेर जयपताका तुलिया धरिबार जन्य हारानेर विशेष इच्छा छिल, गोड़ाय सुचरिताओ ताहाइ आशा करियाछिल। किन्तु, दैवक्रमे ठिक ताहार विपरीत घटिल। धर्म-विश्वास ओ सामाजिक मते सुचरितार सङ्गे गोरार मिल छिल ना। किन्तु, स्वदेशेर प्रति ममत्व, स्वजातिर जन्य वेदना ताहार पक्षे स्वाभाविक छिल। यदिच देशेर व्यापार लइया से सर्वदा आलोचना करे नाइ, किन्तु सेदिन स्वजातिर निन्दाय गोरा यखन अकस्मात् वज्रनाद करिया उठिल तखन सुचरितार समस्त मनेर मध्ये ताहार अनुकूल प्रतिध्वनि बाजिया उठियाछिल। एमन बलेर सङ्गे, एमन दृढ़ विश्वासेर सङ्गे देशेर सम्बन्धे केह ताहार सम्मुखे कथा बले नाइ। साधारणत आमादेर देशेर लोकेरा स्वजाति ओ स्वदेशेर आलोचनाय किछु-ना-किछु मुरुब्बियाना फलाइया थाके ; ताहाके गभीर भावे सत्य भावे विश्वास करे ना। एइजन्य मुखे कवित्व करिबार वेलाय देशेर सम्बन्धे याहाइ बलुक, देशेर प्रति ताहादेर भरसा नाइ। किन्तु, गोरा ताहार स्वदेशेर समस्त दुःख-दुर्गतिदुर्बलता भेद करियाओ एकटा महत् सत्यपदार्थके प्रत्यक्षवत् देखिते पाइत—सेइजन्य देशेर दारिद्र्यके किछुमात्र अस्वीकार ना करियाओ से देशेर प्रति एमन एकटि बलिष्ठ श्रद्धा स्थापन करियाछिल। देशेर अन्तर्निहित शक्तिर प्रति एमन ताहार अविचलित विश्वास छिल ये, ताहार काछे आसिले, ताहार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्विधाविहीन देशभक्तिर वाणी शुनिले संशयीके हार मानिते हइत। गोरार एइ अक्षुण्ण भक्तिर सम्मुखे हारानेर अवज्ञापूर्ण तर्क सुचरिताके प्रति मुहूर्ते येन अपमानेर मतो बाजितेछिल। से माझे-माझे संकोच विसर्जन दिया उच्छ्वसित हृदये प्रतिवाद ना करिया थाकिते पारे नाइ।

ताहार परे हारान यखन गोरा ओ विनयेर असाक्षाते क्षुद्र ईर्षाविशत ताहादेर प्रति अभद्रतार अपवाद आरोप करिलेन, तखनओ एइ अन्याय क्षुद्रतार विरुद्धे सुचरिताके गोरादेर पक्षे दाँड़ाइते हइल।

अथच गोरार विरुद्धे सुचरितार मनेर विद्रोह एकेबारेइ ये शान्त हइयाछे ताहाओ नहे। गोरार एकप्रकार गाये-पड़ा उद्धत हिन्दुयानि ताहाके एखनो मने मने आघात करितेछिल। से एकरकम करिया बुझिते पारितेछिल एइ हिन्दुयानिर मध्ये एकटा प्रतिकूलतार भाव आछे—इहा सहज प्रशान्त नहे, इहा निजेर भक्ति-विश्वासेर मध्ये पर्याप्त नहे—इहा अन्यके आघात करिबार जन्य सर्वदाइ उग्रभावे उद्यत।

सेदिन सन्ध्याय सकल कथाय, सकल काजे, आहार करिबार काले, लीलाके गल्प बलिबार समय, क्रमागतइ सुचरितार मनेर तलदेशे एकटा किसेर वेदना केवलइ पीड़ा दिते लागिल—ताहा कोनोमतेइ से दूर करिते पारिल ना। काँटा कोथाय आछे ताहा जानिते पारिले तबे काँटा तुलिया फेलिते पारा याय। मनेर काँटाटि खुँजिया बाहिर करिबार जन्य सेदिन रात्रे सुचरिता सेइ गाड़िबारान्दार छाते एकला बसिया रहिल।

रात्रिर स्निग्ध अन्धकार दिया से निजेर मनेर अकारण ताप येन मुछिया फेलिबार चेष्टा करिल, किन्तु कोनो फल हइल ना। ताहार बुकेर अनिर्देश्य बोझाटार जन्य ताहार काँदिते इच्छा करिल, किन्तु कान्ना आसिल ना।

एकजन अपरिचित युवा कपाले तिलक काटिया आसियाछे, अथवा ताहाके तर्के परास्त करिया ताहार अहंकार नत करा गेल ना, एइजन्यइ सुचरिता एतक्षण धरिया पीड़ा बोध करितेछे, इहार अपेक्षा अद्भुत हास्यकर किछुइ हइते पारे ना। एइ कारणटाके सम्पूर्ण असम्भव बलिया मन हइते से विदाय करिया दिल। तखन आसल कारणटा मने पड़िल एवं मने पड़िया ताहार भारि लज्जा बोध हइल। आज तिन-चार घण्टा सुचरिता सेइ युवकेर सम्मुखे बसिया छिल एवं माझे माझे ताहार पक्ष अवलम्बन करिया तर्केओ योग दियाछे अथच से ताहाके एकेबारे येन लक्ष्यमात्रइ करे नाइ; याइबार समयेओ ताहाके से येन चोखे देखितेइ पाइल ना। एइ परिपूर्ण उपेक्षाइ ये सुचरिताके गभीर भावे बिँधियाछे ताहाते कोन सन्देह नाइ। बाहिरेर मेयेदेर सङ्गे मेलामेशार अनभ्यास थाकिले ये एकटा संकोच जन्मे, विनयेर व्यवहारे ये एकटि संकोचेर परिचय पाओया याय—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेइ संकोचेर मध्ये एकटा सलज्ज नम्रता आछे। गोरार आचरणे ताहार चिह्नमात्रओ छिल ना। ताहार सेइ कठोर एवं प्रबल औदासीन्य सह्य करा वा ताहाके अवज्ञा करिया उड़ाइया देओया सुचरितार पक्षे आज केन एमन असम्भव हइया उठिल। एतबड़ो उपेक्षार सम्मुखेओ से ये आत्मसंवरण ना करिया तर्के योग दियाछिल, निजेर एइ प्रगल्भताय से येन मरिया याइतेछिल। हारानेर अन्याय तर्के एकबार यखन सुचरिता अत्यन्त उत्तेजित हइया उठियाछिल तखन गोरा ताहार मुखेर दिके चाहियाछिल ; से चाहनिते संकोचेर लेशमात्र छिल ना—किन्तु से चाहनिर भितर की छिल ताहाओ बोझा शक्त। तखन कि से मने मने बलितेछिल—ए मेयेटि की निर्लज्ज ! अथवा, इहार अहंकार तो कम नय, पुरुष-मानुषेर तर्के ए अनाहूत योग दिते आसे ? ताहाइ यदि से मने करिया थाके ताहाते की आसे याय। किछुइ आसे याय ना, तबु सुचरिता अत्यन्त पीड़ा बोध करिते लागिल। ए-समस्तइ भुलिया याइते, मुछिया फेलिते से एकान्त चेष्टा करिल, किन्तु कोनोमतेइ पारिल ना। गोरार उपर ताहार राग हइते लागिल—गोराके से कुसंस्काराच्छन्न उद्धत युवक बलिया समस्त मनेर सङ्गे अवज्ञा करिते चाहिल, किन्तु तबु सेइ विपुलकाय वज्रकण्ठ पुरुषेर सेइ निःसंकोच दृष्टिर स्मृतिर सम्मुखे सुचरिता मने मने अत्यन्त छोटो हइया गेल—कोनोमतेइ से निजेर गौरव खाड़ा करिया राखिते पारिल ना।

सकलेर विशेष लक्ष्यगोचर हओया, आदर पाओया, सुचरितार अभ्यस्त हइया गियाछिल। से ये मने मने एइ आदर चाहित ताहा नहे, किन्तु आज गोरार निकट हइते उपेक्षा केन ताहार काछे एत असह्य हइल। अनेक भाबिया सुचरिता शेषकाले स्थिर करिल ये, गोराके से विशेष करिया हार मानाइते इच्छा करियाछिल बलियाइ ताहार अविचलित अनवधान एत करिया हृदये आघात करितेछे।

एमनि करिया निजेर मनखाना लइया टानाछेंड़ा करिते करिते रात्रि बाड़िया याइते लागिल। बाति निबाइया दिया बाड़िर सकलेइ घुमाइते गियाछे। सदर-दरजा बन्ध हइबार शब्द हइल—बोझा गेल बेहारा रान्ना-खाओया सारिया एइबार शुइते याइबार उपक्रम करितेछे। एमन समय ललिता ताहार रात्रिर कापड़ परिया छाते आसिल। सुचरिताके किछुइ ना बलिया ताहार पाश दिया गिया छातेर एक कोणे रेलिङ धरिया दाँड़ाइल। सुचरिता मने मने एकटु हासिल ; बुझिल, ललिता ताहार प्रति अभिमान करियाछे। आज ये ताहार ललितार सङ्गे शुइबार कथा छिल ताहा से एकेबारेइ भुलिया गियाछे। किन्तु, 'भुलिया गेछि' बलिले ललितार काछे अपराध क्षालन हय ना ; कारण भुलिते पाराटाइ सकलेर चेये गुरुतर अपराध। से ये यथासमये प्रतिश्रुति मने कराइया दिबे तेमन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेये नय। एतक्षण से शक्त हइया बिछानाय पड़ियाछिल––यतइ समय याइतेछिल ततइ ताहार अभिमान तीव्र हइया उठितेछिल। अवशेषे यखन नितान्तइ असह्य हइया उठिल तखन से बिछाना छाड़िया केवल नीरवे जानाइते आसिल ये, 'आमि एखनो जागिया आछि।'

सुचरिता चौकि छाड़िया धीरे धीरे ललितार काछे आसिया ताहार गला जड़ाइया धरिल ; कहिल, "ललिता, लक्ष्मी भाइ, राग कोरो ना, भाइ।"

ललिता सुचरितार हात छाड़ाइया लइया कहिल, "ना, राग केन करब। तुमि बोसो ना।"

सुचरिता ताहार हात टानिया लइया कहिल, "चलो, भाइ, शुते याइ।"

ललिता कोनो उत्तर ना करिया चुप करिया दाँड़ाइया रहिल। अवशेषे सुचरिता ताहाके जोर करिया टानिया शोबार घरे लइया गेल।

ललिता रुद्धकण्ठे कहिल, "केन तुमि एत देरि करले। जान एगारोटा बेजेछे? आमि समस्त घड़ि शुनेछि। एखनि तो तुमि घुमिये पड़बे।"

सुचरिता ललिताके बुकेर काछे टानिया लइया कहिल, "आज आमार अन्याय हये गेछे, भाइ।"

येमनि अपराध स्वीकार करा ललितार आर राग रहिल ना। एकेबारे नरम हइया कहिल, "एतक्षण एकला बसे कार कथा भावछिले, दिदि? पानुबाबुर कथा?"

ताहाके तर्जनी दिया आघात करिया सुचरिता कहिल, "दूर!"

पानुबाबुके ललिता सहिते पारित ना। एमन-कि, ताहार अन्य बोनेर मतो ताहाके लइया सुचरिताके ठाट्टा कराओ ताहार पक्षे असाध्य छिल। पानुबाबु सुचरिताके विवाह करिते इच्छा करियाछेन, ए कथा मने करिले ताहार राग हइत।

एकटुखानि चुप करिया ललिता कथा तुलिल, "आच्छा, दिदि, विनयबाबु लोकटि किन्तु बेश। ना?"

सुचरितार मनेर भावटा याचाइ करिबार उद्देश्य ये ए प्रश्नेर मध्ये छिल ना, ताहा बलिते पारि ना।

सुचरिता कहिल, "हाँ, विनयबाबु लोकटि भालो बइ कि––बेश भालोमानुष।"

ललिता ये सुर आशा करियाछिल ताहा तो सम्पूर्ण बाजिल ना। तखन से आबार कहिल, "किन्तु याइ बल, दिदि, आमार गौरमोहनबाबुके एकेबारेइ भालो लागे नि। की रकम कटा कटा रङ, काठखोट्टा चेहारा, पृथिवीर काउके यन ग्राह्यइ करेन ना। तोमार की रकम लागल।"

सुचरिता कहिल, "बड़ो बेशि रकम हिंदुयानि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता कहिल, "ना, ना, आमादेर मेसोमशायेर तो खुबइ हिंदुयानि, किन्तु से आर-एक रकमेर। ए येन—ठिक बलते पारि ने की रकम।"

सुचरिता हासिया कहिल, "की रकमइ बटे।" बलिया गोरार सेइ उच्च शुभ्र ललाटे तिलक-काटा मूर्ति मने आनिया सुचरिता राग करिल। राग करिबार कारण एइ ये, ओइ तिलकेर द्वारा गोरा कपाले बड़ो बड़ो अक्षरे लिखिया राखियाछे ये, 'तोमादेर हइते आमि पृथक।' सेइ पार्थक्येर प्रचण्ड अभिमानके सुचरिता यदि धूलिसात् करिया दिते पारित तबेइ ताहार गायेर ज्वाला मिटित।

आलोचना बन्ध हइल, क्रमे दुइजने घुमाइया पड़िल। रात्रि यखन दुइटा सुचरिता जागिया देखिल, बाहिरे झम् झम् करिया वृष्टि हइतेछे ; माझे माझे ताहादेर मशारिर आवरण भेद करिया विद्युतेर आलो चमकिया उठितेछे ; घरेर कोणे ये प्रदीप छिल सेटा निबिया गेछे। सेइ रात्रिर निस्तब्धताय, अन्धकारे, अविश्राम वृष्टिर शब्दे, सुचरितार मनेर मध्ये एकटा वेदना बोध हइते लागिल। से एपाश ओपाश करिया घुमाइबार अनेक चेष्टा करिल—पाशेइ ललिताके गभीर सुप्तिते मग्न देखिया ताहार ईर्षा जन्मिल, किन्तु किछुतेइ घुम आसिल ना। विरक्त हइया से बिछाना छाड़िया बाहिर हइया आसिल। खोला दरजार काछे दाँड़ाइया सम्मुखेर छातेर दिके चाहिया रहिल—माझे माझे वातासेर वेगे गाये वृष्टिर छाट लागिते लागिल। घुरिया फिरिया आज सन्ध्यावेलाकार समस्त व्यापार तन्न तन्न करिया ताहार मने उदय हइल। सेइ सूर्यास्तरञ्जित गाड़िबारान्दार उपर गोरार उद्दीप्त मुख स्पष्ट छबिर मतो ताहार स्मृतिते जागिया उठिल एवं तखन तर्केर ये-समस्त कथा काने शुनिया भुलिया गियाछिल से-समस्तइ गोरार गभीर प्रबल कण्ठस्वरे जड़ित हइया आगागोड़ा ताहार मने पड़िल। काने बाजिते लागिल, 'आपनारा यादेर अशिक्षित बलेन, आमि तादेरइ दले—आपनारा याके कुसंस्कार बलेन आमार संस्कार ताइ। यतक्षण ना आपनि देशके भालो-बासबेन एवं देशेर लोकेर सङ्गे एक जायगाय एसे दाँड़ाते पारबेन, ततक्षण पर्यन्त आपनार मुख थेके देशेर निन्दा आमि एक वर्णओ सह्य करते पारब ना।' ए कथार उत्तरे पानुबाबु कहिलेन, 'एमन करले देशेर संशोधन हबे की करे।' गोरा गर्जिया उठिया कहिल, 'संशोधन! संशोधन ढेर परेर कथा। संशोधनेर चेयेओ बड़ो कथा भालोबासा, श्रद्धा। आगे आमरा एक हब, ता हलेइ संशोधन भितर थेके आपनिइ हबे। आपनारा ये पृथक हये देशके खण्ड खण्ड करते चान—आपनारा बलेन, देशेर कुसंस्कार आछे, अतएव आमरा सुसंस्कारीर दल आलादा हये थाकब। आमि एइ कथा बलि, आमि कारओ चेये श्रेष्ठ हये कारओ थेके पृथक हब ना, एइ आमार सकलेर चेये बड़ो आकाङ्क्षा—तार पर एक हले कोन् संस्कार थाकबे, कोन् संस्कार याबे, ता आमार देशइ जाने एवं देशेर यिनि विधाता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिनिइ जानेन।' पानुबाबु कहिलेन, 'एमन सकल प्रथा ओ संस्कार आछे या देशके एक हते दिच्छे ना।' गोरा कहिल, 'यदि एइ कथा मने करेन ये आगे सेइ-समस्त प्रथा ओ संस्कारके एके एके उत्पाटित करे फेलबेन, तार परे देश एक हबे, तबे समुद्रके छेंचे फेले समुद्र पार हवार चेष्टा करा हबे। अवज्ञा ओ अहंकार दूर करे, नम्र हये, भालोबेसे निजेके अन्तरेर सङ्गे सकलेर करुन; सेइ भालोबासार काछे सहस्र त्रुटि ओ असम्पूर्णता सहजेइ हार मानबे। सकल देशेर सकल समाजेइ त्रुटि ओ अपूर्णता आछे, किन्तु देशेर लोके स्वजातिर प्रति भालोबासार टाने यतक्षण एक थाके ततक्षण पर्यन्त तार विष काटिये चलते पारे। पचबार कारण हाओयार मध्येइ आछे। किन्तु, बेंचे थाकलेइ सेटा काटिये चलि, मरे गेलेइ पचे उठि। आमि आपनाके बलछि, संशोधन करते यदि आसेन तो आमरा सह्य करब ना, ता आपनाराइ होन वा मिशनारिइ होन।' पानुबाबु कहिलेन, 'केन करबेन ना।' गोरा कहिल, 'करब ना, तार कारण आछे। बाप-मायेर संशोधन सह्य करा याय, किन्तु पाहाराओयालार संशोधने शोधनेर चेये अपमान अनेक बेशि सेइ संशोधन सह्य करते हले मनुष्यत्व नष्ट हय। आगे आत्मीय हबेन, तार परे संशोधक हबेन—नइले आपनार मुखेर भालो कथातेओ आमादेर अनिष्ट हबे।' एमनि करिया एकटि एकटि समस्त कथा आगागोड़ा सुचरितार मने उठिते लागिल एवं एइ सङ्गे मनेर मध्ये एकटा अनिर्देश्य वेदनाओ केवलइ पीड़ा दिते थाकिल। श्रान्त हइया सुचरिता बिछानाय फिरिया आसिल एवं चोखेर उपर करतल चापिया समस्त भावनाके ठेलिया घुमाइबार चेष्टा करिल, किन्तु ताहार मुख ओ कान झाँ झाँ करिते लागिल एवं एइ-समस्त आलोचना भाङिया चुरिया ताहार मनेर मध्ये केवलइ आनागोना करिते थाकिल।

१२

विनय ओ गोरा परेशेर बाड़ि हइते रास्ताय बाहिर हइले विनय कहिल, "गोरा, एकटु आस्ते आस्ते चलो, भाइ—तोमार पा दुटा आमादेर चेये अनेक बड़ो, ओर चालटा एकटु खाटो ना करले तोमार सङ्गे येते आमरा हाँपिये पड़ि।"

गोरा कहिल, "आमि एकलाइ येते चाइ, आमार आज अनेक कथा भाबबार आछे।"

बलिया ताहार स्वाभाविक द्रुत गतितें से वेगे चलिया गेल।

विनयेर मने आघात लागिल। से आज गोरार विरुद्धे विद्रोह करिया ताहार नियम भङ्ग करियाछे। से-सम्बन्धे गोरार काछे तिरस्कार भोग करिले से खुशि हइत। एकटा झड़ हइया गेलेइ ताहादेर चिरदिनेर बन्धुत्वेर आकाश हइते गुमट काटिया याइत एवं से हाँप छाड़िया बाँचित।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताहा छाड़ा आर-एकटा कथा ताहाके पीड़ा दितेछिल। आज हठात् गोरा परेशेर बाड़िते प्रथम आसियाइ विनयके सेखाने बन्धुभावे बसिया थाकिते देखिया निश्चयइ मने करियाछे, विनय ए बाड़िते सर्वदाइ यातायात करे। अवश्य, यातायात करिले ये कोनो अपराध आछे ताहा नय ; गोरा याहाइ बलुक, परेश-बाबुर सुशिक्षित परिवारेर सङ्गे अन्तरङ्ग भावे परिचित हइबार सुयोग पाओया विनय एकटा विशेष लाभ बलिया गण्य करितेछे। इँहादेर सङ्गे मेशामेशि कराते गोरा यदि कोनो दोष देखे तबे सेटा ताहार नितान्त गोंड़ामि। किन्तु पूर्वेर कथावार्ताय गोरा नाकि जानियाछे ये, विनय परेशबाबुर बाड़िते याओया-आसा करे ना ; आज सहसा ताहार मने हइते पारे ये, से-कथाटा सत्य नय। विशेषत वरदासुन्दरी ताहाके विशेष करिया घरे डाकिया लइया गेलेन, सेखाने ताँहार मेयेदेर सङ्गे ताहार आलाप हइते लागिल—गोरार तीक्ष्ण लक्ष्य हइते इहा एड़ाइया याय नाइ। मेयेदेर सङ्गे एइरूप मेलामेशाय ओ वरदासुन्दरीर आत्मीयताय मने मने विनय भारि एकटा गौरव ओ आनन्द अनुभव करितेछिल—किन्तु सेइ सङ्गे एइ परिवारे गोरार सङ्गे ताहार आदरेर पार्थक्य ताहाके भितरे भितरे बाजितेछिल। आज पर्यन्त एइ दुइ सहपाठीर निविड़ बन्धुत्वेर माझखाने केहइ बाधा-स्वरूप दाँड़ाय नाइ। एकबार केवल गोरार ब्राह्मसामाजिक उत्साहे उभयेर बन्धुत्वे एकटा क्षणिक आच्छादन पड़ियाछिल—किन्तु पूर्वेइ बलियाछि, विनयेर काछे मत जिनिसटा खुब एकटा बड़ो व्यापार नहे ; से मत लइया यतइ लड़ालड़ि करुक-ना केन, मानुषइ ताहार काछे बेशि सत्य। एबारे ताहादेर बन्धुत्वेर माझखाने मानुषेर आड़ाल पड़िबार उपक्रम हइयाछे बलिया से भय पाइयाछे। परेशेर परिवारेर सहित सम्बन्धके विनय मूल्यवान बलिया ज्ञान करितेछे, कारण, ताहार जीवने ठिक एमन आनन्देर आस्वादन से आर कखनो पाय नाइ—किन्तु गोरार बन्धुत्व विनयेर जीवनेर अङ्गीभूत ; सेइ बन्धुत्व हइते विरहित जीवनकेइ से कल्पना करिते पारे ना।

ए-पर्यन्त कोनो मानुषकेइ विनय गोरार मतो ताहार हृदयेर एत काछे आसिते देय नाइ। आज पर्यन्त से केवल बइ पड़ियाछे एवं गोरार सङ्गे तर्क करियाछे, झगड़ा करियाछे, आर गोराकेइ भालो बासियाछे ; संसारे आर-काहाकेओ किछुमात्र आमल दिबार अवकाशइ हय नाइ। गोरारओ भक्तसम्प्रदायेर अभाव नाइ, किन्तु बन्धु विनय छाड़ा आर-केहइ छिल ना। गोरार प्रकृतिर मध्ये एकटा निःसङ्गतार भाव आछे—एदिके से सामान्य लोकेर सङ्गे मिशिते अवज्ञा करे ना, अथच नानाविध लोकेर सङ्गे घनिष्ठता करा ताहार पक्षे एकेबारेइ असम्भव। अधिकांश लोकइ ताहार सङ्गे एकटा दूरत्व अनुभव ना करिया थाकिते पारे ना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज विनय बुझिते पारिल, परेशबाबुर परिजनदेर प्रति ताहार हृदय गभीरतर रूपे आकृष्ट हइतेछे। अथच आलाप बेशिदिनेर नहे। इहाते से गोरार काछे येन एकटा अपराधेर लज्जाबोध करिते लागिल।

एइ-ये वरदासुन्दरी आज विनयके ताँहार मेयेदेर इंरेजि हस्तलिपि ओ शिल्प-काज देखाइया ओ आवृत्ति शुनाइया मातृगर्व प्रकाश करितेछिलेन, गोरार काछे ये इहा किरूप अवज्ञाजनक ताहा विनय मने मने सुस्पष्ट कल्पना करितेछिल। वस्तुतइ इहार मध्ये यथेष्ट हास्यकर व्यापार छिल; एवं वरदासुन्दरीर मेयेरा ये अल्पस्वल्प इंरेजि शिखियाछे, इंरेज मेमेर काछे प्रशंसा पाइयाछे एवं लेप्टेनान्ट गवर्नरेर स्त्रीर काछे क्षणकालेर जन्य प्रश्रय लाभ करियाछे, एइ गर्वेर मध्ये एक हिसाबे एकटा दीनताओ छिल। किन्तु ए-समस्त बुझिया, जानियाओ विनय एइ व्यापारटाके गोरार आदर्श अनुसारे घृणा करिते पारे नाइ। ताहार ए-समस्त बेश भालोइ लागितेछिल। लावण्येर मतो मेये—मेयेटि दिव्य सुन्दर देखिते, ताहाते कोनो सन्देह नाइ—विनयके निजेर हातेर लेखा मूरेर कविता देखाइया ये बेश एकटु अहंकार बोध करितेछिल, इहाते विनयेरओ अहंकारेर तृप्ति हइयाछिल। वरदासुन्दरीर मध्ये ए कालेर ठिक रङटि धरे नाइ अथच तिनि अतिरिक्त उदग्रभावे ए-कालीयता फलाइते व्यस्त—विनयेर काछे एइ असामञ्जस्येर असंगतिटा धरा पड़े नाइ ये ताहा नहे, तबुओ वरदासुन्दरीके विनयेर बेश भालो लागियाछिल; ताँहार अहंकार ओ असहिष्णुतार सारल्यटुकुते विनयेर प्रीति बोध हइयाछिल। मेयेरा ये ताहादेर हासिर शब्दे घर मधुर करिया राखियाछे, चा तैरि करिया परिवेषण करितेछे, निजेदेर हातेर शिल्पे घरेर देयाल साजाइयाछे, एवं सेइ सङ्गे इंरेजि कविता पड़िया उपभोग करितेछे, इहा यतइ सामान्य हउक, विनय इहातेइ मुग्ध हइयाछे। विनय एमन रस ताहार मानवसङ्गविरल जीवने आर कखनो पाय नाइ। एइ मेयेदेर वेशभूषा हासिकथा काजकर्म लइया कत मधुर छबिइ ये से मने मने आँकिते लागिल ताहार आर संख्या नाइ। शुधु बइ पड़िया एवं मत लइया तर्क करिते करिते ये-छेले कखन यौवने पदार्पण करियाछे जानितेओ पारे नाइ, ताहार काछे परेशेर ओइ सामान्य बासाटिर अभ्यन्तरे एक नूतन एवं आश्चर्य जगत् प्रकाश पाइल।

गोरा ये विनयेर सङ्ग छाड़िया राग करिया चलिया गेल, से-रागके विनय अन्याय मने करिते पारिल ना। एइ दुइ बन्धुर बहुदिनेर सम्बन्धे एतकाल परे आज एकटा सत्यकार व्याघात आसिया उपस्थित हइयाछे।

वर्षारात्रिर स्तब्ध अन्धकारके स्पन्दित करिया माझे माझे मेघ डाकिया उठिल। विनयेर मने अत्यन्त एकटा भार बोध हइते लागिल। ताहार मने हइल, ताहार जीवन चिरदिन ये-पथ बाहिया आसितेछिल आज ताहा छाड़िया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया आर-एकटा नूतन पथ लइयाछे। एइ अन्धकारेर मध्ये गोरा कोथाय गेल एवं से कोथाय चलिल।

विच्छेदेर मुखे प्रेमेर वेग बाड़िया उठे। गोरार प्रति प्रेम विनयेर हृदये ये कत वृहत एवं कत प्रबल आज सेइ प्रेमे आघात लागिबार दिने ताहा विनय अनुभव करिल।

बासाय आसिया रात्रिर अन्धकार एवं घरेर निर्जनताके विनयेर अत्यन्त निविड़ एवं शून्य बोध हइते लागिल। गोरार बाड़ि याइबार जन्य एकबार से बाहिरे आसिल ; किन्तु आज रात्रे गोरार सङ्गे ये ताहार हृदयेर मिलन हइते पारिबे, एमन से आशा करिते पारिल ना ; ताइ से आबार फिरिया गिया श्रान्त हइया बिछानार मध्ये शुइया पड़िल।

परेर दिन सकाले उठिया ताहार मन हालका हइया गेल। रात्रे कल्पनाय से आपनार वेदनाके अनावश्यक अत्यन्त बाड़ाइया तुलियाछिल—सकाले गोरार सहित बन्धुत्व एवं परेशेर परिवारेर सहित आलाप, ताहार काछे एकान्त परस्पर-विरोधी बलिया बोध हइल ना। व्यापारखाना एमन की गुरुतर, एइ बलिया काल रात्रिकार मन:पीड़ाय आज विनयेर हासि पाइल।

विनय काँधे एकखाना चादर लइया द्रुतपदे गोरार बाड़ि आसिया उपस्थित हइल। गोरा तखन ताहार निचेर घरे बसिया खबरेर कागज पड़ितेछिल। विनय यखन रास्ताय तखनइ गोरा ताहाके देखिते पाइयाछिल, किन्तु आज विनयेर आगमने खबरेर कागज हइते ताहार दृष्टि उठिल ना। विनय आसियाइ कोनो कथा ना बलिया फस् करिया गोरार हात हइते कागजखाना काड़िया लइल।

गोरा कहिल, "बोध करि, तुमि भुल करेछ—आमि गौरमोहन—एकजन कुसंस्काराच्छन्न हिन्दु।"

विनय कहिल, "भुल तुमिइ हयतो करछ। आमि हच्छि श्रीयुक्त विनय—उक्त गौरमोहनेर कुसंस्काराच्छन्न बन्धु।"

गोरा। किन्तु गौरमोहन एतइ बेहाया ये, से तार कुसंस्कारेर जन्य कारओ काछे कोनोदिन लज्जा बोध करे ना।

विनय। विनयओ ठिक तद्रूप। तबे किना से निजेर संस्कार निये तेड़े अन्यके आक्रमण करते याय ना।

देखिते देखिते दुइ बन्धुते तुमुल तर्क बाधिया उठिल। पाड़ासुद्ध लोक बुझिते पारिल, आज गोरार सङ्गे विनयेर साक्षात् घटियाछे।

गोरा कहिल, "तुमि ये परेशबाबुर बाड़िते यातायात करछ, से-कथा सेदिन आमार काछे अस्वीकार करार की दरकार छिल।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय। कोनो दरकार-वशत अस्वीकार करि नि--यातायात करि ने बलेइ अस्वीकार करेछिलुम। एतदिन परे काल प्रथम ताँदेर बाड़िते प्रवेश करेछि।

गोरा। आमार सन्देह हच्छे, अभिमन्युर मतो तुमि प्रवेश करबार रास्ताइ जान, बेरोबार रास्ता जान ना।

विनय। ता हते पारे--ओइटे हयतो आमार जन्मगत प्रकृति। आमि याके श्रद्धा करि वा भालोबासि ताके आमि त्याग करते पारि ने। आमार एइ स्वभावेर परिचय तुमिओ पेयेछ।

गोरा। एखन थेके ता हले ओखाने यातायात चलते थाकबे ?

विनय। एकला आमारइ ये चलते थाकबे, एमन की कथा आछे। तोमारओ तो चलत्शक्ति आछे, तुमि तो स्थावर पदार्थ नओ।

गोरा। आमि तो याइ एवं आसि, किन्तु तोमार ये लक्षण देखलुम तुमि ये एकेबारे याबारइ दाखिल। गरम चा की रकम लागल।

विनय। किछु कड़ा लेगेछिल।

गोरा। तबे ?

विनय। ना खाओयाटा तार चेये बेशि कड़ा लागत।

गोरा। समाजपालनटा ता हले कि केवलमात्र भद्रतापालन ?

विनय। सब समये नय। किन्तु देखो, गोरा, समाजेर सङ्गे येखाने हृदयेर संघात बाधे सेखाने आमार पक्षे--

गोरा अधीर हइया उठिया विनयके कथाटा शेष करितेइ दिल ना। से गर्जिया कहिल, "हृदय ! समाजके तुमि छोटो करे तुच्छ करे देख बलेइ कथाय कथाय तोमार हृदयेर संघात बाधे। किन्तु समाजके आघात करले तार वेदना ये कतदूर पर्यन्त गिये पौंछय ता यदि अनुभव करते ता हले तोमार ओइ हृदयटार कथा तुलते तोमार लज्जा बोध हत। परेशबाबुर मेयेदेर मने एकटुखानि आघात दिते तोमार भारि कष्ट लागे--किन्तु आमार कष्ट लागे, एतटुकुर जन्ये समस्त देशके यखन अनायासे आघात करते पार।"

विनय कहिल, "तबे सत्य कथा बलि भाइ, गोरा। एक पेयाला चा खेले समस्त देशके यदि आघात करा हय तबे से-आघाते देशेर उपकार हबे। तार थेके बाँचिये चलले देशटाके अत्यन्त दुर्बल, बाबु करे तोला हबे।"

गोरा। ओगो मशाय, ओ-समस्त युक्ति आमि जानि--आमि ये एकेबारे अबुझ ता मने कोरो ना। किन्तु ए-समस्त एखनकार कथा नय। रुगि छेले यखन ओषुध खेते चाय ना, मा तखन सुस्थ शरीरेओ निजे ओषुध खेये ताके जानाते चाय ये तोमार सङ्गे आमार एकदशा--एटा तो युक्तिर कथा नय, एटा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भालोबासार कथा। एइ भालोबासा ना थाकले यतइ युक्ति थाक् ना, छेलेर सङ्गे मायेर योग नष्ट हय। ता हले काजओ नष्ट हय। आमिओ चायेर पेयाला निये तर्क करि ना—किन्तु देशेर सङ्गे विच्छेद आमि सह्य करते पारि ना—चा ना खाओया तार चेये ढेर सहज—परेशबाबुर मेयेर मने कष्ट देओया तार चेये ढेर छोटो। समस्त देशेर सङ्गे एकात्म हये मेलाइ आमादेर एखनकार अवस्थाय सकलेर चेये प्रधान काज। यखन मिलन हये याबे तखन चा खाबे कि ना-खाबे दु कथाय से तर्केर मीमांसा हये याबे।

विनय। ता हले आमार द्वितीय पेयाला चा खाबार अनेक विलम्ब आछे देखछि।

गोरा। ना, बेशि विलम्ब करबार दरकार नेइ। किन्तु, विनय, आमाके आर केन। हिन्दुसमाजेर अनेक अप्रिय जिनिसेर सङ्गे सङ्गे आमाकेओ छाड़बार समय एसेछे। नइले परेशबाबुर मेयेदेर मने आघात लागबे।

एमन समय अविनाश घरे आसिया प्रवेश करिल। से गोरार शिष्य। गोरार मुख हइते से याहा शोने ताहाइ से निजेर बुद्धिर द्वारा छोटो एवं निजेर भाषार द्वारा विकृत करिया चारि दिके बलिया बेड़ाय। गोरार कथा याहारा किछुइ बुझिते पारे ना, अविनाशेर कथा ताहारा बेश बोझे ओ प्रशंसा करे।

विनयेर प्रति अविनाशेर अत्यन्त एकटा ईर्षार भाव आछे। ताइ से जो पाइलेइ विनयेर सङ्गे निर्बोधेर मतो तर्क करिते चेष्टा करे। विनय ताहार मूढ़ताय अत्यन्त अधीर हइया उठे; तखन गोरा अविनाशेर तर्क निजे तुलिया लइया विनयेर सङ्गे युद्धे प्रवृत्त हय। अविनाश मने करे ताहारइ युक्ति येन गोरार मुख दिया बाहिर हइतेछे।

अविनाश आसिया पड़ाते गोरार सङ्गे मिलन-व्यापारे विनय बाधा पाइल। से तखन उठिया उपरे गेल। आनन्दमयी ताँहार भाँड़ार घरेर सम्मुखेर बारान्दाय बसिया तरकारी कुटितेछिलेन।

आनन्दमयी कहिलेन, "अनेकक्षण थेके तोमादेर गला शुनते पाच्छि। एत सकाले ये? जलखाबार खेये बेरियेछ तो?"

अन्य दिन हइले विनय बलित, 'ना, खाइ नाइ'—एवं आनन्दमयीर सम्मुखे बसिया ताहार आहार जमिया उठित। किन्तु आज बलिल, "ना, मा, खाब ना—खेयेइ बेरियेछि।"

आज विनय गोरार काछे अपराध बाड़ाइते इच्छा करिल ना। परेशबाबुर सङ्गे ताहार संस्रवेर जन्य गोरा ये एखनो ताहाके क्षमा करे नाइ, ताहाके एकटु येन दूरे ठेलिया राखितेछे, इहा अनुभव करिया ताहार मनेर भितरे भितरे एकटा क्लेश हइतेछिल। से पकेट हइते छुरि बाहिर करिया आलुर खोसा छाड़ाइते बसिया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिनिट पनेरो परे निचे गिया देखिल, गोरा अविनाशके लइया बाहिर हइया गेछे। गोरार घरे विनय अनेकक्षण चुप करिया बसिया रहिल। ताहार परे खबरेर कागज हाते लइया शून्यमने विज्ञापन देखिते लागिल। ताहार पर दीर्घनिश्वास फेलिया बाहिर हइया चलिया गेल।

१३

मध्याह्ने गोरार काछे याइबार जन्य विनयेर मन आबार चञ्चल हइया उठिल। विनय गोरार काछे निजेके नत करिते कोनोदिन संकोच बोध करे नाइ। किन्तु निजेर अभिमान ना थाकिलेओ बन्धुत्वेर अभिमानके ठेकानो शक्त। परेशबाबुर काछे धरा दिया विनय गोरार प्रति ताहार एतदिनकार निष्ठाय एकटु येन खाटो हइयाछे बलिया अपराध अनुभव करितेछिल बटे, किन्तु सेजन्य गोरा ताहाके परिहास ओ भर्त्सना करिबे एइ पर्यन्तइ आशा करियाछिल, ताहाके ये एमन करिया ठेलिया राखिबार चेष्टा करिबे ताहा से मनेओ करे नाइ। बासा हइते खानिकटा दूर बाहिर हइया विनय आबार फिरिया आसिल ; बन्धुत्व पाछे अपमानित हय, एइ भये से गोरार बाड़िते याइते पारिल ना।

मध्याह्ने आहारेर पर गोराके एकखाना चिठि लिखिबे बलिया कागज कलम लइया विनय बसियाछे ; बसिया अकारणे कलमटाके भोंता अपवाद दिया एकटा छुरि लइया अतिशय यत्ने एकटु एकटु करिया ताहार संस्कार करिते लागियाछे, एमन समय निचे हइते 'विनय' बलिया डाक आसिल। विनय कलम फेलिया ताड़ाताड़ि निचे गिया बलिल, "महिमदादा, आसुन, उपरे आसुन।"

महिम उपरेर घरे आसिया विनयेर खाटेर उपर बेश चौका हइया बसिलेन एवं घरेर आसबाबपत्र बेश भालो करिया निरीक्षण करिया कहिलेन, "देखो, विनय, तोमार बासा ये आमि चिनि ने ता नय——माझे माझे तोमार खबर निये याइ, एमन इच्छाओ करे। किन्तु, आमि जानि, तोमरा आजकालकार भालो छेले, तोमादेर एखाने तामाकटि पाबार जो नेइ, ताइ विशेष प्रयोजन ना हले——"

विनयके व्यस्त हइया उठिते देखिया महिम कहिलेन, "तुमि भाबछ, एखनि बाजार थेके नतुन हुँको किने एने आमाके तामाक खाओयाबे, से-चेष्टा कोरो ना। तामाक ना दिले क्षमा करते पारब, किन्तु नतुन हुँकोय आनाड़ि हातेर साजा तामाक आमार सह्य हबे ना।"

एइ बलिया महिम बिछाना हइते एकटा हातपाखा तुलिया लइया हाओया खाइते खाइते कहिलेन, "आज रविवारेर दिवानिद्राटा सम्पूर्ण माटि करे तोमार एखाने एसेछि, तार एकटु कारण आछे। आमार एकटि उपकार तोमाके करतेइ हबे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय "की उपकार" जिज्ञासा करिल। महिम कहिलेन, "आगे कथा दाओ, तबे बलब।"

विनय। आमार द्वारा यदि सम्भव हय तबे तो ?

महिम। केवलमात्र तोमार द्वाराइ सम्भव। आर किछु नय, तुमि एकबार 'हाँ' बललेइ हय।

विनय। आमाके एत करे केन बलछेन। आपनि तो जानेन, आमि आपनादेर घरेरइ लोक--पारले आपनार उपकार करब ना, ए हतेइ पारे ना।

महिम पकेट हइते एकटा पानेर दोना बाहिर करिया ताहा हइते गोटा दुयेक पान विनयके दिया बाकि तिनटे निजेर मुखे पुरिलेन ओ चिबाइते चिबाइते कहिलेन, "आमार शशिमुखीके तो तुमि जानइ। देखते शुनते नेहात मन्द नय, अर्थात बापेर मतो हय नि। वयस प्राय दशेर काछाकाछि हल, एखन ओके पात्रस्थ करबार समय हयेछे। कोन् लक्ष्मीछाड़ार हाते पड़बे, एइ भेबे आमार तो रात्रे घुम हय ना।"

विनय कहिल, "व्यस्त हच्छेन केन, एखनो समय आछे।"

महिम। निजेर मेये यदि थाकत तो बुझते केन व्यस्त हच्छि। बछर गेलेइ वयेस आपनि बाड़े, किन्तु पात्र तो आपनि आसे ना। काजेइ दिन यत याय मन ततइ व्याकुल हये ओठे। एखन, तुमि यदि एकटु आश्वास दाओ ता हले ना हय दु-दिन सबुर करतेओ पारि।

विनय। आमार तो बेशि लोकेर सङ्गे आलाप-परिचय नेइ--कलकातार मध्ये आपनादेर बाड़ि छाड़ा आर-कोनो बाड़ि जानि ने बललेइ हय--तबु आमि खोंज करे देखब।

महिम। शशिमुखीर स्वभावचरित्र तो जान।

विनय। जानि बइ कि। ओके एतटुकु वेला थेके देखे आसछि--लक्ष्मी मेये।

महिम। तबे आर बेशिदूर खोंज करबार की दरकार, बापु। ओ मेये तोमारइ हाते समर्पण करब।

विनय व्यस्त हइया उठिया कहिल, "बलेन की।"

महिम। केन, अन्याय की बलेछि। अवश्य, कुले तोमरा आमादेर चेये अनेक बड़ो--किन्तु, विनय, एत पड़ाशुना करे यदि तोमरा कुल मानबे तबे हल की !

विनय। ना, ना, कुलेर कथा हच्छे ना, किन्तु वयेस ये--

महिम। बल की ! शशीर वयस कम की हल ! हिंदुर घरेर मेये तो मेमसाहेब नय--समाजके तो उड़िये दिले चले ना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिम सहजे छाड़िबार पात्र नहेन—विनयके तिनि अस्थिर करिया तुलिलेन। अवशेषे विनय कहिल, "आमाके एकटु भावबार समय दिन।"

महिम। आमि तो आज रात्रेइ दिन स्थिर करछि ने।

विनय। तबु, बाड़िर लोकदेर—

महिम। हाँ, से तो बटेइ। ताँदेर मत निते हबे बइ-कि। तोमार खुड़ोमशाय यखन वर्तमान आछेन ताँर अमते तो किछु हते पारे ना।

एइ बलिया पकेट हइते द्वितीय पानेर दोना निःशेष करिया येन कथाटा पाकापाकि हइया आसियाछे, एइरूप भाव करिया महिम चलिया गेलेन।

किछुदिन पूर्वे आनन्दमयी एकबार शशिमुखीर सङ्गे विनयेर बिवाहेर प्रस्ताव आभासे उत्थापन करियाछिलेन। किन्तु विनय ताहा कानेओ तोले नाइ। आजओ प्रस्तावटा ये विशेष संगत बोध हइल ताहा नहे, किन्तु तबु कथाटा मनेर मध्ये एकटुखानि येन स्थान पाइल। विनयेर मने हइल, एइ विवाह घटिले आत्मीयता-सम्बन्धे गोरा ताहाके कोनोदिन ठेलिते पारिबे ना। विवाह व्यापारटाके हृदयावेगेर सङ्गे जड़ित कराके इंरेजियाना बलियाइ से एतदिन परिहास करिया आसियाछे, ताइ शशिमुखीके विवाह कराटा ताहार काछे असम्भव बलिया बोध हइल ना। महिमेर एइ प्रस्ताव लइया गोरार सङ्गे परामर्श करिबार ये एकटा उपलक्ष्य जुटिल आपातत इहातेइ से खुशि हइल। विनयेर इच्छा, गोरा एइ लइया ताहाके एकटु पीड़ापीड़ि करे। महिमके सहजे सम्मति ना दिले महिम गोराके दिया ताहाके अनुरोध कराइबार चेष्टा करिबे, इहाते विनयेर सन्देह छिल ना।

एइ-समस्त आलोचना करिया विनयेर मनेर अवसाद काटिया गेल। से तखनइ गोरार बाड़ि याइबार जन्य प्रस्तुत हइया चादर काँधे बाहिर हइया पड़िल। अल्प एकटु दूर याइतेइ पश्चात् हइते शुनिते पाइल, "विनयबाबु।" पिछन फिरिया देखिल सतीश ताहाके डाकितेछे।

सतीशके सङ्गे लइया आबार विनय बासाय प्रवेश करिल। सतीश पकेट हइते रुमालेर पुँटुलि बाहिर करिया कहिल, "एर मध्ये की आछे बलुन देखि।"

विनय 'मड़ार माथा' 'कुकुरेर बाच्चा' प्रभृति नाना असम्भव जिनिसेर नाम करिया सतीशेर निकट तर्जन लाभ करिल। तखन सतीश ताहार रुमाल खुलिया गोटापाँचेक कालो कालो फल बाहिर करिया जिज्ञासा करिल, "ए की बलुन देखि?"

विनय याहा मुखे आसिल ताहाइ बलिल। अवशेषे पराभव स्वीकार करिले सतीश कहिल, रेंगुने ताहार एक मामा आछेन, तिनि सेखानकार एइ फल ताहार मार काछे पाठाइया दियाछेन—मा ताहारइ पाँचटा विनयबाबुके उपहार पाठाइयाछेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मदेशेर म्याङ्गोस्टिन फल तखनकार दिने कलिकाताय सुलभ छिल ना ; ताइ विनय फलगुलि नाड़िया-चाड़िया टिपिया-टुपिया कहिल, "सतीशबाबु, फलगुलो खाब की करे।"

सतीश विनयेर एइ अज्ञताय हासिया कहिल, "देखबेन, कामड़े खाबेन ना येन—छुरि दिये केटे खेते हय।"

सतीश निजेइ एइ फल कामड़ दिया खाइबार निष्फल चेष्टा करिया आज किछुक्षण पूर्वे आत्मीय-स्वजनदेर काछे हास्यास्पद हइयाछे—सेइ जन्य विनयेर अनभिज्ञताय विज्ञजनोचित हास्य करिया ताहार मनेर वेदना दूर हइल।

ताहार परे दुइ असमवयसी बन्धुर मध्ये किछुक्षण कौतुकालाप हइले पर सतीश कहिल, "विनयबाबु, मा बलेछेन, आपनार यदि समय थाके तो एकबार आमादेर बाड़ि आसते हबे—आज लीलार जन्मदिन।"

विनय बलिल, "आज भाइ, आमार समय हबे ना, आज आमि आर-एक जायगाय याच्छि।"

सतीश। कोथाय याच्छेन ?

विनय। आमार बन्धुर बाड़िते।

सतीश। आपनार सेइ बन्धु ?

विनय। हाँ।

'बन्धुर बाड़िते येते पारेन, अथच आमादेर बाड़ि यावेन ना' इहार यौक्तिकता सतीश बुझिते पारिल ना—विशेषत विनयेर एइ बन्धुके सतीशेर भालो लागे नाइ ; से येन इस्कुलेर हेड्मास्टरेर चेये कड़ा लोक, ताहाके आर्गिन शुनाइया केह यश लाभ करिबे से एमन व्यक्तिइ नय। एमन लोकेर काछे याइबार जन्य विनय ये किछुमात्र प्रयोजन अनुभव करिबे, ताहा सतीशेर काछे भालोइ लागिल ना। से कहिल, "ना, विनयबाबु, आपनि आमादेर बाड़ि आसुन।"

आह्वानसत्त्वेओ परेशबाबुर बाड़िते ना गिया गोरार काछे याइब, विनय एटा मने मने खुब आस्फालन करिया बलियाछिल। आहत बन्धुत्वेर अभिमानके आज से क्षुण्ण हइते दिबे ना, गोरार प्रति बन्धुत्वेर गौरवकेइ से सकलेर ऊर्ध्वे राखिबे, इहाइ से स्थिर करियाछिल।

किन्तु हार मानिते ताहार बेशिक्षण लागिल ना। द्विधा करिते करिते, मनेर मध्ये आपत्ति करिते करिते, अवशेषे बालकेर हात धरिया सेइ आटात्तर नम्बरेरइ पथे से चलिल। बर्मा हइते आगत दुर्लभ फलेर एक अंश विनयके मने करिया पाठानोते ये-आत्मीयता प्रकाश पाइयाछे ताहाके खातिर ना करा विनयेर पक्षे असम्भव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय परेशबाबुर बाड़िर काछाकाछि आसिया देखिल, पानुबाबु एवं आर-कयेक जन अपरिचित व्यक्ति परेशबाबुर बाड़ि हइते बाहिर हइया आसितेछे। लीलार जन्मदिनेर मध्याह्न भोजने ताहारा निमन्त्रित छिल। पानुबाबु येन विनयके देखिते पान नाइ, एमनि भावे चलिया गेलेन।

बाड़िते प्रवेश करियाइ विनय खुब एकटा हासिर ध्वनि एवं दौड़ादौड़िर शब्द शुनिते पाइल। सुधीर लावण्येर चाबि चुरि करियाछे ; शुधु ताइ नय, देराजेर मध्ये लावण्येर खाता आछे एवं सेइ खातार मध्ये कवियशःप्रार्थिनीर उपहास्यतार उपकरण आछ, ताहाइ एइ दस्यु लोकसमाजे उद्घाटन करिबे बलिया शासाइतेछे ; इहाइ लइया उभय पक्षे यखन द्वन्द्व चलितेछे एमन समये रङ्गभूमिते विनय प्रवेश करिल।

ताहाके देखिया लावण्यर दल मुहूर्तेर मध्ये अन्तर्धान करिल। सतीश ताहादेर कौतुकेर भाग लइबार जन्य ताहादेर पश्चाते छुटिल। किछुक्षण परे सुचरिता घरे प्रवेश करिया कहिल, "मा आपनाके एकटु बसते बललेन, एखनइ तिनि आसछेन। बाबा अनाथबाबुदेर बाड़ि गेछेन, ताँरओ आसते देरि हबे ना।"

सुचरिता विनयेर संकोच भाङिया दिबार जन्य गोरार कथा तुलिल। हासिया कहिल, "तिनि बोध हय आमादेर एखाने आर कखनो आसबेन ना?"

विनय जिज्ञासा करिल, "केन।"

सुचरिता कहिल, "आमरा पुरुषदेर सामने बेरोइ देखे तिनि निश्चय अवाक हये गेछेन। घरकरनार मध्ये छाड़ा मेयेदेर आर कोथाओ देखले तिनि बोध हय तादेर श्रद्धा करते पारेन ना।"

विनय इहार उत्तर दिते किछु मुशकिले पड़िया गेल। कथाटार प्रतिवाद करते पारिलेइ से खुशि हइत, किन्तु मिथ्या बलिबे की करिया। विनय कहिल, "गोरार मत एइ ये, घरेर काजेइ मेयेरा सम्पूर्ण मन ना दिले तादेर कर्तव्येर एकाग्रता नष्ट हय।"

सुचरिता कहिल, "ता हले मेयेपुरुषे मिले घर-बाहिरके एकेबारे भाग करे निलेइ तो भालो हत। पुरुषके घरे ढुकते देओया हय बले ताँदेर बाइरेर कर्तव्य हयतो भालो करे सम्पन्न हय ना। आपनिओ आपनार बन्धुर मते मत देन नाकि।"

नारीनीति सम्बन्धे ए-पर्यन्त तो विनय गोरार मतेइ मत दिया आसियाछिल। इहा लइया से कागजे लेखालेखिओ करियाछे। किन्तु सेइटेइ ये विनयेर मत एखन ताहा ताहार मुख दिया बाहिर हइते चाहिल ना। से कहिल, "देखुन आसले ए-सकल विषये आमरा अभ्यासेर दास। सेइजन्येइ मेयेदेर बाइरे बेरोते देखले मने खटका लागे—अन्याय वा अकर्तव्य बले ये खाराप लागे, सेटा केवल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमरा जोर करे प्रमाण करते चेष्टा करि। युक्तिटा ए-स्थले उपलक्ष्य मात्र, संस्कारटाइ आसल।"

सुचरिता कहिल, "आपनार बन्धुर मने बोध हय संस्कारगुलो खुब दृढ़।"

विनय। बाइरे थेके देखे हठात् ताइ मने हय। किन्तु एकटा कथा आपनि मने राखबेन, आमादेर देशेर संस्कारगुलिके तिनि ये चेपे धरे थाकेन, तार कारण ए नय ये सेइ संस्कारगुलिकेइ तिनि श्रेय मने करेन। आमरा देशेर प्रति अन्ध अश्रद्धावशत देशेर समस्त प्रथाके अवज्ञा करते बसेछिलुम बलेइ तिनि एइ प्रलयकार्ये बाधा दिते दाँड़ियेछेन। तिनि बलेन, आगे आमादेर देशके श्रद्धार द्वारा प्रीतिर द्वारा समग्रभावे पेते हबे, जानते हबे, तार परे आपनिइ भितर थेके स्वाभाविक स्वास्थ्येर नियमे संशोधनेर काज चलबे।

सुचरिता कहिल, "आपनिइ यदि हत ता हले एतदिन हय नि केन।"

विनय। हय नि तार कारण, इतिपूर्वे देश बले आमादेर समस्त देशके, जाति बले आमादेर समस्त जातिके एक करे देखते पारि नि। तखन यदि वा आमादेर स्वजातिके अश्रद्धा करि नि तेमनि श्रद्धाओ करि नि, अर्थात् ताके लक्ष्यइ करा याय नि--सेइजन्येइ तार शक्ति जागे नि। एक समये रोगीर दिके ना ताकिये ताके बिना चिकित्साय बिना पथ्ये फेले राखा हयेछिल--एखन ताके डाक्तारखानाय आना हयेछे बटे, किन्तु डाक्तार ताके एतइ अश्रद्धा करे ये, एके एके तार अङ्गप्रत्यङ्ग केटे फेला छाड़ा आर-कोनो दीर्घ शुश्रूषासाध्य चिकित्सा सम्बन्धे से धैर्य धरे विचार करे ना। एइ समये आमार बन्धु डाक्तारटि बलछेन, 'आमार एइ परमात्मीयटिके ये चिकित्सार चोटे आगागोड़ा निःशेष करे फेलबे, ए आमि सह्य करते पारब ना। एखन आमि एइ छेदनकार्य एकेवारेइ बन्ध करे देव एवं अनुकूल पथ्य द्वारा आगे एर निजेर भितरकार जीवनीशक्तिके जागिये तुलब, तार परे छेदन करलेओ रोगी सइते पारबे, छेदन ना करलेओ हयतो रोगी सेरे उठबे।' गोरा बलेन, गभीर श्रद्धाइ आमादेर देशेर वर्तमान अवस्थाय सकलेर चेये बड़ो पथ्य—एइ श्रद्धार अभावेइ आमरा देशके समग्रभावे जानते पारछि ने—जानते पारछि ने बलेइ तार सम्बन्धे या व्यवस्था करछि ता कुव्यवस्था हये उठछे। देशके भालो ना बासले ताके भालो करे जानबार धैर्य थाके ना, ताके ना जानले तार भालो करते चाइलेओ तार भालो करा याय ना।

सुचरिता एकटु एकटु करिया खोंचा दिया दिया गोरार सम्बन्धे आलोचनाके निबिते दिल ना। विनयओ गोरार पक्षे ताहार याहा किछु बलिबार ताहा खुब भालो करियाइ बलिते लागिल। एमन युक्तिर कथा एमन दृष्टान्त दिया एमन गुछाइया आर कखनो येन से बले नाइ; गोराओ ताहार निजेर मत एमन परिष्कार करिया एमन उज्ज्वल करिया बलिते पारित किना सन्देह। विनयेर बुद्धि ओ

5

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक्षमतार एइ अपूर्व उत्तेजनाय ताहार मने एकटा आनन्द जन्मिते लागिल एवं सेइ आनन्दे ताहार मुख उद्दीप्त हइया उठिल।

विनय कहिल, "देखुन, शास्त्रे बले, आत्मानं विद्धि——आपनाके जानो। नइले मुक्ति किछुतेइ नेइ। आमि आपनाके बलछि, आमार बन्धु गोरा भारत-वर्षेर सेइ आत्मबोधेर प्रकाश रूपे आविर्भूत हयेछे। ताके आमि सामान्य लोक बले मने करते पारि ने। आमादेर सकलेर मन यखन तुच्छ आकर्षणे नूतनेर प्रलोभने बाहिरेर दिके छड़िये पड़ेछे तखन ओइ एकटिमात्र लोक एइ-समस्त विक्षिप्ततार माझखाने अटलभावे दाँड़िये सिंहगर्जने सेइ पुरातन मन्त्र बलछे——आत्मानं विद्धि।"

एइ आलोचना आरओ अनेकक्षण चलिते पारित——सुचरिताओ व्यग्र हइया शुनितेछिल——किन्तु हठात् पाशेर एकटा घर हइते सतीश चीत्कार करिया आवृत्ति आरम्भ करिल——

"बोलो ना कातर स्वरे ना करि विचार——
जीवन स्वपनसम, मायार संसार।"

बेचारा सतीश बाड़िर अतिथि-अभ्यागतदेर सामने विद्या फलाइबार कोनो अवकाश पाय ना। लीला पर्यन्त इंरेजि कविता आओड़ाइया सभा गरम करिया तोले, किन्तु सतीशके वरदासुन्दरी डाकेन ना। अथच लीलार सङ्गे सकल विषयेइ सतीशेर खुब एकटा प्रतियोगिता आछे। कोनोमते लीलार दर्प चूर्ण करा सतीशेर जीवनेर प्रधान सुख। विनयेर सम्मुखे काल लीलार परीक्षा हइया गेछे। तखन अनाहूत सतीश ताहाके छाड़ाइया उठिबार कोनो चेष्टा करिते पारे नाइ। चेष्टा करिलेओ वरदासुन्दरी तखनइ ताहाके दाबाइया दितेन; ताइ से आज पाशेर घरे येन आपन मने उच्चस्वरे काव्यचर्चाय प्रवृत्त हइल। शुनिया सुचरिता हास्य संवरण करिते पारिल ना।

एमन समय लीला ताहार मुक्त वेणी दोलाइया घरे ढुकिया सुचरितार गला जड़ाइया धरिया ताहार काने काने की एकटा बलिल। अमनि सतीश छुटिया ताहार पिछने आसिया कहिल, "आच्छा, लीला, बलो देखि 'मनोयोग' माने की।"

लीला कहिल, "बलब ना।"

सतीश। इस! बलब ना! जान ना ताइ बलो-ना।

विनय सतीशके काछे टानिया लइया हासिया कहिल, "तुमि बलो देखि, 'मनोयोग' माने की।"

सतीश सगर्वे माथा तुलिया कहिल, "मनोयोग माने मनोनिवेश।"

सुचरिता जिज्ञासा करिल, "मनोनिवेश बलते की बोझाय।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आत्मीय ना हइले आत्मीयके एमन विपदे के फेलिते पारे। सतीश प्रश्नटा येन शुनिते पाय नाइ, एमनि भावे लाफाइते लाफाइते घर हइते बाहिर हइया गेल।

विनय आज परेशबाबुर बाड़ि हइते सकाल सकाल विदाय लइया गोरार काछे याइबे निश्चय स्थिर करिया आसियाछिल। विशेषत गोरार कथा बलिते बलिते गोरार काछे याइबार उत्साहओ ताहार मने प्रबल हइया उठिल। ताइ से घड़िते चारटे बाजिते शुनिया ताड़ाताड़ि चौकि छाड़िया उठिया पड़िल।

सुचरिता कहिल, "आपनि एखनि याबेन? मा आपनार जन्ये खाबार तैरि करछेन; आर-एकटु परे गेले चलबे ना?"

विनयेर पक्षे ए तो प्रश्न नय, ए हुकुम। से तखनइ बसिया पड़िल। लावण्य रङिन रेशमेर कापड़े साजिया गुजिया घरे प्रवेश करिया कहिल, "दिदि, खाबार तैरि हयेछे। मा छाते आसते बललेन।"

छाते आसिया विनयके आहारे प्रवृत्त हइते हइल। वरदासुन्दरी ताँहार सब सन्तानदेर जीवनवृत्तान्त आलोचना करिते लागिलेन। ललिता सुचरिताके घरे टानिया लइया गेल। लावण्य एकटा चौकिते बसिया घाड़ हेंट करिया दुइ लोहार काठि लइया बुनानिर कार्ये लागिल। ताहाके कबे एकजन बलियाछिल, बुनानिर समय ताहार कोमल आङ्गुलगुलिर खेला भारि सुन्दर देखाय; सेइ अवधि लोकेर साक्षाते बिना प्रयोजने बुनानि करा ताहार अभ्यास हइया गियाछिल।

परेश आसिलेन। सन्ध्या हइया आसिल। आज रविवारे उपासना-मन्दिरे याइबार कथा। वरदासुन्दरी विनयके कहिलेन, "यदि आपत्ति ना थाके, आमादेर सङ्गे समाजे याबेन?"

इहार पर कोनो ओजर-आपत्ति करा चले ना। दुइ गाड़िते भाग करिया सकले उपासनालये गेलेन। फिरिबार समय यखन गाड़िते उठितेछेन तखन हठात् सुचरिता चमकिया उठिया कहिल, "ओइ-ये गौरमोहनबाबु याच्छेन।"

गोरा ये एइ दलके देखिते पाइयाछिल ताहाते काहारओ सन्देह छिल ना। किन्तु येन देखिते पाय नाइ, एइरूप भाव करिया से वेगे चलिया गेल। गोरार एइ उद्धत अशिष्टताय विनय परेशबाबुदेर काछे लज्जित हइया माथा हेंट करिल। किन्तु से मने मने स्पष्ट बुझिल, विनयकेइ एइ दलेर मध्ये देखिया गोरा एमन प्रबल वेगे विमुख हइया चलिया गेल। एतक्षण ताहार मनेर मध्ये ये एकटि आनन्देर आलो ज्वलितेछिल ताहा एकेबारे निबिया गेल। सुचरिता विनयेर मनेर भाव ओ ताहार कारणटा तखनइ बुझिते पारिल, एवं विनयेर मतो बन्धुर प्रति गोरार एइ अविचारे ओ ब्राह्मदेर प्रति ताहार एइ अन्याय अश्रद्धाय गोरार उपरे आबार ताहार राग हइल—कोनो मते गोरार पराभव घटे, एइ से मने मने इच्छा करिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१४

गोरा यखन मध्याह्ने खाइते बसिल आनन्दमयी आस्ते आस्ते कथा पाड़िलेन, "आज सकाले विनय एसेछिल। तोमार सङ्गे देखा हय नि ?"

गोरा खाबार थाला हइते मुख ना तुलिया कहिल, "हाँ, हयेछिल।"

आनन्दमयी अनेकक्षण चुप करिया बसिया रहिलेन ; ताहार पर कहिलेन, "ताके थाकते बलेछिलुम, किन्तु से केमन अन्यमनस्क हये चले गेल।"

गोरा कोनो उत्तर करिल ना। आनन्दमयी कहिलेन, "तार मने की एकटा कष्ट हयेछे, गोरा। आमि ताके एमन कखनो देखि नि। आमार मन बड़ो खाराप हये आछे।"

गोरा चुप करिया खाइते लागिल। आनन्दमयी अत्यन्त स्नेह करितेन बलियाइ गोराके मने मने एकटु भय करितेन। से यखन निजे ताँहार काछे मन ना खुलित तखन तिनि ताहाके कोनो कथा लइया पीड़ापीड़ि करितेन ना। अन्यदिन हइले एइखानेइ चुप करिया याइतेन, किन्तु आज विनयेर जन्य ताँहार मन बड़ो वेदना पाइतेछिल बलियाइ कहिलेन, "देखो, गोरा, एकटि कथा बलि, राग कोरो ना। भगवान अनेक मानुष सृष्टि करेछेन किन्तु सकलेर जन्ये केवल एकटि-मात्र पथ खुले राखेन नि। विनय तोमाके प्राणेर मतो भालोबासे, ताइ से तोमार काछ थेके समस्तइ सह्य करे--किन्तु तोमारइ पथे ताके चलते हबे, ए जबरदस्ति करले सेटा सुखेर हबे ना।"

गोरा कहिल, "मा, आर-एकटु दुध एने दाओ।"

कथाटा एइखानेइ चुकिया गेल। आहारान्ते आनन्दमयी ताँहार तक्तपोशे चुप करिया बसिया सेलाइ करिते लागिलेन। लछमिया बाड़िर विशेष कोनो भृत्येर दुर्व्यवहार सम्बन्धीय आलोचनाय आनन्दमयीके टानिबार वृथा चेष्टा करिया मेजेर उपर शुइया पड़िया घुमाइते लागिल।

गोरा चिठिपत्र लिखिया अनेकटा समय काटाइया दिल। गोरा ताहार उपर राग करियाछे, विनय ताहा आज सकाले स्पष्ट देखिया गेछे, तबु ये से एइ राग मिटाइया फेलिबार जन्य गोरार काछे आसिबे ना, इहा हइतेइ पारे ना जानिया से सकल कर्मेर मध्येइ विनयेर पदशब्देर जन्य कान पातिया रहिल।

वेला बहिया गेल--विनय आसिल ना। लेखा छाड़िया गोरा उठिबे मने करितेछे, एमन समय महिम आसिया घरे ढुकिलेन। आसियाइ चौकिते बसिया पड़िया कहिलेन, "शशीमुखीर बियेर कथा की भाबछ, गोरा।"

ए कथा गोरा एकदिनेर जन्यओ भाबे नाइ, सुतरां अपराधीर मतो ताहाके चुप करिया थाकिते हइल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाजारे पात्रेर मूल्य ये किरूप चड़ा एवं घरे अर्थेर अवस्था ये किरूप असच्छल ताहा आलोचना करिया गोराके एकटा उपाय भाबिते बलिलेन। गोरा यखन भाबिया किनारा पाइल ना तखन तिनि ताहाके चिन्तासंकट हइते उद्धार करिबार जन्य विनयेर कथाटा पाड़िलेन। एत घोरफेर करिबार कोनो प्रयोजन छिल ना, किन्तु महिम गोराके मुखे याइ बलुन मने मने भय करितेन।

ए प्रसङ्गे विनयेर कथा ये उठिते पारे, गोरा ताहा कखनो स्वप्नेओ भाबे नाइ। विशेषत गोरा एवं विनय स्थिर करियाछिल, ताहारा विवाह ना करिया देशेर काजे जीवन उत्सर्ग करिबे। गोरा ताइ बलिल, "विनय बिये करबे केन।"

महिम कहिलेन, "एइ बुझि तोमादेर हिंदुयानि! हाजार टिकि राख आर फोंटा काट साहेबियाना हाड़ेर मध्ये दिये फुटे ओठे। शास्त्रेर मते विवाहटा ये ब्राह्मणेर छेलेर एकटा संस्कार ता जान?"

महिम एखनकार छेलेदेर मतो आचारओ लङ्घन करेन ना, आबार शास्त्रेर धारओ धारेन ना। होटेले खाना खाइया बाहादुरि कराकेओ तिनि बाड़ाबाड़ि मने करेन, आबार गोरार मतो सर्वदा श्रुतिस्मृति लइया घाँटाघाँटि कराकेओ तिनि प्रकृतिस्थ लोकेर लक्षण बलिया ज्ञान करेन ना। किन्तु, यस्मिन् देशे यदाचारः—गोरार काछे शास्त्रेर दोहाइ पाड़िते हइल।

ए प्रस्ताव यदि दुइ दिन आगे आसित तबे गोरा एकेबारे कानेइ लइत ना। आज ताहार मने हइल, कथाटा नितान्त उपेक्षार योग्य नहे। अन्तत एइ प्रस्तावटा लइया एखनइ विनयेर बासाय याइबार एकटा उपलक्ष्य जुटिल।

गोरा शेषकाले बलिल, "आच्छा, विनयेर भावखाना की बुझे देखि।"

महिम कहिलेन, "से आर बुझते हबे ना। तोमार कथा से किछुते ठेलते पारबे ना। ओ ठिक हये गेछे। तुमि बललेइ हबे।"

सेइ सन्ध्यार समयेइ गोरा विनयेर बासाय आसिया उपस्थित। झड़ेर मतो ताहार घरे प्रवेश करिया देखिल, घरे केह नाइ। बेहाराके डाकिया जिज्ञासा कराते से कहिल, बाबु आटात्तर नम्बर बाड़िते गियाछेन। शुनिया गोरार समस्त मन विकल हइया उठिल। आज समस्त दिन याहार जन्य गोरार मने शान्ति छिल ना सेइ विनय आजकाल गोरार कथा मने करिबार अवकाशमात्र पाय ना। गोरा रागइ करुक आर दुःखितइ हउक, विनयेर शान्ति ओ सान्त्वनार कोनो व्याघात घटित्रे ना।

परेशबाबुर परिवारदेर विरुद्धे, ब्राह्मसमाजेर विरुद्धे गोरार अन्तःकरण एकेबारे विषाक्त हइया उठिल। से मनेर मध्ये प्रकाण्ड एकटा विद्रोह वहन करिया परेशबाबुर बाड़िर दिके छुटिल। इच्छा छिल, सेखाने एमनसकल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कथा उत्थापन करिबे याहा शुनिया एइ ब्राह्मपरिवारेर हाड़े ज्वाला धरिबे एवं विनयेरओ आराम बोध हइबे ना।

परेशबाबुर बासाय गिया शुनिल, ताँहारा केहइ बाड़िते नाइ, सकलेइ उपासना-मन्दिरे गियाछेन। मुहूर्तकालेर जन्य संशय हइल, विनय हयतो याय नाइ—से हयतो एइ क्षणेइ गोरार बाड़िते गेछे।

थाकिते पारिल ना। गोरा ताहार स्वाभाविक झड़ेर गतिते मन्दिरेर दिकेइ गेल। द्वारेर काछे गिया देखिल, विनय वरदासुन्दरीर अनुसरण करिया ताँहादेर गाड़िते उठितेछे—समस्त रास्तार माझखाने निर्लज्जेर मतो अन्य परिवारेर मेयेदेर सङ्गे एक गाड़िते गिया बसितेछे! मूढ़! नागपाशे एमनि करियाइ धरा दिते हय! एत सत्वर! एत सहजे! तबे बन्धुत्वेर आर भद्रस्थता नाइ। गोरा झड़ेर मतोइ छुटिया चलिया गेल—आर, गाड़िर अन्धकारेर मध्ये विनय रास्तार दिके ताकाइया चुप करिया बसिया रहिल।

वरदासुन्दरी मने करिलेन, आचार्येर उपदेश ताहार मनेर मध्ये काज करितेछे—तिनि ताइ कोनो कथा बलिलेन ना।

१५

रात्रे गोरा बाड़िते फिरिया आसिया अन्धकार छातेर उपर बेड़ाइते लागिल। ताहार निजेर उपर राग हइल। रविवारटा केन से एमन वृथा काटिते दिल। व्यक्तिविशेषेर प्रणय लइया अन्य समस्त काज नष्ट करिबार जन्य तो गोरा पृथिवीते आसे नाइ। विनय ये-पथे याइतेछे से-पथ हइते ताहाके टानिया राखिबार चेष्टा करिले केवलइ समय नष्ट एवं निजेर मनके पीड़ित करा हइबे। अतएव, जीवनेर यात्रापथे एखन हइते विनयके बाद दिते हइबे। जीवने गोरार एकटिमात्र बन्धु आछे, ताहाकेइ त्याग करिया गोरा ताहार धर्मके सत्य करिया तुलिबे। एइ बलिया गोरा जोर करिया हात नाड़िया विनयेर संस्रवके निजेर चारि दिक हइते येन सराइया फेलिल।

एमन समय महिम छाते आसिया हाँपाइते लागिलेन; कहिलेन, "मानुषेर यखन डाना नेइ तखन एइ तेतला बाड़ि तैरि करा केन? डाङार मानुष हये आकाशे वास करबार चेष्टा करले आकाशविहारी देवतार सय ना। विनयेर काछे गियेछिले?"

गोरा ताहार स्पष्ट उत्तर ना करिया कहिल, "विनयेर सङ्गे शशिमुखीर बिये हते पारबे ना।"

महिम। केन। विनयेर मत नेइ ना कि।

गोरा। आमार मत नेइ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिम हात उल्टाइया कहिलेन, "बेश ! ए आबार एकटा नतुन फ्यासाद देखछि। तोमार मत नेइ ! कारणटा की शुनि।"

गोरा। आमि बेश बुझेछि, विनयके आमादेर समाजे धरे राखा शक्त हबे। ओर सङ्गे आमादेर घरेर मेयेर विवाह चलबे ना।

महिम। ढेर ढेर हिँदुयानि देखेछि, किन्तु एमनटि आर कोथाओ देखलुम ना। काशी-भाटपाड़ा छाड़िये गेले ! तुमि ये देखि, भविष्यत् देखे विधान दाओ। कोन दिन बलबे, स्वप्ने देखलुम खृस्टान हयेछ, गोबर खेये जाते उठते हबे।

अनेक बकाबकिर पर महिम कहिलेन, "मेयेके तो मूर्खेर हाते दिते पारि ने। ये-छेले लेखापड़ा शिखेछे, यार बुद्धिशुद्धि आछे, से-छेले माझे माझे शास्त्र डिङिये चलबेइ। सेजन्ये तार सङ्गे तर्क करो, ताके गाल दाओ—किन्तु तार बिये बन्ध करे माझे थेके आमार मेयेटाके शास्ति दाओ केन। तोमादेर समस्तइ उल्टो विचार।"

महिम नीचे आसिया आनन्दमयीके कहिलेन, "मा, तोमार गोराके तुमि ठेकाओ।"

आनन्दमयी उद्विग्न हइया जिज्ञासा करिलेन, "की हयेछे।"

महिम। शशिमुखीर सङ्गे विनयेर विवाह आमि एकरकम पाका करेइ एनेछिलुम। गोराकेओ राजि करेछिलुम, इतिमध्ये गोरा स्पष्ट बुझते पेरेछे ये, विनय यथेष्ट परिमाणे हिँदु नय—मनु-पराशरेर सङ्गे तार मतेर एकटु-आधटु अनैक्य हये थाके। ताइ गोरा बेंके दाँड़ियेछे—गोरा बाँकले केमन बाँके से तो जानइ। कलियुगेर जनक यदि पण करतेन ये बाँका गोराके सोजा करले तबे सीता देब, तबे श्रीरामचन्द्र हार मेने येतेन, ए आमि बाजि रेखे बलते पारि। मनु-पराशरेर निचेइ पृथिवीर मध्ये से एकमात्र तोमाके माने। एखन तुमि यदि गति करे दाओ तो मेयेटा तरे याय। अमन पात्र खुँजले पाओया याबे ना।

एइ बलिया गोरार सङ्गे आज छाते या कथावार्ता हइयाछे महिम ताहा समस्त विवृत करिया कहिलेन। विनयेर सङ्गे गोरार एकटा विरोध ये घनाइया उठितेछे, इहा बुझिते पारिया आनन्दमयीर मन अत्यन्त उद्विग्न हइया उठिल।

आनन्दमयी उपरे आसिया देखिलेन, गोरा छाते बेड़ानो बन्ध करिया घरे एकटा चौकिर उपर बसिया आर-एकटा चौकिते पा तुलिया बइ पड़ितेछे। आनन्दमयी ताहार काछे एकटा चौकि टानिया लइया बसिलेन। गोरा सामनेर चौकि हइते पा नामाइया खाड़ा हइया बसिया आनन्दमयीर मुखेर दिके चाहिल।

आनन्दमयी कहिलेन, "बाबा गोरा, आमार एकटि कथा राखिस—विनयेर सङ्गे झगड़ा करिस ने। आमार काछे तोरा दुजने दुटि भाइ—तोदेर मध्ये विच्छेद घटले आमि सइते पारब ना।"

गोरा कहिल, "बन्धु यदि बन्धन काटते चाय तबे तार पिछने छुटोछुटि करे आमि समय नष्ट करते पारब ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "बाबा, आमि जानि ने तोमादेर मध्ये की हयेछे, किन्तु विनय तोमार बन्धन काटाते चाच्छे, ए कथा यदि विश्वास कर तबे तोमार बन्धुत्वेर जोर कोथाय।"

गोरा। मा, आमि सोजा चलते भालोबासि---यारा दु दिक राखते चाय आमार सङ्गे तादेर बनबे ना। दु नौकोय पा देओया यार स्वभाव आमार नौको थेके ताके पा सराते हबे---एते आमारइ कष्ट होक आर तारइ कष्ट होक।

आनन्दमयी। की हयेछे बल् देखि। ब्राह्मदेर घरे से याओया-आसा करे, एइ तो तार अपराध?

गोरा। से अनेक कथा, मा।

आनन्दमयी। होक अनेक कथा---किन्तु, आमि एकटि कथा बलि, गोरा, सब विषयेइ तोमार एत जेद ये, तुमि या धर ता केउ छाड़ाते पारे ना। किन्तु विनयेर बेलाइ तुमि एमन आलगा केन। तोमार अविनाश यदि दल छाड़ते चाइत तुमि कि ताके सहजे छाड़ते। तोमार बन्धु बलेइ कि ओ तोमार सकलेर चेये कम।

गोरा चुप करिया भाविते लागिल। आनन्दमयीर एइ कथाते से निजेर मनटा परिष्कार देखिते पाइल। एतक्षण से मने करितेछिल ये, से कर्तव्येर जन्य ताहार बन्धुत्वके विसर्जन दिते याइतेछे, एखन स्पष्ट बुझिल, ठिक ताहार उल्टा। ताहार बन्धुत्वेर अभिमाने वेदना लागियाछे बलियाइ विनयके बन्धुत्वेर चरम शास्ति दिते से उद्यत हइयाछे। से मने जानित, विनयके बाँधिया राखिबार जन्य बन्धुत्वइ यथेष्ट---अन्य कोनो प्रकार चेष्टा प्रणयेर असम्मान।

आनन्दमयी येइ बुझिलेन ताँहार कथाटा गोरार मने एकटुखानि लागियाछे अमनि तिनि आर किछु ना बलिया आस्ते आस्ते उठिबार उपक्रम करिलेन। गोराओ हठात् वेगे उठिया पड़िया आलना हइते चादर तुलिया काँधे फेलिल।

आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "कोथाय याओ, गोरा?"

गोरा कहिल, "आमि विनयेर बाड़ि याच्छि।"

आनन्दमयी। खाबार तैरि आछे, खेये याओ।

गोरा। आमि विनयके धरे आनछि, सेओ एखाने खाबे।

आनन्दमयी आर किछु ना बलिया नीचेर दिके चलिलेन। सिँड़िते पायेर शब्द शुनिया हठात् थामिया कहिलेन, "ओइ विनय आसछे।"

बलिते बलिते विनय आसिया पड़िल। आनन्दमयीर चोख छल्छल् करिया आसिल। तिनि स्नेहे विनयेर गाये हात दिया कहिलेन, "विनय, बाबा, तुमि खेये आस नि?"

विनय कहिल, "ना, मा।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी। तोमाके एइखानेइ खेते हबे।

विनय एकबार गोरार मुखेर दिके चाहिल। गोरा कहिल, "विनय, अनेक दिन बाँचबे। तोमार ओखानेइ याच्छिलुम।"

आनन्दमयीर बुक हालका हइया गेल—तिनि ताड़ाताड़ि नीचे चलिया गेलेन।

दुइ बन्धु घरे आसिया बसिले गोरा याहा-ताहा एकटा कथा तुलिल—कहिल, "जान? आमादेर छेलेदेर जन्ये एकजन बेश भालो जिम्नास्टिक मास्टार पेयेछि। से शेखाच्छे बेश।"

मनेर भितरेर आसल कथाटा एखनओ केह पाड़िते साहस करिल ना।

दुइ जने यखन खाइते बसिया गेल तखन आनन्दमयी ताहादेर कथावार्ताय बुझिते पारिलेन एखनो ताहादेर उभयेर मध्ये बाधो-बाधो रहियाछे—पर्दा उठिया याय नाइ। तिनि कहिलेन, "विनय, रात अनेक हयेछे, तुमि आज एइखानेइ शुयो। आमि तोमार बासाय खबर पाठिये दिच्छि।"

विनय चकितेर मध्ये गोरार मुखेर दिके चाहिया कहिल, "भुक्त्वा राजवदाचरेत्। खेये रास्ताय हाँटा नियम नय। ता हले एइखानेइ शोया याबे।"

आहारान्ते दुइ बन्धु छाते आसिया मादुर पातिया बसिल। भाद्रमास पड़ियाछे; शुक्लपक्षेर ज्योत्स्नाय आकाश भासिया याइतेछे। हालका पातला सादा मेघ क्षणिक घुमेर घोरेर मतो माझे माझे चाँदके एकटुखानि झापसा करिया दिया आस्ते आस्ते उड़िया चलितेछे। चारि दिके दिगन्त पर्यन्त नाना आयतनेर उँचुनिचु छातेर श्रेणी छायाते आलोते एवं माझे माझे गाछेर माथार सङ्गे मिशिया येन सम्पूर्ण प्रयोजनहीन एकटा प्रकाण्ड अवास्तव खेयालेर मतो पड़िया रहियाछे।

गिर्जार घड़िते एगारोटार घण्टा बाजिल; बरफओयाला ताहार शेष हाँक हाँकिया चलिया गेल। गाड़िर शब्द मन्द हइया आसियाछे। गोरादेर गलिते जागरणेर लक्षण नाइ, केवल प्रतिवेशीर आस्तावले काठेर मेजेर उपर घोड़ार खुरेर शब्द एक-एकबार शोना याइतेछे एवं कुकुर घेउघेउ करिया उठितेछे।

दुइजने अनेकक्षण चुप करिया रहिल। ताहार परे विनय, प्रथमटा एकटु द्विधा करिया, अवशेषे परिपूर्णवेगे ताहार मनेर कथाके बन्धनमुक्त करिया दिल। विनय कहिल, "भाइ गोरा, आमार बुक भरे उठेछे। आमि जानि, ए-सब विषये तोमार मन नेइ, किन्तु तोमाके ना बलले आमि बाँचब ना। आमि भालोमन्द किछुइ बुझते पारछि ने—किन्तु एटा निश्चय, एर सङ्गे कोनो चातुरी खाटबे ना। बइयेते अनेक कथा पड़ेछि एवं एतदिन मने करे एसेछि, सब जानि। ठिक येन छबिते जल देखे मने करतुम, साँतार देओया खुब सहज—किन्तु आज जलेर मध्ये पड़े एक मुहूर्ते बुझते पेरेछि ए तो फाँकि नय।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइ बलिया विनय ताहार जीवनेर एइ आश्चर्य आविर्भावके एकान्त चेष्टाय गोरार सम्मुखे उद्घाटित करिते लागिल ।

विनय बलिते लागिल, आजकाल ताहार काछे समस्त दिन ओ रात्रिर मध्ये कोथाओ येन किछु फाँक नाइ—समस्त आकाशेर मध्ये कोथाओ येन कोनो रन्ध्र नाइ, समस्त एकेबारे निविड़भावे भरिया गेछे—वसन्तकालेर मउचाक येमन मधुते भरिया फाटिया याइते चाय, तेमनितरो । आगे एइ विश्वचराचरेर अनेकखानि ताहार जीवनेर बाहिरे पड़िया थाकित—येटुकुते ताहार प्रयोजन सेइटुकुतेइ ताहार दृष्टि बद्ध छिल । आज समस्तइ ताहार सम्मुखे आसितेछे, समस्तइ ताहाके स्पर्श करितेछे, समस्तइ एकटा नूतन अर्थे पूर्ण हइया उठियाछे । से जानित ना, पृथिवीके से एत भालोबासे, आकाश एमन आश्चर्य, आलोक एमन अपूर्व, रास्तार अपरिचित पथिकेर प्रवाहओ एमन गभीरभावे सत्य । ताहार इच्छा करे, सकलेर जन्य से एकटा-किछु करे, ताहार समस्त शक्तिके आकाशेर सूर्येर मतो से जगतेर चिरन्तन सामग्री करिया तोले ।

विनय ये कोनो व्यक्तिविशेषेर प्रसङ्गे एइ-समस्त कथा बलितेछे ताहा हठात् मने हय ना । से येन काहारओ नाम मुखे आनिते पारे ना, आभास दिते गेलेओ कुण्ठित हइया पड़े । एइ-ये आलोचना करितेछे इहार जन्य से येन काहार प्रति अपराध अनुभव करितेछे । इहा अन्याय, इहा अपमान—किन्तु, आज एइ निर्जन रात्रे, निस्तब्ध आकाशे, बन्धुर पाशे बसिया ए अन्यायटुकु से कोनोमतेइ काटाइते पारिल ना ।

से की मुख ! प्राणेर आभा ताहार कपोलेर कोमलतार मध्ये की सुकुमार भावे प्रकाश पाइतेछे ! हासिते ताहार अन्तःकरण की आश्चर्य आलोर मतो फुटिया पड़े ! ललाटे की बुद्धि ! एवं घन पल्लवेर छायातले दुइ चक्षुर मध्ये की निविड़ अनिर्वचनीयता ! आर, सेइ दुटि हात—सेवा एवं स्नेहके सौन्दर्ये सार्थक करिबार जन्य प्रस्तुत हइया आछे, से येन कथा कहितेछे । विनय निजेर जीवनके यौवनके धन्य ज्ञान करितेछे, एइ आनन्दे ताहार बुकेर मध्ये येन फुलिया फुलिया उठितेछे । पृथिवीर अधिकांश लोकइ याहा ना देखियाइ जीवन साङ्ग करे, विनय ये ताहाके एमन करिया चोखेर सामने मूर्तिमान देखिते पाइबे, इहार चेये आश्चर्य किछुइ नाइ ।

किन्तु, ए की पागलामि ! ए की अन्याय ! होक अन्याय, आर तो ठेकाइया राखा याय ना । एइ स्रोतेइ यदि कोनो एकटा कूले तुलिया देय तो भालो ; आर यदि भासाइया देय, यदि तलाइया लय, तबे उपाय की ! मुशकिल एइ ये, उद्धारेर इच्छाओ हय ना—एतदिनकार समस्त संस्कार, समस्त स्थिति, हाराइया चलिया याओयाइ येन जीवनेर सार्थक परिणाम ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा चुप करिया शुनिते लागिल। एइ छाते एमनि निर्जन निषुप्त ज्योत्स्ना-रात्रे आरओ अनेक दिन दुइ जने अनेक कथा हइया गेछे--कत साहित्य, कत लोकचरित्र, कत समाजहितेर आलोचना, भविष्यत् जीवनयात्रा सम्बन्धे दुइ जनेर कत संकल्प ; किन्तु एमन कथा इहार पूर्वे आर-कोनोदिन हय नाइ। मानव-हृदयेर एमन एकटा सत्य पदार्थ, एमन एकटा प्रबल प्रकाश एमन करिया गोरा'र सामने आसिया पड़े नाइ। एइ-समस्त व्यापारके से एतदिन कवित्वेर आवर्जना बलिया सम्पूर्ण उपेक्षा करिया आसियाछे--आज से इहाके एत काछे देखिल ये इहाके आर अस्वीकार करिते पारिल ना। शुधु ताहाइ नय, इहार वेग ताहार मनके ठेला दिल, इहार पुलक ताहार समस्त शरीरेर मध्ये विद्युतेर मतो खेलिया गेल। ताहार यौवनेर एकटा अगोचर अंशेर पर्दा मुहूर्तेर जन्य हाओयाय उड़िया गेल एवं सेइ एतदिनकार रुद्ध कक्षे एइ शरत्-निशीथेर ज्योत्स्ना प्रवेश करिया एकटा माया विस्तार करिया दिल।

चन्द्र कखन एक समय छादगुलार नीचे नामिया गेल। पूर्वदिके तखन निद्रित मुखेर हासिर मतो एकटुखानि आलोकेर आभास दियाछे। एतक्षण परे विनयेर मनटा हालका हइया एकटा संकोच उपस्थित हइल। एकटुखानि चुप करिया थाकिया बलिल, "आमार ए-समस्त कथा तोमार काछे खुब छोटो। तुमि आमाके हयतो मने मने अवज्ञा करछ। किन्तु, की करब बलो, कखनो तोमार काछे किछु लुकोइ नि--आजओ लुकोलुम ना, तुमि बोझ आर ना बोझ।"

गोरा बलिल, "विनय, ए-सब कथा आमि ये ठिक बुझि ता बलते पारि ने। दु दिन आगे तुमिओ बुझते ना। जीवनव्यापारेर मध्ये एइ-समस्त आवेग एवं आवेश आमार काछे ये आज पर्यन्त अत्यन्त छोटो ठेकेछे, से-कथाओ अस्वीकार करते पारि ने। ताइ बले एटा ये वास्तविकइ छोटो ता हयतो नय--एर शक्ति, एर गभीरता आमि प्रत्यक्ष करि नि बलेइ एटा आमार काछे वस्तुहीन मायार मतो ठेकेछे--किन्तु तोमार एतबड़ो उपलब्धिके आज आमि मिथ्या बलब की करे। आसल कथा हच्छे एइ, ये-लोक ये-क्षेत्रे आछे से-क्षेत्रेर बाइरेर सत्य यदि तार काछे छोटो हये ना थाके, तबे से-व्यक्ति काज करतेइ पारे ना। एइजन्यइ ईश्वर दूरेर जिनिसके मानुषेर दृष्टिर काछे खाटो करे दियेछेन--सब सत्यकेइ समान प्रत्यक्ष करिये ताके महा विपदे फेलेन नि। आमादेर एकटा दिक बेछे नितेइ हबे, सब एकसङ्गे आँकड़े धरबार लोभ छाड़तेइ हबे, नइले सत्यकेइ पाब ना। तुमि येखाने दाँड़िये सत्येर ये-मूर्तिके प्रत्यक्ष करछ आमि सेखाने से-मूर्तिके अभिवादन करते येते पारब ना--ता हले आमार जीवनेर सत्यके हाराते हबे। हय ए दिक नय ओ दिक।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "हय विनय, नय गोरा। आमि निजेके भरे निते दाँड़ियेछि, तुमि निजेके त्याग करते दाँड़ियेछ।"

गोरा असहिष्णु हइया कहिल, "विनय, तुमि मुखे मुखे बइ रचना कोरो ना। तोमार कथा शुने आमि एकटा कथा स्पष्ट बुझते पेरेछि, तोमार जीवने तुमि आज एकटा प्रबल सत्येर सामने मुखोमुखि दाँड़ियेछ—तार सङ्गे फाँकि चले ना। सत्यके उपलब्धि करलेइ तार काछे आत्मसमर्पण करतेइ हबे—से आर थाकबार जो नेइ। आमि ये-क्षेत्रे दाँड़ियेछि सेइ क्षेत्रेर सत्यकेओ अमनि करेइ एकदिन आमि उपलब्धि करब, एइ आमार आकांक्षा। तुमि एतदिन बइ-पड़ा प्रेमेर परिचयेइ परितृप्त छिले—आमिओ बइ-पड़ा स्वदेशप्रेमकेइ जानि। प्रेम आज तोमार काछे यखनि प्रत्यक्ष हल तखनि बुझते पेरेछ, बइयेर जिनिसेर चेये ए कत सत्य—ए तोमार समस्त जगत्-चराचर अधिकार करे बसेछे, कोथाओ तुमि एर काछ थेके निष्कृति पाच्छ ना। स्वदेशप्रेम येदिन आमार सम्मुखे एमनि सर्वाङ्गीण-भावे प्रत्यक्षगोचर हबे सेदिन आमारओ आर रक्षा नेइ—सेदिन से आमार धन-प्राण, आमार अस्थिमज्जारक्त, आमार आकाश-आलोक, आमार समस्तइ अनायासे आकर्षण करे निते पारबे। स्वदेशेर सेइ सत्यमूर्ति ये की आश्चर्य अपरूप, की सुनिश्चित सुगोचर, तार आनन्द तार वेदना ये की प्रचण्ड प्रबल, या वन्यार स्रोतेर मतो जीवनमृत्युके एक मुहूर्ते लङ्घन करे याय, ता आज तोमार कथा शुने मने मने अल्प अल्प अनुभव करते पारछि। तोमार जीवनेर एइ अभिज्ञता आमार जीवनके आज आघात करेछे—तुमि या पेयेछ ता आमि कोनो दिन बुझते पारब किना जानि ना, किन्तु आमि या पेते चाइ तार आस्वाद येन तोमार भितर दियेइ आमि अनुभव करछि।"

बलिते बलिते गोरा मादुर छाड़िया उठिया छाते बेड़ाइते लागिल। पूर्वदिकेर उषार आभास ताहार काछे येन एकटा वाक्येर मतो, वार्तार मतो प्रकाश पाइल; येन प्राचीन तपोवनेर एकटा वेदमन्त्रेर मतो उच्चारित हइया उठिल; ताहार समस्त शरीरे काँटा दिल—मुहूर्तेर जन्य से स्तम्भित हइया दाँड़ाइल एवं क्षणकालेर जन्य ताहार मने हइल, ताहार ब्रह्मरन्ध्र भेद करिया एकटि ज्योतिर्लेखा सूक्ष्म मृणालेर न्याय उठिया एकटि ज्योतिर्मय शतदले समस्त आकाशे परिव्याप्त हइया विकशित हइल—ताहार समस्त प्राण, समस्त चेतना, समस्त शक्ति येन इहाते एकेबारे परम आनन्दे निःशेषित हइया गेल।

गोरा यखन आपनाते आपनि फिरिया आसिल तखन से हठात् बलिया उठिल, "विनय, तोमार ए प्रेमकेओ पार हये आसते हबे—आमि बलछि, ओखाने थामले चलबे ना। आमाके ये महाशक्ति आह्वान करछेन तिनि ये कतबड़ो सत्य एक-दिन तोमाके आमि ता देखाब। आमार मनेर मध्ये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज भारि आनन्द हच्छे—तोमाके आज आमि आर-कारओ हाते छेड़े दिते पारब ना।"

विनय मादुर उठिया छाड़िया गोरार काछे आसिया दाँड़ाइल। गोरा ताहाके एकटा अपूर्व उत्साहे दुइ हात दिया बुके चापिया धरिल ; कहिल, "भाइ विनय, आमरा मरब, एक मरणे मरब—आमरा दुजने एक ; आमादेर केउ विच्छिन्न करबे ना, केउ बाधा दिते पारबे ना।"

गोरार एइ गभीर उत्साहेर वेग विनयेरओ हृदयेर मध्ये तरङ्गित हइया उठिल ; से कोनो कथा ना बलिया गोरार एइ आकर्षणे आपनाके छाड़िया दिल।

गोरा विनय दुइजने नीरवे पाशापाशि बेड़ाइते लागिल। पूर्वाकाश रक्तवर्ण हइया उठिल। गोरा कहिल, "भाइ, आमार देवीके आमि येखाने देखते पाच्छि से तो सौन्दर्येर माझखाने नय—सेखाने दुर्भिक्ष दारिद्र्य, सेखाने कष्ट आर अपमान। सेखाने गान गेये, फुल दिये पुजो नय ; सेखाने प्राण दिये, रक्त दिये पुजो करते हबे—आमार काछे सेइटेइ सबचेये बड़ो आनन्द मने हच्छे—सेखाने सुख दिये भोलाबार किछु नेइ—सेखाने निजेर जोरे सम्पूर्ण जागते हबे, सम्पूर्ण दिते हबे—माधुर्य नय, ए एकटा दुर्जय दु:सह आविर्भाव—ए निष्ठुर, ए भयंकर—एर मध्ये सेइ कठिन झंकार आछे याते करे सप्त सुर एकसङ्गे वेजे उठे तार छिँड़े पड़े याय। मने करले आमार बुकेर मध्ये उल्लास जेगे ओठे—आमार मने हय, एइ आनन्दइ पुरुषेर आनन्द—एइ हच्छे जीवनेर ताण्डवनृत्य—पुरातनेर प्रलय-यज्ञेर आगुनेर शिखार उपरे नूतनेर अपरूप मूर्ति देखबार जन्यइ पुरुषेर साधना। रक्तवर्ण आकाशक्षेत्रे एकटा बन्धनमुक्त ज्योतिर्मय भविष्यत्के देखते पाच्छि—आजकेकार एइ आसन्न प्रभातेर मध्येइ देखते पाच्छि—देखो आमार बुकेर भितरे के डमरु बाजाच्छे।"

बलिया विनयेर हात लइया गोरा निजेर बुकेर उपरे चापिया धरिल।

विनय कहिल, "भाइ गोरा, आमि तोमार सङ्गेइ याब। किन्तु आमि तोमाके बलछि, आमाके कोनो दिन तुमि द्विधा करते दियो ना। एकेबारे भाग्येर मतो निर्दय हये आमाके टेने निये येयो। आमादेर दुइ जनेर एक पथ, किन्तु, आमादेर शक्ति तो समान नय।"

गोरा कहिल, "आमादेर प्रकृतिर मध्ये भेद आछे, किन्तु एकटा महत् आनन्दे आमादेर भिन्न प्रकृतिके एक करे देबे—तोमाते आमाते ये भालोबासा आछे तार चेये बड़ो प्रेमे आमादेर एक करे देबे। सेइ प्रेम यतक्षणे सत्य ना हबे ततक्षणे आमादेर दुजनेर मध्ये पदे पदे अनेक आघात-संघात विरोध-विच्छेद घटते थाकबे—तार परे एकदिन आमरा समस्त भुले गिये, आमादेर पार्थक्यके, आमादेर बन्धुत्वकेओ भुले गिये, एकटा प्रकाण्ड, एकटा प्रचण्ड आत्मपरिहारेर मध्ये अटल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बले मिले गिये दाँड़ाते पारब—सेइ कठिन आनन्दइ आमादेर बन्धुत्वेर शेष परिणाम हबे।"

विनय गोरार हात धरिया कहिल, "ताइ होक।"

गोरा कहिल, "ततदिन किन्तु आमि तोमाके अनेक कष्ट देब। आमार सब अत्याचार तोमाके सइते हबे—केनना, आमादेर बन्धुत्वकेइ जीवनेर शेष लक्ष्य करे देखते पारब ना—येमन करे होक, ताकेइ बाँचिये चलबार चेष्टा करे तार असम्मान करब ना। एते यदि बन्धुत्व भेङे पड़े ता हले उपाय नेइ, किन्तु यदि बेंचे थाके ता हले बन्धुत्व सार्थक हबे।"

एमन समये दुइजने पदशब्दे चमकिया उठिया पिछने चाहिया देखिल, आनन्दमयी छाते आसियाछेन। तिनि दुइजनेर हात धरिया घरेर दिके टानिया लइया कहिलेन, "चलो, शोबे चलो।"

दुइजनेइ बलिल, "आर घुम हबे ना, मा।"

"हबे" बलिया आनन्दमयी दुइ बन्धुके जोर करिया बिछानाय पाशापाशि शोओयाइया दिलेन एवं घरेर दरजा बन्ध करिया दिया दुजनेर शियरेर काछे पाखा करिते बसिलेन।

विनय कहिल, "मा, तुमि पाखा करते बसले किन्तु आमादेर घुम हबे ना।"

आनन्दमयी कहिलेन, "केमन ना हय देखब। आमि चले गेलेइ तोमरा आबार कथा आरम्भ करे देबे, सेटि हच्छे ना।"

दुइजने घुमाइया पड़िले आनन्दमयी आस्ते आस्ते घर हइते बाहिर हइया आसिलेन। सिँड़ि दिया नामिबार समय देखिलेन, महिम उपरे उठिया आसितेछेन। आनन्दमयी कहिलेन, "एखन ना—काल समस्त रात ओरा घुमोय नि। आमि एइमात्र ओदेर घुम पाड़िये आसछि।"

महिम कहिलेन, "बास रे, एकेइ बले बन्धुत्व। बियेर कथाटा उठेछिल कि जान?"

आनन्दमयी। जानि ने।

महिम। बोधहय एकटा किछु ठिक हये गेछे। घुम भाङबे कखन। शीघ्र बियेटा ना हले विघ्न अनेक आछे।

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "ओरा घुमिये पड़ार दरुन विघ्न हबे ना—आज दिनेर मध्येइ घुम भाङबे।"

१६

वरदासुन्दरी कहिलेन, "तुमि सुचरितार बिये देबे ना नाकि?"

परेशबाबु ताँहार स्वाभाविक शान्त गम्भीर भावे किछुक्षण पाका दाड़िते हात बुलाइलेन; तार पर मृदुस्वरे कहिलेन, "पात्र कोथाय?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरदासुन्दरी कहिलेन, "केन, पानुबाबुर सङ्गे ओर विवाहेर कथा तो ठिक हयेइ आछे—अन्तत आमरा तो मने मने ताइ जानि, सुचरिताओ जाने।"

परेश कहिलेन, "पानुबाबुके राधारानीर ठिक पछन्द हय बले आमार मने हच्छे ना।"

वरदासुन्दरी। देखो, ओइगुलो आमार भालो लागे ना। सुचरिताके आमार आपन मेयेदेर थेके कोनोदिन तफात करे देखि ने, किन्तु ताइ बले ए कथाओ तो बलते हय, उनिइ वा की एमन असामान्य। पानुबाबुर मतो विद्वान धार्मिक लोक यदि ओके पछन्द करे थाके, सेटा कि उड़िये देबार जिनिस। तुमि याइ बल, आमार लावण्यके तो देखते ओर चेये अनेक भालो, किन्तु आमि तोमाके बले दिच्छि, आमरा याके पछन्द करे देब ओ ताकेइ बिये करबे, कखनो "ना" बलबे ना। तोमरा यदि सुचरितार देमाक बाड़िये तोल ता हले ओर पात्र मेलाइ भार हबे।

परेश इहार परे आर कोनो कथाइ बलिलेन ना। वरदासुन्दरीर सङ्गे तिनि कोनोदिन तर्क करितेन ना। विशेषत सुचरितार सम्बन्धे।

सतीशके जन्म दिया यखन सुचरितार मार मृत्यु हय तखन सुचरितार बयस सात। ताहार पिता रामशरण हालदार स्त्रीर मृत्युर परे ब्राह्मसमाजे प्रवेश करेन एवं पाड़ार लोकेर अत्याचारे ग्राम छाड़िया ढाकाय आसिया आश्रय लन। सेखाने पोस्ट आपिसेर काजे यखन नियुक्त छिलेन तखन परेशेर सङ्गे ताँहार घनिष्ठ बन्धुत्व हय। सुचरिता तखन हइते परेशके ठिक निजेर पितार मतोइ जानित।

रामशरणेर मृत्यु हठात् घटियाछिल। ताँहार टाकाकड़ि याहा किछु छिल ताहा ताँहार छेले ओ मेयेर नामे दुइ भागे दान करिया तिनि उइलपत्रे परेशबाबुके व्यवस्था करिबार भार दियाछिलेन। तखन हइते सतीश ओ सुचरिता परेशेर परिवारभुक्त हइया गियाछिल।

घरेर वा बाहिरेर लोके सुचरितार प्रति विशेष स्नेह वा मनोयोग करिले वरदासुन्दरीर मने भालो लागित ना। अथच ये-कारणेइ हउक, सुचरिता सकलेर काछ हइतेइ स्नेह ओ श्रद्धा आकर्षण करित। वरदासुन्दरीर मेयेरा ताहार भालोवासा लइया परस्परेर सङ्गे झगड़ा करित। विशेषत मेजो मेये ललिता ताहार ईर्षापरायण प्रणयेर द्वारा सुचरिताके दिनरात्रि येन आँकड़िया थाकिते चाहित।

पड़ाशुनार ख्यातिते ताँहार मेयेरा तखनकार कालेर सकल विदुषीकेइ छाड़ाइया याइबे, वरदासुन्दरीर मने एइ आकांक्षा छिल। सुचरिता ताँहार मेयेदेर सङ्गे एकसङ्गे मानुष हइया ए सम्बन्धे ताहादेर समान फल लाभ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करिबे, इहा ताँहार पक्षे सुखकर छिल ना। सेइजन्य इस्कुले याइबार समय सुचरितार नानाप्रकार विघ्न घटिते थाकित।

सेइ-सकल विघ्नेर कारण अनुमान करिया परेश सुचरितार इस्कुल बन्ध करिया दिया ताहाके निजेइ पड़ाइते आरम्भ करिलेन। शुधु ताइ नय, सुचरिता विशेषभावे ताँहारइ येन सङ्गिनीर मतो हइया उठिल। तिनि ताहार सङ्गे नाना विषये आलाप करितेन, येखाने याइतेन ताहाके सङ्गे करिया लइया याइतेन, यखन दूरे थाकिते बाध्य हइतेन तखन चिठिते बहुतर प्रसङ्ग उत्थापन करिया विस्तारित आलोचना करितेन। एमनि करिया सुचरितार मन ताहार वयस ओ अवस्थाके छाड़ाइया अनेकटा परिणत हइया उठिय छिल। ताहार मुखश्रीते ओ आचरणे ये एकटि गाम्भीर्येर विकाश हइयाछिल ताहाते केह ताहाके बालिका बलिया गण्य करिते पारित ना; एवं लावण्य यदिच वयसे प्राय ताहार समान छिल तबु सकल विषये सुचरिताके से आपनार चेये बड़ो बलियाइ मने करित, एमन-कि, वरदासुन्दरीओ ताहाके इच्छा करिलेओ कोनोमतेइ तुच्छ करिते पारितेन ना।

पाठकेरा पूर्वेइ परिचय पाइयाछेन, हारानबाबु अत्यन्त उत्साही ब्राह्म; ब्राह्मसमाजेर सकल काजेइ ताँहार हात छिल—तिनि नैशस्कुलेर शिक्षक, कागजेर सम्पादक, स्त्रीविद्यालयेर सेक्रेटारि—किछुतेइ ताँहार श्रान्ति छिल ना। एइ युवकटिइ ये एकदिन ब्राह्मसमाजे अत्युच्च स्थान अधिकार करिबे, सकलेरइ मने एइ आशा छिल। विशेषत इंरेजी भाषाय ताँहार अधिकार ओ दर्शनशास्त्रे ताँहार पारदर्शिता सम्बन्धे ख्याति विद्यालयेर छात्रदेर योगे ब्राह्मसमाजेर बाहिरेओ विस्तृत हइयाछिल।

एइ-सकल नाना कारणे अन्यान्य सकल ब्राह्मेर न्याय सुचरिताओ हारानबाबुके विशेष श्रद्धा करित। ढाका हइते कलिकाताय आसिबार समय हारानबाबुर सहित परिचयेर जन्य ताहार मनेर मध्ये विशेष औत्सुक्यओ जन्मियाछिल।

अवशेषे विख्यात हारानबाबुर सङ्गे शुधु ये परिचय हइल ताहा नहे, अल्प दिनेर मध्येइ सुचरितार प्रति ताँहार हृदयेर आकृष्टभाव प्रकाश करिते हारानबाबु संकोच बोध करिलेन ना। स्पष्ट करिया तिनि ये सुचरितार निकट ताँहार प्रणय ज्ञापन करियाछिलेन ताहा नहे—किन्तु सुचरितार सर्वप्रकार असम्पूर्णता-पूरण, ताहार त्रुटि-संशोधन, ताहार उत्साहवर्धन, ताहार उन्नति-साधनेर जन्य तिनि एमनि मनोयोगी हइया उठिलेन ये, एइ कन्याके ये तिनि विशेषभावे आपनार उपयुक्त सङ्गिनी करिया तुलिते इच्छा करियाछेन, ताहा सकलेर काछेइ सुगोचर हइया उठिल।

एइ घटनाय हारानबाबुर प्रति वरदासुन्दरीर पूर्वतन श्रद्धा नष्ट हइया गेल एवं इहाके तिनि सामान्य इस्कुलमास्टार मात्र बलिया अवज्ञा करिते चेष्टा करिलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिताओ यखन बुझिते पारिल ये, से विख्यात हारानबाबुर चित्त जय करियाछे तखन मनेर मध्ये भक्तिमिश्रित गर्व अनुभव करिल।

प्रधान पक्षेर निकट हइते कोनो प्रस्ताव उपस्थित ना हइलेओ, हारानबाबुर सङ्गेइ सुचरितार विवाह निश्चय बलिया सकले यखन स्थिर करियाछिल तखन सुचरिताओ मने मने ताहाते साय दियाछिल एवं हारानबाबु ब्राह्मसमाजेर ये-सकल हितसाधनेर जन्य जीवन उत्सर्ग करियाछेन किरूप शिक्षा ओ साधनार द्वारा सेओ ताहार उपयुक्त हइबे, एइ ताहार एक विशेष उत्कण्ठार विषय हइया उठियाछिल। से ये कोनो मानुषके विवाह करिते याइतेछे ताहा हृदयेर मध्ये अनुभव करिते पारे नाइ—से येन ब्राह्म-सम्प्रदायेर सुमहत् मङ्गलके विवाह करिते प्रस्तुत हइयाछे, सेइ मङ्गल प्रचुर ग्रन्थपाठ द्वारा अत्युच्च विद्वान एवं तत्त्वज्ञानेर द्वारा निरतिशय गम्भीर। एइ विवाहेर कल्पना ताहार काछे भय सम्भ्रम ओ दुःसाध्य दायित्वबोधेर द्वारा रचित एकटा पाथरेर केल्लार मतो बोध हइते लागिल—ताहा ये केवल सुखे वास करिबार ताहा नहे, ताहा लड़ाइ करिबार—ताहा पारिवारिक नहे, ताहा ऐतिहासिक।

एइ अवस्थातेइ यदि विवाह हइया याइत तबे अन्तत कन्यापक्षेर सकलेइ एइ विवाहके विशेष एकटा सौभाग्य बलियाइ ज्ञान करित। किन्तु, हारानबाबु निजेर उत्सृष्ट महत जीवनेर दायित्वके एतइ बड़ो करिया देखितेन ये, केवलमात्र भालो लागार द्वारा आकृष्ट हइया विवाह कराके तिनि निजेर अयोग्य बलिया ज्ञान करिलेन। एइ विवाह द्वारा ब्राह्मसमाज की परिमाणे लाभवान हइबे, ताहा सम्पूर्ण विचार ना करिया तिनि ए-काजे प्रवृत्त हइते पारिलेन ना। एइ कारणे तिनि सेइ दिक हइते सुचरिताके परीक्षा करिते लागिलेन।

एरूप भावे परीक्षा करिते गेले परीक्षा दितेओ हय। हारानबाबु परेशबाबुर घरे सुपरिचित हइया उठिलेन। ताँहाके ताँहार बाड़िर लोके ये पानु बलिया डाकित, ए परिवारेओ ताँहार सेइ पानुबाबु नाम प्रचार हइल। एखन ताँहाके केवलमात्र इंरेजि विद्यार भाण्डार, तत्त्वज्ञानेर आधार ओ ब्राह्मसमाजेर मङ्गलेर अवताररूपे देखा सम्भवपर हइल ना—तिनि ये मानुष, एइ परिचयटाइ सकलेर चेये निकट हइया उठिल। तखन तिनि केवलमात्र श्रद्धा ओ सम्भ्रमेर अधिकारी ना हइया भालो-लागा मन्द-लागार आयत्ताधीन हइया आसिलेन।

आश्चर्येर विषय एइ ये, हारानबाबुर ये-भावटा पूर्वे दूर हइते सुचरितार भक्ति आकर्षण करियाछिल सेइ भावटाइ निकटे आसिया ताहाके आघात करिते लागिल। ब्राह्मसमाजेर मध्ये याहा किछु सत्य मङ्गल ओ सुन्दर आछे हारानबाबु ताहार अभिभावकस्वरूप हइया ताहार रक्षकतार भार लओयाते ताँहाके अत्यन्त असंगतरूपे छोटो देखिते हइल। सत्येर सङ्गे मानुषेर यथार्थ सम्बन्ध भक्तिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्बन्ध—ताहाते मानुषके स्वभावतइ विनयी करिया तोले। ताहा ना करिया येखाने मानुषके उद्धत ओ अहंकृत करे सेखाने मानुष आपनार क्षुद्रताके सेइ सत्येर तुलनातेइ अत्यन्त सुस्पष्ट करिया प्रकाश करे। एइखाने परेशबाबुर सङ्गे हारानेर प्रभेद सुचरिता मने मने आलोचना ना करिया थाकिते पारिल ना। परेशबाबु ब्राह्मसमाजेर निकट हइते याहा लाभ करियाछेन ताहार सम्मुखे ताँहार माथा येन सर्वदा नत हइया आछे; से-सम्बन्धे ताँहार लेशमात्र प्रगल्भता नाइ, ताहार गभीरतार मध्ये तिनि निजेर जीवनके तलाइया दियाछेन। परेशबाबुर शान्त मुखच्छवि देखिले, तिनि ये-सत्यके हृदये वहन करितेछेन ताहारइ महत्त्व चोखे पड़े। किन्तु, हारानबाबुर सेरूप नहे—ताँहार ब्राह्मत्व बलिया एकटा उग्र आत्मप्रकाश अन्य-समस्त आच्छन्न करिया ताँहार समस्त कथाय ओ काजे अशोभनरूपे बाहिर हइया थाके। इहाते सम्प्रदायेर काछे ताँहार आदर बाड़ियाछिल, किन्तु सुचरिता परेशेर शिक्षागुणे साम्प्रदायिक संकीर्णतार मध्ये आबद्ध हइते पारे नाइ बलिया हारानबाबुर एकान्त ब्राह्मिकता सुचरितार स्वाभाविक मानवत्वके येन पीड़ा दित। हारानबाबु मने करितेन, धर्मसाधनार फले ताँहार दृष्टिशक्ति एमन आश्चर्य स्वच्छ हइयाछे ये, अन्य सकल लोकेरइ भालोमन्द ओ सत्यासत्य तिनि अति अनायासेइ बुझिते पारेन। एइजन्य सकलकेइ तिनि सर्वदाइ विचार करिते उद्यत। विषयी लोकेराओ परनिन्दा परचर्चा करिया थाके किन्तु याहारा धार्मिकतार भाषाय एइ काज करे ताहादेर सेइ निन्दार सङ्गे आध्यात्मिक अहंकार मिश्रित हइया संसारे एकटा अत्यन्त सुतीव्र उपद्रवेर सृष्टि करे। सुचरिता ताहा एकेबारेइ सहिते पारित ना। ब्राह्मसम्प्रदाय सम्बन्धे सुचरितार मने ये कोनो गर्व छिल ना ताहा नहे, तथापि ब्राह्मसमाजेर मध्ये याँहारा बड़ो लोक ताँहारा ये ब्राह्म हओयारइ दरुन विशेष एकटा शक्ति लाभ करिया बड़ो हइयाछेन एवं ब्राह्मसमाजेर बाहिरे याहारा चरित्रभ्रष्ट ताहारा ये ब्राह्म ना-हओयारइ कारणे विशेषभावे शक्तिहीन हइया नष्ट हइयाछे, ए कथा लइया हारानबाबुर सङ्गे सुचरितार अनेक बार तर्क हइया गियाछे।

हारानबाबु ब्राह्मसमाजेर मङ्गलेर प्रति लक्ष्य करिया यखन विचारे परेशबाबुकेओ अपराधी करिते छाड़ितेन ना तखनइ सुचरिता येन आहत फणिनीर मतो असहिष्णु हइया उठित। से-समये बांलादेशे इंरेजि शिक्षित दलेर मध्ये भगवद्गीता लइया आलोचना छिल ना। किन्तु, परेशबाबु सुचरिताके लइया माझे माझे गीता पड़ितेन; कालीसिंहेर महाभारतओ तिनि प्राय समस्तटा सुचरिताके पड़िया शुनाइयाछेन। हारानबाबुर काछे ताहा भालो लागे नाइ। ए-समस्त ग्रन्थ तिनि ब्राह्मपरिवार हइते निर्वासित करिबार पक्षपाती। तिनि निजेओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एगुलि पड़ेन नाइ। रामायण-महाभारत-भगवद्गीताके तिनि हिन्दुदेर सामग्री बलिया स्वतन्त्र राखिते चाहितेन। धर्मशास्त्रेर मध्ये बाइब्‌ल्‌इ ताँहार एकमात्र अवलम्बन छिल। परेशबाबु ये ताँहार शास्त्रचर्चा एवं छोटोखाटो नाना विषये ब्राह्म-अब्राह्मेर सीमा रक्षा करिया चलितेन ना, ताहाते हारानेर गाये येन काँटा बिँधित। परेशेर आचरणे प्रकाश्ये वा मने मने केह कोनोप्रकार दोषारोप करिबे, एमन स्पर्धा सुचरिता कखनोइ सहिते पारे ना। एवं एइरूप स्पर्धा प्रकाश हइया पड़ातेइ हारानबाबु सुचरितार काछे खाटो हइया गेछेन।

एइरूपे नाना कारणे हारानबाबु परेशबाबुर घरे दिने दिने निष्प्रभ हइया आसितेछेन। वरदासुन्दरीओ यदिच ब्राह्म-अब्राह्मेर भेदरक्षाय हारानबाबुर अपेक्षाय कोनो अंशे कम उत्साही नहेन एवं तिनिओ ताँहार स्वामीर आचरणे अनेक समय लज्जा बोध करिया थाकेन, तथापि हारानबाबुके तिनि आदर्श पुरुष बलिया ज्ञान करितेन ना। हारानबाबुर सहस्र दोष ताँहार चोखे पड़ित।

हारानबाबुर साम्प्रदायिक उत्साहेर अत्याचार एवं संकीर्ण नीरसताय यदिओ सुचरितार मन भितरे भितरे प्रतिदिन ताँहार उपर हइते विमुख हइतेछिल तथापि हारानबाबुर सङ्गेइ ये ताहार विवाह हइबे, ए सम्बन्धे कोनो पक्षेर मने कोनो तर्क वा सन्देह छिल ना। धर्मसामाजिक दोकाने ये-व्यक्ति निजेर उपरे खुब बड़ो अक्षरे उच्च मूल्येर टिकिट मारिया राखे अन्य लोकेओ क्रमे क्रमे ताहार दुर्मूल्यता स्वीकार करिया लय। एइजन्य हारानबाबु ताँहार महत् संकल्पेर अनुवर्ती हइया यथोचित परीक्षा द्वारा सुचरिताके पछन्द करिया लइलेइ ये सकलेइ ताहा माथा पातिया लइबे, ए-सम्बन्धे हारानबाबुर एवं अन्य काहारओ मने कोनो द्विधा छिल ना। एमन-कि, परेशबाबुओ हारानबाबुर दाबि मने मने अग्राह्य करेन नाइ। सकलेइ हारानबाबुके ब्राह्मसमाजेर भावी अवलम्बन स्वरूप ज्ञान करित, तिनिओ विरुद्ध विचार ना करिया ताहाते साय दितेन। एजन्य हारानबाबुर मतो लोकेर पक्षे सुचरिता यथेष्ट हइबे किना इहाइ ताँहार चिन्तार विषय छिल; सुचरितार पक्षे हारानबाबु की पर्यन्त उपादेय हइबे, ताहा ताँहार मनेओ हय नाइ।

एइ विवाहप्रस्तावे केहइ येमन सुचरितार कथाटा भाबा आवश्यक बोध करे नाइ, सुचरिताओ तेमनि निजेर कथा भाबे नाइ। ब्राह्मसमाजेर सकल लोकेरइ मतो सेओ धरिया लइयाछिल ये, हारानबाबु येदिन बलिबेन 'आमि एइ कन्याके ग्रहण करिते प्रस्तुत हइयाछि' सेइ दिनइ से एइ विवाहरूप ताहार महत् कर्तव्य स्वीकार करिया लइबे।

एइ भावेइ चलिया आसितेछिल। एमन समय सेदिन गोराके उपलक्ष्य करिया हारानबाबुर सङ्गे सुचरितार ये दुइ-चारिटि उष्ण-वाक्येर आदान-प्रदान हइया गेल ताहार सुर शुनियाइ परेशेर मने संशय उपस्थित हइल ये, सुचरिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारानबाबुके हयतो यथेष्ट श्रद्धा करे ना, हयतो उभयेर स्वभावेर मध्ये मिल ना हइबार कारण आछे। एइजन्यइ वरदासुन्दरी यखन विवाहेर जन्य तागिद दितेछिलेन तखन परेश ताहाते पूर्वेर मतो साय दिते पारिलेन ना। सेइ दिनइ वरदासुन्दरी सुचरिताके निभृते डाकिया लइया कहिलेन, "तुमि ये तोमार बाबाके भाबिये तुलेछ।"

शुनिया सुचरिता चमकिया उठिल ; से ये भुलियाओ परेशबाबुर उद्वेगेर कारण हइया उठिबे, इहा अपेक्षा कष्टेर विषय ताहार पक्षे किछुइ हइते पारे ना। से मुख विवर्ण करिया जिज्ञासा करिल, "केन, आमि की करेछि।"

वरदासुन्दरी। की जानि, बाछा। ताँर मने हयेछे ये, तुमि पानुबाबुके पछन्द कर ना। ब्राह्मसमाजेर सकल लोकेइ जाने, पानुबाबुर सङ्गे तोमार विवाह एकरकम स्थिर—ए अवस्थाय यदि तुमि—

सुचरिता। कइ, मा, आमि तो ए सम्बन्धे कोनो कथाइ काउके बलि नि।

सुचरितार आश्चर्य हइबार कारण छिल। से हारानबाबुर व्यवहारे बार बार विरक्त हइयाछे बटे, किन्तु विवाहप्रस्तावेर विरुद्धे से कोनोदिन मनेओ कोनो चिन्ता करे नाइ। एइ विवाहे से सुखी हइबे कि ना-हइबे से तर्कओ ताहार मने कोनोदिन उदित हय नाइ ; कारण, ए विवाह ये सुखदुःखेर दिक दिया विचार्य नहे, इहाइ से जानित।

तखन ताहार मने पड़िल, सेदिन परेशबाबुर सामनेइ पानुबाबुर प्रति से स्पष्ट विरक्ति प्रकाश करियाछिल। इहातेइ तिनि उद्विग्न हइयाछेन, मने करिया ताहार हृदये आघात लागिल। एमन असंयम तो से पूर्वे कोनोदिन प्रकाश करे नाइ, परेओ कखनो करिबे ना बलिया मने मने संकल्प करिल।

एदिके हारानबाबुओ सेइदिनइ अनतिकाल परेइ आसिया उपस्थित हइलेन। ताँहार मनओ चञ्चल हइया उठियाछिल। एतदिन ताँहार विश्वास छिल ये, सुचरिता ताँहाके मने मने पूजा करे ; एइ पूजार अर्घ्य ताँहार भागे आरओ सम्पूर्णतर हइत यदि वृद्ध परेशबाबुर प्रति सुचरितार अन्धसंस्कारवशत एकटि असंगत भक्ति ना थाकित। परेशबाबुर जीवनेर नाना असम्पूर्णता देखाइया दिलेओ ताँहाके सुचरिता येन देवता बलियाइ ज्ञान करित। इहाते हारानबाबु मने मने हास्यओ करियाछेन, क्षुण्णओ हइयाछेन, तथापि ताँहार आशा छिल, कालक्रमे उपयुक्त अवसरे एइ अयथा भक्तिके यथापथे एकाग्रधाराय प्रवाहित करिते पारिबेन।

याहा हउक, हारानबाबु यतदिन निजेके सुचरितार भक्तिर पात्र बलिया ज्ञान करितेन ततदिन ताहार छोटोखाटो काज ओ आचरण लइया केवल समालोचना करियाछेन एवं ताहाके सर्वदा उपदेश दिया गड़िया तुलितेइ प्रवृत्त छिलेन—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विवाह सम्बन्धे कोनो कथा स्पष्ट करिया उत्थापन करेन नाइ। सेदिन सुचरितार दुइ-एकटि कथा शुनिया यखन हठात् तिनि बुझिते पारिलेन, सेओ ताँहाके विचार करिते आरम्भ करियाछे, तखन हइते अविचलित गाम्भीर्य ओ स्थैर्य रक्षा करा ताँहार पक्षे कठिन हइया उठियाछे। इतिमध्ये ये दुइ-एकबार सुचरितार सङ्गे ताँहार देखा हइयाछे पूर्वेर न्याय निजेर गौरव तिनि अनुभव ओ प्रकाश करिते पारेन नाइ। सुचरितार सङ्गे ताँहार कथाय ओ आचरणे एकटा कलहेर भाव देखा दियाछे। ताहाके लइया अकारणे वा छोटो छोटो उपलक्ष्य धरिया खुँत्-खुँत् करियाछेन। तत्सत्त्वेओ सुचरितार अविचलित औदासीन्ये ताँहाके मने मने हार मानिते हइयाछे एवं निजेर मर्यादाहानिते बाड़िते आसिया परिताप करियाछेन।

याहा हउक, सुचरितार श्रद्धाहीनतार दुइ-एकटा लक्षण देखिया हारानबाबुर पक्षे ताँहार परीक्षकेर उच्च आसने दीर्घकाल स्थिर हइया बसिया थाका शक्त हइया उठिल। पूर्वे एत घन घन परेशबाबुर बाड़िते यातायात करितेन ना—सुचरितार प्रेमे तिनि चञ्चल हइया उठियाछेन, पाछे ताँहाके एरूप केह सन्देह करे, एइ आशङ्काय तिनि सप्ताहे केवल एकबार करिया आसितेन एवं सुचरिता येन ताँहार छात्री एमनिभावे निजेर ओजन राखिया चलितेन। किन्तु, एइ कयदिन हठात् की हइयाछे, हारानबाबु तुच्छ एकटा छुता लइया दिने एकाधिक बारओ आसियाछेन एवं ततोधिक तुच्छ छुता धरिया सुचरितार सङ्गे गाये पड़िया आलाप करिबार चेष्टा करियाछेन। परेशबाबुओ एइ उपलक्ष्ये उभयके भालो करिया पर्यवेक्षण करिबार अवकाश पाइयाछेन एवं ताँहार सन्देहओ क्रमे घनीभूत हइया आसितेछे।

आज हारानबाबु आसितेइ वरदासुन्दरी ताँहाके आड़ाले डाकिया लइया कहिलेन, "आच्छा, पानुबाबु, आपनि आमादेर सुचरिताके विवाह करबेन, एइ कथा सकलेइ बले, किन्तु आपनार मुख थेके तो कोनोदिन कोनो कथा शुनते पाइ ने। यदि सत्यइ आपनार एरकम अभिप्राय थाके ता हले स्पष्ट करे बलेन ना केन।"

हारानबाबु आर विलम्ब करिते पारिलेन ना। एखन सुचरिताके तिनि कोनोमते वन्दी करिते पारिलेइ निश्चिन्त हन—ताँहार प्रति भक्ति ओ ब्राह्मसमाजेर हितकल्पे योग्यतार परीक्षा परे करिलेओ चलिबे। हारानबाबु वरदासुन्दरीके कहिलेन, "ए कथा बला बाहुल्य बलेइ बलि नि। सुचरितार आठारो बछर वयसेर जन्यइ प्रतीक्षा करछिलेम।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "आपनार आबार एकटु बाड़ाबाड़ि आछे। आमरा तो चोद्द बछर हलेइ यथेष्ट मने करि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेदिन चा खाइबार समय परेशबाबु सुचरितार भाव देखिया आश्चर्य हइया गेलेन। सुचरिता हारानबाबुके एत यत्न अभ्यर्थना अनेक दिन करे नाइ। एमन-कि, हारानबाबु यखन चलिया याइबार उपक्रम करितेछिलेन तखन ताँहाके लावण्येर नूतन एकटा शिल्पकलार परिचय दिबार उपलक्ष्ये आरओ एकटु बसिया थाकिते अनुरोध करियाछिल।

परेशबाबुर मन निश्चिन्त हइल। तिनि भाबिलेन, तिनि भुल करियाछेन। एमन-कि, तिनि मने मने एकटु हासिलेन। भाबिलेन, एइ दुइजनेर मध्ये हयतो निगूढ़ एकटा प्रणयकलह घटियाछिल, आबार सेटा मिटमाट हइया गेछे।

सेइदिन विदाय हइबार समय हारान परेशबाबुर काछे विवाहेर प्रस्ताव पाड़िलेन। जानाइलेन, ए-सम्बन्धे विलम्ब करिते ताँहार इच्छा नाइ।

परेशबाबु एकटु आश्चर्य हइया कहिलेन, "किन्तु, आपनि ये 'आठारो बछरेर कमे मेयेदेर बिये हओया अन्याय' बलेन। एमन-कि, आपनि कागजेओ से-कथा लिखेछेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरितार सम्बन्धे ए कथा खाटे ना। कारण, ओर मनेर ये रकम परिणति हयेछे अनेक बड़ो वयसेर मेयेरओ एमन देखा याय ना।"

परेशबाबु प्रशान्त दृढ़तार सङ्गे कहिलेन, "ता होक, पानुबाबु। यखन विशेष कोनो अहित देखा याच्छे ना तखन आपनार मत-अनुसारे राधारानीर वयस पूर्ण हओया पर्यन्त अपेक्षा कराइ कर्तव्य।"

हारानबाबु निजेर दुर्बलता प्रकाश हओयाय लज्जित हइया कहिलेन, "निश्चयइ कर्तव्य। केवल आमार इच्छा एइ ये, एकदिन सकलके डेके ईश्वरेर नाम करे सम्बन्धटा पाका करा होक।"

परेशबाबु कहिलेन, "से अति उत्तम प्रस्ताव।"

१७

घण्टा दुइ-तिन निद्रार पर यखन गोरा घुम भाङिया पाशे चाहिया देखिल, विनय घुमाइतेछे, तखन ताहार हृदय आनन्दे भरिया उठिल। स्वप्ने एकटा प्रिय जिनिस हाराइया जागिया उठिया यखन देखा याय, ताहा हाराय नाइ, तखन येमन आराम बोध हय गोरार सेइरूप हइल। विनयके त्याग करिले गोरार जीवन ये कतखानि पंगु हइया पड़े, आज निद्राभङ्गे विनयके पाशे देखिया ताहा से अनुभव करिते पारिल। एइ आनन्देर आघाते चञ्चल हइया गोरा ठेलाठेलि करिया विनयके जागाइया दिल एवं कहिल, "चलो, एकटा काज आछे।"

गोरार प्रत्यह सकालवेलाय एकटा नियमित काज छिल। से पाड़ार निम्न-श्रेणीर लोकदेर घरे यातायात करित। ताहादेर उपकार करिबार वा उपदेश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिबार जन्य नहे—नितान्तइ ताहादेर सङ्गे देखासाक्षात् करिबार जन्यइ याइत। शिक्षित दलेर मध्ये ताहार एरूप यातायातेर सम्बन्ध छिल ना बलिलेइ हय। गोराके इहारा दादाठाकुर बलित एवं कड़िबाँधा हुँका दिया अभ्यर्थना करित। केवल मात्र इहादेर आतिथ्य ग्रहण करिबार जन्यइ गोरा जोर करिया तामाक खाओया धरियाछिल।

एइ दलेर मध्ये नन्द गोरार सर्वप्रधान भक्त छिल। नन्द छुतारेर छेले। वयस बाइश। से ताहार बापेर दोकाने काठेर बाक्स तैयारि करित। धापार माठे शिकारिर दले नन्दर मतो अव्यर्थ बन्दुकेर लक्ष्य काहारओ छिल ना। क्रिकेट खेलाय गोला छुँड़ितेओ से अद्वितीय छिल।

गोरा ताहार शिकार ओ क्रिकेटेर दले भद्र छात्रदेर सङ्गे एइ सकल छुतार-कामारेर छेलेदेर एक सङ्गे मिलाइया लइयाछिल। एइ मिश्रित दलेर मध्ये नन्द सकल प्रकार खेलाय ओ व्यायामे सकलेर सेरा छिल। भद्र छात्ररा केह केह ताहार प्रति ईर्षान्वित छिल, किन्तु गोरार शासने सकलेरइ ताहाके दलपति बलिया स्वीकार करिते हइत।

एइ नन्दर पाये कयेकदिन हइल एकटा बाटालि पड़िया गिया क्षत हओयाय से खेलार क्षेत्रे अनुपस्थित छिल। विनयके लइया एइ कयदिन गोरार मन विकल छिल, से ताहादेर बाड़िते याइते पारे नाइ। आज प्रभातेइ विनयके सङ्गे करिया से छुतार पाड़ाय गिया उपस्थित हइल।

नन्ददेर दोतला खोलार घरेर द्वारेर काछे आसितेइ भितर हइते मेयेदेर कान्नार शब्द शोना गेल। नन्दर बाप वा अन्य पुरुष अभिभावक बाड़िते नाइ। पाशे एकटि तामाकेर दोकान छिल; ताहार कर्ता आसिया कहिल, "नन्द आज भोरवेलाय मारा पड़ियाछे, ताहाके दाह करिते लइया गेछे।"

नन्द मारा गियाछे! एमन स्वास्थ्य, एमन शक्ति, एमन तेज, एमन हृदय, एत अल्प वयस—सेइ नन्द आज भोरवेलाय मारा गियाछे। समस्त शरीर शक्त करिया गोरा स्तब्ध हइया दाँड़ाइया रहिल। नन्द एकजन सामान्य छुतारेर छेले—ताहार अभावे क्षणकालेर जन्य संसारे येटुकु फाँक पड़िल ताहा अति अल्प लोकेरइ चोखे पड़िबे, किन्तु आज गोरार काछे नन्दर मृत्यु निदारुणरूपे असंगत ओ असम्भव बलिया ठेकिल। गोरा ये देखियाछे ताहार प्राण छिल—एत लोक तो बाँचिया आछे किन्तु ताहार मतो एत प्रचुर प्राण कोथाय देखिते पाओया याय।

की करिया ताहार मृत्यु हइल खबर लइते गिया शोना गेल ये, ताहार धनुष्टङ्कार हइयाछिल। नन्दर बाप डाक्तार आनिबार प्रस्ताव करियाछिल किन्तु नन्दर मा जोर करिया बलिल, ताहार छेलेके भूते पाइयाछे। भूतेर ओझा काल समस्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रात ताहार गाये छेंका दियाछे, ताहाके मारियाछे एवं मन्त्र पड़ियाछे। व्यामोर आरम्भे गोराके खबर दिबार जन्य नन्द एकबार अनुरोध करियाछिल—किन्तु, पाछे गोरा आसिया डाक्तारि मते चिकित्सा करिबार जन्य जेद करे, एइ भये नन्दर मा किछुतेइ गोराके खबर पाठाइते देय नाइ।

सेखान हइते फिरिया आसिबार समय विनय कहिल, "की मूढ़ता, आर तार की भयानक शास्ति!"

गोरा कहिल, "एइ मूढ़ताके एक पाशे सरिये रेखे तुमि निजे एर बाइरे आछ मने करे सान्त्वना लाभ कोरो ना, विनय। एइ मूढ़ता ये कत बड़ो, आर एर शास्ति ये कतखानि ता यदि स्पष्ट करे देखते पेते ता हले ओइ एकटा आक्षेपोक्ति-मात्र प्रकाश करे व्यापारटाके निजेर काछ थेके झेड़े फेलबार चेष्टा करते ना।"

मनेर उत्तेजनार सङ्गे गोरार पदक्षेप क्रमशइ द्रुत हइते लागिल। विनय ताहार कथाय कोनो उत्तर ना करिया ताहार सङ्गे समान पा राखिया चलिबार चेष्टाय प्रवृत्त हइल।

गोरा बलिते लागिल, "समस्त जात मिथ्यार काछे माथा बिकिये दिये रेखेछे। देवता, अपदेवता, पेंचो, हाँचि, बृहस्पतिवार, त्र्यहस्पर्श——भय ये कत तार ठिकाना नेइ——जगते सत्येर सङ्गे कि-रकम पौरुषेर सङ्गे व्यवहार करते हय ता एरा जानबे की करे। आर तुमि-आमि मने करछि ये, आमरा यखन दु-पाता विज्ञान पड़ेछि तखन आमरा आर एदेर दले नेइ। किन्तु ए कथा निश्चय जेनो, चार दिकेर हीनतार आकर्षण थेके अल्प लोक कखनोइ निजेके बइ-पड़ा विद्यार द्वारा बाँचिये राखते पारे ना। एरा यतदिन पर्यन्त जगद्व्यापारेर मध्ये नियमेर आधिपत्यके विश्वास ना करबे, यतदिन पर्यन्त मिथ्या भयेर द्वारा जड़ित हये थाकबे, ततदिन पर्यन्त आमादेर शिक्षित लोकेराओ एर प्रभाव छाड़ाते पारबे ना।"

विनय कहिल, "शिक्षित लोकेरा छाड़ाते पारलेइ वा ताते की! कजनइ वा शिक्षित लोक। शिक्षित लोकदेर उन्नत करबार जन्येइ ये अन्य लोकदेर उन्नत हते हबे ता नय——वरञ्च अन्य लोकदेर बड़ो करबार जन्येइ शिक्षित लोकदेर शिक्षार गौरव।"

गोरा विनयेर हात धरिया कहिल, "आमि तो ठिक ओइ कथाइ बलते चाइ। किन्तु, तोमरा निजेदेर भद्रता ओ शिक्षार अभिमाने साधारणेर थेके स्वतन्त्र हये दिव्य निश्चिन्त हते पार, एटा आमि बारम्बार देखेछि बलेइ तोमादेर आमि सावधान करे दिते चाइ ये, निचेर लोकदेर निष्कृति ना दिले कखनोइ तोमादेर यथार्थ निष्कृति नेइ। नौकार खोले यदि छिद्र थाके तबे नौकार मास्तुल कखनोइ गाये फुँ दिये बेड़ाते पारबे ना, ता तिनि यतइ उच्चे थाकुन-ना केन।"

विनय निरुत्तरे गोरार सङ्गे चलिते लागिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा किछुक्षण चुप करिया चलिया हठात् बलिया उठिल, "ना, विनय, ए आमि किछुतेइ सहजे सह्य करते पारब ना। ओइ-ये भूतेर ओझा एसे आमार नन्दके मेरे गेछे तार मार आमाके लागछे, आमार समस्त देशके लागछे। आमि एइ-सब व्यापारके एक-एकटा छोटो एवं विच्छिन्न घटना बले कोनोमतेइ देखते पारि ने।"

तथापि विनयके निरुत्तर देखिया गोरा गर्जिया उठिल, "विनय, आमि बेश बुझते पारछि, तुमि मने मने की भावछ। तुमि भावछ, एर प्रतिकार नेइ किम्वा प्रतिकारेर समय उपस्थित हते अनेक विलम्ब आछे। तुमि भावछ, एइ ये-समस्त भय एवं मिथ्या समस्त भारतवर्षके चेपे दाँड़िये रयेछे, भारतवर्षेर ए बोझा हिमाचलेर मतो बोझा, एके ठेले टलाते पारबे के! किन्तु, आमि एरकम करे भाबते पारि ने, यदि भाबतुम ता हले बाँचते पारतुम ना। या-किछु आमार देशके आघात करछे तार प्रतिकार आछेइ, ता से यतबड़ो प्रबल होक—एवं एकमात्र आमादेर हातेइ तार प्रतिकार आछे, एइ विश्वास आमार मने दृढ़ आछे बलेइ आमि चारि दिकेर एत दुःखदुर्गति-अपमान सह्य करते पारछि।"

विनय कहिल, "एतोबड़ो देशजोड़ा प्रकाण्ड दुर्गतिर सामने विश्वासके खाड़ा करे राखते आमार साहसइ हय ना।"

गोरा कहिल, "अन्धकार प्रकाण्ड आर प्रदीपेर शिखा छोटो। सेइ एतबड़ो अन्धकारेर चेये एतटुकु शिखार उपरे आमि बेशि आस्था राखि। दुर्गति चिरस्थायी हते पारे, ए कथा आमि कोनोक्रमेइ विश्वास करते पारि ने—समस्त विश्वेर ज्ञानशक्ति प्राणशक्ति ताके भितरे बाहिरे केवलइ आघात करछे, आमरा ये यतइ छोटो हइ सेइ ज्ञानेर दले प्राणेर दले दाँड़ाब; दाँड़िये यदि मरि तबु ए कथा निश्चय मने रेखे मरब ये, आमादेर दलेर जित हबे—देशेर जड़ताकेइ सकलेर चेये बड़ो एवं प्रबल मने करे तारइ उपर बिछाना पेते पड़े थाकब ना। आमि तो बलि—जगते शयतानेर उपरे विश्वास स्थापन करा आर भूतेर भय करा ठिक एकइ कथा; ओते फल हय एइ ये, रोगेर सत्यकार चिकित्साय प्रवृत्तिइ हय ना। येमन मिथ्या भय तेमनि मिथ्या ओझा; दुये मिलेइ आमादेर मारते थाके। विनय, आमि तोमाके बार बार बलछि, ए कथा एक मुहूर्तेर जन्ये स्वप्नेओ असम्भव बले मने कोरो ना ये, आमादेर एइ देश मुक्त हबेइ, अज्ञानताके चिरदिन जड़िये थाकबे ना एवं इंरेज ताके आपनार वाणिज्यतरीर पिछने चिरकाल शिकल दिये बेंधे निये बेड़ाते पारबे ना। एइ कथा मने दृढ़ रेखे प्रतिदिनइ आमादेर प्रस्तुत थाकते हबे। भारतवर्ष स्वाधीन हबार जन्य भविष्यतेर कोन् एक तारिखे लड़ाइ आरम्भ हबे, तोमरा तारइ उपर बरात दिये निश्चिन्त हये आछ। आमि बलछि, लड़ाइ आरम्भ हयेछे, प्रति मुहूर्ते लड़ाइ चलछे, ए समये यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोमरा निश्चिन्त हये थाकते पार ता हले तार चेये कापुरुषता तोमादेर किछुइ हते पारे ना।"

विनय कहिल, "देखो, गोरा, तोमार सङ्गे आमादेर एकटा प्रभेद आमि एइ देखते पाइ ये, पथे घाटे आमादेर देशे प्रतिदिन या घटछे एवं अनेक दिन धरेइ या घटे आसछे तुमि प्रत्यहइ ताके येन नूतन चोखे देखते पाओ। निजेर निश्वास-प्रश्वासके आमरा येमन भुले थाकि एगुलोओ आमादेर काछे तेमनि—एते आमादेर आशाओ देय ना, हताशओ करे ना; एते आमादेर आनन्द नेइ, दुःखओ नेइ—दिनेर पर दिन अत्यन्त शून्यभावे चले याच्छे, चारि दिकेर मध्ये निजेके एवं निजेर देशके अनुभवमात्र करछि ने।"

हठात् गोरार मुख रक्तवर्ण हइया ताहार कपालेर शिरागुला फुलिया उठिल—से दुइ हात मुठा करिया रास्तार माझखाने एक जुड़ि गाड़िर पिछने छुटिते लागिल एवं वज्रगर्जने समस्त रास्तार लोकके चकित करिया चीत्कार करिल, "थामाओ गाड़ि!" एकटा मोटा घड़िर चेन-परा बाबु गाड़ि हाँकाइतेछिल, से एकबार पिछन फिरिया देखिया दुइ तेजस्वी घोड़ाके चाबुक कषाइया मुहूर्तेर मध्ये अदृश्य हइया गेल।

एकजन वृद्ध मुसलमान माथाय एक-झाँका फल सबजि आण्डा रुटि माखन प्रभृति आहार्यसामग्री लइया कोनो इंरेज प्रभुर पाकशालार अभिमुखे चलितेछिल। चेन-परा बाबुटि ताहाके गाड़िर सम्मुख हइते सरिया याइबार जन्य हाँकियाछिल, वृद्ध शुनिते ना पाओयाते गाड़ि प्राय ताहार घाड़ेर उपर आसिया पड़े। कोनोमते ताहार प्राण बाँचिल किन्तु झाँकासमेत जिनिसगुला रास्ताय गड़ागड़ि गेल एवं क्रुद्ध बाबु कोचबाक्स हइते फिरिया ताहाके 'ड्याम शुयार' बलिया गालि दिया ताहार मुखेर उपर सपां करिया चाबुक बसाइया दिते ताहार कपाले रक्तेर रेखा देखा दिल। वृद्ध 'आल्ला' बलिया निश्वास फेलिया ये जिनिसगुला नष्ट हय नाइ ताहाइ बाछिया झाँकाय तुलिते प्रवृत्त हइल। गोरा फिरिया आसिया विकीर्ण जिनिसगुला निजे कुड़ाइया ताहार झाँकाय उठाइते लागिल। मुसलमान मुटे भद्रलोक पथिकेर एइ व्यवहारे अत्यन्त संकुचित हइया कहिल, "आपनि केन कष्ट करछेन, बाबु—ए आर कोनो काजे लागबे ना।"

गोरा ए काजेर अनावश्यकता जानित एवं से इहाओ जानित, याहार साहाय्य करा हइतेछे से लज्जा अनुभव करितेछे—वस्तुत साहाय्य हिसाबे एरूप काजेर विशेष मूल्य नाइ—किन्तु एक भद्रलोक याहाके अन्याय अपमान करियाछे आर-एक भद्रलोक सेइ अपमानितेर सङ्गे निजेके समान करिया धर्मेर क्षुब्ध व्यवस्थाय सामञ्जस्य आनिते चेष्टा करितेछे, ए कथा रास्तार लोकेर पक्षे बोझा असम्भव। झाँका भरति हइले गोरा ताहाके बलिल, "या लोकसान गेछे से तो तोमार सइबे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ना। चलो, आमादेर बाड़ि चलो, आमि समस्त पुरो दाम दिये किने नेब। किन्तु, बाबा, एकटा कथा तोमाके बलि, तुमि कथाटि ना बले ये अपमान सह्य करले, आल्ला तोमाके एजन्य माप करबेन ना।"

मुसलमान कहिल, "ये दोषी आल्ला ताकेइ शास्ति देबेन, आमाके केन देबेन।"

गोरा कहिल, "ये अन्याय सह्य करे सेओ दोषी। केनना, से जगते अन्यायेर सृष्टि करे। आमार कथा बुझबे ना तबु मने रेखो, भालोमानुषि धर्म नय; ताते दुष्ट मानुषके बाड़िये तोले, तोमादेर महम्मद से-कथा बुझतेन ताइ तिनि भालोमानुष सेजे धर्म प्रचार करेन नि।"

सेखान हइते गोरादेर बाड़ि निकट नय बलिया गोरा सेइ मुसलमानके विनयेर बासाय लइया गेल। विनयेर देराजेर सामने दाँड़ाइया विनयके कहिल, "टाका बेर करो।"

विनय कहिल, "तुमि व्यस्त हच्छ केन, बसो गे ना, आमि दिच्छि।"

बलिया हठात् चाबि खुँजिया पाइल ना। अधीर गोरा एक टान दितेइ दुर्बल देराज बद्ध चाबिर बाधा ना मानिया खुलिया गेल।

देराज खुलितेइ परेशबाबुर परिवारेर सकलेर एकत्रे तोला एकटा बड़ो फोटोग्राफ सर्वाग्रे चोखे पड़िल। एटि विनय ताहार बालक बन्धु सतीशेर निकट हइते संग्रह करियाछिल।

टाका संग्रह करिया गोरा सेइ मुसलमानके विदाय करिल, किन्तु फोटोग्राफ सम्बन्धे कोनो कथाइ बलिल ना। गोराके ए-सम्बन्धे चुप करिया थाकिते देखिया विनयओ कोनो कथा तुलिते पारिल ना—अथच दुइ-चारिटा कथा हइया गेले विनयेर मन सुस्थ हइत।

गोरा हठात् बलिल, "चललुम।"

विनय कहिल, "वाः, तुमि एकला याबे कि! मा ये आमाके तोमादेर ओखाने खेते बलेछेन। अतएव, आमिओ चललुम।"

दुइ जने रास्ताय बाहिर हइया पड़िल। बाकि पथ गोरा आर कोनो कथा कहिल ना। डेक्सेर मध्ये ओइ छबिखानि देखिया गोराके आबार सहसा स्मरण कराइया दिल ये, विनयेर चित्तेर एकटा प्रधान धारा एमन एकटा पथे चलियाछे ये-पथेर सङ्गे गोरार जीवनेर कोनो सम्पर्क नाइ। क्रमे बन्धुत्वेर आदिगङ्गा निर्जीव हइया ओइ दिकेइ मूल धाराटा बहिते पारे, ए आशङ्का अव्यक्तभावे गोरार हृदयेर गभीरतम तलदेशे एकटा अनिर्देश्य भारेर मतो चापिया पड़िल। समस्त चिन्ताय ओ कर्मे एतदिन दुइ बन्धुर मध्ये कोनो विच्छेद छिल ना—एखन आर ताहा रक्षा करा कठिन हइतेछे; विनय एक जायगाय स्वतन्त्र हइया उठितेछे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा ये केन चुप करिया गेल विनय ताहा बुझिल। किन्तु एइ नीरवतार बेड़ा गाये पड़िया ठेलिया भाङ्गिते ताहार संकोच बोध हइल। गोरार मनटा ये-जायगाय आसिया ठेकितेछे सेखाने एकटा सत्यकार व्यवधान आछे, इहा विनय निजेओ अनुभव करे।

बाड़िते आसिया पौंछितेइ देखा गेल, महिम पथेर दिके चाहिया द्वारेर काछे दाँड़ाइया आछेन। दुइ बन्धुके देखिया तिनि कहिलेन, "व्यापारखाना की! काल तो तोमादेर समस्त रात ना घुमियेइ केटेछे—आमि भाबछिलुम, दुजने बुझि वा फुटपाथेर उपरे कोथाओ आरामे घुमिये पड़ेछ। वेला तो कम हय नि। याओ, विनय, नाइते याओ।"

विनयके तागिद करिया नाहिते पाठाइया महिम गोराके लइया पड़िलेन; कहिलेन, "देखो, गोरा, तोमाके ये-कथाटा बलेछिलुम सेटा एकटु विवेचना करे देखो। विनयके यदि तोमार अनाचारी बले सन्देह हय ता हले आजकालकार बाजारे हिन्दु पात्र पाब कोथाय। शुधु हिँदुयानि हलेओ तो चलबे ना, लेखापड़ाओ तो चाइ! ओइ लेखापड़ाते हिँदुयानिते मिलले ये-पदार्थटा हय सेटा आमादेर हिन्दुमते ठिक शास्त्रीय जिनिस नय बटे किन्तु मन्द जिनिसओ नय। यदि तोमार मेये थाकत ता हले ए विषये आमार सङ्गे तोमार मतेर ठिक मिल हये येत।"

गोरा कहिल, "ता, बेश तो—विनय बोधहय आपत्ति करबे ना।"

महिम कहिल, "शोनो एकबार! विनयेर आपत्तिर जन्ये के भाबछे! तोमार आपत्तिकेइ तो डराइ। तुमि निजेर मुखे एकबार विनयके अनुरोध करो, आमि आर किछु चाइ ने—ताते यदि फल ना हय तो ना हबे।"

गोरा कहिल, "आच्छा।"

महिम मने मने कहिल, 'एइबार मयरार दोकाने सन्देश एवं गयलार दोकाने दइ क्षीर फरमाश दिते पारि।'

गोरा अवसरक्रमे विनयके कहिल, "शशिमुखीर सङ्गे तोमार विवाहेर जन्य दादा भारि पीड़ापीड़ि आरम्भ करेछेन। एखन, तुमि की बल?"

विनय। आगे तोमार की इच्छा सेइटे बलो।

गोरा। आमि तो बलि, मन्द की!

विनय। आगे तो तुमि मन्दइ बलते। आमरा दुजनेर केउ बिये करब ना, ए तो एकरकम ठिक हयेइ छिल।

गोरा। एखन ठिक करा गेल, तुमि बिये करबे आर आमि करब ना।

विनय। केन, एक यात्राय पृथक फल केन।

गोरा। पृथक फल हबार भयेइ एइ व्यवस्था करा याच्छे। विधाता कोनो कोनो मानुषके सहजेइ बेशि भारग्रस्त करे गड़े थाकेन, केउ वा सहजेइ दिव्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारहीन—एइ उभय जीवके एकत्रे जुड़े चालाते गेले एदेर एकटिर उपर बाइरे थेके बोझा चापिये दुजनेर ओजन समान करे निते हय। तुमि विवाह करे एकटु दायग्रस्त हले पर तोमाते आमाते समान चाले चलते पारब।

विनय एकटु हासिल एवं कहिल, "यदि सेइ मतलब हय तबे एइ दिकेइ बाटखाराटि चापाओ।"

गोरा। बाटखाराटि सम्बन्धे आपत्ति नेइ तो ?

विनय। ओजन समान करबार जन्ये या हातेर काछे आसे तातेइ काज चालानो येते पारे। ओ पाथर हलेओ हय, ढेला हलेओ हय, या खुशि।

गोरा ये विवाहप्रस्तावे केन उत्साह प्रकाश करिल ताहा विनयेर बुझिते बाकि रहिल ना। पाछे विनय परेशबाबुर परिवारेर मध्ये विवाह करिया बसे गोरार मने एइ सन्देह हइयाछे, अनुमान करिया विनय मने मने हासिल। एरूप विवाहेर संकल्प ओ सम्भावना ताहार मने एक मुहूर्तेर जन्यओ उदित हय नाइ। ए ये हइतेइ पारे ना। याइ होक, शशिमुखीके विवाह करिले एरूप अद्भुत आशङ्कार एकेबारे मूल उत्पाटित हइया याइबे एवं ताहा हइलेइ उभयेर बन्धुत्वसम्बन्ध पुनराय सुस्थ ओ शान्त हइबे ओ परेशबाबुदेर सङ्गे मेलामेशा करितेओ ताहार कोनो दिक हइते कोनो संकोचेर कारण थाकिबे ना, एइ कथा चिन्ता करिया से शशिमुखीर सहित विवाहे सहजेइ सम्मति दिल।

मध्याह्ने आहारान्ते रात्रेर निद्रार ऋणशोध करिते दिन काटिया गेल। सेदिन दुइ बन्धुर मध्ये आर कोनो कथा हइल ना, केवल जगतेर उपर सन्ध्यार अन्धकारेर पर्दा पड़िले प्रणयीदेर मध्ये यखन मनेर पर्दा उठिया याय सेइ समय विनय छातेर उपरे बसिया सिधा आकाशेर दिके ताकाइया बलिल, "देखो, गोरा, एकटा कथा आमि तोमाके बलते चाइ। आमार मने हय, आमादेर स्वदेशप्रेमेर मध्ये एकटा गुरुतर असम्पूर्णता आछे। आमरा भारतवर्षके आधखाना करे देखि।"

गोरा। केन बलो देखि।

विनय। आमरा भारतवर्षके केवल पुरुषेर देश बलेइ देखि, मेयेदेर एकेबारेइ देखि ने।

गोरा। तुमि इंरेजदेर मतो मेयेदेर बुझि घरे बाइरे, जले स्थले शून्ये, आहारे आमोदे कर्मे, सर्वत्रइ देखते चाओ ? ताते फल हबे एइ ये, पुरुषेर चेये मेयेकेइ बेशि करे देखते थाकबे—तातेओ दृष्टिर सामञ्जस्य नष्ट हबे।

विनय। ना ना, तुमि आमार कथाटाके ओरकम करे उड़िये दिले चलबे ना। इंरेजेर मतो करे देखब कि ना-देखब से-कथा केन तुलछ। आमि बलछि, एटा सत्य ये, स्वदेशेर मध्ये मेयेदेर अंशके आमादेर चिन्तार मध्ये आमरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथापरिमाणे आनि ने। तोमार कथाइ आमि बलते पारि, तुमि मेयेदेर सम्बन्धे एक मुहूर्तओ भाब ना––देशके तुमि येन नारीहीन करे जान––से-रकम जाना कखनोइ सत्य जाना नय।

गोरा। आमि यखन आमार माके देखेछि, माके जेनेछि, तखन आमार देशेर समस्त स्त्रीलोकके सेइ एक जायगाय देखेछि एवं जेनेछि।

विनय। ओटा तुमि निजेके भोलाबार जन्ये एकटा साजिये कथा बलले मात्र। घरेर काजेर मध्ये घरेर लोके घरेर मेयदेर अतिपरिचित भावे देखले ताते यथार्थ देखाइ हय ना। निजेदेर गार्हस्थ्य प्रयोजनेर बाइरे आमरा देशेर मेयेदेर यदि देखते पेतुम ता हले आमादेर स्वदेशेर सौन्दर्य एवं सम्पूर्णताके आमरा देखतुम, देशेर एमन एकटि मूर्ति देखा येत यार जन्ये प्राण देओया सहज हत––अन्तत ता हले, देशेर मेयेरा येन कोथाओ नेइ, एरकम भुल आमादेर कखनोइ घटते पारत ना। जानि, इंरेजेर समाजेर सङ्गे कोनोरकम तुलना करते गेलेइ तुमि आगुन हये उठबे––आमि ता करते चाइ ने––आमि जानि ने, ठिक कतटा परिमाणे एवं किरकम भावे आमादेर मेयेरा समाजे प्रकाश पेले तादेर मर्यादा लङ्घन हय ना, किन्तु एटा स्वीकार करतेइ हबे, मेयेरा प्रच्छन्न थाकाते आमादेर स्वदेश आमादेर काछे अर्धसत्य हये आछे––आमादेर हृदये पूर्णप्रेम एवं पूर्णशक्ति दिते पारछे ना।

गोरा। तुमि ए कथाटा सम्प्रति हठात् आविष्कार करले की करे।

विनय। हाँ, सम्प्रतिइ आविष्कार करेछि एवं हठात् आविष्कारइ करेछि। एतबड़ो सत्य आमि एतदिन जानतुम ना। जानते पेरेछि बले आमि निजेके भाग्यवान बलेइ मने करछि। आमरा येमन चाषाके केवलमात्र तार चाषवास, ताँतिके तार कापड़-तैरिर मध्ये देखि ब'ले तादेर छोटलोक बले अवज्ञा करि, तारा सम्पूर्ण भावे आमादेर चोखे पड़े ना, एवं छोटोलोक-भद्रलोकेर सेइ विच्छेदेर द्वाराइ देश दुर्बल हयेछे, ठिक सेइरकम कारणेइ देशेर मेयेदेर केवल तादेर रान्नाबान्ना बाटना-बाटार मध्ये आबद्ध करे देखछि बलेइ मेयेदेर मेयेमानुष बले अत्यन्त खाटो करे देखि––एते करे आमादेर समस्त देशइ खाटो हये गेछे।

गोरा। दिन आर रात्रि, समयेर एइ येमन दुटो भाग––पुरुष एवं मेयेओ तेमनि समाजेर दुइ अंश। समाजेर स्वाभाविक अवस्थाय स्त्रीलोक रात्रिर मतोइ प्रच्छन्न––तार समस्त काज निगूढ़ एवं निभृत। आमादेर कर्मेर हिसाब थेके आमरा रातके बाद दिइ। किन्तु बाद दिइ बले तार ये गभीर कर्म तार किछुइ बाद पड़े ना। से गोपन विश्रामेर अन्तराले आमादेर क्षतिपूरण करे, आमादेर पोषणेर सहायता करे। येखाने समाजेर अस्वाभाविक अवस्था सेखाने रातके जोर करे दिन करे तोले––सेखाने ग्यास ज्वालिये कल चालानो हय, बाति ज्वालिये समस्त रात नाचगान हय––ताते फल की हय? फल एइ हय ये,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रात्रिर ये स्वाभाविक निभृत काज ता नष्ट हये याय, क्लान्ति बाड़ते थाके, क्षतिपूरण हय ना, मानुष उन्मत्त हये ओठे। मेयेदेरओ यदि तेमनि आमरा प्रकाश्य कर्मक्षेत्रे टेने आनि ता हले तादेर निगूढ़ कर्मेर व्यवस्था नष्ट हये याय—ताते समाजेर स्वास्थ्य ओ शान्ति भङ्ग हय, समाजे एकटा मत्तता प्रवेश करे। सेइ मत्तताके हठात् शक्ति बले भ्रम हय, किन्तु से-शक्ति विनाश करबारइ शक्ति। शक्तिर दुटो अंश आछे—एक अंश व्यक्त, आर-एक अंश अव्यक्त ; एक अंश उद्योग, आर-एक अंश विश्राम ; एक अंश प्रयोग, आर-एक अंश संवरण। शक्तिर एइ सामञ्जस्य यदि नष्ट कर ता हले से क्षुब्ध हये ओठे, किन्तु से क्षोभ मङ्गलकर नय। नरनारी समाजशक्तिर दुइ दिक ; पुरुषइ व्यक्त, किन्तु व्यक्त बलेइ ये मस्त ता नय—नारी अव्यक्त, एइ अव्यक्त शक्तिके यदि केवलइ व्यक्त करबार चेष्टा करा हय ता हले समस्त मूलधन खरच करे फेले समाजके द्रुतवेगे देउले करबार दिके निये याओया हय। सेइ जन्ये बलछि, आमरा पुरुषरा यदि थाकि यज्ञेर क्षेत्रे, मेयेरा यदि थाकेन भाँड़ार आगले, ता हलेइ मेयेरा अदृश्य थाकलेओ यज्ञ सुसम्पन्न हबे। सब शक्तिकेइ एकइ दिके एकइ जायगाय एकइ रकमे खरच करते चाय यारा तारा उन्मत्त।

विनय। गोरा, तुमि या बलले आमि तार प्रतिवाद करते चाइ ने—किन्तु आमि या बलछिलुम तुमिओ तार प्रतिवाद कर नि। आसल कथा—

गोरा। देखो, विनय, एर परे ए कथाटा निये आर अधिक यदि बकाबकि करा याय ता हले सेटा नितान्त तर्क हये दाँड़ाबे। आमि स्वीकार करछि, तुमि सम्प्रति मेयेदेर सम्बन्धे यतटा सचेतन हये उठेछ आमि ततटा हइ नि—सुतरां तुमि या अनुभव करछ आमाकेओ ताइ अनुभव कराबार चेष्टा करा कखनो सफल हबे ना। अतएव, ए-सम्बन्धे आपातत आमादेर मतभेद रइल बलेइ मेने नेओया याक-ना।

गोरा कथाटाके उड़ाइया दिल। किन्तु, बीजके उड़ाइया दिलेओ से माटिते पड़े एवं माटिते पड़िले सुयोगमतो अंकुरित हइते बाधा थाके ना। ए-पर्यन्त जीवनेर क्षेत्र हइते गोरा स्त्रीलोकके एकेबारेइ सराइया राखियाछिल ; सेटाके एकटा अभाव वा क्षति बलिया से कखनो स्वप्नेओ अनुभव करे नाइ। आज विनयेर अवस्थान्तर देखिया संसारे स्त्रीजातिर विशेष सत्ता ओ प्रभाव ताहार काछे गोचर हइया उठियाछे। किन्तु, इहार स्थान कोथाय, इहार प्रयोजन की, ताहा से किछुइ स्थिर करिते पारे नाइ—एइजन्य विनयेर सङ्गे ए कथा लइया तर्क करिते ताहार भालो लागे ना। विषयटाके से अस्वीकार करितेओ पारे ना, आयत्त करितेओ पारितेछे ना—एइजन्य इहाके आलोचनार बाहिरे राखिते चाय।

रात्रे विनय यखन बासाय फिरितेछिल तखन आनन्दमयी ताहाके डाकिया कहिलेन, "शशिमुखीर सङ्गे, विनय, तोमार विवाह नाकि ठिक हये गेछे ?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय सलज्ज हास्येर सहित कहिल, "हाँ, मा—गोरा एइ शुभकर्मेर घटक।"

आनन्दमयी कहिलेन, "शशिमुखी मेयेटि भालो—किन्तु, बाछा, छेलेमानुषि कोरो ना। आमि तोमार मन जानि, विनय—एकटु दोमना हयेछ बलेइ ताड़ाताड़ि ए-काज करे फेलछ। एखनो विवेचना करे देखबार समय आछे, तोमार वयस हयेछे, बाबा—एतबड़ो एकटा काज अश्रद्धा करे कोरो ना।"

बलिया विनयेर गाये हात बुलाइया दिलेन। विनय कोनो कथा ना बलिया आस्ते आस्ते चलिया गेल।

१८

विनय आनन्दमयीर कथा कयटि भाबिते भाबिते बासाय गेल। आनन्दमयीर मुखेर एकटि कथाओ ए-पर्यन्त विनयेर काछे कोनोदिन उपेक्षित हय नाइ। से-रात्रे ताहार मनेर मध्ये एकटा भार चापिया रहिल।

परदिन सकाले उठिया से येन एकटा मुक्तिर भाव अनुभव करिल। ताहार मने हइल, गोरार बन्धुत्वके से एकटा खुब बड़ो दाम दिया चुकाइया दियाछे। एक दिके शशिमुखीके विवाह करिते राजि हइया से जीवनव्यापी ये एकटा बन्धन स्वीकार करियाछे इहार परिवर्ते आर-एक दिके ताहार बन्धन आलगा दिबार अधिकार हइयाछे। विनय समाज छाड़िया ब्राह्मपरिवारे विवाह करिवार जन्य लुब्ध हइयाछे, गोरा ताहार प्रति एइ-ये अत्यन्त अन्याय सन्देह करियाछिल—एइ मिथ्या सन्देहेर काछे से शशिमुखीर विवाहके चिरन्तन जामिन-स्वरूपे राखिया निजेके खालास करिया लइल। इहार परे विनय परेशेर बाड़िते निःसंकोचे एवं घन घन यातायात करिते आरम्भ करिल।

याहादिगके भालो लागे ताहादेर घरेर लोकेर मतो हइया उठा विनयेर पक्षे किछुमात्र शक्त नहे। से येइ गोरार दिकेर संकोच ताहार मन हइते दूर करिया दिल अमनि देखिते देखिते अल्पकालेर मध्येइ परेशबाबुर घरेर सकलेर काछेर येन बहुदिनेर आत्मीयेर मतो हइया उठिल।

केवल ललितार मने ये-कयदिन सन्देह छिल ये, सुचरितार मन हयतो वा विनयेर दिके किछु झुँकियाछे, सेइ कयदिन विनयेर विरुद्धे ताहार मन येन अस्त्रधारण करिया उठियाछिल। किन्तु यखन से स्पष्ट बुझिल ये, सुचरिता विनयेर प्रति विशेषभावे पक्षपाती नहे, तखन ताहार मनेर विद्रोह दूर हइया से भारि आराम बोध करिल एवं विनयबाबुके असामान्य भालो लोक बलिया मने करिते ताहार कोनो बाधा रहिल ना।

हारानबाबुओ विनयेर प्रति विमुख हइलेन ना—तिनि एकटु येन बेशि करिया स्वीकार करिलेन ये, विनयेर भद्रताज्ञान आछे। गोरार ये सेटा नाइ, इहाइ एइ स्वीकारोक्तिर इङ्गित।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कखनो हारानबाबुर सम्मुखे कोनो तर्केर विषय तुलित ना एवं सुचरितारओ चेष्टा छिल याहाते ना तोला हय—एइजन्य विनयेर द्वारा इतिमध्ये चायेर टेबिलेर शान्तिभङ्ग हइते पाय नाइ।

किन्तु, हारानेर अनुपस्थितिते सुचरिता निजे चेष्टा करिया विनयके ताहार सामाजिक मतेर आलोचनाय प्रवृत्त करित। गोरा एवं विनयेर मतो शिक्षित लोक केमन करिया ये देशेर प्राचीन कुसंस्कारगुलिर समर्थन करिते पारे, इहा जानिबार कौतूहल किछुतेइ ताहार निवृत्त हइत ना। गोरा ओ विनयके से यदि ना जानित तबे ए-सकल मत केह स्वीकार करे जानिले, सुचरिता द्वितीय कोनो कथा ना शुनिया ताहाके अवज्ञार योग्य बलिया स्थिर करित। किन्तु, गोराके देखिया अवधि गोराके से कोनोमते मन हइते अश्रद्धा करिया दूर करिते पारितेछे ना। ताइ सुयोग पाइलेइ घुरिया-फिरिया विनयेर सङ्गे से गोरार मत ओ जीवनेर आलोचना उत्थापन करे एवं प्रतिवादेर द्वारा सकल कथा शेष पर्यन्त टानिया बाहिर करिते थाके। परेश सुचरिताके सकल सम्प्रदायेर मत शुनिते देओयाइ ताहार सुशिक्षार उपाय बलिया जानितेन, एइजन्य तिनि ए-सकल तर्के कोनोदिन शङ्का-अनुभव वा बाधाप्रदान करेन नाइ।

एकदिन सुचरिता जिज्ञासा करिल, "आच्छा, गौरमोहनबाबु कि सत्यइ जातिभेद मानेन ना ओटा देशानुरागेर एकटा बाड़ाबाड़ि ?"

विनय कहिल, "आपनि कि सिँड़िर धापगुलोके मानेन। ओगुलोओ तो सब विभाग—कोनोटा उपरे, कोनोटा निचे।"

सुचरिता। निचे थेके उपरे उठते हय बलेइ मानि—नइले मानबार कोनो प्रयोजन छिल ना। समान जायगाय सिँड़िके ना मानलेओ चले।

विनय। ठिक बलेछेन—आमादेर समाज एकटा सिँड़ि—एर मध्ये एकटा उद्देश्य छिल, सेटा हच्छे निचे थेके उपरे उठिये देओया—मानवजीवनेर एकटा परिणामे निये याओया। यदि समाजके संसारकेइ परिणाम बले जानतुम ता हले कोनो विभाग-व्यवस्थार प्रयोजनइ छिल ना—ता हले युरोपीय समाजेर मतो प्रत्येके अन्येर चेये बेशि दखल करबार जन्ये काड़ाकाड़ि मारामारि करे चलतुम ; संसारे ये कृतकार्य हत सेइ माथा तुलत, यार चेष्टा निष्फल हत से एकेबारेइ तलिये येत। आमरा संसारेर भितर दिये संसारके पार हते चाइ बलेइ संसारेर कर्तव्यके प्रवृत्ति ओ प्रतियोगितार उपरे प्रतिष्ठित करि नि—संसारकर्मके धर्म बले स्थिर करेछि, केनना कर्मेर द्वारा अन्य कोनो सफलता नय, मुक्ति लाभ करते हबे—सेइजन्य एक दिके संसारेर काज, अन्य दिके संसार काजेर परिणाम, उभय दिके ताकिये आमादेर समाज वर्णभेद अर्थात् वृत्तिभेद स्थापन करेछेन।

7

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता। आमि ये आपनार कथा खुब स्पष्ट बुझते पारछि ता नय। आमार प्रश्न एइ ये, ये-उद्देश्ये समाजे वर्णभेद प्रचलित हयेछे आपनि बलछेन, से-उद्देश्य कि सफल हयेछे देखते पाच्छेन।

विनय। पृथिवीते सफलतार चेहारा देखते पाओया बड़ो शक्त। ग्रीसेर सफलता आज ग्रीसेर मध्ये नेइ, सेजन्ये बलते पारि ने, ग्रीसेर समस्त आइडियाइ भ्रान्त एवं व्यर्थ। ग्रीसेर आइडिया एखनो मानवसमाजेर मध्ये नाना आकारे सफलता लाभ करछे। भारतवर्ष ये जातिभेद ब'ले सामाजिक समस्यार एकटा बड़ो उत्तर दियेछिलेन—से उत्तरटा एखनो मरे नि—सेटा एखनो पृथिवीर सामने रयेछे। युरोपओ सामाजिक समस्यार अन्य कोनो सदुत्तर एखनो दिते पारे नि, सेखाने केवलइ ठेलाठेलि हाताहाति चलछे—भारतवर्षेर एइ उत्तरटा मानवसमाजे एखनो सफलतार जन्ये प्रतीक्षा करे आछे—आमरा एके क्षुद्र सम्प्रदायेर अन्धतावशत उड़िये दिलेइ ये ए उड़े याबे, ता मनेओ करबेन ना। आमरा छोटो छोटो सम्प्रदायेरा जलविम्बेर मतो समुद्रे मिशिये याब किन्तु भारतवर्षेर सहज प्रतिभा हते एइ-ये एकटा प्रकाण्ड मीमांसा उद्भूत हयेछे, पृथिवीर मध्ये यतक्षण पर्यन्त एर काज ना हबे ततक्षण ए स्थिर दाँड़िये थाकबे।

सुचरिता संकुचित हइया जिज्ञासा करिल, "आपनि राग करबेन ना, किन्तु सत्यि करे बलुन, ए-समस्त कथा कि आपनि गौरमोहनबाबुर प्रतिध्वनिर मतो बलछेन ना ए आपनि सम्पूर्ण विश्वास करेछेन?"

विनय हासिया कहिल, "आपनाके सत्य करेइ बलछि, गोरार मतो आमार विश्वासेर जोर नेइ। जातिभेदेर आवर्जना ओ समाजेर विकारगुलो यखन देखते पाइ तखन आमि अनेक समयेइ सन्देह प्रकाश करे थाकि—किन्तु गोरा बले, बड़ो जिनिसके छोटो करे देखलेइ सन्देह जन्मे—गाछेर भाङा डाल ओ शुकनो पाताकेइ गाछेर चरम प्रकृति बले देखा बुद्धिर असहिष्णुता—भाङा डालके प्रशंसा करते बलि ने, किन्तु वनस्पतिके देखो एवं तार तात्पर्य बुझते चेष्टा करो।"

सुचरिता। गाछेर शुकनो पाताटा ना हय नाइ धरा गेल, किन्तु गाछेर फलटा तो देखते हबे। जातिभेदेर फलटा आमादेर देशेर पक्षे किरकम।

विनय। याके जातिभेदेर फल बलछेन सेटा अवस्थार फल, शुधु जातिभेदेर नय। नड़ा दाँत दिये चिबोते गेले व्यथा लागे, सेटा दाँतेर अपराध नय, नड़ा दाँतेर अपराध। नाना कारणे आमादेर मध्ये विकार ओ दुर्बलता घटेछे बलेइ भारतवर्षेर आइडियाके आमरा सफल ना करे विकृत करछि—से-विकार आइडियार मूलगत नय। आमादेर भितर प्राण ओ स्वास्थ्येर प्राचुर्य घटलेइ समस्त ठिक हये याबे। गोरा सेइजन्ये बार बार बले ये, माथा धरे बले माथाटाके उड़िये दिले चलबे ना—सुस्थ हओ, सबल हओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता। आच्छा, ता हले आपनि ब्राह्मण जातके नरदेवता बले मानते बलेन ? आपनि सत्यि विश्वास करेन, ब्राह्मणेर पायेर धुलोय मानुष पवित्र हय ?

विनय। पृथिवीते अनेक सम्मानइ तो आमादेर निजेर सृष्टि। राजाके यतदिन ये-कारणेइ होक दरकार थाके ततदिन मानुष ताके असामान्य बले प्रचार करे। किन्तु, राजा तो सत्यि असामान्य नय। अथच निजेर सामान्यतार बाधा भेद करे ताके असामान्य हये उठते हबे, नइले से राजत्व करते पारबेइ ना। आमरा राजार काछे थेके उपयुक्तरूप राजत्व पाबार जन्ये ताके असामान्य करे गड़े तुलि—आमादेर सेइ सम्मानेर दाबि राजाके रक्षा करते हय, ताके असामान्य हते हय। मानुषेर सकल सम्बन्धेर मध्येइ एइ कृत्रिमता आछे। एमन कि, बाप-मार ये-आदर्श आमरा सकले मिले खाड़ा करे रेखेछि ताते क'रेइ समाजे बाप-माके विशेषभावे बाप-मा करे रेखेछे, केवलमात्र स्वाभाविक स्नेहे नय। एकान्नवर्ती परिवारे बड़ो भाइ छोटो भाइयेर जन्य अनेक सह्य ओ अनेक त्याग करे—केन करे। आमादेर समाजे दादाके विशेषभावे दादा करे तुलेछे, अन्य समाजे ता करे नि। ब्राह्मणकेओ यदि यथार्थभावे ब्राह्मण करे गड़े तुलते पारि ता हले से कि समाजेर पक्षे सामान्य लाभ ! आमरा नरदेवता चाइ—आमरा नरदेवताके यदि यथार्थइ अन्तरेर सङ्गे बुद्धिपूर्वक चाइ ता हले नरदेवताके पाव—आर यदि मूढ़ेर मतो चाइ ता हले ये-समस्त अपदेवता सकलरकम दुष्कर्म करे थाके एवं आमादेर माथार उपरे पायेर धुलो देओया यादेर जीविकार उपाय तादेर दल वाड़िये धरणीर भार वृद्धि करा हबे।

सुचरिता। आपनार सेइ नरदेवता कि कोथाओ आछे।

विनय। बीजेर मध्ये येमन गाछ आछे तेमनि आछे, भारतवर्षेर आन्तरिक अभिप्राय एवं प्रयोजनेर मध्ये आछे। अन्य देश ओयेलिंटनेर मतो सेनापति, निउटनेर मतो वैज्ञानिक, रथ्चाइल्डेर मतो लक्षपति चाय, आमादेर देश ब्राह्मणके चाय। ब्राह्मण, यार भय नेइ, लोभके ये घृणा करे, दुःखके ये जय करे, अभावके ये लक्ष्य करे ना, ये परमे ब्रह्मणि योजितचित्तः, ये अटल, ये शान्त, ये मुक्त—सेइ ब्राह्मणके भारतवर्ष चाय—सेइ ब्राह्मणके यथार्थभावे पेले तबेइ भारतवर्ष स्वाधीन हबे। आमादेर समाजेर प्रत्येक विभागके, प्रत्येक कर्मके सर्वदाइ एकटि मुक्तिर सुर जोगाबार जन्यइ ब्राह्मणके चाइ—राँधबार जन्ये एवं घण्टा नाड़बार जन्ये नय—समाजेर सार्थकताके समाजेर चोखेर सामने सर्वदा प्रत्यक्ष करे राखबार जन्ये ब्राह्मणके चाइ। एइ ब्राह्मणेर आदर्शके आमरा यत बड़ो करे अनुभव करब ब्राह्मणेर सम्मानके तत बड़ो करे तुलते हबे। से-सम्मान राजार सम्मानेर चेये अनेक बेशि ; से-सम्मान देवतारइ सम्मान। ए देशे ब्राह्मण यखन सेइ सम्मानेर यथार्थ अधिकारी हबे तखन ए देशके केउ अपमानित करते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पारबे ना। आमरा कि राजार काछे माथा हेंट करि। अत्याचारीर बन्धन गलाय परि? निजेर भयेर काछे आमादेर माथा नत, निजेर लोभेर जाले आमरा जड़िये आछि, निजेर मूढ़तार काछे आमरा दासानुदास। ब्राह्मण तपस्या करुन; सेइ भय थेके, लोभ थेके, मूढ़ता थेके आमादेर मुक्त करुन—आमरा ताँदेर काछ थेके युद्ध चाइ ने, वाणिज्य चाइ ने, आर-कोनो प्रयोजन चाइ ने—ताँरा आमादेर समाजेर माझखाने मुक्तिर साधनाके सत्य करे तुलुन।

परेशबाबु एतक्षण चुप करिया शुनितेछिलेन; तिनि धीरे धीरे बलिलेन, "भारतवर्षके ये आमि जानि ता बलते पारि ने एवं भारतवर्ष ये की चेयेछिलेन एवं कोनोदिन ता पेयेछिलेन कि ना ता आमि निश्चय जानि ने—किन्तु, ये दिन चले गेछे सेइ दिने कि कखनो फिरे याओया याय। वर्तमाने या सम्भव ताइ आमादेर साधनार विषय—अतीतेर दिके दुइ हात बाड़िये समय नष्ट करले कि कोनो काज हबे।"

विनय कहिल, "आपनि येमन बलछेन आमिओ ओइरकम करे भेबेछि एवं अनेक बार बलेओछि—गोरा बले ये, अतीतके अतीत बले बरखास्त करे बसे आछि बलेइ कि से अतीत। वर्तमानेर हाँकडाकेर आड़ाले पड़े आमादेर दृष्टिर अतीत हयेछे बलेइ से अतीत नय—से भारतवर्षेर मज्जार मध्ये रयेछे। कोनो सत्य कोनोदिनइ अतीत हते पारे ना। सेइजन्यइ भारतवर्षेर एइ सत्य आमादेर आघात करते आरम्भ करेछे। एकदिन एके यदि आमादेर एकजनओ सत्य बले चिनते ओ ग्रहण करते पारे ता हलेइ आमादेर शक्तिर खनिर द्वारे प्रवेशेर पथ खुले याबे, अतीतेर भाण्डार वर्तमानेर सामग्री हये उठबे। आपनि कि मने करछेन भारतवर्षेर कोथाओ से रकम सार्थकजन्मा लोकेर आविर्भाव हय नि?"

सुचरिता कहिल, "आपनि येरकम करे ए-सब कथा बलछेन ठिक साधारण लोके एरकम करे बले ना—सेइजन्ये आपनादेर मतके समस्त देशेर जिनिस बले धरे निते मने संशय हय।"

विनय कहिल, "देखुन, सूर्येर उदय व्यापारटाके वैज्ञानिकेरा एकरकम करे व्याख्या करे, आबार साधारण लोके आर-एकरकम करे व्याख्या करे। ताते सूर्येर उदयेर विशेष कोनो क्षतिवृद्धि करे ना। तबे किना सत्यके ठिकमतो करे जानार दरुन आमादेर एकटा लाभ आछे। देशेर ये-सकल सत्यके आमरा खण्डित क'रे विक्षिप्त क'रे देखि, गोरा तार समस्तके एक क'रे संश्लिष्ट क'रे देखते पाय, गोरार सेइ आश्चर्य क्षमता आछे—किन्तु सेइजन्यइ कि गोरार सेइ देखाके दृष्टिविभ्रम बले मने करबेन—आर यारा भेङेचुरे देखे तादेर देखाटाइ सत्य?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता चुप करिया रहिल। विनय कहिल, "आमादेर देशे साधारणत ये-सकल लोक निजेके परम हिन्दु बले अभिमान करे आमार बन्धु गोराके आपनि से-दलेर लोक बले मने करबेन ना। आपनि यदि ओर बाप कृष्णदयालबाबुके देखतेन ता हले बाप ओ छेलेर तफात बुझते पारतेन। कृष्णदयालबाबु सर्वदाइ कापड़ छेड़े, गङ्गाजल छिटिये, पाँजिपुँथि मिलिये, निजेके सुपवित्र करे राखबार जन्ये अहरह व्यस्त हये आछेन ; रान्ना सम्बन्धे खुब भालो बामुनकेओ तिनि विश्वास करेन ना पाछे तार ब्राह्मणत्वे कोथाओ कोनो त्रुटि थाके ; गोराके ताँर घरेर त्रिसीमानाय ढुकते देन ना ; कखनो यदि काजेर खातिरे ताँर स्त्रीर महले आसते हय ता हले फिरे गिये निजेके शोधन करे नेन ; पृथिवीते दिनरात अत्यन्त आलगोछे आछेन पाछे ज्ञाने वा अज्ञाने कोनो दिक थेके नियमभङ्गेर कणामात्र धुलो ताँके स्पर्श करे—घोर बाबु येमन रोद काटिये, धुलो बाँचिये, निजेर रङेर जेल्ला, चुलेर बाहार, कापड़ेर पारिपाट्य रक्षा करते सर्वदा व्यस्त हये थाके सेइरकम। गोरा एरकमइ नय। से हिँदुयानि नियमके अश्रद्धा करे ना किन्तु से अमन खुँटे खुँटे चलते पारे ना। से हिन्दुधर्मके भितरेर दिक थेके एवं खुब बड़ोरकम करे देखे, से कोनोदिन मनेओ करे ना ये, हिन्दुधर्मेर प्राण नितान्त शौखिन प्राण—अल्प एकटु छोंयाछुँयितेइ शुकिये याय, ठेकाठेकितेइ मारा पड़े।"

सुचरिता। किन्तु, तिनि तो खुब सावधाने छोंयाछुँयि मेने चलेन बलेइ मने हय।

विनय। तार ओइ सतर्कताटा एकटा अद्भुत जिनिस। ताके यदि प्रश्न करा याय से तखनइ बले, 'हाँ, आमि ए-समस्तइ मानि—छुँले जात याय, खेले पाप हय, ए-समस्तइ अभ्रान्त सत्य।' किन्तु आमि निश्चय जानि, ए केवल ओर गायेर जोरेर कथा—ए-सब कथा यतइ असंगत हय ततइ ओ येन सकलके शुनिये उच्चस्वरे बले। पाछे वर्तमान हिन्दुयानिर सामान्य कथाटाकेओ अस्वीकार करले अन्य मूढ़ लोकेर काछे हिन्दुयानिर बड़ो जिनिसेरओ असम्मान घटे एवं यारा हिन्दुयानिके अश्रद्धा करे तारा सेटाके निजेर जित बले गण्य करे, एइजन्ये गोरा निर्विचारे समस्तइ मेने चलते चाय—आमार काछेओ ए-सम्बन्धे कोनो शैथिल्य प्रकाश करते चाय ना।

परेशबाबु कहिलेन, "ब्राह्मदेर मध्येओ एरकम लोक अनेक आछे। तारा हिन्दुयानिर समस्त संस्रवइ निर्विचारे परिहार करते चाय, पाछे बाइरेर कोनो लोक भुल करे ये तारा हिन्दुधर्मेर कुप्रथाकेओ स्वीकार करे। ए-सकल लोक पृथिवीते वेश सहजभावे चलते पारे ना—एरा हय भाण करे नय बाड़ाबाड़ि करे ; मने करे, सत्य दुर्बल, एवं सत्यके केवल कौशल करे किंवा जोर करे रक्षा करा येन कर्तव्येर अङ्ग। 'आमार उपरे सत्य निर्भर करछे, सत्यर उपरे आमि निर्भर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करछि नें' एइरकम यादेर धारणा तादेरइ बले गोंड़ा। सत्येर जोरके यारा विश्वास करे निजेदेर जबरदस्तिके तारा संयत राखे। बाइरेर लोके दु-दिन दश-दिन भुल बुझले सामान्यइ क्षति, किन्तु कोनो क्षुद्र संकोचे सत्यके स्वीकार ना करते पारले तार चेयें अनेक बेशि क्षति। आमि ईश्वरेर काछे सर्वदाइ एइ प्रार्थना करि ये, ब्राह्मेर सभातेइ होक आर हिन्दुर चण्डीमण्डपेइ होक, आमि येन सत्यके सर्वत्रइ नतशिरे अति सहजेइ बिना विद्रोहे प्रणाम करते पारि––बाइरेर कोनो बाधा आमाके येन आटक करे ना राखते पारे।"

एइ बलिया परेशबाबु स्तब्ध हइया आपनार मनके येन आपनार अन्तरे क्षणकालेर जन्य समाधान करिलेन। परेशबाबु मृदुस्वरे एइ ये-कयटि कथा बलिलेन ताहा एतक्षणेर समस्त आलोचनार उपरे येन एकटा बड़ो सुर आनिया दिल––से-सुर ये ओइ कयटि कथार सुर ताहा नहे, ताहा परेशबाबुर निजेर जीवनेर एकटि प्रशान्त गभीरतार सुर। सुचरिता एवं ललितार मुखे एकटि आनन्दित भक्तिर दीप्ति आलो फेलिया गेल। विनय चुप करिया रहिल। सेओ मने मने जानित, गोरार मध्ये एकटा प्रचण्ड जबरदस्ति आछे––सत्येर वाहकदेर वाक्ये मने ओ कर्मे ये एकटि सहज ओ सरल शान्ति थाका उचित ताहा गोरार नाइ––परेशबाबुर कथा शुनिया से-कथा ताहार मने येन आरओ स्पष्ट करिया आघात करिल। अवश्य, विनय एतदिन गोरार पक्षे एइ बलिया मने मने तर्क करियाछे ये, समाजेर अवस्था यखन टलमल, बाहिरेर देशकालेर सङ्गे यखन विरोध बाधियाछे, तखन सत्येर सैनिकरा स्वाभाविकता रक्षा करिते पारे ना––तखन सामयिक प्रयोजनेर आकर्षणे सत्येर मध्येओ भाङ्चुर आसिया पड़े। आज परेशबाबुर कथाय विनय क्षणकालेर जन्य मने प्रश्न करिल ये, सामयिक प्रयोजन-साधनेर लुब्धताय सत्यके क्षुब्ध करिया तोला साधारण लोकेर पक्षेइ स्वाभाविक, किन्तु ताहार गोरा कि सेइ साधारण लोकेर दले।

सुचरिता रात्रे बिछानाय आसिया शुइले पर ललिता ताहार खाटेर एक धारे आसिया बसिल। सुचरिता बुझिल, ललितार मनेर भितर एकटा कोनो कथा घुरिया बेड़ाइतेछे। कथाटा ये विनयेर सम्बन्धे ताहाओ सुचरिता बुझियाछिल।

सेइजन्य सुचरिता आपनि कथा पाड़िल, "विनयबाबुके किन्तु आमार वेश भालो लागे।"

ललिता कहिल, "तिनि किना केवलइ गौरबाबुर कथाइ बलेन, सेइजन्ये तोमार भालो लागे।"

सुचरिता ए कथाटार भितरकार इङ्गितटा बुझियाओ बुझिल ना। से एकटा सरल भाव धारण करिया कहिल, "ता सत्यि, ओंर मुख थेके गौरबाबुर कथा शुनते आमार भारि आनन्द हय। आमि येन ताँके स्पष्ट देखते पाइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता कहिल, "आमार तो किछु भालो लागे ना—आमार राग धरे।"

सुचरिता आश्चर्य हइया कहिल, "केन।"

ललिता कहिल, "गोरा, गोरा, गोरा, दिनरात्रि केवल गोरा! ओंर बन्धु गोरा हयतो खुब मस्त लोक, बेश तो, भालोइ तो— किन्तु उनिओ तो मानुष।"

सुचरिता हासिया कहिल, "ता तो बटेइ, किन्तु तार व्याघात की हयेछे।"

ललिता। ओंर बन्धु ओंके एमनि ढेके फेलेछेन ये, उनि निजेके प्रकाश करते पारछेन ना। येन काँचपोकाय तेलापोकाके धरेछे—ओरकम अवस्थाय काँचपोकार उपरेओ आमार राग धरे, तेलापोकार उपरेओ आमार श्रद्धा हय ना।

ललितार कथार झाँझ देखिया सुचरिता किछु ना बलिया हासिते लागिल।

ललिता कहिल, "दिदि, तुमि हासछ, किन्तु आमि तोमाके बलछि, आमाके यदि केउ ओरकम करे चापा दिते चेष्टा करत आमि ताके एक दिनेर जन्येओ सह्य करते पारतुम ना। एइ मने करो तुमि—लोके याइ मने करुक, तुमि आमाके आच्छन्न करे राख नि—तोमार सेरकम प्रकृतिइ नय—सेइजन्येइ आमि तोमाके एत भालोबासि। आसल, बाबार काछे थेके तोमार ओइ शिक्षा हयेछे—तिनि सब लोककेइ तार जायगाटुकु छेड़े देन।"

एइ परिवारेर मध्ये सुचरिता एवं ललिता परेशबाबुर परम भक्त—'बाबा' बलितेइ ताहादेर हृदय येन स्फीत हइया उठे।

सुचरिता कहिल, "बाबार सङ्गे कि आर कारओ तुलना हय। किन्तु, याइ बल, भाइ, विनयबाबु भारि चमत्कार करे बलते पारेन।"

ललिता। ओगुलो ओंर मनेर कथा नय बलेइ अत चमत्कार करे बलेन। यदि निजेर कथा बलतेन ता हले बेश दिब्यि सहज कथा हत; मने हत ना ये, भेबे भेबे बानिये बानिये बलछेन। चमत्कार कथार चेये से आमार ढेर भालो लागे।

सुचरिता। ता, राग करिस केन, भाइ। गौरमोहनबाबुर कथागुलो ओंर निजेरइ कथा हये गेछे।

ललिता। ता यदि हय तो से भारि विश्री—ईश्वर कि बुद्धि दियेछेन परेर कथा व्याख्या करबार, आर मुख दियेछेन परेर कथा चमत्कार करे बलबार जन्ये। अमन चमत्कार कथाय काज नेइ।

सुचरिता। किन्तु, एटा तुइ बुझछिस ने केन ये, विनयबाबु गौरमोहनबाबुके भालोबासेन—ताँर सङ्गे ओंर मनेर सत्यिकार मिल आछे।

ललिता असहिष्णु हइया बलिया उठिल, "ना, ना, ना, सम्पूर्ण मिल नेइ। गौरमोहनबाबुके मेने चला ओंर अभ्यास हये गेछे—सेटा दासत्व, से भालोबासा नय। अथच उनि जोर करे मने करते चान ये, ताँर सङ्गे ओंर ठिक एक मत;

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेइजन्येइ ताँर मतगुलिके उनि अत चेष्टा क'रे चमत्कार क'रे ब'ले निजेके ओ अन्यके भोलाते इच्छा करेन। उनि केवलइ निजेर मनेर सन्देहके विरोधके चापा दिये चलते चान, पाछे गौरमोहनबाबुके ना-मानते हय। ताँके ना-मानबार साहस ओंर नेइ। भालोबासा थाकले मतेर सङ्गे ना मिललेओ माना येते पारे—अन्ध ना हयेओ निजेके छेड़े देओया याय—ओंर तो ता नय—उनि गौरमोहनबाबुके मानछेन हयतो भालोबासा थेके, अथच किछुते सेटा स्वीकार करते पारछेन ना। ओंर कथा शुनलेइ सेटा बेश स्पष्ट बोझा याय। आच्छा, दिदि, तुमि बोझ नि ? सत्यि बलो।"

सुचरिता ललितार मतो ए कथा एमन करिया भाबेइ नाइ। कारण, गोराके सम्पूर्णरूपे जानिबार जन्यइ ताहार कौतूहल व्यग्र हइयाछिल ; विनयके स्वतन्त्र करिया देखिबार जन्य ताहार आग्रहइ छिल ना। सुचरिता ललितार प्रश्नेर स्पष्ट उत्तर ना दिया कहिल, "आच्छा, बेश, तोर कथाइ मेने नेओया गेल—ता की करते हबे बल्।"

ललिता। आमार इच्छा करे, ओंर बन्धुर बाँधन थेके छाड़िये निये ओंके स्वाधीन करे दिते।

सुचरिता। चेष्टा करे देख्-ना, भाइ।

ललिता। आमार चेष्टाय हबे ना—तुमि एकटु मने करलेइ हय।

सुचरिता यदिओ भितरे भितरे बुझियाछिल ये, विनय ताहार प्रति अनुरक्त तबु से ललितार कथा हासिया उड़ाइया दिबार चेष्टा करिल।

ललिता कहिल, "गौरमोहनबाबुर शासन काटियेओ उनि ये तोमार काछे एमन करे धरा दिते आसछेन तातेइ आमार ओंके भालो लागे। ओंर अवस्थार केउ हले ब्राह्ममेयेदेर गाल दिये नाटक लिखत—ओंर मन एखनो खोलसा आछे, तोमाके भालोबासेन आर बाबाके भक्ति करेन, एइ तार प्रमाण। विनयबाबुके ओंर निजेर भावे खाड़ा करिये दिते हबेइ, दिदि। उनि ये केवलइ गौरमोहनबाबुके प्रचार करते थाकेन, से आमार असह्य बोध हय।"

एमन समय 'दिदि' 'दिदि' करिया सतीश घरे आसिया प्रवेश करिल। विनय ताहाके आज गड़ेर माठे सार्कास देखाइते लइया गियाछिल। यदिओ अनेक रात्रि हइयाछिल तबु ताहार एइ प्रथम सार्कास देखार उत्साह से संवरण करिते पारितेछिल ना। सार्कासेर वर्णना करिया से कहिल, "विनयबाबुके आज आमार बिछानाय धरे आनछिलुम। तिनि बाड़िते ढुकेछिलेन, तार परे आबार चले गेलेन। बललेन, काल आसबेन। दिदि, आमि ताँके बलेछि, तोमादेर एकदिन सार्कास देखाते निये येते।"

ललिता जिज्ञासा करिल, "तिनि ताते की बललेन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतीश कहिल, "तिनि बललेन, मेयेरा बाघ देखले भय करबे। आमार किन्तु किछु भय हय नि।"

बलिया सतीश पौरुष-अभिमाने बुक फुलाइया बसिल।

ललिता कहिल, "ता बइ-कि ! तोमार बन्धु विनयबाबुर साहस ये कतबड़ो ता बेश बुझते पारछि। ना, भाइ दिदि, आमादेर सङ्गे करे ओंके सार्कास देखाते निये येतेइ हबे।"

सतीश कहिल, "काल ये दिनेर वेलाय सार्कास हबे।"

ललिता कहिल, "सेइ तो भालो। दिनेर वेलातेइ याब।"

परदिन विनय आसितेइ ललिता बलिया उठिल, "एइ-ये, ठिक समयेइ विनयबाबु एसेछेन। चलुन।"

विनय। कोथाय येते हबे।

ललिता। सार्कासे।

सार्कासे ! दिनेर वेलाय एक-ताँबु लोकेर सामने मेयेदेर लइया सार्कासे याओया ! विनय तो हतबुद्धि हइया गेल।

ललिता कहिल, "गौरमोहनबाबु बुझि राग करबेन ?"

ललितार एइ प्रश्ने विनय एकटु चकित हइया उठिल।

ललिता आबार कहिल, "सार्कासे मेयेदेर निये याओया सम्बन्धे गौरमोहन-बाबुर एकटा मत आछे ?"

विनय कहिल, "निश्चय आछे।"

ललिता। सेटा की रकम आपनि व्याख्या करे बलुन। आमि दिदिके डेके निये आसि, तिनिओ शुनबेन।

विनय खोंचा खाइया हासिल। ललिता कहिल, "हासछेन केन, विनयबाबु। आपनि काल सतीशके बलेछिलेन, मेयेरा बाघके भय करे—आपनि काउके भय करेन ना नाकि।"

इहार परे सेदिन मेयेदेर लइया विनय सार्कासे गियाछिल। शुधु ताइ नय, गोरार सङ्गे ताहार सम्बन्धटा ललितार एवं सम्भवत ए-बाड़िर अन्य मेयेदेर काछे किरूप भावे प्रतिभात हइयाछे, से-कथाटाओ बार बार ताहार मनेर मध्ये तोलापाड़ा करिते लागिल।

ताहार पर येदिन विनयेर सङ्गे देखा हइल ललिता येन निरीह कौतूहलेर सङ्गे जिज्ञासा करिल, "गौरमोहनबाबुके सेदिनकार सार्कासेर गल्प बलेछेन ?"

ए प्रश्नेर खोंचा विनयके गभीर करिया बाजिल ; केनना, ताहाके कर्णमूल रक्तवर्ण करिया बलिते हइल, "ना, एखनो बला हय नि।"

लावण्य हासिया घरे ढुकिया कहिल, "विनयबाबु आसुन-ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता कहिल, "कोथाय। सार्कासे ना कि।"

लावण्य कहिल, "वा:, आज आबार सार्कास कोथाय। आमि डाकछि, आमार रुमालेर चार धारे पेन्सिल दिये एकटा पाड़ एँके दिते—आमि सेलाइ करब। विनयबाबु की सुन्दर आँकते पारेन।"

लावण्य विनयके धरिया लइया गेल।

१९

सकालवेलाय गोरा काज करितेछिल। विनय खामका आसिया अत्यन्त खापछाड़ाभावे कहिल, "सेदिन परेशबाबुर मेयेदेर निये आमि सार्कास देखते गियेछिलुम।"

गोरा लिखिते लिखितेइ बलिल, "शुनेछि।"

विनय विस्मित हइया कहिल, "तुमि कार काछे शुनले।"

गोरा। अविनाशेर काछे। सेओ सेदिन सार्कास देखते गियेछिल।

गोरा आर किछु ना बलिया लिखिते लागिल। गोरा ए-खबरटा आगेइ शुनियाछे—सेओ आबार अविनाशेर काछ हइते शुनियाछे, सुतरां ताहाते वर्णना ओ व्याख्यार कोनो अभाव घटे नाइ—इहाते ताहार चिरसंस्कारवशत विनय मनेर मध्ये भारि एकटा संकोच बोध करिल। सार्कासे याओया एवं ए-कथाटा एमन करिया लोकसमाजे ना उठिलेइ से खुशि हइत।

एमन समये ताहार मने पड़िया गेल, काल अनेक रात्रि पर्यन्त ना घुमाइया से मने मने ललितार सङ्गे झगड़ा करियाछे। ललिता मने करे, से गोराके भय करे एवं छोटो छेले येमन करिया मास्टारके माने तेमनि करियाइ से गोराके मानिया चले। एमन अन्याय करियाओ मानुषके मानुष भुल बुझिते पारे! गोरा विनय ये एकात्मा ; असामान्यतागुणे गोरार उपरे ताहार एकटा भक्ति आछे बटे किन्तु ताइ बलिया ललिता ये-रकमटा मने करियाछे सेटा गोरार प्रतिओ अन्याय, विनयेर प्रतिओ अन्याय। विनय नाबालक नय एवं गोराओ नाबालकेर अछि नहे।

गोरा नि:शब्दे लिखिया याइते लागिल, आर ललितार मुखेर सेइ तीक्ष्णाग्र गुटि दुइ-तिन प्रश्न बार बार विनयेर मने पड़िल। विनय ताहाके सहजें बरखास्त करिते पारिल ना।

देखिते देखिते विनयेर मने एकटा विद्रोह माथा तुलिया उठिल। 'सार्कास देखिते गियाछि तो की हइयाछे। अविनाश के ये से सेइ कथा लइया गोरार सङ्गे आलोचना करिते आसे—एवं गोराइ वा केन आमार गतिविधि सम्बन्धे सेइ अकालकुष्माण्डेर सङ्गे आलोचनाय योग देय। आमि कि गोरार नजरबन्दी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काहार सङ्गे मिशिब, कोथाय याइब, गोरार काछे ताहार जवाबदिहि करिते हइबे ! बन्धुत्वेर प्रति ए ये विषम उपद्रव ।'

गोरा ओ अविनाशेर उपर विनयेर एत राग हइत ना यदि से निजेर भीरुताके निजेर मध्ये सहसा स्पष्ट करिया उपलब्धि ना करित । गोरार काछे ये से कोनो कथा क्षणकालेर जन्यओ ढाकाढाकि करिते बाध्य हइयाछे, सेजन्य से आज मने मने येन गोराकेइ अपराधी करिते चेष्टा करितेछे । सार्कासे याओया लइया गोरा यदि विनयेर सङ्गे दुटो झगड़ार कथा बलित ताहा हइलेओ सेटाते बन्धुत्वेर साम्य रक्षित हइत एवं विनय सान्त्वना पाइत—किन्तु, गोरा ये गम्भीर हइया मस्त विचारक साजिया मौनर द्वारा विनयके अवज्ञा करिबे, इहाते ललितार कथार काँटा ताहाके पुनः पुनः बिंधिते लागिल ।

एइ समय महिम हुँका हाते घरेर मध्ये प्रवेश करिलेन । डिबा हइते भिजा न्याक्ड़ार आवरण तुलिया एकटा पान विनयेर हाते दिया कहिलेन, "बाबा विनय, ए-दिके तो समस्त ठिक—एखन तोमार खुड़ोमशायेर काछ थेके एकखाना चिठि पेलेइ ये निश्चिन्त हओया याय । ताँके तुमि चिठि लिखेछ तो ?"

एइ विवाहेर तागिद आज विनयके अत्यन्त खाराप लागिल ; अथच से जानित, महिमेर कोनो दोष नाइ—ताँहाके कथा देओया हइयाछे । किन्तु, एइ कथा देओयार मध्ये से एकटा दीनता अनुभव करिल । आनन्दमयी तो ताहाके एकप्रकार वारण करियाछिलेन—ताहार निजेरओ तो ए विवाहेर प्रति कोनो आकर्षण छिल ना—तबे गोलेमाले क्षणकालेर मध्येइ ए कथाटा पाकिया उठिल की करिया । गोरा ये ठिक ताड़ा लागाइयाछिल ताहा तो बला याय ना । विनय यदि एकटु मनेर सङ्गे आपत्ति करित ताहा हइलेओ ये गोरा पीड़ापीड़ि करित ताहा नहे । किन्तु, तबु ! सेइ तबुटुकुर उपरेइ ललितार खोंचा आसिया बिँधिते लागिल । सेदिनकार कोनो विशेष घटना नहे, किन्तु अनेकदिनेर प्रभुत्व इहार पश्चाते आछे । विनय नितान्तइ केवल भालोबासिया एवं एकान्तइ भालोमानुषि-वशत गोरार आधिपत्य अनायासे सह्य करिते अभ्यस्त हइयाछे । सेइजन्यइ एइ प्रभुत्वेर सम्बन्धइ बन्धुत्वेर माथार उपर चड़िया बसियाछे । एतदिन विनय इहा अनुभव करे नाइ, किन्तु आर तो इहाके अस्वीकार करिया चले ना । तबे शशिमुखीके कि विवाह करितेइ हइबे ।

विनय कहिल, "ना, खुड़ोमशायके एखनो चिठि लेखा हय नि ।"

महिम कहिलेन, "ओटा आमारइ भुल हयेछे । ए चिठि तो तोमार लेखबार कथा नय—ओ आमिइ लिखब । ताँर पुरो नामटा की बलो तो, बाबा ।"

विनय कहिल, "आपनि व्यस्त हच्छेन केन । आश्विन-कार्तिके तो विवाह हतेइ पारबे ना । एक अघ्रान मास—किन्तु, तातेओ गोल आछे । आमादेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिवारेर इतिहासे बहुपूर्वे अघ्रान मासे कबे कार की दुर्घटना घटेछिल, सेइ अवधि आमादेर वंशे अघ्राने विवाह प्रभृति शुभकर्म बन्ध आछे।"

महिम हुँकोटा घरेर कोणेर देयाले ठेस दिया राखिया कहिलेन, "विनय, तोमरा यदि ए-समस्त मानबे तबे लेखापड़ा शेखाटा कि केवल पड़ा मुखस्थ करे मरा। एके तो पोड़ा देशे शुभदिन खुँजेइ पाओया याय ना, तार परे आबार घरे घरे प्राइभेट पाँजि खुले बसले काजकर्म चलबे की करे।"

विनय कहिल, "आपनि भाद्र-आश्विन मासइ वा मानेन केन।"

महिम कहिलेन, "आमि मानि बुझि! कोनो कालेइ ना। की करब, बाबा--ए मुलुके भगवानके ना मानलेओ बेश चले याय, किन्तु भाद्र-आश्विन बृहस्पति-शनि तिथिनक्षत्र ना मानले ये कोनोमते घरे टिँकते देय ना। आवार ताओ बलि--मानि ने बलछि बटे, किन्तु काज करबार वेला दिनक्षणेर अन्यथा हलेइ मनटा अप्रसन्न हये ओठे--देशेर हाओयाय येमन म्यालेरिया हय तेमनि भयओ हय, ओटा काटिये उठते पारलुम ना।"

विनय। आमादेर वंशे अघ्रानेर भयटाओ काटबे ना। अन्तत खुड़िमा किछुतेइ राजि हबेन ना।

एमन करिया सेदिनकार मतो विनय कोनोमते कथाटा चापा दिया राखिल।

विनयेर कथार सुर शुनिया गोरा बुझिल, विनयेर मने एकटा द्विधा उपस्थित हइयाछे। किछुदिन हइते विनयेर देखाइ पाओया याइतेछिल ना। गोरा बुझियाछिल, विनय परेशबाबुर बाड़ि पूर्वेर चेयेओ आरओ घन घन यातायात आरम्भ करियाछे। ताहार परे आज एइ विवाहेर प्रस्तावे पाश काटाइबार चेष्टाय गोरार मने खटका बाधिल।

साप येमन काहाकेओ गिलिते आरम्भ करिले ताहाके कोनोमतेइ छाड़िते पारे ना--गोरा तेमनि ताहार कोनो संकल्प छाड़िया दिते वा ताहार एकटु-आधटु बाद दिते एकेबारे अक्षम बलिलेइ हय। अपर पक्ष हइते कोनो बाधा अथवा शैथिल्य उपस्थित हइले ताहार जेद आरओ चड़िया उठिते थाके। द्विधाग्रस्त विनयके सबले धरिया राखिबार जन्य गोरार समस्त अन्तःकरण उद्यत हइया उठिल।

गोरा ताहार लेखा छाड़िया मुख तुलिया कहिल, "विनय, एकबार यखन तुमि दादाके कथा दियेछ तखन केन ओँके अनिश्चितेर मध्ये रेखे मिथ्ये कष्ट दिच्छ।"

विनय हठात् असहिष्णु हइया बलिया उठिल, "आमि कथा दियेछि--ना ताड़ाताड़ि आमार काछ थेके कथा केड़े नेओया हयेछे?"

गोरा विनयेर एइ अकस्मात विद्रोहेर लक्षण देखिया विस्मित एवं कठिन हइया उठिया कहिल, "कथा के केड़े नियेछिल।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "तुमि।"

गोरा। आमि! तोमार सङ्गे ए सम्बन्धे आमार पाँच-सातटार बेशि कथाइ हय नि--ताके बले कथा केड़े नेओया!

वस्तुत विनयेर पक्षे स्पष्ट प्रमाण किछुइ छिल ना--गोरा याहा बलितेछे ताहा सत्य,कथा अल्पइ हइयाछिल एवं ताहार मध्ये एमन किछु बेशि तागिद छिल ना याहाके पीड़ापीड़ि बला चले--तबु ए कथा सत्य, गोराइ विनयेर काछ हइते ताहार सम्मति येन लुठ करिया लइयाछिल। ये-कथार बाह्य प्रमाण अल्प सेइ अभियोग सम्बन्धे मानुषेर क्षोभओ किछु बेशि हइया थाके। ताइ विनय किछु असंगत रागेर सुरे बलिल, "केड़े निते बेशि कथार दरकार करे ना।"

गोरा टेबिल छाड़िया उठिया दाँड़ाइया कहिल, "नाओ तोमार कथा फिरिये नाओ। तोमार काछ थेके भिक्षे करेइ नेब वा दस्युवृत्ति करेइ नेब एतबड़ो महामूल्य कथा एटा नय।"

पाशेर घरेइ महिम छिलेन--गोरा वज्रस्वरे ताँहाके डाकिल "दादा।"

महिम शशव्यस्त हइया घरे आसितेइ गोरा कहिल, "दादा, आमि तोमाके गोड़ातेइ बलि नि ये, शशिमुखीर सङ्गे विनयेर विवाह हते पारे ना--आमार ताते मत नेइ?"

महिम। निश्चय बलेछिले। तुमि छाड़ा एमन कथा आर केउ बलते पारत ना। अन्य कोनो भाइ हले भाइझिर विवाहप्रस्तावे प्रथम थेकेइ उत्साह प्रकाश करत।

गोरा। तुमि केन आमाके दिये विनयेर काछे अनुरोध कराले।

महिम। मने करेछिलुम ताते काज पाओया याबे, आर-कोनो कारण नेइ।

गोरा मुख लाल करिया बलिल, "आमि ए-सबेर मध्ये नेइ। विवाहेर घटकालि करा आमार व्यवसाय नय, आमार अन्य काज आछे।"

एइ बलिया गोरा घर हइते बाहिर हइया गेल। हतबुद्धि महिम विनयके ए-सम्बन्धे कोनो प्रश्न करिबार पूर्वेइ सेओ एकेबारे रास्ताय बाहिर हइया पड़िल। महिम देयालेर कोण हइते हुँकाटा तुलिया लइया चुप करिया बसिया टान दिते लागिलेन।

गोरार सङ्गे विनयेर इतिपूर्वे अनेक दिन अनेक झगड़ा हइया गियाछे, किन्तु एमन आकस्मिक प्रचण्ड अग्न्युत्पातेर मतो व्यापार आर कखनो हय नाइ। विनय निजेर कृत कर्मे प्रथमटा स्तम्भित हइया गेल। ताहार परे बाड़ि गिया ताहार बुकेर मध्ये शेल बिँधिते लागिल। एइ क्षणकालेर मध्येइ गोराके से ये कत बड़ो एकटा आघात दियाछे ताहा मने करिया ताहार आहारे विश्रामे रुचि रहिल ना। विशेषत ए घटनाय गोराके दोषी करा ये नितान्तइ अद्भुत ओ असंगत हइयाछे इहाइ ताहाके दग्ध करिते लागिल; से बार बार बलिल, 'अन्याय, अन्याय, अन्याय।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेला दुइटार समय आनन्दमयी सबे यखन आहार सारिया सेलाइ लइया बसियाछेन एमन समय विनय आसिया ताँहार काछे बसिल। आज सकाल-वेलाकार कतकटा खबर तिनि महिमेर काछ हइते पाइयाछिलेन। आहारेर समय गोरार मुख देखियाओ तिनि बुझियाछिलेन, एकटा झड़ हइया गेछे।

विनय आसियाइ कहिल, "मा, आमि अन्याय करेछि। शशिमुखीर सङ्गे विवाहेर कथा निये आमि आज सकाले गोराके या बलेछि तार कोनो माने नेइ।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ता होक, विनय——मनेर मध्ये कोनो एकटा व्यथा चापते गेले ओइरकम करेइ वेरिये पड़े। ओ भालोइ हयेछे। ए झगड़ार कथा दु-दिन परे तुमिओ भुलबे, गोराओ भुले यावे।"

विनय। किन्तु, मा, शशिमुखीर सङ्गे आमार विवाहे कोनो आपत्ति नेइ, सेइ कथा आमि तोमाके जानाते एसेछि।

आनन्दमयी। बाछा, ताड़ाताड़ि झगड़ा मेटाबार चेष्टा करते गिये आवार एकटा झंझाटे पोड़ो ना। विवाहटा चिरकालेर जिनिस, झगड़ा दु-दिनेर।

विनय कोनोमतेइ शुनिल ना। से ए प्रस्ताव लइया एखनइ गोरार काछे याइते पारिल ना। महिमके गिया जानाइल——विवाहेर प्रस्तावे कोनो विघ्न नाइ, माघमासेइ कार्य सम्पन्न हइबे, खुड़ामहाशयेर याहाते कोनो अमत ना हय से-भार विनय निजेइ लइबे।

महिम कहिलेन, "पानपत्रटा हये याक-ना।"

विनय कहिल, "ता बेश, सेटा गोरार सङ्गे परामर्श करे करबेन।"

महिम व्यस्त हइया कहिलेन, "आबार गोरार सङ्गे परामर्श ?"

विनय कहिल, "ना, ता ना हले चलबे ना।"

महिम कहिलेन, "ना यदि चले ता हले तो कथाइ नेइ, किन्तु——"

बलिया एकटा पान लइया मुखे पुरिलेन।

२०

महिम सेदिन गोराके किछु ना बलिया ताहार परेर दिन ताहार घरे गेलेन। तिनि मने करियाछिलेन, गोराके पुनर्वार राजि कराइते विस्तर लड़ालड़ि करिते हइबे। किन्तु तिनि येइ आसिया बलिलेन ये, विनय काल विकाले आसिया विवाह सम्बन्धे पाका कथा दिया गेछे ओ पानपत्र सम्बन्धे गोरार परामर्श जिज्ञासा करिते बलियाछे, गोरा तखनइ निजेर सम्मति प्रकाश करिया बलिल, "बेश तो, पानपत्र हये याक-ना।"

महिम आश्चर्य हइया कहिलेन, "एखन तो बलछ 'बेश तो'। एर परे आबार बागड़ा देबे ना तो ?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "आमि तो बाधा दिये बागड़ा दिइ नि, अनुरोध करेइ बागड़ा दियेछि।"

महिम। अतएव तोमार काछे आमार मिनति एइ ये, तुमि बाधाओ दियो ना, अनुरोधओ कोरो ना। कुरुपक्षे नारायणी सेनातेओ आमार काज नेइ, आर पाण्डवपक्षे नारायणेओ आमार दरकार देखि ने। आमि एकला या पारि सेइ भालो—भुल करेछिलुम—तोमार सहायताओ ये एमन विपरीत ता आमि पूर्वे जानतुम ना। या होक, काजटा हय एटाते तोमार इच्छा आछे तो?

गोरा। हाँ, इच्छा आछे।

महिम। ता हले इच्छाइ थाक्, किन्तु चेष्टाय काज नेइ।

गोरा राग करे बटे एवं रागेर मुखे सबइ करिते पारे, सेटाओ सत्य, किन्तु सेइ रागके पोषण करिया निजेर संकल्प नष्ट करा ताहार स्वभाव नय। विनयके येमन करिया हउक से बाँधिते चाय, एखन अभिमानेर समय नहे। गतकल्यकार झगड़ार प्रतिक्रियार द्वारातेइ ये विवाहेर कथाटा पाका हइल, विनयेर विद्रोहइ ये विनयेर बन्धनके दृढ़ करिल, से-कथा मने करिया गोरा कालिकार घटनाय मने मने खुशि हइल। विनयेर सङ्गे ताहादेर चिरन्तन स्वाभाविक सम्बन्ध स्थापन करिते गोरा किछुमात्र विलम्ब करिल ना। किन्तु एवार दुजनकार माझखाने ताहादेर एकान्त सहज भावेर एकटुखानि व्यतिक्रम घटिल।

गोरा एवार बुझियाछे, दूर हइते विनयके टानिया राखा शक्त हइबे—विपदेर क्षेत्र येखाने सेइखानेइ पाहारा देओया चाइ। गोरा मने भाविल, 'आमि यदि परेशबाबुदेर बाड़िते सर्वदा यातायात राखि ताहा हइले विनयके ठिक गण्डिर मध्ये धरिया राखिते पारिब।'

सेइ दिनइ अर्थात् झगड़ार परदिन अपराह्णे गोरा विनयेर बासाय आसिया उपस्थित हइल। आजइ गोरा आसिबे, विनय कोनोमतेइ एमन आशा करे नाइ। सेइजन्य से मने मने येमन खुशि तेमनि आश्चर्य हइया उठिल।

आरओ आश्चर्येर विषय, गोरा परेशबाबुदेर मेयेदेर कथाइ पाड़िल अथच ताहार मध्ये किछुमात्र विरूपता छिल ना। एइ आलोचनाय विनयके उत्तेजित करिया तुलिते बेशि चेष्टार प्रयोजन करे ना।

सुचरितार सङ्गे विनय ये-सकल कथार आलोचना करियाछे ताहा आज से विस्तारित करिया गोराके बलिते लागिल। सुचरिता ये विशेष आग्रहेर सहित ए-सकल प्रसङ्ग आपनि उत्थापित करे एवं यतइ तर्क करुक-ना केन मनेर अलक्ष्य देशे से ये क्रमशइ अल्प अल्प करिया साय दितेछे, ए कथा जानाइया गोराके विनय उत्साहित करिबार चेष्टा करिल।

विनय गल्प करिते करिते कहिल, "नन्दर मा भूतेर ओझा एने नन्दके की करे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे फेलेछे एवं ताइ निये तोमार सङ्गे की कथा हयेछिल ताइ यखन बलछिलुम तखन तिनि बललेन, 'आपनारा मने करेन घरेर मध्ये आवद्ध करे मेयेदेर राँधते-बाड़ते आर घर निकोते दिलेइ तादेर समस्त कर्तव्य हये गेल। एदिके एमनि करे तादेर बुद्धिसुद्धि समस्त खाटो करे रेखे देबेन, तार परे यखन तारा भूतेर ओझा डाके तखनो आपनारा राग करते छाड़बेन ना। यादेर पक्षे दुटि-एकटि परिवारेर मध्येइ समस्त विश्वजगत् तारा कखनोइ सम्पूर्ण मानुष हते पारे ना——एवं तारा मानुष ना हलेइ पुरुषेर समस्त बड़ो काजके नष्ट करे असम्पूर्ण करे पुरुषके तारा निचेर दिके भाराक्रान्त करे निजेदेर दुर्गतिर शोध तुलबेइ। नन्दर माके आपनारा एमन करे गड़ेछेन एवं एमन जायगाय घिरे रेखेछेन ये, आज प्राणेर दायेओ आपनारा यदि ताके सुबुद्धि दिते चान तो सेखाने गिये पौंछबेइ ना।' आमि ए निये तर्क करबार अनेक चेष्टा करेछि किन्तु सत्य बलछि, गोरा, मने मने ताँर सङ्गे मतेर मिल हओयाते आमि जोरेर सङ्गे तर्क करते पारि नि। ताँर सङ्गे तबु तर्क चले किन्तु ललितार सङ्गे तर्क करते आमार साहस हय ना। ललिता यखन भ्रू तुले बललेन, 'आपनारा मने करेन, जगतेर काज आपनारा करबेन, आर आपनादेर काज आमरा करब! सेटि हबार जो नेइ। जगतेर काज हय आमराओ चालाब, नय आमरा बोझा हये थाकब; आमरा यदि बोझा हइ——तखन राग करे बलबेन, पथे नारी विवर्जिता। किन्तु नारीकेओ यदि चलते देन ता हले, पथेइ होक आर घरेइ होक, नारीके विवर्जन करार दरकार हय ना'——तखन आमि आर कोनो उत्तर ना करे चुप करे रइलुम। ललिता सहजे कथा कन ना, किन्तु यखन कन तखन खुब सावधाने उत्तर दिते हय। याइ बल, गोरा, आमार मने खुब विश्वास हयेछे ये, आमादेर मेयेरा यदि चीनरमणीदेर पायेर मतो संकुचित हये थाके ता हले आमादेर कोनो काज एगोबे ना।"

गोरा। मेयेदेर शिक्षा देओया हबे ना, एमन कथा तो आमि कोनोदिन बलि ने।

विनय। चारुपाठ तृतीयभाग पड़ालेइ बुझि शिक्षा देओया हय?

गोरा। आच्छा, एबार थेके विनयबोध प्रथमभाग धरानो याबे।

सेदिन दुइ बन्धुते घुरिया फिरिया केवलइ परेशबाबुर मेयेदेर कथा हइते हइते रात हइया गेल।

गोरा एकला बाड़ि फिरिबार पथे ओइ-सकल कथाइ मनेर मध्ये नाड़ाचाड़ा करिते लागिल एवं घरे आसिया बिछानाय शुइया यतक्षण घुम ना आसिल परेशबाबुर मेयेदेर कथा मन हइते ताड़ाइते पारिल ना। गोरार जीवने ए उपसर्ग कोनोकालेइ छिल ना, मेयेदेर कथा से कोनोदिन चिन्तामात्रइ करे नाइ। जगद्-व्यापारे एटाओ ये एकटा कथार मध्ये, एबार विनय ताहा प्रमाण करिया दिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इहाके उड़ाइया दिले चलिबे ना, इहार सङ्गे हय आपस नय लड़ाइ करिते हइबे।

परदिन विनय यखन गोराके कहिल, "परेशबाबुर बाड़िते एकबार चलोइ ना, अनेकदिन याओ नि, तिनि तोमार कथा प्रायइ जिज्ञासा करेन", तखन गोरा बिना आपत्तिते राजि हइल। शुधु राजि हओया नहे, ताहार मनेर मध्ये पूर्वेर मतो निरुत्सुक भाव छिल ना। प्रथमे सुचरिता ओ परेशबाबुर कन्यादेर अस्तित्व सम्बन्धे गोरा सम्पूर्ण उदासीन छिल, ताहार परे मध्ये अवज्ञापूर्ण विरुद्ध भाव ताहार मने जन्मियाछिल, एखन ताहार मने एकटा कौतूहलेर उद्रेक हइयाछे। विनयेर चित्तके किसे ये एत करिया आकर्षण करितेछे ताहा जानिबार जन्य ताहार मने एकटा विशेष आग्रह जन्मियाछे।

उभये यखन परेशबाबुर बाड़ि गिया पौंछिल तखन सन्ध्या हइयाछे। दोतलार घरे एकटा तेलेर सेज ज्वालाइया हारान ताँहार एकटा इंरेजि लेखा परेशबाबुके शुनाइतेछिलेन। ए स्थले परेशबाबु वस्तुत उपलक्ष्यमात्र छिलेन—सुचरिताके शोनानोइ ताँहार उद्देश्य छिल। सुचरिता टेबिलेर दूरप्रान्ते चोखेर उपर हइते आलो आड़ाल करिबार जन्य मुखेर सामने एकटा तालपातार पाखा तुलिया चुप करिया बसिया छिल। से आपन स्वाभाविक वाध्यतावशत प्रबन्धटि शुनिबार जन्य विशेष चेष्टा करितेछिल, किन्तु थाकिया थाकिया ताहार मन केवलइ अन्य दिके याइतेछिल।

एमन समय चाकर आसिया यखन गोरा ओ विनयेर आगमन संवाद ज्ञापन करिल, तखन सुचरिता हठात् चमकिया उठिल। से चौकि छाड़िया चलिया याइबार उपक्रम करितेइ परेशबाबु कहिलेन, "राधे, याच्छ कोथाय? आर केउ नय, आमादेर विनय आर गौर एसेछे।"

सुचरिता संकुचित हइया आबार बसिल। हारानेर सुदीर्घ इंरेजि रचना-पाठे भङ्ग घटाते सुचरितार आराम बोध हइल; गोरा आसियाछे शुनिया ताहार मने ये एकटा उत्तेजना हय नाइ ताहाओ नहे, किन्तु हारानबाबुर सम्मुखे गोरार आगमने ताहार मनेर मध्ये भारि एकटा अस्वस्ति एवं संकोच बोध हइते लागिल। दुजने पाछे विरोध बाधे एइ मने करिया, अथवा की ये ताहार कारण ताहा बला शक्त।

गौरेर नाम शुनियाइ हारानबाबुर मनेर भितरटा एकेबारे विमुख हइया उठिल। गौरेर नमस्कारे कोनो मते प्रतिनमस्कार करिया तिनि गम्भीर हइया बसिया रहिलेन। हारानके देखिबामात्र गोरार संग्राम करिबार प्रवृत्ति सशस्त्रे उद्यत हइया उठिल।

वरदासुन्दरी ताँहार तिन मेयेके लइया निमन्त्रणे गियाछिलेन; कथा छिल सन्ध्यार समय परेशबाबु गिया ताँहादिगके फिराइया आनिबेन। परेशबाबुर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

याइबार समय हइयाछे। एमन समय गोरा ओ बिनय आसिया पड़ाते ताँहार बाधा पड़िल। किन्तु, आर विलम्ब करा उचित हइबे ना जानिया तिनि हारान ओ सुचरिताके काने काने बलिया गेलेन, "तोमरा एँदेर निये एकटु ब्रोसो, आमि यत शीघ्र पारि फिरे आसछि।"

देखिते देखिते गोरा एवं हारानबाबुर मध्ये तुमुल तर्क बाधिया गेल। ये प्रसङ्ग लइया तर्क ताहा एइ---कलिकातार अनतिदूरवर्ती कोनो जेलार म्याजिस्ट्रेट ब्राउन्लो साहेबेर सहित ढाकाय थाकिते परेशबाबुदेर आलाप हइयाछिल। परेशबाबुर स्त्रीकन्यारा अन्तःपुर हइते बाहिर हइतेन बलिया साहेब एवं ताँहार स्त्री इँहादिगके विशेष खातिर करितेन। साहेब ताँहार जन्मदिने प्रति वत्सरे कृषिप्रदर्शनी मेला करिया थाकेन। एबारे वरदासुन्दरी ब्राउन्लो साहेबेर स्त्रीर सहित देखा करिबार समय इंरेजि काव्यसाहित्य प्रभृतिते निजेर कन्यादेर विशेष पारदर्शितार कथा उत्थापन कराते मेम साहेब सहसा कहिलेन, 'एबार मेलाय लेप्टेनान्ट गवर्नर सस्त्रीक आसिबेन, आपनार मेयेरा यदि ताँहादेर सम्मुखे एकटा छोटोखाटो इंरेजि काव्यनाट्य अभिनय करेन तो बड़ो भालो हय।' एइ प्रस्तावे वरदासुन्दरी अत्यन्त उत्साहित हइया उठियाछेन। आज तिनि मेयेदेर रिहार्सालि देओयाइबार जन्यइ कोनो बन्धुर बाड़िते लइया गियाछेन। एइ मेलाय गोरार उपस्थित थाका सम्भवपर हइबे कि ना जिज्ञासा कराय गोरा किछु अनावश्यक उग्रतार सहित बलियाछिल---'ना'। एइ प्रसङ्गे ए देशे इंरेज-बाङालिर सम्बन्ध ओ परस्पर सामाजिक सम्मिलनेर बाधा लइया दुइ तरफे रीतिमतो वितण्डा उपस्थित हइल।

हारान कहिलेन, "बाङालिरइ दोष। आमादेर एत कुसंस्कार ओ कुप्रथा ये, आमरा इंरेजेर सङ्गे मेलबार योग्यइ नइ।"

गोरा कहिल, "यदि ताइ सत्य हय तबे सेइ अयोग्यतासत्त्वेओ इंरेजेर सङ्गे मेलबार जन्ये लालायित हये बेड़ानो आमादेर पक्षे लज्जाकर।"

हारान कहिलेन, "किन्तु याँरा योग्य हयेछेन ताँरा इंरेजेर काछे यथेष्ट समादर पेये थाकेन---येमन एँरा सकले।"

गोरा। एकजनेर समादरेर द्वारा अन्य-सकलेर अनादरटा येखाने बेशि करे फुटे ओठे सेखाने एरकम समादरके आमि अपमान बले गण्य करि।

देखिते देखिते हारानबाबु अत्यन्त क्रुद्ध हइया उठिलेन, एवं गोरा ताँहाके रहिया रहिया वाक्यशेले विद्ध करिते लागिल।

दुइ पक्षे एइरूपे यखन तर्क चलितेछे सुचरिता टेबिलेर प्रान्ते बसिया पाखार आड़ाल हइते गोराके एकदृष्टिते लक्ष्य करिया देखितेछिल। की कथा हइतेछे ताहा ताहार काने आसितेछिल बटे, किन्तु ताहाते ताहार मन छिल ना। सुचरिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

य गोराके अनिमेषनेत्रे देखितेछे से सम्बन्धे ताहार निजेर यदि चेतना थाकित तबे से लज्जित हइत, किन्तु से येन आत्मविस्मृत हइया गोराके निरीक्षण करितेछिल। गोरा ताहार बलिष्ठ दुइ बाहु टेबिलेर उपरे राखिया सम्मुखे झुँकिया बसियाछिल ; ताहार प्रशस्त शुभ्र ललाटेर उपर बातिर आलो पड़ियाछे ; ताहार मुखे कखनो अवज्ञार हास्य कखनो वा घृणार भ्रूकुटि तरङ्गित हइया उठितेछे ; ताहार मुखेर प्रत्येक भावलीलाय एकटा आत्ममर्यादार गौरव लक्षित हइतेछे ; से याहा बलितेछे ताहा ये केवलमात्र सामयिक वितर्क वा आक्षेपेर कथा नहे, प्रत्येक कथा ये ताहार अनेक दिनेर चिन्ता एवं ताहार व्यवहारेर द्वारा निःसन्दिग्धरूपे गठित हइया उठियाछे एवं ताहार मध्ये ये कोनोप्रकार द्विधा दुर्बलता वा आकस्मिकता नाइ, ताहा केवल ताहार कण्ठस्वरे नहे, ताहार मुखे एवं ताहार समस्त शरीरेइ येन सुदृढ़भावे प्रकाश पाइतेछे। सुचरिता विस्मित हइया ताहाके देखिते लागिल। सुचरिता ताहार जीवने एतदिन परे एइ प्रथम एकजनके एकटि विशेष मानुष, एकटि विशेष पुरुष बलिया येन देखिते पाइल। ताहाके आर-दशजनेर सङ्गे मिलाइया देखिते पारिल ना। एइ गोरार विरुद्धे दाँड़ाइया हारानबाबु अकिञ्चित्कर हइया पड़िलेन। ताँहार शरीरेर एवं मुखेर आकृति, ताँहार हावभावभङ्गी, एमन कि, ताँहार जामा एवं चादरखाना पर्यन्त येन ताँहाके व्यङ्ग करिते लागिल। एतदिन बारम्बार विनयेर सङ्गे गोरार सम्बन्धे आलोचना करिया सुचरिता गोराके एकटा विशेष दलेर, एकटा विशेष मतेर असामान्य लोक बलिया मने करियाछिल ; ताहार द्वारा देशेर एकटा कोनो विशेष मङ्गल उद्देश्य साधित हइते पारे, एइमात्र से कल्पना करियाछिल—आज सुचरिता ताहार मुखेर दिके एकमने चाहिते चाहिते समस्त दल, समस्त मत, समस्त उद्देश्य हइते पृथक करिया गोराके केवल गोरा बलियाइ येन देखिते लागिल। चाँदके समुद्र येमन समस्त प्रयोजन, समस्त व्यवहारेर अतीत करिया देखियाइ अकारणे उद्वेल हइया उठिते थाके, सुचरितार अन्तःकरण आज तेमनि समस्त भुलिया, ताहार समस्त बुद्धि ओ संस्कार ताहार समस्त जीवनके अतिक्रम करिया येन चतुर्दिके उच्छ्वसित हइया उठिते लागिल। मानुष की, मानुषेर आत्मा की, सुचरिता एइ ताहा प्रथम देखिते पाइल एवं एइ अपूर्व अनुभूतिते से निजेर अस्तित्व एकेवारे विस्मृत हइया गेल।

हारानबाबु सुचरितार एइ तद्गत भाव लक्ष्य करियाछिलेन। ताहाते ताँहार तर्केर युक्तिगुलि जोर पाइतेछिल ना। अवशेषे एकसमय नितान्त अधीर हइया तिनि आसन छाड़िया उठिया पड़िलेन एवं सुचरिताके नितान्त आत्मीयेर मतो डाकिया कहिलेन, "सुचरिता, एकबार ए घरे एसो, तोमार सङ्गे आमार एकटा कथा आछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता एकेबारे चमकिया उठिल। ताहाके के येन मारिल। हारानबाबुर सहित ताहार येरूप सम्बन्ध ताहाते तिनि ये कखनो ताहाके एरूप आह्वान करिते पारेन ना ताहा नहे। अन्य समय हइले से किछु मनेइ करित ना; किन्तु आज गोरा ओ विनयेर सम्मुखे से निजेके अपमानित बोध करिल। विशेषत गोरा ताहार मुखेर दिके एमन एकरकम करिया चाहिल ये, से हारानबाबुके क्षमा करिते पारिल ना। प्रथमटा, से येन किछुइ शुनिते पाय नाइ एमनिभावे चुप करिया बसिया रहिल। हारानबाबु तखन कण्ठस्वरे एकटु विरक्ति प्रकाश करिया कहिलेन, "शुनछ, सुचरिता? आमार एकटा कथा आछे, एकबार ए घरे आसते हबे।"

सुचरिता ताँहार मुखेर दिके ना ताकाइया कहिल, "एखन थाक्—बाबा आसुन, तार पर हबे।"

विनय उठिया कहिल, "आमरा नाहय याच्छि।"

सुचरिता ताड़ाताड़ि कहिल, "ना, विनयबाबु, उठबेन ना। बाबा आपनादेर थाकते बलेछेन। तिनि एलेन बले।"

ताहार कण्ठस्वरे एकटा व्याकुल अनुनयेर भाव प्रकाश पाइल। हरिणीके येन व्याधेर हाते फेलिया याइबार प्रस्ताव हइयाछिल।

"आमि आर थाकते पारछि ने, आमि तबे चललुम" बलिया हारानबाबु द्रुतपदे घर हइते चलिया गेलेन। रागेर माथाय बाहिर हइया आसिया परक्षणेइ ताँहार अनुताप हइते लागिल, किन्तु तखन फिरिबार आर कोनो उपलक्ष्य खुँजिया पाइलेन ना।

हारानबाबु चलिया गेले सुचरिता एकटा कोन् सुगभीर लज्जाय मुख यखन रक्तिम ओ नत करिया बसिया छिल, की करिबे की बलिबे किछुइ भाबिया पाइतेछिल ना, सेइ समय गोरा ताहार मुखेर दिके भालो करिया चाहिया लइबार अवकाश पाइयाछिल। गोरा शिक्षित मेयेदेर मध्ये ये-औद्धत्य ये-प्रगल्भता कल्पना करिया राखियाछिल, सुचरितार मुखश्रीते ताहार आभासमात्र कोथाय? ताहार मुखे बुद्धिर एकटा उज्ज्वलता निःसन्देहे प्रकाश पाइतेछिल, किन्तु नम्रता ओ लज्जार द्वारा ताहा की सुन्दर कोमल हइया आज देखा दियाछे। मुखेर डौलटि की सुकुमार। भ्रूयुगलेर उपरे ललाटटि येन शरतेर आकाशखण्डेर मतो निर्मल ओ स्वच्छ। ठोंटदुटि चुप करिया आछे किन्तु अनुच्चारित कथार माधुर्य सेइ दुटि ठोंटेर माझखाने येन कोमल एकटि कुँड़ि मतो रहियाछे। नवीना रमणीर वेशभूषार प्रति गोरा पूर्वे कोनो दिन भालो करिया चाहिया देखे नाइ एवं ना देखियाइ से समस्तेर प्रति ताहार एकटा धिक्कारभाव छिल—आज सुचरितार देहे ताहार नूतन धरनेर शाड़ि परार भङ्गी ताहार एकटु विशेषभावे भालो लागिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरितार एकटि हात टेबिलेर उपरे छिल, ताहार जामार आस्तिनेर कुञ्चित प्रान्त हइते सेइ हातखानि आज गोरार चोखे कोमल हृदयेर एकटि कल्याणपूर्ण वाणीर मतो बोध हइल। दीपालोकित शान्त सन्ध्याय सुचरिताके वेष्टन करिया समस्त घरटि ताहार आलो, ताहार देयालेर छबि, ताहार गृहसज्जा, ताहार पारिपाट्य लइया एकटि येन विशेष अखण्ड रूप धारण करिया देखा दिल। ताहा ये गृह, ताहा ये सेवाकुशला नारीर यत्ने स्नेहे सौन्दर्ये मण्डित, ताहा ये देयाल ओ कड़िबरगा-छादेर चेये अनेक बेशि--इहा आज गोरार काछे मुहूर्तेर मध्ये प्रत्यक्ष हइया उठिल। गोरा आपनार चतुर्दिकेर आकाशेर मध्ये एकटा सजीव सत्ता अनुभव करिल—ताहार हृदयके चारि दिक हइतेइ एकटा हृदयेर हिल्लोल आसिया आघात करिते लागिल, एकटा किसेर निविड़ता ताहाके येन वेष्टन करिया धरिल। एरूप अपूर्व उपलब्धि ताहार जीवने कोनोदिन घटे नाइ। देखिते देखिते क्रमशइ सुचरितार कपालेर भ्रष्ट केश हइते ताहार पायेर काछे शाड़िर पाड़टुकु पर्यन्त अत्यन्त सत्य एवं अत्यन्त विशेष हइया उठिल। एकइ काले समग्रभावे सुचरिता एवं सुचरितार प्रत्येक अंश स्वतन्त्रभावे, गोरार दृष्टिके आकर्षण करिते लागिल।

किछुक्षण केह कोनो कथा कहिते ना पारिया सकलेइ एकप्रकार कुण्ठित हइया पड़िल। तखन विनय सुचरितार दिके चाहिया कहिल, "सेदिन आमादेर कथा हच्छिल"--बलिया एकटा कथा उत्थापन करिया दिल।

से कहिल, "आपनाके तो बलेइछि, आमार एमन एकदिन छिल यखन आमार मने विश्वास छिल, आमादेर देशेर जन्ये, समाजेर जन्ये, आमादेर किछु आशा करबार नेइ--चिरदिनइ आमरा नाबालकेर मतो काटाब एवं इंरेज आमादेर अछि नियुक्त हये थाकबे--येखाने या येमन आछे सेइरकमइ थेके याबे--इंरेजेर प्रबल शक्ति एवं समाजेर प्रबल जड़तार विरुद्धे आमादेर कोथाओ कोनो उपायमात्र नेइ। आमादेर देशेर अधिकांश लोकेरइ एइरकम मनेर भाव। एमन अवस्थाय मानुष, हय निजेर स्वार्थ नियेइ थाके नय उदासीनभावे काटाय। आमादेर देशेर मध्यवित्त लोकेरा एइ कारणेइ चाकरिर उन्नति छाड़ा आर-कोनो कथा भाबे ना, धनी लोकेरा गवर्मेन्टेर खेताब पेलेइ जीवन सार्थक बोध करे—आमादेर जीवनेर यात्रापथटा अल्प एकटु दूरे गियेइ, बास्, ठेके याय—सुतरां सुदूर उद्देश्येर कल्पनाओ आमादेर माथाय आसे ना, आर तार पाथेय संग्रहओ अनावश्यक बले मने करि। आमिओ एकसमये ठिक करेछिलुम, गोरार बाबाके मुरुब्बि धरे एकटा चाकरिर जोगाड़ करे नेब। एमन समय गोरा आमाके बलले, "ना, गवर्मेन्टेर चाकरि तुमि कोनोमतेइ करते पारबे ना," ।

गोरा एइ कथाय सुचरितार मुखे एकटुखानि विस्मयेर आभास देखिया कहिल, "आपनि मने करबेन ना, गवर्मेन्टेर उपर राग करे आमि एमन कथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलछि। गवर्मेन्टेर काज यारा करे तारा गवर्मेन्टेर शक्तिके निजेर शक्ति बले एकटा गर्व बोध करे एवं देशेर लोकेर थेके एकटा भिन्न श्रेणीर हये ओठे—यत दिन याच्छे आमादेर एइ भावटा ततइ बेड़े उठछे। आमि जानि, आमार एकटि आत्मीय साबेक कालेर डेपुटि छिलेन—एखन तिनि काज छेड़े दिये बसे आछेन—ताँके डिस्ट्रिक्ट म्याजिस्ट्रेट जिज्ञासा करेछिलेन, 'बाबु, तोमार विचारे एत बेशि लोक खालास पाय केन।' तिनि जवाब दियेछिलेन, 'साहेब, तार एकटि कारण आछे ; तुमि यादेर जेले दाओ तारा तोमार पक्षे कुकुर-बिड़ाल मात्र, आर आमि यादेर जेले दिइ तारा ये आमार भाइ हय।' एतबड़ो कथा बलते पारे एमन डेपुटि तखनो छिल, एवं शुनते पारे एमन इंरेज म्याजिस्ट्रेटेरओ अभाव छिल ना। किन्तु यतइ दिन याच्छे, चाकरिर दड़ादड़ि अङ्गेर भूषण हये उठछे एवं एखनकार डेपुटिर काछे देशेर लोक क्रमेइ कुकुर-बिड़ाल हये दाँड़ाच्छे ; एवं एमनि करे पदेर उन्नति हते हते ताँदेर ये केवलइ अधोगति हच्छे ए कथार अनुभूति पर्यन्त ताँदेर चले याच्छे। परेर काँधे भर दिये निजेर लोकदेर निचु करे देखब एवं निचु करे देखबामात्रइ तादेर प्रति अविचार करते बाध्य हब, एते कोनो मङ्गल हते पारे ना।"

बलिया गोरा टेबिले एकटा मुष्टि-आघात करिल : तेलेर शेजटा काँपिया उठिल।

विनय कहिल, "गोरा, ए-टेबिलटा गवर्मेन्टेर नय, आर एइ शेजटा परेशबाबुदेर।"

शुनिया गोरा उच्चैःस्वरे हासिया उठिल। ताहार हास्येर प्रबल ध्वनिते समस्त बाड़िटा परिपूर्ण हइया गेल। ठाट्टा शुनिया गोरा ये छेलेमानुषेर मतो एमन प्रचुरभावे हासिया उठिते पारे, इहाते सुचरिता आश्चर्य बोध करिल एवं ताहार मनेर मध्ये भारि एकटा आनन्द हइल। याहारा बड़ो कथार चिन्ता करे ताहारा ये प्राण खुलिया हासिते पारे, ए कथा ताहार जाना छिल ना।

गोरा सेदिन अनेक कथाइ बलिल। सुचरिता यदिओ चुप करिया छिल किन्तु ताहार मुखेर भावे गोरा एमन एकटा साय पाइल ये, उत्साहे ताहार हृदय भरिया उठिल। शेषकाले सुचरिताकेइ येन विशेषभावे सम्बोधन करिया कहिल, "देखुन, एकटि कथा मने राखबेन—यदि एमन भुल संस्कार आमादेर हय ये, इंरेजरा यखन प्रबल हये उठेछे तखन आमराओ ठिक इंरेजटि ना हले कोनो-मते प्रबल हते पारब ना, ता हले से-असम्भव कोनोदिन सम्भव हवे ना एवं केवलइ नकल करते करते आमरा दुयेर बार हये याब। ए कथा निश्चय जानवेन, भारतेर एकटा विशेष प्रकृति, विशेष शक्ति, विशेष सत्य आछे ; सेइटेर परिपूर्ण विकाशेर द्वाराइ भारत सार्थक हबे, भारत रक्षा पाबे। इंरेजेर इतिहास पड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइटे यदि आमरा ना शिखे थाकि तबे समस्तइ भुल शिखेछि। आपनार प्रति आमार एइ अनुरोध, आपनि भारतवर्षेर भितरे आसुन, एर समस्त भालोमन्देर माझखानेइ नेबे दाँड़ान––यदि विकृति थाके तबे भितर थेके संशोधन करे तुलुन ; किन्तु एके देखुन, बुझुन, भाबुन, एर दिके मुख फेरान, एर सङ्गे एक होन ; एर विरुद्धे दाँड़िये, बाइरे थेके, खृस्टानि संस्कारे बाल्यकाल हते अस्थि-मज्जाय दीक्षित हये, एके आपनि बुझतेइ पारबेन ना, एके केवलइ आघात करतेइ थाकबेन, एर कोनो काजेइ लागबेन ना।"

गोरा बलिल बटे 'आमार अनुरोध'––किन्तु ए तो अनुरोध नय, ए येन आदेश। कथार मध्ये एमन एकटा प्रचण्ड जोर ये, ताहा अन्येर सम्मतिर अपेक्षाइ करे ना। सुचरिता मुख नत करियाइ समस्त शुनिल। एमन एकटा प्रबल आग्रहेर सङ्गे गोरा ये ताहाकेइ विशेषभावे सम्बोधन करिया एइ कथाकयटि कहिल ताहाते सुचरितार मनेर मध्ये एकटा आन्दोलन उपस्थित करिया दिल। से-आन्दोलन ये किसेर तखन ताहा भाविबार समय छिल ना। भारतवर्ष बलिया ये एकटा वृहत् प्राचीन सत्ता आछे, सुचरिता से-कथा कोनोदिन एक मुहूर्तेर जन्यओ भावे नाइ। एइ सत्ता ये दूर अतीत ओ सुदूर भविष्यत्के अधिकारपूर्वक निभृते थाकिया मानवेर विराट भाग्यजाले एकटा विशेष रङेर सुता एकटा विशेषभावे बुनिया चलियाछे––सेइ सुता ये कत सूक्ष्म, कत विचित्र एवं कत सुदूर सार्थकतार सहित ताहार कत निगूढ़ सम्बन्ध––सुचरिता आज ताहा गोरार प्रबल कण्ठेर कथा शुनिया येन हठात् एकरकम करिया उपलब्धि करिल। प्रत्येक भारतवासीर जीवन ये एतबड़ो एकटा सत्तार द्वारा वेष्टित, अधिकृत, ताहा सचेतनभावे अनुभव ना करिले आमरा ये कतइ छोटो हइया एवं चारि दिक सम्बन्धे कतइ अन्ध हइया काज करिया याइ निमेषेर मध्येइ ताहा येन सुचरितार काछे प्रकाश पाइल। सेइ अकस्मात् चित्तस्फूर्तिर आवेगे सुचरिता ताहार समस्त संकोच दूर करिया दिया अत्यन्त सहज विनयेर सहित कहिल, "आमि देशेर कथा कखनो एमन क'रे, बड़ो क'रे, सत्य क'रे भावि नि। किन्तु, एकटा कथा आमि जिज्ञासा करि–– धर्मेर सङ्गे देशेर योग की। धर्म कि देशेर अतीत नय।"

गोरार काने सुचरितार मृदु कण्ठेर एइ प्रश्न बड़ो मधुर लागिल। सुचरितार बड़ो बड़ो दुइटि चोखेर मध्ये एइ प्रश्नटि आरओ मधुर करिया देखा दिल। गोरा कहिल, "देशेर अतीत या, देशेर चेये या अनेक बड़ो, ताइ देशेर भितर दिये प्रकाश पाय। ईश्वर एमनि करे विचित्रभावे आपनार अनन्त स्वरूपकेइ व्यक्त करछेन। याँरा बलेन, सत्य एक, अतएव केवलइ एकटि धर्मइ सत्य, धर्मेर एकटिमात्र रूपइ सत्य––ताँरा, सत्य ये एक, केवल एइ सत्यटिइ मानेन ; आर सत्य ये अन्तहीन, से-सत्यटा मानते चान ना। अन्तहीन एक अन्तहीन अनेके आपनाके प्रकाश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करेन--जगते सेइ लीलाइ तो देखछि। सेइजन्यइ धर्ममत विचित्र हये सेइ धर्मराजके नाना दिक दिये उपलब्धि कराच्छे। आमि आपनाके निश्चय बलछि, भारतवर्षेर खोला जानला दिये आपनि सूर्यके देखते पाबेन--सेजन्ये समुद्रपारे गिये खृस्टान गिर्जार जानलाय बसबार कोनो दरकार हबे ना।"

सुचरिता कहिल, "आपनि बलते चान, भारतवर्षेर धर्मतन्त्र एकटि विशेष पथ दिये ईश्वरेर दिके निये याय। सेइ विशेषत्वटि की।"

गोरा कहिल, "सेटा हच्छे एइ ये, ब्रह्म यिनि निर्विशेष तिनि विशेषेर मध्येइ व्यक्त। किन्तु, ताँर बिशेषेर शेष नेइ। जल ताँर बिशेष, स्थल ताँर विशेष, वायु ताँर विशेष, अग्नि ताँर विशेष, प्राण ताँर विशेष, बुद्धि प्रेम समस्तइ ताँर विशेष--गणना करे कोथाओ ताँर अन्त पाओया याय ना--विज्ञान ताइ निये माथा घुरिये मरछे। यिनि निराकार ताँर आकारेर अन्त नेइ--ह्रस्वदीर्घ-स्थूलसूक्ष्मेर अनन्त प्रवाहइ ताँर। यिनि अनन्त विशेष तिनिइ निर्विशेष, यिनि अनन्तरूप तिनिइ अरूप। अन्यान्य देशे ईश्वरके न्यूनाधिक परिमाणे कोनो एकटिमात्र विशेषेर मध्ये बाँधते चेष्टा करेछे--भारतवर्षेओ ईश्वरके विशेषेर मध्ये देखबार चेष्टा आछे बटे, किन्तु सेइ विशेषकेइ भारतवर्ष एकमात्र ओ चूड़ान्त बले गण्य करे ना। ईश्वर ये सेइ विशेषकेओ अनन्तगुणे अतिक्रम करे आछेन, ए-कथा भारतवर्षेर कोनो भक्त कोनोदिन अस्वीकार करेन ना।"

सुचरिता कहिल, "ज्ञानी करेन ना, किन्तु अज्ञानी ?"

गोरा कहिल, "आमि तो पूर्वेइ बलेछि, अज्ञानी सकल देशेइ सकल सत्यकेइ विकृत करबे।"

सुचरिता कहिल, "किन्तु, आमादेर देशे सेइ विकार कि वेशि दूर पर्यन्त पौंछय नि।"

गोरा कहिल, "ता हते पारे। किन्तु तार कारण, धर्मेर स्थूल ओ सूक्ष्म, अन्तर ओ बाहिर, शरीर ओ आत्मा, एइ दुटो अङ्गकेइ भारतवर्ष पूर्णभावे स्वीकार करते चाय ब'लेइ यारा सूक्ष्मके ग्रहण करते पारे ना तारा स्थूलटाकेइ नेय एवं अज्ञानेर द्वारा सेइ स्थूलेर मध्ये नाना अद्भुत विकार घटाते थाके। किन्तु, यिनि रूपेओ सत्य अरूपेओ सत्य, स्थूलेओ सत्य सूक्ष्मेओ सत्य, ध्यानेओ सत्य प्रत्यक्षेओ सत्य, ताँके भारतवर्ष सर्वतोभावे देहे मने कर्मे उपलब्धि करवार ये आश्चर्य विचित्र ओ प्रकाण्ड चेष्टा करेछे ताके आमरा मूढ़ेर मतो अश्रद्धा करे युरोपेर अष्टादश शताब्दीर नास्तिकताय-आस्तिकताय-मिश्रित एकटा संकीर्ण नीरस अङ्गहीन धर्मकेइ एकमात्र धर्म बले ग्रहण करव ए हतेइ पारे ना। आमि या बलछि ता आपनादेर आशैशवेर संस्कारवशत भालो करे बुझतेइ पारबेन ना, मने करबेन, ए-लोकटार इंरेजि शिखेओ शिक्षार कोनो फल हय नि ; किन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारतवर्षेर सत्य प्रकृति ओ सत्य साधनार प्रति यदि आपनार कोनोदिन श्रद्धा जन्मे, भारतवर्ष निजेके सहस्र बाधा ओ विकृतिर भितर दियेओ येरकम प्रकाश करछे सेइ प्रकाशेर गभीर अभ्यन्तरे यदि प्रवेश करते पारेन, ता हले—ता हले, कि आर बलब, आपनार भारतवर्षीय स्वभावके शक्तिके फिरे पेये आपनि मुक्ति लाभ करबेन।"

सुचरिता अनेकक्षण चुप करिया बसिया रहिल देखिया गोरा कहिल, "आमाके आपनि एकटा गोंड़ा व्यक्ति बले मने करबेन ना। हिन्दुधर्म सम्बन्धे गोंड़ा लोकेरा, विशेषत यारा हठात् नतुन गोँड़ा हये उठेछे, तारा ये-भावे कथा कय आमार कथा से-भावे ग्रहण करबेन ना। भारतवर्षेर नानाप्रकार प्रकाशे एवं विचित्र चेष्टार मध्ये आमि एकटा गभीर ओ बृहत् ऐक्य देखते पेयेछि, सेइ ऐक्येर आनन्दे आमि पागल। सेइ ऐक्येर आनन्देइ, भारतवर्षेर मध्ये यारा मूढ़तम तादेर सङ्गे एक दले मिशे धुलोय गिये बसते आमार मने किछुमात्र संकोच बोध हय ना। भारतवर्षेर एइ वाणी केउ वा बोझे, केउ वा बोझे ना—ता नाइ हल—आमि आमार भारतवर्षेर सकलेर सङ्गे एक; तारा आमार सकलेइ आपन; तादेर सकलेर मध्येइ चिरन्तन भारतवर्षेर निगूढ़ आविर्भाव नियत काज करछे, से-सम्बन्धे आमार मने कोनो सन्देहमात्र नेइ।"

गोरार प्रबल कण्ठेर एइ कथागुलि घरेर देयाले, टेबिले, समस्त आसबाब-पत्रेओ येन काँपिते लागिल।

ए-समस्त कथा सुचरितार पक्षे खुब स्पष्ट बुझिबार कथा नहे—किन्तु अनुभूतिर प्रथम अस्पष्ट सञ्चारेर वेग अत्यन्त प्रबल। जीवनटा ये नितान्तइ चारटे देयालेर मध्ये वा एकटा दलेर मध्ये बद्ध नहे, एइ उपलब्धिटा सुचरिताके येन पीड़ा दिते लागिल।

एमन समय सिँड़िर काछ हइते मेयेदेर उच्चहास्यमिश्रित द्रुत पदशब्द शुना गेल। वरदासुन्दरी ओ मेयेदेर लइया परेशबाबु फिरियाछेन। सुधीर सिँड़ि दिया उठिबार समय मेयेदेर उपर की एकटा उत्पात करितेछे, ताहाइ लइया एइ हास्यध्वनिर सृष्टि।

लावण्य, ललिता ओ सतीश घरेर मध्ये ढुकियाइ गोराके देखिया संयत हइया दाँड़ाइल। लावण्य घर हइते बाहिर हइया गेल—सतीश विनयेर चौकिर पाशे दाँड़ाइया काने काने ताहार सहित विश्रम्भालाप शुरु करिया दिल। ललिता सुचरितार पश्चाते चौकि टानिया ताहार आड़ाले अदृश्यप्राय हइया बसिल।

परेश आसिया कहिलेन, "आमार फिरते बड़ो देरि हये गेल। पानुबाबु बुझि चले गेछेन?"

सुचरिता ताहार कोनो उत्तर दिल ना—विनय कहिल, "हाँ, तिनि थाकते पारलेन ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा उठिया कहिल, "आज आमराओ आसि।"

बलिया परेशबाबुके नत हइया नमस्कार करिल।

परेशबाबु कहिलेन, "आज आर तोमादेर सङ्गे आलाप करबार समय पेलुम ना। बाबा, यखन तोमार अवकाश हबे माझे माझे एसो।"

गोरा ओ विनय घर हइते बाहिर हइबार उपक्रम करितेछे एमन समय वरदासुन्दरी आसिया पड़िलेन। उभये ताँहाके नमस्कार करिल। तिनि कहिलेन, "आपनारा एखन याच्छेन ना कि ?"

गोरा कहिल, "हाँ।"

वरदासुन्दरी विनयके कहिलेन, "किन्तु, विनयबाबु, आपनि येते पारछेन ना—आपनाके आज खेये येते हबे। आपनार सङ्गे एकटा काजेर कथा आछे।"

सतीश लाफाइया उठिया विनयेर हात धरिल एवं कहिल, "हाँ, मा, विनय-बाबुके येते दियो ना ; उनि आज रात्रे आमार सङ्गे थाकबेन।"

विनय किछु कुण्ठित हइया उत्तर दिते पारितेछिल ना देखिया वरदासुन्दरी गोराके कहिलेन, "विनयबाबुके कि आपनि निये येते चान। ओँके आपनार दरकार आछे ?"

गोरा कहिल, "किछु ना। विनय, तुमि थाको-ना—आमि आसछि।"

बलिया गोरा द्रुतपदे चलिया गेल।

विनयेर थाका सम्बन्धे वरदासुन्दरी यखनइ गोरार सम्मति लइलेन सेइ मुहूर्तेइ विनय ललितार मुखेर दिके ना चाहिया थाकिते पारिल ना। ललिता मुख टिपिया हासिया मुख फिराइल।

ललितार एइ छोटोखाटो हासि-विद्रूपेर सङ्गे विनय झगड़ा करितेओ पारे ना, अथच इहा ताहाके काँटार मतो बेंधे। विनय घरे आसिया बसितेइ ललिता कहिल, "विनयबाबु, आज आपनि पालालेइ भालो करतेन।"

विनय कहिल, "केन।"

ललिता। मा आपनाके विपदे फेलबार मतलब करछेन। म्याजिस्ट्रेटेर मेलाय ये अभिनय हबे ताते एकजन लोक कम पड़छे—मा आपनाके ठिक करेछेन।

विनय व्यस्त हइया कहिल, "की सर्वनाश। ए काज आमार द्वारा हबे ना।"

ललिता हासिया कहिल, "से आमि माके आगेइ बलेछि। ए अभिनये आपनार बन्धु कखनोइ आपनाके योग दिते देबेन ना।"

विनय खोंचा खाइया कहिल, "बन्धुर कथा रेखे दिन। आमि सात जन्मे कखनो अभिनय करि नि—आमाके केन।"

ललिता कहिल, "आमराइ बुझि जन्मजन्मान्तर अभिनय करे आसछि ?"

एइसमय वरदासुन्दरी घरेर मध्ये आसिया बसिलेन। ललिता कहिल,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"मा, तुमि अभिनये विनयबाबुके मिथ्या डाकछ। आगे ओँर बन्धुके यदि राजि कराते पार ता हले—"

विनय कातर हइया कहिल, "बन्धुर राजि हओया निये कथाइ हच्छे ना। अभिनय तो करलेइ हय ना—आमार ये क्षमताइ नेइ।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "सेजन्ये भाबबेन ना—आमरा आपनाके शिखिये ठिक करे निते पारब। छोटो छोटो मेयेरा पारबे आर आपनि पारबेन ना?"

विनयेर उद्धारेर कोनो उपाय रहिल ना।

२१

गोरा ताहार स्वाभाविक द्रुतगति परित्याग करिया अन्यमनस्कभावे धीरे धीरे बाड़ि चलिल। बाड़ि याइबार सहज पथ छाड़िया से अनेकटा घुरिया गङ्गार धारेर रास्ता धरिल। तखन कलिकातार गङ्गा ओ गङ्गार धार वणिक्-सभ्यतार लाभलोलुप कुश्रीताय जले स्थले आक्रान्त हइया तीरे रेलेर लाइन ओ नीरे ब्रिजेर बेड़ि परे नाइ। तखनकार शीतसन्ध्याय नगरेर निश्वासकालिमा आकाशके एमन निविड़ करिया आच्छन्न करित ना। नदी तखन बहुदूर हिमालयेर निर्जन गिरिश्रृङ्ग हइते कलिकातार धूलिलिप्त व्यस्ततार माझखाने शान्तिर वार्ता वहन करिया आनित।

प्रकृति कोनोदिन गोरार मनके आकर्षण करिबार अवकाश पाय नाइ। ताहार मन निजेर सचेष्टतार वेगे निजें केवलइ तरङ्गित हइया छिल; ये जल-स्थल-आकाश अव्यवहितभावे ताहार चेष्टार क्षेत्र ताहाके से लक्ष्यइ करे नाइ।

आज किन्तु नदीर उपरकार ओइ आकाश आपनार नक्षत्रालोके अभिषिक्त अन्धकार द्वारा गोरार हृदयके बारम्बार निःशब्दे स्पर्श करिते लागिल। नदी निस्तरङ्ग; कलिकातार तीरेर घाटे कतकगुलि नौकाय आलो ज्वलितेछे, आर कतकगुलि दीपहीन निस्तब्ध। ओपारेर निविड़ गाछगुलिर मध्ये कालिमा घनीभूत। ताहारइ ऊर्ध्वे बृहस्पतिग्रह अन्धकारेर अन्तर्यामीर मतो तिमिरभेदी अनिमेषदृष्टिते स्थिर हइया आछे।

आज एइ वृहत् निस्तब्ध प्रकृति गोरार शरीर-मनके येन अभिभूत करिया दिल। गोरार हृत्पिण्डेर समान ताले आकाशेर विराट अन्धकार स्पन्दित हइते लागिल। प्रकृति एतकाल धैर्य धरिया स्थिर हइया छिल—आज गोरार अन्तःकरणेर कोन् द्वारटा खोला पाइया से मुहूर्तेर मध्ये एइ असतर्क दुर्गटिके आपनार करिया लइल। एतदिन निजेर विद्याबुद्धि चिन्ता ओ कर्म लइया गोरा अत्यन्त स्वतन्त्र छिल—आज की हइल। आज कोन्खाने से प्रकृतिके स्वीकार करिल एवं करिबामात्रइ एइ गभीर कालो जल, एइ निविड़ कालो तट, ओइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदार कालो आकाश ताहाके वरण करिया लइल। आज प्रकृतिर काछे केमन करिया गोरा धरा पड़िया गेछे।

पथेर धारे सदागरेर आंपिसेर बागाने कोन् बिलाति लता हइते एकटा अपरिचित फुलेर मृदुकोमल गन्ध गोरार व्याकुल हृदयेर उपर हात बुलाइया दिते लागिल। नदी ताहाके लोकालयेर अश्रान्त कर्मक्षेत्र हइते कोन् अनिर्देश्य सुदूरेर दिके आङुल देखाइया दिल ; सेखाने निर्जन जलेर धारे गाछगुलि शाखा मिलाइया की फुल फुटाइयाछे, की छाया फेलियाछे। सेखाने निर्मल नीलाकाशेर निचे दिनगुलि येन काहार चोखेर उन्मीलित दृष्टि एवं रातगुलि येन काहार चोखेर आनत पल्लवेर लज्जाजड़ित छाया। चारि दिक हइते माधुर्येर आवर्त आसिया हठात् गोराके ये एकटा अतलस्पर्श अनादि शक्तिर आकर्षणे टानिया लइया चलिल पूर्वे कोनोदिन से ताहार कोनो परिचय जानित ना। इहा एकइ काले वेदनाय एवं आनन्दे ताहार समस्त मनके एक प्रान्त हइते आर-एक प्रान्ते अभिहत करिते लागिल। आज एइ हेमन्तेर रात्रे, नदीर तीरे, नगरेर अव्यक्त कोलाहले एवं नक्षत्रेर अपरिस्फुट आलोके गोरा विश्वव्यापिनी कोन् अवगुण्ठिता मायाविनीर सम्मुखे आत्मविस्मृत हइया दण्डायमान हइल ; एइ महारानीके से एतदिन नतमस्तके स्वीकार करे नाइ बलियाइ आज अकस्मात् ताहार शासनेर इन्द्रजाल आपन सहस्रवर्णेर सूत्रे गोराके जल-स्थल-आकाशेर सङ्गे चारि दिक हइते बाँधिया फेलिल। गोरा निजेर सम्बन्धे निजेइ विस्मित हइया नदीर जनशून्य घाटेर एकटा पँइठाय बसिया पड़िल। बार बार से निजेके प्रश्न करिते लागिल ये, ताहार जीवने ए किसेर आविर्भव एवं इहार की प्रयोजन। ये-संकल्प द्वारा से आपनार जीवनके आगागोड़ा विधिबद्ध करिया मने मने साजाइया लइयाछिल ताहार मध्ये इहार स्थान कोथाय। इहा कि ताहार विरुद्ध। संग्राम करिया इहाके कि परास्त करिते हइबे। एइ बलिया गोरा मुष्टि दृढ़ करिया यखनइ बद्ध करिल, अमनि बुद्धिते उज्ज्वल, नम्रताय कोमल, कोन् दुइटि स्निग्ध चक्षुर जिज्ञासु दष्टि ताहार मनेर मध्ये जागिया उठिल—कोन् अनिन्द्यसुन्दर हातखानिर आङुलगुलि स्पर्शसौभाग्येर अनास्वादित अमृत ताहार ध्यानेर सम्मुखे तुलिया धरिल—गोरार समस्त शरीरे पुलकेर विद्युत् चकित हइया उठिल। एकाकी अन्धकारेर मध्ये एइ प्रगाढ़ अनुभूति ताहार समस्त प्रश्नके समस्त द्विधाके एकेबारे निरस्त करिया दिल। से ताहार एइ नूतन अनुभूतिके समस्त देह मन दिया उपभोग करिते लागिल ; इहाके छाड़िया से उठिते इच्छा करिल ना।

अनेक रात्रे यखन गोरा बाड़ि गेल तखन आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "एत रात करले ये, बाबा ? तोमार खाबार ये ठाण्डा हये गेछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "की जानि, मा, आज की मने हल, अनेकक्षण गङ्गार घाटे बसे छिलुम।"

आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "विनय सङ्गे छिल बुझि ?"

गोरा कहिल, "ना, आमि एकलाइ छिलुम।"

आनन्दमयी मने मने किछु आश्चर्य हइलेन। बिना प्रयोजने गोरा ये एत रात पर्यन्त गङ्गार घाटे बसिया भाबिबे एमन घटना कखनोइ हय नाइ। चुप करिया बसिया भाबा ताहार स्वभावइ नहे। गोरा यखन अन्यमनस्क हइया खाइतेछिल आनन्दमयी लक्ष्य करिया देखिलेन, ताहार मुखे येन एकटा केमनतरो उतलाभावेर उद्दीपना।

आनन्दमयी किछुक्षण परे आस्ते आस्ते जिज्ञासा करिलेन, "आज बुझि विनयेर बाड़ि गियेछिले ?"

गोरा कहिल, "ना, आज आमरा दुजनेइ परेशबाबुर ओखाने गियेछिलुम।"

शुनिया आनन्दमयी चुप करिया बसिया भाबिते लागिलेन। आबार जिज्ञासा करिलेन, "ओंदेर सकलेर सङ्गे तोमार आलाप हयेछे ?"

गोरा कहिल, "हाँ, हयेछे।"

आनन्दमयी। ओंदेर मेयेरा बुझि सकलेर साक्षातेइ बेरोन ?

गोरा। हाँ, ओंदेर कोनो बाधा नेइ।

अन्य समय हइले एरूप उत्तरेर सङ्गे सङ्गे एकटा उत्तेजना प्रकाश पाइत, आज ताहार कोनो लक्षण ना देखिया आनन्दमयी आबार चुप करिया बसिया भाविते लागिलेन।

परदिन सकाले उठिया गोरा अन्यदिनेर मतो अविलम्बे मुख धुइया दिनेर काजेर जन्य प्रस्तुत हइते गेल ना। से अन्यमनस्कभावे ताहार शोवार घरेर पूर्वदिकेर दरजा खुलिया खानिकक्षण दाँड़ाइया रहिल। ताहादेर गलिटा पूर्वेर दिके एकटा बड़ो रास्ताय पड़ियाछे ; सेइ बड़ो रास्तार पूर्वप्रान्ते एकटा इस्कुल आछे ; सेइ इस्कुलेर संलग्न जमिते एकटा पुरातन जामगाछेर माथार उपरे पातला एकखण्ड सादा कुयाशा भासितेछिल एवं ताहार पश्चाते आसन्न सूर्योदयेर अरुणरेखा झापसा हइया देखा दितेछिल। गोरा चुप करिया अनेकक्षण सेइ दिके चाहिया थाकिते थाकिते सेइ क्षीण कुयाशाटुकु मिशिया गेल, उज्ज्वल रौद्र गाछेर शाखार भितर दिया येन अनेक गुलो झक्झके सङिनेर मतो बिँधिया बाहिर हइया आसिल एवं देखिते देखिते कलिकातार रास्ता जनताय ओ कोलाहले पूर्ण हइया उठिल।

एमन समय हठात् गलिर मोड़े अविनाशेर सङ्गे आर-कयेकटि छात्रके ताहार बाड़िर दिके आसिते देखिया गोरा ताहार एइ आवेशेर जालके येन एक प्रबल टाने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छिन्न करिया फेलिल ; से निजेर मनके एकटा प्रचण्ड आघात करिया बलिल, 'ना, ए-सब किछु नय ; ए कोनोमतेइ चलिबे ना।' बलिया द्रुतवेगे शोबार घर हइते बाहिर हइया गेल। गोरार बाड़िते ताहार दलबल आसियाछे अथच गोरा ताहार अनेक पूर्वेइ प्रस्तुत हइया नाइ, एमन घटना इहार पूर्वे आर एकदिनओ घटिते पाय नाइ। एइ सामान्य त्रुटितेइ गोराके भारि एकटा धिक्कार दिल ; से मने मने स्थिर करिल, आर से परेशबाबुर बाड़ि याइबे ना एवं विनयेर सङ्गेओ याहाते किछुदिन देखा ना हइया एइ-समस्त आलोचना बन्ध थाके सेइरूप चेष्टा करिबे।

सेदिन निचे गिया एइ परामर्श हइल ये, गोरा ताहार दलेर दुइ-तिन जनके सङ्गे करिया पाये हाँटिया ग्राण्ड्ट्राङ्क रोड दिया भ्रमणे बाहिर हइबे ; पथेर मध्ये गृहस्थबाड़ि आतिथ्य ग्रहण करिबे, सङ्गे टाकाकड़ि किछुइ लइबे ना।

एइ अपूर्व संकल्प मने लइया गोरा हठात् किछु अतिरिक्त परिमाणे उत्साहित हइया उठिल। समस्त बन्धन छेदन करिया एइरूप खोला रास्ताय बाहिर हइया पड़िबार एकटा प्रबल आनन्द ताहाके पाइया बसिल। भितरे भितरे ताहार हृदय ये एकटा जाले जड़ाइया पड़ियाछे, एइ बाहिर हइबार कल्पनातेइ सेटा येन छिन्न हइया गेल बलिया ताहार मने हइल। एइ-समस्त भावेर आवेश य मायामात्र एवं कर्मइ ये सत्य, सेइ कथाटा खुब जोरेर सहित निजेर मनेर मध्ये ध्वनित प्रतिध्वनित करिया लइया, यात्रार जन्य प्रस्तुत हइया लइबार जन्य इस्कुल-छुटिर बालकेर मतो गोरा ताहार एकतलार बसिबार घर छाड़िया प्राय छुटिया बाहिर हइल। सेइ समय कृष्णदयाल गङ्गास्नान सारिया, घटिते गङ्गाजल लइया, नामावली गाये दिया, मने मने मन्त्र जप करिते करिते घरे चलियाछिलेन। गोरा एकेबारे ताँहार घाड़ेर उपर गिया पड़िल। लज्जित हइया गोरा ताड़াতাड़ि ताँहार पा छुइया प्रणाम करिल। तिनि शशव्यस्त हइया 'थाक् थाक्' बलिया ससंकोचे चलिया गेलेन। पूजाय बसिबार पूर्वे गोरार स्पर्शे ताँहार गङ्गास्नानेर फल माटि हइल। कृष्णदयाल ये गोरार संस्पर्शइ विशेष करिया एड़ाइया चलिबार चेष्टा करितेन, गोरा ताहा ठिक बुझित ना ; से मने करित, शुचिवायुग्रस्त बलिया सर्वप्रकारे सकलेरइ संस्रव बाँचाइया चलाइ अहरह ताँहार सतर्कतार एकमात्र लक्ष्य छिल। आनन्दमयीके तो तिनि म्लेच्छ बलिया दूरे परिहार करितेन ; महिम काजेर लोक, महिमेर सङ्गे ताँहार देखा-साक्षातेरइ अवकाश घटित ना। समस्त परिवारेर मध्ये केवल महिमेर कन्या शशिमुखीके तिनि काछे लइया ताहाके संस्कृत स्तोत्र मुखस्थ कराइतेन एवं पूजार्चना-विधिते दीक्षित करितेन।

कृष्णदयाल गोराकर्तृक ताँहार पादस्पर्शे व्यस्त हइया पलायन करिले पर ताँहार संकोचेर कारण सम्बन्धे गोरार चेतना हइल एवं से मने मने हासिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइरूपे पितार सहित गोरार समस्त सम्बन्ध प्राय विच्छिन्न हइया गियाछिल एवं मातार अनाचारके से यतइ निन्दा करुक, एइ आचारद्रोहिनी माकेइ गोरा ताहार जीवनेर समस्त भक्ति समर्पण करिया पूजा करित।

आहारान्ते गोरा एकटि छोटो पुँटलिते गोटाकयेक कापड़ लइया सेटा विलाति पर्यटकदेर मतो पिठे बाँधिया मार काछे आसिया उपस्थित हइल। कहिल, "मा, आमि किछुदिनेर मतो बेरोब।"

आनन्दमयी कहिलेन, "कोथाय याबे, बाबा ?"

गोरा कहिल, "सेटा आमि ठिक बलते पारछि ने।"

आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "कोनो काज आछे ?"

गोरा कहिल, "काज बलते या बोझाय सेरकम किछु नय —एइ याओयाटाइ एकटा काज।"

आनन्दमयीके एकटुखानि चुप करिया थाकिते देखिया गोरा कहिल, "मा, दोहाइ तोमार, आमाके वारण करते पारबे ना। तुमि तो आमाके जानइ, आमि सन्न्यासी हये याब एमन भय नेइ। आमि माके छेड़े बेशिदिन कोथाओ थाकते पारि ने।"

मार प्रति ताहार भालोबासा गोरा कोनोदिन मुखे एमन करिया बले नाइ— ताइ आज कथाटा बलियाइ से लज्जित हइल।

पुलकित आनन्दमयी ताड़ाताड़ि ताहार लज्जाटा चापा दिया कहिलेन, "विनय सङ्गे याबे बुझि ?"

गोरा व्यस्त हइया कहिल, "ना, मा, विनय याबे ना। ओइ देखो, अमनि मार मने भावना हच्छे, विनय ना गेले ताँर गोराके पथे-घाटे रक्षा करबे के। विनयके यदि तुमि आमार रक्षक मने कर सेटा तोमार एकटा कुसंस्कार—एबार निरापदे फिरे एले ओइ संस्कारटा तोमार घुचबे।"

आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "माझे माझे खबर पाब तो ?"

गोरा कहिल, "खबर पाबे ना बलेइ ठिक करे राखो—तार परे यदि पाओ तो खुशि हबे। भय किछुइ नेइ; तोमार गोराके केउ नेबे ना। मा, तुमि आमार यतटा मूल्य कल्पना कर आर केउ ततटा करे ना। तबे एइ बोंचकाटिर उपर यदि कारओ लोभ हय तबे एटि ताके दान करे दिये चले आसब; एटा रक्षा करते गिये प्राण दान करब ना—से निश्चय।"

गोरा आनन्दमयीर पायेर धुला लइया प्रणाम करिल, तिनि ताहार माथाय हात बुलाइया हात चुम्बन करिलेन, कोनोप्रकार निषेधमात्र करिलेन ना। निजेर कष्ट हइबे बलिया अथवा कल्पनाय अनिष्ट आशङ्का करिया आनन्दमयी कखनो काहाकेओ निषेध करितेन ना। निजेर जीवने तिनि अनेक बाधाविपदेर मध्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया आसियाछेन, बाहिरेर पृथिवी ताँहार काछे अपरिचित नहे ; ताँहार मने भय बलिया किछु छिल ना। गोरा ये कोनो विपदे पड़िबे से-भय तिनि मने आनेन नाइ——किन्तु गोरार मनेर मध्ये ये की एकटा विप्लव घटियाछे, सेइ कथाइ तिनि काल हइते भावितेछेन। आज हठात् गोरा अकारणे भ्रमण करिते चलिल शुनिया ताँहार सेइ भावना आर ओ वाड़िया उठियाछे।

गोरा पिठे बोंचका बाँधिया रास्ताय येइ पा दियाछे एमन समय हाते घनरक्त बसोरा गोलापयुगल सयत्ने लइया विनय ताहार सम्मुखे आसिया उपस्थित हइल। गोरा कहिल, "विनय, तोमार दर्शने अयात्रा कि सुयात्रा एबारे तार परीक्षा हबे।"

विनय कहिल, "बेरोच्छ ना कि?"

गोरा कहिल, "हाँ।"

विनय जिज्ञासा करिल, "कोथाय?"

गोरा कहिल, "प्रतिध्वनि उत्तर करिल 'कोथाय'।"

विनय। प्रतिध्वनिर चेये भालो उत्तर नेइ ना कि?

गोरा। ना। तुमि मार काछे याओ, सब शुनते पावे। आमि चललुम।

बलिया द्रुतवेगे चलिया गेल। विनय अन्तःपुरे गिया आनन्दमयीके प्रणाम करिया ताँहार पायेर 'परे गोलापफुल दुइटि राखिल।

आनन्दमयी फुल तुलिया लइया जिज्ञासा करिलेन, "ए कोथाय पेले, विनय?"

विनय ताहार ठिक स्पष्ट उत्तरटि ना दिया कहिल, "भालो जिनिसटि पेलेइ आगे मायेर पुजोर जन्ये सेटि दिते इच्छा करे।"

तार परे आनन्दमयीर तक्तपोशेर उपर बसिया विनय कहिल, "मा, तुमि किन्तु अन्यमनस्क आछ।"

आनन्दमयी कहिलेन, "केन बलो देखि।"

विनय कहिल, "आज आमार बराद्द पानटा देवार कथा भुलइ गेछ।"

आनन्दमयी लज्जित हइया विनयके पान आनिया दिलेन।

ताहार परे समस्त दुपुरवेला धरिया दुइजने कथावार्ता हइते लागिल। गोरार निरुद्देश-भ्रमणेर अभिप्राय सम्बन्धे विनय कोनो परिष्कार खबर बलिते पारिल ना।

आनन्दमयी कथाय कथाय जिज्ञासा करिलन, "काल बुझि तुमि गोराके निये परेशबाबुर ओखाने गियेछिले?"

विनय गतकल्यकार समस्त घटना विवृत करिया बलिल। आनन्दमयी प्रत्येक कथाटि समस्त अन्तःकरण दिया शुनिलेन।

याइबार समय विनय कहिल, "मा, पूजा तो साङ्ग हल, एवार तोमार चरणेर प्रसादी फुल दुटो माथाय करे निये येते पारि?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी हासिया गोलाप-फुल दुइटि विनयेर हाते दिलेन एवं मने मने भाबिलेन, ए गोलाप दुइटि ये केवल सौन्दर्येर जन्यइ आदर पाइतेछे ताहा नहे—निश्चय, उद्भिद्तत्त्वेर अतीत आरओ अनेक गभीर तत्त्व इहार मध्ये आछे।

विकालवेलाय विनय चलिया गेले तिनि कतइ भाबिते लागिलेन। भगवानके डाकिया बार बार प्रार्थना करिलेन—गोराके येन असुखी हइते ना हय एवं विनयेर सङ्गे ताहार विच्छेदेर येन कोनो कारण ना घटे।

२२

गोलाप-फुलेर एकटु इतिहास आछे।

काल रात्रे गोरा तो परेशबाबुर बाड़ि हइते चलिया आसिल, किन्तु म्याजिस्ट्रेटेर बाड़िते सेइ अभिनये योग देओयार प्रस्ताव लइया विनयके विस्तर कष्ट पाइते हइयाछिल।

एइ अभिनये ललितार ये कोनो उत्साह छिल ताहा नहे, से वरञ्च ए-सब व्यापार भालोइ बासित ना। किन्तु, कोनोमते विनयके एइ अभिनये जड़ित करिबार जन्य ताहार मनेर मध्ये येन एकटा जेद चापिया गियाछिल। ये-समस्त काज गोरार मतविरुद्ध, विनयके दिया ताहा साधन कराइबार जन्य ताहार एकटा रोख जन्मियाछिल। विनय ये गोरार अनुवर्ती, इहा ललितार काछे केन एत असह्य हइयाछिल ताहा से निजेइ बुझिते पारितेछिल ना। येमन करिया होक, समस्त बन्धन काटिया विनयके स्वाधीन करिया दिते पारिले से येन बाँचे, एमनि हइया उठियाछे।

ललिता ताहार वेणी दुलाइया माथा नाड़िया कहिल, "केन, मशाय, अभिनये दोषटा की।"

विनय कहिल, "अभिनये दोष ना थाकते पारे, किन्तु ओइ म्याजिस्ट्रेटेर बाड़िते अभिनय करते याओया आमार मने भालो लागछे ना।"

ललिता। आपनि निजेर मनेर कथा बलछेन ना आर-कारओ?

विनय। अन्येर मनेर कथा बलबार भार आमार उपरे नेइ, बलाओ शक्त। आपनि हयतो विश्वास करेन ना, आमि निजेर मनेर कथाटाइ बले थाकि—कखनो निजेर जबानिते, कखनओ वा अन्येर जबानिते।

ललिता ए कथार कोनो जवाब ना दिया एकटुखानि मुचकिया हासिल मात्र। एकटु परे कहिल, "आपनार बन्धु गौरबाबु बोध हय मने करेन, म्याजिस्ट्रेटेर निमन्त्रण अग्राह्य करलेइ खुब एकटा वीरत्व हय, ओतेइ इंरेजेर सङ्गे लड़ाइ करार फल हय।"

विनय उत्तेजित हइया उठिया कहिल, "आमार बन्धु हयतो ना मने करते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पारेन, किन्तु आमि मने करि। लड़ाइ नय तो की। ये-लोक आमाके ग्राह्यइ करे ना—मने करे, आमाके कड़े आङुल तुले इशाराय डाक दिलेइ आमि कृतार्थ हये याब, तार सेइ उपेक्षार सङ्गे उपेक्षा दियेइ यदि लड़ाइ ना करि ता हले आत्म-सम्मानके बाँचाब की करे।"

ललिता निजे अभिमानी स्वभावेर लोक, विनयेर मुखेर एइ अभिमानवाक्य ताहार भालोइ लागिल। किन्तु, सेइजन्यइ ताहार निजेर पक्षेर युक्तिके दुर्बल अनुभव करियाइ ललिता अकारण विद्रूपेर खोंचाय विनयके कथाय कथाय आहत करिते लागिल।

शेषकाले विनय कहिल, "देखुन, आपनि तर्क करछेन केन—आपनि बलुन-ना केन 'आमार इच्छा, आपनि अभिनये योग देन'। ता हले आमि आपनार अनुरोध-रक्षार खातिरे निजेर मतटाके विसर्जन दिये एकटा सुख पाइ।"

ललिता कहिल, "वा:, ता आमि केन बलब। सत्यि यदि आपनार कोनो मत थाके ता हले सेटा आमार अनुरोधे केन त्याग करते याबेन। किन्तु, सेटा सत्यि हओया चाइ।"

विनय कहिल, "आच्छा, सेइ कथाइ भालो। आमार सत्यिकार कोनो मत नेइ। आपनार अनुरोध नाइ हल, आपनार तर्केइ परास्त हये आमि अभिनये योग दिते राजि हलुम।"

एमन समय वरदासुन्दरी घरे प्रवेश करिबामात्रइ विनय उठिया गिया ताँहाके कहिल, "अभिनयेर जन्य प्रस्तुत हते हले आमाके की करते हबे बले देबेन।"

वरदासुन्दरी सगर्वे कहिलेन, "सेजन्ये आपनाके किछुइ भावते हबे ना, आमरा आपनाके ठिक तैरि करे निते पारब। केवल अभ्यासेर जन्य रोज आपनाके नियमित आसते हबे।"

विनय कहिल, "आच्छा। आज तबे आसि।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "से की कथा। आपनाके खेये येते हच्छे।"

विनय कहिल, "आज नाइ खेलुम।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "ना ना, से हबे ना।"

विनय खाइल, किन्तु अन्यदिनेर मतो ताहार स्वाभाविक प्रफुल्लता छिल ना। आज सुचरिताओ केमन अन्यमनस्क हइया चुप करिया छिल। यखन ललितार सङ्गे विनयेर लड़ाइ चलितेछिल तखन से बारान्दाय पायचारि करिया वेड़ाइतेछिल। आज रात्रे कथावार्ता आर जमिल ना।

विदायेर समय विनय ललितार गम्भीर मुख लक्ष्य करिया कहिल, "आमि हार मानलुम तबु आपनाके खुशि करते पारलुम ना।"

ललिता कोनो जवाब ना दिया चलिया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता सहजे काँदिते जाने ना, किन्तु आज ताहार चोख दिया जल येन फाटिया बाहिर हइते चाहिल। की हइयाछे। केन से विनयबाबुके बार बार एमन करिया खोंचा दितेछे एवं निजे व्यथा पाइतेछे।

विनय यतक्षण अभिनये योग दिते नाराज छिल ललितार जेदओ ततक्षण केवलइ चड़िया उठितेछिल, किन्तु यखनइ से राजि हइल तखनइ ताहार समस्त उत्साह चलिया गेल। योग ना दिबार पक्षे यतगुलि तर्क, समस्त ताहार मनें प्रबल हइया उठिल। तखन ताहार मन पीड़ित हइया बलिते लागिल, केवल आमार अनुरोध राखिबार जन्य विनयबाबुर एमन करिया राजि हओया उचित हय नाइ। अनुरोध! केन अनुरोध राखिबेन। तिनि मने करेन, अनुरोध राखिया तिनि आमार सङ्गे भद्रता करितेछेन। ताँहार एइ भद्रताटुकु पाइबार जन्य आमार येन अत्यन्त माथाव्यथा!"

किन्तु, एखन अमन करिया स्पर्धा करिले चलिबे केन। सत्यइ ये से विनयके अभिनयेर दले टानिबार जन्य क्रमागत निर्बन्ध प्रकाश करियाछे। विनय भद्रतार दाये ताहार एत जेदेर अनुरोध राखियाछे बलिया राग करिलेइ वा चलिबे केन। एइ घटनाय ललितार निजेर उपरे एमनइ तीव्र घृणा ओ लज्जा उपस्थित हइल ये स्वभावत एतटा हइबार कोनो कारण छिल ना। अन्यदिन हइले ताहार मनेर चाञ्चल्येर समय से सुचरितार काछे याइत। आज गेल ना एवं केन ये ताहार बुकटाके ठेलिया तुलिया ताहार चोख दिया एमन करिया जल बाहिर हइते लागिल ताहा से निजेइ भालो करिया बुझिते पारिल ना।

परदिन सकाले सुधीर लावण्यके एकटि तोड़ा आनिया दियाछिल। सेइ तोड़ार एकटि बाँटाय दुइटि विकचोन्मुख बसोरा गोलाप छिल। ललिता सेटि तोड़ा हइते खुलिया लइल। लावण्य कहिल, "ओ की करछिस।"

ललिता कहिल, "तोड़ाय अनेकगुलो बाजे फुल-पातार मध्ये भालो फुलके बाँधा देखले आमार कष्ट हय, ओरकम दड़ि दिये सब जिनिसके एक श्रेणीते जोर करे बाँधा बर्बरता।"

एइ बलिया समस्त फुलके बन्धनमुक्त करिया ललिता सेगुलिके घरेर एदिके ओदिके पृथक करिया साजाइल; केवल गोलाप दुटिके हाते करिया लइया गेल।

सतीश छुटिया आसिया कहिल, "दिदि, फुल कोथाय पेले।"

ललिता ताहार उत्तर ना दिया कहिल, "आज तोर बन्धुर बाड़िते याबि ने?"

विनयेर कथा एतक्षण सतीशेर मने छिल ना, किन्तु ताहार उल्लेखमात्रेइ लाफाइया उठिया कहिल, "हाँ याब।" बलिया तखनइ याइबार जन्य अस्थिर हइया उठिल।

ललिता ताहाके धरिया जिज्ञासा करिल, "सेखाने गिये की करिस?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतीश संक्षेपे कहिल, "गल्प करि।"

ललिता कहिल, "तिनि तोके एत छबि देन तुइ ताँके किछु दिस ने केन।"

विनय इंरेजि कागज प्रभृति हइते सतीशेर जन्य नानाप्रकार छबि काटिया राखित। एकटा खाता करिया सतीश एइ छबि गुलि ताहाते गँद दिया आँटिते आरम्भ करियाछिल। एइरूपे पाता पुराइबार जन्य ताहार नेशा एतइ चड़िया गियाछे ये भालो बइ देखिलेओ ताहा हइते छबि काटिया लइबार जन्य ताहार मन छट्‌फट् करित। एइ लोलुपतार अपराधे ताहार दिदिदेर काछे ताहाके विस्तर ताड़ना सह्य करिते हइयाछे।

संसारे प्रतिदान बलिया ये एकटा दाय आछे से-कथाटा हठात् आज सतीशेर सम्मुखे उपस्थित हओयाते से विशेष चिन्तित हइया उठिल। भाङा टिनेर बाक्सटिर मध्ये ताहार निजेर विषयसम्पत्ति याहा किछु सञ्चित हइयाछे ताहार कोनोटारइ आसक्तिबन्धन छेदन करा ताहार पक्षे सहज नहे। सतीशेर उद्‌विग्न मुख देखिया ललिता हासिया ताहार गाल टिपिया दिया कहिल, "थाक् थाक्, तोके आर अत भाबते हबे ना। आच्छा, एइ गोलाप-फुल दुटो ताँके दिस।"

एत सहजे समस्यार मीमांसा हइल देखिया से उत्फुल्ल हइया उठिल। एवं फुल दुटि लइया तखनइ से ताहार बन्धुऋण शोध करिबार जन्य चलिल।

रास्ताय विनयेर सङ्गे ताहार देखा हइल। 'विनयबाबु विनयबाबु' करिया दूर हइते ताहाके डाक दिया सतीश ताहार काछे आसिया उपस्थित हइल एवं जामार मध्ये फुल लुकाइया कहिल, "आपनार जन्ये की एनेछि बलुन देखि।"

विनयके हार मानाइया गोलाप-फुल दुइटि बाहिर करिल। विनय कहिल, "वाः, की चमत्कार! किन्तु, सतीशबाबु, एटि तो तोमार निजेर जिनिस नय। चोराइ माल निये शेषकाले पुलिसेर हाते पड़ब ना तो?"

एइ फुल दुटिके ठिक निजेर जिनिस बला याय कि ना, से-सम्बन्धे सतीशेर हठात् धोंका लागिल। से एकटु भाबिया कहिल, "ना, वाः, ललितादिदि आमाके दिलेन ये आपनाके दिते।"

ए कथाटार एइखानेइ निष्पत्ति हइल एवं विकाले ताहादेर बाड़ि याइबे बलिया आश्वास दिया विनय सतीशके विदाय दिल।

काल रात्रे ललितार कथार खोंचा खाइया विनय ताहार वेदना भुलिते पारितेछिल ना। विनयेर सङ्गे काहारओ प्राय विरोध हय ना। सेइजन्य एइप्रकार तीव्र आघात से काहारओ काछे प्रत्याशाइ करे ना। इतिपूर्वे ललिताके विनय सुचरितार पश्चाद्‌वर्तिनी करियाइ देखियाछिल। किन्तु, अंकुशाहत हाति येमन ताहार माहुतके भुलिबार समय पाय ना, किछुदिन हइते ललिता सम्बन्धे विनयेर सेइ दशा हइयाछिल। की करिया ललिताके एकटुखानि प्रसन्न करिबे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं शान्ति पाइबे, विनयेर एइ चिन्ताइ प्रधान हइया उठियाछिल। सन्ध्यार समय बासाय आसिया ललितार तीव्रहास्यदिग्ध ज्वालामय कथागुलि एकटार पर एकटा केवलइ ताहार मने बाजिया उठित एवं ताहार निद्रा दूर करिया राखित। 'आमि गोरार छायार मतो, आमार निजेर कोनो पदार्थ नाइ, ललिता एइ बलिया अवज्ञा करेन, किन्तु कथाटा सम्पूर्ण असत्य।' इहार विरुद्धे नानाप्रकार युक्ति से मनेर मध्ये जड़ो करिया तुलित। किन्तु, ए-समस्त युक्ति ताहार कोनो काजे लागित ना। कारण, ललिता तो स्पष्ट करिया ए अभियोग ताहार विरुद्धे आने नाइ—ए कथा लइया तर्क करिबार अवकाशइ ताहाके देय नाइ। विनयेर जवाब दिबार एत कथा छिल तबु सेगुला व्यवहार करिते ना पारिया ताहार मने क्षोभ आरओ बाड़िया उठिते लागिल। अवशेषे काल रात्रे हारियाओ यखन ललितार मुख से प्रसन्न देखिल ना तखन बाड़िते आसिया से नितान्त अस्थिर हइया पड़िल। मने मने भाबिते लागिल, 'सत्यइ कि आमि एतइ अवज्ञार पात्र।'

एइजन्यइ सतीशेर काछे यखन से शुनिल ये, ललिताइ ताहाके गोलाप-फुल दुटि सतीशेर हात दिया पाठाइया दियाछे तखन से अत्यन्त एकटा उल्लास बोध करिल। से भाबिल, अभिनये योग दिते राजि हओयातेइ सन्धिर निदर्शनस्वरूप ललिता ताहाके खुशि हइया एइ गोलाप दुटि दियाछे। प्रथमे मने करिल, 'फुल दुटि बाड़िते राखिया आसि।' ताहार परे भाबिल, 'ना, एइ शान्तिर फुल मायेर पाये दिया इहाके पवित्र करिया आनि।'

सेदिन विकाले विनय यखन परेशबाबुर बाड़िते गेल तखन सतीश ललितार काछे ताहार इस्कुलेर पड़ा बलिया लइतेछे। विनय ललिताके कहिल, "युद्धेरइ रङ लाल, अतएव सन्धिर फुल सादा हओया उचित छिल।"

ललिता कथाटा बुझिते ना पारिया विनयेर मुखेर दिके चाहिल। विनय तखन एकटि गुच्छ श्वेतकरबी चादरेर मध्य हइते बाहिर करिया ललितार सम्मुखे धरिया कहिल, "आपनार फुल दुटि यतइ सुन्दर होक तबु ताते क्रोधेर रङटुकु आछे; आमार ए फुल सौन्दर्ये तार काछे दाँड़ाते पारे ना किन्तु शान्तिर शुभ्र रङे नम्रता स्वीकार करे आपनार काछे हाजिर हयेछे।"

ललिता कर्णमूल राङा करिया कहिल, "आमार फुल आपनि काके बलछेन।"

विनय किछु अप्रतिभ हइया कहिल, "तबे तो भुल बुझेछि। सतीशबाबु, कार फुल काके दिले।"

सतीश उच्चैःस्वरे बलिया उठिल, "वाः, ललितादिदि ये दिते बलले।"

विनय। काके दिते बललेन?

सतीश। आपनाके।

ललिता रक्तवर्ण हइया उठिया सतीशेर पिठे एक चापड़ मारिया कहिल,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"तोर मतो बोका तो आमि देखि नि। विनयबाबुर छबिर बदले तुइ ताँके फुल दिते चाइलि ने?"

सतीश हतबुद्धि हइया कहिल, "हाँ, ताइ तो, किन्तु तुमिइ आमाके दिते बलले ना?"

सतीशेर सङ्गे तकरार करिते गिया ललिता आरओ बेशि करिया जाले जड़ाइया पड़िल। विनय स्पष्ट बुझिल, फुल दुटि ललिताइ दियाछे, किन्तु बेनामितेइ काज करा ताहार अभिप्राय छिल। विनय कहिल, "आपनार फुलेर दावि आमि छेड़ेइ दिच्छि, किन्तु ताइ बले आमार एइ फुलेर मध्ये भुल किछुइ नेइ। आमादेर विवादनिष्पत्तिर शुभ उपलक्ष्ये एइ फुल कयटि—"

ललिता माथा नाड़िया कहिल, "आमादेर विवादइ वा की, आर तार निष्पत्तिइ वा किसेर।"

विनय कहिल, "एकेबारे आगागोड़ा समस्तइ माया? विवादओ भुल, फुलओ ताइ, निष्पत्तिओ मिथ्या? शुधु शुक्तिते रजत भ्रम नय, शुक्तिटा सुद्धइ भ्रम। ओइ-ये म्याजिस्ट्रेट साहेबेर बाड़िते अभिनयेर एकटा कथा हच्छिल सेटा—"

ललिता कहिल, "सेटा भ्रम नय। किन्तु, ता निये झगड़ा किसेर। आपनि केन मने करछेन, आपनाके एइटेते राजि करबार जन्ये आमि मस्त एकटा लड़ाइ बाधिये दियेछि, आपनि सम्मत हओयातेइ आमि कृतार्थ हयेछि। आपनार काछे अभिनय कराटा यदि अन्याय बोध हय कारओ कथा शुने केनइ वा ताते राजि हबेन।"

एइ बलिया ललिता घर हइते बाहिर हइया गेल। समस्तइ उल्टा व्यापार हइल। आज ललिता ठिक करिया राखियाछिल ये, से विनयेर काछे निजेर हार स्वीकार करिबे एवं याहाते अभिनये विनय योग ना देय ताहाके सेइरूप अनुरोध करिबे, किन्तु एमन करिया कथाटा उठिल एवं एमन भावे ताहार परिणति हइल ये, फल ठिक उल्टा दाँड़ाइल। विनय मने करिल, से ये अभिनय सम्बन्धे एतदिन विरुद्धता प्रकाश करियाछिल ताहारइ प्रतिघातेर उत्तेजना एखनो ललितार मने रहिया गेछे। विनय ये केवल बाहिरे हार मानियाछे, किन्तु मनेर मध्ये ताहार विरोध रहियाछे, एइजन्य ललितार क्षोभ दूर हइतेछे ना। ललिता एइ व्यापारटाते ये एतटा आघात पाइयाछे, इहाते विनय व्यथित हइया उठिल। से मने मने स्थिर करिल, एइ कथाटा लइया से आर-कोनो आलोचना उपहासच्छलेओ करिबे ना एवं एमन निष्ठा ओ नैपुण्येर सङ्गे एइ काजटाके सम्पन्न करिया तुलिबे ये केह ताहार प्रति औदासीन्येर अपराध आरोप करिते पारिबे ना।

सुचरिता आज प्रातःकाल हइते निजेर शोबार घरे निभृते बसिया 'खृस्टेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुकरण' नामक एकटि इंरेजि धर्मग्रन्थ पड़िबार चेष्टा करितेछे। आज से ताहार अन्यान्य नियमित कर्मे योग देय नाइ। माझे माझे ग्रन्थ हइते मन भ्रष्ट हइया पड़ाते बइयेर लेखागुलि ताहार काछे छाया हइया पड़ितेछिल—आबार परक्षणे निजेर उपर राग करिया विशेष वेगेर सहित चित्तके ग्रन्थेर मध्ये आबद्ध करितेछिल, कोनोमतेइ हार मानिते चाहितेछिल ना।

एक समये दूर हइते कण्ठस्वर शुनिया मने हइल, विनयबाबु आसियाछेन ; तखनइ चमकिया उठिया बइ राखिया बाहिरेर घरे याइबार जन्य मन व्यस्त हइया उठिल। निजेर एइ व्यस्ततात निजेर उपर क्रुद्ध हइया सुचरिता आबार चौकिर उपर बसिया बइ लइया पड़िल। पाछे काने शब्द याय बलिया दुइ कान चापिया पड़िबार चेष्टा करिते लागिल।

एमन समय ललिता ताहार घरे आसिल। सुचरिता ताहार मुखेर दिके चाहिया कहिल, "तोर की हयेछे बल् तो।"

ललिता तीव्र भावे घाड़ नाड़िया कहिल, "किछु ना।"

सुचरिता जिज्ञासा करिल, "कोथाय छिलि।"

ललिता कहिल, "विनयबाबु एसेछेन, तिनि बोध हय तोमार सङ्गे गल्प करते चान।"

विनयबाबुर सङ्गे आर-केह आसियाछे कि ना, ए प्रश्न सुचरिता आज उच्चारण करितेओ पारिल ना। यदि आर-केह आसित तबे निश्चय ललिता ताहार उल्लेख करित, किन्तु तबु मन निःसंशय हइते पारिल ना। आर से निजेके दमनेर चेष्टा ना करिया गृहागत अतिथिर प्रति कर्तव्येर उपलक्षे बाहिरेर घरेर दिके चलिल। ललिताके जिज्ञासा करिल, "तुइ याबि ने ?"

ललिता एकटु अधैर्येर स्वरे कहिल, "तुमि याओ-ना, आमि परे याच्छि।"

सुचरिता बाहिरेर घरे प्रवेश करिया देखिल, विनय सतीशेर सङ्गे गल्प करितेछे।

सुचरिता कहिल, "बाबा वेरिये गेछेन, एखनइ आसबेन। मा आपनादेर सेइ अभिनयेर कविता मुखस्थ करावार जन्ये लावण्य ओ लीलाके निये मास्टार-मशायेर बाड़िते गेछेन—ललिता कोनोमतेइ गेल ना। तिनि बले गेछेन, आपनि एले आपनाके बसिये राखते—आपनार आज परीक्षा हबे।"

विनय जिज्ञासा करिल, "आपनि एर मध्ये नेइ ?"

सुचरिता कहिल, "सबाइ अभिनेता हले जगते दर्शक हबे के।"

वरदासुन्दरी सुचरिताके ए-सकल व्यापारे यथासम्भव बाद दिया चलितेन। ताइ ताहार गुणपना देखाइबार जन्य एवारओ डाक पड़े नाइ।

अन्य दिन एइ दुइ व्यक्ति एकत्र हइले कथार अभाव हइत ना। आज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उभय पक्षेइ एमन विघ्न घटियाछे ये कोनोमतेइ कथा जमिते चाहिल ना। सुचरिता गोरार प्रसङ्ग तुलिबे ना पण करिया आसियाछिल। विनयओ पूर्वेर मतो सहजे गोरार कथा तुलिते पारे ना। ताहाके ललिता एवं हयतो ए बाड़िर सकलेइ गोरार एकटि क्षुद्र उपग्रह बलिया मने करे, इहाइ कल्पना करिया गोरार कथा तुलिते से बाधा पाय।

अनेक दिन एमन हइयाछे, विनय आगे आसियाछे, गोरा ताहार परे आसियाछे—आजओ सेइरूप घटिते पारे इहाइ मने करिया सुचरिता येन एकप्रकार सचकित अवस्थाय रहिल। गोरा पाछे आसिया पड़े एइ ताहार एकटा भय छिल एवं पाछे ना आसे एइ आशङ्काओ ताहाके वेदना दितेछिल।

विनयेर सङ्गे छाड़ा-छाड़ा भावे दुइ-चारटा कथा हओयार पर सुचरिता आर-कोनो उपाय ना देखिया सतीशेर छबिर खाताखाना लइया सतीशेर सङ्गे सेइ सम्बन्धे आलोचना करिते लागिल। माझे माझे छबि साजाइबार त्रुटि धरिया निन्दा करिया सतीशके रागाइया तुलिल। सतीश अत्यन्त उत्तेजित हइया उच्चैःस्वरे वादानुवाद करिते लागिल। आर, विनय टेबिलेर उपर ताहार प्रत्याख्यात करबीगुच्छेर प्रति दृष्टिपात करिया लज्जाय ओ क्षोभे मने मने चिन्ता करिते लागिल ये, अन्तत भद्रतार खातिरेओ आमार एइ फुल कयटा ललितार लओया उचित छिल।

हठात् एकटा पायेर शब्दे चमकिया सुचरिता पिछन फिरिया चाहिया देखिल, हारानबाबु घरे प्रवेश करितेछेन। ताहार चमकटा अत्यन्त सुगोचर हओयाते सुचरितार मुख लाल हइया उठिल। हारानबाबु एकटा चौकिते बसिया कहिलेन, "कइ, आपनादेर गौरबाबु आसेन नि ?"

विनय हारानबाबुर एरूप अनावश्यक प्रश्ने विरक्त हइया कहिल, "केन, ताँके कोनो प्रयोजन आछे ?"

हारानबाबु कहिलेन, "आपनि आछेन अथच तिनि नेइ, ए तो प्राय देखा याय ना ; ताइ जिज्ञासा करछि।"

विनयेर मने बड़ो राग हइल—पाछे ताहा प्रकाश पाय एइजन्य संक्षेपे कहिल, "तिनि कलकाताय नेइ।"

हारान। प्रचारे गेछेन बुझि ?

विनयेर राग बाड़िया उठिल, कोनो जवाब करिल ना। सुचरिताओ कोनो कथा ना बलिया उठिया चलिया गेल। हारानबाबु द्रुतपदे सुचरितार अनुवर्तन करिलेन किन्तु ताहाके धरिया उठिते पारिलेन ना। हारानबाबु दूर हइते कहिलेन, "सुचरिता, एकटा कथा आछे।"

सुचरिता कहिल, "आज आमि भालो नेइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलिते बलितेइ ताहार शयनगृहे कपाट पड़िल।

एमन समय वरदासुन्दरी आसिया अभिनयेर पाला दिबार जन्य यखन विनयके आर-एकटा घरे डाकिया लइया गेलेन ताहार अनतिकाल परेइ अकस्मात् फुल-गुलिके आर सेइ टेबिलेर उपरे देखा याय नाइ। से-रात्रे ललिताओ वरदासुन्दरीर अभिनयेर आखड़ाय देखा दिल ना, एवं सुचरिता 'खृस्टेर अनुकरण' बइखानि कोलेर उपर मुड़िया घरेर बातिटाके एक कोणे आड़ाल करिया दिया अनेक रात पर्यन्त द्वारेर बहिर्वर्ती अन्धकार रात्रिर दिके चाहिया बसिया रहिल। ताहार सम्मुखे येन एकटा कोन् अपरिचित अपूर्व देश मरीचिकार मतो देखा दियाछिल ; जीवनेर एतदिनकार समस्त जानाशुनार सङ्गे सेइ देशेर एकटा कोथाय एकान्त विच्छेद आछे ; सेइजन्य सेखानकार वातायने ये आलोगुलि ज्वलितेछे ताहा तिमिर-निशीथिनीर नक्षत्रमालार मतो एकटा सुदूरतार रहस्ये मनके भीत करितेछे ; अथच मने हइतेछे 'जीवन आमार तुच्छ, एतदिन याहा निश्चय बलिया जानियाछि ताहा संशयाकीर्ण एवं प्रत्यह याहा करिया आसितेछि ताहा अर्थहीन—ओइखानेइ हयतो ज्ञान सम्पूर्ण हइबे, कर्म महत् हइया उठिबे एवं जीवनेर सार्थकता लाभ करिते पारिब। ओइ अपूर्व अपरिचित भयंकर देशेर अज्ञात सिंहद्वारेर सम्मुखे के आमाके दाँड़ कराइया दिल। केन आमार हृदय एमन करिया काँपितेछे, केन आमार पा अग्रसर हइते गिया एमन करिया स्तब्ध हइया आछे !'

२३

अभिनयेर अभ्यास उपलक्ष्ये विनय प्रत्यहइ आसे। सुचरिता ताहार दिके एकबार चाहिया देखे, ताहार परे हातेर बइटार दिके मन देय अथवा निजेर घरे चलिया याय। विनयेर एकला आसार असम्पूर्णता प्रत्यहइ ताहाके आघात करे, किन्तु से कोनो प्रश्न करे ना। अथच दिनेर पर दिन एमनिभावे यतइ याइते लागिल गोरार विरुद्धे सुचरितार मनेर एकटा अभियोग प्रतिदिन येन तीव्रतर हइया उठिते लागिल। गोरा येन आसिबे बलिया प्रतिश्रुत हइयाछिल, एमनि एकटा भाव येन सेदिन छिल।

अवशेषे सुचरिता यखन शुनिल, गोरा नितान्तइ अकारणे किछुदिनेर जन्य कोथाय बेड़ाइते बाहिर हइयाछे ताहार ठिकाना नाइ, तखन कथाटाके से एकटा सामान्य संवादेर मतो उड़ाइया दिबार चेष्टा करिल—किन्तु, कथाटा ताहार मने बिँधियाइ रहिल। काज करिते करिते हठात् एइ कथाटा मने पड़े—अन्य-मनस्क हइया आछे, हठात् देखे, एइ कथाटाइ से मने मने भाबितेछिल।

गोरार सङ्गे सेदिनकार आलोचनार पर ताहार एरूप हठात् अन्तर्धान सुचरिता एकेबारेइ आशा करे नाइ। गोरार मतेर सङ्गे निजेर संस्कारेर एतदूर पार्थक्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थाका सत्त्वेओ सेदिन ताहार अन्तःकरणे विद्रोहेर उजान हाओया किछुमात्र छिल ना, सेदिन से गोरार मतगुलि स्पष्ट बुझितेछिल कि ना बला याय ना, किन्तु गोरा मानुषटाके से येन एकरकम करिया बुझियाछिल। गोरार मत याहाइ थाक-ना से-मते ये मानुषके क्षुद्र करे नाइ, अवज्ञार योग्य करे नाइ, वरञ्च ताहार चित्तेर बलिष्ठताके येन प्रत्यक्षगोचर करिया तुलियाछे—इहा सेदिन से प्रबलभावे अनुभव करियाछे। ए-सकल कथा आर-काहारओ मुखे से सह्य करितेइ पारित ना, राग हइत, से-लोकटाके मूढ़ मने करित, ताहाके शिक्षा दिया संशोधन करिबार जन्य मने चेष्टार उत्तेजना हइत; किन्तु, सेदिन गोरार सम्बन्धे ताहार किछुइ हइल ना; गोरार चरित्रेर सङ्गे, बुद्धिर तीक्ष्णतार सङ्गे, असन्दिग्ध विश्वासेर दृढ़तार सङ्गे एवं मेघमन्द्र कण्ठस्वरेर मर्मभेदी प्रबलतार सङ्गे ताहार कथागुलि मिलित हइया एकटा सजीव ओ सत्य आकार धारण करियाछिल। ए-समस्त मत सुचरिता निजे ग्रहण ना करिते पारे, किन्तु आर-केह यदि इहाके एमनभावे समस्त बुद्धि-विश्वास समस्त जीवन दिया ग्रहण करे तबे ताहाके धिक्कार दिबार किछुइ नाइ, एमन-कि विरुद्ध संस्कार अतिक्रम करियाओ ताहाके श्रद्धा करा याइते पारे—एइ भावटा सुचरिताके सेदिन सम्पूर्ण अधिकार करियाछिल। मनेर एइ अवस्थाटा सुचरितार पक्षे एकेबारे नूतन। मतेर पार्थक्य सम्बन्धे से अत्यन्त असहिष्णु छिल; परेशबाबुर एकप्रकार निर्लिप्त समाहित शान्त जीवनेर दृष्टान्त सत्त्वेओ से साम्प्रदायिकतार मध्ये बाल्यकाल हइते वेष्टित छिल बलिया मत जिनिसटाके अतिशय एकान्त करिया देखित; सेइदिनइ प्रथम से मानुषेर सङ्गे मतेर सङ्गे सम्मिलित करिया देखिया एकटा येन सजीव समग्र पदार्थेर रहस्यमय सत्ता अनुभव करिल। मानवसमाजके केवल आमार पक्ष एवं अन्य पक्ष एइ दुइ सादा कालो भागे अत्यन्त विच्छिन्न करिया देखिबार ये-भेददृष्टि ताहाइ सेदिन से भुलियाछिल एवं भिन्न मतेर मानुषके मुख्यभावे मानुष बलिया एमन करिया देखिते पाइयाछिल ये, भिन्न मतटा ताहार काछे गौण हइया गियाछिल।

सेदिन सुचरिता अनुभव करियाछिल ये ताहार सङ्गे आलाप करिते गोरा एकटा आनन्द बोध करितेछे। से कि केवलमात्र निजेर मत प्रकाश करिबारइ आनन्द। सेइ आनन्ददाने सुचरितारओ कि कोनो हात छिल ना। हयतो छिल ना। हयतो गोरार काछे कोनो मानुषेर कोनो मूल्य नाइ, से निजेर मत एवं उद्देश्य लइयाइ एकेबारे सकलेर निकट हइते सुदूर हइया आछे—मानुषरा ताहार काछे मत प्रयोग करिबार उपलक्ष्यमात्र।

सुचरिता ए कयदिन विशेष करिया उपासनाय मन दियाछिल। से येन पूर्वेर चेयेओ परेशबाबुके बेशि करिया आश्रय करिबार चेष्टा करितेछिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकदिन परेशबाबु ताँहार घरे एकला बसिया पड़ितेछिलेन, एमन समय सुचरिता ताँहार काछे चुप करिया आसिया बसिल।

परेशबाबु बइ टेबिलेर उपर राखिया जिज्ञासा करिलेन, "की, राधे।"

सुचरिता कहिल, "किछु ना।"

बलिया ताँहार टेबिलेर उपरे यदिच बइ-कागज प्रभृति गोछानोइ छिल तबु सेगुलिके नाड़िया-चाड़िया अन्यरकम करिया गुछाइते लागिल। एकटु परे बलिया उठिल, "बाबा, आगे तुमि आमाके येरकम पड़ाते एखन सेरकम करे पड़ाओ ना केन।"

परेशबाबु सस्नेहे एकटुखानि हासिया कहिलेन, "आमार छात्री ये आमार इस्कुल थेके पास करे बेरिये गेछे। एखन तो तुमि निजे पड़ेइ बुझते पार।"

सुचरिता कहिल, "ना, आमि किच्छु बुझते पारि ने, आमि आगेर मतो तोमार काछे पड़ब।"

परेशबाबु कहिलेन, "आच्छा, बेश, काल थेके पड़ाब।"

सुचरिता आबार किछुक्षण चुप करिया थाकिया हठात् बलिया उठिल, "बाबा, सेदिन विनयबाबु जातिभेदेर कथा अनेक बललेन, तुमि आमाके से-सम्बन्धे किछु बुझिये बल ना केन।"

परेशबाबु कहिलेन, "मा, तुमि तो जानइ, तोमरा आपनि भेबे बुझते चेष्टा करबे, आमार वा आर-कारओ मत केवल अभ्यस्त कथार मतो व्यवहार करबे ना, आमि बराबर तोमादेर सङ्गे सेइरकम करेइ व्यवहार करेछि। प्रश्नटा ठिकमतो मने जेगे ओठबार पूर्वेइ से-सम्बन्धे कोनो उपदेश दिते याओया आर क्षुधा पाबार पूर्वेइ खाबार खेते देओया एकइ, ताते केवल अरुचि एवं अपाक हय। तुमि आमाके यखनइ प्रश्न जिज्ञासा करबे, आमि या बुझि बलब।"

सुचरिता कहिल, "आमि तोमाके प्रश्नइ जिज्ञासा करछि, आमरा जातिभेदके निन्दा करि केन।"

परेशबाबु कहिलेन, "एकटा बिड़ाल पातेर काछे बसे भात खेले कोनो दोष हय ना, अथच एकजन मानुष से घरे प्रवेश करले भात फेले दिते हय, मानुषेर प्रति मानुषेर एमन अपमान एवं घृणा ये-जातिभेदे जन्माय सेटाके अधर्म ना बले की बलब। मानुषके यारा एमन भयानक अवज्ञा करते पारे तारा कखनोइ पृथिवीते बड़ो हते पारे ना, अन्येर अवज्ञा तादेर सइतेइ हबे।"

सुचरिता गोरार मुखे शोना कथार अनुसरण करिया कहिल, "एखनकार समाजे ये-विकार उपस्थित हयेछे ताते अनेक दोष थाकते पारे; से-दोष तो समाजेर सकल जिनिसेइ ढुकेछे, ताइ बले आसल जिनिसटाके दोष देओया याय कि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेशबाबु ताँहार स्वाभाविक शान्तस्वरे कहिलेन, "आसल जिनिसटा कोथाय आछे जानले बलते पारतुम। आमि चोखे देखते पाच्छि, आमादेर देशे मानुष मानुषके असह्य घृणा करछे एवं ताते आमादेर सकलके विच्छिन्न करे दिच्छे, एमन अवस्थाय एकटा काल्पनिक आसल जिनिसेर कथा चिन्ता करे मन सान्त्वना माने कइ।"

सुचरिता पुनश्च गोरादेर कथार प्रतिध्वनिस्वरूपे कहिल, "आच्छा, सकलके समदृष्टिते देखाइ तो आमादेर देशेर चरमतत्त्व छिल।"

परेशबाबु कहिलेन, "समदृष्टिते देखा ज्ञानेर कथा, हृदयेर कथा नय। समदृष्टिर मध्ये प्रेमओ नेइ, घृणाओ नेइ—समदृष्टि रागद्वेषेर अतीत। मानुषेर हृदय एमनतरो हृदयधर्मविहीन जायगाय स्थिर दाँड़िये थाकते पारे ना। सेइजन्ये आमादेर देशे एरकम साम्यतत्त्व थाका सत्त्वेओ नीचजातके देवालये पर्यन्त प्रवेश करते देओया हय ना। यदि देवतार क्षेत्रेओ आमादेर देशे साम्य ना थाके तबे दर्शनशास्त्रेर मध्ये से-तत्त्व थाकलेइ की आर ना थाकलेइ की।"

सुचरिता परेशबाबुर कथा अनेकक्षण चुप करिया बसिया मने मने बुझिते चेष्टा करिते लागिल। अवशेषे कहिल, "आच्छा, बाबा, तुमि विनयबाबुदेर ए-सब कथा बोझाबार चेष्टा कर ना केन।"

परेशबाबु एकटु हासिया कहिलेन, "विनयबाबुदेर बुद्धि कम बले ये ए-सब कथा बोझेन ना ता नय; वरञ्च ताँदेर बुद्धि बेशि बलेइ ताँरा बुझते चान ना, केवल बोझातेइ चान। ताँरा यखन धर्मेर दिक थेके अर्थात् सकलेर चेये बड़ो सत्येर दिक थेके ए-सब कथा अन्तरेर सङ्गे बुझते चाइबेन तखन तोमार बाबार बुद्धिर जन्ये ताँदेर अपेक्षा करे थाकते हबे ना। एखन ताँरा अन्य दिक थेके देखछेन, एखन आमार कथा ताँदेर कोनो काजेइ लागबे ना।"

गोरादेर कथा यदिओ सुचरिता श्रद्धार सहित शुनितेछिल, तबु ताहा ताहार संस्कारेर सहित विवाद बाधाइया ताहार अन्तरेर मध्ये वेदना दितेछिल। से शान्ति पाइतेछिल ना। आज परेशबाबुर सङ्गे कथा कहिया सेइ विरोध हइते से क्षणकालेर जन्य मुक्तिलाभ करिल। गोरा विनय वा आर-केहइ ये परेशबाबुर चेये कोनो विषये भालो बुझे, ए कथा सुचरिता कोनोमतेइ मने स्थान दिते चाय ना। परेशबाबुर सङ्गे याहार मतेर अनैक्य हइयाछे सुचरिता ताहार उपर राग ना करिया थाकिते पारे नाइ। सम्प्रति गोरार सङ्गे आलापेर पर गोरार कथा एकेबारे राग वा अवज्ञा करिया उड़ाइया दिते पारितेछिल ना बलियाइ सुचरिता एमन एकटा कष्ट बोध करितेछिल। सेइ कारणेइ आबार शिशुकालेर मतो करिया परेशबाबुके ताँहार छायाटिर न्याय नियत आश्रय करिबार जन्य ताहार हृदयेर मध्ये व्याकुलता उपस्थित हइयाछिल। चौकि हइते उठिया दरजार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काछ पर्यन्त गिया आबार फिरिया आसिया सुचरिता परेशबाबुर पिछने ताँहार चौकिर पिठेर उपर हात राखिया कहिल, "बाबा, आज विकाले आमाके निये उपासना कोरो।"

परेशबाबु कहिलेन, "आच्छा।"

ताहार परे निजेर शोबार घरे गिया दरजा बन्ध करिया बसिया सुचरिता गोरार कथाके एकेबारे अग्राह्य करिबार चेष्टा करिल। किन्तु, गोरार सेइ बुद्धि ओ विश्वासे उद्दीप्त मुख ताहार चोखेर सम्मुखे जागिया रहिल। ताहार मने हइते लागिल, गोरार कथा शुधु कथा नहे, से येन गोरा स्वयं ; से कथार आकृति आछे, गति आछे, प्राण आछे––ताहा विश्वासेर बले एवं स्वदेशप्रेमेर वेदनाय परिपूर्ण। ताहा मत नय ये ताहाके प्रतिवाद करियाइ चुकाइया देओया याइबे––ताहा ये सम्पूर्ण मानुष––एवं से-मानुष सामान्य मानुष नहे। ताहाके ठेलिया फेलिते ये हात ओठे ना। अत्यन्त एकटा द्वन्द्वेर मध्ये पड़िया सुचरितार कान्ना आसिते लागिल। केह ये ताहाके एत बड़ो एकटा द्विधार मध्ये फेलिया दिया सम्पूर्ण उदासीनेर मतो अनायासे दूरे चलिया याइते पारे एइ कथा मने करिया ताहार बुक फाटिया याइते चाहिल अथच कष्ट पाइतेछे बलियाओ धिक्कारेर सीमा रहिल ना।

२४

एइरूप स्थिर हइयाछिल ये इंरेज कवि ड्राइडेनेर रचित संगीत विषयक एकटि कविता विनय भावव्यक्तिर सहित आवृत्ति करिया याइबे एवं मेयेरा अभिनयमञ्चे उपयुक्त साजे सज्जित हइया काव्यलिखित व्यापारेर मूक अभिनय करिते थाकिबे। ए छाड़ा मेयेराओ इंरेजि कविता-आवृत्ति एवं गान प्रभृति करिबे।

वरदासुन्दरी विनयके अनेक भरसा दियाछिलेन ये, ताहाके ताँहारा कोनो प्रकारे तैरि करिया लइबेन। तिनि निजे इंरेजि अति सामान्यइ शिखियाछिलेन। किन्तु, ताँहार दलेर दुइ-एकजन पण्डितेर प्रति ताँहार निर्भर छिल।

किन्तु, यखन आखड़ा बसिल, विनय ताहार आवृत्तिर द्वारा वरदासुन्दरीर पण्डित-समाजके विस्मित करिया दिल। ताँहादेर मण्डलीबहिर्भूत एइ व्यक्तिके गड़िया लइबार सुख हइते वरदासुन्दरी वञ्चित हइलेन। पूर्वे याहारा विनयके विशेष केह बलिया खातिर करे नाइ ताहारा, विनय एमन भालो इंरेजि पड़े बलिया ताहाके मने मने श्रद्धा ना करिया थाकिते पारिल ना। एमन-कि, हारानबाबुओ ताँहार कागजे माझे माझे लिखिबार जन्य ताहाके अनुरोध करिलेन। एवं सुधीर ताहादेर छात्रसभाय माझे माझे इंरेजि वक्तृता करिबार जन्य विनयके पीड़ापीड़ि करिते आरम्भ करिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललितार अवस्थाटा भारि अद्‌भुतरकम हइल। विनयके ये कोनो साहाय्य काहाकेओ करिते हइल ना, सेजन्य से खुशिओ हइल आबार ताहाते ताहार मनेर मध्ये एकटा असन्तोषओ जन्मिल। विनय ये ताहादेर काहारओ अपेक्षा न्यून नहे, वरञ्च ताहादेर सकलेर चेये भालो, से ये मने मने निजेर श्रेष्ठत्व अनुभव करिबे एवं ताहादेर निकट हइते कोनोप्रकार शिक्षार प्रत्याशा करिबे ना, इहाते ताहाके आघात करिते लागिल। विनयेर सम्बन्धे से ये की चाय, केमनटा हइले ताहार मन बेश सहज अवस्था प्राप्त हय, ताहा से निजेइ बुझिते पारिल ना। माझे हइते ताहार अप्रसन्नता केवलइ छोटोखाटो विषये तीव्रभावे प्रकाश पाइया घुरिया फिरिया विनयकेइ लक्ष्य करिते लागिल। विनयेर प्रति इहा ये सुविचार नहे एवं शिष्टताओ नहे, ताहा से निजेइ बुझिते पारिल ; बुझिया से कष्ट पाइल एवं निजेके दमन करिते यथेष्ट चेष्टा करिल, किन्तु अकस्मात अति सामान्य उपलक्षेइ केन ये ताहार एकटा असंगत अन्तर्ज्वाला संयमेर शासन लङ्घन करिया बाहिर हइया पड़ित ताहा से बुझिते पारित ना। पूर्वे ये-व्यापारे योग दिबार जन्य से विनयके अविश्राम उत्तेजित करियाछे, एखन ताहा हइते निरस्त करिबार जन्यइ ताहाके अस्थिर करिया तुलिल। किन्तु, एखन समस्त आयोजनके विपर्यस्त करिया दिया विनय अकारणे पलातक हइबे की बलिया। समयओ आर अधिक नाइ ; एवं निजेर एकटा नूतन नैपुण्य आविष्कार करिया से निजेइ एइ काजे उत्साहित हइया उठियाछे।

अवशेषे ललिता वरदासुन्दरीके कहिल, "आमि एते थाकब ना।"

वरदासुन्दरी ताँहार मेजो मेयेके बेश चिनितेन, ताइ नितान्त शङ्कित हइया जिज्ञासा करिलेन, "केन।"

ललिता कहिल, "आमि ये पारि ने।"

वस्तुत, यखन हइते विनयके आर आनाड़ि बलिया गण्य करिवार उपाय छिल ना, तखन हइतेइ ललिता विनयेर सम्मुखे कोनो मतेइ आवृत्ति वा अभिनय अभ्यास करिते चाहित ना। से बलित, 'आमि आपनि आलादा अभ्यास करिब।' इहाते सकलेरइ अभ्यासे बाधा पड़ित किन्तु ललिताके किछुतेइ पारा गेल ना। अवशेषे, हार मानिया अभ्यासक्षेत्रे ललिताके बाद दियाइ काज चालाइते हइल।

किन्तु, यखन शेष अवस्थाय ललिता एकेबारेइ भङ्ग दिते चाहिल तखन वरदासुन्दरीर माथाय वज्राघात हइल। तिनि जानितेन ये, ताँहार द्वारा इहार प्रतिकार हइतेइ पारिबे ना। तखन तिनि परेशबाबुर शरणापन्न हइलेन। परेशबाबु सामान्य विषये कखनोइ ताँहार मेयेदेर इच्छा-अनिच्छाय हस्तक्षेप करितेन ना। किन्तु, म्याजिस्ट्रेटेर काछे ताँहारा प्रतिश्रुत हइयाछेन, सेइ अनुसारे से-पक्षओ आयोजन करियाछेन, समयओ अत्यन्त संकीर्ण, एइ-समस्त विवेचना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करिया परेशबाबु ललिताके डाकिया ताहार माथाय हात दिया कहिलेन, "ललिता, एखन तुमि छेड़े दिले ये अन्याय हबे।"

ललिता रुद्धरोदन कण्ठे कहिल, "बाबा, आमि ये पारि ने। आमार हय ना।"

परेश कहिलेन, "तुमि भालो ना पारले तोमार अपराध हबे ना, किन्तु ना करले अन्याय हबे।"

ललिता मुख निचु करिया दाँड़ाइया रहिल ; परेशबाबु कहिलेन, "मा, यखन तुमि भार नियेछ तखन तोमाके तो सम्पन्न करतेइ हबे। पाछे अहंकारे घा लागे बले आर तो पालाबार समय नेइ। लागुक ना घा, सेटाके अग्राह्य करेओ तोमाके कर्तव्य करते हबे। पारबे ना, मा ?"

ललिता पितार मुखेर दिके मुख तुलिया कहिल, "पारब।"

सेइदिन सन्ध्यावेलाय विशेष करिया विनयेर सम्मुखेइ समस्त संकोच सम्पूर्ण दूर करिया से येन एकटा अतिरिक्त बलेर सङ्गे, येन स्पर्धा करिया निजेर कर्तव्ये प्रवृत्त हइल। विनय एतदिन ताहार आवृत्ति शोने नाइ। आज शुनिया आश्चर्य हइल। एमन सुस्पष्ट सतेज उच्चारण——कोथाओ किछुमात्र जड़िमा नाइ, एवं भाव-प्रकाशेर मध्ये एमन एकटा निःसंशय बल, ये शुनिया विनय प्रत्याशातीत आनन्द लाभ करिल। एइ क ठस्वर ताहार काने अनेकक्षण धरिया बाजिते लागिल।

कविता-आवृत्तिते भालो आवृत्तिकारकेर सम्बन्धे श्रोतार मने एकटा विशेष मोह उत्पन्न करे। सेइ कवितार भावटि ताहार पाठकके महिमा दान करे—— सेटा येन ताहार कण्ठस्वर ताहार मुखश्री ताहार चरित्रेर सङ्गे जड़ित हइया देखा देय। फुल येमन गाछेर शाखाय तेमनि कविताटिओ आवृत्तिकारकेर मध्ये फुटिया उठिया ताहाके विशेष सम्पद दान करे।

ललिताओ विनयेर काछे कविताय मण्डित हइया उठिते लागिल। ललिता एतदिन ताहार तीव्रतार द्वारा विनयके अनवरत उत्तेजित करिया राखियाछिल। येखाने व्यथा सेइखानेइ केवलइ येमन हात पड़े, विनयओ तेमनि कयदिन ललितार उष्ण वाक्य एवं तीक्ष्ण हास्य छाड़ा आर-किछु भावितेइ पारे नाइ। केन ये ललिता एमन करिल, तेमन बलिल, इहाइ ताहाके बारम्बार आलोचना करिते हइयाछे ; ललितार असन्तोषेर रहस्य यतइ से भेद करिते ना पारियाछे ततइ ललितार चिन्ता ताहार मनके अधिकार करियाछे। हठात् भोरेर वेला घुम हइते जागिया से-कथा ताहार मने पड़ियाछे, परेशबाबुर बाड़िते आसिवार समय प्रत्यहइ ताहार मने वितर्क उपस्थित हइयाछे, आज ना जानि ललिताके किरूपभावे देखा याइबे। येदिन ललिता लेशमात्र प्रसन्नता प्रकाश करियाछे सेदिन विनय येन हाँप छाड़िया बाँचियाछे एवं एइ भावटि की करिले स्थायी हय सेइ चिन्ताइ करियाछे, किन्तु एमन कोनो उपाय खुँजिया पाय नाइ याहा ताहार आयत्ताधीन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ए-कयदिनेर एइ मानसिक आलोड़नेर पर ललितार काव्य-आवृत्तिर माधुर्य विनयके विशेष करिया एवं प्रबल करिया विचलित करिल। ताहार एत भालो लागिल ये, की बलिया प्रशंसा करिबे भाबिया पाइल ना। ललितार मुखेर सामने भालोमन्द कोनो कथाइ बलिते ताहार साहस हय ना—केनना, ताहाके भालो बलिलेइ ये से खुशि हइबे मनुष्यचरित्रेर एइ साधारण नियम ललितार सम्बन्धे ना खाटिते पारे—एमन-कि, साधारण नियम बलियाइ हयतो खाटिबे ना—एइ कारणे, विनय उच्छ्वसित हृदय लइया वरदासुन्दरीर निकट ललितार क्षमतार अजस्र प्रशंसा करिल। इहाते विनयेर विद्या ओ बुद्धिर प्रति वरदा-सुन्दरीर श्रद्धा आरओ दृढ़ हइल।

आर-एकटि आश्चर्य व्यापार देखा गेल। ललिता यखनइ निजे अनुभव करिल ताहार आवृत्ति ओ अभिनय अनिन्दनीय हइयाछे, सुगठित नौका ढेउयेर उपर दिया येमन करिया चलिया याय सेओ यखन तेमनि सुन्दर करिया ताहार कर्तव्येर दुरूहतार उपर दिया चलिया गेल, तखन हइते विनयेर सम्बन्धे ताहार तीव्रताओ दूर हइल। विनयके विमुख करिबार जन्य ताहार चेष्टामात्र रहिल ना। एइ काजटाते ताहार उत्साह बाड़िया उठिल एवं रिहार्सालि व्यापारे विनयेर सङ्गे ताहार योग घनिष्ठ हइल। एमन-कि, आवृत्ति अथवा अन्य-किछु सम्बन्धे विनयेर काछे उपदेश लइते ताहार किछुमात्र आपत्ति रहिल ना।

ललितार एइ परिवर्तने विनयेर बुकेर उपर हइते येन एकटा पाथरेर बोझा नामिया गेल। एत आनन्द हइल ये, यखन तखन आनन्दमयीर काछे गिया बालकेर मतो छेलेमानुषि करिते लागिल। सुचरितार काछे बसिया अनेक कथा बकिबार जन्य ताहार मने कथा जमिते थाकिल, किन्तु आजकाल सुचरितार सङ्गे ताहार देखाइ हय ना। सुयोग पाइलेइ ललितार सङ्गे आलाप करिते बसित, किन्तु ललितार काछे ताहाके विशेष सावधान हइयाइ कथा बलिते हइत; ललिता ये मने मने ताहाके एवं ताहार सकल कथाके तीक्ष्णभावे विचार करे, इहा जानित बलिया ललितार सम्मुखे ताहार कथार स्रोते स्वाभाविक वेग थाकित ना। ललिता माझे माझे बलित, "आपनि येन बइ पड़े एसे कथा बलछेन, एमन करे बलेन केन।"

विनय उत्तर करित, "आमि ये एत वयस पर्यन्त केवल बइ पड़ेइ एसेछि, सेइजन्य मनटा छापार बइयेर मतो हये गेछे।"

ललिता बलित, "आपनि खुब भालो करे बलबार चेष्टा करबेन ना—निजेर कथाटा ठिक करे बले याबेन। आपनि एमन चमत्कार करे बलेन ये आमार सन्देह हय, आपनि आर-कारओ कथा भेबे साजिये बलछेन।"

एइ कारणे, स्वाभाविक क्षमतावशत एकटा कथा बेश सुसज्जित हइया विनयेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मने आसिले ललिताके बलिबार समय चेष्टा करिया विनयके ताहा सादा करिया एवं स्वल्प करिया बलिते हइत। कोनो एकटा अलंकृत वाक्य ताहार मुखे हठात् आसिले से लज्जित हइया पड़ित।

ललितार मनेर भितर हइते एकटा येन अकारण मेघ काटिया गिया ताहार हृदय उज्ज्वल हइया उठिल। वरदासुन्दरीओ ताहार परिवर्तन देखिया आश्चर्य हइया गेलेन। से एखन पूर्वेर न्याय कथाय कथाय आपत्ति प्रकाश करिया विमुख हइया बसे ना, सकल काजे उत्साहेर सङ्गे योग देय। आगामी अभिनयेर साजसज्जा इत्यादि सकल विषये ताहार मने प्रत्यह नानाप्रकार नूतन नूतन कल्पनार उदय हइते लागिल, ताहाइ लइया से सकलके अस्थिर करिया तुलिल। ए-सम्बन्धे वरदासुन्दरीर उत्साह यतइ बेशि हउक, तिनि खरचेर कथाटाओ भाबेन—सेइजन्य, ललिता यखन अभिनय व्यापारे विमुख छिल तखनओ येमन ताँहार उत्कण्ठार कारण घटियाछिल एखन ताहार उत्साहित अवस्थातेओ तेमनि ताँहार संकट उपस्थित हइल। किन्तु, ललितार उत्तेजित कल्पनावृत्तिके आघात करितेओ साहस हय ना; ये-काजे से उत्साह बोध करे से-काजेर कोथाओ लेशमात्र असम्पूर्णता घटिले से एकेबारे दमिया याय, ताहाते योग देओयाइ ताहार पक्षे असम्भव हइया उठे।

ललिता ताहार मनेर एइ उच्छ्वसित अवस्थाय सुचरितार काछे अनेकबार व्यग्र हइया गियाछे। सुचरिता हासियाछे, कथा कहियाछे बटे, किन्तु ललिता ताहार मध्ये बारम्बार एमन एकटा बाधा अनुभव करियाछे ये से मने मने राग करिया फिरिया आसियाछे।

एकदिन से परेशबाबुर काछे गिया कहिल, "बाबा, सुचिदिदि ये कोणे बसे बसे बइ पड़बे आर आमरा अभिनय करते याब, से हबे ना। ओकेओ आमादेर सङ्गे योग दिते हबे।"

परेशबाबुओ कयदिन भावितेछिलेन, सुचरिता ताहार सङ्गिनीदेर निकट हइते केमन येन दूरवर्तिनी हइया पड़ितेछे। एरूप अवस्था ताहार चरित्रेर पक्षे स्वास्थ्यकर नहे बलिया तिनि आशङ्का करितेछिलेन। ललितार कथा शुनिया आज ताँहार मने हइल, आमोद-प्रमोदे सकलेर सङ्गे योग दिते ना पारिले सुचरितार एइरूप पार्थक्येर भाव प्रश्रय पाइया उठिबे। परेशबाबु ललिताके कहिलेन, "तोमार माके बलो गे।"

ललिता कहिल, "माके आमि बलब, किन्तु सुचिदिदिके राजि करबार भार तोमाके निते हबे।"

परेशबाबु यखन बलिलेन तखन सुचरिता आर आपत्ति करिते पारिल ना—से आपन कर्तव्य पालन करिते अग्रसर हइल।

10

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कोण हइते बाहिर हइया आसितेइ विनय ताहार सहित पूर्वेर न्याय आलाप जमाइबार चेष्टा करिल, किन्तु एइ कयदिने की एकटा हइयाछे, भालो करिया सुचरितार येन नागाल पाइल ना। ताहार मुखश्रीते, ताहार दृष्टिपाते एमन एकटा सुदूरत्व प्रकाश पाइतेछे ये ताहार काछे अग्रसर हइते संकोच उपस्थित हय। पूर्वेओ मेलामेशा ओ काजकर्मेर मध्ये सुचरितार एकटा निर्लिप्तता छिल; एखन सेइते अत्यन्त परिस्फुट हइया उठियाछे। से ये अभिनयकार्येर अभ्यासे योग दियाछिल ताहार मध्येओ ताहार स्वातन्त्र्य नष्ट हय नाइ। काजेर जन्य ताहाके यतटुकु दरकार सेइटुकु सारियाइ से चलिया याइत। सुचरितार एइरूप दूरत्व प्रथमे विनयके अत्यन्त आघात दिल। विनय मिशुक लोक, याहादेर सङ्गे तार सौहृद्य ताहादेर निकट हइते कोनोप्रकार बाधा पाइले विनयेर पक्षे ताहा अत्यन्त कठिन हय। एइ परिवारे सुचरितार निकट हइतेइ एतदिन से विशेषभावे समादर लाभ करिया आसियाछे, एखन हठात् बिना कारणे प्रतिहत हइया बड़ोइ वेदना पाइल। किन्तु, यखन बुझिते पारिल, एइ एकइ कारणे सुचरितार प्रति ललितार मनेओ अभिमानेर उदय हइयाछे, तखन विनय सान्त्वना-लाभ करिल एवं ललितार सहित ताहार सम्बन्ध आरओ घनिष्ठ हइल। ताहार निकट हइते सुचरिताके एड़ाइया चलिबार अवकाशओ से दिल ना, से आपनिइ सुचरितार निकट-संस्रव परित्याग करिल एवं एमनि करिया देखिते देखिते सुचरिता विनयेर निकट हइते बहुदूरे चलिया गेल।

एबारे कयदिन गोरा उपस्थित ना थाकाते विनय अत्यन्त अबाधे परेशबाबुर परिवारेर सङ्गे सकल रकम करिया मिशिया याइते पारियाछिल। विनयेर स्वभाव एइरूप अवारितभावे प्रकाश पाओयाते परेशबाबुर बाड़िर सकलेइ एकटा विशेष तृप्ति अनुभव करिल। विनयओ निजेर एइरूप बाधामुक्त स्वाभाविक अवस्था लाभ करिया येरूप आनन्द पाइल एमन आर कखनो पाय नाइ। ताहाके ये इँहादेर सकलेरइ भालो लागितेछे, इहाइ अनुभव करिया ताहार भालो लागाइबार शक्ति आरओ बाड़िया उठिल।

प्रकृतिर एइ प्रसारणेर समये, निजेके स्वतन्त्र शक्तिते अनुभव करिबार दिने, विनयेर काछ हइते सुचरिता दूरे चलिया गेल। एइ क्षति, एइ आघात, अन्य समय हइले दु:सह हइत, किन्तु एखन सेटा ये सहजेइ उत्तीर्ण हइया गेल। आश्चर्य एइ ये, ललिताओ सुचरितार भावान्तर उपलक्ष करिया ताहार प्रति पूर्वेर न्याय अभिमान प्रकाश करे नाइ। आवृत्ति ओ अभिनयेर उत्साहइ कि ताहाके सम्पूर्ण अधिकार करियाछिल।

एदिके सुचरिताके अभिनये योग दिते देखिया हठात् हारानबाबु ओ उत्साहित हइया उठिलेन। तिनि 'प्याराडाइस लस्ट्' हइते एक अंश आवृत्ति करिबेन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं ...डेनेर काव्य-आवृत्तिर भूमिकास्वरूपे संगीतेर मोहिनीशक्ति सम्बन्धे एकटि क्षुद्र वक्तृता करिबेन बलिया स्वयं प्रस्ताव करिलेन। इहाते वरदासुन्दरी मने मने अत्यन्त विरक्त हइलेन, ललिताओ सन्तुष्ट हइल ना। हारानबाबु निजे म्याजिस्ट्रेटेर सङ्गे देखा करिया एइ प्रस्ताव पूर्वेइ पाका करिया आसियाछिलेन। ललिता यखन बलिल व्यापारटाके एत सुदीर्घ करिया तुलिले म्याजिस्ट्रेट हयतो आपत्ति करिबेन, तखन हारानबाबु पकेट हइते म्याजिस्ट्रेटेर कृतज्ञताज्ञापक पत्र बाहिर करिया ललितार हाते दिया ताहाके निरुत्तर करिया दिलेन।

गोरा बिना काजे भ्रमणे बाहिर हइयाछे, कबे फिरिबे ताहा केह जानित ना। यदिओ सुचरिता ए-सम्बन्धे कोनो कथा मने स्थान दिबे ना भाबियाछिल, तबु प्रतिदिनइ ताहार मनेर भितरे आशा जन्मित ये, आज हयतो गोरा आसिबे। ए आशा किछुतेइ से मन हइते दमन करिते पारित ना। गोरार औदासीन्य एवं निजेर मनेर एइ अबाध्यताय यखन से निरतिशय पीड़ा बोध करितेछिल, यखन कोनोमते एइ जाल छिन्न करिया पलायन करिबार जन्य ताहार चित्त व्याकुल हइया उठियाछिल, एमन समय हारानबाबु एकदिन विशेषभावे ईश्वरेर नाम करिया सुचरितार सहित ताहार सम्बन्ध पाका करिबार जन्य परेशबाबुके पुनर्वार अनुरोध करिलेन। परेशबाबु कहिलेन, "एखनो तो विवाहेर विलम्ब आछे, एत शीघ्र आबद्ध हओया कि भालो।"

हारानबाबु कहिलेन, "विवाहेर पूर्वे किछुकाल एइ आबद्ध अवस्थाय यापन करा उभयेर मनेर परिणतिर पक्षे विशेष आवश्यक बले मने करि। प्रथम परिचय एवं विवाहेर माझखाने एइरकम एकटा आध्यात्मिक सम्बन्ध, याते सांसारिक दायित्व नेइ अथच बन्धन आछे—एटा विशेष उपकारी।"

परेशबाबु कहिलेन, "आच्छा, सुचरिताके जिज्ञासा करे देखि।"

हारानबाबु कहिलेन, "तिनि तो पूर्वेइ मत दियेछेन।"

हारानबाबुर प्रति सुचरितार मनेर भाव सम्बन्धे परेशबाबुर एखनो सन्देह छिल, ताइ तिनि निजे सुचरिताके डाकिया ताहार निकट हारानबाबुर प्रस्ताव उपस्थित करिलेन। सुचरिता निजेर द्विधाग्रस्त जीवनके एकटा कोथाओ चूड़ान्तभावे समर्पण करिते पारिले बाँचे—ताइ से एमन अविलम्बे एवं निश्चितभावे सम्मति दिल ये, परेशबाबुर समस्त सन्देह दूर हइया गेल। विवाहेर एत पूर्वे आबद्ध हओया कर्तव्य कि ना ताहा तिनि भालोरूप विवेचना करिबार जन्य सुचरिताके अनुरोध करिलेन—तत्सत्त्वेओ सुचरिता ए प्रस्तावे किछुमात्र आपत्ति करिल ना।

ब्राउन्‌लो साहेबेर निमन्त्रण सारिया आसिया एकटि विशेष दिने सकलके डाकिया भावी दम्पतिर सम्बन्ध पाका करा हइबे एइरूप स्थिर हइल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरितार क्षणकालेर जन्य मने हइल, ताहार मन येन राहुर ग्रास हइते मुक्त हइयाछे। से मने मने स्थिर करिल, हारानबाबुके विवाह करिया ब्राह्म-समाजेर काजे योग दिबार जन्य से मनके कठोरभावे प्रस्तुत करिबे। हारानबाबुर निकट हइतेइ से प्रत्यह खानिकटा करिया धर्मतत्त्व सम्बन्धे इंरेजि बइ पड़िया ताँहारइ निर्देशमतो चलिते थाकिबे, एइरूप संकल्प करिल। ताहार पक्षे याहा दुरूह, एमन कि अप्रिय, ताहाइ ग्रहण करिबार प्रतिज्ञा करिया से मनेर मध्ये खुब एकटा स्फीति अनुभव करिल।

हारानबाबुर सम्पादित इंरेजि कागज किछुकाल धरिया से पड़े नाइ। आज सेइ कागज छापा हइबामात्र ताहा हाते आसिया पड़िल। बोध करि हारानबाबु विशेष करियाइ पाठाइया दियाछेन।

सुचरिता कागजखानि घरे लइया गिया स्थिर हइया बसिया परम कर्तव्येर मतो ताहार प्रथम लाइन हइते पड़िते आरम्भ करिल। श्रद्धापूर्ण चित्ते निजेके छात्रीर मतो ज्ञान करिया एइ पत्रिका हइते उपदेश ग्रहण करिते लागिल।

जाहाज पाले चलिते चलिते हठात् पाहाड़े ठेकिया कात हइया पड़िल। एइ संख्याय 'सेकेले-वायुग्रस्त' नामक एकटि प्रबन्ध आछे, ताहाते, वर्तमान कालेर मध्ये वास करियाओ याहारा सेकालेर दिके मुख फिराइया आछे ताहादिगके आक्रमण करा हइयाछे। युक्तिगुलि ये असंगत ताहा नहे, वस्तुत एरूप युक्ति सुचरिता सन्धान करितेछिल, किन्तु प्रबन्धटि पड़िबामात्रइ से बुझिते पारिल ये एइ आक्रमणेर लक्ष्य गोरा। अथच ताहार नाम नाइ, अथवा ताहार लिखित कोनो प्रबन्धेर उल्लेख नाइ। बन्दुकेर प्रत्येक गुलिर द्वारा एकटा करिया मानुष मारिया सैनिक येमन खुशि हय, एइ प्रबन्धेर प्रत्येक वाक्ये तेमनि कोनो एकटि सजीव पदार्थ बिद्ध हइतेछे बलिया येन एकटा हिंसार आनन्द व्यक्त हइया उठियाछे।

एइ प्रबन्ध सुचरितार पक्षे असह्य हइया उठिल। इहार प्रत्येक युक्ति प्रतिवादेर द्वारा खण्ड खण्ड करिया फेलिते ताहार इच्छा हइल। से मने मने कहिल, गौरमोहनबाबु यदि इच्छा करेन तबे एइ प्रबन्धके तिनि धुलाय लुटाइया दिते पारेन। गोरार उज्ज्वल मुख ताहार चोखेर सामने ज्योतिर्मय हइया जागिया उठिल एवं ताहार प्रबल कण्ठस्वर सुचरितार बुकेर भितर पर्यन्त ध्वनित हइया उठिल। सेइ मुखेर ओ वाक्येर असामान्यतार काछे एइ प्रबन्ध ओ प्रबन्धलेखकेर क्षुद्रता एमनइ तुच्छ हइया उठिल ये, सुचरिता कागजखानाके माटिते फेलिया दिल।

अनेक काल परे सुचरिता आपनि सेदिन विनयेर काछे आसिया बसिल एवं ताहाके कथाय कथाय बलिल, "आच्छा, आपनि ये बलेछिलेन ये-सब कागजे आपनादेर लेखा बेरियाछे आमाके पड़ते एने देबेन, कइ दिलेन ना?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय ए कथा बलिल ना ये इतिमध्ये सुचरितार भावान्तर देखिया से आपन प्रतिश्रुति पालन करिते साहस करे नाइ——से कहिल, "आमि सेगुलो एकत्र संग्रह करे रेखेछि, कालइ एने देब।"

विनय परदिन पुस्तिका ओ कागजेर एक पुँटलि आनिया सुचरिताके दिया गेल। सुचरिता सेगुलि हाते पाइया आर पड़िल ना, बाक्सेर मध्ये राखिया दिल। पड़िते अत्यन्त इच्छा करिल बलियाइ पड़िल ना। चित्तके कोनोमतेइ विक्षिप्त हइते दिबे ना, प्रतिज्ञा करिया निजेर विद्रोही चित्तके पुनर्वार हारानबाबुर शासनाधीने समर्पण करिया आर-एकबार से सान्त्वना अनुभव करिल।

२५

रविवार दिन सकाले आनन्दमयी पान साजितेछिलेन, शशिमुखी ताँहार पाशे बसिया सुपारि काटिया स्तूपाकार करितेछिल। एमन समय विनय आसिया घरे प्रवेश करितेइ शशिमुखी ताहार कोलेर आँचल हइते सुपारि फेलिया दिया ताड़ाताड़ि घर छाड़िया पलाइया गेल। आनन्दमयी एकटुखानि मुचकिया हासिलेन।

विनय सकलेरइ सङ्गे भाब करिया लइते पारित। शशिमुखीर सङ्गे एतदिन ताहार यथेष्ट हृद्यता छिल। उभय पक्षेइ परस्परेर प्रति खुब उपद्रव चलित। शशिमुखी विनयेर जुता लुकाइया राखिया ताहार निकट हइते गल्प आदाय करिबार उपाय बाहिर करियाछिल। विनय शशिमुखीर जीवनेर दुइ-एकटा सामान्य घटना अवलम्बन करिया ताहाते यथेष्ट रङ फलाइया दुइ-एकटा गल्प बानाइया राखियाछिल। ताहारइ अवतारणा करिले शशिमुखी बड़ोइ जब्द हइत। प्रथमे से वक्तार प्रति मिथ्याभाषणेर अपवाद दिया उच्चकण्ठे प्रतिवादेर चेष्टा करित; ताहाते हार मानिले घर छाड़िया पलायन करित। सेओ विनयेर जीवनचरित विकृत करिया पाल्टा गल्प बानाइबार चेष्टा करियाछे——किन्तु, रचनाशक्तिते से विनयेर समकक्ष ना हओयाते ए-सम्बन्धे बड़ो-एकटा सफलता लाभ करिते पारे नाइ।

याहा हउक, विनय ए बाड़िते आसिलेइ सब काज फेलिया शशिमुखी ताहार सङ्गे गोलमाल करिबार जन्य छुटिया आसित। एक-एकदिन एत उत्पात करित ये आनन्दमयी ताहाके भत्र्सना करितेन; किन्तु दोष तो ताहार एकलार छिल ना, विनय ताहाके एमनि उत्तेजित करिया तुलित ये, आत्मसम्वरण करा ताहार पक्षे असम्भव हइत। सेइ शशिमुखी आज यखन विनयके देखिया ताड़ाताड़ि घर छाड़िया पलाइया गेल तखन आनन्दमयी हासिलेन, किन्तु से-हासि सुखेर हासि नहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनयकेओ एइ क्षुद्र घटनाय एमन आघात करिल ये, से किछुक्षणेर जन्य चुप करिया बसिया रहिल। विनयेर पक्षे शशिमुखीके विवाह करा ये कतखानि असंगत, ताहा एइरूप छोटोखाटो व्यापारेइ फुटिया उठे। विनय यखन सम्मति दियाछिल तखन से केवल गोरार सङ्गे ताहार बन्धुत्वेर कथाइ चिन्ता करियाछिल, व्यापारटाके कल्पनार द्वारा अनुभव करे नाइ। ता छाड़ा, आमादेर देशे विवाहटा ये प्रधानत व्यक्तिगत नहे, ताहा पारिवारिक, एइ कथा लइया विनय गौरव करिया कागजे अनेक प्रबन्ध लिखियाछे; निजेओ ए-सम्बन्धे कोनो व्यक्तिगत इच्छा वा वितृष्णाके मने स्थानओ देय नाइ। आज शशिमुखी ये विनयके देखिया आपनार वर बलिया जिब काटिया पलाइया गेल, इहाते शशिमुखीर सङ्गे ताहार भावी सम्बन्धेर एकटा चेहारा ताहार काछे देखा दिल। मुहूर्तेर मध्येइ ताहार समस्त अन्तःकरण विद्रोही हइया उठिल। गोरा ये ताहार प्रकृतिर विरुद्धे ताहाके कतदूर पर्यन्त लइया याइतेछिल, इहा मने करिया गोरार उपरे ताहार राग हइल, निजेर उपरे धिक्कार जन्मिल, एवं आनन्दमयी ये प्रथम हइतेइ एइ विवाहे निषेध करियाछेन ताहा स्मरण करिया ताँहार सूक्ष्मदर्शिताय ताँहार प्रति विनयेर मन विस्मय-मिश्रित भक्तिते पूर्ण हइया उठिल।

आनन्दमयी विनयेर मनेर भावटा बुझिलेन। तिनि अन्य दिके ताहार मनके फिराइबार जन्य बलिलेन, "काल गोरार चिठि पेयेछि, विनय।"

विनय एकटु अन्यमनस्क भावेइ कहिल, "की लिखेछे।"

आनन्दमयी कहिलेन, "निजेर खबर बड़ो-एकटा किछु देय नि। देशेर छोटोलोकदेर दुर्दशा देखे दुःख करे लिखेछे। घोष-पाड़ा ब'ले कोन्-एक ग्रामे म्याजिस्ट्रेट की-सब अन्याय करेछे तारइ वर्णना करेछे।"

गोरार प्रति एकटा विरुद्ध भावेर उत्तेजना हइतेइ असहिष्णु हइया विनय बलिया उठिल, "गोरार ओइ परेर दिकेइ दृष्टि, आर आमरा समाजेर बुकेर उपरे बसे प्रतिदिन ये-सब अत्याचार करछि ता केवलइ मार्जना करते हवे आर बलते हबे, एमन सत्कर्म आर किछु हते पारे ना!"

हठात् गोरार उपरे एइरूप दोषारोप करिया विनय येन अन्य पक्ष बलिया निजेके दाँड़ कराइल देखिया आनन्दमयी हासिलेन।

विनय कहिल, "मा, तुमि हासछ, मने करछ, हठात् विनय एमन राग करे उठल केन। केन राग हय तोमाके बलि। सुधीर सेदिन आमाके तादेर नैहाटि स्टेशने तार एक बन्धुर बागाने निये गियेछिल। आमरा शेयालदा छाड़तेइ वृष्टि आरम्भ हल। सोदपुर स्टेशने यखन गाड़ि थामल देखि, एकटि साहेबि-कापड़ परा बाङालि निजे माथाय दिव्यि छाता दिये तार स्त्रीके गाड़ि थेके नाबाले। स्त्रीर कोले एकटि शिशु छेले; गायेर मोटा चादरटा दिये सेइ छेलेटिके कोनोमते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ढेके खोला स्टेशनेर एक धारे दाँड़िये से-बेचारि शीते ओ लज्जाय जड़सड़ हये भिजते लागल—तार स्वामी जिनिसपत्र निये, छाता माथाय दिये हाँकडाक बाधिये दिले। आमार एक मुहूर्ते मने पड़े गेल, समस्त बांलादेशे कि रौद्रे कि वृष्टिते, कि भद्र कि अभद्र, कोणो स्त्रीलोकेर माथाय छाता नेइ। यखन देखलुम स्वामीटा निर्लज्जभावे माथाय छाता दियेछे आर तार स्त्री गाये चादर ढाका दिये नीरवे भिजछे, एइ व्यवहारटाके मने मनेओ निन्दा करछे ना एवं स्टेशनसुद्ध कोनो लोकेर मने एटा किछुमात्र अन्याय बले बोध हच्छे ना, तखन थेके आमि प्रतिज्ञा करेछि, आमरा स्त्रीलोकदेर अत्यन्त समादर करि, तादेर लक्ष्मी ब'ले देवी ब'ले जानि, ए-समस्त अलीक काव्यकथा आर कोनो दिन मुखेओ उच्चारण करब ना।

"आमरा देशके बलि मातृभूमि, किन्तु देशेर सेइ नारीमूर्तिर महिमा देशेर स्त्रीलोकेर मध्ये यदि प्रत्यक्ष ना करि, बुद्धिते, शक्तिते, कर्तव्यबोधेर औदार्ये आमादेर मेयेदेर यदि पूर्ण परिणत सतेज सरल भावे आमरा ना देखि, घरेर मध्ये दुर्बलता, संकीर्णता एवं अपरिणति यदि देखते पाइ, ता हले कखनोइ देशेर उपलब्धि आमादेर काछे उज्ज्वल हये उठबे ना।"

निजेर उत्साहे हठात् लज्जित हइया विनय स्वाभाविक सुरे कहिल, "मा, तुमि भावछ, विनय माझे माझे एइरकम बड़ो बड़ो कथाय वक्तृता करे थाके—आजओ ताके वक्तृताय पेयेछे। अभ्यासवशत आमार कथागुलो वक्तृतार मतो हये पड़े, आज ए आमार किन्तु वक्तृता नय। देशेर मेयेरा ये देशेर कतखानि, आगे आमि ता भालो करे बुझतेइ पारि नि, कखनो चिन्ताओ करि नि। मा, आर बेशि बकब ना। आमि बेशि कथा कइ ब'ले आमार कथाके केउ आमारइ मनेर कथा बले विश्वास करे ना। एवार थेके कथा कमाव।"

बलिया विनय आर विलम्ब ना करिया उत्साहदीप्त चित्ते प्रस्थान करिल।

आनन्दमयी महिमके डाकाइया बलिलेन, "बाबा, विनयेर सङ्गे आमादेर शशिमुखीर विवाह हबे ना।"

महिम। केन। तोमार अमत आछे?

आनन्दमयी। ए सम्बन्ध शेष पर्यन्त टिँकबे ना बलेइ आमार अमत, नइले अमत करब केन।

महिम। गोरा राजि हयेछे, विनयओ राजि, तबे टिँकबे ना केन। अवश्य, तुमि यदि मत ना दाओ ता हले विनय ए काज करबे ना, से आमि जानि।

आनन्दमयी। आमि विनयके तोमार चेये भालो जानि।

महिम। गोरार चेयेओ?

आनन्दमयी। हाँ, गोरार चेयेओ भालो जानि, सेइजन्येइ सकल दिक भेबे आमि मत दिते पारछि ने।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिम। आच्छा, गोरा फिरे आसुक।

आनन्दमयी। महिम, आमार कथा शोनो। ए निये यदि बेशि पीड़ापीड़ि कर ता हले शेषकाले एकटा गोलमाल हबे। आमार इच्छा नय ये, गोरा विनयके ए निये कोनो कथा बले।

"आच्छा, देखा याबे" बलिया महिम मुखे एकटा पान लइया राग करिया घर हइते चलिया गेल।

२६

गोरा यखन भ्रमणे बाहिर हइल तखन सङ्गे ताहार अविनाश मतिलाल वसन्त एवं रमापति एइ चारजन सङ्गी छिल। किन्तु, गोरार निर्दय उत्साहेर सङ्गे ताहारा ताल राखिते पारिल ना। अविनाश एवं वसन्त असुस्थ शरीरेर छुता करिया चार-पाँच दिनेर मध्येइ कलिकाताय फिरिया आसिल। नितान्तइ गोरार प्रति भक्तिवशत मतिलाल ओ रमापति ताहाके एकला फेलिया चलिया याइते पारिल ना। किन्तु, ताहादेर कष्टेर सीमा छिल ना; कारण, गोरा चलियाओ श्रान्त हय ना, आबार कोथाओ थिर हइया वास करितेओ ताहार विरक्ति नाइ। ग्रामेर ये-कोनो गृहस्थ गोराके ब्राह्मण बलिया भक्ति करिया घरे राखियाछे, ताहार बाड़िते आहार-व्यवहारेर यतइ असुविधा हउक दिनेर पर दिन से काटाइयाछे। ताहार आलाप शुनिबार जन्य समस्त ग्रामेर लोक ताहार चारिदिके समागत हइत, ताहाके छाड़िते चाहित ना।

भद्रसमाज, शिक्षितसमाज ओ कलिकाता-समाजेर बाहिरे आमादेर देशटा ये किरूप गोरा ताहा एइ प्रथम देखिल। एइ निभृत प्रकाण्ड ग्राम्य भारतवर्ष ये कत विच्छिन्न, कत संकीर्ण, कत दुर्बल, से निजेर शक्ति सम्बन्धे ये किरूप नितान्त अचेतन एवं मङ्गल सम्बन्धे सम्पूर्ण अज्ञ ओ उदासीन, प्रत्येक पाँच-सात क्रोशेर व्यवधाने ताहार सामाजिक पार्थक्य ये किरूप एकान्त, पृथिवीर वृहत् कर्मक्षेत्रे चलिबार पक्षे से ये कतइ स्वरचित ओ काल्पनिक बाधाय प्रतिहत, तुच्छताके ये से कतइ बड़ो करिया जान एवं संस्कार-मात्रेइ ये ताहार काछे किरूप निश्चलभावे कठिन, ताहार मन ये कतइ सुप्त, प्राण ये कतइ स्वल्प, चेष्टा ये कतइ क्षीण——ताहा गोरा ग्रामवासीदेर मध्ये एमन करिया वास ना करिले कोनोमतेइ कल्पना करिते पारित ना। गोरा ग्रामे वास करिबार समय एकटा पाड़ाय आगुन लागियाछिल। त बड़ो एकटा संकटेओ सकले दलबद्ध हइया प्राणपण चेष्टाय विपदेर विरुद्धे काज करिबार शक्ति ये ताहादेर कत अल्प ताहा देखिया गोरा आश्चर्य हइया गेल। सकलेइ गोलमाल दौड़ादौड़ि कान्नाकाटि करिते लागिल, किन्तु विधिवद्ध-भावे किछुइ करिते पारिल ना। से-पाड़ार निकटे जलाशय छिल ना; मेयेरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूर हइते जल वहिया आनिया घरेर काज चालाय, अथच प्रति दिनेरइ सेइ असुविधा लाघव करिबार जन्य घरे एकटा स्वल्पव्यये कूप खनन करिया राखे, संगतिपन्न लोकेरओ से-चिन्ताइ छिल ना। पूर्वेओ ए-पाड़ाय माझे माझे आगुन लागियाछे ; ताहाके दैवेर उत्पात बलियाइ सकले निरुद्यम हइया आछे, निकटे कोनोप्रकार जलेर व्यवस्था करिया राखिबार जन्य ताहादेर कोनोरूप चेष्टाइ जन्मे नाइ। पाड़ार नितान्त प्रयोजन सम्बन्धेओ याहादेर बोधशक्ति एमन आश्चर्य असाड़ ताहादेर काछे समस्त देशेर आलोचना करा गोरार काछे विद्रूप बलिया बोध हइल। सकलेर चेये गोरार काछे आश्चर्य एइ लागिल ये, मतिलाल ओ रमापति एइ-समस्त दृश्ये ओ घटनाय किछुमात्र विचलित हइत ना, वरञ्च गोरार क्षोभके ताहारा असंगत बलियाइ मने करित। छोटोलोकेरा तो एइरकम करियाइ थाके, ताहारा एमनि करियाइ भावे, एइ-सकल कष्टके ताहारा कष्टइ मने करे ना ; छोटोलोकदेर पक्षे एरूप छाड़ा आर ये किछु हइतेइ पारे, ताहाइ कल्पना करा ताहारा बाड़ाबाड़ि बलिया बोध करे। एइ अज्ञता जड़ता ओ दुःखेर बोझा ये की भयंकर प्रकाण्ड एवं एइ भार ये आमादेर शिक्षित-अशिक्षित धनी-दरिद्र सकलेरइ काँधेर उपर चापिया रहियाछे, प्रत्येककेइ अग्रसर हइते दितेछे ना, एइ कथा आज स्पष्ट करिया बुझिया गोरार चित्त रात्रिदिन क्लिष्ट हइते लागिल।

मतिलाल बाड़ि हइते पीड़ार संवाद पाइयाछे बलिया विदाय हइल; गोरार सङ्गे केवल रमापति अवशिष्ट रहिल।

उभये चलिते चलिते एक जायगाय नदीर चरे एक मुसलमानपाड़ाय आसिया उपस्थित हइल। आतिथ्यग्रहणेर प्रत्याशाय खुँजिते खुँजिते समस्त ग्रामेर मध्ये केवल एकटि घरमात्र हिन्दू नापितेर सन्धान पाओया गेल। दुइ ब्राह्मण ताहारइ घरे आश्रय लइते गिया देखिल, वृद्ध नापित ओ ताहार स्त्री एकटि मुसलमानेर छेलेके पालन करितेछे। रमापति अत्यन्त निष्ठावान, से तो व्याकुल हइया उठिल। गोरा नापितके ताहार अनाचारेर जन्य भर्त्सना कराते से कहिल "ठाकुर, आमरा बलि हरि, ओरा बले आल्ला, कोनो तफात नेइ।"

तखन रौद्र प्रखर हइयाछे, विस्तीर्ण बालुचर, नदी बहुदूर। रमापति पिपासाय क्लिष्ट हइया कहिल, "हिन्दुर पानीय जल पाइ कोथाय।"

नापितेर घरे एकटा काँचा कूप आछे—किन्तु, भ्रष्टाचारेर से-कूप हइते रमापति जल खाइते ना पारिया मुख विमर्ष करिया बसिया रहिल।

गोरा जिज्ञासा करिल, "ए छेलेर कि मा-बाप नाइ।"

नापित कहिल, "दुइ आछे, किन्तु ना थाकारइ मतो।"

गोरा कहिल, "से की रकम।"

नापित ये-इतिहासटा बलिल, ताहार मर्म एइ।—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये-जमिदारिते इहारा वास करितेछे ताहा नीलकर साहेबदेर इजारा। चरे नीलेर जमि लइया प्रजादेर सहित नीलकुठिर विरोधेर अन्त नाइ। अन्य-समस्त प्रजा वश मानियाछे, केवल एइ चर-घोषपुरेर प्रजादिगके साहेबरा शासन करिया बाध्य करिते पारे नाइ। एखानकार प्रजारा समस्तइ मुसलमान एवं इहादेर प्रधान फरुसर्दार काहाकेओ भय करे ना। नीलकुठिर उत्पात-उपलक्ष्ये दुइबार पुलिसके ठेङाइया से जेल खाटिया आसियाछे ; ताहार एमन अवस्था हइयाछे ये, ताहार घरे भात नाइ बलिलेइ हय, किन्तु से किछुतेइ दमिते जाने ना। एबारे नदीर काँचि चरे चाष दिया ए ग्रामेर लोकेरा किछु बोरो धान पाइयाछिल—आज मास खानेक हइल, नीलकुठिर म्यानेजार साहेब स्वयं आसिया लाठियालसह प्रजार धान लुठ करे। सेइ उत्पातेर समय फरुसर्दार साहेबेर डान हाते एमन एक लाठि बसाइयाछिल ये, डाक्तारखानाय लइया गिया ताहार सेइ हात काटिया फेलिते हइयाछिल। एतबड़ो दुःसाहसिक व्यापार ए अञ्चले आर कखनो हय नाइ। इहार पर हइते पुलिसेर उत्पात पाड़ाय पाड़ाय येन आगुनेर मतो लागियाछे—प्रजादेर काहारओ घरे किछु राखिल ना, घरेर मेयेदेर इज्जत आर थाके ना, फरुसर्दार एवं विस्तर लोकके हाजते राखियाछे, ग्रामेर बहुतर लोक पलातक हइयाछे। फरुर परिवार आज निरन्न ; एमन-कि ताहार परनेर एकखानि-मात्र कापड़ेर एमन दशा हइयाछे ये, घर हइते से बाहिर हइते पारित ना ; ताहार एकमात्र बालक-पुत्र तमिज नापितेर स्त्रीके ग्रामसम्पर्के मासि बलिया डाकित, से खाइते पाय ना देखिया नापितेर स्त्री ताहाके निजेर बाड़िते आनिया पालन करितेछे। नीलकुठिर एकटा काछारि क्रोश-देड़ेक तफाते, दारोगा एखनो ताहार दलबल लइया सेखाने आछे, तदन्त उपलक्षे ग्रामे ये कखन आसे एवं की करे ताहार ठिकाना नाइ। गतकल्य नापितेर प्रतिवेशी वृद्ध नाजिमेर घरे पुलिसेर आविर्भाव हइयाछिल। नाजिमेर एक युवक श्यालक, भिन्न एलेका हइते ताहार भगिनीर सङ्गे देखा करिते आसियाछिल—दारोगा नितान्तइ बिना कारणे 'बेटा तो जोयान कम नय। देखछ बेटार बुकेर छाति ?' बलिया हातेर लाठिटा दिया ताहाके एमन एकटा खोंचा मारिल ये, ताहार दाँत भाङिया रक्त पड़िते लागिल ; ताहार भगिनी एइ अत्याचार देखिया छुटिया आसितेइ सेइ वृद्धाके एक धाक्का मारिया फेलिया दिल। पूर्वे पुलिस ए पाड़ाय एमनतरो उपद्रव करिते साहस करित ना, किन्तु एखन पाड़ार बलिष्ठ युवापुरुषमात्रइ हय ग्रेफ्तार नय पलातक हइयाछे। सेइ पलातकदिगके सन्धानेर उपलक्ष करियाइ पुलिस ग्रामके एखनो शासन करितेछे। कबे ए ग्रह काटिया याइबे ताहा किछुइ बला याय ना।

गोरा तो उठिते चाय ना, ओदिके रमापतिर प्राण बाहिर हइतेछे। से नापितेर मुखेर इतिवृत्त शेष ना हइतेइ जिज्ञासा करिल, "हिन्दुर पाड़ा कत दूरे आछे ?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नापित कहिल, "क्रोश-देड़ेक दूरे ये नीलकुठिर काछारि, तार तहसिलदार ब्राह्मण, नाम माधव चाटुज्ये।"

गोरा जिज्ञासा करिल, "स्वभावटा ?"

नापित कहिल, "यमदूत बललेइ हय। एतबड़ो निर्दय अथच कौशली लोक आर देखा याय ना। एइ ये-क'दिन दारोगाके घरे पुषछे तार समस्त खरचा आमादेरइ काछ थेके आदाय करबे--ताते किछु मुनफाओ थाकबे।"

रमापति कहिल, "गौरबाबु, चलुन, आर तो पारा याय ना।"

विशेषत नापित-बउ यखन मुसलमान छेलेटिके ताहादेर प्राङ्गणेर कुयाटार काछे दाँड़ कराइया घटिते करिया जल तुलिया स्नान कराइया दिते लागिल तखन ताहार मने अत्यन्त राग हइते लागिल एवं ए-बाड़िते बसिया थाकिते ताहार प्रवृत्तिइ हइल ना।

गोरा याइबार समय नापितके जिज्ञासा करिल, "एइ उत्पातेर मध्ये तुमि ये ए पाड़ाय एखनो टिँके आछ ? आर-कोथाओ तोमार आत्मीय केउ नेइ ?"

नापित कहिल, "अनेक दिन आछि, एदेर उपर आमार माया पड़े गेछे। आमि हिन्दु नापित, आमार जोतजमा विशेष किछु नेइ बले कुठिर लोक आमार गाये हात देय ना। आज ए पाड़ाय पुरुष बलते आर बड़ो-केउ नेइ, आमि यदि याइ ता हले मेयेगलो भयेइ मारा याबे।"

गोरा कहिल, "आच्छा, खाओयादाओया करे आबार आमि आसब।"

दारुण क्षुधातृष्णार समय एइ नीलकुठिर उत्पातेर सुदीर्घ विवरणे रमापति ग्रामेर लोकेर उपरेइ चटिया गेल। बेटारा प्रबलेर विरुद्धे माथा तुलिते चाय, इहा गोंयार मुसलमानेर स्पर्धा ओ निर्बुद्धितार चरम बलिया ताहार काछे मने हइल। यथोचित शासनेर द्वारा इहादेर एइ औद्धत्य चूर्ण हइलेइ ये भालो हय, इहाते ताहार सन्देह छिल ना। एइप्रकारेर लक्ष्मीछाड़ा बेटादेर प्रति पुलिसेर उत्पात घटियाइ थाके, एवं घटितेइ बाध्य, एवं इहाराइ सेजन्य प्रधानत दायी, एइरूप ताहार धारणा। मनिबेर सङ्गे मिटमाट करिया लइलेइ तो हय, फेसाद बाधाइते याय केन, तेज एखन रहिल कोथाय। वस्तुत रमापतिर अन्तरेर सहानुभूति नीलकुठिर साहेबेर प्रतिइ छिल।

मध्याह्नरौद्रे उत्तप्त बालुर उपर दिया चलिते चलिते गोरा समस्त पथ एकटि कथाओ बलिल ना। अवशेषे गाछपालार भितर हइते काछारिबाड़िर चाला यखन किछुदूर हइते देखा गेल तखन हठात् गोरा आसिया कहिल, "रमापति, तुमि खेते याओ, आमि सेइ नापितेर बाड़ि चललुम।"

रमापति कहिल, "से की कथा। आपनि खाबेन ना ? चाटुज्येर ओखाने खाओयादाओया करे तार परे याबेन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "आमार कर्तव्य आमि करब, एखन तुमि खाओयादाओया सेरे कलकाताय चले येयो—ओइ घोषपुर चरे आमाके बोध हय किछुदिन थेके येते हबे—तुमि से पारबे ना।"

रमापतिर शरीर कण्टकित हइया उठिल। गोरार मत धर्मप्राण हिन्दु ओइ म्लेच्छेर घरे वास करिबार कथा कोन् मुखे उच्चारण करिल ताइ से भाबिया पाइल ना। गोरा कि पानभोजन परित्याग करिया प्रयोपवेशनेर संकल्प करियाछे, ताइ से भाबिते लागिल। किन्तु, तखन भाबिबार समय नहे, एक-एक मुहूर्त ताहार काछे एक-एक युग बलिया बोध हइतेछे; गोरार सङ्ग त्याग करिया कलिकाताय पलायनेर जन्य ताहाके अधिक अनुरोध करिते हइल ना। क्षण-कालेर जन्य रमापति चाहिया देखिल, गोरार सुदीर्घ देह एकटि खर्व छाया फेलिया मध्याह्नेर खररौद्रे जनशून्य तप्त बालुकार मध्य दिया एकाकी फिरिया चलियाछे।

क्षुधाय तृष्णाय गोराके अभिभूत करियाछिल, किन्तु दुर्वृत्त अन्यायकारी माधव चाटुज्येर अन्न खाइया तबे जात बाँचाइते हइबे, ए कथा यतइ चिन्ता करिते लागिल ततइ ताहार असह्य बोध हइल। ताहार मुख-चोख लाल ओ माथा गरम हइया मनेर मध्ये विषम एकटा विद्रोह उपस्थित हइल। से भाबिल, 'पवित्रताके बाहिरेर जिनिस करिया तुलिया भारतवर्षे आमरा ए कि भयंकर अधर्म करितेछि। उत्पात डाकिया आनिया मुसलमानके ये-लोक पीड़न करितेछे ताहारइ घरे आमार जात थाकिबे, आर उत्पात स्वीकार करिया मुसलमानेर छेलेके ये रक्षा करितेछे एवं समाजेर निन्दाओ वहन करिते प्रस्तुत हइयाछे ताहारइ घरे आमार जात नष्ट हइबे! याइ हउक, एइ आचारविचारेर भालोमन्देर कथा परे भाबिब, किन्तु एखन तो पारिलाम ना।'

नापित गोराके एकला फिरिते देखिया आश्चर्य हइया गेल। गोरा प्रथमे आसिया नापितेर घटि निजेर हाते भालो करिया माजिया कूप हइते जल तुलिया खाइल, एवं कहिल, "घरे यदि किछु चाल डाल थाके तो दाओ, आमि राँधिया खाइब।"

नापित व्यस्त हइया राँधिबार जोगाड़ करिया दिल। गोरा आहार सारिया कहिल, "आमि तोमार एखाने दु-चार दिन थाकब।"

नापित भय पाइया हात जोड़ करिया कहिल, "आपनि एइ अधमेर एखाने थाकबेन, तार चेये सौभाग्य आमार आर किछुइ नेइ। किन्तु, देखुन, आमादेर उपरे पुलिसेर दृष्टि पड़ेछे, आपनि थाकले की फेसाद घटबे ता बला याय ना।"

गोरा कहिल, "आमि एखाने उपस्थित थाकले पुलिस कोनो उत्पात करते साहस करबे ना। यदि करे आमि तोमादेर रक्षा करब।"

नापित कहिल, "दोहाइ आपनार, रक्षा करबार यदि चेष्टा करेन ता हले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमादेर आर रक्षा थाकबे ना। ओ-बेटारा भावबे, आमिइ चक्रान्त करे आपनाके डेके एने ओदेर विरुद्धे साक्षी जोगाड़ करे दियेछि। एतदिन कोनो-प्रकारे टिँके छिलुम, आर टिँकते पारब ना। आमाके सुद्ध यदि एखान थेके उठते हय ता हले ग्राम पय्माल हये याबे।"

गोरा चिरदिन शहरे थाकियाइ मानुष हइयाछे, नापित केन ये एत भय पाइतेछ ताहा ताहार पक्षे बुझिते पाराइ शक्त। से जानित, न्यायेर पक्षे जोर करिया दाँड़ाइलेइ अन्यायेर प्रतिकार हय। विपन्न ग्रामके असहाय राखिया चलिया याइते किछुतेइ ताहार कर्तव्यबुद्धि सम्मत हइल ना। तखन नापित ताहार पाये धरिया कहिल, "देखुन, आपनि ब्राह्मण, आमार पुण्यबले आमार बाड़िते अतिथि हयेछेन, आपनाके येते बलछि, एते आमार अपराध हच्छे। किन्तु, आमादेर प्रति आपनार दया आछे जेनेइ बलछि, आपनि आमार एइ बाड़िते बसे पुलिसेर अत्याचारे यदि कोनो बाधा देन ता हले आमाके बड़ोइ विपदे फेलबेन।"

नापितेर एइ भयके अमूलक कापुरुषता मने करिया गोरा किछु विरक्त हइयाइ अपराह्णे ताहार घर छाड़िया बाहिर हइल। एइ म्लेच्छाचारीर घरे आहारादि करियाछे मने करिया ताहार मनेर मध्ये एकटा अप्रसन्नताओ जन्मिते लागिल। क्लान्तशरीरे एवं उत्त्यक्तचित्ते सन्ध्यार समये से नीलकुठिर काछारिते आसिया उपस्थित हइल। आहार सारिया रमापति कलिकाताय रओना हइते किछुमात्र विलम्ब करे नाइ, ताइ सेखाने ताहार देखा पाओया गेल ना। माधव चाटुज्ये विशेष खातिर करिया गोराके आतिथ्ये आह्वान करिल। गोरा एकेबारेइ आगुन हइया उठिया कहिल, "आपनार एखाने आमि जलग्रहणओ करब ना।"

माधव विस्मित हइया कारण जिज्ञासा करितेइ गोरा ताहाके अन्यायकारी अत्याचारी बलिया कटूक्ति करिल, एवं आसन ग्रहण ना करिया दाँड़ाइया रहिल। दारोगा तक्तपोशे बसिया ताकिया आश्रय करिया गुड़गुड़िते तामाक टानितेछिल ; से खाड़ा हइया बसिल एवं रूढ़भावे जिज्ञासा करिल, "के हे तुमि। तोमार बाड़ि कोथाय।"

गोरा ताहार कोनो उत्तर ना करिया कहिल, "तुमि दारोगा बुझि ? तुमि घोषपुरेर चरे ये-समस्त उत्पात करेछ आमि तार समस्त खबर नियेछि। एखनो यदि सावधान ना हओ ता हले——"

दारोगा। फाँसि देबे ना कि। ताइ तो, लोकटा कम नय तो देखछि। भेबेछिलेम, भिक्षे निते एसेछे, ए ये चोख राङाय। ओरे तेओयारि।

माधव व्यस्त हइया उठिया दारोगार हात चापिया धरिया कहिल, "आरे कर की——भद्रलोक——अपमान कोरो ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दारोगा गरम हइया कहिल, "किसेर भद्रलोक। उनि ये तोमाके या खुशि ताइ बललेन, सेटा बुझि अपमान नय ?"

माधव कहिल, "या बलेछेन से तो मिथ्ये बलेन नि, ता राग करले चलबे की करे। नीलकुठिर साहेबेर गोमस्तागिरि करे खाइ, तार चेये आर तो किछु बलबार दरकार करे ना। राग कोरो ना, दादा--तुमि ये पुलिसेर दारोगा, तोमाके यमेर पेयादा बलले कि गाल हय। बाघ मानुष मेरे खाय, से बोष्टम नय, से तो जाना कथा। की करबे, ताके तो खेते हबे।"

बिना प्रयोजने माधवके राग प्रकाश करिते केह कोनोदिन देखे नाइ। कोन् मानुषेर द्वारा कखन की काज पाओया याय, अथवा वक्र हइले काहार द्वारा की अपकार हइते पारे, ताहा बला याय की। काहारओ अनिष्ट वा अपमान से खुब हिसाब करियाइ करित--राग करिया परके आघात करिबार क्षमतार बाजे खरच करित ना।

दारोगा तखन गोराके कहिल, "देखो बापु, आमरा एखाने सरकारेर काज करते एसेछि--एते यदि कोनो कथा बल वा गोलमाल कर ता हले मुशकिले पड़बे।"

गोरा कोनो कथा ना बलिया घर हइते बाहिर हइया गेल। माधव ताड़ाताड़ि ताहार पश्चाते गिया कहिल, "मशाय, या बलछेन से-कथाटा ठिक--आमादेर ए कसाइयेर काज--आर ओइ-ये बेटा दारोगा देखछेन ओर सङ्गे एक बिछानाय बसले पाप हय--ओके दिये कत ये दुष्कर्म करियेछि ता मुखे उच्चारण करतेओ पारि ने। आर बेशि दिन नय, बछर दुत्तिन काज करलेइ मेये-कटार बिये देबार सम्बल करे निये तार परे स्त्री-पुरुषे काशीवासी हब। आर भालो लागे ना, मशाय ; एक-एक समय इच्छा हय, गलाय दड़ि दिये मरि ! या होक, आज रात्रे याबेन कोथाय। एइखानेइ आहारादि करे शयन करबेन। ओ-दारोगा बेटार छाया माड़ातेओ हबे ना, आपनार जन्ये समस्त आलादा बन्दोबस्त करे देब।"

गोरार क्षुधा साधारणेर अपेक्षा अधिक--आज प्राते भालो करिया खाओयाओ हय नाइ--किन्तु ताहार सर्वशरीर येन ज्वलिते छिल--से कोनोमतेइ एखाने थाकिते पारिल ना ; कहिल, "आमार विशेष काज आछे।"

माधव कहिल, "ता रसुन, एकटा लण्ठन सङ्गे दिइ।"

गोरा ताहार कोनो जवाब ना करिया द्रुतपदे चलिया गेल।

माधव घरे फिरिया आसिया कहिल, "दादा, ओ-लोकटा सदरे गेल। एइबेला म्याजिस्ट्रेटेर काछे एकटा लोक पाठाओ।"

दारोगा कहिल, "केन, की करते हबे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माधव कहिल, "आर किछु नय, एकबार केवल जानिये आसुक, एकजन भद्रलोक कोथा थेके एसे साक्षी भाङाबार जन्ये चेष्टा करे बेड़ाच्छे।"

२७

म्याजिस्ट्रेट ब्राउन्लो साहेब दिवावसाने नदीर धारेर रास्ताय पदब्रजे बेड़ाइतेछेन, सङ्गे हारानबाबु रहियाछेन। किछु दूरे गाड़िते ताँहार मेम परेशबाबुर मेयेदेर लइया हाओया खाइते बाहिर हइयाछेन।

ब्राउन्लो साहेब गार्डन-पार्टिते माझे माझे बाङालि भद्रलोकदिगके ताँहार बाड़िते निमन्त्रण करितेन। जिलार एन्ट्रेन्स-स्कुले प्राइज-वितरण उपलक्षे तिनिइ सभापतिर काज करितेन। कोनो सम्पन्न लोकेर बाड़िते विवाहादि क्रियाकर्मे ताँहाके आह्वान करिले तिनि गृहकर्तार अभ्यर्थना ग्रहण करितेन। एमन-कि, यात्रागानेर मजलिसे आहूत हइया तिनि एकटा बड़ो केदाराय बसिया किछुक्षणेर जन्य धैर्यसहकारे गान शुनिते चेष्टा करितेन। ताँहार आदालतेर गवर्मेन्ट प्लीडारेर बाड़िते गत पूजार दिन यात्राय ये दुइ छोकरा भिस्ति ओ मेथ्‌रानी साजियाछिल, ताहादेर अभिनये तिनि विशेष आनन्द प्रकाश करियाछिलेन एवं ताँहार अनुरोधक्रमे एकाधिक बार ताहादेर ताँहार सम्मुखे पुनरावृत्त हइयाछिल।

ताँहार स्त्री मिशनरिर कन्या छिलेन। ताँहार बाड़िते माझे माझे मिशनरि मेयेदेर चा-पान-सभा बसित। जेलाय तिनि एकटि मेये-इस्कुल स्थापन करियाछिलेन, एवं याहाते से स्कुले छात्रीर अभाव ना हय सेजन्य तिनि यथेष्ट चेष्टा करितेन। परेशबाबुर बाड़िते मेयेदेर मध्ये विद्या-शिक्षार चर्चा देखिया तिनि ताहादिगके सर्वदा उत्साह दितेन; दूरे थाकिलेओ माझे माझे चिठिपत्र चालाइतेन ओ क्रिस्ट्मासेर समय ताहादिगके धर्मग्रन्थ उपहार पाठाइतेन।

मेला बसियाछे। तदुपलक्षे हारानबाबु सुधीर ओ विनयेर सङ्गे वरदासुन्दरी ओ मेयेरा सकलेइ आसियाछेन—ताँहादिगके इन्स्पेक्शन्-बांलाय स्थान देओया हइयाछे। परेशबाबु एइ-समस्त गोलमालेर मध्ये कोनोमतेइ थाकिते पारेन ना, एइजन्य तिनि एकला कलिकातातेइ रहिया गियाछेन। सुचरिता ताँहार सङ्गरक्षार जन्य ताँहार काछे थाकिते अनेक चेष्टा पाइयाछिल, किन्तु परेश म्याजिस्ट्रेटेर निमन्त्रणे कर्तव्यपालनेर जन्य सुचरिताके विशेष उपदेश दियाइ पाठाइया दिलेन। आगामी परश्व कमिशनर साहेब ओ सस्त्रीक छोटोलाटेर सम्मुखे म्याजिस्ट्रेटेर बाड़िते डिनारेर परे ईभ्‌निं पार्टिते परेशबाबुर मेयेदेर द्वारा अभिनय आवृत्ति प्रभृति हइबार कथा स्थिर हइयाछे। सेजन्य म्याजिस्ट्रेटेर अनेक इंरेज बन्धु जेला ओ कलिकाता हइते आहूत हइयाछेन। कयेकजन बाछा बाछा बाङालि भद्रलोकेरओ उपस्थित हइबार आयोजन हइयाछे;

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताँहादेर जन्य बागाने एकटि ताँबुते ब्राह्मण पाचक कर्तृक प्रस्तुत जलयोगेरओ व्यवस्था हइबे, एइरूप शुना याइतेछे।

हारानबाबु अति अल्पकालेर मध्येइ उच्चभावेर आलापे म्याजिस्ट्रेट साहेबके विशेष सन्तुष्ट करिते पारियाछिलेन। खृस्टान धर्मशास्त्रे हारानबाबुर असामान्य अभिज्ञता देखिया साहेब आश्चर्य हइया गियाछिलेन। एवं खृस्टानधर्मग्रहणे तिनि अल्प एकटुमात्र बाधा केन राखियाछेन, एइ प्रश्नओ हारानबाबुके जिज्ञासा करियाछिलेन।

आज अपराह्णे नदीतीरेर पथे हारानबाबुर सङ्गे तिनि ब्राह्मसमाजेर कार्य-प्रणाली ओ हिन्दुसमाजेर संस्कारसाधन सम्बन्धे गभीरभावे आलोचनाय नियुक्त छिलेन। एमन समय गोरा "गुड् ईभ्निं, स्यर्" बलिया ताँहार सम्मुखे आसिया दाँड़ाइल।

काल से म्याजिस्ट्रेटेर सहित देखा करिबार चेष्टा करिते गिया बुझियाछे ये, साहेबेर चौकाठ उत्तीर्ण हइते गेले ताँहार पेयादार माशुल योगाइते हय। एरूप दण्ड ओ अपमान स्वीकार करिते असम्मत हइया आज साहेबेर हाओया खाइबार अवकाशे से ताँहार सहित देखा करिते आसियाछे। एइ साक्षात्काले हारानबाबु ओ गोरा उभय पक्ष हइतेइ परिचयेर कोनो लक्षण प्रकाश हइल ना।

लोकटाके देखिया साहेब किछु विस्मित हइया गेलेन। एमन छय फुटेर चेये लम्बा, हाड़-मोटा, मजबुत मानुष तिनि बांलादेशे पूर्वे देखियाछेन बलिया मने करिते पारिलेन ना। इहार देहेर वर्णओ साधारण बाङालिर मतो नहे। गाये एकखाना खाकि रङेर पाञ्जाबि जामा, धुति मोटा ओ मलिन, हाते एकगाछा बाँशेर लाठि, चादरखानाके माथाय पागड़िर मतो बाँधियाछे।

गोरा म्याजिस्ट्रेटके कहिल, "आमि चर-घोषपुर हइते आसितेछि।"

म्याजिस्ट्रेट एकप्रकार विस्मयसूचक शिस दिलेन। घोषपुरेर तदन्तकार्ये एकजन विदेशी बाधा दिते आसियाछे, से-संवाद तिनि गतकल्यइ पाइयाछिलेन। तबे एइ लोकटाइ से। गोराके आपादमस्तक तीक्ष्णभावे एकबार निरीक्षण करिलेन एवं जिज्ञासा करिलेन, "तुमि कोन् जात।"

गोरा कहिल, "आमि बाङालि ब्राह्मण।"

साहेब कहिलेन, "ओ! खबरेर कागजेर सङ्गे तोमार योग आछे बुझि?"

गोरा कहिल, "ना।"

म्याजिस्ट्रेट कहिलेन, "तबे घोषपुर-चरे तुमि की करते एसेछ।"

गोरा कहिल, "भ्रमण करते करते सेखाने आश्रय नियेछिलुम। पुलिसेर अत्याचारे ग्रामेर दुर्गतिर चिह्न देखे एवं आरओ उपद्रवेर सम्भावना आछे जेने प्रतिकारेर जन्य आपनार काछे एसेछि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

म्याजिस्ट्रेट कहिलेन, "चर-घोषपुरेर लोकगुलो अत्यन्त बदमायेस, से-कथा तुमि जान ?"

गोरा कहिल, "तारा बदमायेस नय, तारा निर्भीक, स्वाधीनचेता—तारा अन्याय अत्याचार नीरवे सह्य करते पारे ना।"

म्याजिस्ट्रेट चटिया उठिलेन। तिनि मने मने ठिक करिलेन, नव्य बाङालि इतिहासेर पुँथि पड़िया कतकगुला बुलि शिखियाछे—इन्‌साफारेब्‌ल्।

"एखानकार अवस्था तुमि किछुइ जान ना" बलिया म्याजिस्ट्रेट गोराके खुब एकटा धमक दिलेन।

"आपनि एखानकार अवस्था आमार चेये अनेक कम जानेन", गोरा मेघमन्द्र स्वरे जवाब करिल।

म्याजिस्ट्रेट कहिलन, "आमि तोमाके सावधान करे दिच्छि, तुमि यदि घोषपुरेर व्यापार सम्बन्धे कोनोप्रकार हस्तक्षेप कर ता हले खुब सस्ताय निष्कृति पावे ना।"

गोरा कहिल, "आपनि यखन अत्याचारेर प्रतिविधान करबेन ना ब'ले मनस्थिर करेछेन एवं ग्रामेर लोकेर विरुद्धे आपनार धारणा यखन बद्धमूल, तखन आमार आर-कोनो उपाय नेइ, आमि ग्रामेर लोकदेर निजेर चेष्टाय पुलिसेर विरुद्धे दाँड़ाबार जन्ये उत्साहित करब।"

म्याजिस्ट्रेट चलिते चलिते हठात् थामिया दाँड़ाइया विद्युतेर मतो गोरार दिके फिरिया गर्जिया उठिलेन, "की। एत बड़ो स्पर्धा!"

गोरा द्वितीय कोनो कथा ना बलिया धीगगमने चलिया गेल।

म्याजिस्ट्रेट कहिलेन, "हारानबाबु, आपनादेर देशेर लोकदेर मध्ये ए-सकल किसेर लक्षण देखा याइतेछे।"

हारानबाबु कहिलेन, "लेखापड़ा तेमन गभीरभावे हइतेछे ना, विशेषत देशे आध्यात्मिक ओ चारित्रनैतिक शिक्षा एकेबारे नाइ बलियाइ एरूप घटितेछे। इंरेजि विद्यार येटा श्रेष्ठ अंश सेटा ग्रहण करिबार अधिकार इहादेर हय नाइ। भारतवर्षे इंरेजेर राजत्व ये ईश्वरेर विधान, एइ अकृतज्ञरा एखनो ताहा स्वीकार करिते चाहितेछे ना। ताहार एकमात्र कारण, इहारा केवल पड़ा मुखस्थ करियाछे, किन्तु इहादेर धर्मबोध नितान्तइ अपरिणत।"

म्याजिस्ट्रेट कहिलेन, "खृष्टके स्वीकार ना करिले भारतवर्षे एइ धर्मबोध कखनोइ पूर्णता लाभ करिबे ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "से एक हिसाबे सत्य।"

एइ बलिया खृष्टके स्वीकार करा सम्बन्धे एकजन खृस्टानेर सङ्गे हारानबाबुर मतेर कोन् अंशे कतटुकु ऐक्य एवं कोथाय अनैक्य ताहाइ लइया हारानबाबु म्याजिस्ट्रेटेर सहित सूक्ष्मभावे आलाप करिया ताँहाके एइ कथाप्रसङ्गे एतइ निविष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करिया राखियाछिलेन ये, मेमसाहेब यखन परेशबाबुर मेयेदिगके गाड़ि करिया डाक-बांलाय पौँछाइया दिया फिरिबार पथे ताँहार स्वामीके कहिलेन, "ह्यारि, घरे फिरिते हइबे", तिनि चमकिया उठिया घड़ि खुलिया कहिलेन, "बाइ जोभ, आटटा बाजिया कुड़ि मिनिट।"

गाड़िते उठिबार समय हारानबाबुर करनिपीड़न करिया विदायसम्भाषण-पूर्वक कहिलेन, "आपनार सहित आलाप करिया आमार सन्ध्या खुब सुखे काटियाछे।"

हारानबाबु डाक-बांलाय फिरिया आसिया म्याजिस्ट्रेटेर सहित ताँहार आलापेर विवरण विस्तारित करिया बलिलेन। किन्तु, गोरार सहित साक्षातेर कोनो उल्लेखमात्र करिलेन ना।

२८

कोनोप्रकार अपराध विचार ना करिया केवलमात्र ग्रामके शासन करिबार जन्य सातचल्लिश जन आसामिके हाजते देओया हइयाछे।

म्याजिस्ट्रेटेर सहित साक्षातेर पर गोरा उकिलेर सन्धाने बाहिर हइल। कोनो लोकेर काछे खबर पाइल, सातकड़ि हालदार एखानकार एकजन भालो उकिल। सातकड़िर बाड़ि याइतेइ से बलिया उठिल, "वाः, गोरा ये! तुमि एखाने!"

गोरा या मने करियाछिल ताइ बटे—सातकड़ि गोरार सहपाठि। गोरा कहिल, "चर-घोषपुरेर आसामिदिगके जामिने खालास करिया ताहादेर मकद्दमा चालाइते हइबे।"

सातकड़ि कहिल, "जामिन हबे के।"

गोरा कहिल, "आमि हब।"

सातकड़ि कहिल, "तुमि सातचल्लिश जनेर जामिन हबे, तोमार एमन की साध्य आछे।"

गोरा कहिल, "यदि मोक्तारेरा मिले जामिन हय तार फि आमि देब।"

सातकड़ि कहिल, "टाका कम लागबे ना।"

परदिन म्याजिस्ट्रेटेर एज्लासे जामिन-खालासेर दरखास्त हइल। म्याजिस्ट्रेट गतकल्यकार सेइ मलिनवस्त्रधारी पागड़ि-परा वीरमूर्तिर दिके एकबार कटाक्ष निक्षेप करिलेन एवं दरखास्त अग्राह्य करिया दिलेन। चौद्द वत्सरेर छेले हइते आशि वत्सरेर बुड़ा पर्यन्त हाजते पचिते लागिल।

गोरा इहादेर हइया लड़िबार जन्य सातकड़िके अनुरोध करिल।

सातकड़ि कहिल, "साक्षी पाबे कोथाय। यारा साक्षी हते पारत तारा सबाइ आसामि। तार परे एइ साहेब-मारा मामलार तदन्तेर चोटे ए अन्चलेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोक अतिष्ठ हये उठेछे। म्याजिस्ट्रेटेर धारणा हयेछे, भितरे भितरे भद्रलोकेर योग आछे ; हयतो वा आमाकेओ सन्देह करे, बला याय ना। इंरेजि कागजगुलोते क्रमागत लिखछे, देशि लोक यदि एरकम स्पर्धा पाय ता हले अरक्षित असहाय इंरेजरा आर मफस्वले बास करतेइ पारबे ना। इतिमध्ये देशेर लोक देशे टिँकते पारछे ना, एमनि हयेछे। अत्याचार हच्छे जानि, किन्तु किछुइ करबार जो नेइ।"

गोरा गर्जिया उठिया कहिल, "केन जो नेइ।"

सातकड़ि हासिया कहिल, "तुमि इस्कुले येमनटि छिले एखनो ठिक तेमनिटि आछ देखछि। जो नेइ माने, आमादेर घरे स्त्रीपुत्र आछे —रोज उपार्जन ना करले अनेकगुलो लोकके उपवास करते हय। परेर दाय निजेर घाड़े निये मरते राजि हय एमन लोक संसारे बेशि नेइ—विशेषत ये-देशे संसार जिनिसटि बड़ो छोटोखाटो जिनिस नय। यादेर उपर दशजन निर्भर करे तारा सेइ दशजन छाड़ा अन्य दशजनेर दिके ताकाबार अवकाशइ पाय ना।"

गोरा कहिल, "ता हले एदेर जन्ये किछुइ करबे ना? हाइकोर्टे मोशन करे यदि—"

सातकड़ि अधीर हइया कहिल, "आरे, इंरेज मेरेछे ये—सेटा देखछ ना! प्रत्येक इंरेजटिइ ये राजा—एकटा छोटो इंरेजके मारले ये सेटा एकटा छोटोरकम राजविद्रोह। येटाते किछु फल हबे ना सेटार जन्ये मिथ्ये चेष्टा करते गिये म्याजिस्ट्रेटेर कोपानले पड़ब, से आमार द्वारा हबे ना।"

कलिकाताय गिया सेखानकार कोनो उकिलेर साहाय्ये किछु सुविधा हय किना ताहाइ देखिबार जन्य परदिन साड़े दशटार गाड़िते रओना हइबार अभिप्राये गोरा यात्रा करियाछे, एमन समय बाधा पड़िया गेल।

एखानकार मेला उपलक्षेइ कलिकातार एकदल छात्रेर सहित एखानकार स्थानीय छात्रदलेर क्रिकेट-युद्ध स्थिर हइयाछे। हात पाकाइबार जन्य कलिकातार छेलेरा आपन दलेर मध्येइ खेलितेछिल ; क्रिकेटेर गोला लागिया एकटि छेलेर पाये गुरुतर आघात लागे। माठेर धारे एकटा बड़ो पुष्करिणी छिल—आहत छेलेटिके दुइटि छात्र धरिया सेइ पुष्करिणीर तीरे राखिया चादर छिँड़िया जले भिजाइया ताहार पा बाँधिया दितेछिल, एमन समय हठात् कोथा हइते एकटा पाहाराओयाला आसियाइ एकेबारे एकजन छात्रेर घाड़े हात दिया धाक्का मारिया ताहाके अकथ्य भाषाय गालि दिल। पुष्करिणीटि पानीय जलेर जन्य रिजार्भ करा, इहार जले नामा निषेध, कलिकातार छात्र ताहा जानित ना ; जानिलेओ अकस्मात् पाहाराओयालार काछे एरूप अपमान सह्य करा ताहादेर अभ्यास छिल ना, गायेओ जोर छिल, ताइ अपमानेर यथोचित प्रतिकार आरम्भ करिया दिल। एइ दृश्य देखिया चार-पाँचजन कन्स्टेब्ल् छुटिया आसिल। ठिक एमन समय-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टितेइ सेखाने गोरा आसिया उपस्थित। छात्रेरा गोराके चिनित—गोरा ताहादिगके लइया अनेकदिन क्रिकेट खेलाइयाछे। गोरा यखन देखिल छात्रदिगके मारिते मारिते धरिया लइया याइतेछे, से सहिते पारिल ना ; से कहिल, "खबरदार! मारिस ने।" पाहाराओयालार दल ताहाकेओ अश्राव्य गालि दितेइ गोरा घुषि ओ लाथि मारिया एमन एकटा काण्ड करिया तुलिल ये रास्ताय लोक जमिया गेल। एदिके देखिते देखिते छात्रेर दल जुटिया गेल। गोरार उत्साह ओ आदेश पाइया ताहारा पुलिसके आक्रमण करितेइ पाहाराओयालार दल रणे भङ्ग दिल। दर्शकरूपे रास्तार लोके अत्यन्त आमोद अनुभव करिल ; किन्तु, बला बाहुल्य, एइ तामाशा गोरार पक्षे नितान्त तामाशा हइल ना।

वेला यखन तिन-चारटे, डाकबांलाय विनय हारानबाबु एवं मेयेरा रिहार्सालि प्रवृत्त आछे, एमन समये विनयेर परिचित दुइजन छात्र आसिया खबर दिल, गोराके एवं कयजन छात्रके पुलिसे ग्रेफ्तार करिया लइया हाजते राखियाछे, आगामी काल म्याजिस्ट्रेटेर निकटे प्रथम एजलासेइ इहार विचार हइबे।

गोरा हाजते! ए कथा शुनिया हारानबाबु छाड़ा आर-सकलेइ एकेबारे चमकिया उठिल। विनय तखनइ छुटिया प्रथमे ताहादेर सहपाठी सातकड़ि हालदारेर निकट गिया ताहाके समस्त जानाइल एवं ताहाके सङ्गे लइया हाजते गेल।

सातकड़ि ताहार पक्षे ओकालति ओ ताहाके एखनि जामिने खालासेर चेष्टा करिबार प्रस्ताव करिल। गोरा बलिल, "ना, आमि उकिलओ राखब ना, आमाके जामिने खालासेरओ चेष्टा करते हबे ना।"

से की कथा! सातकड़ि विनयेर दिके फिरिया कहिल, "देखेछ! के बलबे, गोरा इस्कुल थेके बेरियेछे! ओर बुद्धिशुद्धि ठिक सेइरकमइ आछे।"

गोरा कहिल, "दैवात् आमार टाका आछे, बन्धु आछे ब'लेइ हाजत आर हातकड़ि थेके आमि खालास पाब, से आमि चाइ ने। आमादेर देशेर ये-धर्मनीति ताते आमरा जानि, सुविचार करार गरज राजार ; प्रजार प्रति अविचार राजारइ अधर्म। किन्तु, ए राज्ये उकिलेर कड़ि ना जोगाते पेरे प्रजा यदि हाजते पचे जेले मरे, राजा माथार उपरे थाकते न्यायविचार पयसा दिये किनते यदि सर्व्वस्वान्त हते हय, तबे एमन विचारेर जन्ये आमि सिकिपयसा खरच करते चाइ ने।"

सातकड़ि कहिल, "काजिर आमले ये घुष दितेइ माथा बिकिये येत।"

गोरा कहिल, "घुष देओया तो राजार विधान छिल ना। ये-काजि मन्द छिल से घुष नित, ए आमलेओ सेटा आछे। किन्तु, एखन राजद्वारे विचारेर जन्ये दाँड़ाते गेलेइ वादी होक प्रतिवादी होक, दोषी होक निर्दोष होक, प्रजाके चोखेर जल फेलतेइ हबे। ये-पक्ष निर्धन विचारेर लड़ाइये जित-हार दुइ तार पक्षे सर्वनाश। तार परे राजा यखन वादी आर आमार मतो लोक प्रतिवादी,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तखन ताँर पक्षेइ उकिल ब्यारिस्टार--आर आमि यदि जोटाते पारलुम तो भालो, नइले अदृष्टे या थाके ! विचारे यदि उकिलेर साहाय्येर प्रयोजन ना थाके तबे सरकारि उकिल आछे केन । यदि प्रयोजन थाके तो गवर्मेन्टेर विरुद्धपक्ष केन निजेर उकिल निजे जोटाते बाध्य हबे । ए की प्रजार सङ्गे शत्रुता । ए किरकमेर राजधर्म ।"

सातकड़ि कहिल, "भाइ, चट केन । सिभिलिजेशन सस्ता जिनिस नय । सूक्ष्म विचार करते गेले सूक्ष्म आइन करते हय—सूक्ष्म आइन करते गेलेइ आइनेर व्यवसायी ना हले काज चलेइ ना, व्यावसा चालाते गेलेइ केनाबेचा एसे पड़े—अतएव सभ्यतार आदालत आपनिइ विचार केनाबेचार हाट हये उठबेइ—यार टाका नेइ तार ठकबार सम्भावना थाकबेइ । तुमि राजा हले की करते बलो देखि ।"

गोरा कहिल, "यदि एमन आइन करतुम ये हाजार देड़-हाजार टाका वेतनेर विचारकेर बुद्धितेओ तार रहस्य भेद हओया सम्भव हत ना, ता हले हतभागा वादी प्रतिवादी उभय पक्षेर जन्य उकिल सरकारी खरचे नियुक्त करे दितुम । विचार भालो हओयार खरचा प्रजार घाड़े चापिये दिये, सुविचारेर गौरव करे पाठान-मोगलदेर गाल दितुम ना ।"

सातकड़ि कहिल, "बेश कथा, से-शुभदिन यखन आसे नि—तुमि यखन राजा हओ नि—सम्प्रति तुमि यखन सभ्य राजार आदालतेर आसामि, तखन तोमाके हय गाँटेर कड़ि खरच करते हबे नय उकिल-बन्धुर शरणापन्न हते हबे, नय तो तृतीय गतिटा सद्‌गति हबे ना ।"

गोरा जेद करिया कहिल, "कोनो चेष्टा ना करे ये गति हते पारे आमार सेइ गतिइ होक । ए राज्ये सम्पूर्ण निरुपायेर ये गति आमारओ सेइ गति ।"

विनय अनेक अनुनय करिल किन्तु गोरा ताहाते कर्णपातमात्र करिल ना । से विनयके जिज्ञासा करिल, "तुमि हठात् एखाने की करे उपस्थित हले ।"

विनयेर मुख ईषत् रक्ताभ हइया उठिल । गोरा यदि आज हाजते ना थाकित तबे विनय हयतो किछु विद्रोहेर स्वरेइ ताहार एखाने उपस्थितिर कारणटा बलिया दित । आज स्पष्ट उत्तरटा ताहार मुखे बाधिया गेल ; कहिल, "आमार कथा परे हबे—एखन तोमार—"

गोरा कहिल, "आमि तो आज राजार अतिथि । आमार जन्ये राजा स्वयं भावछेन, तोमादेर आर-कारओ भावते हबे ना ।"

विनय जानित गोराके टलानो सम्भव नय—अतएव, उकिल राखार चेष्टा छाड़िया दिते हइल । बलिल, "तुमि तो खेते एखाने पारबे ना जानि, बाइरे थेके किछु खाबार पाठाबार जोगाड़ करे दिइ ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा अधीर हइया कहिल, "विनय, केन तुमि वृथा चेष्टा करछ। बाइरे थेके आमि किछुइ चाइ ने। हाजते सकलेर भाग्ये या जोटे आमि तार चेये किछु बेशि चाइ ने।"

विनय व्यथित चित्ते डाक-बांलाय फिरिया आसिल। सुचरिता रास्तार दिकेर एकटा शोबार घरेर दरजा बन्ध करिया जानाला खुलिया विनयेर प्रत्यावर्तन प्रतीक्षा करिया छिल। कोनोमतेइ अन्य सकलेर सङ्ग एवं आलाप से सह्य करिते पारितेछिल ना।

सुचरिता यखन देखिल विनय चिन्तित विमर्षमुखे डाक-बांलार अभिमुखे आसितेछे तखन आशङ्काय ताहार बुकेर मध्ये तोलापाड़ा करिते लागिल। बहु चेष्टाय से निजेके शान्त करिया एकटा बइ हाते करिया बसिबार घरे आसिल। ललिता सेलाइ भालोबासे ना किन्तु से आज चुप करिया कोणे बसिया सेलाइ करितेछिल; लावण्य सुधीरके लइया इंरेजि बानानेर खेला खेलितेछिल, लीला छिल दर्शक; हारानबाबु वरदासुन्दरीर सङ्गे आगामी कल्यकार उत्सवेर कथा आलोचना करितेछिलेन।

आज प्रातःकाले पुलिसेर सङ्गे गोरार विरोधेर इतिहास विनय समस्त विवृत करिया बलिल। सुचरिता स्तब्ध हइया बसिया रहिल; ललितार कोल हइते सेलाइ पड़िया गेल एवं मुख लाल हइया उठिल।

वरदासुन्दरी कहिलेन, "आपनि किछु भाववेन ना, विनयबाबु —आज सन्ध्यावेलाय म्याजिस्ट्रेट साहेबेर मेमेर काछे गौरमोहनबाबुर जन्ये आमि निजे अनुरोध करब।"

विनय कहिल, "ना, आपनि ता करबेन ना—गोरा यदि शुनते पाय ता हले जीवने से आमाके आर क्षमा करबे ना।"

सुधीर कहिल, "ताँर डिफेन्सेर जन्ये तो कोनो बन्दोबस्त करते हवे।"

जामिन दिया खालासेर चेष्टा एवं उकिल-नियोग सम्बन्धे गोरा ये-सकल आपत्ति करियाछिल विनय ताहा समस्तइ बलिल; शुनिया हारानबाबु असहिष्णु हइया कहिलेन, "ए-समस्त बाड़ाबाड़ि।"

हारानबाबुर प्रति ललितार मनेर भाव याइ थाक्, से ए-पर्यन्त ताँहाके मान्य करिया आसियाछे, कखनो ताँहार सङ्गे तर्के योग देय नाइ—आज से तीव्रभावे माथा नाड़िया बलिया उठिल, "किछुमात्र बाड़ाबाड़ि नय। गौरबाबु या करेछेन से ठिक करेछेन। म्याजिस्ट्रेट आमादेर जब्द करबे आर आमरा निजेरा निजेके रक्षा करब! तादेर मोटा माइने जोगाबार जन्ये ट्याक्स जोगाते हवे, आबार तादेर हात थेके परित्राण पेते उकिल-फि गाँट थेके दिते हवे! एमन विचार पाओयार चेये जेले याओया भालो।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिताके हारानबाबु एतटुकु देखियाछेन—ताहार ये एकटा मतामत आछे से-कथा तिनि कोनोदिन कल्पनाओ करेन नाइ। सेइ ललितार मुखेर तीव्र भाषा शुनिया आश्चर्य हइया गेलेन ; ताहाके भर्त्सनार स्वरे कहिलेन, "तुमि ए-सब कथार की बोझ। यारा गोटाकतक बइ मुखस्थ करे पास करे सबे कलेज थेके बेरिये एसेछे, यादेर कोनो धर्म नेइ, धारणा नेइ, तादेर मुख थेके दायित्वहीन उन्मत्त प्रलाप शुने तोमादेर माथा घुरे याय।"

एइ बलिया गतकल्य सन्ध्यार समय गोरार सहित म्याजिस्ट्रेटेर साक्षात्-विवरण एवं से-सम्बन्धे ताँहार निजेर सङ्गे म्याजिस्ट्रेटेर आलापेर कथा विवृत करिलेन। चर-घोषपुरेर व्यापार विनयेर जाना छिल ना। शुनिया से शङ्कित हइया उठिल ; बुझिल, म्याजिस्ट्रेट गोराके सहजे क्षमा करिबे ना।

हारान ये-उद्देश्ये एइ गल्पटा बलिलेन ताहा सम्पूर्ण व्यर्थ हइया गेल। तिनि ये गोरार सहित ताँहार देखा हओया सम्बन्धे एतक्षण पर्यन्त एकेबारे नीरव छिलेन, ताहार भितरकार क्षुद्रता सुचरिताके आघात करिल एवं हारानबाबुर प्रत्येक कथार मध्ये गोरार प्रति ये एकटा व्यक्तिगत ईर्षा प्रकाश पाइल ताहाते गोरार एइ विपदेर दिने ताँहार प्रति उपस्थित प्रत्येकेरइ एकटा अश्रद्धा जन्माइया दिल। सुचरिता एतक्षण चुप करिया छिल ; की एकटा बलिबार जन्य ताहार आवेग उपस्थित हइल, किन्तु सेटा संवरण करिया से बइ खुलिया कम्पित हस्ते पाता उल्टाइते लागिल। ललिता उद्धतभावे कहिल, "म्याजिस्ट्रेटेर सहित हारानबाबुर मतेर यतइ मिल थाक्, घोषपुरेर व्यापारे गौरमोहनबाबुर महत्त्व प्रकाश पेयेछे।"

२९

आज छोटोलाट आसिबेन बलिया म्याजिस्ट्रेट ठिक साड़े दशटाय आदालते आसिया विचारकार्य सकाल-सकाल शेष करिया फेलिते चेष्टा करिलेन।

सातकड़िबाबु इस्कुलेर छात्रदेर पक्ष लइया सेइ उपलक्षे ताँहार बन्धुके बाँचाइबार चेष्टा करिलेन। तिनि गतिक देखिया बुझियाछिलेन ये, अपराध स्वीकार कराइ ए-स्थले भालो चाल। छेलेरा दुरन्त हइयाइ थाके, ताहारा अर्वाचीन निर्बोध, इत्यादि बलिया ताहादेर जन्य क्षमा प्रार्थना करिलेन। म्याजिस्ट्रेट छात्रदिगके जेले लइया गिया वयस ओ अपराधेर तारतम्य अनुसारे पाँच हइते पँचिश बेतेर आदेश करिया दिलेन। गोरार उकिल केह छिल ना। से निजेर मामला निजे चालाइबार उपलक्षे पुलिसेर अत्याचार सम्बन्धे किछु बलिबार चेष्टा करितेइ म्याजिस्ट्रेट ताहाके तीव्र तिरस्कार करिया ताहार मुख बन्ध करिया दिलेन ओ पुलिसेर कर्मे बाधा देओया अपराधे ताहाके एक मास सश्रम कारादण्ड दिलेन एवं एइरूप लघुदण्डके विशेष दया बलिया कीर्तन करिलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुधीर ओ विनय आदालते उपस्थित छिल। विनय गोरार मुखेर दिके चाहिते पारिल ना। ताहार येन निश्वास बन्ध हइबार उपक्रम हइल, से ताड़ाताड़ि आदालत-घर हइते बाहिर हइया आसिल। सुधीर ताहाके डाक-बांलाय फिरिया गिया स्नानाहारेर जन्य अनुरोध करिल—से शुनिल ना, माठेर रास्ता दिया चलिते चलिते गाछेर तलाय बसिया पड़िल। सुधीरके कहिल, "तुमि बांलाय फिरे याओ, किछुक्षण परे आमि याब।"

सुधीर चलिया गेल।

एमन करिया ये कतक्षण काटिया गेल ताहा से जानिते पारिल ना। सूर्य माथार उपर हइते पश्चिमेर दिके यखन हेलियाछे तखन एकटा गाड़ि ठिक ताहार सम्मुखे आसिया थामिल। विनय मुख तुलिया देखिल, सुधीर ओ सुचरिता गाड़ि हइते नामिया ताहार काछे आसितेछे। विनय ताड़ाताड़ि उठिया दाँड़ाइल। सुचरिता काछे आसिया स्नेहार्द्रस्वरे कहिल, "विनयबाबु, आसुन।"

विनयेर हठात् चैतन्य हइल ये, एइ दृश्ये रास्तार लोके कौतुक अनुभव करितेछे। से ताड़ाताड़ि गाड़िते उठिया पड़िल। समस्त पथ केह किछुइ कथा कहिते पारिल ना।

डाक-बांलाय पौंछिया विनय देखिल, सेखाने एकटा लड़ाइ चलितेछे। ललिता बाँकिया बसियाछे, से कोनोमतेइ आज म्याजिस्ट्रेटेर निमन्त्रणे योग दिबे ना। वरदासुन्दरी विषम संकटे पड़िया गियाछेन। हारानबाबु ललितार मतो बालिकार एइ असंगत विद्रोहे क्रोधे अस्थिर हइया उठियाछेन। तिनि बार बार बलितेछेन, आजकालकार छेलेमेयेदेर ए किरूप विकार घटियाछे—ताहारा डिसिप्लिन मानिते चाहे ना। केवल ये-से लोकेर संसर्गे याहा-ताहा आलोचना करियाइ एइरूप घटितेछे।

विनय आसितेइ ललिता कहिल, "विनयबाबु, आमाके माप करुन। आमि आपनार काछे भारि अपराध करेछि ; आपनि तखन या बलेछिलेन आमि किछुइ बुझते पारि नि ; आमरा बाइरेर अवस्था किछुइ जानि ने बलेइ एत भुल बुझि। पानुबाबु बलेन भारतवर्षे म्याजिस्ट्रेटेर एइ शासन विधातार विधान—ता यदि हय तबे एइ शासनके समस्त कायमनोवाक्ये अभिशाप देबार इच्छा जागिये देओयाओ सेइ विधातारइ विधान।"

हारानबाबु क्रुद्ध हइया बलिते लागिलेन, "ललिता, तुमि—"

ललिता हारानबाबुर दिक हइते फिरिया दाँड़ाइया कहिल, "चुप करुन। आपनाके आमि किछु बलछि ने। विनयबाबु, आपनि कारओ अनुरोध राखबेन ना। आज कोनोमतेइ अभिनय हतेइ पारे ना।"

वरदासुन्दरी ताड़ाताड़ि ललितार कथा चापा दिया कहिलेन, "ललिता, तुइ तो आच्छा मेये देखछि। विनयबाबुके आज स्नान करते, खेते दिबि ने ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेला देड़टा वेजे गेछे, ता जानिस ? देख् देखि, ओंर मुख शुकिये किरकम चेहारा हये गेछे।"

विनय कहिल, "एखाने आमरा सेइ म्याजिस्ट्रेटेर अतिथि—ए बाड़िते आमि स्नानाहार करते पारब ना।"

वरदासुन्दरी विनयके विस्तर मिनति करिया बुझाइते चेष्टा करिलेन। मेयेरा सकलेइ चुप करिया आछे देखिया तिनि रागिया बलिलेन, "तोदेर सब हल की। सुचि, तुमि विनयबाबुके एकटु बुझिये बलो-ना। आमरा कथा दियेछि—लोकजन सब डाका हयेछे—आजकेर दिनटा कोनोमते काटिये येते हबे—नइले ओरा की मने करबे बलो देखि। आर ये ओदेर सामने मुख देखाते पारब ना।"

सुचरिता चुप करिया मुख निचु करिया बसिया रहिल।

विनय अदूरे नदीते स्टीमारे चलिया गेल। एइ स्टीमार आज घण्टा दुयेकेर मध्येइ यात्री लइया कलिकाताय रओना हइबे—आगामी काल आटटा आन्दाज समये सेखाने पौंछिबे।

हारानबाबु उत्तेजित हइया उठिया विनय ओ गोराके निन्दा करिते आरम्भ करिलेन। सुचरिता ताड़ाताड़ि चौकि हइते उठिया पाशेर घरे प्रवेश करिया वेगे द्वार भेजाइया दिल। एकटु परेइ ललिता द्वार ठेलिया घरेर मध्ये प्रवेश करिल। देखिल, सुचरिता दुइ हाते मुख ढाकिया बिछानार उपर पड़िया आछे।

ललिता भितर हइते द्वार रुद्ध करिया दिया धीरेधीरे सुचरितार पाशे बसिया ताहार माथाय चुलेर मध्ये आङुल बुलाइया दिते लागिल। अनेकक्षण परे सुचरिता यखन शान्त हइल तखन जोर करिया ताहार मुख हइते बाहुर आवरण मुक्त करिया ताहार मुखेर काछे मुख लइया गिया काने काने बलिते लागिल, "दिदि आमरा एखान थेके कलकाताय फिरे याइ, आज तो म्याजिस्ट्रेटेर ओखाने येते पारब ना।"

सुचरिता अनेकक्षण ए कथार कोनो उत्तर करिल ना। ललिता यखन बार बार बलिते लागिल तखन से बिछानाय उठिया बसिल, —"से की करे हबे, भाइ। आमार तो एकेबारेइ आसबार इच्छा छिल ना—बाबा यखन पाठिये दियेछेन तखन ये जन्ये एसेछि ता ना सेरे येते पारव ना।"

ललिता कहिल, "बाबा तो ए-सब कथा जानेन ना—जानले कखनोइ आमादेर थाकते बलतेन ना।"

सुचरिता कहिल, "ता की करे जानब, भाइ।"

ललिता। दिदि, तुइ पारबि ? की करे याबि बल् देखि। तार परे आबार साजगोज करे स्टेजे दाँड़िये कविता आओड़ाते हबे। आमार तो जिब फेटे गिये रक्त पड़बे तबु कथा बेर हबे ना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "से तो जानि, बोन। किन्तु, नरकयन्त्रणाओ सइते हय। एखन आर कोनो उपाय नेइ। आजकेर दिन जीवने आर कखनो भुलते पारब ना।"

सुचरितार एइ बाध्यताय ललिता राग करिया घर हइते बाहिर हइया आसिल। माके आसिया कहिल, "मा, तोमरा याबे ना ?"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "तुइ कि पागल हयेछिस। रात्तिर नटार पर येते हबे।"

ललिता कहिल, "आमि कलकाताय याबार कथा बलछि।"

वरदासुन्दरी। शोनो एकबार मेयेर कथा शोनो।

ललिता सुधीरके कहिल, "सुधीरदा, तुमिओ एखाने थाकबे ?"

गोरार शास्ति सुधीरेर मनके विकल करिया दियाछिल, किन्तु बड़ो बड़ो साहेबेर सम्मुखे निजेर विद्या प्रकाश करिबार प्रलोभन से त्याग करिते पारे एमन साध्य ताहार छिल ना। से अव्यक्तस्वरे की एकटा बलिल--बोझा गेल से संकोच बोध करितेछे, किन्तु से थाकियाइ याइबे।

वरदासुन्दरी कहिलेन, "गोलमाले वेला हये गेल। आर देरि करले चलबे ना। एखन साड़े पाँचटा पर्यन्त बिछाना थेके केउ उठते पारबे ना—विश्राम करते हबे। नइले क्लान्त हये रात्रे मुख शुकिये याबे—देखते विश्री हबे।"

एइ बलिया तिनि जोर करिया सकलके शयन घरे पुरिया बिछानाय शोयाइया दिलेन। सकलेइ घुमाइया पड़िल, केवल सुचरितार घुम हइल ना एवं अन्य घरे ललिता ताहार बिछानार उपरे उठिया बसिया रहिल।

स्टीमारे घन घन बाँशि बाजिते लागिल।

स्टीमार यखन छाड़िबार उपक्रम करितेछे, खालासिरा सिँड़ि तुलिबार जन्य प्रस्तुत हइयाछे, एमन समय जाहाजेर डेकेर उपर हइते विनय देखिल, एकजन भद्रस्त्रीलोक जाहाजेर अभिमुखे द्रुतपदे आसितेछे। ताहार वेशभूषा प्रभृति देखिया ताहाके ललिता बलियाइ मने हइल, किन्तु विनय सहसा ताहा विश्वास करिते पारिल ना। अवशेषे ललिता निकटे आसिते आर सन्देह रहिल ना। एकबार मने करिल, ललिता ताहाके फिराइते आसियाछे, किन्तु ललिताइ तो म्याजिस्ट्रेटेर निमन्त्रणे योग देओयार विरुद्धे दाँड़ाइयाछिल। ललिता स्टीमारे उठिया पड़िल ; खालासि सिँड़ि तुलिया लइल। विनय शङ्कितचित्ते उपरेर डेक हइते निचे नामिया ललितार सम्मुखे आसिया उपस्थित हइल। ललिता कहिल, "आमाके उपरे निये चलुन।"

विनय विस्मित हइया कहिल, "जाहाज ये छेड़े दिच्छे।"

ललिता कहिल, "से आमि जानि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलिया विनयेर जन्य अपेक्षा ना करियाइ सम्मुखेर सिँड़ि बाहिया उपरेर तलाय उठिया गेल। स्टीमार बाँशि फुँकिते फुँकिते छाड़िया दिल।

विनय ललिताके फार्स्ट क्लासेर डेके केदाराय बसाइया नीरव प्रश्ने ताहार मुखेर दिके चाहिल।

ललिता कहिल, "आमि कलकाताय याब—आमि किछुतेइ थाकते पारलुम ना।"

विनय जिज्ञासा करिल, "ओंरा सकले?"

ललिता कहिल, "एखन पर्यन्त केउ जानेन ना। आमि चिठि रेखे एसेछि—पड़लेइ जानते पारबेन।"

ललितार एइ दु:साहसिकताय विनय स्तम्भित हइया गेल। संकोचेर सहित बलिते आरम्भ करिल, "किन्तु—"

ललिता ताड़ाताड़ि बाधा दिया कहिल, "जाहाज छेड़े दियेछे, एखन आर 'किन्तु' निये की हबे। मेयेमानुष हये जन्मेछि बलेइ ये समस्तइ चुप करे सह्य करते हबे, से आमि बुझि ने। आमादेर पक्षेओ न्याय-अन्याय सम्भव-असम्भव आछे। आजकेर निमन्त्रणे गिये अभिनय करार चेये आत्महत्या करा आमार पक्षे सहज।"

विनय बुझिल, या हइबार ता हइया गेछे, एखन ए काजेर भालोमन्द विचार करिया मनके पीड़ित करिया तोलार कोनो फल नाइ।

किछुक्षण चुप करिया थाकिया ललिता कहिल, "देखुन, आपनार बन्धु गौरमोहनबाबुर प्रति आमि मने मने बड़ो अविचार करेछिलुम। जानिने, प्रथम थेकेइ केन ताँके देखे, ताँर कथा शुने, आमार मनटा ताँर विरुद्ध हये गियेछिल। तिनि बड़ो बेशि जोर दिये कथा कइतेन, आर आपनारा सकलेइ ताते येन साय दिये येतेन—ताइ देखे आमार एकटा राग हते थाकत। आमार स्वभावइ ओइ—आमि यदि देखि केउ कथाय वा व्यवहारे जोर प्रकाश करछे, से आमि एकेबारेइ सइते पारि ने। किन्तु गौरमोहनबाबुर जोर केवल परेर उपरे नय, से तिनि निजेर उपरेओ खाटान—ए सत्यिकार जोर—एरकम मानुष आमि देखि नि।"

एमनि करिया ललिता बकिया याइते लागिल। केवल ये गोरा सम्बन्धे से अनुताप बोध करितेछिल बलियाइ ए-सकल कथा बलितेछिल ताहा नहे; आसले, झोंकेर माथाय ये-काजटा करिया फेलियाछे ताहार संकोच मनेर भितर हइते केवलइ माथा तुलिबार उपक्रम करितेछिल; काजटा हयतो भालो हय नाइ, एइ द्विधा जोर करिवार लक्षण देखा याइतेछिल; विनयेर सम्मुखे स्टीमारे एइरूप एकला बसिया थाका ये कतबड़ो कुण्ठार विषय ताहा से पूर्वे मनेओ करिते पारे नाइ; किन्तु, लज्जा प्रकाश हइलेइ जिनिसटा अत्यन्त लज्जार विषय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हइया उठिबे, एइजन्य से प्राणपणे बकिया याइते लागिल। विनयेर मुखे भालो करिया कथा जोगाइतेछिल ना। एक दिके गोरार दुःख ओ अपमान, अन्य दिके से ये एखाने म्याजिस्ट्रेटेर बाड़ि आमोद करिते आसियाछिल ताहार लज्जा, ताहार उपरे ललितार सम्बन्धे ताहार एइ अकस्मात् अवस्थासंकट, समस्त एकत्र मिश्रित हइया विनयके वाक्यहीन करिया दियाछिल।

पूर्वे हइले ललितार एइ दुःसाहसिकताय विनयेर मने तिरस्कारेर भाव उदय हइत—आज ताहा कोनोमतेइ हइल ना। एमन-कि, ताहार मने ये-विस्मयेर उदय हइयाछिल ताहार सङ्गे श्रद्धा मिश्रित छिल—इहाते आरओ एकटि आनन्द एइ छिल, ताहादेर समस्त दलेर मध्ये गोरार अपमानेर सामान्य प्रतिकारचेष्टा केवल विनय एवं ललिताइ करियाछे। एजन्य विनयके विशेष किछु दुःख पाइते हइबे ना, किन्तु ललिताके निजेर कर्मफले अनेक दिन धरिया विस्तर पीड़ा भोग करिते हइबे। अथच एइ ललिताके विनय बराबर गोरार विरुद्ध बलिया जानित। यतइ भाबिते लागिल ततइ ललितार एइ परिणामविचारहीन साहसे एवं अन्यायेर प्रति एकान्त घृणाय ताहार प्रति विनयेर भक्ति जन्मिते लागिल। केमन करिया की बलिया ये से एइ भक्ति प्रकाश करिबे ताहा भाबिया पाइल ना। विनय बार बार भाबिते लागिल, ललिता ये ताहाके एत परमुखापेक्षी साहसहीन बलिया घृणा प्रकाश करियाछे, से घृणा यथार्थ। से तो समस्त आत्मीयबन्धुर निन्दा-प्रशंसा सबले उपेक्षा करिया एमन करिया कोनो विषयेइ साहसिक आचरणेर द्वारा निजेर मत प्रकाश करिते पारित ना। से ये अनेक समयेइ गोराके कष्ट दिबार भये अथवा पाछे गोरा ताहाके दुर्बल मने करे एइ आशङ्काय निजेर स्वभावेर अनुसरण करे नाइ, अनेक समय सूक्ष्म युक्तिजाल विस्तार करिया गोरार मतके निजेर मत बलियाइ निजेके भुलाइबार चेष्टा करियाछे, आज ताहा मने मने स्वीकार करिया ललिताके स्वाधीन बुद्धिशक्तिगुणे निजेर चेये अनेक श्रेष्ठ बलिया मानिल। ललिताके से ये पूर्वे अनेकबार मने मने निन्दा करियाछे से-कथा स्मरण करिया ताहार लज्जा बोध हइल। एमन-कि, ललितार काछे ताहार क्षमा चाहिते इच्छा करिल—किन्तु, केमन करिया क्षमा चाहिबे भाबिया पाइल ना। ललितार कमनीय स्त्रीमूर्ति आपन अन्तरेर तेजे विनयेर चक्षे आज एमन एकटि महिमाय उद्दीप्त हइया देखा दिल ये, नारीर एइ अपूर्व परिचये विनय निजेर जीवनके सार्थक बोध करिल। से निजेर समस्त अहंकार, समस्त क्षुद्रताके एइ माधुर्य-मण्डित शक्तिर काछे आज एकेबारे विसर्जन दिल।

३०

ललिताके सङ्गे लइया विनय परेशबाबुर बासाय आसिया उपस्थित हइल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललितार सम्बन्धे विनयेर मनेर भावटा की ताहा स्टीमारे उठिबार पूर्वे पर्यन्त विनय निश्चित जानित ना। ललितार सङ्गे विरोधेइ ताहार मन व्यापृत छिल। केमन करिया एइ दुर्वश मेयेटिर सङ्गे कोनोमते सन्धिस्थापन हइते पारे, किछुकाल हइते इहाइ ताहार प्राय प्रति दिनेर चिन्तार विषय छिल। विनयेर जीवने स्त्रीमाधुर्येर निर्मल दीप्ति लइया सुचरिताइ प्रथम सन्ध्यातारादिर मतो उदित हइयाछिल। एइ आविर्भावेर अपरूप आनन्दे विनयेर प्रकृतिके परिपूर्णता दान करिया आछे, इहाइ विनय मने मने जानित। किन्तु, इतिमध्ये आरओ ये तारा उठियाछे एवं ज्योतिरुत्सवेर भूमिका करिया दिया प्रथम ताराटि ये कखन धीरे धीरे दिगन्तराले अवतरण करितेछिल, विनय ताहा स्पष्ट करिया बुझिते पारे नाइ।

विद्रोही ललिता येदिन स्टीमारे उठिया आसिल सेदिन विनयेर मने हइल, 'ललिता एवं आमि एकपक्ष हइया समस्त संसारेर प्रतिकूले येन खाड़ा हइयाछि।' एइ घटनाय ललिता आर-सकलके छाड़िया ताहारइ पाशे आसिया दाँड़ाइयाछे, ए कथा विनय किछुतेइ भुलिते पारिल ना। ये-कोनो कारणे ये-कोनो उपलक्षेइ हउक, ललितार पक्षे विनय आज अनेकेर मध्ये एकजन मात्र नहे—ललितार पार्श्वे सेइ एकाकी, सेइ एकमात्र ; समस्त आत्मीयस्वजन दूरे, सेइ निकटे। एइ नैकट्येर पुलकपूर्ण स्पन्दन विद्युद्गर्भ मेघेर मतो ताहार बुकेर मध्ये गुरुगुरु करिते लागिल। प्रथम श्रेणीर क्याबिने ललिता यखन घुमाइते गेल तखन विनय ताहार स्वस्थाने शुइते याइते पारिल ना—सेइ क्याबिनेर बाहिरे डेके से जुता खुलिया निःशब्दे पायचारि करिया बेड़ाइते लागिल। स्टीमारे ललितार प्रति कोनो उत्पात घटिबार विशेष सम्भावना छिल ना, किन्तु विनय ताहार अकस्मात् नूतनलब्ध अधिकारटिके पुरा अनुभव करिबार प्रलोभने अप्रयोजनेओ ना खाटाइया थाकिते पारिल ना।

रात्रि गभीर अन्धकारमय, मेघशून्य नभस्तल ताराय आच्छन्न, तीरे तरुश्रेणी निशीथ-आकाशेर कालिमाघन निविड़ भित्तिर मतो स्तब्ध हइया दाँड़ाइया आछे, निम्ने प्रशस्त नदीर प्रबल धारा निःशब्दे चलियाछे, इहार माझखाने ललिता निद्रित। आर किछु नय—एइ सुन्दर, एइ विश्वासपूर्ण निद्राटुकुकेइ ललिता आज विनयेर हाते समर्पण करिया दियाछे। एइ निद्राटुकुके विनय महामूल्य रत्नटिर मतो रक्षा करिबार भार लइयाछे। पितामाता भाइभगिनी केहइ नाइ, एकटि अपरिचित शय्यार उपर ललिता आपन सुन्दर देहखानि राखिया निश्चिन्त हइया घुमाइतेछे ; निश्वास प्रश्वास येन एइ निद्राकाव्यटुकुर छन्द परिमाप करिया अति शान्तभावे गतायात करितेछे ; सेइ निपुण कवरीर एकटि वेणीओ विस्रस्त हय नाइ, सेइ नारीहृदयेर कल्याणकोमलताय मण्डित हात दुइखानि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिपूर्ण विरामे विछानार उपरे पड़िया आछे ; कुसुमसुकुमार दुइटि पदतल ताहार समस्त रमणीय गतिचेष्टाके उत्सव-अवसानेर संगीतेर मतो स्तब्ध करिया विछानार उपर मेलिया राखियाछे—विश्रब्ध विश्रामेर एइ छबिखानि विनयेर कल्पनाके परिपूर्ण करिया तुलिल। शुक्तिर मध्ये मुक्ताटुकु येमन, ग्रहतारा-मण्डित निःशब्दतिमिरवेष्टित एइ आकाशमण्डलेर माझखानटिते ललितार एइ निद्राटुकु, एइ सुडोल सुन्दर सम्पूर्ण विश्रामटुकु, जगते तेमनि एकटिमात्र ऐश्वर्य बलिया आज विनयेर काछे प्रतिभात हइल। 'आमि जागिया आछि, आमि जागिया आछि'—एइ वाक्य विनयेर विस्फारित वक्षःकुहर हइते अभयशङ्ख-ध्वनिर मतो उठिया महाकाशेर अनिमेष जाग्रत पुरुषेर निःशब्दवाणीर सहित मिलित हइल।

एइ कृष्णपक्षेर रात्रिते आरओ एकटा कथा केवलइ विनयके आघात करिते-छिल—आज रात्रे गोरा जेलखानाय ! आज पर्यन्त विनय गोरार सकल सुख-दुःखेइ भाग लइया आसियाछे ; एइबार प्रथम ताहार अन्यथा घटिल। विनय जानित, गोरार मतो मानुषेर पक्षे जेलेर शासन किछुइ नहे ; किन्तु प्रथम हइते शेष पर्यन्त एइ व्यापारे विनयेर सङ्गे गोरार कोनो योग छिल ना—गोरार जीवनेर एइ एकटा प्रधान घटना एकेबारेइ विनयेर संस्रव-छाड़ा। दुइ बन्धुर जीवनेर धारा एइ-ये एक जायगाय विच्छिन्न हइयाछे—आबार यखन मिलिबे तखन कि एइ विच्छेदेर शून्यता पूरण हइते पारिबे। बन्धुत्वेर सम्पूर्णता कि एबार भङ्ग हय नाइ। जीवनेर एमन अखण्ड, एमन दुर्लभ बन्धुत्व ! आज एकइ रात्रे विनय ताहार एक दिकेर शून्यता एवं आर-एक दिकेर पूर्णताके एकसङ्गे अनुभव करिया जीवनेर सृजनप्रलयेर सन्धिकाले स्तब्ध हइया अन्धकारेर दिके ताकाइया रहिल।

गोरा ये भ्रमणे बाहिर हइयाछिल दैवक्रमेइ विनय ताहाते योग दिते पारे नाइ, अथवा गोरा ये जेले गियाछे दैवक्रमेइ सेइ कारादुःखेर भाग लओया विनयेर पक्षे असम्भव हइयाछे, ए कथा यदि सत्य हइत तबे इहाते बन्धुत्व क्षुण्ण हइते पारित ना। किन्तु, गोरा भ्रमणे बाहिर हइयाछिल एवं विनय अभिनय करिते-छिल, इहा आकस्मिक व्यापार नहे। विनयेर समस्त जीवनेर धारा एमन एकटा पथे आसिया पड़ियाछे याहा ताहादेर पूर्व-बन्धुत्वेर पथ नहे, सेइ कारणेइ एतदिन परे एइ बाह्य विच्छेदओ सम्भवपर हइयाछे। किन्तु, आज आर कोनो उपाय नाइ—सत्यके अस्वीकार करा आर चले ना ; गोरार सङ्गे अविच्छिन्न एक पथ अनन्यमने आश्रय करा विनयेर पक्षे आज आर सत्य नहे। किन्तु, गोरा ओ विनयेर चिरजीवनेर भालोबासा कि एइ पथभेदेर द्वाराइ भिन्न हइबे। एइ संशय विनयेर हृदये हृत्कम्प उपस्थित करिल। से जानित, गोरा ताहार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समस्त बन्धुत्व एवं समस्त कर्त्तव्यके एक लक्ष्यपथे ना टानिया चलिते पारे ना। प्रचण्ड गोरा! ताहार प्रबल इच्छा! जीवनेर सकल सम्बन्धेर द्वारा ताहार सेइ एक इच्छाकेइ महीयसी करिया से जययात्राय चलिबे--विधाता गोरार प्रकृतिते सेइ राजमहिमा अर्पण करियाछेन।

ठिका गाड़ि परेशबाबुर दरजार काछे आसिया दाँड़ाइल। नामिबार समय ललितार ये पा काँपिल एवं बाड़िते प्रवेश करिबार समय से ये जोर करिया निजेके एकटु शक्त करिया लइल, ताहा विनय स्पष्ट बुझिते पारिल। ललिता झोंकेर माथाय एबार ये-काजटा करिया फेलियाछे ताहार अपराध ये कतखानि ताहार ओजन से निजे किछुतेइ आन्दाज करिते पारितेछिल ना। ललिता जानित, परेशबाबु ताहाके एमन कोनो कथाइ बलिबेन ना याहाके ठिक भर्त्सना बला याइते पारे--किन्तु, सेइजन्यइ परेशबाबुर चुप करिया थाकाकेइ से सब-चेये भय करित।

ललितार एइ संकोचेर भाव लक्ष्य करिया विनय, एरूप स्थले ताहार की कर्तव्य ठिकटि भाविया पाइल ना। से सङ्गे थाकिले ललितार संकोचेर कारण अधिक हइबे कि ना ताहाइ परीक्षा करिबार जन्य से एकटु द्विधार स्वरे ललिताके कहिल, "तबे एखन याइ।"

ललिता ताड़ाताड़ि कहिल, "ना, चलुन, बाबार काछे चलुन।"

ललितार एइ व्यग्र अनुरोधे विनय मने मने आनन्दित हइया उठिल। बाड़िते पौंछिया दिबार पर हइतेइ ताहार ये कर्तव्य शेष हइया याय नाइ, एइ एकटा आकस्मिक व्यापारे ललितार सङ्गे ताहार जीवनेर ये एकटा विशेष ग्रन्थिबन्धन हइया गेछे--ताहाइ मने करिया विनय ललितार पार्श्वे येन एकटु विशेष जोरेर सङ्गे दाँड़ाइल। ताहार प्रति ललितार एइ निर्भर-कल्पना येन एकटि स्पर्शेर मतो ताहार समस्त शरीरे विद्युत् सञ्चार करिते लागिल। ताहार मने हइल, ललिता येन ताहार डान हात चापिया धरियाछे। ललितार सहित एइ सम्बन्धे ताहार पुरुषेर वक्ष भरिया उठिल। से मने मने भाबिल, परेशबाबु ललितार एइ असामाजिक हठकारिताय राग करिबेन, ललिताके भर्त्सना करिबेन, तखन विनय यथासम्भव समस्त दायित्व निजेर स्कन्धे लइबे--भर्त्सनार अंश असंकोचे ग्रहण करिबे, वर्मेर स्वरूप हइया ललिताके समस्त आघात हइते बाँचाइते चेष्टा करिबे।

किन्तु, ललितार ठिक मनेर भावटा विनय बुझिते पारे नाइ। से ये भर्त्सनार प्रतिरोधकस्वरूपेइ विनयके छाड़िते चाहिल ना ताहा नहे। आसल कथा, ललिता किछुइ चापा दिया राखिते पारे ना। से याहा करियाछे ताहार समस्त अंशइ परेशबाबु चक्षे देखिबेन एवं विचारे ये-फल हय ताहार समस्तटाइ ललिता ग्रहण करिबे, एइरूप ताहार भाव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज सकाल हइतेइ ललिता विनयेर उपर मने मने राग करिया आछे। रागटा ये असंगत ताहा से सम्पूर्ण जाने—किन्तु, असंगत बलिया रागटा कमे ना, वरं बाड़े।

स्टीमारे यतक्षण छिल ललितार मनेर भाव अन्यरूप छिल। छेलेवेला हइते से कखनो राग करिया, कखनो जेद करिया, एकटा-ना-एकटा अभावनीय काण्ड घटाइया आसियाछे, किन्तु एबारकार व्यापारटि गुरुतर। एइ निषिद्ध व्यापारे विनयओ ताहार सङ्गे जड़ित हइया पड़ाते से एक दिके संकोच एवं अन्य दिके एकटा निगूढ़ हर्ष अनुभव करितेछिल। एइ हर्ष येन निषेधेर संघात द्वाराइ बेशि करिया मथित हइया उठितेछिल। एकजन बाहिरेर पुरुषके से आज एमन करिया आश्रय करियाछे, ताहार एत काछे आसियाछे, ताहादेर माझखाने आत्मीयसमाजेर कोनो आड़ाल नाइ, इहाते कतखानि कुण्ठार कारण छिल—किन्तु, विनयेर स्वाभाविक भद्रता एमनि संयमेर सहित एकटि आब्रु रचना करिया राखियाछिल ये, एइ आशङ्काजनक अवस्थार माझखाने विनयेर सुकुमार शीलतार परिचय ललिताके भारि एकटा आनन्द दान करितेछिल। ये-विनय ताहादेर बाड़िते सकलेर सङ्गे सर्वदा आमोद-कौतुक करित, याहार कथार विराम छिल ना, बाड़िर भृत्यदेर सङ्गेओ याहार आत्मीयता अवारित, ए से-विनय नहे। सतर्कतार दोहाइ दिया येखाने से अनायासेइ ललितार सङ्ग बेशि करिया लइते पारित सेखाने विनय एमन दूरत्व रक्षा करिया चलियाछिल ये, ताहातेइ ललिता हृदयेर मध्ये ताहाके आरओ निकटे अनुभव करितेछिल। रात्रे स्टीमारेर क्याबिने नाना चिन्ताय ताहार भालो घुम हइतेछिल ना ; छट्‌फट् करिते करिते एक समय मने हइल, रात्रि एतक्षणे प्रभात हइया आसियाछे। धीरे धीरे क्याबिनेर दरजा खुलिया बाहिरेर दिके चाहिया देखिल, रात्रिशेषेर शिशिरार्द्र अन्धकार तखनो नदीर उपरकार मुक्त आकाश एवं तीरेर वनश्रेणीके जड़ाइया रहियाछे—एइमात्र एकटि शीतल वातास उठिया नदीर जले कलध्वनि जागाइया तुलियाछे, एवं निचेर तलाय एञ्जिनेर खालासिरा काज आरम्भ करिबे एमनतरो चाञ्चल्येर आभास पाओया याइतेछे। ललिता क्याबिनेर बाहिरे आसियाइ देखिल, अनतिदूरे विनय एकटा गरम कापड़ गाये दिया बेतेर चौकिर उपर घुमाइया पड़ियाछे। देखियाइ ललितार हृत्पिण्ड स्पन्दित हइया उठिल। समस्त रात्रि विनय ओइखानेइ बसिया पाहारा दियाछे! एत निकटे, तबु एत दूरे! डेक हइते तखनइ ललिता कम्पितपदे क्याबिने आसिल ; द्वारेर काछे दाँड़ाइया सेइ हेमन्तेर प्रत्युषे सेइ अन्धकारजड़ित अपरिचित नदीदृश्येर मध्ये एकाकी निद्रित विनयेर दिके चाहिया रहिल। सम्मुखेर दिक्प्रान्तेर तारागुलि येन विनयेर निद्राके वेष्टन करिया ताहार चोखे पड़िल ; एकटि अनिर्वचनीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गाम्भीर्ये ओ माधुर्ये ताहार समस्त हृदय एकेबारे कूले कूले पूर्ण हइया उठिल ; देखिते देखिते ललितार दुइ चक्षु केन ये जले भरिया आसिल ताहा से बुझिते पारिल ना। ताहार पितार काछे से ये-देवतार उपासना करिते शिखियाछे सेइ देवता येन दक्षिण हस्ते ताहाके आज स्पर्श करिलेन एवं नदीर उपरे एइ तरुपल्लवनिविड़ निद्रित तीरे रात्रिर अन्धकारेर सहित नवीन आलोकेर यखन प्रथम निगूढ़ सम्मिलन घटितेछे, सेइ पवित्र सन्धिक्षणे परिपूर्ण नक्षत्रसभाय कोन् एकटि दिव्यसंगीत अनाहत महावीणाय दुःसह आनन्दवेदनार मतो बाजिया उठिल।

एमन समय घुमेर घोरे विनय हाततटा एकटु नाड़िबामात्रइ ललिता ताड़ाताड़ि क्याबिनेर दरजा बन्ध करिया बिछानाय शुइया पड़िल। ताहार हातपायेर तलदेश शीतल हइया उठिल, अनेकक्षण पर्यन्त से हृत्पिण्डेर चाञ्चल्य निवृत्त करिते पारिल ना।

अन्धकार दूर हइया गेल। स्टीमार चलिते आरम्भ करियाछे। ललिता मुख-हात धुइया प्रस्तुत हइया बाहिरे आसिया रेल धरिया दाँड़ाइल। विनयओ पूर्वेइ जाहाजेर बाँशिर आओयाजे जागिया, प्रस्तुत हइया पूर्वतीरे प्रभातेर प्रथम अभ्युदय देखिबार जन्य अपेक्षा करितेछिल। ललिता बाहिर हइया आसिबामात्र से संकुचित हइया चलिया याइबार उपक्रम करितेइ ललिता डाकिल, "विनयबाबु।"

विनय काछे आसितेइ ललिता कहिल, "आपनार बोध हय रात्रे भालो घुम हय नि।"

विनय कहिल, "मन्द हय नि।"

इहार परे दुइजनेर आर कथा हइल ना। शिशिरसिक्त काशवनेर परप्रान्ते आसन्न सूर्योदयेर स्वर्णच्छटा उज्ज्वल हइया उठिल। इहारा दुइजने जीवने एमन प्रभात आर-कोनो दिन देखे नाइ। आलोक ताहादिगके एमन करिया कखनो स्पर्श करे नाइ—आकाश ये शून्य नहे, ताहा ये विस्मयनीरव आनन्दे सृष्टिर दिके अनिमेषे चाहिया आछे, ताहा इहारा एइ प्रथम जानिल। एइ दुइजनेर चित्ते चेतना एमन करिया जाग्रत हइया उठियाछे ये, समस्त जगतेर अन्तर्निहित चैतन्येर सङ्गे आज येन ताहादेर एकेबारे गाये गाये ठेकाठेकि हइल। केह कोनो कथा कहिल ना।

स्टीमार कलिकाताय आसिल। विनय घाटे एकटा गाड़ि भाड़ा करिया ललिताके भितरे बसाइया, निजे गाड़ोयानेर पाशे गिया बसिल। एइ दिनेर वेलाकार कलिकातार पथे गाड़ि करिया चलिते चलिते केन ये ललितार मने उल्टा हाओया बहिते लागिल ताहा के बलिबे। एइ संकटेर समय विनय ये स्टीमारे छिल, ललिता ये विनयेर सङ्गे एमन करिया जड़ित हइया पड़ियाछे, विनय ये अभिभावकेर मतो ताहाके गाड़ि करिया बाड़ि लइया याइतेछे, इहार समस्तइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताहाके पीड़न करिते लागिल। घटनावशत विनय ये ताहार उपरे एकटा कर्तृत्वेर अधिकार लाभ करियाछे, इहा ताहार काछे असह्य हइया उठिल। केन एमन हइल। रात्रेर सेइ संगीत दिनेर कर्मक्षेत्रेर सम्मुखे आसिया केन एमन कठोर सुरे थामिया गेल।

ताइ द्वारेर काछे आसिया विनय यखन ससंकोचे जिज्ञासा करिल 'आमि तबे याइ', तखन ललितार राग आरओ बाड़िया उठिल। से भाविल, 'विनयबाबु मने करितेछेन, ताँहाके सङ्गे करिया पितार काछे उपस्थित हइते आमि कुण्ठित हइतेछि।' ए-सम्बन्धे ताहार मने ये लेशमात्र संकोच नाइ इहाइ बलेर सहित प्रमाण करिबार एवं पितार निकट समस्त जिनिसटाके सम्पूर्णभावे उपस्थित करिबार जन्य से विनयके द्वारेर काछ हइते अपराधीर न्याय विदाय दिते चाहिल ना।

विनयेर सङ्गे सम्बन्धके से पूर्वेर न्याय परिष्कार करिया फेलिते चाय—माझखाने कोनो कुण्ठा, कोनो मोहेर जड़िमा राखिया से निजेके विनयेर काछे खाटो करिते चाय ना।

३१

विनय ओ ललिताके देखिबामात्र कोथा हइते सतीश छुटिया आसिया, ताहादेर दुइजनेर माझखाने दाँड़ाइया उभयेर हात धरिया कहिल, "कइ, बड़दिदि एलेन ना ?"

विनय पकेट चापड़ाइया एवं चारि दिके चाहिया कहिल, "बड़दिदि ! ताइ तो, की हल ! हारिये गेछेन।"

सतीश विनयके ठेलिया दिया कहिल, "इस्, ताइ तो, कख्नो ना। बलोना, ललितादिदि।"

ललिता कहिल, "बड़दिदि काल आसबेन।"

बलिया परेशबाबुर घरेर दिके चलिल।

सतीश ललिता ओ विनयेर हात धरिया टानिया कहिल, "आमादेर बाड़ि के एसेछेन देखबे चलो।"

ललिता हात टानिया लइया कहिल, "तोर ये आसुक, एखन विरक्त करिस ने। एखन बाबार काछे याच्छि।"

सतीश कहिल, "बाबा बेरिये गेछेन, ताँर आसते देरि हबे।"

शुनिया विनय एवं ललिता उभयेइ क्षणकालेर जन्य एकटा आराम बोध करिल। ललिता जिज्ञासा करिल, "के एसेछे।"

सतीश कहिल, "बलब ना। आच्छा, विनयबाबु, बलुन देखि के एसेछे। आपनि कख्खनोइ बलते पारबेन ना। कख्खनो ना, कख्खनो ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय अत्यन्त असम्भव ओ असंगत नाम करिते लागिल—कखनो बलिल नवाब सिराजउद्दौला, कखनो बलिल राजा नवकृष्ण, एकबार नन्दकुमारेरओ नाम करिल। एरूप अतिथिसमागम ये एकेबारेइ असम्भव, सतीश ताहारइ अकाट्य कारण देखाइया उच्चैःस्वरे प्रतिवाद करिल। विनय हार मानिया नम्रस्वरे कहिल, "ता बटे, सिराजउद्दौलार ये ए बाड़िते आसार कतकगुलो गुरुतर असुविधा आछे से-कथा आमि एपर्यन्त चिन्ता करे देखि नि। या होक, तोमार दिदि तो आगे तदन्त करे आसुन, तार परे यदि प्रयोजन हय आमाके डाक दिलेइ आमि याब।"

सतीश कहिल, "ना, आपनारा दुजनेइ आसुन।"

ललिता जिज्ञासा करिल, "कोन् घरे येते हबे।"

सतीश कहिल, "तेतालार घरे।"

तेतालार छादेर कोणे एकटि छोटो घर आछे, ताहार दक्षिणेर दिके रौद्रवृष्टि-निवारणेर जन्य एकटि ढालु टालिर छाद। सतीशेर अनुवर्ती दुइजने सेखाने गिया देखिल, छोटो एकटि आसन पातिया सेइ छादेर निचे एकजन प्रौढ़ा स्त्रीलोक चोखे चशमा दिया कृत्तिवासेर रामायण पड़ितेछेन। ताँहार चशमार एक दिककार भाङा दण्डे दड़ि बाँधा, सेइ दड़ि ताँहार काने जड़ानो। वयस पँयताल्लिशेर काछाकाछि हइबे। माथार सामनेर दिके चुल विरल हइया आसियाछे, किन्तु गौरवर्ण मुख परिपक्व फलटिर मतो एखनो प्राय निटोल रहियाछे; दुइ भ्रूर माझे एकटि उलकिर दाग—गाये अलंकार नाइ, विधवार वेश। प्रथमे ललितार दिके चोख पड़ितेइ, ताड़ाताड़ि चशमा खुलिया बइ फेलिया राखिया विशेष एकटा औत्सुक्येर सहित ताहार मुखेर दिके चाहिलेन; परक्षणेइ ताहार पश्चाते विनयके देखिया द्रुत उठिया दाँड़ाइया माथार कापड़ टानिया दिलेन एवं घरेर मध्ये प्रवेश करिबार उपक्रम करिलेन। सतीश ताड़ाताड़ि गिया ताँहाके जड़ाइया धरिया कहिल, "मासिमा, पालाच्छ केन। एइ आमादेर ललितादिदि, आर इनि विनयबाबु। बड़दिदि काल आसबेन।"

विनयबाबुर एइ अतिसंक्षिप्त परिचयइ यथेष्ट हइल; इतिपूर्वेइ विनयबाबु सम्बन्धे आलोचना ये प्रचुर परिमाणे हइया गियाछे ताहाते सन्देह नाइ। पृथिवीते सतीशेर ये-कयटि बलिबार विषय जमियाछे कोनो उपलक्ष पाइलेइ ताहा सतीश बले एवं हाते राखिया बले ना।

मासिमा बलिते ये एखाने काहाके बुझाय ताहा ना बुझिते पारिया ललिता अवाक हइया दाँड़ाइया रहिल। विनय एइ प्रौढ़ा रमणीके प्रणाम करिया ताँहार पायेर धुला लइतेइ ललिता ताहार दृष्टान्त अनुसरण करिल।

मासिमा ताड़ाताड़ि घर हइते एकटि मादुर बाहिर करिया पातिया दिलेन एवं कहिलेन, "बाबा, बोसो। मा, बोसो।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय ओ ललिता बसिले पर तिनि ताँहार आसने बसिलेन एवं सतीश ताँहार गा घेंषिया बसिल। तिनि सतीशके डान हात दिया निविड़भावे वेष्टन करिया धरिया कहिलेन, "आमाके तोमरा जान ना, आमि सतीशेर मासि हइ। सतीशेर मा आमार आपन दिदि छिलेन।"

एइटुकु परिचयेर मध्ये बेशि किछु कथा छिल ना, किन्तु मासिमार मुखे ओ कण्ठस्वरे एमन एकटि की छिल याहाते ताँहार जीवनेर सुगभीर शोकेर अश्रुमार्जित पवित्र एकटि आभास प्रकाशित हइया पड़िल। 'आमि सतीशेर मासि हइ' बलिया तिनि यखन सतीशके बुकेर काछे चापिया धरिलेन तखन एइ रमणीर जीवनेर इतिहास किछुइ ना जानियाओ विनयेर मन करुणाय व्यथित हइया उठिल। विनय बलिया उठिल, "एकला सतीशेर मासिमा हले चलबे ना ; ता हले एतदिन परे सतीशेर सङ्गे आमार झगड़ा हबे। एके तो सतीश आमाके विनयबाबु बले, दादा बले ना, तार परे मासिमा थेके वञ्चित करबे से तो कोनोमतेइ उचित हबे ना।"

मन वश करिते विनयेर विलम्ब हइत ना। एइ प्रियदर्शन प्रियभाषी युवक देखिते देखिते मासिमार मने सतीशेर सङ्गे दखल भाग करिया लइल।

मासिमा जिज्ञासा करिलेन, "बाछा, तोमार मा कोथाय।"

विनय कहिल, "आमार निजेर माके अनेक दिन हल हारियेछि, किन्तु, आमार मा नइ एमन कथा आमि मुखे आनते पारव ना।"

एइ बलिया आनन्दमयीर कथा स्मरण करिबामात्र ताहार दुइ चक्षु येन भावेर वाष्पे आर्द्र हइया आसिल।

दुइ पक्षे कथा खुब जमिया उठिल। इहादेर मध्ये आज ये नूतन परिचय से-कथा किछुतेइ मने हइल ना। सतीश एइ कथा-वार्तार माझखाने नितान्त अप्रासङ्गिकभावे मन्तव्य प्रकाश करिते लागिल एवं ललिता चुप करिया बसिया रहिल।

चेष्टा करिलेओ ललिता निजेके सहजे येन बाहिर करिते पारे ना। प्रथम-परिचयेर बाधा भाङिते ताहार अनेक समय लागे। ता छाड़ा, आज ताहार मन भालो छिल ना। विनय ये अनायासेइ एइ अपरिचितार सङ्गे आलाप जुड़िया दिल, इहा ताहार भालो लागितेछिल ना ; ललितार ये-संकट उपस्थित हइयाछे विनय ताहार गुरुत्व मनेर मध्ये ग्रहण ना करिया ये एमन निरुद्विग्न हइया आछे, इहाते विनयके लघुचित्त बलिया से मने मने अपवाद दिल। किन्तु, मुख गम्भीर करिया विषण्णभावे चुपचाप बसिया थाकिलेइ विनय ये ललितार असन्तोष हइते निष्कृति पाइत ताहा नहे। ताहा हइले निश्चय ललिता रागिया मने मने एइ कथा बलित, 'आमार सङ्गेइ बाबार बोझापड़ा, किन्तु विनयबाबु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एमन भाव धारण करितेछेन केन येन उँहार घाड़ेइ एइ दाय पड़ियाछे।' आसल कथा, काल रात्रे ये-आघाते संगीत बाजियाछिल आज दिनेर वेलाय ताहाते व्यथाइ बाजितेछे—किछुइ ठिकमतो हइतेछे ना। आज ताइ ललिता प्रति पदे विनयेर सङ्गे मने मने झगड़ाइ करितेछे ; विनयेर कोनो व्यवहारेइ ए झगड़ा मिटिते पारित ना—कोन् मूले संशोधन हइले इहार प्रतिकार हइते पारित ताहा अन्तर्यामीइ जानेन।

हाय रे, हृदय लइयाइ याहादेर कारबार सेइ मेयेदेर व्यवहारके युक्तिविरुद्ध बलिया दोष दिले चलिबे केन। यदि गोड़ाय ठिक जायगाटिते इहार प्रतिष्ठा थाके तबे हृदय एमनि सहजे एमनि सुन्दर चले ये, युक्तितर्क हार मानिया माथा हेंट करिया थाके, किन्तु सेइ गोड़ाय यदि लेशमात्र विपर्यय घटे तबे बुद्धिर साध्य की ये कल ठिक करिया देय—तखन रागविराग, हासिकान्ना, की हइते ये की घटे ताहार हिसाब तलब करिते याओयाइ वृथा।

एदिके विनयेर हृदययन्त्रटिओ ये बेश स्वाभाविकभावे चलितेछिल ताहा नहे। ताहार अवस्था यदि अविकल पूर्वेर मतो थाकित तबे एइ मुहूर्तेइ से छुटिया आनन्दमयीर काछे याइत। गोरार कारादण्डेर खबर विनय छाड़ा माके आर के दिते पारे। से छाड़ा मायेर सान्त्वनाइ वा आर के आछे। एइ वेदनार कथाटा विनयेर मनेर तलाय विषम एकटा भार हइया ताहाके केवलइ पेषण करितेछिल—किन्तु, ललिताके एखनि छाड़िया चलिया याय, इहा ताहार पक्षे असम्भव हइयाछिल। समस्त संसारेर विरुद्धे आज सेइ ये ललितार रक्षक, ललिता सम्बन्धे परेशबाबुर काछे ताहार यदि किछु कर्तव्य थाके ताहा शेष करिया ताहाके याइते हइबे एइ कथा से मनके बुझाइतेछिल। मन ताहा अति सामान्य चेष्टातेइ बुझिया लइतेछिल ; ताहार प्रतिवाद करिबार क्षमताइ छिल ना। गोरा एवं आनन्दमयीर जन्य विनयेर मने यत वेदनाइ थाक्, आज ललितार अति-सन्निकट अस्तित्व ताहाके एमन आनन्द दिते लागिल—एमन एकटा विस्फारता, समस्त संसारेर मध्ये एमन एकटा विशेष गौरव—निजेर सत्तार एमन एकटा विशिष्ट स्वातन्त्र्य अनुभव करिते लागिल ये ताहार मनेर वेदनाटा मनेर निचेर तलातेइ रहिया गेल। ललितार दिके से आज चाहिते पारितेछिल ना ; केवल क्षणे क्षणे चोखे आपनि येटुकु पड़ितेछिल, ललितार कापड़ेर एकटुकु अंश , कोलेर उपर निश्चलभावे स्थित ताहार एकखानि हात—मुहूर्तेर मध्ये इहाइ ताहाके पुलकित करिते लागिल।

देरि हइते चलिल। परेशबाबु एखनो तो आसिलेन ना। उठिबार जन्य भितर हइते तागिद क्रमेइ प्रबल हइते लागिल—ताहाके कोनोमते चापा दिबार जन्य विनय सतीशेर मासिर सङ्गे एकान्तमने आलाप करिते थाकिल। अवशेषे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललितार विरक्ति आर बाँध मानिल ना ; से विनयेर कथार माझखाने सहसा बाधा दिया बलिया उठिल, "आपनि देरि करछेन कार जन्ये। बाबा कखन आसबेन तार ठिक नेइ। आपनि गौरबाबुर मार काछे एकबार याबेन ना ?"

विनय चमकिया उठिल। ललितार विरक्तिस्वर विनयेर पक्षे सुपरिचित छिल। से ललितार मुखेर दिके चाहिया एक मुहूर्ते एकेबारे उठिया पड़िल—हठात् गुण छिँड़िया गेले धनुक येमन सोजा हइया उठे तेमनि करिया से दाँड़ाइल। से देरि करितेछिल काहार जन्य। एखाने ये ताहार कोनो एकान्त प्रयोजन छिल एमन अहंकार तो आपना हइते विनयेर मने आसे नाइ, से तो द्वारेर निकट हइतेइ विदाय लइतेछिल, ललिताइ तो ताहाके अनुरोध करिया सङ्गे आनियाछिल—अवशेषे ललितार मुखे एइ प्रश्न !

विनय एमनि हठात् आसन छाड़िया उठिया पड़ियाछिल ये, ललिता विस्मित हइया ताहार दिके चाहिल। देखिल, विनयेर मुखेर स्वाभाविक सहास्यता एकेबारे एक फुत्कारे प्रदीपेर आलोर मतो सम्पूर्ण निबिया गेछे। विनयेर एमन व्यथित मुख, ताहार भावेर एमन अकस्मात् परिवर्तन, ललिता आर-कखनो देखे नाइ। विनयेर दिके चाहियाइ तीव्र अनुतापेर ज्वालामय कषाघात तत्-क्षणात् ललितार हृदयेर एक प्रान्त हइते आर-एक प्रान्ते उपरि उपरि बाजिते लागिल।

सतीश ताड़ाताड़ि उठिया विनयेर हात धरिया झुलिया पड़िया मिनतिर स्वरे कहिल, "विनयबाबु, बसुन, एखनि याबेन ना। आमादेर बाड़िते आज खेये यान। मासिमा, विनयबाबुके खेते बलो-ना। ललितादिदि, केन विनयबाबुके येते बलले।"

विनय कहिल, "भाइ सतीश, आज ना, भाइ। मासिमा यदि मने राखेन तबे आर-एकदिन एसे प्रसाद खाब। आज देरि हये गेछे।"

कथागुलो विशेष किछु नय किन्तु कण्ठस्वरेर मध्ये अश्रु आच्छन्न हइया छिल। ताहार करुणा सतीशेर मासिमार कानेओ बाजिल। तिनि एकबार विनयेर ओ एकबार ललितार मुखेर दिके चकितेर मतो चाहिया लइलेन—बुझिलेन, अदृष्टेर एकटा लीला चलितेछे।

अनतिविलम्बे कोनो छुता करिया ललिता उठिया ताहार घरे गेल। कतदिन से निजेके निजे एमन करिया काँदाइयाछे।

३२

विनय तखनि आनन्दमयीर बाड़िर दिके चलिल। लज्जाय वेदनाय मिशिया मनेर मध्ये भारि एकटा पीड़न चलितेछिल। एतक्षण केन से मार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काछ याय नाइ। की भुलइ करियाछिल। से मने करियाछिल, ताहाके ललितार विशेष प्रयोजन आछे। सब प्रयोजन अतिक्रम करिया से ये कलिकाताय आसियाइ आनन्दमयीर काछे छुटिया याय नाइ, सेजन्य ईश्वर ताहाके उपयुक्त शास्तिइ दियाछेन। अवशेषे आज ललितार मुख हइते एमन प्रश्न शुनिते हइल, 'गौरबाबुर मार काछे एकबार यावेन ना?' कोनो एक मुहूर्तेओ एमन विभ्रम घटिते पारे यखन गोरबाबुर मार कथा विनयेर चेये ललितार मने बड़ो हइया उठे! ललिता ताँहाके गौरबाबुर मा बलिया जाने मात्र, किन्तु विनयेर काछे तिनि ये जगतेर सकल मायेर एकटिमात्र प्रत्यक्ष प्रतिमा।

तखन आनन्दमयी सद्य स्नान करिया घरेर मेझेय आसन पातिया स्थिर हइया बसिया छिलेन; बोध करि वा मने मने जप करितेछिलेन। विनय ताड़ाताड़ि ताँहार पायेर काछे लुटाइया पड़िया कहिल, "मा।"

आनन्दमयी ताहार अवलुण्ठित माथाय दुइ हात बुलाइया कहिलेन, "विनय!"

मार मतो एमन कण्ठस्वर कार आछे। सेइ कण्ठस्वरेइ विनयेर समस्त शरीरे येन करुणार स्पर्श बहिया गेल। से अश्रुजल कष्टे रोध करिया मुक्तकण्ठे कहिल, "मा, आमार देरि हये गेछे!"

आनन्दमयी कहिलेन, "सब कथा शुनेछि, विनय!"

विनय चकित हइया कहिल, "सब कथाइ शुनेछ!"

गोरा हाजत हइतेइ ताँहाके पत्र लिखिया उकिलबाबुर हात दिया पाठाइयाछिल। से ये जेले याइबे से-कथा से निश्चय अनुमान करियाछिल।

पत्रेर शेषे छिल—

'कारावासे तोमार गोरार लेशमात्र क्षति करिते पारिबे ना। किन्तु तुमि एकटुओ कष्ट पाइले चलिबे ना। तोमार दुःखइ आमार दण्ड, आमाके आर-कोनो दण्ड म्याजिस्ट्रेटेर दिबार साध्य नाइ। एका तोमार छेलेर कथा भाबियो ना, मा। आरओ अनेक मायेर छेले बिना दोषे जेल खाटिया थाके, एकबार ताहादेर कष्टेर समान क्षेत्रे दाँड़ाइबार इच्छा हइयाछे; एइ इच्छा एबार यदि पूर्ण हय तुमि आमार जन्य क्षोभ करियो ना।

'मा, तोमार मने आछे कि ना जानि ना, सेबार दुर्भिक्षेर बछरे आमार रास्तार धारेर घरेर टेबिले आमार टाकार थलिटा राखिया आमि पाँच मिनिटेर जन्य अन्य घरे गियाछिलाम। फिरिया आसिया देखि, थलिटा चुरि गियाछे। थलिते आमार स्कलारशिपेर जमानो पँचाशि टाका छिल; मने संकल्प करियाछिलाम आरओ किछु टाका जमिले तोमार पा धोवार जलेर जन्य एकटि रुपार घटि तैरि कराइया दिब। टाका चुरि गेले पर यखन चोरेर प्रति व्यर्थ रागे ज्वलिया मरितेछिलाम तखन ईश्वर आमार मने हठात् एकटा सुबुद्धि दिलेन, आमि मने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मने कहिलाम, ये-व्यक्ति आमार टाका लइयाछे आज दुर्भिक्षेर दिने ताहाकेइ आमि से-टाका दान करिलाम। येमनि बला अमनि आमार मनेर निष्फल क्षोभ समस्त शान्त हइया गेल। आज आमार मनके आमि तेमनि करिया बलाइयाछि ये, आमि इच्छा करियाइ जेले याइतेछि। आमार मने कोनो कष्ट नाइ, काहारओ उपरे राग नाइ। जेले आमि आतिथ्य लइते चलिलाम। सेखाने आहार-विहारेर कष्ट आछे—किन्तु, एबारे भ्रमणेर समय नाना घरे आतिथ्य लइयाछि ; से सकल जायगाते तो निजेर अभ्यास ओ आवश्यक-मतो आराम पाइ नाइ। इच्छा करिया याहा ग्रहण करि से-कष्ट तो कष्टइ नय ; जेलेर आश्रय आज आमि इच्छा करियाइ ग्रहण करिब ; यतदिन आमि जेले थाकिब एक दिनओ केह आमाके जोर करिया सेखाने राखिबे ना, इहा तुमि निश्चय जानियो।

'पृथिवीते यखन आमरा घरे बसिया अनायासेइ आहारविहार करितेछिलाम, बाहिरेर आकाश एवं आलोके अबाध सञ्चरणेर अधिकार ये कत बड़ो प्रकाण्ड अधिकार ताहा अभ्यासवशत अनुभवमात्र करिते पारितेछिलाम ना, सेइ मुहूर्तेइ पृथिवीर बहुतर मानुषइ दोषे एवं बिना दोषे ईश्वरदत्त विश्वेर अधिकार हइते बञ्चित हइया ये बन्धन एवं अपमान भोग करितेछिल आज पर्यन्त ताहादेर कथा भाबि नाइ, ताहादेर सङ्गे कोनो सम्बन्धइ राखि नाइ—एबार आमि ताहादेर समान दागे दागि हइया बाहिर हइते चाइ ; पृथिवीर अधिकांश कृत्रिम भालो-मानुष याहारा भद्रलोक साजिया बसिया आछे ताहादेर दले भिड़िया आमि सम्मान बाँचाइया चलिते चाइ ना।

'मा, एबार पृथिवीर सङ्गे परिचय हइया आमार अनेक शिक्षा हइयाछे। ईश्वर जानेन, पृथिवीते याहारा विचारेर भार लइयाछे ताहाराइ अधिकांश कृपापात्र। याहारा दण्ड पाय ना, दण्ड देय, ताहादेरइ पापेर शास्ति जेलेर कयेदिरा भोग करितेछे ; अपराध गड़िया तुलितेछे अनेके मिलिया, प्रायश्चित्त करितेछे इहाराइ। याहारा जेलेर बाहिरे आरामे आछे, सम्माने आछे, ताहादेर पापेर क्षय कबे कोथाय केमन करिया हइबे ताहा जानि ना। आमि सेइ आराम ओ सम्मानके धिक्कार दिया मानुषेर कलङ्केर दाग बुके चिह्नित करिया बाहिर हइब—मा, तुमि आमाके आशीर्वाद करो, तुमि चोखेर जल फेलियो ना। भृगुपदाघातेर चिह्न श्रीकृष्ण चिरदिन वक्षे धारण करियाछेन ; जगते औद्धत्य येखाने यत अन्याय आघात करितेछे भगवानेर बुकेर सेइ चिह्नकेइ गाढ़तर करितेछे। सेइ चिह्न यदि ताँर अलंकार हय तबे आमार भावना की, तोमारइ वा दुःख किसेर।'

एइ चिठि पाइया आनन्दमयी महिमके गोरार काछे पाठाइबार चेष्टा करिया-छिलेन। महिम बलिलेन, आपिस आछे, साहेब कोनोमतेइ छुटि दिबे ना। बलिया गोरार अविवेचना ओ औद्धत्य लइया ताहाके यथेष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गालि दिते लागिलेन ; कहिलेन, 'उहार सम्पर्के कोन्‌दिन आमार सुद्ध चाकरिटि याइबे ।' आनन्दमयी कृष्णदयालके ए-सम्बन्धे कोनो कथा बला अनावश्यक बोध करिलेन । गोरा सम्बन्धे स्वामीर प्रति ताँहार एकटि मर्मान्तिक अभिमान छिल——तिनि जानितेन, कृष्णदयाल गोराके हृदयेर मध्ये पुत्रेर स्थान देन नाइ—— एमन-कि, गोरा सम्बन्धे ताँहार अन्तःकरणे एकटा विरुद्ध भाव छिल । गोरा आनन्दमयीर दाम्पत्य सम्बन्धके विन्ध्याचलेर मतो विभक्त करिया माझखाने दाँड़ाइयाछिल । ताहार एक पारे अति सतर्क शुद्धाचार लइया कृष्णदयाल एका, एवं ताहार अन्य पारे ताँहार म्लेच्छ गोराके लइया एकाकिनी आनन्दमयी । गोरार जीवनेर इतिहास पृथिवीते ये दुजन जाने ताहादेर माझखाने यातायातेर पथ येन बन्ध हइया गियाछे । एइ-सकल कारणे संसारे गोरार प्रति आनन्दमयीर स्नेह नितान्तइ ताँहार एकलार धन छिल । एइ परिवारे गोरार अनधिकारे अवस्थानके तिनि सब दिक दिया यत हालका करिया राखा सम्भव ताहार चेष्टा करितेन । पाछे केह बले 'तोमार गोरा हइते एइ घटिल', 'तोमार गोरार जन्य एइ कथा शुनिते हइल', अथवा 'तोमार गोरा आमादेर एइ लोकसान करिया दिल', आनन्दमयीर एइ एक नियत भावना छिल । गोरार समस्त दाय ये ताँहारइ । आबार ताँहार गोराओ तो सामान्य दुरन्त गोरा नय । येखाने से थाके सेखाने ताहार अस्तित्व गोपन करिया राखा तो सहज व्यापार नहे । एइ ताँहार कोलेर खेपा गोराके एइ विरुद्ध परिवारेर माझखाने एतदिन दिनरात्रि तिनि सामलाइया एतबड़ो करिया तुलियाछेन——अनेक कथा शुनियाछेन याहार कोनो जवाब देन नाइ, अनेक दुःख सहियाछेन याहार अंश आर-काहाकेओ दिते पारेन नाइ ।

आनन्दमयी चुप करिया जानालार काछे बसिया रहिलेन ; देखिलेन, कृष्णदयाल प्रातःस्नान सारिया ललाटे बाहुते वक्षे गङ्गा-मृत्तिकार छाप लागाइया मन्त्र उच्चारण करिते करिते बाड़िते प्रवेश करिलेन, ताँहार काछे आनन्दमयी याइते पारिलेन ना । निषेध, निषेध, निषेध, सर्वत्रइ निषेध । अवशेषे निश्वास फेलिया आनन्दमयी उठिया महिमेर घरे गेलेन । महिम तखन मेझेर उपर बसिया खबरेर कागज पड़ितेछिलेन एवं ताँहार भृत्य स्नानेर पूर्वे ताँहार गाये तेल मालिश करिया दितेछिल । आनन्दमयी ताँहाके कहिलेन, "महिम , तुमि आमार सङ्गे एकजन लोक दाओ, आमि याइ गोरार की हल देखे आसि । से जेले याबे बले मनस्थिर करे बसे आछे ; यदि तार जेल हय आमि कि तार आगे ताके एकबार देखे आसते पारब ना ।"

महिमेर बाहिरेर व्यवहार येमनि हउक, गोरार प्रति ताँहार एक-प्रकारेर स्नेह छिल । तिनि मुखे गर्जन करिया गेलेन ये, 'याक लक्ष्मीछाड़ा जेलेइ याक्——

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतदिन याय नि, एइ आश्चर्य' ; एइ बलिया परक्षणेइ ताँहादेर अनुगत परान घोषालके डाकिया ताहार हाते उकिल-खरचार किछु टाका दिया तखनि ताहाके रओना करिया दिलेन एवं आपिसे गिया साहेबेर काछे छुटि यदि पान एवं बउ यदि सम्मति देन तबे निजेओ सेखाने याइबेन स्थिर करिलेन ।

आनन्दमयीओ जानितेन, महिम गोरार जन्य किछु ना करिया कखनो थाकिते पारिबेन ना । महिम यथासम्भव व्यवस्था करियाछेन शुनिया तिनि निजेर घरे फिरिया आसिलेन । तिनि स्पष्टइ जानितेन, गोरा येखाने आछे सेइ अपरिचित स्थाने एइ संकटेर समय लोकेर कौतुक कौतूहल ओ आलोचनार मुखे ताँहाके सङ्गे करिया लइया याइबे ए परिवारे एमन केहइ नाइ । तिनि चोखेर दृष्टिते निःशब्द वेदनार छाया लइया ठोंटेर उपर ठोंट चापिया चुप करिया रहिलेन । लछमिया यखन हाउहाउ करिया काँदिते लागिल ताहाके तिरस्कार करिया अन्य घरे पाठाइया दिलेन । समस्त उद्वेग निस्तब्धभावे परिपाक कराइ ताँहार चिरदिनेर अभ्यास । सुख ओ दुःख उभयकेइ तिनि शान्तभावेइ ग्रहण करितेन, ताँहार हृदयेर आक्षेप केवल अन्तर्यामीरइ गोचर छिल ।

विनय ये आनन्दमयीके की बलिबे ताहा भाबिया पाइल ना । किन्तु, आनन्दमयी काहारओ सान्त्वनावाक्येर कोनो अपेक्षा राखितेन ना ; ताँहार ये-दुःखेर कोनो प्रतिकार नाइ से-दुःख लइया अन्य लोके ताँहार सङ्गे आलोचना करिते आसिले ताँहार प्रकृति संकुचित हइया उठित । तिनि आर-कोनो कथा उठिते ना दिया विनयके कहिलेन, "विनु, एखनो तोमार स्नान हय नि देखछि—याओ, शीघ्र नेये एसो गे—अनेक वेला हये गेछे ।"

विनय स्नान करिया आसिया यखन आहार करिते बसिल तखन विनयेर पाशे गोरार स्थान शून्य देखिया आनन्दमयीर बुकेर मध्ये हाहाकार उठिल ; गोराके आज जेलेर अन्न खाइते हइतेछे, से-अन्न निर्मम शासनेर द्वारा कटु, मायेर सेवार द्वारा मधुर नहे, एइ कथा मने करिया आनन्दमयीकेओ कोनो छुता करिया एकबार उठिया याइते हइल ।

३३

बाड़ि आसिया असमये ललिताके देखियाइ परेशबाबु बुझिते पारिलेन, ताँहार एइ उद्दाम मेयेटि अभूतपूर्वरूपे एकटा किछु काण्ड बाधाइयाछे । जिज्ञासु दृष्टिते तिनि ताहार मुखेर दिके चाहितेइ से बलिया उठिल, "बाबा, आमि चले एसेछि । कोनोमतेइ थाकते पारलुम ना ।"

परेशबाबु जिज्ञासा करिलेन, "केन, की हयेछे ।"

ललिता कहिल, "गौरबाबुके म्याजिस्ट्रेट जेले दियेछे ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गौर इहार मध्ये कोथा हइते आसिल, की हइल, परेश किछुइ बुझिते पारिलेन ना। ललितार काछे समस्त वृत्तान्त शुनिया किछुक्षण स्तब्ध हइया रहिलेन। तत्क्षणात् गोरार मार कथा मने करिया ताँहार हृदय व्यथित हइया उठिल। तिनि मने भाबिते लागिलेन, एकजन लोकके जेले पाठाइया कतकगुलि निरपराध लोकके ये किरूप निष्ठुर दण्ड देओया हय, से-कथा यदि विचारक अन्तःकरणेर मध्ये अनुभव करिते पारितेन तबे मानुषके जेले पाठानो एत सहज अभ्यस्त काजेर मतो कखनोइ हइते पारित ना। एकजन चोरके ये-दण्ड देओया गोराकेओ सेइ दण्ड देओया म्याजिस्ट्रेटेर पक्षे ये समान अनायाससाध्य हइयाछे एरूप बर्बरता नितान्तइ धर्मबुद्धिर असाड़तावशत सम्भवपर हइते पारियाछे। मानुषेर प्रति मानुषेर दौरात्म्य जगतेर अन्य समस्त हिंस्रतार चेये ये कत भयानक; ताहार पश्चाते समाजेर शक्ति, राजार शक्ति, दलबद्ध हइया दाँड़ाइया ताहाके ये किरूप प्रचण्ड प्रकाण्ड करिया तुलियाछे, गोरार कारादण्डेर कथा शुनिया ताहा ताँहार चोखेर सम्मुखे प्रत्यक्ष हइया उठिल।

परेशबाबुके एइरूप चुप करिया भाबिते देखिया ललिता उत्साहित हइया बलिया उठिल, "आच्छा, बाबा, ए भयानक अन्याय नय?"

परेशबाबु ताँहार स्वाभाविक शान्तस्वरे कहिलेन, "गौर ये कतखानि की करेछे से तो आमि ठिक जानि ने; तबे ए कथा निश्चय बलते पारि, गौर तार कर्तव्यबुद्धिर प्रबलतार झोंके हयतो हठात् आपनार अधिकारेर सीमा लङ्घन करते पारे किन्तु इंरेजि भाषाय याके क्राइम बले ता ये गोरार पक्षे एकेबारेइ प्रकृतिविरुद्ध ताते आमार मने लेशमात्र सन्देह नेइ। किन्तु, की करबे, मा—कालेर न्याय-बुद्धि एखनो से-परिमाणे विवेक लाभ करे नि। एखनो अपराधेर ये-दण्ड त्रुटिरओ सेइ दण्ड; उभयकेइ एकइ जेलेर एकइ घानि टानते हय। एरकम ये सम्भव हयेछे कोनो-एकजन मानुषके सेजन्य दोष देओया याय ना। समस्त मानुषेर पाप एजन्य दायी।"

हठात् एइ प्रसङ्ग बन्ध करिया परेशबाबु जिज्ञासा करिया उठिलेन, "तुमि कार सङ्गे एले।"

ललिता विशेष एकटु जोर करिया येन खाड़ा हइया कहिल, "विनयबाबुर सङ्गे।"

बाहिरे यतइ जोर देखाक ताहार भितरे दुर्बलता छिल। विनयबाबुर सङ्गे आसियाछे, ए कथाटा ललिता बेश सहजे बलिते पारिल ना—कोथा हइते एकटु लज्जा आसिया पड़िल एवं से-लज्जा मुखेर भावे बाहिर हइया पड़ितेछे मने करिया ताहार लज्जा आरओ बाड़िया उठिल।

परेशबाबु एइ खामखेयालि दुर्जय मेयेटिके ताँहार अन्यान्य सकल सन्तानेर चेये एकटु विशेष स्नेहइ करितेन। इहार व्यवहार अन्येर काछे निन्दनीय छिल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलियाइ, ललितार आचरणेर मध्ये ये एकटि सत्यपरता आछे सेइटिके तिनि विशेष करिया श्रद्धा करियाछेन। तिनि जानितेन, ललितार ये-दोष सेइटेइ बेशि करिया लोकेर चोखे पड़िबे, किन्तु इहार ये-गुण ताहा यतइ दुर्लभ हउक-ना केन लोकेर काछे आदर पाइबे ना। परेशबाबु सेइ गुणटिके यत्नपूर्वक सावधाने आश्रय दिया आसियाछेन, ललितार दुरन्त प्रकृतिके दमन करिया सेइ सङ्गे ताहार भितरकार महत्त्वकेओ दलित करिते तिनि चान नाइ। ताँहार अन्य दुइटि मेयेके देखिबामात्रइ सकले सुन्दरी बलिया स्वीकार करे; ताहादेर वर्ण उज्ज्वल, ताहादेर मुखेर गड़नेओ खुँत नाइ—किन्तु, ललितार रङ ताहादेर चेये कालो, एवं ताहार मुखेर कमनीयता सम्बन्धे मतभेद घटे। बरदासुन्दरी सेइजन्य ललितार पात्र जोटा लइया सर्वदाइ स्वामीर निकट उद्वेग प्रकाश करितेन। किन्तु, परेशबाबु ललितार मुखे ये एकटि सौन्दर्य देखितेन ताहा रङेर सौन्दर्य नहे, गड़नेर सौन्दर्य नहे, ताहा अन्तरेर गभीर सौन्दर्य। ताहार मध्ये केवल लालित्य नहे, स्वातन्त्र्येर तेज एवं शक्तिर दृढ़ता आछे—सेइ दृढ़ता सकलेर मनोरम नहे। ताहा लोकविशेषके आकर्षण करे किन्तु अनेककेइ दूरे ठेलिया राखे। संसारे ललिता प्रिय हइबे ना किन्तु खाँटि हइबे, इहाइ जानिया परेशबाबु केमन एकटु वेदनार सहित ललिताके काछे टानिया लइतेन—ताहाके आर-केह क्षमा करितेछे ना जानियाइ ताहाके करुणार सहित विचार करितेन।

यखन परेशबाबु शुनिलेन, ललिता एकला विनयेर सङ्गे हठात् चलिया आसियाछे, तखन तिनि एक मुहूर्तेइ बुझिते पारिलेन, एजन्य ललिताके अनेक दिन धरिया अनेक दुःख सहिते हइबे; से येटुकु अपराध करियाछे लोके ताहार चेये बड़ो अपराधेर दण्ड ताहार प्रति विधान करिबे। सेइ कथाटा तिनि चुप करिया क्षणकाल भावितेछेन एमन समय ललिता बलिया उठिल, "बाबा, आमि दोष करेछि। किन्तु, एबार आमि बेश बुझते पेरेछि ये, म्याजिस्ट्रेटेर सङ्गे आमादेर देशेर लोकेर एमन सम्बन्ध ये ताँर आतिथ्येर मध्ये किछुइ सम्मान नेइ, केवलइ अनुग्रह मात्र। सेटा सह्य करेओ कि आमार सेखाने थाका उचित छिल।"

परेशबाबुर काछे प्रश्नटि सहज बलिया बोध हइल ना। तिनि कोनो उत्तर दिबार चेष्टा ना करिया एकटु हासिया ललितार माथाय दक्षिण हस्त दिया मृदु आघात करिया बलिलेन, "पाग्‌लि।"

एइ घटना सम्बन्धे चिन्ता करिते करिते से दिन अपराह्ने परेशबाबु यखन बाड़िर बाहिरे पायचारि करितेछिलेन एमन समय विनय आसिया ताँहाके प्रणाम करिल। परेशबाबु गोरार कारादण्ड सम्बन्धे ताहार सङ्गे अनेकक्षण धरिया आलोचना करिलेन, किन्तु ललितार सङ्गे स्टीमारे आसार कोनो प्रसङ्गइ उत्थापन करिलेन ना। अन्धकार हइया आसिले कहिलेन, "चलो, विनय, घरे चलो।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "ना, आमि एखन बासाय याब।"

परेशबाबु ताहाके द्वितीयबार अनुरोध करिलेन ना। विनय एकबार चकितेर मतो दोतलार दिके दृष्टिपात करिया धीरे धीरे चलिया गेल।

उपर हइते ललिता विनयके देखिते पाइयाछिल। यखन परेशबाबु एकला घरे ढुकिलेन तखन ललिता मने करिल, विनय हयतो आर-एकटु परेइ आसिबे। आर-एकटु परेओ विनय आसिल ना। तखन टेबिलेर उपरकार दुटो-एकटा बइ ओ कागज-चापा नाड़ाचाड़ा करिया ललिता घर हइते चलिया गेल। परेशबाबु ताहाके फिरिया डाकिलेन—ताहार विषण्ण मुखेर दिके स्नेहपूर्ण दृष्टि स्थापित करिया कहिलेन, "ललिता, आमाके एकटा ब्रह्मसंगीत शोनाओ।"

बलिया बातिटा आड़ाल करिया दिलेन।

३४

परदिने वरदासुन्दरी एवं ताँहादेर दलेर बाकि सकले आसिया पौँछिलेन। हारानबाबु ललिता सम्बन्धे ताँहार विरक्ति संवरण करिते ना पारिया बासाय ना गिया इँहादेर सङ्गे एकेबारे परेशबाबुर काछे आसिया उपस्थित हइलेन। वरदासुन्दरी क्रोधे ओ अभिमाने ललितार दिके ना ताकाइया एवं ताहार सङ्गे कोनो कथा ना कहिया एकेबारे ताँहार घरे गिया प्रवेश करिलेन। लावण्य ओ लीलाओ ललितार उपरे खुब राग करिया आसियाछिल। ललिता एवं विनय चलिया आसाते ताहादेर आवृत्ति ओ अभिनय एमन अङ्गहीन हइया पड़ियाछिल ये ताहादेर लज्जार सीमा छिल ना। सुचरिता हारानबाबुर क्रुद्ध ओ कटु उत्तेजनाय, वरदासुन्दरीर अश्रुमिश्रित आक्षेपे, अथवा लावण्य-लीलार लज्जित निरुत्साहे किछुमात्र योग ना दिया एकेबारे निस्तब्ध हइया छिल—ताहार निर्दिष्ट काजटुकु से कलेर मतो करिया गियाछिल। आजओ से यन्त्रचालितेर मतो सकलेर पश्चाते घरे आसिया प्रवेश करिल। सुधीर लज्जाय एवं अनुतापे संकुचित हइया परेशबाबुर बाड़िर दरजार काछ हइतेइ बासाय चलिया गेल—लावण्य ताहाके बाड़िते आसिबार जन्य बार बार अनुरोध करिया कृतकार्य ना हइया ताहार प्रति आड़ि करिल।

हारान परेशबाबुर घरेर मध्ये प्रवेश करियाइ बलिया उठिलेन, "एकटा भारि अन्याय हये गेछे।"

पाशेर घरे ललिता छिल, ताहार काने कथाटा प्रवेश करिबामात्र से आसिया ताहार बाबार चौकिर पृष्ठदेशे दुइ हात राखिया दाँड़ाइल एवं हारानबाबुर मुखेर दिके एकदृष्टे चाहिया रहिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेशबाबु कहिलेन, "आमि ललितार काछ थेके समस्त संवाद शुनेछि। या हये गेछे ता निये एखन आलोचना करे कोनो फल नेइ।"

हारान शान्त संयत परेशके नितान्त दुर्बलस्वभाव बलिया मने करितेन। ताइ किछु अवज्ञार भावे कहिलेन, "घटना तो हये चुके याय किन्तु चरित्र ये थाके, सेइजन्येइ या हये याय तारओ आलोचनार प्रयोजन आछे। ललिता आज ये-काजटि करेछे ता कखनोइ सम्भव हत ना यदि आपनार काछे बराबर प्रश्रय पेये ना आसत—आपनि ओर ये कतदूर अनिष्ट करेछेन ता आजकेर व्यापार सबटा शुनले स्पष्ट बुझते पारबेन।"

परेशबाबु पिछन दिके ताँहार चौकिर गात्रे एकटा ईषत् आन्दोलन अनुभव करिया ताड़ाताड़ि ललिताके ताँहार पाशे टानिया आनिया ताहार हात चापिया धरिलेन, एवं एकटु हासिया हारानके कहिलेन, "पानुबाबु, यखन समय आसबे तखन आपनि जानते पारबेन, सन्तानके मानुष करते स्नेहेरओ प्रयोजन हय।"

ललिता एक हाते ताहार पितार गला बेड़िया धरिया नत हइया ताँहार कानेर काछे मुख आनिया कहिल, "बाबा, तोमार जल ठाण्डा हये याच्छे, तुमि नाइते याओ।"

परेशबाबु हारानेर प्रति लक्ष्य करिया मृदुस्वरे कहिलेन, "आर-एकटु परे याब—तेमन वेला हय नि।"

ललिता स्निग्धस्वरे कहिल, "ना, बाबा, तुमि स्नान करे एसो—ततक्षण पानुबाबुर काछे आमरा आछि।"

परेशबाबु यखन घर छाड़िया चलिया गेलेन तखन ललिता एकटा चौकि अधिकार करिया दृढ़ हइया बसिल एवं हारानबाबुर मुखेर दिके दृष्टि स्थिर करिया कहिल, "आपनि मने करेन, सकलकेइ आपनार सब कथा बलबार अधिकार आछे!"

ललिताके सुचरिता चिनित। अन्यदिन हइले ललितार एरूप मूर्ति देखिले से मने मने उद्विग्न हइया उठित। आज से जानालार धारेर चौकिते बसिया एकटा बइ खुलिया चुप करिया ताहार पातार दिके चाहिया रहिल। निजेके संवरण करिया राखाइ सुचरितार चिरदिनेर स्वभाव ओ अभ्यास। एइ कयदिन धरिया नानाप्रकार आघातेर वेदना ताहार मने यतइ बेशि करिया सञ्चित हइतेछिल ततइ से आरओ बेशि करिया नीरव हइया उठितेछिल। आज ताहार एइ नीरवतार भार दुर्विषह हइयाछे—एइजन्य ललिता यखन हारानेर निकट ताहार मन्तव्य प्रकाश करिते बसिल तखन सुचरितार रुद्ध हृदयेर वेग येन मुक्तिलाभ करिबार अवसर पाइल।

ललिता कहिल, "आमादेर सम्बन्धे बाबार की कर्तव्य, आपनि मने करेन, बाबार चेये आपनि ता भालो बोझेन! समस्त ब्राह्मसमाजेर आपनिइ हच्छेन हेड्मास्टार!"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललितार एइप्रकार औद्धत्य देखिया हारानबाबु प्रथमटा हतबुद्धि हइया गियाछिलेन। एइबार तिनि ताहाके खुब एकटा कड़ा जवाब दिते याइतेछिलेन—ललिता ताहाते बाधा दिया ताँहाके कहिल, "एतदिन आपनार श्रेष्ठता आमरा अनेक सह्य करेछि, किन्तु आपनि यदि बाबार चेयेओ बड़ो हते चान ता हले ए बाड़िते आपनाके केउ सह्य करते पारबे ना—आमादेर बेयाराटा पर्यन्त ना।"

हारानबाबु बलिया उठिलेन, "ललिता, तुमि—"

ललिता ताँहाके बाधा दिया तीव्रस्वरे कहिल, "चुप करुन। आपनार कथा आमरा अनेक शुनेछि, आज आमार कथाटा शुनुन। यदि विश्वास ना करेन तबे सुचिदिदिके जिज्ञासा करबेन—आपनि निजेके यत बड़ो बले कल्पना करेन आमार बाबा तार चेये अनेक बेशि बड़ो। एइबार आपनार या किछु उपदेश आमाके देबार आछे आपनि दिये यान।"

हारानबाबुर मुख कालो हइया उठिल। तिनि चौकि छाड़िया उठिया कहिलेन, "सुचरिता!"

सुचरिता बइयेर पाता हइते मुख तुलिल। हारानबाबु कहिलेन, "तोमार सामने ललिता आमाके अपमान करबे?"

सुचरिता धीरस्वरे कहिल, "आपनाके अपमान करा ओर उद्देश्य नय—ललिता बलते चाय बाबाके आपनि सम्मान करे चलबेन। ताँर मतो सम्मानेर योग्य आमरा तो काउकेइ जानि ने।"

एकबार मने हइल, हारानबाबु एखनि चलिया याइबेन, किन्तु तिनि उठिलेन ना। मुख अत्यन्त गम्भीर करिया बसिया पड़िलेन। ए बाड़िते क्रमे क्रमे ताँहार सम्भ्रम नष्ट हइतेछे, इहा तिनि यतइ अनुभव करितेछेन ततइ तिनि एखाने आपन आसन दखल करिया बसिबार जन्य आरओ बेशि परिमाणे सचेष्ट हइया उठितेछेन। भुलितेछेन ये, ये-आश्रय जीर्ण ताहाके यतइ जोरेर सङ्गे आँकड़िया धरा याय ताहा ततइ भाङिते थाके।

हारानबाबु रुष्ट गाम्भीर्येर सहित चुप करिया रहिलेन देखिया ललिता उठिया गिया सुचरितार पाशे बसिल एवं ताहार सहित मृदुस्वरे एमन करिया कथावार्ता आरम्भ करिया दिल येन विशेष किछुइ घटे नाइ।

इतिमध्ये सतीश घरे ढुकिया सुचरितार हात धरिया टानिया कहिल, "बड़दिदि एसो।"

सुचरिता कहिल, "कोथाय येते हबे।"

सतीश कहिल, "एसो-ना, तोमाके एकटा जिनिस देखाब। ललितादिदि, तुमि बले दाओ नि?"

ललिता कहिल, "ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताहार मासिर कथा ललिता सुचरितार काछे फाँस करिया दिबे ना, सतीशेर सङ्गे एइरूप कथा छिल ; ललिता आपन प्रतिश्रुति पालन करियाछिल।

अतिथिके छाड़िया सुचरिता याइते पारिल ना ; कहिल, "बक्तियार, आर-एकटु परे याच्छि—बाबा आगे स्नान करे आसुन।"

सतीश छट्फट् करिते लागिल। कोनोमते हारानबाबुके विलुप्त करिते पारिले से चेष्टार त्रुटि करित ना। हारानबाबुके से अत्यन्त भय करित बलिया ताँहाके कोनो कथा बलिते पारिल ना। हारानबाबु माझे माझे सतीशेर स्वभाव-संशोधनेर चेष्टा करा छाड़ा ताहार सङ्गे आर कोनोप्रकार संस्रव राखेन नाइ।

परेशबाबु स्नान करिया आसिबामात्र सतीश ताहार दुइ दिदिके टानिया लइया गेल।

हारान कहिलेन, "सुचरितार सम्बन्धे सेइ ये प्रस्तावटा छिल, आमि आर विलम्ब करते चाइ ने। आमार इच्छा, आसछे रविवारेइ से-काजटा हये याय।"

परेशबाबु कहिलेन, "आमार ताते तो कोनो आपत्ति नेइ, सुचरितार मत हलेइ हल।"

हारान। ताँर तो मत पूर्वेइ नेओया हयेछे।

परेशबाबु। आच्छा, तबे सेइ कथाइ रइल।

३५

सेदिन ललितार निकट हइते आसिया विनयेर मनेर मध्ये काँटार मतो एकटा संशय केवलइ फिरिया फिरिया बिँधिते लागिल। से भाविते लागिल, 'परेशबाबुर बाड़िते आमार याओयाटा केह इच्छा करे वा ना-करे ताहा ठिक ना जानिया आमि गाये पड़िया सेखाने यातायात करितेछि। हयतो सेटा उचित नहे। हयतो अनेक बार असमये आमि इँहादिगके अस्थिर करिया तुलियाछि। इँहादेर समाजेर नियम आमि जानि ना ; ए बाड़िते आमार अधिकार ये कोन् सीमा पर्यन्त ताहा आमार किछुइ जाना नाइ। आमि हयतो मूढ़ेर मतो एमन जायगाय प्रवेश करितेछि येखाने आत्मीय छाड़ा काहारओ गतिविधि निषेध।'

एइ कथा भाबिते भाबिते हठात् ताहार मने हइल, ललिता हयतो आज ताहार मुखेर भावे एमन एकटा किछु देखिते पाइयाछे याहाते से अपमान बोध करियाछे। ललितार प्रति विनयेर मनेर भाव ये की एतदिन ताहा विनयेर काछे स्पष्ट छिल ना। आज आर ताहा गोपन नाइ। हृदयेर भितरकार एइ नूतन अभिव्यक्ति लइया ये की करिते हइबे ताहा से किछुइ भाविया पाइल ना। बाहिरेर सङ्गे इहार योग की, संसारेर सङ्गे इहार सम्बन्ध की, इहा कि ललितार प्रति असम्मान, इहा कि परेशबाबुर प्रति विश्वासघातकता, ताहा लइया से सहस्रबार करिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोलापाड़ा करिते लागिल। ललितार काछे से धरा पड़िया गेछे एवं सेइजन्यइ ललिता ताहार प्रति राग करियाछे, एइ कथा कल्पना करिया से येन माटिर सङ्गे मिशिया याइते लागिल।

परेशबाबुर बाड़ि याओया विनयेर पक्षे असम्भव हइल, एवं निजेर बासार शून्यताओ येन एकटा भारेर मतो हइया ताहाके चापिते लागिल। परदिन भोरेर वेलाइ से आनन्दमयीर काछे आसिया उपस्थित हइल। कहिल, "मा, किछुदिन आमि तोमार एखाने थाकव।"

आनन्दमयीके गोरार विच्छेदशोके सान्त्वना दिबार अभिप्रायओ विनयेर मनेर मध्ये छिल। ताहा बुझिते पारिया आनन्दमयीर हृदय विगलित हइल। कोनो कथा ना बलिया तिनि सस्नेहे एकबार विनयेर गाये हात बुलाइया दिलेन।

विनय ताहार खाओयादाओया सेवाशुश्रूषा लइया बहुविध आबदार जुड़िया दिल। एखाने ताहार यथोचित यत्न हइतेछे ना बलिया से माझे माझे आनन्दमयीर सङ्गे मिथ्या कलह करिते लागिल। सर्वदाइ से गोलमाल बकाबकि करिया आनन्दमयीके ओ निजेके भुलाइया राखिते चेष्टा करिल। सन्ध्यार समय यखन मनके बाँधिया राखा दु:साध्य हइत, तखन विनय उत्पात करिया आनन्दमयीके ताँहार सकल गृहकर्म हइते छिनाइया लइया घरेर सम्मुखेर बारान्दाय मादुर पातिया बसित; आनन्दमयीके ताँहार छेलेवेलार कथा, ताँहार बापेर बाड़िर गल्प बलाइत; यखन ताँहार विवाह हय नाइ, यखन तिनि ताँहार अध्यापक पितामहेर टोलेर छात्रदेर अत्यन्त आदरेर शिशु छिलेन, एवं पितृहीना बालिकाके सकले मिलिया सकल विषयेइ प्रश्रय दित बलिया ताँहार विधवा मातार विशेष उद्वेगेर कारण छिलेन, सेइ-सकल दिनेर काहिनी। विनय बलित, "मा, तुमि ये कोनोदिन आमादेर मा छिले ना, से-कथा मने करले आमार आश्चर्य बोध हय। आमार बोध हय, टोलेर छेलेरा तोमाके तादेर खुब छोट्टो एतटुकु मा बलेइ जानत। दादामशायके बोध हय तुमिइ मानुष करबार भार नियेछिले।"

एकदिन सन्ध्यावेलाय मादुरेर उपरे प्रसारित आनन्दमयीर दुइ पायेर तलाय माथा राखिया विनय कहिल, "मा, इच्छा करे, आमार समस्त विद्याबुद्धि विधाताके फिरिये दिये शिशु हये तोमार ओइ कोले आश्रय ग्रहण करि—केवल तुमि, संसारे तुमि छाड़ा आमार आर किछुइ ना थाके।"

विनयेर कण्ठे हृदयभाराक्रान्त एकटा क्लान्ति एमन करिया प्रकाश पाइल ये, आनन्दमयी व्यथार सङ्गे विस्मय अनुभव करिलेन। तिनि विनयेर काछे सरिया वसिया आस्ते आस्ते ताहार माथाय हात बुलाइया दिते लागिलेन। अनेकक्षण चुप करिया थाकिया आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "विनु, परेशबाबुदेर बाड़िर सब खबर भालो?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइ प्रश्ने हठात् विनय लज्जित हइया चमकिया उठिल। भाबिल, 'मार काछे किछुइ लुकानो चले ना, मा आमार अन्तर्यामी।' कुण्ठितस्वरे कहिल, "हाँ, ताँरा तो सकलेइ भालो आछेन।"

आनन्दमयी कहिलेन, "आमार बड़ो इच्छा करे, परेशबाबुर मेयेदेर सङ्गे आमार चेना-परिचय हय। प्रथमे तो ताँदेर उपर गोरार मनेर भाव भालो छिल ना, किन्तु इदानीं ताके सुद्ध यखन ताँरा वश करते पेरेछेन तखन ताँरा सामान्य लोक हबेन ना।"

विनय उत्साहित हइया कहिल, "आमारओ अनेकबार इच्छा हयेछे परेशबाबुर मेयेदेर सङ्गे यदि कोनोमते तोमार आलाप करिये दिते पारि। पाछे गोरा किछु मने करे ब'ले आमि कोनो कथा बलि नि।"

आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "बड़ो मेयेटिर नाम की।"

एइरूप प्रश्नोत्तरे परिचय चलिते चलिते यखन ललितार प्रसङ्ग उठिया पड़िल तखन विनय सेटाके कोनोमते संक्षेपे सारिया दिबार चेष्टा करिल। आनन्दमयी बाधा मानिलेन ना। तिनि मने मने हासिया कहिलेन, "शुनेछि ललितार खुब बुद्धि ?"

विनय कहिल, "तुमि कार काछे शुनले ?"

आनन्दमयी कहिलेन, "केन, तोमारइ काछे।"

पूर्वे एमन एक समय छिल यखन ललितार सम्बन्धे विनयेर मने कोनोप्रकार संकोच छिल ना। सेइ मोहमुक्त अवस्थाय से ये आनन्दमयीर काछे ललितार तीक्ष्ण बुद्धि लइया अबाधे आलोचना करियाछिल से-कथा ताहार मनेइ छिल ना।

आनन्दमयी सुनिपुण माझिर मतो समस्त बाधा बाँचाइया ललितार कथा एमन करिया चालना करिया लइया गेलेन ये विनयेर सङ्गे ताहार परिचयेर इतिहासेर प्रधान अंशगुलि प्राय समस्तइ प्रकाश हइल। गोरार कारादण्डेर व्यापारे व्यथित हइया ललिता ये स्टीमारे एकाकिनी विनयेर सङ्गे पलाइया आसियाछे से-कथाओ विनय आज बलिया फेलिल। बलिते बलिते ताहार उत्साह बाड़िया उठिल—ये-अवसादे सन्ध्यावेलाय ताहाके चापिया धरियाछिल ताहा कोथाय काटिया गेल। से-ये ललितार मतो एमन एकटि आश्चर्य चरित्रके जानियाछे एवं एमन करिया ताहार कथा कहिते पारितेछे, इहाइ ताहार काछे एकटा परम लाभ बलिया मने हइते लागिल। रात्रे यखन आहारेर संवाद आसिल एवं कथा भाङिया गेल तखन हठात् येन स्वप्न हइते जागिया विनय बुझिते पारिल, ताहार मने याहा-किछु कथा छिल आनन्दमयीर काछे ताहा समस्तइ बला हइया गेछे। आनन्दमयी एमन करिया समस्त शुनिलेन, एमन करिया समस्त ग्रहण करिलेन ये, इहार मध्ये ये किछु लज्जा करिबार आछे ताहा विनयेर मनेइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हइल ना। आज पर्यन्त मार काछे लुकाइबार कथा विनयेर किछुइ छिल ना—अति तुच्छ कथाटिओ से ताँहार काछे आसिया बलित। किन्तु, परेशबाबुर परिवारेर सङ्गे आलाप हइया अवधि कोथाय एकटा बाधा पड़ियाछिल। सेइ बाधा विनयेर पक्षे स्वास्थ्यकर हय नाइ। आज ललितार सम्बन्धे ताहार मनेर कथा सूक्ष्मदर्शिनी आनन्दमयीर काछे एकरकम करिया समस्त प्रकाश हइया गेछे, ताहा अनुभव करिया विनय उल्लसित हइया उठिल। मातार काछे ताहार जीवनेर एइ व्यापारटा सम्पूर्ण निवेदन करिते ना पारिले कथाटा कोनोमतेइ निर्मल हइया उठित ना—इहा ताहार चिन्तार मध्ये कालिर दाग दिते थाकित।

रात्रे आनन्दमयी अनेकक्षण एइ कथा लइया मने मने आलोचना करियाछिलेन। गोरार जीवने ये-समस्या उत्तरोत्तर जटिल हइया उठितेछिल परेशबाबुर घरेइ ताहार एकटा मीमांसा घटिते पारे एइ कथा मने करिया तिनि भाबिते लागिलेन, येमन करिया हउक, मेयेदेर सङ्गे एकबार देखा करिते हइबे।

३६

शशिमुखीर सङ्गे विनयेर विवाह येन एकप्रकार स्थिर हइया गेछे एइभावे महिम एवं ताहार घरेर लोकेरा चलितेछिलेन। शशिमुखी तो विनयेर काछेओ आसित ना। शशिमुखीर मार सङ्गे विनयेर परिचय छिल ना बलिलेइ हय। तिनि ये ठिक लाजुक छिलेन ताहा नहे, किन्तु अस्वाभाविक रकमेर गोपनचारिणी छिलेन। ताँहार घरेर दरजा प्रायइ बन्ध। स्वामी छाड़ा ताँहार आर-समस्तइ तालाचाबिर मध्ये। स्वामीओ ये यथेष्ट खोला पाइतेन ताहा नहे—स्त्रीर शासने ताँहार गतिविधि अत्यन्त सुनिर्दिष्ट एवं ताँहार सञ्चरणक्षेत्रेर परिधि नितान्त संकीर्ण छिल। एइरूप घेर दिया लओयार स्वभाववशत शशिमुखीर मा लक्ष्मीमणिर जगत्‌टि सम्पूर्ण ताँहार आयत्तेर मध्ये छिल—सेखाने बाहिरेर लोकेर भितरे एवं भितरेर लोकेर बाहिरे याओयार पथ अवारित छिल ना। एमन-कि, गोराओ लक्ष्मीमणिर महले तेमन करिया आमल पाइत ना। एइ राज्येर विधिव्यवस्थार मध्ये कोनो द्वैध छिल ना। कारण, एखानकार विधानकर्ताओ लक्ष्मीमणि एवं निम्न-आदालत हइते आपिल-आदालत पर्यन्त समस्तइ लक्ष्मीमणि—एक्‌जिक्युटिभ एवं जुडिशियाले तो भेद छिलइ ना, लेजिस्‌लेटिभ्‌ओ ताहार सहित जोड़ा छिल। बाहिरेर लोकेर सङ्गे व्यवहारे महिमके खुब शक्त लोक बलियाइ मने हइत, किन्तु लक्ष्मीमणिर एलाकार मध्ये ताँहार निजेर इच्छा खाटाइबार कोनो पथ छिल ना। सामान्य विषयेओ ना।

लक्ष्मीमणि विनयके आड़ाल हइते देखियाछिलेन, पछन्दओ करियाछिलेन। महिम विनयेर बाल्यकाल हइते गोरार बन्धुरूपे ताहाके एमन नियत देखिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसियाछेन ये, अतिपरिचयवशतइ तिनि विनयके निजेर कन्यार पात्र बलिया देखितेइ पान नाइ। लक्ष्मीमणि यखन विनयेर प्रति ताँहार दृष्टि आकर्षण करिलेन तखन सहधर्मिणीर बुद्धिर प्रति ताँहार श्रद्धा बाड़िया गेल। लक्ष्मीमणि पाका करियाइ स्थिर करिया दिलेन ये, विनयेर सङ्गेइ ताँहार कन्यार विवाह हइबे ; एइ प्रस्तावेर एकटा मस्त सुविधार कथा तिनि ताँहार स्वामीर मने मुद्रित करिया दिलेन ये, विनय ताँहादेर काछ हइते कोनो पण दावि करिते पारिबे ना।

विनयके बाड़िते पाइयाओ दुइ-एकदिन महिम ताहाके विवाहेर कथा बलिते पारेन नाइ। गोरार कारावास सम्बन्धे ताहार मन विषण्ण छिल बलिया तिनि निरस्त छिलेन।

आज रविवार छिल। गृहिणी महिमेर साप्ताहिक दिवानिद्राटि सम्पूर्ण हइते दिलेन ना। विनय नूतन-प्रकाशित वङ्किमेर 'वङ्गदर्शन' लइया आनन्दमयीके शुनाइतेछिल—पानेर डिबा हाते लइया सेइखाने आसिया महिम तक्तपोशेर उपरे धीरे धीरे बसिलेन।

प्रथमत विनयके एकटा पान दिया तिनि गोरार उच्छृङ्खल निर्बुद्धिता लइया विरक्ति प्रकाश करिलेन। ताहार परे ताहार खालास हइते आर कयदिन बाकि ताहा आलोचना करिते गिया अत्यन्त अकस्मात् मने पड़िया गेल ये, अघ्रान मासेर प्राय अर्धेक हइया आसियाछे।

कहिलेन, "विनय, तुमि ये बलेछिले, अघ्रान मासे तोमादेर वंशे विवाह निषेध आछे, सेटा कोनो काजेर कथा नय। एके तो पाँजि-पुँथिते निषेध छाड़ा कथाइ नेइ, तार उपरे यदि घरेर शास्त्र बानाते थाक ता हले वंशरक्षा हबे की करे।"

विनयेर संकट देखिया आनन्दमयी कहिलेन, "शशिमुखीके एतटुकुबेला थेके विनय देखे आसछे—ओके बिये करार कथा ओर मने लागछे ना ; सेइजन्येइ अघ्रान मासेर छुतो करे बसे आछे।"

महिम कहिलेन, "से-कथा तो गोड़ाय बललेइ हत।"

आनन्दमयी कहिलेन, "निजेर मन बुझतेओ ये समय लागे। पात्रेर अभाव की आछे, महिम। गोरा फिरे आसुक, से तो अनेक भालो छेलेके जाने—से एकटा ठिक करे दिते पारबे।"

महिम मुख अन्धकार करिया कहिलेन, "हुँ!" खानिकक्षण चुप करिया रहिलेन, ताहार परे कहिलेन, "मा, तुमि यदि विनयेर मन भाङिये ना दिते ता हले ओ ए-काजे आपत्ति करत ना।"

विनय व्यस्त हइया की एकटा बलिते याइतेछिल, आनन्दमयी बाधा दिया कहिलन, "ता, सत्य कथा बलछि महिम, आमि ओके उत्साह दिते पारि नि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय छेलेमानुष, ओ हयतो ना बुझे एकटा काज करे बसतेओ पारत, किन्तु शेषकाले भालो हत ना।"

आनन्दमयी विनयके आड़ाल राखिया निजेर 'परेइ महिमेर रागेर धाक्काटा ग्रहण करिलेन। विनय ताहा बुझिते पारिया निजेर दुर्बलताय लज्जित हइया उठिल। से निजेर असम्मति स्पष्ट करिया प्रकाश करिते उद्यत हइले महिम आर अपेक्षा ना करिया मने मने एइ बलिते बलिते बाहिर हइया गेलेन ये, विमाता कखनो आपन हय ना।

महिम ये ए कथा मने करिते पारेन एवं विमाता बलिया तिनि ये संसारेर विचारक्षेत्रे बराबर आसामि-श्रेणीतेइ भुक्त आछेन, आनन्दमयी ताहा जानितेन। किन्तु, लोके की मने करिबे ए कथा भाबिया चला ताँहार अभ्यासइ छिल ना। येदिन तिनि गोराके कोले तुलिया लइयाछेन सेइदिन हइतेइ लोकेर आचार, लोकेर विचार हइते ताँहार प्रकृति एकेबारे स्वतन्त्र हइया गेछे। सेदिन हइते तिनि एमन-सकल आचरण करिया आसितेछेन याहाते लोके ताँहार निन्दाइ करे। ताँहार जीवनेर मर्मस्थाने ये एकटि सत्यगोपन ताँहाके सर्वदा पीड़ा दितेछे लोक-निन्दाइ ताँहाके सेइ पीड़ा हइते कतकटा परिमाणे मुक्तिदान करे। लोके यखन ताँहाके खृस्टान बलित तिनि गोराके कोले चापिया धरिया बलितेन, 'भगवान जानेन खृस्टान बलिले आमार निन्दा हय ना।' एमनि करिया क्रमे सकल विषयेइ लोकेर कथा हइते निजेर व्यवहारके विच्छिन्न करिया लओया ताँहार स्वभावसिद्ध हइयाछिल। एइजन्य महिम ताँहाके मने मने वा प्रकाश्ये विमाता बलिया लाञ्छित करिलेओ तिनि निजेर पथ हइते विचलित हइतेन ना।

आनन्दमयी कहिलेन, "विनु, तुमि परेशबाबुदेर बाड़ि अनेक दिन याओ नि।"

विनय कहिल, "अनेक दिन आर कइ हल।"

आनन्दमयी। स्टीमार थेके आसार परदिन थेके तो एकवारओ याओ नि।

से तो बेशिदिन नहे। किन्तु, विनय जानित, माझे परेशबाबुर बाड़ि ताहार यातायात एत बाड़ियाछिल ये, आनन्दमयीर पक्षेओ ताहार दर्शन दुर्लभ हइया उठियाछिल। से-हिसाबे परेशबाबुर बाड़ि अनेक दिन याओया हय नाइ, एवं लोकेर ताहा लक्ष्य करिवार विषय हइयाछे वटे।

विनय निजेर धुतिर प्रान्त हइते एकटा सुता छिँड़िते छिँड़िते चुप करिया रहिल।

एमन समय वेहारा आसिया खबर दिल, "माजि, काँहासे मायीलोक आया।"

विनय ताड़ाताड़ि उठिया दाँड़ाइल। के आसिल, कोथा हइते आसिल, खबर लइते लइतेइ सुचरिता ओ ललिता घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल। विनयेर घर छाड़िया बाहिरे याओया घटिल ना; से स्तम्भित हइया दाँड़ाइया रहिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुजने आनन्दमयीर पायेर धुला लइया प्रणाम करिल। ललिता विनयके विशेष लक्ष्य करिल ना ; सुचरिता ताहाके नमस्कार करिया कहिल, "भालो आछेन ?"

आनन्दमयीर दिके चाहिया से कहिल, "आमरा परेशबाबुर बाड़ि थेके आसछि।"

आनन्दमयी ताहादिगके आदर करिया बसाइया कहिलेन, "आमाके से-परिचय दिते हबे ना। तोमादेर देखि नि, मा, किन्तु तोमादेर आपनार घरेर बलेइ जानि।"

देखिते देखिते कथा जमिया उठिल। विनय चुप करिया बसिया आछे देखिया सुचरिता ताहाके आलापेर मध्ये टानिया लइबार चेष्टा करिल ; मृदुस्वरे जिज्ञासा करिल, "आपनि अनेक दिन आमादेर ओखाने यान नि ये ?"

विनय ललितार दिके एकबार दृष्टिनिक्षेप करिया लइया कहिल, "घन घन विरक्त करले पाछे आपनादेर स्नेह हाराइ, मने एइ भय हय।"

सुचरिता एकटु हासिया कहिल, "स्नेहओ ये घन घन विरक्तिर अपेक्षा राखे से आपनि जानेन ना बुझि ?"

आनन्दमयी कहिलेन, "ता ओ खुब जाने, मा। की बलब तोमादेर, समस्त दिन ओर फरमाशे आर आबदारे आमार यदि एकटु अवसर थाके।"

एइ बलिया स्निग्धदृष्टि द्वारा विनयके निरीक्षण करिलेन।

विनय कहिल, "ईश्वर तोमाके धैर्य दियेछेन, आमाके दिये तारइ परीक्षा करिये निच्छेन।"

सुचरिता ललिताके एकटु ठेला दिया कहिल, "शुनछिस, भाइ ललिता ? आमादेर परीक्षाटा बुझि शेष हये गेल ! पास करते पारि नि बुझि ?"

ललिता ए कथाय किछुमात्र योग दिल ना देखिया आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "एबार आमादेर विनु निजेर धैर्येर परीक्षा करछेन। तोमादेर ओ ये की चक्षे देखेछे से तो तोमरा जान ना। सन्ध्येवेलाय तोमादेर कथा छाड़ा कथा नेइ। आर, परेशबाबुर कथा उठले ओ तो एकेबारे गले याय।"

आनन्दमयी ललितार मुखेर दिके चाहिलेन, से खुब जोर करिया चोख तुलिया राखिल बटे, किन्तु वृथा लाल हइया उठिल।

आनन्दमयी कहिलेन, "तोमार बाबार जन्ये ओ कत लोकेर सङ्गे झगड़ा करेछे ! ओर दलेर लोकेरा तो ओके ब्राह्म बले जाते ठेलबार जो करेछे। विनु, अमन अस्थिर हये उठले चलबे ना, बाछा—सत्यि कथाइ बलछि। एते लज्जा करबारओ तो कोनो कारण देखि ने। की बल, मा।"

एबार ललितार मुखेर दिके चाहितेइ ताहार चोख नामिया पड़िल। सुचरिता कहिल, "विनयबाबु ये आमादेर आपनार लोक बले जानेन, से आमरा खुब जानि—किन्तु से ये केवल आमादेरइ गुणे ता नय, से ओंर निजेर क्षमता।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "ता ठिक बलते पारि ने, मा। ओके तो एतटुकुबेला थेके देखछि, एतदिन ओर बन्धुर मध्ये एक आमार गोराइ छिल; एमन-कि, आमि देखेछि, ओदेर निजेर दलेर लोकेर सङ्गेओ विनय मिलते पारे ना। किन्तु, तोमादेर सङ्गे ओर दुदिनेर आलापे एमन हयेछे ये आमराओ ओर नागाल पाइ ने। भेबेछिलुम, एइ निये तोमादेर सङ्गे झगड़ा करब, किन्तु एखन देखते पाच्छि, आमाकेओ ओरइ दले भिड़ते हबे। तोमरा सक्कलकेइ हार मानाबे।"

एइ बलिया आनन्दमयी एकबार ललितार ओ एकबार सुचरितार चिबुक स्पर्श करिया अंगुलि द्वारा चुम्बन ग्रहण करिलेन।

सुचरिता विनयेर दुरवस्था लक्ष्य करिया सदयचित्ते कहिल, "विनयबाबु, बाबा एसेछेन; तिनि बाइरे कृष्णदयालबाबुर सङ्गे कथा कच्छेन।"

शुनिया विनय ताड़ाताड़ि बाहिरे चलिया गेल। तखन गोरा ओ विनयेर असामान्य बन्धुत्व लइया आनन्दमयी आलोचना करिते लागिलेन। श्रोता दुइ जने ये उदासीन नहे, ताहा बुझिते ताँहार बाकि छिल ना। आनन्दमयी जीवने एइ दुटि छेलेकेइ ताँहार मातृस्नेहेर परिपूर्ण अर्घ्य दिया पूजा करिया आसियाछेन; संसारे इहादेर चेये बड़ो ताँहार आर केह छिल ना। बालिकार पूजार शिवेर मतो इहादिगके तिनि निजेर हातेइ गड़ियाछेन बटे, किन्तु इहाराइ ताँहार समस्त आराधना ग्रहण करियाछे। ताँहार मुखे ताँहार एइ दुटि क्रोड़-देवतार काहिनी स्नेहरसे एमन मधुर उज्ज्वल हइया उठिल ये, सुचरिता एवं ललिता अतृप्तहृदये शुनिते लागिल। गोरा एवं विनयेर प्रति ताहादेर श्रद्धार अभाव छिल ना, किन्तु आनन्दमयीर मतो एमन मायेर एमन स्नेहेर भितर दिया ताहादेर सङ्गे येन आर-एकटु विशेष करिया, नूतन करिया परिचय हइल।

आनन्दमयीर सङ्गे आज जानाशुना हइया म्याजिस्ट्रेटेर प्रति ललितार राग आरओ येन बाड़िया उठिल। ललितार मुखे उष्णवाक्य शुनिया आनन्दमयी हासिलेन। कहिलेन, "मा, गोरा आज जेलखानाय ए दुःख ये आमाके किरकम बेजेछे ता अन्तर्यामीइ जानेन। किन्तु, साहेबेर उपर आमि राग करते पारि नि। आमि तो गोराके जानि, से येटाके भालो बोझे तार काछे आइनकानुन किछुइ माने ना; यदि ना माने तबे यारा विचारकर्ता तारा तो जेले पाठाबेइ—ताते तादेर दोष दिते याब केन। गोरार काज गोरा करेछे—ओदेर कर्तव्य ओरा करेछे—एते यादेर दुःख पावार तारा दुःख पाबेइ। आमार गोरार चिठि यदि पड़े देख, मा, ता हले बुझते पारबे, ओ दुःखके भय करे नि, कारओ उपर मिथ्ये रागओ करे नि—याते या फल हय ता समस्त निश्चय जेनेइ काज करेछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइ बलिया गोरार सयत्नरक्षित चिठिखानि बाक्स हइते बाहिर करिया सुचरितार हाते दिलेन। कहिलेन, "मा, तुमि चेंचिये पड़ो, आमि आर-एकबार शुनि।"

गोरार सेइ आश्चर्य चिठिखानि पड़ा हइया गेले पर तिन जनेइ किछुक्षण निस्तब्ध हइया रहिलेन। आनन्दमयी ताँहार चोखेर प्रान्त आँचल दिया मुछिलेन। से ये चोखेर जल ताहाते शुधु मातृहृदयेर व्यथा नहे, ताहार सङ्गे आनन्द एवं गौरव मिशिया छिल। ताँहार गोरा कि ये-से गोरा! म्याजिस्ट्रेट ताहार कसुर माप करिया ताहाके दया करिया छाड़िया दिबेन, से कि तेमनि गोरा! से ये अपराध समस्त स्वीकार करिया जेलेर दुःख इच्छा करिया निजेर काँधे तुलिया लइयाछे। ताहार से दुःखेर जन्य काहारओ सहित कोनो कलह करिबार नाइ। गोरा ताहा अकातरे वहन करितेछे एवं आनन्दमयीओ इहा सह्य करिते पारिबेन।

ललिता आश्चर्य हइया आनन्दमयीर मुखेर दिके चाहिया रहिल। ब्राह्म-परिवारेर संस्कार ललितार मने खुब दृढ़ छिल; ये मेयेरा आधुनिक प्रथाय शिक्षा पाय नाइ, एवं याहादिगके से 'हिँदुबाड़िर मेये' बलिया जानित, ताहादेर प्रति ललितार श्रद्धा छिल ना। शिशुकाले वरदासुन्दरी ताहादेर ये अपराधेर प्रति लक्ष्य करिया बलितेन 'हिँदुबाड़िर मेयेराओ एमन काज करे ना', से अपराधेर जन्य ललिता बराबर एकटु विशेष करियाइ माथा हेंट करियाछे। आज आनन्दमयीर मुखेर कयटि कथा शुनिया ताहार अन्तःकरण बार बार करिया विस्मय अनुभव करितेछे। येमन बल तेमनि शान्ति, तेमनि आश्चर्य सद्विवेचना। असंयत हृदयावेगेर जन्य ललिता निजेके एइ रमणीर काछे खुबइ खर्ब करिया अनुभव करिल। ताहार मनेर भितरे आज भारि एकटा क्षुब्धता छिल, सेइजन्य से विनयेर मुखेर दिके चाय नाइ, तार सङ्गे कथाओ कय नाइ। किन्तु, आनन्दमयीर स्नेहे करुणाय ओ शान्तिते मण्डित मुखखानिर दिके चाहिया ताहार बुकेर भितरकार समस्त विद्रोहेर ताप येन जुड़ाइया गेल—चारि दिकेर सकलेर सङ्गे ताहार सम्बन्ध सहज हइया आसिल। ललिता आनन्दमयीके कहिल, "गौरबाबु ये एत शक्ति कोथा थेके पेयेछेन ता आपनाके देखे आज बुझते पारलुम।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ठिक बोझ नि। गोरा यदि आमार साधारण छेलेर मतो हत ता हले आमि कोथा थेके बल पेतुम। ता हले कि तार दुःख आमि एमन करे सह्य करते पारतुम।"

ललितार मनटा आज केन ये एतटा विकल हइया उठियाछिल ताहार एकटु इतिहास बला आवश्यक।

ए कयदिन प्रत्यह सकाले बिछाना हइते उठियाइ प्रथम कथा ललितार मने एइ जागियाछे ये, विनयबाबु आसिबेन ना। अथच समस्त दिनइ ताहार मन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक मुहूर्तेर जन्यओ विनयेर आगमन प्रतीक्षा करिते छाड़े नाइ। क्षणे क्षणे से केवलइ मने करियाछे, विनय हयतो आसियाछे, हयतो से उपरे ना आसिया निचेर घरे परेशबाबुर सङ्गे कथा कहितेछे। एइजन्य दिनेर मध्ये कतबार से अकारणे ए-घरे ओ-घरे घुरियाछे ताहार ठिक नाइ। अवशेषे दिन यखन अवसान हय, रात्रे यखन से बिछानाय शुइते याय तखन से निजेर मनखाना लइया की ये करिबे भाबिया पाय ना। बुक फाटिया कान्ना आसे, सङ्गे सङ्गे राग हइते थाके; काहार उपरे राग बुझिया उठाइ शक्त। राग बुझि निजेर उपरेइ। केवलइ मने हय, 'ए की हइल। आमि बाँचिब की करिया। कोनो दिके ताकाइया ये कोनो रास्ता देखिते पाइ ना। एमन करिया कतदिन चलिबे।'

ललिता जाने, विनय हिन्दु; कोनोमतेइ विनयेर सङ्गे ताहार विवाह हइते पारे ना। अथच निजेर हृदयके कोनोमतेइ वश मानाइते ना पारिया लज्जाय भये ताहार प्राण शुकाइया गेछे। विनयेर हृदय ये ताहार प्रति विमुख नहे, ए कथा से बुझियाछे; बुझियाछे बलियाइ निजेके संवरण करा ताहार पक्षे आज एत कठिन हइयाछे। सेइजन्यइ से यखन उतला हइया विनयेर आशापथ चाहिया थाके सेइ सङ्गेइ ताहार मनेर भितरे एकटा भय हइते थाके, पाछे विनय आसिया पड़े। एमनि करिया निजेर सङ्गे टानाटानि करिते करिते आज सकाले ताहार धैर्य आर बाँध मानिल ना। ताहार मने हइल, विनय ना-आसातेइ ताहार प्राणेर भितरटा केवलइ अशान्त हइया उठितेछे; एकबार देखा हइलेइ एइ अस्थिरता दूर हइया याइबे।

सकालवेला से सतीशके निजेर घरेर मध्ये टानिया आनिल। सतीश आजकाल मासिके पाइया विनयेर सङ्गे बन्धुत्वचर्चार कथा एकरकम भुलियाइ छिल। ललिता ताहाके कहिल, "विनयबाबुर सङ्गे तोर बुझि झगड़ा हये गेछे?"

से एइ अपवाद सतेजे अस्वीकार करिल। ललिता कहिल, "भारि तो तोर बन्धु। तुइ केवल विनयबाबु-विनयबाबु करिस, तिनि तो फिरेओ ताकान ना।"

सतीश कहिल, "इस, ताइ तो। कखनो ना।"

परिवारेर मध्ये क्षुद्रतम सतीशके निजेर गौरव सप्रमाण करिबार जन्य एमनि करिया बारम्बार गलार जोर प्रयोग करिते हय। आज प्रमाणके ताहार चेयेओ दृढ़तर करिबार जन्य से तखनइ विनयेर बासाय छुटिया गेल। फिरिया आसिया कहिल, "तिनि ये बाड़िते नेइ, ताइ जन्ये आसते पारेन नि।"

ललिता जिज्ञासा करिल, "ए क'दिन आसेन नि केन।"

सतीश कहिल, "क'दिनइ ये छिलेन ना।"

तखन ललिता सुचरितार काछे गिया कहिल, "दिदिभाइ, गौरबाबुर मायेर काछे आमादेर किन्तु एकबार याओया उचित।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "ताँदेर सङ्गे ये परिचय नेइ।"

ललिता कहिल, "बाः, गौरबाबुर बाप ये बाबार छेलेवेलाकार बन्धु छिलेन।"

सुचरितार मने पड़िया गेल ; कहिल, "हाँ, ता बटे।"

सुचरिताओ अत्यन्त उत्साहित हइया उठिल। कहिल, "ललिताभाइ, तुमि याओ, बाबार काछे बलो गे।"

ललिता कहिल, "ना, आमि बलते पारब ना, तुमि बलो गे।"

शेषकाले सुचरिताइ परेशबाबुर काछे गिया कथाटा पाड़ितेइ तिनि बलिलेन, "ठिक बटे, एतदिन आमादेर याओया उचित छिल।"

आहारेर पर याओयार कथाटा यखनि स्थिर हइया गेल तखनि ललितार मन बाँकिया उठिल। तखन आबार कोथा हइते अभिमान एवं संशय आसिया ताहाके उल्टा दिके टानिते लागिल। सुचरिताके गिया से कहिल, "दिदि, तुमि बाबार सङ्गे याओ। आमि याब ना।"

सुचरिता कहिल, "से कि हय ! तुइ ना गेले आमि एकला येते पारब ना। लक्ष्मी आमार, भाइ आमार—चल् भाइ, गोल करिस ने।"

अनेक अनुनये ललिता गेल। किन्तु विनयेर काछे से ये परास्त हइयाछे ; विनय अनायासेइ ताहादेर बाड़ि ना आसिया पारिल आर से आज विनयके देखिते छुटियाछे, एइ पराभवेर अपमाने ताहार विषम एकटा राग हइते लागिल। विनयके एखाने देखिते पाइबार आशातेइ आनन्दमयीर बाड़ि आसिबार जन्य ये ताहार एतटा आग्रह जन्मियाछिल, एइ कथाटा से मने मने एकेबारे अस्वीकार करिबार चेष्टा करिते लागिल एवं निजेर सेइ जिद बजाय राखिबार जन्य, ना विनयेर दिके ताकाइल, ना ताहार नमस्कार फिराइया दिल, ना ताहार सङ्गे एकटा कथा कहिल। विनय मने करिल, ललितार काछे ताहार मनेर गोपन कथाटा धरा पड़ियाछे बलियाइ से अवज्ञार द्वारा ताहाके एमन करिया प्रत्याख्यान करितेछे। ललिता ये ताहाके भालोबासितेओ पारे, ए कथा अनुमान करिबार उपयुक्त आत्माभिमान विनयेर छिल ना।

विनय आसिया संकोचे दरजार काछे दाँड़ाइया कहिल, "परेशबाबु एखन बाड़ि येते चाच्छेन, एंदेर सकलके खबर दिते बललेन।"

ललिता याहाते ताहाके ना देखिते पाय एमन करियाइ विनय दाँड़ाइयाछिल।

आनन्दमयी कहिलेन, "से कि हय। किछु मिष्टिमुख ना करे बुझि येते पाबेन। आर बेशि देरि हबे ना। तुमि एखाने एकटु बोसो विनय, आमि एकबार देखे आसि। बाइरे दाँड़िये रइले केन, घरेर मध्ये एसे बोसो।"

विनय ललितार दिके आड़ करिया कोनोमते दूरे एक जायगाय बसिल। येन विनयेर प्रति ताहार व्यवहारेर कोनो वैलक्षण्य हय नाइ एमनि सहजभावे ललिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहिल, "विनयबाबु, आपनार बन्धु सतीशके आपनि एकेबारे त्याग करेछेन कि ना जानबार जन्ये, से आज सकाले आपनार बाड़ि गियेछिल ये।"

हठात् दैववाणी हइले मानुष येमन आश्चर्य हइया याय सेइरूप विस्मये विनय चमकिया उठिल। ताहार सेइ चमकटा देखा गेल बलिया से अत्यन्त लज्जित हइल। ताहार स्वभावसिद्ध नैपुण्येर सङ्गे कोनो जवाब करिते पारिल ना ; मुख ओ कर्णमूल लाल करिया कहिल, "सतीश गियेछिल ना कि। आमि तो बाड़िते छिलुम ना।"

ललितार एइ सामान्य एकटा कथाय विनयेर मने एकटा अपरिमित आनन्द जन्मिल। एक मुहूर्ते विश्वजगतेर उपर हइते एकटा प्रकाण्ड संशय येन निश्वास-रोधकर दुःस्वप्नेर मतो दूर हइया गेल। येन एइटुकु छाड़ा पृथिवीते ताहार काछे प्रार्थनीय आर किछु छिल ना। ताहार मन बलिते लागिल, 'बाँचिलाम, बाँचि-लाम।'—ललिता राग करे नाइ, ललिता ताहार प्रति कोनो सन्देह करितेछे ना।

देखिते देखिते समस्त बाधा काटिया गेल। सुचरिता हासिया कहिल, "विनयबाबु हठात् आमादेर नखी दन्ती शृङ्गी अस्त्रपाणि किंवा ऐरकम एकटा किछु बले सन्देह करे बसेछेन।"

विनय कहिल, "पृथिवीते यारा मुख फुटे नालिश करते पारे ना, चुप करे थाके, ताराइ उल्टे आसामि हय। दिदि, तोमार मुखे ए कथा शोभा पाय ना—तुमि निजे कत दूरे चले गियेछ, एखन अन्यके दूर बले मने करछ।"

विनय आज प्रथम सुचरिताके दिदि बलिल। सुचरितार काने ताहा मिष्ट लागिल, विनयेर प्रति प्रथम-परिचय हइतेइ सुचरितार ये एकटि सौहृद्य जन्मिया-छिल एइ 'दिदि' सम्बोधन मात्रेइ ताहा येन एकटि स्नेहपूर्ण विशेष आकार धारण करिल।

परेशबाबु ताँहार मेयदेर लइया यखन विदाय लइया गेलेन तखन दिन प्राय शेष हइया गेछे। विनय आनन्दमयीके कहिल, "मा, आज तोमाके कोनो काज करते देब ना। चलो उपरेर घरे।"

विनय ताहार चित्तेर उद्वेलता संवरण करिते पारितेछिल ना। आनन्दमयीके उपरेर घरे लइया गिया मेझेर उपरे निजेर हाते मादुर पातिया ताँहाके बसाइल। आनन्दमयी विनयके जिज्ञासा करिलेन, "विनु, की, तोर कथाटा की।"

विनय कहिल, "आमार कोनो कथा नेइ, तुमि कथा बलो।"

परेशबाबुर मेयेदिगके आनन्दमयीर केमन लागिल सेइ कथा शुनिबार जन्यइ विनयेर मन छट्फट् करितेछिल।

आनन्दमयी कहिलेन, "बेश, एइजन्ये तुइ बुझि आमाके डेके आनलि। आमि बलि, बुझि कोनो कथा आछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "ना डेके आनले एमन सूर्यास्तटि तो देखते पेते ना।"

सेदिन कलिकातार छादगुलिर उपरे अग्रहायणेर सूर्य मलिनभावेइ अस्त याइतेछिल––वर्णच्छटार कोनो वैचित्र्य छिल ना––आकाशेर प्रान्ते धूमलवर्णेर वाष्पेर मध्य सोनार आभा अस्पष्ट हइया जड़ाइया छिल। किन्तु, एइ म्लान सन्ध्यार धूसरताओ आज विनयेर मनके राङाइया तुलियाछे। ताहार मने हइते लागिल, चारि दिक ताहाके येन निविड़ करिया घिरियाछे, आकाश ताहाके येन स्पर्श करितेछे।

आनन्दमयी कहिलेन, "मेये दुटि बड़ो लक्ष्मी।"

विनय एइ कथाटाते थामिते दिल ना। नाना दिक दिया एइ आलोचनाके जाग्रत करिया राखिल। परेशबाबुर मेयदेर सम्बन्धे कतदिनकार कत छोटोखाटो घटनार कथा उठिया पड़िल––ताहार अनेकगुलिइ अकिञ्चित्कर, किन्तु सेइ अग्रहायणेर म्लानायमान निभृत सन्ध्याय निराला घरे विनयेर उत्साह एवं आनन्दमयीर औत्सुक्य द्वारा एइ-सकल क्षुद्र गृहकोणेर अख्यात इतिहासखण्ड एकटि गम्भीर महिमाय पूर्ण हइया उठिल।

आनन्दमयी हठात् एक समय निश्वास फेलिया बलिया उठिलेन, "सुचरितार सङ्गे यदि गोरार बिये हते पारे तो बड़ो खुशि हइ।"

विनय लाफाइया उठिल ; कहिल, "मा, ए कथा आमि अनेकबार भेबेछि। ठिक गोरार उपयुक्त सङ्गिनी!"

आनन्दमयी। किन्तु, हबे कि।

विनय। केन हबे ना। आमार मने हय, गोरा ये सुचरिताके पछन्द करे ना ता नय।

गोरार मन ये कोनो एक जायगाय आकृष्ट हइयाछे आनन्दमयीर काछे ताहा अगोचर छिल ना। से मेयटि ये सुचरिता ताहाओ तिनि विनयेर नाना कथा हइते संग्रह करियाछिलन। खानिकक्षण चुप करिया थाकिया आनन्दमयी कहिलेन, "किन्तु, सुचरिता कि हिन्दुर घरे बिये करबे।"

विनय कहिल, "आच्छा, मा, गोरा कि ब्राह्मर घरे बिये करते पारे ना। तोमार कि ताते मत नेइ।"

आनन्दमयी। आमार खुब मत आछे।

विनय पुनश्च जिज्ञासा करिल, "आछे?"

आनन्दमयी कहिलेन "आछे बइ-कि, विनु। मानुषेर सङ्गे मानुषेर मनेर मिल नियेइ बिये––से-समये कोन् मन्तरटा पड़ा हल ता निये की आसे याय, बाबा। येमन करे होक, भगवानेर नामटा निलेइ हल।"

विनयेर मनेर भितर हइते एकटा भार नामिया गेल। से उत्साहित हइया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहिल, "मा, तोमार मुखे यखन ए-सब कथा शुनि आमार भारि आश्चर्य बोध हय। एमन औदार्य तुमि पेले कोथा थेके।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "गोरार काछ थेके पेयेछि।"

विनय कहिल, "गोरा तो एर उल्टो कथाइ बले।"

आनन्दमयी। बलले की हबे। आमार या-किछु शिक्षा सब गोरा थेकेइ हयेछे। मानुष वस्तुटि ये कत सत्य आर मानुष या निये दलादलि करे, झगड़ा करे मरे, ता ये कत मिथ्ये, से-कथा भगवान गोराके येदिन दियेछेन सेइदिनइ बुझिये दियेछेन। बाबा, ब्राह्मइ वा के, आर हिन्दुइ वा के। मानुषेर हृदयेर तो कोनो जात नेइ—सेइखानेइ भगवान सकलके मेलान एवं निजे एसेओ मेलेन ; ताँके ठेले दिये मन्तर आर मतेर उपरेइ मेलाबार भार दिले चले कि।

विनय आनन्दमयीर पायेर धुला लइया कहिल, "मा, तोमार कथा आमार बड़ो मिष्टि लागल। आमार दिनटा आज सार्थक हयेछे।"

३७

सुचरितार मासि हरिमोहिनीके लइया परेशेर परिवारे एकटा गुरुतर अशान्ति उपस्थित हइल। ताहा विवृत करिया बलिबार पूर्वे हरिमोहिनी सुचरितार काछे निजेर ये-परिचय दियाछिलेन ताहाइ संक्षेप करिया निचे लेखा गेल।—

आमि तोमार मायेर चेये दुइ बछरेर बड़ो छिलाम। बापेर बाड़िते आमादेर दुइ जनेर आदरेर सीमा छिल ना। केनना, तखन आमादेर घरे केवल आमरा दुइ कन्याइ जन्मग्रहण करियाछिलाम—बाड़िते आर शिशु केह छिल ना। काकादेर आदरे आमादेर माटिते पा फेलिबार अवकाश घटित ना।

आमार वयस यखन आट तखन पाल्सार विख्यात रायचौधुरीदेर घरे आमार विवाह हय। ताँहारा कुलेओ येमन धनेओ तेमन। किन्तु, आमार भाग्ये सुख घटिल ना। विवाहेर समय खरचपत्र लइया आमार श्वशुरेर सङ्गे पितार विवाद बाधियाछिल। आमार पितृगृहेर सेइ अपराध आमार श्वशुरवंश अनेक-दिन पर्यन्त क्षमा करिते पारेन नाइ। सकलेइ बलित, 'आमादेर छेलेर आबार बिये देब, देखि ओ-मेयेटार की दशा हय।' आमार दुर्दशा देखियाइ बाबा प्रतिज्ञा करियाछिलेन, कखनो धनीर घरे मेये दिबेन ना। ताइ तोमार माके गरिबेर घरेइ दियाछिलेन।

बहु परिवारेर घर छिल, आमाके आट-नय वत्सर वयसेर समयेइ रान्ना करिते हइत। प्राय पञ्चाश-षाट जन लोक खाइत। सकलेर परिवेषणेर परे कोनोदिन शुधु भात, कोनोदिन वा डाल-भात खाइयाइ काटाइते हइत। कोनोदिन वेला दुइटार समये, कोनोदिन वा एकेबारे वेला गेले आहार करिताम।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आहार करियाइ वैकालेर रान्ना चड़ाइते याइते हइत। रात एगारोटा-बारोटार समय खाइबार अवकाश घटित। शुइबार कोनो निर्दिष्ट जायगा छिल ना। अन्त:पुरे याहार सङ्गे येदिन सुविधा हइत ताहार सङ्गेइ शुइया पड़िताम। कोनो-दिन-वा पिँड़ि पातिया निद्रा दिते हइत।

बाड़िते आमार प्रति सकलेर ये-अनादर छिल आमार स्वामीर मनओ ताहाते विकृत ना हइया थाकिते पारे नाइ। अनेक दिन पर्यन्त तिनि आमाके दूरे दूरेइ राखियाछिलेन।

एमन समये आमार वयस यखन सतेरो तखन आमार कन्या मनोरमा जन्मग्रहण करे। मेयेके जन्म देओयाते श्वशुरकुले आमार गञ्जना आरओ बाड़िया गियाछिल। आमार सकल अनादर, सकल लाञ्छनार मध्ये एइ मेयेटिइ आमार एकमात्र सान्त्वना ओ आनन्द छिल। मनोरमाके ताहार बाप एवं आर-केह तेमन करिया आदर करे नाइ बलियाइ से आमार प्राणपण आदरेर सामग्री हइया उठियाछिल।

तिन वत्सर परे यखन आमार एकटि छेले हइल तखन हइते आमार अवस्थार परिवर्तन हइते लागिल। तखन आमि बाड़िर गृहिणी बलिया गण्य हइबार योग्य हइलाम। आमार शाशुड़ि छिलेन ना—आमार श्वशुरओ मनोरमा जन्मिबार दुइ वत्सर परेइ मारा यान। ताँहार मृत्युर परेइ विषय लइया देवरदेर सङ्गे मोकद्दमा बाधिया गेल। अवशेषे मामलाय अनेक सम्पत्ति नष्ट करिया आमरा पृथक हइलाम।

मनोरमार विवाहेर समय आसिल। पाछे ताहाके दूरे लइया याय, पाछे ताहाके आर देखिते ना पाइ, एइ भये पाल्सा हइते पाँच-छय क्रोश तफाते सिमुले ग्रामे ताहार विवाह दिलाम। छेलेटिके कार्तिकेर मतो देखिते। येमन रङ तेमनि चेहारा—खाओयापरार संगतिओ ताहादेर छिल।

एकदिन आमार येमन अनादर ओ कष्ट गियाछे, कपाल भाङिबार पूर्वे विधाता किछुदिनेर जन्य आमाके तेमनि सुख दियाछिलेन। शेषाशेषि आमार स्वामी आमाके बड़ोइ आदर ओ श्रद्धा करितेन, आमार सङ्गे परामर्श ना करिया कोनो काजइ करितेन ना। एत सौभाग्य आमार सहिबे केन। कलेरा हइया चारि दिनेर व्यवधाने आमार छेले एवं स्वामी मारा गेलेन। ये-दु:ख कल्पना करिलेओ असह्य बोध हय ताहाओ ये मानुषेर सय, इहाइ जानाइबार जन्य ईश्वर आमाके बाँचाइया राखिलेन।

क्रमेइ जामाइयेर परिचय पाइते लागिलाम। सुन्दरफुलेर मध्ये ये एमन कालसाप लुकाइया थाके ताहा के मने करिते पारे। से ये कुसंसर्गे पड़िया नेशा धरियाछिल ताहा आमार मेयेओ कोनोदिन आमाके बले नाइ। जामाइ यखन-तखन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसिया नाना अभाव जानाइया आमार काछे टाका चाहिया लइया याइत। संसारे आमार तो आर-काहारओ जन्य टाका जमाइबार कोनो प्रयोजन छिल ना, ताइ जामाइ यखन आबदार करिया आमार काछ हइते किछु चाहित से आमार भालोइ लागित। माझे माझे आमार मेये आमाके वारण करित, आमाके भर्त्सना करिया बलित, 'तुमि अमनि करिया उँहाके टाका दिया उँहार अभ्यास खाराप करिया दितेछ—टाका हाते पाइले उनि कोथाय ये केमन करिया उड़ाइया देन ताहार ठिकाना नाइ।' आमि भाबिताम, ताहार स्वामी आमार काछे एमन करिया टाका लइले ताहार श्वशुरकुलेर अगौरव हइबे, एइ भयेइ बुझि मनोरमा आमाके टाका दिते निषेध करे।

तखन आमार एमन बुद्धि हइल, आमि आमार मेयेके लुकाइया जामाइके नेशार कड़ि जोगाइते लागिलाम। मनोरमा यखन ताहा जानिते पारिल तखन से एकदिन आमार काछे आसिया काँदिया ताहार स्वामीर कलङ्केर कथा समस्त जानाइया दिल। तखन आमि कपाल चापड़ाइया मरि। दुःखेर कथा की आर बलिब, आमार एकजन देओरइ कुसङ्ग एवं कुबुद्धि दिया आमार जामाइयेर माथा खाइयाछे।

टाका देओया यखन बन्ध करिलाम एवं जामाइ यखन सन्देह करिल ये, आमार मेयेइ आमाके निषेध करियाछे तखन ताहार आर कोनो आवरण रहिल ना। तखन से एत अत्याचार आरम्भ करिल, आमार मेयेके पृथिवीर लोकेर सामने एमन करिया अपमान करिते लागिल ये, ताहाइ निवारण करिबार जन्य आबार आमि आमार मेयेके लुकाइया ताहाके टाका दिते लागिलाम। जानिताम, आमि ताहाके रसातले दितेछि; किन्तु, मनोरमाके से असह्य पीड़न करितेछे, ए संवाद पाइले आमि कोनोमते स्थिर थाकिते पारिताम ना।

अवशेषे एकदिन—सेदिनटा आमार स्पष्ट मने आछे। माघ मासेर शेषाशेषि, से-बछर सकाल सकाल गरम पड़ियाछे; आमरा बलाबलि करिते-छिलाम, 'एरइ मध्ये आमादेर खिड़किर बागानेर गाछगुलि आमेर बोले भरिया गेछे।' सेइ माघेर अपराह्णे आमादेर दरजार काछे पालकि आसिया थामिल। देखि, मनोरमा हासिते हासिते आसिया आमाके प्रणाम करिल। आमि बलिलाम, 'की मनु, तोदेर खबर की।' मनोरमा हासिमुखे बलिल, 'खबर ना थाकले बुझि मार बाड़िते शुधु शुधु आसते नेइ?'

आमार बेयान मन्द लोक छिलेन ना। तिनि आमाके बलिया पाठाइलेन, बउमा पुत्रसम्भाविता, सन्तान प्रसव हओया पर्यन्त ताहार मार काछे थाकिलेइ भालो। आमि भाबिलाम, सेइ कथाटाइ बुझि सत्य। किन्तु, जामाइ ये एइ अवस्थातेइ मनोरमाके मारधोर करिते आरम्भ करियाछे एवं विपत्पातेर आशङ्कातेइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेयान ताँहार पुत्रवधूके आमार काछे पाठाइया दियाछेन, ताहा आमि जानितेओ पारि नाइ। मनु एवं ताहार शाशुड़िते मिलिया आमाके एमनि करिया भुलाइया राखिल। मेयेके आमि निजेर हाते तेल माखाइया स्नान कराइते चाहिले, मनोरमा नाना छुताय काटाइया दित ; ताहार कोमल अङ्गे ये-सब आघातेर दाग पड़ियाछिल से ताहार मायेर दृष्टिर काछेओ प्रकाश करिते चाहे नाइ।

जामाइ माझे माझे आसिया मनोरमाके बाड़ि फिराइया लइया याइबार जन्य गोलमाल करित। मेये आमार काछे थाकाते टाकार आबदार करिते ताहार व्याघात घटित। क्रमे से-बाधाओ आर से मानिल ना। टाकार जन्य मनोरमार सामनेइ आमार प्रति उपद्रव करिते लागिल। मनोरमा जेद करिया बलित, 'कोनोमतेइ टाका दिते पारिबे ना।' किन्तु, आमार बड़ो दुर्बल मन, पाछे जामाइ आमार मेयेर उपर अत्यन्त बेशि विरक्त हइया उठे एइ भये आमि ताहाके किछु ना दिया थाकिते पारिताम ना।

मनोरमा एकदिन बलिल, 'मा, तोमार टाकाकड़ि समस्त आमिइ राखिब।' बलिया आमार चाबि ओ बाक्स सब दखल करिया बसिल। जामाइ आसिया यखन आमार काछे टाका पाइबार सुविधा देखिल ना एवं यखन मनोरमाके किछुतेइ नरम करिते पारिल ना, तखन सुर धरिल, 'मेजबउके बाड़िते लइया याइब।' आमि मनोरमाके बलिताम, 'दे, मा, ओके किछु टाका दियेइ विदाय करे दे— नइले ओ की क'रे बसे के जाने।' किन्तु, आमार मनोरमा एक दिके येमन नरम आर-एक दिके तेमनि शक्त छिल। से बलित, 'ना, टाका कोनोमतेइ देओया हबे ना।'

जामाइ एकदिन आसिया चक्षु रक्तवर्ण करिया बलिल, 'काल आमि विकाल-वेला पालकि पाठिये देब। बउके यदि छेड़े ना दाओ तबे भालो हबे ना, बले राखछि।'

परदिन सन्ध्यार पूर्वे पालकि आसिले आमि मनोरमाके बलिलाम, 'मा, आर देरि करे काज नेइ, आबार आसछे हप्ताय तोमाके आनबार जन्य लोक पाठाब।'

मनोरमा कहिल, 'आज थाक्, आज आमार येते इच्छे हच्छे ना, मा, आर दु-दिन बादे आसते बोलो।'

आमि बलिलाम, 'मा, पालकि फिरिये दिले कि आमार खेपा जामाइ रक्षा राखबे। काज नेइ, मनु, तुमि आजइ याओ।'

मनु बलिल, 'ना, मा, आज नय ; आमार श्वशुर कलकाताय गियेछेन, फाल्गुनेर माझामाझि तिनि फिरे आसबेन—तखन आमि याव।'

आमि तबु बलिलाम, 'ना, काज नेइ, मा।'

तखन मनोरमा प्रस्तुत हइते गेल। आमि ताहार श्वशुरबाड़िर चाकर ओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पालकिर बेहारादिगके खाओयाइबार आयोजने व्यस्त रहिलाम। याइबार आगे एकटु ये ताहार काछे थाकिब, सेदिन ये एकटु विशेष करिया ताहार यत्न लइब, निजेर हाते ताहाके साजाइया दिब, से ये-खाबार भालोबासे ताहाइ ताहाके खाओयाइया दिया विदाय दिब, एमन अवकाश पाइलाम ना। ठिक पालकिते उठिबार आगे आमाके प्रणाम करिया पायेर धुला लइया कहिल, 'मा, आमि तबे चलिलाम।'

से ये सत्यइ चलिल से कि आमि जानिताम! से याइते चाहे नाइ, आमि जोर करिया ताहाके विदाय करियाछि—एइ दुःखे बुक आज पर्यन्त पुड़ितेछे; से आर-किछुतेइ शीतल हइल ना।

सेइ रात्रेइ गर्भपात हइया मनोरमार मृत्यु हइल। एइ खबर यखन पाइलाम ताहार पूर्वेइ गोपने ताड़ाताड़ि ताहार सत्कार शेष हइया गेछे।

याहार किछु बलिबार नाइ, करिबार नाइ, भाबिया याहार किनारा पाओया याय ना, काँदिया याहार अन्त हय ना, सेइ दुःख ये की दुःख, ताहा तोमरा बुझिबे ना—से बुझिया काज नाइ।

आमार तो सबइ गेल, किन्तु तबु आपद चुकिल ना। आमार स्वामीपुत्रेर मृत्युर पर हइतेइ देवररा आमार विषयेर प्रति लोभ दितेछिल। ताहारा जानित, आमार मृत्युर परे विषयसम्पत्ति समुदय ताहादेरइ हइबे; किन्तु ततदिन पर्यन्त ताहादेर सबुर सहितेछिल ना। इहाते काहारओ दोष देओया चले ना; सत्यइ आमार मतो अभागिनीर बाँचिया थाकाइ ये अपराध। संसारे याहादेर नाना प्रयोजन आछे, आमार मतो प्रयोजनहीन लोक बिना हेतुते ताहादेर जायगा जुड़िया बाँचिया थाकिले लोके सह्य करे केमन करिया।

मनोरमा यतदिन बाँचिया छिल ततदिन आमि देवरदेर कोनो कथाय भुलि नाइ। आमार विषयेर अधिकार लइया यतदूर साध्य ताहादेर सङ्गे लड़ियाछि। आमि यतदिन बाँचि मनोरमार जन्य टाका सञ्चय करिया ताहाके दिया याइब, एइ आमार पण छिल। आमि आमार कन्यार जन्य टाका जमाइबार चेष्टा करितेछि, इहाइ आमार देवरदेर पक्षे असह्य हइया उठियाछिल; ताहादेर मने हइत, आमि ताहादेरइ धन चुरि करितेछि। नीलकान्त बलिया कर्तार एकजन पुरातन विश्वासी कर्मचारी छिल, सेइ आमार सहाय छिल। आमि यदि वा आमार प्राप्य किछु छाड़िया दिया आपसे निष्पत्तिर चेष्टा करिताम से कोनो-मतेइ राजि हइत ना—से बलित, 'आमादेर हकेर एक पयसा के लय देखिब।' एइ हकेर लड़ाइयेर माझखानेइ आमार कन्यार मृत्यु हइल। ताहार परदिनेइ आमार मेजो देवर आसिया आमाके वैराग्येर उपदेश दिलेन। बलिलेन, 'बउदिदि, ईश्वर तोमार या अवस्था करिलेन ताहाते तोमार आर संसारे थाका उचित हय

14

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ना। ये कयदिन बाँचिया थाक तीर्थे गिया धर्मकर्मे मन दाओ, आमरा तोमार खाओया-परार बन्दोबस्त करिया दिब।'

आमि आमादेर गुरुठाकुरके डाकिया पाठाइलाम। बलिलाम, 'ठाकुर, असह्य दुःखेर हात हइते की करिया बाँचिब आमाके बलिया दाओ—उठिते बसिते आमार कोथाओ कोनो सान्त्वना नाइ—आमि येन बेड़ा-आगुनेर मध्ये पड़ियाछि; येखानेइ याइ, येदिकेइ फिरि, कोथाओ आमार यन्त्रणार एतटुकु अवसानेर पथ देखिते पाइ ना।'

गुरु आमाके आमादेर ठाकुरघरे लइया गिया कहिलेन, 'एइ गोपीवल्लभइ तोमार स्वामी पुत्र कन्या सबइ। इँहार सेवा करियाइ तोमार समस्त शून्य पूर्ण हइबे।'

आमि दिनरात ठाकुरघरेइ पड़िया रहिलाम। ठाकुरकेइ समस्त मन दिबार चेष्टा करिते लागिलाम—किन्तु, तिनि निजे ना लइले आमि दिब केमन करिया। तिनि लइलेन कइ।

नीलकान्तके डाकिया कहिलाम, 'नीलुदादा, आमार जीवनस्वत्व आमि देवरदेरइ लिखिया दिब स्थिर करियाछि। ताहारा खोराकि बाबद मासे मासे किछु करिया टाका दिबे।'

नीलकान्त कहिल, 'से कखनो हइतेइ पारे ना। तुमि मेयेमानुष, ए-सब कथाय थाकियो ना।'

आमि बलिलाम, 'आमार आर सम्पत्तिते प्रयोजन की।'

नीलकान्त कहिल, 'ता बलिले कि हय। आमादेर या हक ता छाड़िब केन। एमन पागलामि करियो ना।'

नीलकान्त हकेर चेये बड़ो आर-किछुइ देखिते पाय ना। आमि बड़ो मुशकिलेइ पड़िलाम। विषयकर्म आमार काछे विषेर मतो ठेकितेछे; किन्तु, जगते आमार ओइ एकमात्र विश्वासी नीलकान्तइ आछे, ताहार मने आमि कष्ट दिइ की करिया। से ये बहु दुःखे आमार ओइ एक हक बाँचाइया आसियाछे।

शेषकाले एकदिन नीलकान्तके गोपन करिया एकखाना कागजे सहि दिलाम। ताहाते की ये लेखा छिल ताहा भालो करिया बुझिया देखि नाइ। आमि भाविया-छिलाम, आमार सइ करिते भय की—आमि एमन की राखिते चाइ याहा आर-केह ठकाइया लइले सह्य हइबे ना। सबइ तो आमार श्वशुरेर, ताँहार छेलेरा पाइबे पाक।

लेखापड़ा रेजेस्ट्रि हइया गेले आमि नीलकान्तके डाकिया कहिलाम, 'नीलुदादा, राग करियो ना, आमार याहा-किछु छिल लिखिया पड़िया दियाछि। आमार किछुतेइ प्रयोजन नाइ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीलकान्त अस्थिर हइया उठिया कहिल, 'अ्याँ, करियाछ की !'

यखन दलिलेर खसड़ा पड़िया देखिल सत्यइ आमि आमार समस्त स्वत्व त्याग करियाछि तखन नीलकान्तेर क्रोधेर सीमा रहिल ना। ताहार प्रभुर मृत्युर पर हइते आमार ओइ हक बाँचानोइ ताहार जीबनेर एकमात्र अवलम्बन छिल। ताहार समस्त बुद्धि समस्त शक्ति इहातेइ अविश्राम नियुक्त छिल। ए लइया मामला-मकद्दमा उकिलबाड़ि-हाँटाहाँटि , आइन खुँजिया बाहिर करा, इहातेइ से सुख पाइयाछे—एमन-कि, ताहार निजेर घरेर काज देखिबारओ समय छिल ना। सेइ हक यखन निर्बोध मेयेमानुषेर कलमेर एक आँचड़ेइ उड़िया गेल तखन नीलकान्तके शान्त करा असम्भव हइया उठिल।

से कहिल, 'याक, एखानकार सङ्गे आमार समस्त सम्बन्ध चुकिल, आमि चलिलाम।'

अवशेषे नीलुदादा एमन करिया राग करिया आमार काछ हइते विदाय हइया याइबे, श्वशुरबाड़िर भाग्ये एइ कि आमार शेष लिखन छिल। आमि ताहाके अनेक मिनति करिया डाकिया बलिलाम, 'दादा, आमार उपर राग करियो ना। आमार किछु जमानो टाका आछे, ताहा हइते तोमाके एइ पाँच-शो टाका दितेछि—तोमार छेलेर बउ येदिन आसिबे सेइदिन आमार आशीर्वाद जानाइया एइ टाका हइते ताहार गहना गड़ाइया दियो।'

नीलकान्त कहिल, 'आमार आर टाकाय प्रयोजन नाइ। आमार मनिबेर सबइ यखन गेल तखन ओ पाँच-शो टाका लइया आमार सुख हइबे ना। ओ थाक्।'

एइ बलिया आमार स्वामीर शेष अकृत्रिम बन्धु आमाके छाड़िया चलिया गेल।

आमि ठाकुरघरे आश्रय लइलाम। आमार देवररा बलिल, 'तुमि तीर्थवासे याओ।'

आमि कहिलाम, 'आमार श्वसुरेर भिटाइ आमार तीर्थ, आर आमार ठाकुर येखाने आछे सेइखानेइ आमार आश्रय।'

किन्तु, आमि ये बाड़िर कोनो अंश अधिकार करिया थाकि ताहाओ ताहादेर पक्षे असह्य हइते लागिल। ताहारा इतिमध्येइ आमादेर बाड़िते जिनिसपत्र आनिया कोन् घर के की भावे व्यवहार करिबे ताहा समस्तइ ठिक करिया लइयाछिल। शेषकाले ताहारा बलिल, 'तोमार ठाकुर तुमि लइया याइते पार आमरा ताहाते आपत्ति करिब ना।'

यखन ताहातेओ आमि संकोच करिते लागिलाम तखन ताहारा कहिल, 'एखाने तोमार खाओयापरा चलिबे की करिया।'

आमि बलिलाम, 'केन, तोमरा या खोराकिर बराद्द करियाछ ताहातेइ आमार यथेष्ट हइबे।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताहारा कहिल, 'कइ, खोराकिर तो कोनो कथा नाइ।'

ताहार पर आमार ठाकुर लइया आमार विवाहेर ठिक चौत्रिश वत्सर परे एकदिन श्वशुरबाड़ि हइते बाहिर हइया पड़िलाम। नीलुदादार सन्धान लइते गिया शुनिलाम, तिनि आमार पूर्वेइ वृन्दावने चलिया गेछेन।

ग्रामेर तीर्थयात्रीदेर सङ्गे आमि काशीते गेलाम। किन्तु, पापमने कोथाओ शान्ति पाइलाम ना। ठाकुरके प्रतिदिन डाकिया बलि, 'ठाकुर, आमार स्वामी, आमार छेलेमेये, आमार काछे येमन सत्य छिल तुमि आमार काछे तेमनि सत्य हये ओठो।' किन्तु कइ, तिनि तो आमार प्रार्थना शुनिलेन ना। आमार बुक ये जुड़ाय ना, आमार समस्त शरीर मन ये काँदिते थाके। बाप रे बाप। मानुषेर प्राण की कठिन।

सेइ आट वत्सर वयसे श्वसुरबाड़ि गियाछि, ताहार परे एक दिनेर जन्यओ बापेर बाड़ि आसिते पाइ नाइ। तोमार मायेर विवाहे उपस्थित थाकिबार अनेक चेष्टा करियाछिलाम, कोनो फल हय नाइ। ताहार पर बाबार चिठिते तोमादेर जन्मेर संवाद पाइलाम, आमार बोनेर मृत्युसंवादओ पाइयाछि। मायेर-कोल-छाड़ा तोदेर ये आमार कोले टानिब, ईश्वर ए-पर्यन्त एमन सुयोग घटान नाइ।

तीर्थे घुरिया यखन देखिलाम माया एखनो मन भरिया आछे, कोनो एकटा बुकेर जिनिसके पाइबार जन्य बुकेर तृष्णा एखनो मरे नाइ—तखन तोदेर खोंज करिते लागिलाम। शुनियाछिलाम तोदेर बाप धर्म छाड़िया समाज छाड़िया बाहिर हइया पड़ियाछिलेन। ता की करिब। तोदेर मा ये आमार एक मायेर पेटेर बोन।

काशीते एक भद्रलोकेर काछे तोमादेर खोंज पाइया एखाने आसियाछि। परेशबाबु शुनियाछि ठाकुर देवता मानेन ना, किन्तु, ठाकुर ये उँहार प्रति प्रसन्न से उँहार मुख देखिलेइ बोझा याय। पूजा पाइलेइ ठाकुर भोलेन ना, से आमि खुब जानि—परेशबाबु केमन करिया ताँहाके वश करिलेन, सेइ खबर आमि लइब। याइ होक, बाछा, एकला थाकिबार समय एखनो आमार हय नाइ—से आमि पारि ना—ठाकुर येदिन दया करेन करिबेन, किन्तु तोमादेर कोलेर काछे ना राखिया आमि बाँचिब ना।

३८

परेश वरदासुन्दरीर अनुपस्थितिकाले हरिमोहिनीके आश्रय दियाछिलेन। छातेर उपरकार निभृत घरे ताँहाके स्थान दिया, याहाते ताँहार आचार रक्षा करिया चलार कोनो विघ्न ना घटे ताहार समस्त बन्दोबस्त करिया दियाछिलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरदासुन्दरी फिरिया आसिया ताँहार घरकन्नार मध्ये एइ एकटि अभावनीय प्रादुर्भाव देखिया एकेबारे हाड़े हाड़े ज्वलिया गेलेन। तिनि परेशके खुब तीव्र स्वरेइ कहिलेन, "ए आमि पारब ना।"

परेश कहिलेन, "तुमि आमादेर सकलकेइ सह्य करते पारछ, आर ओइ एकटि विधवा अनाथके सइते पारबे ना ?"

वरदासुन्दरी जानितेन, परेशेर काण्डज्ञान किछुमात्र नाइ ; संसारे किसे सुविधा घटे वा असुविधा घटे से सम्बन्धे तिनि कोनोदिन विवेचना मात्र करेन ना ; हठात् एक-एकटा काण्ड करिया बसेन। ताहार परे रागइ कर, बक आर काँद, एकेबारे पाषाणेर मूर्तिर मतो स्थिर हइया थाकेन। एमन लोकेर सङ्गे के पारिया उठिबे बलो। प्रयोजन हइले याहार सङ्गे झगड़ा कराओ असम्भव ताहार सङ्गे घर करिते कोन् स्त्रीलोके पारे !

सुचरिता मनोरमार प्राय एकवयसी छिल। हरिमोहिनीर मने हइते लागिल सुचरिताके देखितेओ येन अनेकटा सेइ मनोरमारइ मतो ; आर स्वभावटिओ ताहार सङ्गे मिलियाछे। तेमनि शान्त अथच तेमनि दृढ़। हठात् पिछन हइते ताहाके देखिया एक-एक समय हरिमोहिनीर बुकेर भितरटा येन चमकिया उठे। एक-एकदिन सन्ध्यावेलाय अन्धकारे तिनि एकला बसिया निःशब्दे काँदितेछेन, एमन समय सुचरिता काछे आसिले चोख बुजिया ताहाके दुइ हाते बुके चापिया धरिया बलितेन, "आहा, आमार मने हच्छे येन आमि ताकेइ बुकेर मध्ये पेयेछि। से येते चाय नि आमि ताके जोर करे विदाय करे दियेछि, जगत्संसारे कि कोनोदिन कोनोमतेइ आमार से-शास्तिर अवसान हबे ना। दण्ड या पाबार ता पेयेछि—एबार से एसेछे ; एइ ये फिरे एसेछे ; तेमनि हासिमुख करे फिरे एसेछे ; एइ ये आमार मा, एइ ये आमार मणि, आमार धन।"

एइ बलिया सुचरितार समस्त मुखे हात बुलाइया ताहाके चुमो खाइया चोखेर जले भासिते थाकेन ; सुचरितारओ दुइ चक्षु दिया जल झरिया पड़ित। से ताँहार गला जड़ाइया बलित, "मासि, आमिओ तो मायेर आदर बेशिदिन भोग करते पारि नि ; आज आबार सेइ हारानो मा फिरे एसेछेन। कतदिन कत दुःखेर समय यखन ईश्वरके डाकबार शक्ति छिल ना, यखन मनेर भितरटा शुकिये गियेछिल, तखन आमार माके डेकेछि। सेइ मा आज आमार डाक शुने एसेछेन।"

हरिमोहिनी बलितेन, "अमन करे बलिस ने, बलिस ने। तोर कथा शुनले आमार एत आनन्द हय ये, आमार भय करते थाके। हे ठाकुर, दृष्टि दियो ना, ठाकुर। आर माया करब ना मने करि—मनटाके पाषाण करेइ थाकते चाइ, किन्तु पारि ने ये। आमि बड़ो दुर्बल, आमाके दया करो, आमाके आर मेरो ना। ओरे राधारानी, या, या, आमार काछ थेके छेड़े या। आमाके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आर जड़ास ने रे जड़ास ने। ओ आमार गोपीवल्लभ, आमार जीवननाथ, आमार गोपाल, आमार नीलमणि, आमाके ए आबार की विपदे फेलछ।"

सुचरिता कहित, "आमाके तुमि जोर करे विदाय करते पारबे ना, मासि। आमि तोमाके कखनो छाड़ब ना—आमि बराबर तोमार एइ काछेइ रइलुम।"

बलिया ताँहार बुकेर मध्ये माथा राखिया शिशुर मतो चुप करिया थाकित।

दुइदिनेर मध्येइ सुचरितार सङ्गे ताहार मासिर एमन एकटा गभीर सम्बन्ध बाधिया गेल ये, क्षुद्र कालेर द्वारा ताहार परिमाप हइते पारे ना।

वरदासुन्दरी इहातेओ विरक्त हइया गेलेन। 'मेयेटार रकम देखो। येन आमरा कोनोदिन उहार कोनो आदरयत्न करि नाइ। बलि, एतदिन मासि छिलेन कोथाय। छोटोवेला हइते आमरा ये एत करिया मानुष करिलाम, आर आज मासि बलितेइ एकेवारे अज्ञान। आमि कतकि बराबर बलिया आसियाछि, ओइ ये सुचरिताके तोमरा सबाइ भालो भालो कर, ओ केवल बाहिरे भालोमानुषि करे किन्तु उहार मन पाबार जो नाइ। आमरा एतदिन उहार या करियाछि सब वृथाइ हइयाछे।'

परेश ये वरदासुन्दरीर दरद बुझिबेन ना, ताहा तिनि जानितेन। शुधु ताइ नह हरिमोहिनीर प्रति विरक्ति प्रकाश करिले तिनि ये परेशेर काछे खाटो हइया याइबेन, इहातेओ ताँहार सन्देह छिल ना। सेइजन्यइ ताँर राग आरओ बाड़िया उठिल। परेश याहाइ बलुन, किन्तु अधिकांश बुद्धिमान लोकेर सङ्गेइ ये वरदासुन्दरीर मत मेले इहाइ प्रमाण करिबार जन्य तिनि दल बाड़ाइबार चेष्टा करिते लागिलेन। ताँहादेर समाजेर प्रधान-अप्रधान सकल लोकेर काछेइ हरिमोहिनीर व्यापार लइया समालोचना जुड़िया दिलेन। हरिमोहिनीर हिँदुयानि, ताँहार ठाकुरपूजा, बाड़िते छेलेमेयेर काछे ताँहार कुदृष्टान्त, इहा लइया ताँहार आक्षेप-अभियोगेर अन्त रहिल ना।

शुधु लोकेर काछे अभियोग नहे, वरदासुन्दरी सकल प्रकारे हरिमोहिनीर असुविधा घटाइते लागिलेन। हरिमोहिनीर रन्धनादिर जल तुलिया दिबार जन्य ये एकजन गोयाला बेहारा छिल ताहाके तिनि ठिक समय बुझिया अन्य काजे नियुक्त करिया दितेन। से-सम्बन्धे कोनो कथा उठिले बलितेन, 'केन, रामदीन आछे तो।' रामदीन जाते दोसाद ; तिनि जानितेन, ताहार हातेर जल हरिमोहिनी व्यवहार करिबेन ना। से-कथा केह बलिले बलितेन, 'अत बाम्नाइ करते चान तो आमादेर ब्राह्मबाड़िते एलेन केन। आमादेर एखाने ओ-समस्त जातेर विचार करा चलबे ना। आमि कोनोमतेइ एते प्रश्रय देब ना।' एइरूप उपलक्षे, ताँहार कर्तव्यबोध अत्यन्त उग्र हइया उठित। तिनि बलितेन, ब्राह्म-समाजे क्रमे सामाजिक शैथिल्य अत्यन्त बाड़िया उठितेछे ; एइजन्यइ ब्राह्मसमाज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथेष्टपरिमाणे काज करिते पारितेछे ना। ताँहार साध्यमतो तिनि एरूप शैथिल्ये योग दिते पारिबेन ना। ना, किछुतेइ ना। इहाते यदि केह ताँहाके भुल बोझे तबे सेओ स्वीकार, यदि आत्मीयेराओ विरुद्ध हइया उठे तबे सेओ तिनि माथा पातिया लइबेन। पृथिवीते महापुरुषेरा, याँहारा कोनो महत् कर्म करियाछेन, ताँहादेर सकलकेइ ये निन्दा ओ विरोध सह्य करिते हइयाछे, सेइ कथाइ तिनि सकलके स्मरण कराइते लागिलेन।

कोनो असुविधाय हरिमोहिनीके परास्त करिते पारित ना। तिनि कृच्छ्र-साधनेर चूड़ान्त सीमाय उठिबेन बलियाइ येन पण करियाछिलेन। तिनि अन्तरे ये असह्य दुःख पाइयाछेन बाहिरेओ येन ताहार सहित छन्दरक्षा करिबार जन्य कठोर आचारेर द्वारा अहरह कष्ट सृजन करिया चलितेछिलेन। एइरूपे दुःखके निजेर इच्छार द्वारा वरण करिया ताहाके आत्मीय करिया लइया ताहाके वश करिबार एइ साधना।

हरिमोहिनी यखन देखिलेन जलेर असुविधा हइतेछे, तखन तिनि रन्धन एकेबारे छाड़ियाइ दिलेन। ताँहार ठाकुरेर काछे निवेदन करिया प्रसाद-स्वरूपे दुध एवं फल खाइया काटाइते लागिलेन। सुचरिता इहाते अत्यन्त कष्ट पाइल। मासि ताहाके अनेक करिया बुझाइया बलिलेन, "मा,ए आमार बड़ो भालो हयेछे। एइ आमार प्रयोजन छिल। एते आमार कोनो कष्ट नेइ, आमार आनन्दइ हय।"

सुचरिता कहिल, "मासि, आमि यदि अन्य जातेर हाते जल वा खाबार ना खाइ, ता हले तुमि आमाके तोमार काज करते देबे ?"

हरिमोहिनी कहिलेन, "केन, मा, तुमि ये-धर्म मान सेइ मतेइ तुमि चलो—आमार जन्ये तोमाके अन्य पथे येते हबे ना। आमि तोमाके काछे पेयेछि, बुके राखछि, प्रतिदिन देखते पाइ, एइ आमार आनन्द। परेशबाबु तोमार गुरु, तोमार बापेर मतो ; तिनि तोमाके ये-शिक्षा दियेछेन तुमि सेइ मेने चलो, तातेइ भगवान तोमार मङ्गल करबेन।"

हरिमोहिनी वरदासुन्दरीर समस्त उपद्रव एमन करिया सहिते लागिलेन येन ताहा तिनि किछुइ बुझिते पारेन नाइ। परेशबाबु यखन प्रत्यह आसिया ताँहाके जिज्ञासा करितेन 'केमन आछेन, कोनो असुविधा हइतेछे ना तो ?' तिनि बलितेन, 'आमि खुब सुखे आछि।'

किन्तु, वरदासुन्दरीर समस्त अन्याय सुचरिताके प्रति मुहूर्ते जर्जरित करिते लागिल। से तो नालिश करिबार मेये नय ; विशेषत परेशबाबुर काछे वरदासुन्दरीर व्यवहारेर कथा बला ताहार द्वारा कोनोमतेइ घटिते पारे ना। से निःशब्दे समस्त सह्य करिते लागिल ; ए-सम्बन्धे कोनोप्रकार आक्षेप प्रकाश करितेओ ताहार अत्यन्त संकोच बोध हइत।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इहार फल हइल एइ ये, सुचरिता धीरे धीरे सम्पूर्णभावेइ ताहार मासिर काछे आसिया पड़िल। मासिर बारम्बार निषेध सत्त्वेओ आहार-पान सम्बन्धे से ताँहारइ सम्पूर्ण अनुवर्ती हइया चलिते लागिल। शेषकाले सुचरितार कष्ट हइतेछे देखिया, दाये पड़िया हरिमोहिनीके पुनराय रन्धनादिते मन दिते हइल। सुचरिता कहिल, "मासि, तुमि आमाके येमन करे थाकते बल आमि तेमनि करेइ थाकब, किन्तु तोमार जल आमि निजे तुले देब ; से आमि किछुतेइ छाड़ब ना।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "मा, तुमि किछु मने कोरो ना, किन्तु ओइ जले ये आमार ठाकुरेर भोग हय।"

सुचरिता कहिल, "मासि, तोमार ठाकुरओ कि जात मानेन, ताँकेओ कि पाप लागे। ताँरओ कि समाज आछे नाकि।"

अवशेषे एकदिन सुचरितार निष्ठार काछे हरिमोहिनीके हार मानिते हइल। सुचरितार सेवा तिनि सम्पूर्णभावेइ ग्रहण करिलेन। सतीशओ दिदिर अनुकरणे 'मासिर रान्ना खाइब' बलिया धरिया पड़िल। एमनि करिया एइ तिनटिते मिलिया परेशबाबुर घरेर कोणे आर-एकटि छोटो संसार जमिया उठिल। केवल ललिता एइ दुटि संसारेर माझखाने सेतुस्वरूपे विराज करिते लागिल। वरदा-सुन्दरी ताँहार आर-कोनो मेयेके एदिके घेंषिते दितेन ना, किन्तु ललिताके निषेध करिया पारिया उठिबार शक्ति ताँहार छिल ना।

३९

वरदासुन्दरी ताँहार ब्राह्मिकाबन्धुदिगके प्रायइ निमन्त्रण करिते लागिलेन। माझे माझे ताँहादेर छातेर उपरेइ सभा हइत। हरिमोहिनी ताँहार स्वाभाविक ग्राम्य सरलतार सहित मेयेदेर आदर-अभ्यर्थना करितेन, किन्तु इहारा ये ताँहाके अवज्ञा करे ताहा ताँहार काछे गोपन रहिल ना। एमन-कि, हिन्दुदेर सामाजिक आचारव्यवहार लइया ताँहार समक्षेइ वरदासुन्दरी तीव्र समालोचना उत्थापित करितेन एवं अनेक रमणी हरिमोहिनीर प्रति विशेष लक्ष राखिया सेइ समालोचनाय योग दितेन।

सुचरिता ताहार मासिर काछे थाकिया एइ-समस्त आक्रमण नीरवे सह्य करित। केवल, सेओ ये ताहार मासिर दले, इहाइ से येन गाये पड़िया प्रकाश करिते चेष्टा करित। येदिन आहारेर आयोजन थाकित सेदिन सुचरिताके सकले खाइते डाकिले से बलित, "ना, आमि खाइ ने!"

"से की! तुमि बुझि आमादेर सङ्गे बसे खावे ना!"

"ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरदासुन्दरी बलितेन, "आजकाल सुचरिता ये मस्त हिंदु हये उठेछेन ता बुझि जान ना। उनि ये आमादेर छोंया खान ना।"

"सुचरिताओ हिंदु हये उठल! काले काले कतइ ये देखते हबे ताइ भाबि।"

हरिमोहिनी व्यस्त हइया बलिया उठितेन, "राधारानी, मा, याओ, मा। तुमि खेते याओ , मा।"

दलेर लोकेर काछे ये सुचरिता ताँहार जन्य एमन करिया खोंटा खाइतेछे, इहा ताँहार काछे अत्यन्त कष्टकर हइया उठियाछिल। किन्तु, सुचरिता अटल हइया थाकित। एकदिन कोनो ब्राह्म मेये कौतूहलवशत हरिमोहिनीर घरेर मध्ये जुता लइया प्रवेश करिते प्रवृत्त हइले सुचरिता पथरोध करिया दाँड़ाइया बलिल, "ओ-घरे येयो ना।"

"केन।"

"ओ घरे ओंर ठाकुर आछे।"

"ठाकुर आछे! तुमि बुझि रोज ठाकुरपुजो कर?"

हरिमोहिनी बलिलेन, "हाँ, मा, पुजो करि बइ-कि।"

"ठाकुरके तोमार भक्ति हय?"

"पोड़ा कपाल आमार! भक्ति आर कइ हल। भक्ति हले तो बेंचेइ यतुम।"

सेदिन ललिता उपस्थित छिल। से मुख लाल करिया प्रश्नकारिणीके जिज्ञासा करिल, "तुमि याँर उपासना कर ताँके भक्ति कर?"

"वा:, भक्ति करि ने तो की।"

ललिता सवेगे माथा नाड़िया कहिल, "भक्ति तो करइ ना, आर भक्ति ये कर ना सेटा तोमार जानाओ नेइ।"

सुचरिता याहाते आचारव्यवहारे ताहार दल हइते पृथक ना हय सेजन्य हरिमोहिनी अनेक चेष्टा करिलेन, किन्तु किछुतेइ कृतकार्य हइते पारिलेन ना।

इतिपूर्वे हारानबाबुते वरदासुन्दरीते भितरे भितरे एकटा विरोधेर भावइ छिल। वर्तमान व्यापारे उभयेर मध्ये खुब मिल हइल। वरदासुन्दरी कहिलेन, यिनि याइ बलुन-ना केन, ब्राह्मसमाजेर आदर्शके विशुद्ध राखिबार जन्य यदि काहारओ दृष्टि थाके तो से पानुबाबुर। हारानबाबुओ—ब्राह्मपरिवारके सर्वप्रकारे निष्कलङ्क राखिबार प्रति वरदासुन्दरीर एकान्त वेदनापूर्ण सचेतनताके ब्राह्मगृहिणी-मात्रेरइ पक्षे एइटि सुदृष्टान्त बलिया सकलेर काछे प्रकाश करिलेन। ताँहार एइ प्रशंसार मध्ये परेशबाबुर प्रति विशेष एकटु खोंचा छिल।

हारानबाबु एकदिन परेशबाबुर सम्मुखेइ सुचरिताके कहिलेन, "शुनलुम नाकि आजकाल तुमि ठाकुरेर प्रसाद खेते आरम्भ करेछ?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरितार मुख लाल हइया उठिल, किन्तु येन से कथाटा शुनितेइ पाइल ना एमनिभावे टेबिलेर उपरकार दोयातदानिते कलमगुला गुछाइया राखिते लागिल। परेशबाबु एकबार करुणनेत्रे सुचरितार मुखेर दिके चाहिया हारानबाबुके कहिलेन, "पानुबाबु, आमरा या-किछु खाइ सबइ तो ठाकुरेर प्रसाद।"

हारानबाबु कहिलेन, "किन्तु, सुचरिता ये आमादेर ठाकुरके परित्याग करबार उद्योग करछेन।"

परेशबाबु कहिलेन, "ताओ यदि सम्भव हय, तबे ता निये उत्पात करले कि तार कोनो प्रतिकार हबे।"

हारानबाबु कहिलेन, "स्रोते ये-लोक भेसे याच्छे ताकें कि डाङाय तोलबार चेष्टाओ करते हबे ना।"

परेशबाबु कहिलेन, "सकले मिले तार माथार उपर ढेला छुँड़े माराकेइ डाङाय तोलबार चेष्टा बला याय ना। पानुबाबु, आपनि निश्चिन्त थाकुन, आमि एतटुकुवेला थेकेइ सुचरिताके देखे आसछि। ओ यदि जलेइ पड़त ता हले आमि आपनादेर सकलेर आगेइ जानते पारतुम, एवं आमि उदासीन थाकतुम ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरिता तो एखानेइ रयेछेन। आपनि ओंकेइ जिज्ञासा करुन-ना। शुनते पाइ, उनि सकलेर छोंया खान ना। से-कथा कि मिथ्या।"

सुचरिता दोयातदानेर प्रति अनावश्यक मनोयोग दूर करिया कहिल, "बाबा जानेन, आमि सकलेर छोंया खाइ ने। उनि यदि आमार एइ आचरण सह्य करे थाकेन ता हलेइ हल। आपनादेर यदि भालो ना लागे आपनारा यत खुशि आमार निन्दा करुन, किन्तु बाबाके विरक्त करछेन केन। उनि आपनादेर कत क्षमा करे चलेन ता आपनारा जानेन? ए कि तारइ प्रतिफल।"

हारानबाबु आश्चर्य हइया भाबिते लागिलेन, सुचरिताओ आजकाल कथा कहिते शिखियाछे!

परेशबाबु शान्तिप्रिय लोक; तिनि निजेर वा परेर सम्बन्धे अधिक आलोचना भालोबासेन ना। ए-पर्यन्त ब्राह्मसमाजे तिनि कोनो काजे कोनो प्रधान पद ग्रहण करेन नाइ; निजेके काहारओ लक्ष्यगोचर ना करिया निभृते जीवन यापन करियाछेन। हारानबाबु परेशेर एइ भावकेइ उत्साहहीनता ओ औदासीन्य बलिया गण्य करितेन; एमन-कि, परेशबाबुके तिनि इहा लइया भर्त्सनाओ करियाछेन। इहार उत्तरे परेशबाबु बलियाछिलेन, 'ईश्वर, सचल एवं अचल एइ दुइ श्रेणीर पदार्थइ सृष्टि करियाछेन; आमि नितान्तइ अचल। आमार मतो लोकेर द्वारा ये-काज पाओया सम्भव ईश्वर ताहा आदाय करिया लइबेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

याहा सम्भव नहे ताहार जन्य चञ्चल हइया कोनो लाभ नाइ। आमार वयस यथेष्ट हइयाछे ; आमार की शक्ति आछे आर की नाइ ताहार मीमांसा हइया गियाछे। एखन आमाके ठेलाठेलि करिया कोनो फल पाओया याइबे ना।"

हारानबाबुर धारणा छिल, तिनि असाड़ हृदयेओ उत्साह सञ्चार करिते पारेन ; जड़चित्तके कर्तव्येर पथे ठेलिया देओया एवं स्खलित जीवनके अनुतापे विगलित करा ताँहार एकटा स्वाभाविक क्षमता। ताँहार अत्यन्त बलिष्ठ एवं एकाग्र शुभ-इच्छाके केहइ अधिक दिन प्रतिरोध करिते पारे ना, एइरूप ताँहार विश्वास। ताँहार समाजेर लोकेर व्यक्तिगत चरित्रे ये-सकल भालो परिवर्तन घटियाछे तिनि निजेकेइ कोनो-ना-कोनो प्रकारे ताहार प्रधान कारण बलिया निश्चय स्थिर करियाछेन। ताँहार अलक्ष्य प्रभावओ ये भितरे भितरे काज करे इहाते ताँहार सन्देह नाइ। ए-पर्यन्त सुचरिताके यखनइ ताँहार सम्मुखे केह विशेषरूपे प्रशंसा करियाछे तिनि एमन भाव धारण करियाछेन, येन से-प्रशंसा सम्पूर्णइ ताँहार। तिनि उपदेश दृष्टान्त एवं सङ्गतेजेर द्वारा सुचरितार चरित्रके एमन करिया गड़िया तुलितेछेन ये एइ सुचरितार जीवनेर द्वाराइ लोकसमाजे ताँहार आश्चर्य प्रभाव प्रमाणित हइबे, एइरूप ताँहार आशा छिल।

सेइ सुचरितार शोचनीय पतने निजेर क्षमता सम्बन्धे ताँहार गर्व किछुमात्र ह्रास हइल ना, तिनि समस्त दोष चापाइलेन परेशबाबुर स्कन्धे। परेशबाबुके लोके बराबर प्रशंसा करिया आसियाछे, किन्तु हारानबाबु कखनो ताहाते योग देन नाइ ; इहातेओ ताँहार कतदूर प्राज्ञता प्रकाश पाइयाछे ताहा एइबार सकले बुझिते पारिबे, एइरूप तिनि आशा करितेछेन।

हारानबाबुर मतो लोक आर-सकलइ सह्य करिते पारेन, किन्तु याहादिगके विशेषरूपे हितपथे चालाइते चेष्टा करेन ताहारा यदि निजेर बुद्धि अनुसारे स्वतन्त्र पथ अवलम्बन करे तबे से-अपराध तिनि कोनोमतेइ क्षमा करिते पारेन ना। सहजे ताहादिगके छाड़िया देओया ताँहार पक्षे असाध्य ; यतइ देखेन ताँहार उपदेशे फल हइतेछे ना ततइ ताँहार जेद बाड़िया याइते थाके, तिनि फिरिया फिरिया बारम्बार आक्रमण करिते थाकेन। कल येमन दम ना फुराइले थामिते पारे ना, तिनिओ तेमनि कोनोमतेइ निजेके संवरण करिते पारेन ना ; विमुख कर्णेर काछे एक कथा सहस्रबार आवृत्ति करियाओ हार मानिते चाहेन ना।

इहाते सुचरिता बड़ो कष्ट पाइते लागिल—निजेर जन्य नहे, परेशबाबुर जन्य। परेशबाबु ये ब्राह्मसमाजेर सकलेर समालोचनार विषय हइया उठियाछेन, एइ अशान्ति निवारण करा याइबे की उपाये। अपर पक्षे सुचरितार मासिओ प्रतिदिन बुझिते पारितेछिलेन ये, तिनि एकान्त नम्र हइया निजेके यतइ आड़ाले राखिबार चेष्टा करितेछेन ततइ एइ परिवारेर पक्षे उपद्रवस्वरूप हइया उठितेछेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एजन्य ताहार मासिर अत्यन्त लज्जा ओ संकोच सुचरिताके प्रत्यह दग्ध करिते लागिल। एइ संकट हइते उद्धारेर ये पथ कोथाय, ताहा सुचरिता कोनोमतेइ भाबिया पाइल ना।

एदिके सुचरितार शीघ्र विवाह दिया फेलिबार जन्य वरदासुन्दरी परेशबाबुके अत्यन्त पीड़ापीड़ि करिते लागिलेन। तिनि कहिलेन, "सुचरितार दायित्व आर आमादेर वहन करा चले ना, से एखन निजेर मते चलते आरम्भ करेछे। तार विवाहेर यदि देरि थाके ता हले मेयेदेर निये आमि अन्य कोथाओ याब— सुचरितार अद्भुत दृष्टान्त मेयेदेर पक्षे बड़ोइ अनिष्टेर कारण हच्छे। देखो, एर जन्ये परे तोमाके अनुताप करते हबेइ। ललिता आगे तो एरकम छिल ना ; एखन ओ ये आपन इच्छामतो या खुशि एकटा काण्ड करे बसे, काकेओ माने ना, तार मूले के। सेदिन ये-व्यापारटा बाधिये बसल, यार जन्य आमि लज्जाय मरे याच्छि, तुमि कि मने कर तार मध्ये सुचरितार कोनो हात छिल ना। तुमि निजेर मेयेर चेये सुचरिताके बराबर बेशि भालोबास, ताते आमि कोनोदिन कोनो कथा बलि नि ; किन्तु, आर चले ना, से आमि स्पष्टइ बले राखछि।"

सुचरितार जन्य नहे, किन्तु पारिवारिक अशान्तिर जन्य परेशबाबु चिन्तित हइया पड़ियाछिलेन। वरदासुन्दरी ये-उपलक्षटि पाइया बसियाछेन इहा लइया तिनि ये हुलस्थूल काण्ड बाधाइया बसिबेन, एवं यतइ देखिबेन आन्दोलने कोनो फल हइतेछे ना ततइ दुर्वार हइया उठिते थाकिबेन, इहाते ताँहार कोनो सन्देह छिल ना। यदि सुचरितार विवाह सत्वर सम्भवपर हय तबे वर्तमान अवस्थाय सुचरितार पक्षेओ ताहा शान्तिजनक हइते पारे, ताहाते सन्देह नाइ। तिनि वरदासुन्दरीके बलिलेन, "पानुबाबु यदि सुचरिताके सम्मत करते पारेन ता हले आमि विवाह सम्बन्धे कोनो आपत्ति करब ना।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "आबार कतबार करे सम्मत करते हबे। तुमि तो अवाक करले। एत साधासाधिइ वा केन। पानुबाबुर मतो पात्र उनि पाबेन कोथाय ताइ जिज्ञासा करि। तुमि राग कर आर याइ कर, सत्यि कथा बलते की, सुचरिता पानुबाबुर योग्य मेये नय।"

परेशबाबु कहिलेन, "पानुबाबुर प्रति सुचरितार मनेर भाव ये की ता आमि स्पष्ट करे बुझते पारि नि। अतएव, तारा निजेदेर मध्ये यतक्षण कथाटा परिष्कार करे ना नेबे ततक्षण आमि ए विषये कोनोप्रकार हस्तक्षेप करते पारब ना।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "बुझते पार नि! एतदिन परे स्वीकार करले! ओइ मेयेटिके बोझा बड़ो सहज नय। ओ बाइरे एकरकम, भितरे एकरकम।"

वरदासुन्दरी हारानबाबुके डाकिया पाठाइलेन।

सेदिन कागजे ब्राह्मसमाजेर वर्तमान दुर्गतिर आलोचना छिल। ताहार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मध्ये परेशबाबुर परिवारेर प्रति एमनभावे लक्ष्य करा छिल ये, कोनो नाम ना थाका सत्त्वेओ आक्रमणेर विषय ये के ताहा सकलेर काछेइ बेश स्पष्ट हइयाछिल, एवं लेखक ये के ताहाओ लेखार भङ्गिते अनुमान करा कठिन हय नाइ। कागज-खानाय कोनोमते चोख बुलाइयाइ सुचरिता ताहा कुटिकुटि करिया छिँड़ितेछिल। छिँड़िते छिँड़िते कागजेर अंशगुलिके येन परमाणुते परिणत करिबार जन्य ताहार रोख चड़िया याइतेछिल।

एमन समय हारानबाबु घरे प्रवेश करिया सुचरितार पाशे एकटा चौकि टानिया बसिलेन। सुचरिता एकबार मुख तुलियाओ चाहिल ना, से येमन कागज छिँड़ितेछिल तेमनि छिँड़ितेइ लागिल।

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरिता, आज एकटा गुरुतर कथा आछे। आमार कथाय एकटु मन दिते हबे।"

सुचरिता कागज छिँड़ितेइ लागिल। नखे छेंड़ा यखन असम्भव हइल तखन थले हइते काँचि बाहिर करिया काँचिटा दिया काटिते लागिल। ठिक एइ मुहूर्ते ललिता घरे प्रवेश करिल।

हारानबाबु कहिलेन, "ललिता, सुचरितार सङ्गे आमार एकटु कथा आछे।"

ललिता घर हइते चलिया याइवार उपक्रम करितेइ सुचरिता ताहार आँचल चापिया धरिल। ललिता कहिल, "तोमार सङ्गे पानुबाबुर ये कथा आछे।"

सुचरिता ताहार कोनो उत्तर ना करिया ललितार आँचल चापियाइ रहिल; तखन ललिता सुचरितार आसनेर एक पाशे बसिया पड़िल।

हारानबाबु कोनो बाधातेइ दमिबार पात्र नहेन। तिनि आर भूमिकामात्र ना करिया एकेबारे कथाटा पाड़िया बसिलेन। कहिलेन, "आमादेर विवाहे आर विलम्ब हओया उचित मने करि ने। परेशबाबुके जानियेछिलाम; तिनि बललेन, तोमार सम्मति पेलेइ आर-कोनो बाधा थाकबे ना। आमि स्थिर करेछि, आगामि रविवारेर परेर रविवारेइ—"

सुचरिता कथा शेष करिते ना दियाइ कहिल, "ना।"

सुचरितार मुखे एइ अत्यन्त संक्षिप्त सुस्पष्ट एवं उद्धत "ना" शुनिया हारानबाबु थमकिया गेलेन। सुचरिताके तिनि अत्यन्त बाध्य बलिया जानितेन। से ये एकमात्र "ना" बाणेर द्वारा ताँहार प्रस्तावटिके एक मुहूर्ते अर्धपथे छेदन करिया फेलिबे इहा तिनि मनेओ करेन नाइ। तिनि विरक्त हइया कहिलेन, "ना! ना माने की। तुमि आरओ देरि करते चाओ?"

सुचरिता कहिल, "ना।"

हारानबाबु विस्मित हइया कहिलेन, "तबे?"

सुचरिता माथा नत करिया कहिल, "विवाहे आमार मत नेइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारानबाबु हतबुद्धिर न्याय जिज्ञासा करिलेन, "मत नेइ ? तार माने ?"

ललिता ठोकर दिया कहिल, "पानुबाबु, आपनि आज बांला भाषा भुले गेलेन नाकि ।"

हारानबाबु कठोर दृष्टिर द्वारा ललिताके आघात करिया कहिलेन, "वरञ्च मातृभाषा भुले गेछि ए कथा स्वीकार करा सहज, किन्तु ये-मानुषेर कथाय बराबर श्रद्धा करे एसेछि ताके भुल बुझेछि ए कथा स्वीकार करा सहज नय ।"

ललिता कहिल, "मानुषके बुझते समय लागे, आपनार सम्बन्धेओ हयतो से-कथा खाटे ।"

हारानबाबु कहिलेन, "प्रथम थेके आज पर्यन्त आमार कथार वा मतेर वा व्यवहारेर कोनो व्यत्यय घटे नि—आमि आमाके भुल बोझबार कोनो उपलक्ष काउके दिइ नि, ए कथा आमि जोरेर सङ्गे बलते पारि—सुचरिताइ बलुन आमि ठिक बलछि कि ना ।"

ललिता आबार की एकटा उत्तर दिते याइतेछिल ; सुचरिता ताहाके थामाइया दिया कहिल, "आपनि ठिक बलेछेन । आपनाके आमि कोनो दोष दिते चाइ ने ।"

हारानबाबु कहिलेन, "दोष यदि ना देबे तबे आमार प्रति अन्यायइ वा करबे केन ।"

सुचरिता दृढ़स्वरे कहिल, "यदि एके अन्याय बलेन तबे आमि अन्यायइ करब—किन्तु—"

बाहिर हइते डाक आसिल, "दिदि, घरे आछेन ?"

सुचरिता उत्फुल्ल हइया उठिया ताड़ाताड़ि कहिल, "आसुन, विनयबाबु, आसुन ।"

"भुल करछेन, दिदि—विनयबाबु आसेन नि, आमि विनय मात्र, आमाके समादर करे लज्जा देबेन ना"—बलिया विनय घरे प्रवेश करियाइ हारानबाबुके देखिते पाइल । हारानबाबुर मुखेर अप्रसन्नता लक्ष्य करिया कहिल, "अनेक दिन आसि नि बले राग करेछेन बुझि !"

हारानबाबु परिहासे योग दिवार चेष्टा करिया कहिलेन, "राग करबारइ कथा बटे । किन्तु, आज आपनि एकटु असमये एसेछेन—सुचरितार सङ्गे आमार एकटा विशेष कथा हच्छिल ।"

विनय शशव्यस्त हइया उठिल ; कहिल, "ओइ देखुन, आमि कखन एले ये असमयेर आसा हय ना, ता आमि आज पर्यन्त बुझतेइ पारलुम ना । एइजन्यइ आसते साहसइ हय ना ।"

बलिया विनय बाहिर हइया याइबार उपक्रम करिल ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "विनयबाबु, याबेन ना। आमादेर या कथा छिल शेष हये गेछे। आपनि बसुन।"

विनय बुझिते पारिल, से आसाते सुचरिता एकटा विशेष संकट हइते परित्राण पाइयाछे। खुशि हइया एकटा चौकिते बसिया पड़िल एवं कहिल, "आमाके प्रश्रय दिले आमि किछुतेइ सामलाते पारि ने। आमाके बसते बलले आमि बसबइ, एइरकम आमार स्वभाव। अतएव, दिदिर प्रति निवेदन एइ ये, ए-सब कथा येन बुझेसुझे बलेन, नइले विपदे पड़बेन।"

हारानबाबु कोनो कथा ना बलिया आसन्न झड़ेर मतो स्तब्ध हइया रहिलेन। तिनि नीरवे प्रकाश करिलेन, 'आच्छा बेश, आमि अपेक्षा करिया बसिया रहिलाम--आमार या कथा आछे ताहा शेष पर्यन्त बलिया तबे आमि उठिब।'

द्वारेर बाहिर हइते विनयेर कण्ठस्वर शुनियाइ ललितार बुकेर भितरकार समस्त रक्त येन चमक खाइया उठियाछिल। से बहुकष्टे आपनार स्वाभाविक भाव रक्षा करिबार चेष्टा करियाछिल, किन्तु किछुतेइ पारिल ना। विनय यखन घरे प्रवेश करिल ललिता बेश सहजे ताहादेर परिचित बन्धुर मतो ताहाके कोनो कथा बलिते पारिल ना। कोन् दिके चाहिबे, निजेर हातखाना लइया की करिबे, से येन एकटा भावनार विषय हइया पड़िल। एकबार उठिया याइबार चेष्टा करियाछिल, किन्तु सुचरिता कोनोमतेइ ताहार कापड़ छाड़िल ना।

विनयओ याहा किछु कथावार्ता समस्त सुचरितार सङ्गेइ चालाइल—ललितार निकट कोनो कथा फाँदा ताहार मतो वाक्‌पटु लोकेर काछेओ आज शक्त हइया उठिल। एइजन्यइ से येन डबल जोरे सुचरितार सङ्गे आलाप करिते लागिल--कोथाओ कोनो फाँक पड़िते दिल ना।

किन्तु, हारानबाबुर काछे ललिता ओ विनयेर एइ नूतन संकोच अगोचर रहिल ना। ये-ललिता ताँहार सम्बन्धे आजकाल एमन प्रखर भावे प्रगल्भा हइया उठियाछे से आज विनयेर काछे एमन संकुचित, इहा देखिया तिनि मने मने ज्वलिते लागिलेन एवं ब्राह्मसमाजेर बाहिरेर लोकेर सहित कन्यादेर अवाध परिचयेर अवकाश दिया परेशबाबु ये निजेर परिवारके किरूप कदाचारेर मध्ये लइया याइतेछेन ताहा मने करिया परेशबाबुर प्रति ताँहार घृणा आरओ बाड़िया उठिल एवं परेशबाबुके येन एकदिन एजन्य विशेष अनुताप करिते हय एइ कामना ताँहार मनेर मध्ये अभिशापेर मतो जागिते लागिल।

अनेकक्षण एइभावे चलिले पर स्पष्टइ बुझा गेल, हारानबाबु उठिबेन ना। तखन सुचरिता विनयके कहिल, "मासिर सङ्गे अनेक दिन आपनार देखा हय नि। तिनि आपनार कथा प्रायइ जिज्ञासा करेन। एकबार ताँर सङ्गे देखा करते पारेन ना?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय चौकि हइते उठिया दाँड़ाइया कहिल, "मासिर कथा आमार मने छिल ना, एमन अपवाद आमाके दिबेन ना।"

सुचरिता यखन विनयके ताहार मासिर काछे लइया गेल तखन ललिता उठिया कहिल, "पानुबाबु, आमार सङ्गे आपनार बोध हय विशेष कोनो प्रयोजन नेइ।"

हारानबाबु कहिलेन, "ना। तोमार बोध हय अन्यत्र विशेष प्रयोजन आछे। तुमि येते पार।"

ललिता कथाटार इङ्गित बुझिते पारिल। से तत्क्षणात् उद्धत भावे माथा तुलिया इङ्गितके स्पष्ट करिया दिया कहिल, "विनयबाबु आज अनेकदिन परे एसेछेन, ताँर सङ्गे गल्प करते याच्छि। ततक्षण आपनि निजेर लेखा यदि पड़ते चान ता हल—ना, ओइ या, से कागजखाना दिदि देखछि कुटि कुटि करे फेलेछेन। परेर लेखा यदि सह्य करते पारेन ता हले एइगुलि देखते पारेन।"

बलिया कोणेर टेबिल हइते सयत्नरक्षित गोरार रचनागुलि आनिया हारान-बाबुर सम्मुखे राखिया द्रुतपदे घर हइते बाहिर हइया गेल।

हरिमोहिनी विनयके पाइया अत्यन्त आनन्द अनुभव करिलेन। केवल ये एइ प्रियदर्शन युवकेर प्रति स्नेहवशत ताहा नहे, ए बाड़िते बाहिरेर लोक ये-केह हरिमोहिनीर काछे आसियाछे सकलेइ ताँहाके येन कोनो एक भिन्न श्रेणीर प्राणीर मतो देखियाछे। ताहारा कलिकातार लोक, प्राय सकलेइ इंरेजि ओ बांला लेखापड़ाय ताँहार अपेक्षा श्रेष्ठ—ताहादेर दूरत्व ओ अवज्ञार आघाते तिनि अत्यन्त संकुचित हइया पड़ितेछिलेन। विनयके तिनि आश्रयेर मतो अनुभव करिलेन। विनयओ कलिकातार लोक, हरिमोहिनी शुनियाछेन लेखापड़ातेओ से बड़ो कम नय—अथच एइ विनय ताँहाके किछुमात्र अश्रद्धा करे ना, ताँहाके आपन लोकेर मतो देखे, इहाते ताँहार आत्मसम्मान एकटा निर्भर पाइल। विशेष करिया एइजन्यइ अल्प परिचयेइ विनय ताँहार निकट आत्मीयेर स्थान लाभ करिल। ताँहार मने हइते लागिल, विनय ताँहार वर्मेर मतो हइया अन्य लोकेर औद्धत्य हइते ताँहाके रक्षा करिबे। ए-बाड़िते तिनि अत्यन्त बेशि प्रकाश्य हइया पड़ियाछिलेन—विनय येन ताँहार आवरणेर मतो हइया ताँहाके आड़ाल करिया राखिबे।

हरिमोहिनीर काछे विनय याओयार अल्पक्षण परेइ ललिता सेखाने कखनोइ सहजे याइत ना—किन्तु आज हारानबाबुर गुप्त विद्रूपेर आघाते से समस्त संकोच छिन्न करिया येन जोर करिया उपरेर घरे गेल। शुधु गेल ताहा नहे, गियाइ विनयेर सङ्गे अजस्र कथावार्ता आरम्भ करिया दिल। ताहादेर सभा खुब जमिया उठिल; एमन-कि, माझे माझे ताहादेर हासिर शब्द नीचेर घरे एकाकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसीन हारानबाबुर कानेर भितर दिया मरमे पशिया विद्ध करिते लागिल। तिनि बेशिक्षण एकला थाकिते पारिलेन ना, वरदासुन्दरीर सङ्गे आलाप करिया मनेर आक्षेप निवृत्त करिते चेष्टा करिलेन। वरदासुन्दरी शुनिलेन ये, सुचरिता हारानबाबुर सङ्गे विवाहे असम्मति ज्ञापन करियाछे। शुनिया ताँहार पक्षे धैर्य रक्षा करा एकेबारे असम्भव हइल। तिनि कहिलेन, "पानुबाबु, आपनि भालोमानुषि करले चलबे ना। ओ यखन बार बार सम्मति प्रकाश करेछे एवं ब्राह्मसमाज-सुद्ध सकलेइ यखन एइ बियेर जन्य अपेक्षा करे आछे तखन ओ आज माथा नाड़ल बलेइ ये समस्त उल्टे याबे ए कखनोइ हते देओया चलबे ना। आपनार दाबि आपनि किछुतेइ छाड़बेन ना बले राखछि, देखि ओ की करते पारे।"

ए-सम्बन्धे हारानबाबुके उत्साह देओया बाहुल्य—तिनि तखन काठेर मतन शक्त हइया बसिया माथा तुलिया मने मने बलितेछिलेन, 'अन प्रिन्सिप्ल् ए दाबि छाड़ा चलिबे ना—आमार पक्षे सुचरिताके त्याग करा बेशि कथा नय, किन्तु ब्राह्मसमाजेर माथा हेंट करिया दिते पारिब ना।'

विनय हरिमोहिनीर सहित आत्मीयताके पाका करिया लइबार अभिप्राये आहारेर आबदार करिया बसियाछिल। हरिमोहिनी तत्क्षणात् व्यस्त हइया एकटि छोटो थालाय किछु भिजानो छोला, छाना, माखन, एकटु चिनि, एकटि कला, एवं काँसार बाटिते किछु दुध आनिया सयत्ने विनयेर सम्मुखे धरिया दियाछेन। विनय हासिया कहिल, "असमये क्षुधा जानाइया मासिके विपदे फेलिब मने करिया-छिलाम, किन्तु आमि ठकिलाम।"

एइ बलिया खुब आड़म्बर करिया विनय आहारे बसियाछे, एमन समय वरदासुन्दरी आसिया उपस्थित हइलेन। विनय ताहार थालार उपरे यथासम्भव नत हइया नमस्कारेर चेष्टा करिया कहिल, "अनेकक्षण नीचे छिलुम; आपनार सङ्गे देखा हल ना।"

वरदासुन्दरी ताहार कोनो उत्तर ना करिया सुचरितार प्रति लक्ष्य करिया कहिलेन, "एइ-ये इनि एखाने। आमि या ठाउरेछिलुम ताइ। सभा बसेछे। आमोद करछेन। एदिके बेचारा हारानबाबु सक्काल थेके ओंर जन्ये अपेक्षा करे बसे रयेछेन, येन तिनि ओंर बागानेर माली। छेलेवेला थेके ओदेर मानुष करलुम—कइ बापु, एतदिन तो ओदेर एरकम व्यवहार कखनो देखि नि। के जाने आजकाल ए-सब शिक्षा कोथा थेके पाच्छे। आमादेर परिवारे या कखनो घटते पारत ना आजकाल ताइ आरम्भ हयेछे—समाजेर लोकेर काछे ये आमादेर मुख देखाबार जो रइल ना। एतदिन धरे एत करे या शेखानो गेल से-समस्तइ दु-दिने विसर्जन दिले। ए की सब काण्ड।"

हरिमोहिनी शशव्यस्त हइया उठिया सुचरिताके कहिलेन, "नीचे केउ बसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आछेन, आमि तो जानतेम ना। बड़ो अन्याय हये गेछे तो। मा, याओ तुमि शीघ्र याओ। आमि अपराध करे फेलेछि।"

अपराध ये हरिमोहिनीर लेशमात्र नहे, इहाइ बलिबार जन्य ललिता मुहूर्तेर मध्ये उद्यत हइया उठियाछिल। सुचरिता गोपने सबले ताहार हात चापिया धरिया ताहाके निरस्त करिल एवं कोनो प्रतिवादमात्र ना करिया नीचे चलिया गेल।

पूर्वेइ बलियाछि, विनय वरदासुन्दरीर स्नेह आकर्षण करियाछिल। विनय ये ताँहादेर परिवारेर प्रभावे पड़िया क्रमे ब्राह्मसमाजे प्रवेश करिबे ए-सम्बन्धे ताँहार सन्देह छिल ना। विनयके तिनि येन निजेर हाते गड़िया तुलितेछेन बलिया एकटा विशेष गर्व अनुभव करितेछिलेन ; से-गर्व तिनि ताँहार बन्धुदेर मध्ये कारओ कारओ काछे प्रकाशओ करियाछिलेन। सेइ विनयके आज शत्रुपक्षेर शिविरेर मध्ये प्रतिष्ठित देखिया ताँहार मनेर मध्ये येन एकटा दाह उपस्थित हइल एवं निजेर कन्या ललिताके विनयेर पुन:पतनेर सहायकारी देखिया ताँहार चित्तज्वाला ये आरओ द्विगुण बाड़िया उठिल से-कथा बला बाहुल्य। तिनि रुक्षस्वरे कहिलेन, "ललिता, एखाने कि तोमार कोनो काज आछे।"

ललिता कहिल, "हाँ, विनयबाबु एसेछेन ताइ—"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "विनयबाबु याँर काछे एसेछेन तिनि ओंर आतिथ्य करबेन, तुमि एखन नीचे एसो, काज आछे।"

ललिता स्थिर करिल, हारानबाबु निश्चयइ विनय ओ ताहार दुइजनेर नाम लइया माके एमन-किछु बलियाछेन याहा बलिबार अधिकार ताँहार नाइ। एइ अनुमान करिया ताहार मन अत्यन्त शक्त हइया उठिल। से अनावश्यक प्रगल्भतार सहित कहिल, "विनयबाबु अनेकदिन परे एसेछेन, ओंर सङ्गे एकटु गल्प करे निये तार परे आमि याच्छि।"

वरदासुन्दरी ललितार कथार स्वरे बुझिलेन, जोर खाटिबे ना। हरिमोहिनीर सम्मुखेइ पाछे ताँहार पराभव प्रकाश हइया पड़े, एइ भये तिनि आर किछु ना बलिया एवं विनयके कोनो प्रकार सम्भाषण ना करिया चलिया गेलेन।

ललिता विनयेर सङ्गे गल्प करिबार उत्साह ताहार मार काछे प्रकाश करिल बटे, किन्तु वरदासुन्दरी चलिया गेले से-उत्साहेर कोनो लक्षण देखा गेल ना। तिन जनेइ केमन एक प्रकार कुण्ठित हइया रहिल एवं अल्पक्षण परेइ ललिता उठिया गिया निजेर घरे प्रवेश करिया दरजा बन्ध करिया दिल।

ए बाड़िते हरिमोहिनीर ये किरूप अवस्था घटियाछे ताहा विनय स्पष्टइ बुझिते पारिल। कथा पाड़िया क्रमश हरिमोहिनीर पूर्व-इतिहास समस्तइ से शुनिया लइल। सकल कथार शेषे हरिमोहिनी कहिलेन, "बाबा, आमार मतो अनाथार पक्षे संसार ठिक स्थान नय। कोनो तीर्थे गिये देवसेवाय मन दिते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पारलेइ आमार पक्षे भालो हत। आमार अल्प ये-कटि टाका बाकि रयेछे ताते आमार किछुदिन चले येत, तार परेओ यदि बेंचे थाकतुम तो परेर बाड़िते रेंधे खेयेओ आमार कोनोमते दिन केटे येत। काशीते देखे एलुम, एमन तो कत लोकेर बेश चले याच्छे। किन्तु, आमि पापिष्ठा बले से कोनोमतेइ पेरे उठलुम ना। एकला थाकलेइ आमार समस्त दुःखेर कथा आमाके येन घिरे बसे, ठाकुर-देवता काउके आमार काछे आसते देय ना। भय हय पाछे पागल हये याइ। ये-मानुष डुबे मरछे तार पक्षे भेला येमन, राधारानी आर सतीश आमार पक्षे तेमनि हये उठेछे—ओदेर छाड़बार कथा मने करते गेलेइ देखि आमार प्राण हाँपिये ओठे। ताइ आमार दिनरात्रि भय हय, ओदेर छाड़तेइ हबे—नइले सब खुइये आबार एइ कदिनेर मध्ये ओदेर एत भालोबासते गेलुम की जन्ये। बाबा, तोमार काछे बलते आमार लज्जा नेइ, एदेर दुटिके पाओयार पर थेके ठाकुरेर पुजो आमि मनेर सङ्गे करते पेरेछि—एरा यदि याय तबे आमार ठाकुर तखनइ कठिन पाथर हये याबे।"

एइ बलिया वस्त्राञ्चले हरिमोहिनी दुइ चक्षु मुछिलेन।

४०

सुचरिता नीचेर घरे आसिया हारानबाबुर सम्मुखे दाँड़ाइल; कहिल, "आपनार की कथा आछे बलुन।"

हारानबाबु कहिलेन, "बोसो।"

सुचरिता बसिल ना, स्थिर दाँड़ाइया रहिल।

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरिता, तुमि आमार प्रति अन्याय करछ।"

सुचरिता कहिल, "आपनिओ आमार प्रति अन्याय करछेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "केन, आमि तोमाके या कथा दियेछि एखनओ ता—"

सुचरिता माझखाने बाधा दिया कहिल, "न्याय-अन्याय कि शुधु केवल कथाय। सेइ कथार उपर जोर दिये आपनि काजे आमार प्रति अत्याचार करते चान? एकटा सत्य कि सहस्र मिथ्यार चेये बड़ो नय। आमि यदि एक-शो बार भुल करे थाकि तबे कि आपनि जोर करे आमार सेइ भुलकेइ अग्रगण्य करबेन। आज आमार यखन सेइ भुल भेङेछे तखन आमि आमार आगेकार कोनो कथाके स्वीकार करव ना—करले आमार अन्याय हबे।"

सुचरितार ये एमन परिवर्तन की करिया सम्भव हइते पारे ताहा हारानबाबु कोनोमतेइ बुझिते पारिलेन ना। ताहार स्वाभाविक स्तब्धता ओ नम्रता आज एमन करिया भाङिया गेछे, इहा ये ताँहारइ द्वारा घटिते पारे ताहा अनुमान करिबार शक्ति ओ विनय ताँहार छिल ना। सुचरितार नूतन सङ्गीगुलिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रति मने मने दोषारोप करिया तिनि जिज्ञासा करिलेन, "तुमि की भुल करेछिले ।"

सुचरिता कहिल, "से-कथा केन आमाके जिज्ञासा करछेन । पूर्वे मत छिल एखन आमार मत नेइ, एइ कि यथेष्ट नय ।"

हारानबाबु कहिलेन, "ब्राह्मसमाजेर काछे ये आमादेर जवाबदिहि आछे। समाजेर लोकेर काछे तुमिइ वा की बलबे, आमिइ वा की बलब ।"

सुचरिता कहिल, "आमि कोनो कथाइ बलब ना। आपनि यदि बलते इच्छा करेन तबे बलबेन, सुचरितार वयस अल्प, ओर बुद्धि नेइ, ओर मति अस्थिर। येमन इच्छा तेमनि बलबेन। किन्तु, ए-सम्बन्धे एइ आमादेर शेष कथा हये गेल ।"

हारानबाबु कहिलेन, "शेष कथा हतेइ पारे ना। परेशबाबु यदि—"

बलिते बलितेइ परेशबाबु आसिया उपस्थित हइलेन ; कहिलेन, "की, पानुबाबु, आमार कथा की बलछेन ।"

सुचरिता तखन घर हइते बाहिर हइया याइतेछिल। हारानबाबु डाकिया कहिलेन, "सुचरिता, येयो ना, परेशबाबुर काछे कथाटा हये याक ।"

सुचरिता फिरिया दाँड़ाइल। हारानबाबु कहिलेन, "परेशबाबु, एतदिन परे आज सुचरिता बलछेन, विवाहे ओंर मत नेइ ! एतबड़ो गुरुतर विषय निये कि एतदिन ओंर खेला करा उचित छिल। एइ-ये कदर्य उपसर्गटा घटल, एजन्य कि आपनाकेओ दायी हते हबे ना ।"

परेशबाबु सुचरितार माथाय हात बुलाइया स्निग्धस्वरे कहिलेन, "मा, तोमार एखाने थाकबार दरकार नेइ, तुमि याओ ।"

एइ सामान्य कथाटुकु शुनिवामात्र एक मुहूर्ते अश्रुजले सुचरितार दुइ चोख भासिया गेल एवं से ताड़ाताड़ि सेखान हइते चलिया गेल।

परेशबाबु कहिलेन, "सुचरिता ये निजेर मन भालो करे ना बुझेइ विवाहे सम्मति दियेछिल, एइ सन्देह अनेकदिन थेके आमार मने उदय हओयातेइ समाजेर लोकेर सामने आपनादेर सम्बन्ध पाका करार विषये आमि आपनार अनुरोध पालन करते पारि नि ।"

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरिता तखन निजेर मन ठिक बुझेइ सम्मति दियेछिल, एखनइ ना बुझे असम्मति दिच्छे, एरकम सन्देह आपनार मने उदय हच्छे ना ?"

परेशबाबु कहिलेन, "दुटोइ हते पारे, किन्तु एरकम सन्देहेर स्थले तो विवाह हते पारे ना ।"

हारानबाबु कहिलेन, "आपनि सुचरिताके सत्परामर्श देबेन ना ?"

परेशबाबु कहिलेन, "आपनि निश्चय जानेन, सुचरिताके आमि कखनो साध्यमतो असत्परामर्श दिते पारि ने ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारानबाबु कहिलेन, "ताइ यदि हत, ता हले सुचरितार एरकम परिणाम कखनोइ घटते पारत ना। आपनार परिवारे आजकाल ये-सब व्यापार आरम्भ हयेछे ए ये समस्तइ आपनार अविवेचनार फल, ए कथा आमि आपनाके मुखेर सामनेइ बलछि।"

परेशबाबु ईषत् हासिया कहिलेन, "ए तो आपनि ठिक कथाइ बलछेन—आमार परिवारेर समस्त फलाफलेर दायित्व आमि नेब ना तो के नेबे।"

हारानबाबु कहिलेन, "एजन्ये आपनाके अनुताप करते हबे—से आमि बले राखछि।"

परेशबाबु कहिलेन, "अनुताप तो ईश्वरेर दया। अपराधकेइ भय करि, पानुबाबु, अनुतापके नय।"

सुचरिता घरे प्रवेश करिया परेशबाबुर हात धरिया कहिल, "बाबा, तोमार उपासनार समय हयेछे।"

परेशबाबु कहिलेन, "पानुबाबु, तबे कि एकटु बसबेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "ना।" बलिया द्रुतपदे चलिया गेलेन।

४१

एकइ समये निजेर अन्तरेर सङ्गे आबार निजेर बाहिरेर सङ्गे सुचरितार ये-संग्राम बाधिया उठियाछे ताहाते ताहाके भीत करिया तुलियाछे। गोरार प्रति ताहार ये मनेर भाव एतदिन ताहार अलक्ष्ये बल पाइया उठियाछिल एवं गोरार जेले याओयार पर हइते याहा ताहार निजेर काछे सम्पूर्ण सुस्पष्ट एवं दुर्निवाररूपे देखा दियाछे ताहा लइया से ये की करिबे, ताहार परिणाम ये की, ताहा से किछुइ भाबिया पाय ना; से कथा काहाकेओ बलिते पारे ना, निजेर काछे निजे कुण्ठित हइया थाके। एइ निगूढ़ वेदनाटाके लइया से गोपने बसिया निजेर सङ्गे ये एकटा बोझापड़ा करिया लइबे ताहार से निभृत अवकाशटुकुओ नाइ—हारानबाबु ताहार द्वारेर काछे ताँहादेर समस्त समाजके जाग्रत करिया तुलिबार उपक्रम करियाछेन; एमन-कि, छापार कागजेर ढाकेओ काठि पड़िबार लक्षण देखा याइतेछे। इहार उपरेओ ताहार मासिर समस्या एमन हइया उठियाछे ये अति सत्वर ताहार एकटा कोनो मीमांसा ना करिले एकदिनओ आर चलेना। सुचरिता बुझियाछे, एवार ताहार जीवनेर एकटा सन्धिक्षण आसियाछे, चिरपरिचित पथे चिराभ्यस्त निश्चिन्तभावे चलिबार दिन आर नाइ।

एइ ताहार संकटेर समय ताहार एकमात्र अवलम्बन छिल परेशबाबु। ताँहार काछे से परामर्श चाहे नाइ, उपदेश चाहे नाइ; अनेक कथा छिल याहा परेशबाबुर सम्मुखे से उपस्थित करिते पारित ना एवं एमन अनेक कथा छिल याहा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लज्जाकर हीनतावशतइ परेशबाबुर काछे प्रकाशेर अयोग्य। केवल परेशबाबुर जीवन, परेशबाबुर सङ्गमात्र ताहाके येन निःशब्दे कोन् पितृक्रोड़े कोन् मातृवक्षे आकर्षण करिया लइत।

एखन शीतेर दिने सन्ध्यार समय परेशबाबु बागाने याइतेन ना। बाड़िर पश्चिम दिकेर एकटि छोटो घरे मुक्त द्वारेर सम्मुखे एकखानि आसन पातिया तिनि उपासनाय बसितेन, ताँहार शुक्लकेशमण्डित शान्त मुखेर उपर सूर्यास्तेर आभा आसिया पड़ित। सेइ समये सुचरिता निःशब्दपदे चुप करिया ताहार काछे आसिया बसित। निजेर अशान्त व्यथित चित्तटिके से येन परेशेर उपासनार गभीरतार माझखाने निमज्जित करिया राखित। आजकाल उपासनान्ते प्रायइ परेश देखिते पाइतेन, ताँहार एइ कन्याटि, एइ छात्रीटि, स्तब्ध हइया ताँहार काछे बसिया आछे; तखन तिनि एकटि अनिर्वचनीय आध्यात्मिक माधुर्येर द्वारा एइ बालिकाटिके परिवेष्टित देखिया समस्त अन्तःकरण दिया निःशब्दे इहाके आशीर्वाद करितेन।

भूमार सहित मिलनकेइ जीवनेर एकमात्र लक्ष्य करियाछिलेन बलिया याहा श्रेयतम एवं सत्यतम परेशेर चित्त सर्वदाइ ताहार अभिमुख छिल। एइजन्य संसार कोनोमतेइ ताँहार काछे अत्यन्त गुरुतर हइया उठिते पारित ना। एइरूपे निजेर मध्ये तिनि एकटि स्वाधीनता लाभ करियाछिलेन बलियाइ मत वा आचरण लइया तिनि अन्येर प्रति कोनोप्रकार जबरदस्ति करिते पारितेन ना। मङ्गलेर प्रति निर्भर एवं संसारेर प्रति धैर्य ताँहार पक्षे अत्यन्त स्वाभाविक छिल। इहा ताँहार एत अधिक परिमाणे छिल ये, साम्प्रदायिक लोकेर काछे तिनि निन्दित हइतेन; किन्तु निन्दाके तिनि एमन करिया ग्रहण करिते पारितेन ये, हयतो ताहा ताँहाके आघात करित किन्तु ताँहाके विद्ध करिया थाकित ना। तिनि मनेर मध्ये एइ कथाटाइ केवलइ थाकिया थाकिया आवृत्ति करितेन, 'आमि आर-काहारओ हात हइते किछुइ लइब ना, आमि ताँहार हात हइतेइ समस्त लइब।'

परेशेर जीवनेर एइ गभीर निस्तब्ध शान्तिर स्पर्श लाभ करिबार जन्य आजकाल सुचरिता नाना उपलक्षेइ ताँहार काछे आसिया उपस्थित हय। एइ अनभिज्ञ बालिका-वयसे ताहार विरुद्ध हृदय एवं विरुद्ध संसार यखन ताहाके एकेबारे उद्भ्रान्त करिया तुलियाछे तखन से बार बार केवल मने करियाछे, 'बाबार पा दुखाना माथाय चापिया धरिया खानिकक्षणेर जन्य यदि माटिते पड़िया थाकिते पारि तबे आमार मन शान्तिते भरिया उठे।'

एइरूपे सुचरिता मने भावितेछिल, से मनेर समस्त शक्तिके जाग्रत करिया अविचलित धैर्येर सहित समस्त आघातके ठेकाइया राखिबे, अवशेषे समस्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रतिकूलता आपनि परास्त हइया याइबे। किन्तु सेरूप घटिल ना, ताहाके अपरिचित पथे बाहिर हइते हइल।

वरदासुन्दरी यखन देखिलेन, राग करिया, भर्त्सना करिया सुचरिताके टलानो सम्भव नहे एवं परेशकेओ सहायरूपे पाइबार कोनो आशा नाइ, तखन हरिमोहिनीर प्रति ताँहार क्रोध अत्यन्त दुर्दान्त हइया उठिल। ताँहार गृहेर मध्ये हरिमोहिनीर अस्तित्व ताँहाके उठिते बसिते यन्त्रणा दिते लागिल।

सेदिन ताँहार पितार मृत्युदिनेर वार्षिक उपासना उपलक्षे तिनि विनयके निमन्त्रण करियाछिलेन। उपासना सन्ध्यार समय हइबे, तत्पूर्वेइ तिनि सभागृह साजाइया राखितेछिलेन; सुचरिता एवं अन्य मेयेराओ ताँहार सहायता करितेछिल।

एमन समय ताँहार चोखे पड़िल, विनय पाशेर सिँड़ि दिया उपरे हरिमोहिनीर निकट याइतेछे। मन यखन भाराक्रान्त थाके तखन क्षुद्र घटनाओ बड़ो हइया उठे। विनयेर एइ उपरेर घरे याओया एक मुहूर्ते ताँहार काछे एमन असह्य हइया उठिल ये, तिनि घर साजानो फेलिया तत्क्षणात् हरिमोहिनीर काछे गिया उपस्थित हइलेन। देखिलेन, विनय मादुरे बसिया आत्मीयेर न्याय विश्रब्धभावे हरिमोहिनीर सहित कथा कहितेछे।

वरदासुन्दरी बलिया उठिलेन, "देखो, तुमि आमादेर एखाने यतदिन खुशि थाको, आमि तोमाके आदरयत्न करेइ राखब। किन्तु, आमि बलछि, तोमार ओइ ठाकुरके एखाने राखा चलबे ना।"

हरिमोहिनी चिरकाल पाड़ागाँयेइ थाकितेन। ब्राह्मदेर सम्बन्धे ताँहार धारणा छिल ये, ताहारा खृस्टानेरइ शाखाविशेष। सुतरां ताहादेरइ संस्रव सम्बन्धे विचार करिबार विषय आछे। किन्तु, ताहाराओ ये ताँहार सम्बन्धे संकोच अनुभव करिते पारे, इहा तिनि एइ कयदिन क्रमशइ बुझिते पारितेछिलेन। की करा कर्तव्य व्याकुल हइया चिन्ता करितेछिलेन, एमन समये आज वरदासुन्दरीर मुखे एइ कथा शुनिया तिनि बुझिलेन ये, आर चिन्ता करिबार समय नाइ, याहा हय एकटा किछु स्थिर करिते हइबे। प्रथमे भाविलेन, कलिकाताय एकटा कोथाओ बासा लइया थाकिबेन, ताहा हइले माझे माझे सुचरिता ओ सतीशके देखिते पाइबेन। किन्तु, ताँहार ये अल्प सम्बल ताहाते कलिकातार खरच चलिबे ना।

वरदासुन्दरी अकस्मात् झड़ेर मतो आसिया यखन चलिया गेलेन, तखन विनय माथा हेंट करिया चुप करिया बसिया रहिल।

किछुक्षण चुप करिया थाकिया हरिमोहिनी बलिया उठिलेन, "आमि तीर्थे याब, तोमरा केउ आमाके पौंछे दिये आसते पारबे, बावा?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "खुब पारब। किन्तु, तार आयोजन करते तो दु-चार दिन देरि हबे ; ततदिन चलो, मासि, तुमि आमार मार काछे गिये थाकबे।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "बाबा, आमार भार विषम भार। विधाता आमार कपालेर उपर की बोझा चापियेछेन जानि ने, आमाके केउ बइते पारे ना। आमार श्वशुरबाड़ितेओ यखन आमार भार सइल ना तखनइ आमार बोझा उचित छिल। किन्तु, बड़ो अबुझ मन, बाबा—बुक ये खालि हये गेछे सेइटे भराबार जन्ये केवलइ घुरे घुरे बेड़াच्छि, आमार पोड़ा भाग्यओ ये सङ्गे सङ्गे चलेछे। आर थाक्, बाबा, आर-कारओ बाड़िते गिये काज नेइ—यिनि विश्वेर बोझा बन ताँरइ पादपद्मे एबार आमि आश्रय ग्रहण करब—आर आमि पारि ने।"

बलिया बार बार करिया दुइ चक्षु मुछिते लागिलेन।

विनय कहिल, "से बलले हबे ना, मासि। आमार मार सङ्गे अन्य-कारओ तुलना करले चलबे ना। यिनि निजेर जीवनेर समस्त भार भगवानके समर्पण करते पेरेछेन तिनि अन्येर भार बइते क्लेश बोध करेन ना। येमन आमार मा, आर येमन एखाने देखलेन परेशबाबु। से आमि शुनब ना—एकबार आमार तीर्थे तोमाके बेड़िये निये आसब, तार परे तोमार तीर्थ आमि देखते याब।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ताँदेर ता हले तो एकबार खबर दिये—"

विनय कहिल, "आमरा गेलेइ मा खबर पावेन—सेइटेइ हबे पाका खबर।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ता हले काल सकाले—"

विनय कहिल, "दरकार की। आज रात्रेइ गेले हबे।"

सन्ध्यार समय सुचरिता आसिया कहिल, "विनयबाबु, मा आपनाके डाकते पाठालेन। उपासनार समय हयेछे।"

विनय कहिल, "मासिर सङ्गे कथा आछे, आज आमि येते पारब ना।"

आसल कथा, आज विनय वरदासुन्दरीर उपासनार निमन्त्रण कोनोमते स्वीकार करिते पारिल ना। ताहार मने हइल, समस्तइ विड़म्बना।

हरिमोहिनी व्यस्तसमस्त हइया कहिलेन, "बाबा विनय, याओ तुमि। आमार सङ्गे कथावार्ता, से परे हबे। तोमादेर काजकर्म आगे हये याक, तार परे तुमि एसो।"

सुचरिता कहिल, "आपनि एले किन्तु भालो हय।"

विनय बुझिल, से सभाक्षेत्रे ना गेले एइ परिवारे ये-विप्लवेर सूत्रपात हइयाछे ताहाके किछु परिमाणे आरओ अग्रसर करिया देओया हइबे। एइजन्य से उपासनास्थले गेल, किन्तु ताहाते सम्पूर्ण फललाभ हइल ना।

उपासनार पर आहार छिल ; विनय कहिल, "आज आमार क्षुधा नेइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरदासुन्दरी कहिलेन, "क्षुधार अपराध नेइ। आपनि तो उपरेइ खाओया सेरे एसेछेन।"

विनय हासिया कहिल, "हाँ, लोभी लोकेर एइरकम दशाइ घटे। उपस्थितेर प्रलोभने भविष्यत् खुइये बसे।"

एइ बलिया विनय प्रस्थानेर उद्योग करिल।

वरदासुन्दरी जिज्ञासा करिलेन, "उपरे याच्छेन बुझि?"

विनय संक्षेपे केवल "हाँ" बलिया बाहिर हइया गेल। द्वारेर काछे सुचरिता छिल; ताहाके मृदुस्वरे कहिल, "दिदि, एकबार मासिर काछे याबेन, विशेष कथा आछे।"

ललिता आतिथ्ये नियुक्त छिल। एकसमय से हारानबाबुर काछे आसितेइ तिनि अकारणे बलिया उठिलेन, "विनयबाबु तो एखाने नेइ, तिनि उपरे गियेछेन।"

शुनियाइ ललिता सेखाने दाँड़ाइया ताँहार मुखेर दिके चोख तुलिया असंकोचे कहिल, "जानि। तिनि आमार सङ्गे ना देखा करे याबेन ना। आमार एखानकार काज सारा हलेइ उपरे याब एखन।"

ललिताके किछुमात्र कुण्ठित करिते ना पारिया हारानेर अन्तररुद्ध दाह आरओ बाड़िया उठिते लागिल। विनय सुचरिताके हठात् की एकटा बलिया गेल एवं सुचरिता अनतिकाल परेइ ताहार अनुसरण करिल, इहाओ हारानबाबुर लक्ष्य एड़ाइते पारे नाइ। तिनि आज सुचरितार सहित आलापेर उपलक्ष्य सन्धान करिया बारम्बार अकृतार्थ हइयाछेन––दुइ-एकबार सुचरिता ताँहार सुस्पष्ट आह्वान एमन करिया एड़ाइया गेछे ये सभास्थ लोकेर काछे हारानबाबु निजेके अपदस्थ ज्ञान करियाछेन। इहाते ताँहार मन सुस्थ छिल ना।

सुचरिता उपरे गिया देखिल, हरिमोहिनी ताँहार जिनिसपत्र गुछाइया एमनभावे वसिया आछेन येन एखनइ कोथाय याइबेन। सुचरिता जिज्ञासा करिल, "मासि, ए की।"

हरिमोहिनी ताहार कोनो उत्तर दिते ना पारिया काँदिया फेलिलेन एवं कहिलेन, "सतीश कोथाय आछे, ताके एकबार डेके दाओ, मा।"

सुचरिता विनयेर मुखेर दिके चाहितेइ विनय कहिल, "ए बाड़िते मासि थाकले सकलेरइ असुविधे हय, ताइ आमि ओंके मार काछे निये याच्छि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "सेखान थेके आमि तीर्थे याब मने करेछि। आमार मतो लोकेर कारओ वाड़िते एरकम करे थाका भालो हय ना। चिरदिन लोके आमाके एमन करे सह्यइ वा करबे केन।"

सुचरिता निजेइ ए-कथा कयेक दिन हइते भावितेछिल। ए बाड़िते वास करा ये ताहार मासिर पक्षे अपमान ताहा से अनुभव करियाछिल, सुतरां से कोनो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तर दिते पारिल ना। चुप करिया ताँहार काछे गिया बसिया रहिल। रात्रि हइयाछे; घरे प्रदीप ज्वाला हय नाइ। कलिकातार हेमन्तेर अस्वच्छ आकाशे तारागुलि वाष्पाच्छन्न। काहादेर चोख दिया जल पड़िते लागिल ताहा सेइ अन्धकारे देखा गेल ना।

सिँड़ि हइते सतीशेर उच्चकण्ठे 'मासिमा' ध्वनि शुना गेल। "की बाबा, एसो बाबा" बलिया हरिमोहिनी ताड़ाताड़ि उठिया पड़िलेन।

सुचरिता कहिल, "मासिमा, आज रात्रे कोथाओ याओया हतेइ पारे ना, काल सकाले समस्त ठिक करा यावे। बाबाके भालो करे ना बले तुमि की करे येते पारबे बलो। से ये बड़ो अन्याय हबे।"

विनय वरदासुन्दरी कर्तृक हरिमोहिनीर अपमाने उत्तेजित हइया ए कथा भाबे नाइ। से स्थिर करियाछिल, एक रात्रिओ मासिर ए बाड़िते थाका उचित हइबे ना—एवं आश्रयेर अभावेइ ये हरिमोहिनी समस्त सह्य करिया ए बाड़िते रहियाछेन, वरदासुन्दरीर सेइ धारणा दूर करिबार जन्य विनय हरिमोहिनीके एखान हइते लइया याइते लेशमात्र विलम्ब करिते चाहितेछिल ना। सुचरितार कथा शुनिया विनयेर हठात् मने पड़िया गेल ये, ए बाड़िते वरदासुन्दरीर सङ्गेइ ये हरिमोहिनीर एकमात्र एवं सर्वप्रधान सम्बन्ध ताहा नहे। ये-व्यक्ति अपमान करियाछे ताहाकेइ बड़ो करिया देखिते हइबे आर ये-लोक उदारभावे आत्मीयेर मतो आश्रय दियाछे ताहाके भुलिया याइते हइबे, ए तो ठिक नहे।

विनय बलिया उठिल, "से ठिक कथा। परेशबाबुके ना जानिये कोनोमतेइ याओया याय ना।"

सतीश आसियाइ कहिल, "मासिमा, जान? राशियानरा भारतवर्ष आक्रमण करते आसछे। भारि मजा हबे।"

विनय जिज्ञासा करिल, "तुमि कार दले।"

सतीश कहिल, "आमि राशियानेर दले।"

विनय कहिल, "ता हले राशियानेर आर भावना नेइ।"

एइरूपे सतीश मासिमार सभा जमाइया तुलितेइ सुचरिता आस्ते आस्ते सेखान हइते उठिया नीचे चलिया गेल।

सुचरिता जानित, शुइते याइबार पूर्वे परेशबाबु ताँहार कोनो एकटि प्रिय बइ खानिकटा करिया पड़ितेन। कतदिन एइरूप समये सुचरिता ताँहार काछे आसिया बसियाछे एवं सुचरितार अनुरोधे परेशबाबु ताहाकेओ पड़िया शुनाइयाछेन।

आजओ ताँहार निर्जन घरे परेशबाबु आलोटि ज्वालाइया एमार्सनेर ग्रन्थ पड़ितेछिलेन। सुचरिता धीरे धीरे ताँहार पाशे चौकि टानिया लइया बसिल। परेशबाबु बइखानि राखिया एकबार ताहार मुखेर दिके चाहिलेन। सुचरितार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकल्प भङ्ग हइल——से संसारेर कोनो कथाइ तुलिते पारिल ना। कहिल, "बाबा, आमाके पड़े शोनाओ।"

परेशबाबु ताहाके पड़िया बुझाइया दिते लागिलेन। रात्रि दशटा बाजिया गेले पड़ा शेष हइल। तखनओ सुचरिता निद्रार पूर्वे परेशबाबुर मने कोनोप्रकार क्षोभ पाछे जन्मे एइजन्य कोनो कथा ना बलिया धीरे धीरे चलिया याइतेछिल।

परेशबाबु ताहाके स्नेहस्वरे डाकिलेन, "राधे!"

से तखन फिरिया आसिल। परेशबाबु कहिलेन, "तुमि तोमार मासिर कथा आमाके बलते एसेछिले?"

परेशबाबु ताहार मनेर कथा जानिते पारियाछेन जानिया सुचरिता विस्मित हइया बलिल, "हाँ बाबा, किन्तु आज थाक्, काल सकाले कथा हबे।"

परेशबाबु कहिलेन, "बोसो।"

सुचरिता बसिले तिनि कहिलेन, "तोमार मासिर एखाने कष्ट हच्छे, से-कथा आमि चिन्ता करेछि। ताँर धर्मविश्वास ओ आचरण लावण्यर मार संस्कारे ये एत बेशि आघात देबे, ता आमि आगे ठिक जानते पारि नि। यखन देखछि ताँके पीड़ा दिच्छे तखन ए बाड़िते तोमार मासिके राखले तिनि संकुचित हये थाकबेन।"

सुचरिता कहिल, "आमार मासि एखान थेके याबार जन्येइ प्रस्तुत हयेछेन।"

परेशबाबु कहिलेन, "आमि जानतुम ये, तिनि याबेन। तोमरा दुजनेइ ताँर एकमात्र आत्मीय——तोमरा ताँके एमन अनाथार मतो विदाय दिते पारबे ना, सेओ आमि जानि। ताइ आमि ए-कयदिन ए-सम्बन्धे भावछिलुम।"

ताहार मासि की संकटे पड़ियाछेन परेशबाबु ये ताहा बुझियाछेन ओ ताहा लइया भाबितेछेन, ए कथा सुचरिता एकेबारेइ अनुमान करे नाइ। पाछे तिनि जानिते पारिया वेदना बोध करेन, एइ भये से एतदिन अत्यन्त सावधाने चलितेछिल—आज परेशबाबुर कथा शुनिया से आश्चर्य हइया गेल एवं ताहार चोखेर पाता छल्छल् करिया आसिल।

परेशबाबु कहिलेन, "तोमार मासिर जन्ये आमि एकटि बाड़ि ठिक करे रेखेछि।"

सुचरिता कहिल, "किन्तु, तिनि तो—"

परेशबाबु। भाड़ा दिते पारबेन ना! भाड़ा तिनि केन देबेन। तुमि भाड़ा देबे।

सुचरिता अवाक हइया परेशबाबुर मुखेर दिके चाहिया रहिल। परेशबाबु हासिया कहिलेन, "तोमारइ बाड़िते थाकते दियो, भाड़ा दिते हबे ना।"

सुचरिता आरओ विस्मित हइल। परेशबाबु कहिलेन, "कलकाताय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोमादेर दुटो बाड़ि आछे जान ना ! एकटि तोमार, एकटि सतीशेर। मृत्युर समये तोमार बाबा आमार हाते किछु टाका दिये यान। आमि ताइ खाटिये बाड़िये तुले कलकाताय दुटो बाड़ि किनेछि। एतदिन तार भाड़ा पाच्छिलुम, ताओ जमछिल। तोमार बाड़िर भाड़ाटे अल्पदिन हल उठेओ गेछे—सेखाने तोमार मासिर थाकबार कोनो असुविधा हबे ना।"

सुचरिता कहिल, "सेखाने तिनि कि एकला थाकते पारबेन।"

परेशबाबु कहिलेन, "तोमरा ताँर आपनार लोक थाकते ताँके एकला थाकते हबे केन।"

सुचरिता कहिल, "सेइ कथाइ तोमाके बलबार जन्ये आज एसेछिलुम। मासि चले याबार जन्ये प्रस्तुत हयेछेन ; आमि भावछिलुम, आमि एकला की करे ताँके येते देब। ताइ तोमार उपदेश नेब बले एसेछि। तुमि या बलबे आमि ताइ करब।"

परेशबाबु कहिलेन, "आमादेर बासार गायेइ एइ-ये गलि, एइ गलिर दुटो-तिनटे बाड़िर परेइ तोमार बाड़ि—ओइ बारान्दाय दाँड़ाले से-बाड़ि देखा याय। सेखाने तोमरा थाकले नितान्त अरक्षित अवस्थाय थाकते हबे ना। आमि तोमादेर देखते-शुनते पारब।"

सुचरितार बुकेर उपर हइते एकटा मस्त पाथर नामिया गेल। 'बाबाके छाड़िया केमन करिया याइब' एइ चिन्तार से कोनो अवधि पाइतेछिल ना। किन्तु, याइतेइ हइबे, इहाओ ताहार काछे निश्चित हइया उठियाछिल।

सुचरिता आवेगपरिपूर्ण हृदय लइया चुप करिया परेशबाबुर काछे बसिया रहिल। परेशबाबुओ स्तव्ध हइया निजेर अन्तःकरणेर मध्ये निजेके गभीरभावे निहित करिया बसिया रहिलेन। सुचरिता ताँहार शिष्या, ताँहार कन्या, ताँहार सुहृद। से ताँहार जीवनेर, एमन-कि, ताँहार ईश्वरोपासनार सङ्गे जड़ित हइया गियाछिल। येदिन से निःशब्दे आसिया ताँहार उपासनार सहित योग दित सेदिन ताँहार उपासना येन विशेष पूर्णता लाभ करित। प्रतिदिन सुचरितार जीवनके मङ्गलपूर्ण स्नेहेर द्वारा गड़िते गड़िते तिनि निजेर जीवनकेओ एकटि विशेष परिणति दान करितेछिलेन। सुचरिता येमन भक्ति येमन एकान्त नम्रतार सहित ताँहार काछे आसिया दाँड़ाइयाछिल एमन करिया आर-केह ताँहार काछे आसे नाइ ; फुल येमन करिया आकाशेर दिके ताकाय से तेमनि करिया ताँहार दिके ताहार समस्त प्रकृतिके उन्मुख एवं उद्घाटित करिया दियाछिल। एमन एकाग्रभावे केह काछे आसिले मानुषेर दान करिबार शक्ति आपनि बाड़िया याय—अन्तःकरण जलभारनम्र मेघेर मतो परिपूर्णतार द्वारा नत हइया पड़े। निजेर याहा किछु सत्य, याहा किछु श्रेष्ठ, ताहा कोनो अनुकूल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चित्तेर निकट प्रतिदिन दान करिबार सुयोगेर मतो एमन शुभयोग मानुषेर काछे आर-किछु हइतेइ पारे ना ; सेइ दुर्लभ सुयोग सुचरिता परेशके दियाछिल। एजन्य सुचरितार सङ्गे ताँहार सम्बन्ध अत्यन्त गभीर हइयाछिल। आज सेइ सुचरितार सङ्गे ताँहार बाह्य सम्पर्क विच्छिन्न करिबार समय उपस्थित हइयाछे—फलके निजेर जीवनरसे परिपक्व करिया तुलिया ताहाके गाछेर निकट हइते मुक्त करिया दिते हइबे। एजन्य तिनि मनेर मध्ये ये-वेदना अनुभव करितेछिलेन सेइ निगूढ़ वेदनाटिके तिनि अन्तर्यामीर निकट निवेदन करिया दितेछिलेन। सुचरितार पाथेय सञ्चय हइयाछे, एखन निजेर शक्तिते प्रशस्त पथे सुखे दुःखे आघात-प्रतिघाते नूतन अभिज्ञता लाभेर दिके ये ताहार आह्वान आसियाछे ताहार आयोजन किछुदिन हइतेइ परेश लक्ष्य करितेछिलेन ; तिनि मने मने बलिते-छिलेन, 'वत्से, यात्रा करो—तोमार चिरजीवन ये केवल आमार बुद्धि एवं आमार आश्रयेर द्वाराइ आच्छन्न करिया राखिब, एमन कखनोइ हइते पारिबे ना—ईश्वर आमार निकट हइते तोमाके मुक्त करिया विचित्रेर भितर दिया तोमाके चरम परिणामे आकर्षण करिया लइया यान—ताँहार मध्ये तोमार जीवन सार्थक हउक।' एइ बलिया आशैशव-स्नेह-पालित सुचरिताके तिनि मनेर मध्ये निजेर दिक हइते ईश्वरेर दिके पवित्र उत्सर्गसामग्रीर मतो तुलिया धरितेछिलेन। परेश वरदासुन्दरीर प्रति राग करेन नाइ, निजेर संसारेर प्रति मनके कोनोप्रकार विरोध अनुभव करिते प्रश्रय देन नाइ। तिनि जानितेन, संकीर्ण उपकूलेर माझखाने नूतन वर्षणेर जलराशि हठात् आसिया पड़िले अत्यन्त एकटा क्षोभेर सृष्टि हय—ताहार एकमात्र प्रतिकार ताहाके प्रशस्त क्षेत्रे मुक्त करिया देओया। तिनि जानितेन, अल्पदिनेर मध्ये सुचरिताके आश्रय करिया एइ छोटो परिवारटिर मध्ये ये-सकल अप्रत्याशित समावेश घटियाछे ताहा एखानकार बाँधा संस्कारके पीड़ित करितेछे ; ताहाके एखाने धरिया राखिबार चेष्टा ना करिया मुक्तिदान करिलेइ, तबेइ स्वभावेर सहित सामञ्जस्य घटिया समस्त शान्त हइते पारिबे। इहा जानिया याहाते सहजे सेइ शान्ति ओ सामञ्जस्य घटिते पारे नीरवे ताहारइ आयोजन करितेछिलेन।

दुइ जने किछुक्षण चुप करिया बसिया थाकिते घड़िते एगारोटा बाजिया गेल। तखन परेशबाबु उठिया दाँड़ाइया सुचरितार हात धरिया ताहाके गाड़ि-बारान्दार छादे लइया गेलेन। सन्ध्याकाशेर वाष्प काटिया गिया तखन निर्मल अन्धकारेर मध्ये तारागुलि दीप्ति पाइतेछिल। सुचरिताके पाशे लइया परेश सेइ निस्तब्ध रात्रे प्रार्थना करिलेन—'संसारेर समस्त असत्य काटिया परिपूर्ण सत्य आमादेर जीवनेर माझखाने निर्मल मूर्तिते उद्भासित हइया उठुन।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४२

परदिन प्रातें हरिमोहिनी भूमिष्ठ हइया परेशके प्रणाम करितेइ तिनि व्यस्त हइया सरिया गिया कहिलेन, "करेन की।"

हरिमोहिनी अश्रु नेत्रे कहिलेन, "तोमार ऋण आमि कोनो जन्मे शोध करते पारब ना। आमार मतो एतोबड़ो निरुपायेर तुमि उपाय करे दियेछ, ए तुमि भिन्न आर केउ करते पारत ना। इच्छा करलेओ आमार भालो केउ करते पारे ना, ए आमि देखछि—तोमार उपर भगवानेर खुब अनुग्रह आछे ताइ तुमि आमार मतो लोकेर उपरेओ अनुग्रह करते पेरेछ।"

परेशबाबु अत्यन्त संकुचित हइया उठिलेन; कहिलेन, "आमि विशेष किछुइ करि नि—ए-समस्त राधारानी—"

हरिमोहिनी बाधा दिया कहिलेन, "जानि जानि—किन्तु, राधारानीइ ये तोमार—ओ या करे से ये तोमारइ करा। ओर यखन मा गेल, ओर बापओ रइल ना, तखन भेबेछिलुम, मेयेटा बड़ो दुर्भागिनी। किन्तु, ओर दुःखेर कपालके भगवान ये एमन धन्य करे तुलबेन, ता केमन करे जानब बलो। देखो, घुरे फिरे शेषे आज तोमार देखा यखन पेयेछि तखन बेश बुझते पेरेछि, भगवान आमाकेओ दया करेछेन।"

"मासि, मा एसेछेन तोमाके नेबार जन्ये" बलिया विनय आसिया उपस्थित हइल। सुचरिता उठिया पड़िया व्यस्त हइया कहिल, "कोथाय तिनि।"

विनय कहिल, "नीचे आपनार मार काछे बसे आछेन।"

सुचरिता ताड़ाताड़ि नीचे चलिया गेल।

परेशबाबु हरिमोहिनीके कहिलेन, "आमि आपनार बाड़िते जिनिसपत्र समस्त गुछिये दिये आसि गे।"

परेशबाबु चलिया गेले विस्मित विनय कहिल, "मासि, तोमार बाड़िर कथा तो जानतुम ना।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "आमिओ ये जानतुम ना, बाबा। जानतेन केवल परेशबाब। आमादेर राधारानीर बाड़ि।"

विनय समस्त विवरण शुनिया कहिल, "भेबेछिलुम पृथिवीते विनय एकजन कारओ एकटा कोनो काजे लागबे। ताओ फसके गेल। ए-पर्यन्त मायेर तो किछुइ करते पारि नि, या करबार से तिनिइ आमार करेन—मासिरओ किछु करते पारब ना, ताँर काछ थेकेइ आदाय करब। आमार ओइ नेबारइ कपाल, देबार नय।"

किछुक्षण परे ललिता ओ सुचरितार सङ्गे आनन्दमयी आसिया उपस्थित हइलेन। हरिमोहिनी अग्रसर हइया गिया कहिलेन, "भगवान यखन दया करेन तखन आर कृपणता करेन ना—दिदि, तोमाकेओ आज पेलुम।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलिया हात धरिया ताँहाके आनिया मादुरेर 'परे बसाइलेन।

हरिमोहिनी कहिलेन, "दिदि, तोमार कथा छाड़ा विनयेर मुखे आर-कोनो कथा नेइ।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "छेलेवेला थेकेइ ओर ओइ रोग, ये-कथा धरे से-कथा शीघ्र छाड़े ना। शीघ्र मासिर पालाओ शुरु हबे।"

विनय कहिल, "ता हबे, से आमि आगे थाकतेइ बले राखछि। आमार अनेक वयसेर मासि, निजे संग्रह करेछि, एतदिन ये वञ्चित छिलुम नानारकम करे सेटा पुषिये निते हबे।"

आनन्दमयी ललितार दिके चाहिया सहास्ये कहिलेन, "आमादेर विनय ओर या अभाव ता संग्रह करतेओ जाने, आर संग्रह करे प्राणमने तार आदर करतेओ जाने। तोमादेर ओ ये की चोखे देखेछे से आमिइ जानि—या कखनओ भावते पारत ना तारइ येन हठात् साक्षात् पेयेछे। तोमादेर सङ्गे ओदेर जानाशोना हओयाते आमि ये कत खुशि हयेछि से आर की बलब, मा। तोमादेर एइ घरे ये एमन करे विनयेर मन बसेछे ताते ओर भारि उपकार हयेछे। से-कथा ओ खुब बोझे, आर स्वीकार करतेओ छाड़े ना।"

ललिता एकटा किछु उत्तर करिबार चेष्टा करियाओ कथा खुँजिया पाइल ना, ताहार मुख लाल हइया उठिल। सुचरिता ललितार विपद देखिया कहिल, "सकल मानुषेर भितरकार भालोटि विनयबाबु देखते पान, एइजन्यइ सकल मानुषेर येटुकु भालो सेटुकु ओंर भोगे आसे। से अनेकटा ओंर गुण।"

विनय कहिल, "मा, तुमि विनयके यतबड़ो आलोचनार विषय बले ठिक करे रेखेछ संसारे तार ततबड़ो गौरव नेइ। ए कथाटा तोमाके बोझाब मने करि, नितान्त अहंकारवशतइ पारि ने। किन्तु, आर चलल ना। मा, आर नय, विनयेर कथा आज एइ पर्यन्त।"

एमन समय सतीश ताहार अचिरजात कुकुरशावकटाके बुके चापिया धरिया लाफाइते लाफाइते आसिया उपस्थित हइल। हरिमोहिनी व्यस्तसमस्त हइया बलिया उठिलेन, "बाबा सतीश, लक्ष्मी बाप आमार, ओ कुकुरटाके निये याओ, बाबा।"

सतीश कहिल, "ओ किछु करबे ना, मासि। ओ तोमार घरे याबे ना। तुमि ओके एकटु आदर करो, ओ किछु बलबे ना।"

हरिमोहिनी सरिया गिया कहिलेन, "ना बाबा, ना, ओके निये याओ।"

तखन आनन्दमयी कुकुर-सुद्ध सतीशके निजेर काछे टानिया लइलेन। कुकुरके कोलेर उपर लइया सतीशके जिज्ञासा करिलेन, "तुमि सतीश ना? आमादेर विनयेर बन्धु?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनयेर बन्धु बलिया निजेर परिचयके सतीश किछुइ असंगत मने करित ना ; सुतरां से असंकोचे बलिल, "हाँ।"

बलिया आनन्दमयीर मुखेर दिके चाहिया रहिल।

आनन्दमयी कहिलेन, "आमि ये विनयेर मा हइ।"

कुकुरशावक आनन्दमयीर हातेर बाला चर्वणेर चेष्टा करिया आत्मविनोदने प्रवृत्त हइल। सुचरिता कहिल, "बक्तियार, माके प्रणाम कर।"

सतीश लज्जितभावे कोनोमते प्रणामटा सारिया लइल।

एमन समये वरदासुन्दरी उपरे आसिया हरिमोहिनीर दिके दृक्पातमात्र ना करिया आनन्दमयीके जिज्ञासा करिलेन, "आपनि कि आमादेर एखाने किछु खाबेन।"

आनन्दमयी कहिलेन, "खाओयाछोंओया निये आमि किछु बाछविचार करि ने। किन्तु, आजके थाक्—गोरा फिरे आसुक, तार पर खाब।"

आनन्दमयी गोरार असाक्षाते गोरार अप्रिय कोनो आचरण करिते पारिलेन ना।

वरदासुन्दरी विनयेर दिके ताकाइया कहिलेन, "एइ-ये विनयबाबु एखाने ; आमि बलि, आपनि आसेन नि बुझि।"

विनय तत्क्षणात् बलिल, "आमि ये एसेछि, से बुझि आपनाके ना जानिये याब भेवेछेन?"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "काल तो निमन्त्रणेर खाओया फाँकि दियेछेन, आज ना हय बिना निमन्त्रणेर खाओया खाबेन।"

विनय कहिल, "सेइटेतेइ आमार लोभ बेशि। माइनेर चेये उपरिपाओनार टान बड़ो।"

हरिमोहिनी मने मने विस्मित हइलेन। विनय ए बाड़िते खाओयादाओया करे—आनन्दमयीओ बाछविचार करेन ना। इहाते ताँहार मन प्रसन्न हइल ना।

वरदासुन्दरी चलिया गेले हरिमोहिनी ससंकोचे जिज्ञासा करिलेन, "दिदि, तोमार स्वामी कि—"

आनन्दमयी कहिलेन, "आमार स्वामी खुब हिन्दु।"

हरिमोहिनी अवाक हइया रहिलेन। आनन्दमयी ताँहार मनेर भाव बुझिते पारिया कहिलेन, "बोन, यतदिन समाज आमार सकलेर चेये बड़ो छिल ततदिन समाजकेइ मेने चलतुम, किन्तु एकदिन भगवान आमार घरे हठात् एमन करे देखा दिलेन ये आमाके आर समाज मानते दिलेन ना। तिनि निजे एसे आमार जात केड़े नियेछेन, तखन आमि आर काके भय करि।"

हरिमोहिनी ए कैफियतेर अर्थ बुझिते ना पारिया कहिलेन, "तोमार स्वामी?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "आमार स्वामी राग करेन।"

हरिमोहिनी। छेलेरा ?

आनन्दमयी। छेलेराओ खुशि नय। किन्तु तादेर खुशि करेइ कि बाँचब। बोन, आमार ए कथा काउके बोझाबार नय--यिनि सब जानेन तिनिइ बुझबेन।

बलिया आनन्दमयी हात जोड़ करिया प्रणाम करिलेन।

हरिमोहिनी भाबिलेन, हयतो कोनो मिशनारिर मेये आसिया आनन्दमयीके खृस्टानि भजाइया गेछे। ताँहार मनेर मध्ये अत्यन्त एकटा संकोच उपस्थित हइल।

४३

परेशबाबुर बासार काछेइ सर्वदा ताँहार तत्त्वावधाने थाकिया वास करिते पाइबे, एइ कथा शुनिया सुचरिता अत्यन्त आरामबोध करियाछिल। किन्तु, यखन ताहार नूतन बाड़िर गृहसज्जा समाप्त एवं सेखाने उठिया याइबार समय निकटवर्ती हइल तखन सुचरितार बुकेर भितर येन टानिया धरिते लागिल। काछे थाका ना-थाका लइया कथा नय, किन्तु जीवनेर सङ्गे जीवनेर ये सर्वाङ्गीण योग छिल ताहाते एत दिन परे एकटा विच्छेद घटिबार काल आसियाछे इहा आज सुचरितार काछे येन ताहार एक अंशेर मृत्युर मतो बोध हइते लागिल। एइ परिवारेर मध्ये सुचरितार येटुकु स्थान छिल, ताहार ये-किछु काज छिल, प्रत्येक चाकरटिर सङ्गेओ ताहार ये सम्बन्ध छिल समस्तइ सुचरितार हृदय व्याकुल करिया तुलिते लागिल।

सुचरितार ये निजेर किछु संगति आछे एवं सेइ संगतिर जोरे आज से स्वाधीन हइबार उपक्रम करितेछे एइ संवादे वरदासुन्दरी बार बार करिया प्रकाश करिलेन ये, इहाते भालोइ हइल, एतदिन एत सावधाने ये-दायित्वभार वहन करिया आसितेछिलेन ताहा हइते मुक्त हइया तिनि निश्चिन्त हइलेन। किन्तु, मने मने सुचरितार प्रति ताँहार येन एकटा अभिमानेर भाव जन्मिल ; सुचरिता ये ताँहादेर काछ हइते विच्छिन्न हइया आज निजेर सम्बलेर उपर निर्भर करिया दाँड़ाइते पारितेछे ए येन ताहार एकटा अपराध। ताँहारा छाड़ा सुचरितार अन्य कोनो गति नाइ इहाइ मने करिया अनेक समय सुचरिताके तिनि आपन परिवारेर एकटा आपद वलियां निजेर प्रति करुणा अनुभव करियाछेन, किन्तु सेइ सुचरितार भार यखन लाघव हइबार संवाद हठात् पाइलेन तखन तो मनेर मध्ये किछुमात्र प्रसन्नता अनुभव करिलेन ना। ताँहादेर आश्रय सुचरितार पक्षे अत्यावश्यक नहे इहाइ जानिया से ये गर्व अनुभव करिते पारे, ताँहादेर आनुगत्यस्वीकारे बाध्य ना हइते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पारे, एइ कथा मने करिया तिनि आगे हइतेइ ताहाके अपराधी करिते लागिलेन। ए कयदिन विशेषभावे ताहार प्रति दूरत्व रक्षा करिया चलिलेन। पूर्वे ताहाके घरेर काजकर्मे येमन करिया डाकितेन एखन ताहा एकेबारे छाड़िया दिया गाये पड़िया ताहाके अस्वाभाविक सम्भ्रम देखाइते लागिलेन। बिदायेर पूर्वे सुचरिता व्यथितचित्ते बेशि करियाइ वरदासुन्दरीर गृहकार्ये योग दिते चेष्टा करितेछिल, नाना उपलक्षे ताँहार काछे काछे फिरितेछिल, किन्तु वरदासुन्दरी येन पाछे ताहार असम्मान घटे एइरूप भाव देखाइया दूरे ठेकाइया राखितेछिलेन। एतकाल याँहाके मा बलिया याँहार काछे सुचरिता मानुष हइयाछे आज विदाय लइबार समयेओ तिनि ये ताहार प्रति चित्तके प्रतिकूल करिया रहिलेन, एइ वेदनाइ सुचरिताके सब चेये बेशि करिया बाजिते लागिल।

लावण्य ललिता लीला सुचरितार सङ्गे सङ्गेइ फिरिते लागिल। ताहारा अत्यन्त उत्साह करिया ताहार नूतन बाड़िर घर साजाइते गेल, किन्तु सेइ उत्साहेर भितरेओ अव्यक्त वेदनार अश्रुजल प्रच्छन्न हइया छिल।

एतदिन पर्यन्त सुचरिता नाना छुता करिया परेशबाबुर कत की छोटोखाटो काज करिया आसियाछे। हयतो फुलदानिते फुल साजाइयाछे, टेबिलेर उपर बइ गुछाइयाछे, निजेर हाते बिछाना रौद्रे दियाछे, स्नानेर समय प्रत्यह ताँहाके खबर दिया स्मरण कराइया दियाछे—एइ-समस्त अभ्यस्त काजेर कोनो गुरुत्वइ प्रतिदिन कोनो पक्ष अनुभव करे ना। किन्तु ए-सकल अनावश्यक काजओ यखन बन्ध करिया चलिया याइबार समय उपस्थित हय, तखन एइ-सकल छोटोखाटो सेवा, याहा एकजने ना करिले अनायासे आर-एकजने करिते पारे, याहा ना करिलेओ काहारओ विशेष कोनो क्षति हय ना, एइगुलिइ दुइ पक्षेर चित्तके मथित करिते थाके। सुचरिता आजकाल यखन परेशेर घरेर कोनो सामान्य काज करिते आसे तखन सेइ काजटा परेशेर काछे मस्त हइया देखा देय ओ ताँहार वक्षेर मध्ये एकटा दीर्घनिश्वास जमा हइया उठे। एवं एइ काज आज बादे काल अन्येर हाते सम्पन्न हइते थाकिबे एइ कथा मने करिया सुचरितार चोख छल्‌छल् करिया आसे।

येदिन मध्याह्ने आहार करिया सुचरितादेर नूतन बाड़िते उठिया याइबार कथा सेदिन प्रातःकाले परेशबाबु ताँहार निभृत घरटिते उपासना करिते आसिया देखिलेन, ताँहार आसनेर सम्मुखदेश फुल दिया साजाइया घरेर एक प्रान्ते सुचरिता अपेक्षा करिया बसिया आछे। लावण्य-लीलाराओ उपासना-स्थले आज आसिबे एइरूप ताहारा परामर्श करियाछिल किन्तु ललिता ताहादिगके निषेध करिया आसिते देय नाइ। ललिता जानित, परेशबाबुर निर्जन उपासनाय योग दिया सुचरिता येन विशेषभावे ताँहार आनन्देर अंश ओ आशीर्वाद लाभ करित—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज प्रात:काले सेइ आशीर्वाद सञ्चय करिया लइबार जन्य सुचरितार ये विशेष प्रयोजन छिल ताहाइ अनुभव करिया ललिता अद्यकार उपासनार निर्जनता भङ्ग करिते देय नाइ ।

उपासना शेष हइया गेल । तखन सुचरितार चोख दिया जल पड़ितेछे, परेशबाबु कहिलेन, "मा, पिछन दिके फिरे ताकियो ना, सम्मुखेर पथे अग्रसर हये याओ—मने संकोच रेखो ना । याइ घटुक, याइ तोमार सम्मुखे उपस्थित होक, तार थेके सम्पूर्ण निजेर शक्तिते भालोके ग्रहण करबे एइ पण करे आनन्देर सङ्गे बेरिये पड़ो । ईश्वरके सम्पूर्णरूपे आतमसमर्पण करे ताँकेइ निजेर एकमात्र सहाय करो—ताहले भुलत्रुटि-क्षतिर मध्ये दियेओ लाभेर पथे चलते पारबे—आर यदि निजेके आधाआधि भाग कर, कतक ईश्वरे कतक अन्यत्रे, ता हले समस्त कठिन हये उंठबे । ईश्वर एइ करुन, तोमार पक्षे आमादेर क्षुद्र आश्रयेर आर येन प्रयोजन ना हय ।"

उपासनार परे उभये बाहिरे आसिया देखिलेन बसिबार घरे हारानबाबु अपेक्षा करिया आछेन । सुचरिता आज काहारओ विरुद्धे कोनो विद्रोहभाव मने राखिबे ना पण करिया हारानबाबुके नम्रभावे नमस्कार करिल । हारानबाबु तत्क्षणात् चौकिर उपरे निजेके शक्त करिया तुलिया अत्यन्त गम्भीर स्वरे कहिलेन, "सुचरिता, एतदिन तुमि ये-सत्यके आश्रय करे छिले आज तार थेके पिछिये पड़ते याच्छ, आज आमादेर शोकेर दिन ।"

सुचरिता कोनो उत्तर करिल ना—किन्तु ये रागिणी ताहार मनेर मध्ये आज शान्तिर सङ्गे करुणा मिशाइया संगीते जमिया उठितेछिल ताहाते एकटा बेसुर आसिया पड़िल ।

परेशबाबु कहिलेन, "अन्तर्यामी जानेन के एगोच्छे, के पिछोच्छे, बाइरे थेके विचार करे आमरा वृथा उद्विग्न हइ ।"

हारानबाबु कहिलेन, "ता हले आपनि कि बलते चान आपनार मने कोनो आशङ्का नेइ । आर, आपनार अनुतापेरओ कोनो कारण घटे नि ?"

परेशबाबु कहिलेन, "पानुबाबु, काल्पनिक आशङ्काके आमि मने स्थान दिइ ने एवं अनुतापेर कारण घटेछे कि ना ता तखनइ बुझब यखन अनुताप जन्माबे ।"

हारानबाबु कहिलेन, "एइ-ये आपनार कन्या ललिता एकला विनयबाबुर सङ्गे स्टिमारे करे चले एलेन, एटाओ कि काल्पनिक ।"

सुचरितार मुख लाल हइया उठिल । परेशबाबु कहिलेन, "पानुबाबु, आपनार मन ये-कोनो कारणे होक उत्तेजित हये उठेछे, एइजन्ये एखन ए-सम्बन्धे आपनार सङ्गे आलाप करले आपनार प्रति अन्याय करा हबे ।"

हारानबाबु माथा तुलिया बलिलेन, "आमि उत्तेजनार वेगे कोनो कथा बलि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने—आमि या बलि से-सम्बन्धे आमार दायित्वबोध यथेष्ट आछे ; सेजन्ये आपनि चिन्ता करबेन ना। आपनाके या बलछि से आमि व्यक्तिगतभावे बलछि ने, आमि ब्राह्मसमाजेर तरफ थेके बलछि—ना बला अन्याय बलेइ बलछि। आपनि यदि अन्ध हये ना थाकतेन, ता हले ओइ ये विनयबाबुर सङ्गे ललिता एकला चले एल एइ एकटि घटना थेकेइ आपनि बुझते पारतेन आपनार एइ परिवार ब्राह्मसमाजेर नोङर छिँड़े भेसे चले यावार उपक्रम करछे। एते ये शुधु आपनारइ अनुतापेर कारण घटबे ता नय, एते ब्राह्मसमाजेरओ अगौरवेर कथा आछे।"

परेशबाबु कहिलेन, "निन्दा करते गेले बाइरे थेके करा याय, किन्तु विचार करते गेले भितरे प्रवेश करते हय। केवल घटना थेके मानुषके दोषी करबेन ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "घटना शुधु-शुधु घटे ना, ताके आपनारा भितरेर थेकेइ घटिये तुलेछेन। आपनि एमन सब लोकके परिवारेर मध्ये आत्मीयभावे टानछेन यारा आपनार परिवारके आपनार आत्मीयसमाज थेके दूरे निये येते चाय। दूरेइ तो निये गेल, से कि आपनि देखते पाच्छेन ना।"

परेशबाबु एकटु विरक्त हइया कहिलेन, "आपनार सङ्गे आमार देखबार प्रणाली मेले ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "आपनार ना मिलते पारे। किन्तु, आमि सुचरिताकेइ साक्षी मानछि, उनिइ सत्य करे बलुन देखि, ललितार सङ्गे विनयेर ये-सम्बन्ध दाँड़ियेछे से कि शुधु बाइरेर सम्बन्ध। ताँदेर अन्तरके कोनोखानेइ स्पर्श करे नि ? ना, सुचरिता, तुमि चले गेले हबे ना—ए कथार उत्तर दिते हबे। ए गुरुतर कथा।"

सुचरिता कठोर हइया कहिल, "यतइ गुरुतर होक ए कथाय आपनार कोनो अधिकार नेइ।"

हारानबाबु कहिलेन, "अधिकार ना थाकले आमि ये शुधु चुप करे थाकतुम ता नय, चिन्ताओ करतुम ना। समाजके तोमरा ग्राह्य ना करते पार, किन्तु यतदिन समाजे आछ ततदिन समाज तोमादेर विचार करते बाध्य।"

ललिता झड़ेर मतो घरे प्रवेश करिया कहिल, "समाज यदि आपनाकेइ विचारकपदे नियुक्त करे थाकेन तबे ए समाज थेके निर्वासनइ आमादेर पक्षे श्रेय।"

हारानबाबु चौकि हइते उठिया दाँड़ाइया कहिलेन, "ललिता, तुमि एसेछ आमि खुशि हयेछि। तोमार सम्बन्धे या नालिश तोमार सामनेइ तार विचार हओया उचित।"

क्रोधे सुचरितार मुख चक्षु प्रदीप्त हइया उठिल ; से कहिल, "हारानबाबु,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपनार घरे गिये आपनार विचारशाला आह्वान करुन। गृहस्थेर घरेर मध्ये चड़े तादेर अपमान करबेन, आपनार ए अधिकार आमरा कोनोमतेइ मानब ना। आय, भाइ ललिता।"

ललिता एक पा नड़िल ना ; कहिल, "ना, दिदि, आमि पालाब ना। पानुबाबुर या किछु बलबार आछे सब आमि शुने येते चाइ। बलुन की बलबेन, बलुन।"

हारानबाबु थमकिया गेलेन। परेशबाबु कहिलेन, "मा ललिता, आज सुचरिता आमादेर बाड़ि थेके याबे—आज सकाले आमि कोनोरकम अशान्ति घटते दिते पारब ना। हारानबाबु, आमादेर यतइ अपराध थाक्, तबु आजकेर मतो आमादेर माप करते हबे।"

हारान चुप करिया गम्भीर हइया बसिया रहिलेन। सुचरिता यतइ ताँहाके वर्जन करितेछिल सुचरिताके धरिया राखिबार जेद ततइ ताँहार बाड़िया उठितेछिल। ताँहार ध्रुव विश्वास छिल, असामान्य नैतिक जोरेर द्वारा तिनि निश्चयइ जितिबेन। एखनओ तिनि ये हाल छाड़िया दियाछेन ताहा नहे, किन्तु मासिर सङ्गे सुचरिता अन्य बाड़िते गेले सेखाने ताहार शक्ति प्रतिहत हइते थाकिबे एइ आशङ्काय ताँहार मन क्षुब्ध छिल। एइजन्य आज ताँहार ब्रह्मास्त्रगुलिके शान दिया आनियाछिलेन। कोनोमते आज सकालवेलाकार मध्येइ खुब कड़ारकम करिया बोझापड़ा करिया लइते तिनि प्रस्तुत छिलेन। आज समस्त संकोच तिनि दूर करियाइ आसियाछिलेन—किन्तु अपर पक्षेओ ये एमन करिया संकोच दूर करिते पारे, ललिता-सुचरिताओ ये हठात् तूण हइते अस्त्र बाहिर करिया दाँड़ाइबे, ताहा तिनि कल्पनाओ करेन नाइ। तिनि जानितेन, ताँहार नैतिक अग्निबाण यखन तिनि महातेजे निक्षेप करिते थाकिबेन अपर पक्षेर माथा एकेबारे हेंट हइया याइबे। ठिक तेमनटि हइल ना ; अवसरओ चलिया गेल। किन्तु, हारानबाबु हार मानिबेन ना। तिनि मने मने कहिलेन, सत्येर जय हइबेइ अर्थात् हारानबाबुर जय हइबेइ। किन्तु, जय तो शुधु-शुधु हय ना। लड़ाइ करिते हइबे। हारानबाबु कोमर बाँधिया रणक्षेत्रे प्रवेश करिलेन।

सुचरिता कहिल, "मासि, आज आमि सकलेर सङ्गे एकसङ्गे खाब—तुमि किछु मने करले चलबे ना।"

हरिमोहिनी चुप करिया रहिलेन। तिनि मने मने स्थिर करियाछिलेन, सुचरिता सम्पूर्णइ ताँहार हइयाछे—विशेषत निजेर सम्पत्तिर जोरे स्वाधीन हइया से स्वतन्त्र घर करिते चलियाछे—एखन हरिमोहिनीके आर-कोनो संकोच करिते हइबे ना, षोलो आना निजेर मतो करिया चलिते पारिबेन। ताइ, आज यखन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता शुचिता विसर्जन करिया आवार सकलेर सङ्गे एकत्रे अन्नग्रहण करिवार प्रस्ताव करिल तखन ताँहार भालो लागिल ना, तिनि चुप करिया रहिलेन।

सुचरिता ताँहार मनेर भाव बुझिया कहिल, "आमि तोमाके निश्चय बलछि, एते ठाकुर खुशि हवेन। सेइ आमार अन्तर्यामी ठाकुर आमाके सकलेर सङ्गे आज एकसङ्गे खेते बले दियेछेन। ताँर कथा ना मानले तिनि राग करवेन। ताँर रागके आमि तोमार रागेर चेये भय करि।"

यतदिन हरिमोहिनी बरदासुन्दरीर काछे अपमानित हइतेछिलेन ततदिन सुचरिता ताँहार अपमानेर अंश लइबार जन्य ताँहार आचार ग्रहण करियाछिल एवं आज सेइ अपमान हइते यखन निष्कृतिर दिन उपस्थित हइल तखन सुचरिता ये आचार सम्बन्धे स्वाधीन हइते द्विधा बोध करिबे ना, हरिमोहिनी ताहा ठिक बुझिते पारेन नाइ। हरिमोहिनी सुचरिताके सम्पूर्ण बुझिया लन नाइ, बोझाओ ताँहार पक्षे शक्त छिल।

हरिमोहिनी सुचरिताके स्पष्ट करिया निषेध करिलेन ना, किन्तु मने मने राग करिलेन। भाबिते लागिलेन, 'मा गो, मानुषेर इहाते ये केमन करिया प्रवृत्ति हइते पारे ताहा आमि भाबिया पाइ ना। ब्राह्मणेर घरे तो जन्म बटे।'

खानिकक्षण चुप करिया थाकिया कहिलेन, "एकटा कथा बलि, बाछा, या कर ता कर, तोमादेर ओइ बेहाराटार हाते जल खेयो ना।"

सुचरिता कहिल, "केन मासि, ओइ रामदीन बेहाराइ तो तार निजेर गोरु दुइये तोमाके दुध दिये याय।"

हरिमोहिनी दुइ चक्षु विस्फारित करिया कहिलेन, "अवाक करलि। दुध आर जल एक हल!"

सुचरिता हासिया कहिल, "आच्छा, मासि, रामदीनेर छोंया जल आज आमि खाब ना। किन्तु, सतीशके यदि तुमि वारण कर तवे से ठिक तार उल्टो काजटि करबे।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "सतीशेर कथा आलादा।"

हरिमोहिनी जानितेन पुरुषमानुषेर सम्बन्धे नियमसंयमेर त्रुटि माप करितेइ हय।

४४

हारानबाबु रणक्षेत्रे प्रवेश करिलेन।

आज प्राय पनेरो दिन हइया गियाछे, ललिता स्टिमारे करिया विनयेर सङ्गे आसियाछे। कथाटा दुइ-एक जनेर काने गियाछे एवं अल्पे अल्पे व्याप्त हइबारओ चेष्टा करितेछे। किन्तु, सम्प्रति दुइ दिनेर मध्येइ एइ संवाद शुकनो खड़े आगुन लागार मतो छड़ाइया पड़ियाछे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मपरिवारेर धर्मनैतिक जीवनेर प्रति लक्ष्य राखिया एइ प्रकारेर कदाचारके ये दमन करा कर्तव्य, हारानबाबु ताहा अनेककेइ बुझाइयाछेन। ए-सब कथा बुझाइतेओ बेशि कष्ट पाइते हय ना। यखन आमरा 'सत्येर अनुरोधे' 'कर्तव्येर अनरोधे' परेर स्खलन लइया घृणाप्रकाश ओ दण्डविधान करिते उद्यत हइ, तखन सत्येर ओ कर्तव्येर अनुरोध रक्षा करा आमादेर पक्षे अत्यन्त क्लेशकर हय ना। एइजन्य ब्राह्मसमाजे हारानबाबु यखन 'अप्रिय' सत्य घोषणा ओ 'कठोर' कर्तव्य साधन करिते प्रवृत्त हइलेन तखन एतबड़ो अप्रियता ओ कठोरतार भये ताहार सङ्गे उत्साहेर सहित योग दिते अधिकांश लोक पराङ्मुख हइल ना। ब्राह्म-समाजेर हितैषी लोकेरा गाड़िपालकि भाड़ा करिया परस्परेर बाड़ि गिया बलिया आसिलेन, आजकाल यखन एमन-सकल घटना घटिते आरम्भ करियाछे तखन ब्राह्मसमाजेर भविष्यत् अत्यन्त अन्धकाराच्छन्न। एइ सङ्गे, सुचरिता ये हिन्दु हइयाछे एवं हिन्दु मासिर घरे आश्रय लइया यागयज्ञ तपजप ओ ठाकुरसेवा लइया दिन यापन करितेछे, ए कथाओ पल्लवित हइया उठिते लागिल।

अनेक दिन हइते ललितार मने एकटा लड़ाइ चलितेछिल। से प्रति रात्रे शुइते याइबार आगे बलितेछिल 'कखनोइ आमि हार मानिब ना' एवं प्रतिदिन घुम भाङिया बिछानाय बसिया बलियाछे 'कोनोमतेइ आमि हार मानिब ना'। एइ-ये विनयेर चिन्ता ताहार समस्त मनके अधिकार करिया बसियाछे, विनय नीचेर घरे बसिया कथा कहितेछे जानिते पारिले ताहार हृत्पिण्डेर रक्त उतला हइया उठितेछे, विनय दुइ दिन ताहादेर बाड़िते ना आसिले अवरुद्ध अभिमाने ताहार मन निपीड़ित हइतेछे, माझे माझे सतीशके नाना उपलक्षे विनयेर बासाय याइबार जन्य उत्साहित करितेछे एवं सतीश फिरिया आसिले विनय की करितेछिल, विनयेर सङ्गे की कथा हइल ताहार आद्योपान्त संवाद संग्रह करिबार चेष्टा करितेछे, इहा ललितार पक्षे यतइ अनिवार्य हइया उठितेछे ततइ पराभवेर ग्लानिते ताहाके अधीर करिया तुलितेछे। विनय ओ गोरार सङ्गे आलाप परिचये बाधा देन नाइ बलिया एक-एकबार परेशबाबुर प्रति ताहार रागओ हइत। किन्तु, शेष पर्यन्त से लड़ाइ करिबे, मरिबे तबु हारिबे ना, एइ ताहार पण छिल। जीवन ये केमन करिया काटाइबे से-सम्बन्धे नानाप्रकार कल्पना ताहार मनेर मध्ये यातायात करितेछिल। युरोपेर लोकहितैषिणी रमणीदेर जीवनचरिते ये-सकल कीर्ति-काहिनी से पाठ करियाछिल सेइगुलि ताहार निजेर पक्षे साध्य ओ सम्भवपर बलिया मने हइते लागिल।

एकदिन से परेशबाबुके गिया कहिल, "बाबा, आमि कि कोनो मेये-इस्कुले शेखाबार भार निते पारि ने।"

परेशबाबु ताँहार मेयेर मुखेर दिके चाहिया देखिलेन, क्षुधातुर हृदयेर वेदनाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताहार सकरुण दुटि चक्षु येन काङाल हइया एइ प्रश्न जिज्ञासा करितेछे। तिनि स्निग्धस्वरे कहिलेन, "केन पारबे ना, मा। किन्तु, तेमन मेये-इस्कुल कोथाय।"

ये-समयेर कथा हइतेछे तखन मेये-इस्कुल बेशि छिल ना, सामान्य पाठशाला छिल एवं भद्रघरेर मेयेरा शिक्षयित्रीर काजे तखन अग्रसर हन नाइ। ललिता व्याकुल हइया कहिल, "इस्कुल नेइ, बाबा ?"

परेशबाबु कहिलेन, "कइ, देखि ने तो।"

ललिता कहिल, "आच्छा, बाबा, मेये-इस्कुल कि एकटा करा याय ना।"

परेशबाबु कहिलेन, "अनेक खरचेर कथा, एवं अनेक लोकेर सहायता चाइ।"

ललिता जानित, सत्कर्मेर संकल्प जागाइया तोलाइ कठिन, किन्तु ताहा साधन करिबार पथेओ ये एत बाधा ताहा से पूर्बे भाबे नाइ। किछुक्षण चुप करिया बसिया थाकिया से आस्ते आस्ते उठिया चलिया गेल। ताँहार एइ प्रियतमा कन्याटिर हृदयेर व्यथा कोन्खाने परेशबाबु ताहाइ बसिया भाबिते लागिलेन। विनयेर सम्बन्धे हारानबाबु सेदिन ये-इङ्गित करिया गियाछेन ताहाओ ताँहार मने पड़िल। दीर्घनिश्वास फेलिया निजेके प्रश्न जिज्ञासा करिलेन, 'आमि कि अविवेचनार काज करियाछि।' ताँहार अन्य कोनो मेये हइले विशेष चिन्तार कारण छिल ना ; किन्तु ललितार जीवन ये ललितार पक्षे अत्यन्त सत्य पदार्थ, से तो आधाआधि किछुइ जाने ना, सुखदुःख ताहार पक्षे किछु-सत्य किछु-फाँकि नहे।

ललिता प्रतिदिन निजेर जीवनेर मध्ये व्यर्थ धिक्कार वहन करिया बाँचिया थाकिबे केमन करिया। से ये सम्मुखे कोथाओ एकटा प्रतिष्ठा एकटा मङ्गल-परिणाम देखिते पाइतेछे ना। एमनभावे निरुपाय भासिया चलिया याओया ताहार स्वभावसिद्ध नहे।

सेइदिनइ मध्याह्ने ललिता सुचरितार बाड़ि आसिया उपस्थित हइल। घरे गृहसज्जा विशेष किछुइ नाइ। मेझेर उपर एकटि घरजोड़ा शतरञ्च, ताहारइ एक दिके सुचरितार बिछाना पाता ओ अन्य दिके हरिमोहिनीर बिछाना। हरिमोहिनी खाटे शोन् ना बलिया सुचरिताओ ताँहार सङ्गे एक घरे नीचे बिछाना करिया शुइतेछे। देयाले परेशबाबुर एकखानि छबि टाङानो। पाशेर एकटि छोटो घरे सतीशेर खाट पड़ियाछे एवं एक धारे एकटि छोटो टेबिलेर उपर दोयात कलम खाता बइ स्लेट विशृङ्खलभावे छड़ानो रहियाछे। सतीश इस्कुले गियाछे। बाड़ि निस्तब्ध।

आहारान्ते हरिमोहिनी ताँहार मादुरेर उपर शुइया निद्रार उपक्रम करितेछेन, एवं सुचरिता पिठे मुक्त चुल मेलिया दिया शतरञ्चे बसिया कोलेर उपर बालिश लइया एकमने की पड़ितेछे। सम्मुखे आरओ कयखाना बइ पड़िया आछे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिताके हठात् घरे ढुकिते देखिया सुचरिता येन लज्जित हइया प्रथमटा बइ बन्ध करिल, परक्षणे लज्जार द्वाराइ लज्जाके दमन करिया बइ येमन छिल तेमनि राखिल। एइ बइगुलि गोरार रचनावली।

हरिमोहिनी उठिया बसिया कहिलेन, "एसो, एसो, मा ललिता, एसो। तोमादेर बाड़ि छेड़े सुचरितार मनेर मध्ये केमन करछे, से आमि जानि। ओर मन खाराप हलेइ ओइ बइगुलो निये पड़ते बसे। एखनइ आमि शुये शुये भावछिलुम, तोमरा केउ एले भालो हय––अमनि तुमि एसे पड़ेछ––अनेकदिन बाँचबे, मा।"

ललितार मने ये-कथाटा छिल सुचरितार काछे बसिया से एकेबारेइ ताहा आरम्भ करिया दिल। से कहिल, "सुचिदिदि, आमादेर पाड़ाय मेयेदेर जन्ये यदि एकटा इस्कुल करा याय ता हले केमन हय।"

हरिमोहिनी अवाक हइया कहिलेन, "शोनो एकबार कथा। तोमरा इस्कुल करबे की!"

सुचरिता कहिल, "केमन करे करा याबे बल्। के आमादेर साहाय्य करबे। बाबाके बलेछिस कि।"

ललिता कहिल, "आमरा दुजने तो पड़ाते पारब। हयतो बड़दिदिओ राजि हबे।"

सुचरिता कहिल, "शुधु पड़ानो निये तो कथा नय। की रकम करे इस्कुलेर काज चालाते हबे तार सब नियम बेंधे देओया चाइ; बाड़ि ठिक करते हबे, छात्री संग्रह करते हबे, खरच जोगाते हबे। आमरा दुजन मेयेमानुष एर की करते पारि।"

ललिता कहिल, "दिदि, ओ-कथा बलले चलबे ना। मेयेमानुष हये जन्मेछि बलेइ कि निजेर मनखानाके निये घरेर मध्ये पड़े आछाड़ खेते थाकब। पृथिवीर कोनो काजेइ लागब ना?"

ललितार कथाटार मध्ये ये-वेदना छिल सुचरितार बुकेर मध्ये गिया ताहा बाजिया उठिल। से कोनो उत्तर ना करिया भाबिते लागिल।

ललिता कहिल, "पाड़ार तो अनेक मेये आछे। आमरा यदि तादेर अमनि पड़ाते चाइ बाप-मा'रा तो खुशि हबे। तादेर ये कजनके पाइ तोमार एइ बाड़िते एने पड़ालेइ हबे। एते खरच किसेर।"

एइ बाड़िते राज्येर अपरिचित घरेर मेये जड़ो करिया पड़ाइबार प्रस्तावे हरिमोहिनी उद्विग्न हइया उठिलेन। तिनि निरिबिलि पूजा-अर्चना लइया शुद्ध शुचि हइया थाकिते चान, ताहार व्याघातेर सम्भावनाय आपत्ति करिते लागिलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "मासि, तोमार भय नेइ, यदि छात्री जोटे तादेर निये आमादेर नीचेर तलार घरेइ काज चालाते पारब ; तोमार उपरेर घरे आमरा उत्पात करते आनब ना। ता, भाइ ललिता, यदि छात्री पाओया याय ता हले आमि राजि आछि।"

ललिता कहिल, "आच्छा, देखाइ याक-ना।"

हरिमोहिनी बार बार कहिते लागिलेन, "मा, सकल विषयेइ तोमरा खृस्टानेर मतो हले चलबे केन। गृहस्थ घरेर मेये इस्कुले पड़ाय, ए तो बापेर वयसे शुनि नि।"

परेशबाबुर छातेर उपर हइते आशपाशेर बाड़िर छाते मेयेदेर मध्ये आलाप-परिचय चलित। एइ परिचयेर एकटा मस्त कण्टक छिल, पाशेर बाड़िर मेयेरा ए बाड़िर मेयेदेर एत वयसे एखनओ विवाह हइल ना बलिया प्रायइ प्रश्न एवं विस्मय प्रकाश करित। ललिता एइ कारणे एइ छातेर आलापे पारतपक्षे योग दित ना।

एइ छाते छाते बन्धुत्व-विस्तारे लावण्यइ छिल सकलेर चेये उत्साही। अन्य बाड़िर सांसारिक इतिवृत्त सम्बन्धे ताहार कौतूहलेर सीमा छिल ना। ताहार प्रतिवेशीदेर दैनिक जीवनयात्रार प्रधान ओ अप्रधान अनेक विषयइ दूर हइते वायुयोगे ताहार निकट आलोचित हइत। चिरुनि हस्ते केश-संस्कार करिते करिते मुक्त आकाशतले प्रायइ ताहार अपराह्णसभा जमित।

ललिता ताहार संकल्पित मेये-इस्कुलेर छात्रीसंग्रहेर भार लावण्येर उपर अर्पण करिल। लावण्य छाते छाते यखन एइ प्रस्ताव घोषणा करिया दिल तखन अनेक मेयेइ उत्साहित हइया उठिल। ललिता खुशि हइया सुचरितार बाड़िर एकतलार घर झाँट दिया, धुइया, साजाइया प्रस्तुत करिते लागिल।

किन्तु, ताहार इस्कुलघर शून्यइ रहिया गेल। बाड़िर कर्तारा ताँहादेर मेयेदेर भुलाइया पड़ाइबार छले ब्राह्मबाड़िते लइया याइबार प्रस्तावे अत्यन्त क्रुद्ध हइया उठिलेन। एमन-कि, एइ उपलक्षेइ यखन ताँहारा जानिते पारिलेन, परेशबाबुर मेयेदेर सङ्गे ताँहादेर मेयेदेर आलाप चले, तखन ताहाते बाधा देओयाइ ताँहारा कर्तव्य बोध करिलेन। ताँहादेर मेयेदेर छाते ओठा बन्ध हइबार जो हइल एवं ब्राह्म प्रतिवेशीर मेयेदेर साधु संकल्पेर प्रति ताँहारा साधुभाषा प्रयोग करिलेन ना। बेचारा लावण्य यथासमये चिरुनि हाते छाते उठिया देखे, पार्श्ववर्ती छातगुलिते नवीनादेर परिवर्ते प्रवीणादेर समागम हइतेछे एवं ताँहादेर एकजनेर निकट हइतेओ से सादर सम्भाषण लाभ करिल ना।

ललिता इहातेओ क्षान्त हइल ना। से कहिल, अनेक गरिब ब्राह्म मेयेर बेथुन इस्कुले गिया पड़ा दुःसाध्य, ताहादेर पड़ाइबार भार लइले उपकार हइते पारिबे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइरूप छात्री-सन्धाने से निजेओ लागिल, सुधीरकेओ लागाइया दिल।

सेकाले परेशबाबुर मेयेदेर पड़ाशुनार ख्याति बहुदूरविस्तृत छिल। एमन-कि, से-ख्याति सत्यकेओ अनेक दूर छाड़ाइया गियाछिल। एजन्य इहारा मेयेदेर विना वेतने पड़ाइबार भार लइबेन, शुनिया अनेक पिता-माताइ खुशि हइया उठिलेन।

प्रथमे पाँच-छयटि मेये लइया दुइ-चार दिनेइ ललितार इस्कुल बसिया गेल। परेशबाबुर सङ्गे एइ इस्कुलेर कथा आलोचना करिया नियम बाँधिया, इहार आयोजन करिया, से निजेके एक मुहूर्त समय दिल ना। एमन-कि, वत्सरेर शेषे परीक्षा हइया गेले मेयेदेर किरूप प्राइज दिते हइबे, ताहा लइया लावण्येर सङ्गे ललितार रीतिमतो तर्क बाधिया गेल—ललिता ये-बइगुलार कथा बले लावण्येर ताहा पछन्द हय ना, आबार लावण्येर सङ्गे ललितार पछन्दरओ मिल हय ना। परीक्षा के के करिबे, ताहा लइयाओ एकटु तर्क हइया गेल। लावण्य मोटेर उपरे यदिओ हारानबाबुके देखिते पारित ना किन्तु ताँहार पाण्डित्येर ख्यातिते से अभिभूत छिल। हारानबाबु ताहादेर विद्यालयेर परीक्षा अथवा शिक्षा अथवा कोनो एकटा काजे नियुक्त थाकिले सेटा ये विशेष गौरवेर विषय हइबे, ए विषये ताहार सन्देह मात्र छिल ना। किन्तु, ललिता कथाटाके एकेबारेइ उड़ाइया दिल—हारानबाबुर सङ्गे ताहादेर ए विद्यालयेर कोनोप्रकार सम्बन्धइ थाकिते पारे ना।

दुइ-तिन दिनेर मध्येइ ताहार छात्रीर दल कमिते कमिते क्लास शून्य हइया गेल। ललिता ताहार निर्जन क्लासे बसिया पदशब्द शुनिबामात्र छात्री-सम्भावनाय सचकित हइया उठे, किन्तु केहइ आसे ना। एमन करिया दुइ प्रहर यखन काटिया गेल तखन से बुझिल, एकटा किछु गोल हइयाछे।

निकटे ये-छात्रीटि छिल ललिता ताहार बाड़िते गेल। छात्री काँदो-काँदो हइया कहिल, "मा आमाके येते दिच्छे ना।" मा कहिलेन, असुविधा हय। असुविधाटा ये की ताहा स्पष्ट बुझा गेल ना। ललिता अभिमानिनी मेये; से अन्य पक्षे अनिच्छार लेशमात्र लक्षण देखिले जेद करिते वा कारण जिज्ञासा करिते पारेइ ना।

से कहिल, "यदि असुविधा हय ता हले काज की!"

ललिता इहार परे ये-बाड़िते गेल सेखाने स्पष्ट कथाइ शुनिते पाइल। ताहारा कहिल, सुचरिता आजकाल हिन्दु हइयाछे, से जात माने, ताहार बाड़िते ठाकुर पूजा हय, इत्यादि।

ललिता कहिल, "सेजन्य यदि आपत्ति थाके तबे ना हय आमादेर बाड़िते इस्कुल बसबे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु, इहातेओ आपत्तिर खण्डन हइल ना, आरओ एकटा-किछु बाकि आछे। ललिता अन्य बाड़िते ना गिया सुधीरके डाकाइया पाठाइल। जिज्ञासा करिल, "सुधीर, की हयेछे सत्य करे बलो तो।"

सुधीर कहिल, "पानुबाबु तोमादेर एइ इस्कुलर विरुद्धे उठे पड़े लेगेछेन।"

ललिता जिज्ञासा करिल, "केन, दिदिर बाड़िते ठाकुरपुजो हय बले ?"

सुधीर कहिल, "शुधु ताइ नय।"

ललिता अधीर हइया कहिल, "आर की, बलोइ-ना।"

सुधीर कहिल, "से अनेक कथा।"

ललिता कहिल, "आमारओ अपराध आछे बुझि ?"

सुधीर चुप करिया रहिल। ललिता मुख लाल करिया बलिल, "ए आमार सेइ स्टिमार-यात्रार शास्ति ! यदि अविवेचनार काज करेइ थाकि तबे भालो काज करे प्रायश्चित्त करार पथ आमादेर समाजे एकेबारेइ बन्ध बुझि ! आमार पक्षे समस्त शुभकर्म ए समाजे निषिद्ध ? आमार एवं आमादेर समाजेर आध्यात्मिक उन्नतिर एइ प्रणाली तोमरा ठिक करेछ !"

सुधीर कथाटाके एकटु नरम करिबार जन्य कहिल, "ठिक सेजन्ये नय। विनयबाबुरा पाछे क्रमे एइ विद्यालयेर सङ्गे जड़ित हये पड़ेन, ओंरा सेइ भय करेन।"

ललिता एकेबारे आगुन हइया कहिल, "से भय ना से भाग्य ! योग्यताय विनयबाबुर सङ्गे तुलना हय एमन लोक ओंदेर मध्ये कजन आछे !"

सुधीर ललितार राग देखिया संकुचित हइया कहिल, "से तो ठिक कथा। किन्तु, विनयबाबु तो—"

ललिता। ब्राह्मसमाजेर लोक नन ! सेइजन्ये ब्राह्मसमाज ताँके दण्ड देबेन। एमन समाजेर जन्ये आमि गौरव बोध करि ने।

छात्रीदेर सम्पूर्ण तिरोधान देखिया, सुचरिता व्यापारखाना की एवं काहार द्वारा घटितेछे ताहा बुझिते पारियाछिल। से ए-सम्बन्धे कोनो कथाटि ना कहिया, उपरेर घरे सतीशके ताहार आसन्न परीक्षार जन्य प्रस्तुत करितेछिल।

सुधीरेर सङ्गे कथा कहिया ललिता सुचरितार काछे गेल ; कहिल, "शुनेछ ?"

सुचरिता एकटु हासिया कहिल, "शुनि नि, किन्तु सब बुझेछि।"

ललिता कहिल, "ए-सब कि सह्य करते हबे।"

सुचरिता ललितार हात धरिया कहिल, "सह्य करते तो अपमान नेइ। बाबा केमन करे सब सह्य करेन देखेछिस तो ?"

ललिता कहिल, "किन्तु, सुचिदिदि, आमार अनेक समय मने हय, सह्य करार द्वारा अन्यायके येन स्वीकार करे नेओया हय। अन्यायके सह्य ना कराइ हच्छे तार प्रति उचित व्यवहार।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "तुइ की करते चास, भाइ, बल् !"

ललिता कहिल, "ता आमि किच्छु भाबि नि—आमि की करते पारि ताओ जानि ने—किन्तु, एकटा किछु करतेइ हबे। आमादेर मतो मेयेमानुषेर सङ्गे एमन नीचभावे यारा लेगेछे तारा निजेदेर यत बड़ो लोक मने करुक तारा कापुरुष। किन्तु, तादेर काछे आमि कोनोमतेइ हार मानब ना—कोनोमतेइ ना। एते तारा या करते पारे करुक।"

बलिया ललिता माटिते पदाघात करिल।

सुचरिता कोनो उत्तर ना करिया धीरे धीरे ललितार हातेर उपर हात बुलाइते लागिल। किछुक्षण परे कहिल, "ललिता, भाइ, एकबार बाबार सङ्गे कथा कये देख्।"

ललिता उठिया दाँड़ाइया कहिल, "आमि एखनइ ताँर काछेइ याच्छि।"

ललिता ताहादेर बाड़िर द्वारेर काछे आसिया देखिल, नतशिरे विनय बाहिर हइया आसितेछे। ललिताके देखिया विनय मुहूर्तेर जन्य थमकिया दाँड़ाइल—ललितार सङ्गे दुइ-एकटा कथा कहिया लइबे कि ना से-सम्बन्धे ताहार मनें एकटा वितर्क उपस्थित हइल, किन्तु आत्मसंवरण करिया ललितार मुखेर दिके ना चाहिया ताहाके नमस्कार करिल ओ माथा हेंट करिया चलिया गेल।

ललिताके येन अग्नितप्त शेले विद्ध करिल। से द्रुतपदे बाड़िते प्रवेश करियाइ एकेबारे ताहार घरे गेल। ताहार मा तखन टेबिलेर उपर एकटा लम्बा सरु खाता खुलिया हिसाबे मनोनिवेश करिबार चेष्टा करितेछिलेन।

ललितार मुख देखियाइ वरदासुन्दरी मने शङ्का गणिलेन। ताड़ाताड़ि हिसाबेर खाताटार मध्ये एकेबारे निरुद्देश हइया याइबार प्रयास पाइलेन; येन एकटा की अङ्क आछे याहा एखनइ मिलाइते ना पारिले ताँहार संसार एकेबारे छारखार हइया याइबे।

ललिता चौकि टानिया टेबिलेर काछे बसिल। तबु वरदासुन्दरी मुख तुलिलेन ना। ललिता कहिल, "मा!"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "रोस्, बाछा, आमि एइ—"

बलिया खाताटार प्रति नितान्त झुँकिया पड़िलेन।

ललिता कहिल, "आमि बेशिक्षण तोमाके विरक्त करब ना। एकटा कथा जानते चाइ। विनयबाबु एसेछिलेन?"

वरदासुन्दरी खाता हइते मुख ना तुलिया कहिलेन, "हाँ।"

ललिता। ताँर सङ्ग तोमार की कथा हल।

"से अनेक कथा।"

ललिता। आमार सम्बन्धे कथा हयछिल कि ना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरदासुन्दरी पलायनेर पन्था ना देखिया कलम फेलिया खाता हइते मुख तुलिया कहिलेन, "ता, बाछा, हयेछिल। देखलुम ये क्रमेइ बाड़ाबाड़ि हये पड़छे, समाजेर लोके चार दिकेइ निन्दे करछे, ताइ सावधान करे दिते हल।"

लज्जाय ललितार मुख लाल हइया उठिल, ताहार माथा झाँ झाँ करिते लागिल। जिज्ञासा करिल, "बाबा कि विनयबाबुके एखाने आसते निषेध करेछेन।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "तिनि बुझि ए-सब कथा भाबेन? यदि भावतेन ता हले गोड़ातेइ ए-समस्त हते पारत ना।"

ललिता जिज्ञासा करिल, "पानुबाबु आमादेर एखाने आसते पारबेन?"

वरदासुन्दरी आश्चर्य हइया कहिलेन, "शोनो एकबार! पानुबाबु आसबेन ना केन।"

ललिता। विनयबाबुइ वा आसबेन ना केन।

वरदासुन्दरी पुनराय खाता टानिया लइया कहिलेन, "ललिता, तोर सङ्गे आमि पारि ने, बापु! या एखन, आमाके ज्वालास ने--आमार अनेक काज आछे।"

ललिता दुपुरवेलाय सुचरितार बाड़िते इस्कुल करिते याय, एइ अवकाशे विनयके डाकाइया आनिया वरदासुन्दरी ताँहार याहा वक्तव्य बलियाछिलेन। मने करियाछिलेन, ललिता टेरओ पाइबे ना। हठात् चक्रान्त एमन करिया धरा पड़िल देखिया, तिनि विपद बोध करिलेन। बुझिलेन, परिणामे इहार शान्ति नाइ एवं सहजे इहार निष्पत्ति हइबे ना। निजेर काण्डज्ञानहीन स्वामीर उपर ताँहार समस्त राग गिया पड़िल। एइ अबोध लोकटिके लइया घरकन्ना करा स्त्रीलोकेर पक्षे की विड़म्बना।

ललिता हृदयभरा प्रलयझड़ वहन करिया लइया चलिया गेल। नीचेर घरे बसिया परेशबाबु चिठि लिखितेछिलेन; सेखाने गियाइ एकेबारे ताँहाके जिज्ञासा करिल, "बाबा, विनयबाबु कि आमादेर सङ्गे मेशवार योग्य नन।"

प्रश्न शुनियाइ परेशबाबु अवस्थाटा बुझिते पारिलेन। ताँहार परिवार लइया सम्प्रति ताँहादेर समाजे ये आन्दोलन उपस्थित हइयाछे ताहा परेशबाबुर अगोचर छिल ना। इहा लइया ताँहाके यथेष्ट चिन्ता करितेओ हइतेछे। विनयेर प्रति ललितार मनेर भाव सम्बन्धे यदि ताँहार मने सन्देह उपस्थित ना हइत, तबे तिनि बाहिरेर कथाय किछुमात्र कान दितेन ना। किन्तु, यदि विनयेर प्रति ललितार अनुराग जन्मिया थाके तबे से-स्थले ताँहार कर्तव्य की, से-प्रश्न तिनि बराबर निजेके जिज्ञासा करियाछेन। प्रकाश्यभावे ब्राह्मधर्मे दीक्षा लओयार पर ताँहार परिवारे आबार एइ एकटा संकटेर समय उपस्थित हइयाछे। सेइजन्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक दिके एकटा भय एवं कष्ट ताँहाके भितरे भितरे पीड़न करितेछे, अन्य दिके ताँहार समस्त चित्तशक्ति जाग्रत हइया उठिया बलितेछे, 'ब्राह्मधर्मग्रहणेर समय येमन एकमात्र ईश्वरेर दिके दृष्टि राखियाइ कठिन परीक्षाय उत्तीर्ण हइयाछि, सत्यकेइ सुख सम्पत्ति समाज सकलेर ऊर्ध्वे स्वीकार करिया जीवन चिरदिनेर मतो धन्य हइयाछे, एखनओ यदि सेइरूप परीक्षार दिन उपस्थित हय तबे ताँहार दिकेइ लक्ष्य राखिया उत्तीर्ण हइब।'

ललितार प्रश्नेर उत्तरे परेशबाबु कहिलेन, "विनयके आमि तो खुब भालो बलेइ जानि। ताँर विद्याबुद्धिओ येमन चरित्रओ तेमनि।"

एकटुखानि चुप करिया थाकिया ललिता कहिल, "गौरबाबुर मा एर मध्ये दुदिन आमादेर बाड़ि एसेछिलेन। सुचिदिदिके निये ताँर ओखाने आज एकबार याब ?"

परेशबाबु क्षणकालेर जन्य उत्तर दिते पारिलेन ना। तिनि निश्चय जानितेन, वर्तमान आलोचनार समय एइरूप यातायाते ताँहादेर निन्दा आरओ प्रश्रय पाइबे। किन्तु, ताँहार मन बलिया उठिल, 'यतक्षण इहा अन्याय नहे ततक्षण आमि निषेध करिते पारिब ना।' कहिलेन, "आच्छा, याओ। आमार काज आछे, नइले आमिओ तोमादेर सङ्गे येतुम।"

४५

विनय येखाने एइ कयदिन अतिथिरूपे ओ बन्धुरूपे एमन निश्चिन्तभाव पदार्पण करियाछिल ताहार तलदेशे सामाजिक आग्नेयगिरि एमन सचेष्टभावे उत्तप्त हइया आछे ताहा से स्वप्नेओ जानित ना ; प्रथम यखन से परेशबाबुर परिवारेर सङ्गे मिशितेछिल तखन ताहार मने यथेष्ट संकोच छिल ; कोथाय कतदूर पर्यन्त ताहार अधिकारेर सीमा ताहा से निश्चित जानित ना बलिया सर्वदा भये भये चलित। क्रमे यखन ताहार भय भाङिया गेल, तखन कोथाओ ये किछुमात्र विपदेर शङ्का आछे ताहा ताहार मनेओ हय नाइ। आज हठात् यखन शुनिल, ताहार व्यवहारे समाजेर लोकेर निकट ललिताके निन्दित हइते हइतेछे, तखन ताहार माथाय वज्र पड़िल। विशेषत सकलेर चेये ताहार क्षोभेर कारण हइल एइजन्य ये, ललितार सम्बन्धे ताहार हृदयेर उत्तापमात्रा साधारण बन्धुत्वेर रेखा छाड़ाइया अनेक ऊर्ध्वे उठियाछिल, ताहा से निजे जानित एवं वर्तमान क्षेत्रे येखाने परस्परेर समाज एमन विभिन्न सेखाने एरूप तापाधिक्यके से मने मने अपराध बलियाइ गण्य करित। से अनेकबार मने करियाछे, एइ परिवारेर विश्वस्त अतिथिरूपे आसिया से निजेर ठिक स्थानटि राखिते पारे नाइ—एक जायगाय से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कपटता करितेछे, ताहार मनेर भावटि एइ परिवारेर लोकेर काछे ठिकमतो प्रकाश पाइले ताहार पक्षे लज्जार कारण हइबे ।

एमन समय यखन एकदिन मध्याह्ने वरदासुन्दरी पत्र लिखिया विनयके विशेष करिया डाकिया आनिया जिज्ञासा करिलेन, 'विनयबाबु आपनि तो हिन्दु ?' एवं विनय ताहा स्वीकार करिले पुनराय प्रश्न करिलेन 'हिन्दुसमाज आपनि तो त्याग करिते पारिबेन ना ?' एवं विनय ताहा ताहार पक्षे असम्भव जानाइले वरदासुन्दरी यखन बलिया उठिलेन 'तबे केन आपनि'––तखन सेइ 'तबे-केन'र कोनो उत्तर बिनयेर मुखे जोगाइल ना । से एकेबारे माथा हेंट करिया बसिया रहिल । ताहार मने हइल, से येन धरा पड़ियाछे, ताहार एमन एकटा जिनिस एखाने सकलेर काछे प्रकाश हइया पड़ियाछे याहा से चन्द्रसूर्यवायुर काछेओ गोपन करिते चाहियाछिल । ताहार केवलइ मने हइते लागिल, परेशबाबु की मने करितेछेन, ललिता की मने करितेछे, सुचरिताइ वा ताहाके की भावितेछे ! देवदूतेर कोन् भ्रमक्रमे एइ-ये स्वर्गलोके किछुदिनेर मतो ताहार स्थान हइयाछिल, अनधिकार प्रवेशेर समस्त लज्जा माथाय करिया लइया एखान हइते आज ताहाके एकेबारे निर्वासित हइते हइबे ।

ताहार परे परेशेर दरजा पार हइयाइ प्रथमेइ येइ से ललिताके देखिते पाइल ताहार मने हइल, 'ललितार निकट हइते एइ शेष-विदायेर मुहूर्ते ताहार काछे एकटा मस्त अपमान स्वीकार करिया लइया पूर्वपरिचयेर एकटा प्रलयसमाधान करिया दिया याइ ।' किन्तु की करिले ताहा हय भाविया पाइल ना, ताइ ललितार मुखेर दिके ना चाहिया निःशब्दे एकटि नमस्कार करिया चलिया गेल ।

एइ तो सेदिन पर्यन्त विनय परेशेर परिवारेर बाहिरेइ छिल ; आजओ सेइ बाहिरे आसिया दाँड़ाइल । किन्तु, ए की प्रभेद ! सेइ बाहिर आज एमन शून्य केन । ताहार पूर्वेर जीवने तो कोनो क्षति हय नाइ ; ताहार गोरा, ताहार आनन्दमयी तो आछे । किन्तु, तबु ताहार मने हइते लागिल, माछ येन जल हइते डाङाय उठियाछे, ये दिके फिरितेछे कोथाओ से येन जीवनेर अवलम्बन पाइतेछे ना । एइ हर्म्यसंकुल शहरेर जनाकीर्ण राजपथे विनय सर्वत्रइ निजेर जीवनेर एकटा छायामय पाण्डुवर्ण सर्वनाशेर चेहारा देखिते लागिल । एइ विश्वव्यापी शुष्कताय शून्यताय से निजेइ आश्चर्य हइया गेल । केन एमन हइल, कखन एमन हइल, की करिया ए सम्भव हइल, एइ कथाइ से एकटा हृदयहीन निरुत्तर शून्येर काछे बार बार प्रश्न करिते लागिल ।

"विनयबाबु, विनयबाबु !"

विनय पिछन फिरिया देखिल, सतीश । ताहाके विनय आलिङ्गन करिया धरिल । कहिल, "की भाइ, की बन्धु !"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनयेर कण्ठ येन अश्रुते भरिया आसिल। परेशबाबुर घरे एइ बालकटिओ ये कतखानि माधुर्य मिशाइयाछिल ताहा विनय आज येमन अनुभव करिल एमन बुझि कोनोदिन करे नाइ।

सतीश कहिल, "आपनि आमादेर ओखाने केन यान ना। काल आमादेर ओखाने लावण्यदिदि ललितादिदि खाबेन, मासि आपनाके नेमन्तन्न करबार जन्ये पाठियेछेन।"

विनय बुझिल मासि कोनो खबर राखेन ना; कहिल, "सतीशबाबु, मासिके आमार प्रणाम जानियो--किन्तु, आमि तो येते पारब ना।"

सतीश अनुनयेर सहित विनयेर हात धरिया कहिल, "केन पारबेन ना। आपनाके येतेइ हबे, किछुतेइ छाड़ब ना।"

सतीशेर एत अनुरोधेर विशेष एकटु कारण छिल। ताहार इस्कुले 'पशुर प्रति व्यवहार' सम्बन्धे ताहाके एकटि रचना लिखिते दियाछिल--सेइ रचनाय से पञ्चाशेर मध्ये बियाल्लिश नम्बर पाइयाछिल; ताहार भारि इच्छा, विनयके सेइ लेखाटा देखाय। विनय ये खुब एकजन विद्वान एवं समजदार ताहा से जानित; से निश्चय ठिक करियाछिल, विनयेर मतो रसज्ञ लोक ताहार लेखार ठिक मूल्य बुझिते पारिबे। विनय यदि ताहार लेखार श्रेष्ठता स्वीकार करे ताहा हइले अरसिक लीला सतीशेर प्रतिभा सम्बन्धे अवज्ञा प्रकाश करिले अश्रद्धेय हइबे। निमन्त्रणटा मासिके बलिया सेइ घटाइयाछिल; विनय यखन ताहार लेखार उपरे राय प्रकाश करिबे तखन ताहार दिदिराओ सेखाने उपस्थित थाके, इहाइ ताहार इच्छा।

विनय कोनोमतेइ निमन्त्रणे उपस्थित हइते पारिबे ना शुनिया सतीश अत्यन्त मुषड़िया गेल।

विनय ताहार गला जड़ाइया धरिया कहिल, "सतीशबाबु, तुमि आमादेर बाड़ि चलो।"

सतीशेर पकेटेइ लेखाटा छिल, सुतरां विनयेर आह्वान से अग्राह्य करिते पारिल ना। कवियशःप्रार्थी बालक ताहादेर विद्यालयेर आसन्न परीक्षार समये समय नष्ट करार अपराध स्वीकार करियाइ विनयेर बासाय गेल।

विनय येन ताहाके कोनोमतेइ छाड़िते चाहिल ना। ताहार लेखा तो शुनिलइ, प्रशंसा याहा करिल ताहाते समालोचकेर अप्रमत्त निरपेक्षता प्रकाश पाइल ना, ताहार उपरे बाजार हइते जलखावार किनिया ताहाके खाओयाइल।

ताहार परे सतीशके ताहादेर बाड़िर काछाकाछि पौंछाइया दिया अनावश्यक व्याकुलतार सहित कहिल, "सतीशबाबु, तबे आसि, भाइ।"

17

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतीश ताहार हात धरिया टानाटानि करिया कहिल, "ना, आपनि आमादेर बाड़िते आसुन।"

आज ए अनुनये कोनो फल हइल ना।

स्वप्नाविष्टेर मतो चलिते चलिते विनय आनन्दमयीर बाड़िते आसिया पौंछिल, किन्तु ताँहार सङ्गे देखा करिते पारिल ना। छातेर उपरे ये-घरे गोरा शुइत सेइ निर्जन घरे प्रवेश करिल—एइ घरे ताहादेर बाल्यबन्धुत्वेर कत सुखमय दिन एवं कत सुखमय रात्रि काटियाछे—कत आनन्दालाप, कत संकल्प, कत गभीर विषयेर आलोचना—कत प्रणयकलह एवं से-कलहेर कत प्रीतिसुधापूर्ण अवसान! सेइ ताहार पूर्वजीवनेर मध्ये विनय तेमनि करिया आपनाके भुलिया प्रवेश करिते चाहिल; किन्तु माझखानेर एइ कयदिनेर नूतन परिचय पथरोध करिया दाँड़ाइल, ताहाके ठिक सेइ जायगाटिते ढुकिते दिल ना। जीवनेर केन्द्र ये कखन सरिया आसियाछे एवं कक्षपथेर ये कखन परिवर्तन घटियाछे, ताहा एतदिन विनय सुस्पष्ट करिया बुझिते पारे नाइ; आज यखन कोनो सन्देह रहिल ना तखन भीत हइया उठिल।

छाते कापड़ शुकाइते दियाछिलेन, अपराह्ने रौद्र पड़िया आसिले आनन्दमयी यखन तुलिते आसिलेन तखन गोरार घरे विनयके देखिया तिनि आश्चर्य हइया गेलेन। ताड़ाताड़ि ताहार पाशे आसिया ताहार गाये हात दिया कहिलेन, "विनय, की हयेछे, विनय। तोर मुख अमन सादा हये गेछे केन।"

विनय उठिया बसिल; कहिल, "मा, आमि परेशबाबुदेर बाड़िते प्रथम यखन यातायात करते आरम्भ करि, गोरा राग करत। तार रागके आमि तखन अन्याय मने करतुम; किन्तु, अन्याय तार नय, आमारइ निर्बुद्धिता।"

आनन्दमयी एकटुखानि हासिया कहिलेन, "तुइ ये आमादेर खुब सुबुद्धि छेले ता आमि बलि ने, किन्तु ए क्षेत्रे तोर बुद्धिर दोष किसे प्रकाश पेले।"

विनय कहिल, "मा, आमादेर समाज ये एकेबारेइ भिन्न, से-कथा आमि एकेबारेइ विवेचना करि नि। ओंदेर बन्धुत्वे व्यवहारे दृष्टान्ते आमार खुब आनन्द एवं उपकार बोध हच्छिल, तातेइ आमि आकृष्ट हयेछिलुम; आर कोनो कथा ये चिन्ता करवार आछे एक मुहूर्तेर जन्य से आमार मने उदय हय नि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तोर कथा शुने एखनओ तो आमार मने उदय हच्छे ना।"

विनय कहिल, "मा, तुमि जान ना, समाजे आमि ताँदेर सम्बन्धे भारि एकटा अशान्ति जागिये दियेछि—लोके एमन-सब निन्दा करते आरम्भ करेछे ये आमि आर सेखाने—"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "गोरा एकटा कथा बार बार बले, सेटा आमार काछे खुब खाँटि मने हय। से बले, येखाने भितरे कोथाओ एकटा अन्याय आछे सेखाने बाइरे शान्ति थाकाटाइ सकलेर चेये अमङ्गल। ओदेर समाजे यदि अशान्ति जेगे थाके ता हले तोर अनुताप करबार कोनो दरकार देखि ने, देखबि ताते भालोइ हबे। तोर निजेर व्यवहारटा खाँटि थाकलेइ हल।"

ओइखानेइ तो विनयेर मस्त खटका छिल। ताहार निजेर व्यवहारटा अनिन्दनीय कि ना सेइटे से कोनोमतेइ बुझिया उठिते पारितेछिल ना। ललिता यखन भिन्नसमाजभुक्त, ताहार सङ्गे विवाह यखन सम्भवपर नहे, तखन ताहार प्रति विनयेर अनुरागटाइ एकटा गोपन पापेर मतो ताहाके क्लिष्ट करितेछिल एवं एइ पापेर निदारुण प्रायश्चित्तकाल ये उपस्थित हइयाछे एइ कथाइ स्मरण करिया से पीड़ित हइतेछिल।

विनय हठात् बलिया उठिल, "मा, शशिमुखीर सङ्गे आमार विवाहेर ये प्रस्ताव हयेछिल सेटा हये चुके गेलेइ भालो हत। आमार येखाने ठिक जायगा सेइखानेइ कोनोमते आमार बद्ध हये थाका उचित--एमन हओया उचित ये, किछुतेइ सेखान थेके आर नड़ते ना पारि।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "अर्थात्, शशिमुखीके तोर घरेर बउ ना क'रे तोर घरेर शिकल करते चास--शशीर की सुखेरइ कपाल।"

एमन समय बेहारा आसिया खबर दिल, परेशबाबुर बाड़िर दुइ मेये आसियाछेन। शुनिया विनयेर बुकेर मध्ये धड़ास करिया उठिल। ताहार मने हइल, विनयके सतर्क करिया दिबार जन्य ताहारा आनन्दमयीर काछे नालिश जानाइते आसियाछे। से एकेवारे दाँड़ाइया उठिया कहिल, "आमि याइ, मा।"

आनन्दमयी उठिया दाँड़ाइया ताहार हात धरिया कहिलेन, "एकेवारे बाड़ि छेड़े यास ने, विनय। नीचेर घरे एकटु अपेक्षा कर।"

नीचे याइते याइते विनय बार बार बलिते लागिल, 'एर तो कोनो दरकार छिल ना। या हये गेछे ता हये गेछे, किन्तु आमि तो मरे गेलेओ आर सेखाने येतुम ना। अपराधेर शास्ति आगुनेर मतो यखन एकबार ज्वले ओठे तखन अपराधी दग्ध हये म'लेओ सेइ शास्तिर आगुन येन निबतेइ चाय ना।'

एकतलाय रास्तार धारे गोरार ये-घर छिल सेइ घरे विनय यखन प्रवेश करिते याइतेछे एमन समय महिम ताँहार स्फीत उदरटिके चापकानेर बोताम-बन्धन हइते मुक्ति दिते दिते आपिस हइते बाड़ि फिरिया आसिलेन। विनयेर हात धरिया कहिलेन, "एइ-ये, विनय! बेश! आमि तोमाके खुँजछि।"

बलिया विनयके गोरार घरेर मध्ये लइया गिया एकटा चौकिते बसाइया निजेओ बसिलेन एवं पकेट हइते डिबा बाहिर करिया विनयके एकटि पान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाइते दिलेन। "ओरे तामाक निये आय रे" बलिया एकटा हुंकार दिया तिनि एकेबारेइ काजेर कथा पाड़िलेन। जिज्ञासा करिलेन, "सेइ विषयटार की स्थिर हल। आर तो--"

देखिलेन, विनयेर भावखाना पूर्वेर चेये अनेकटा नरम। खुब ये एकटा उत्साह ताहा नय बटे, किन्तु फाँकि दिया कोनोमते कथाटाके एड़ाइबार चेष्टाओ देखा याय ना। महिम तखनइ दिनक्षण एकेबारे पाका करिते चान ; विनय कहिल, "गोरा फिरे आसुक-ना।"

महिम आश्वस्त हइया कहिलेन, "से तो आर दिन कयेक आछे। विनय, किछु जलखाबार आनते बले दिइ--की बल ? तोमार मुख आज भारि शुकनो देखाच्छे ये। किछु असुखविसुख करे नि तो ?"

जलखाबारेर दाय हइते विनय निष्कृति लाभ करिले, महिम निजेर क्षुधा-निवृत्तिर अभिप्राये बाड़िर भितर गमन करिलेन। विनय गोरार टेबिलेर उपर हइते ये-कोनो एकखाना बइ टानिया लइया पाता उल्टाइते लागिल, ताहार परे बइ फेलिया घरेर एक धार हइते आर-एक धार पर्यन्त पायचारि करिते थाकिल।

बेहारा आसिया कहिल, "मा डाकछेन।"

विनय जिज्ञासा करिल, "काके डाकछेन।"

बेहारा कहिल, "आपनाके।"

विनय जिज्ञासा करिल, "आर-सकले आछेन ?"

बेहारा कहिल, "आछेन।"

परीक्षाघरेर मुखे छात्र येमन करिया याय विनय तेमनि करिया उपरे चलिल। घरेर द्वारेर काछे आसिया एकटु इतस्तत करितेइ सुचरिता पूर्वेर मतोइ ताहार सहज सौहार्देर स्निग्धकण्ठे कहिल, "विनयबाबु, आसुन।"

सेइ स्वर शुनिया विनयेर मने हइल येन से एकटा अप्रत्याशित धन पाइल।

विनय घरे ढुकिले सुचरिता एवं ललिता ताहाके देखिया आश्चर्य हइल। से ये कत अकस्मात् की कठिन आघात पाइयाछे, ताहा एइ अल्प समयेर मध्ये ताहार मुखे चिह्नित हइया गियाछे। से सरस श्यामल क्षेत्रेर उपर दिया हठात् कोथा हइते पङ्गपाल पड़िया चलिया गियाछे, विनयेर नित्यसहास्य मुखेर सेइ खेतेर मतो चेहारा हइयाछे। ललितार मने वेदना एवं करुणार सङ्गे एकटु आनन्देर आभासओ देखा दिल।

अन्य दिन हइले ललिता सहसा विनयेर सङ्गे कथा आरम्भ करित ना ; आज येमनि विनय घरे प्रवेश करिल अमनि से बलिया उठिल, "विनयबाबु, आपनार सङ्गे आमादेर एकटा परामर्श आछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनयेर बुके के येन हठात् एकटा शब्दभेदी आनन्देर बाण छुँड़िया मारिल। से उल्लासे चकित हइया उठिल। ताहार विवर्ण म्लान मुखे मुहूर्तेइ दीप्तिर सञ्चार हइल।

ललिता कहिल, "आमरा कय बोनें मिले एकटि छोटोखाटो मेये-इस्कुल करते चाइ।"

विनय उत्साहित हइया उठिया कहिल, "मेये-इस्कुल करा अनेक दिन थेके आमार जीवनेर एकटा संकल्प।"

ललिता कहिल, "आपनाके ए विषये आमादेर साहाय्य करते हबे।"

विनय कहिल, "आमार द्वारा या हते पारे तार कोनो त्रुटि हबे ना। आमाके की करते हबे बलुन।"

ललिता कहिल, "आमरा ब्राह्म बले हिन्दु अभिभावकेरा आमादेर विश्वास करे ना। ए विषये आपनाके चेष्टा देखते हबे।"

विनय उद्दीप्त हइया उठिया कहिल, "आपनि किच्छु भय करबेन ना—आमि पारब।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ता, ओ खुब पारबे। लोकके कथाय भुलिये वश करते ओर जुड़ि केउ नेइ।"

ललिता कहिल, "विद्यालयेर काजकर्म ये-नियमे येरकम करे चालानो उचित—समय भाग करा, क्लास भाग करा, बइ ठिक करे देओया, ए-समस्तइ आपनाके करे दिते हबे।"

ए काजटाओ विनयेर पक्षे शक्त नहे; किन्तु ताहार धाँधा लागिया गेल, वरदासुन्दरी ताँहार मेयेदेर सहित ताहाके मिशिते निषेध करिया दियाछेन एवं समाजे ताहादेर विरुद्धे आन्दोलन चलितेछे, ए कथाटा कि ललिता एकेबारेइ जाने ना। ए स्थले विनय यदि ललितार अनुरोध राखिते प्रतिश्रुत हय तबे सेटा अन्याय एवं ललितार पक्षे अनिष्टकर हइबे कि ना, एइ प्रश्न ताहाके आघात करिते लागिल। ए दिके ललिता यदि कोनो शुभकर्मे ताहार साहाय्य प्रार्थना करे तबे समस्त चेष्टा दिया सेइ अनुरोध पालन ना करिबे, एमन शक्ति विनयेर कोथाय।

ए पक्षे सुचरिताओ आश्चर्य हइया गेछे। से स्वप्नेओ मने करे नाइ, ललिता हठात् एमन करिया विनयके मेये-इस्कुलेर जन्य अनुरोध करिबे। एके तो विनयके लइया यथेष्ट जटिलतार सृष्टि हइयाछे, ताहार परे ए आबार की काण्ड। ललिता जानिया-शुनिया इच्छापूर्वक एइ व्यापारटि घटाइया तुलिते उद्यत हइयाछे देखिया सुचरिता भीत हइया उठिल। ललितार मने विद्रोह जागिया उठियाछे ताहा से बुझिल, किन्तु बेचारा विनयके एइ उत्पातेर मध्ये जड़ित करा कि ताहार उचित हइतेछे। सुचरिता उत्कण्ठित हइया बलिया उठिल, "ए-सम्बन्धे एकबार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाबार सङ्गे परामर्श करते हबे तो। मेये-इस्कुलेर इन्स्पेक्टारि पद पेलेन बले विनयबाबु एखनइ येन खुब बेशि आशान्वित हये ना ओठेन।"

सुचरिता कौशले प्रस्तावटाके ये बाधा दिल ताहा विनय बुझिते पारिल ; इहाते ताहार मने आरओ खटका बाजिल। बेश बोझा याइतेछे, ये-संकट उपस्थित हइयाछे ताहा सुचरिता जाने, सुतरां निश्चयइ ताहा ललितार अगोचर नहे, तबे ललिता केन––किछुइ स्पष्ट हइल ना।

ललिता कहिल, "बाबाके तो जिज्ञासा करतेइ हबे। विनयबाबु सम्मत आछेन जानते पारलेइ ताँके बलब। तिनि कखनोइ आपत्ति करबेन ना––ताँकेओ आमादेर एइ विद्यालयेर मध्ये थाकते हबे।"

आनन्दमयीर दिके फिरिया कहिल, "आपनाकेओ आमरा छाड़ब ना।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "आमि तोमादेर इस्कुलेर घर झाँट दिये आसते पारब। तार बेशि काज आमार द्वारा आर की हबे।"

विनय कहिल, "ता हलेइ यथेष्ट हबे, मा। विद्यालय एकेबारे निर्मल हये उठबे।"

सुचरिता ओ ललिता विदाय लइले पर विनय एकेबारे पदव्रजे इडेन-गार्डेन अभिमुखे चलिया गेल। महिम आनन्दमयीर काछे आसिया कहिलेन, "विनय तो देखलुम, अनेकटा राजि हये एसेछे ; एखन यत शीघ्र पारा याय काजटा सेरे फेलाइ भालो, की जानि आबार कखन मत बदलाय।"

आनन्दमयी विस्मित हइया कहिलेन, "से की कथा। विनय आबार राजि हल कखन। आमाके तो किछु बले नि।"

महिम कहिलेन, "आजइ आमार सङ्गे तार कथावार्ता हये गेछे। से बलले, गोरा एलेइ दिन स्थिर करा याबे।"

आनन्दमयी माथा नाड़िया कहिलेन, "महिम, आमि तोमाके बलछि, तुमि ठिक बोझ नि।"

महिम कहिलेन, "आमार बुद्धि यतइ मोटा होक, सादा कथा बोझबार आमार वयस हयेछे, ए निश्चय जेनो।"

आनन्दमयी कहिलेन, "बाछा, आमार उपर तुमि राग करबे आमि जानि, किन्तु आमि देखछि एइ निये एकटा गोल बाधबे।"

महिम मुख गम्भीर करिया कहिलेन, "गोल बाधालेइ गोल बाधे।"

आनन्दमयी कहिलेन, "महिम, आमाके तोमरा या बल समस्तइ आमि सह्य करब, किन्तु याते कोनो अशान्ति घटते पारे ताते आमि योग दिते पारि ने––से तोमादेरइ भालोर जन्ये।"

महिम निष्ठुरभावे कहिलेन, "आमादेर भालोर कथा भाबबार भार यदि आमादेरइ 'परे दाओ ता हले तोमाकेओ कोनो कथा शुनते हय ना आर आमादेरओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हयतो भालोइ हय। वरञ्च शशिमुखीर बियेटा हये गेले तार परे आमादेर भालोर चिन्ता कोरो। की बल।"

आनन्दमयी इहार परे कोनो उत्तर ना करिया एकटि दीर्घ-निश्वास फेलिलेन एवं महिम पकेटेर डिबा हइते एकटि पान बाहिर करिया चिबाइते चिबाइते चलिया गेलेन।

४६

ललिता परेशबाबुके आसिया कहिल, "आमरा ब्राह्म बले कोनो हिन्दु मेये आमादेर काछे पड़ते आसते चाय ना——ताइ मने करछि, हिन्दु समाजेर काउके एर मध्ये राखले काजेर सुविधा हबे। की बल, बाबा।"

परेशबाबु जिज्ञासा करिलेन, "हिन्दुसमाजेर काउके पाबे कोथाय।"

ललिता खुब कोमर बाँधिया आसियाछिल बटे, तबु विनयेर नाम करिते हठात् ताहार संकोच उपस्थित हइल ; जोर करिया संकोच काटाइया कहिल, "केन, ता कि पाओया याबे ना। एइ-ये विनयबाबु आछेन——किंवा——"

एइ किंवाटा नितान्तइ एकटा व्यर्थ प्रयोग, अव्यय पदेर अपव्यय मात्र। ओटा असमाप्तइ रहिया गेल।

परेश कहिलेन, "विनय! विनय राजि हबेन केन।"

ललितार अभिमाने आघात लागिल। विनयबाबु राजि हबेन ना! ललिता एटुकु बेश बुझियाछे, विनयबाबुके राजि करानो ललितार पक्षे असाध्य नहे।

ललिता कहिल, "ता, तिनि राजि हते पारेन।"

परेश एकटु स्थिर हइया बसिया थाकिया कहिलेन, "सब कथा विवेचना क़रे देखले कखनोइ तिनि राजि हबेन ना।"

ललितार कर्णमूल लाल हइया उठिल। से निजेर आँचले बाँधा चाबिर गोछा लइया नाड़िते लागिल।

ताँहार एइ निपीड़िता कन्यार मुखेर दिके ताकाइया परेशेर हृदय व्यथित हइया उठिल। किन्तु, कोनो सान्त्वनार वाक्य खुँजिया पाइलेन ना। किछुक्षण परे आस्ते आस्ते ललिता मुख तुलिया कहिल, "बाबा, ता हले आमादेर एइ इस्कुलटा कोनोमतेइ हते पारबे ना!"

परेश कहिलेन, "एखन हओयार अनेक बाधा देखते पाच्छि। चेष्टा करते गेलेइ विस्तर अप्रिय आलोचनाके जागिये तोला हबे।"

शेषकाले पानुबाबुरइ जित हइबे एवं अन्यायेर काछे निःशब्दे हार मानिते हइबे, ललितार पक्षे एमन दुःख आर किछुइ नाइ। ए-सम्बन्धे ताहार बाप छाड़ा आर-काहारओ शासन से एकमुहूर्ते वहन करिते पारित ना। से कोनो अप्रियताके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डराय ना, किन्तु अन्यायके केमन करिया सह्य करिबे। धीरे-धीरे परेशबाबुर काछ हइते से उठिया गेल।

निजेर घरे गिया देखिल, ताहार नामे डाके एकखाना चिठि आसियाछे। हातेर अक्षर देखिया बुझिल, ताहार बाल्यबन्धु शैलबालार लेखा। से विवाहित, ताहार स्वामीर सङ्गे बाँकिपुरे थाके।

चिठिर मध्ये छिल——

'तोमादेर सम्बन्धे नाना कथा शुनिया मन बड़ो खाराप छिल। अनेक दिन हइते भाबितेछि, चिठि लिखिया संवाद लइब——समय हइया उठे नाइ। किन्तु, परशु एकजनेर काछ हइते (ताहार नाम करिब ना) ये-खबर पाइलाम, शुनिया येन माथाय वज्राघात हइल। ए ये सम्भव हइते पारे, ताहा मनेओ करिते पारि ना। किन्तु, यिनि लिखियाछेन ताँहाके अविश्वास कराओ शक्त। कोनो हिन्दु युवकेर सङ्गे नाकि तोमार विवाहेर सम्भावना घटियाछे। ए कथा यदि सत्य हय' इत्यादि इत्यादि।

क्रोधे ललितार सर्वशरीर ज्वलिया उठिल। से एक मुहूर्त अपेक्षा करिते पारिल ना। तखनइ से चिठिर उत्तरे लिखिल——

'खबरटा सत्य कि ना इहा जानिबार जन्य तुमि ये आमाके प्रश्न जिज्ञासा करिया पाठाइयाछ, इहाइ आमार काछे आश्चर्य बोध हइतेछे। ब्राह्मसमाजेर लोक तोमाके ये-खबर दियाछे ताहार सत्यओ कि याचाइ करिते हइबे! एत अविश्वास? ताहार परे, कोनो हिन्दु युवकेर सङ्गे आमार विवाहेर सम्भावना घटियाछे संवाद पाइया तोमार माथाय वज्राघात हइयाछे, किन्तु आमि तोमाके निश्चय बलिते पारि, ब्राह्मसमाजे एमन सुविख्यात साधु युवक आछेन याँहार सङ्गे विवाहेर आशङ्का वज्राघातेर तुल्य निदारुण एवं आमि एमन दुइ-एकटि हिन्दु युवकके जानि याँहादेर सङ्गे विवाह ये-कोनो ब्राह्मकुमारीर पक्षे गौरवेर विषय। इहार बेशि आर-एकटि कथाओ आमि तोमाके बलिते इच्छा करि ना।'

ए दिके सेदिनकार मतो परेशबाबुर काज बन्ध हइया गेल। तिनि चुप करिया बसिया अनेकक्षण चिन्ता करिलेन। ताहार परे भाबिते भाबिते धीरे धीरे सुचरितार घरे गिया उपस्थित हइलेन। परेशेर चिन्तित मुख देखिया सुचरितार हृदय व्यथित हइया उठिल। की लइया ताँहार चिन्ता ताहाओ से जाने, एवं एइ चिन्ता लइयाइ सुचरिता कयदिन उद्‌विग्न हइया रहियाछे।

परेशबाबु सुचरिताके लइया निभृत घरे बसिलेन एवं कहिलेन, "मा, ललिता सम्बन्धे भावनार समय उपस्थित हयेछे।"

सुचरिता परेशबाबुर मुखे ताहार करुणापूर्ण दृष्टि राखिया कहिल, "जानि, बाबा।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेशबाबु कहिलेन, "आमि सामाजिक निन्दार कथा भावछि ने। आमि भावछि—आच्छा, ललिता कि—"

परेशेर संकोच देखिया सुचरिता आपनिइ कथाटाके स्पष्ट करिया लइते चेष्टा करिल। से कहिल, "ललिता बराबर तार मनेर कथा आमार काछे खुले बले। किन्तु, किछुदिन थेके से आमार काछे आर तेमन क'रे धरा देय ना। आमि बेश बुझते पारछि—"

परेश माझखान हइते कहिलेन, "ललितार मने एमन कोनो भावेर उदय हयेछे येटा से निजेर काछेओ स्वीकार करते चाच्छे ना। आमि भेबे पाच्छि ने, की करले ओर ठिक—तुमि कि बल, विनयके आमादेर परिवारे यातायात करते दिये ललितार कोनो अनिष्ट करा हयेछे।"

सुचरिता कहिल, "बाबा, तुमि तो जान, विनयबाबुर मध्ये कोनो दोष नेइ—ताँर निर्मल स्वभाव, ताँर मतो स्वभावतइ भद्रलोक खुब अल्पइ देखा याय।"

परेशबाबु येन एकटा कोन् नूतन तत्त्व लाभ करिलेन। तिनि बलिया उठिलेन, "ठिक कथा बलेछ, राधे, ठिक कथा बलेछ। तिनि भालो लोक कि ना एइटेइ देखबार विषय ; अन्तर्यामी ईश्वरओ ताइ देखेन। विनय ये भालो लोक, सेखाने ये आमार भुल हय नि, सेजन्ये आमि ताँके बार बार प्रणाम करि।"

एकटा जाल काटिया गेल, परेशबाबु येन बाँचिया गेलेन। परेशबाबु ताँहार देवतार काछे अन्याय करेन नाइ। ईश्वर ये तुलादण्डे मानुषके ओजन करेन सेइ नित्यधर्मेर तुलाकेइ तिनि मानियाछेन ; ताहार मध्ये तिनि निजेर समाजेर तैरि कोनो कृत्रिम बाटखारा मिशान नाइ बलिया ताँहार मने आर-कोनो ग्लानि रहिल ना। एइ अत्यन्त सहज कथाटा एतक्षण तिनि ना बुझिया केन एमन पीड़ा अनुभव करितेछिलेन बलिया ताँहार आश्चर्य बोध हइल। सुचरितार माथाय हात राखिया बलिलेन, "तोमार काछे आमार आज एकटा शिक्षा हल, मा।"

सुचरिता तत्क्षणात् ताँहार पायेर धुला लइया कहिल, "ना ना, की बल, बाबा!"

परेशबाबु कहिलेन, "सम्प्रदाय एमन जिनिस ये, मानुष, ये मानुष एइ सकलेर चेये सहज कथाटाइ से एकेबारे भुलिये देय। मानुष ब्राह्म कि हिन्दु एइ समाज-गड़ा कथाटाकेइ विश्वसत्येर चेये बड़ो करे तुले एकटा पाक तैरि करे—एतक्षण मिथ्या ताते घुरे मरछिलुम।"

एकटु चुप करिया थाकिया परेश कहिलेन, "ललिता तार मेये-इस्कुलेर संकल्प किछुतेइ छाड़ते पारछे ना। से ए-सम्बन्धे विनयेर साहाय्य नेबार जन्ये आमार सम्मति चाय।"

सुचरिता कहिल, "ना, बाबा, एखन किछुदिन थाक्।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिताके तिनि निषेध करिबामात्र से ये ताहार क्षुब्ध हृदयेर समस्त वेग दमन करिया उठिया चलिया गेल, सेइ छबिटि परेशेर स्नेहपूर्ण हृदयके अत्यन्त क्लेश दितेछिल। तिनि जानितेन, ताँहार तेजस्विनी कन्यार प्रति समाज ये अन्याय उत्पीड़न करितेछे, सेइ अन्याये से तेमन कष्ट पाय नाइ, येमन एइ अन्यायेर विरुद्धे संग्राम करिते बाधा पाइया, विशेषत पितार निकट हइते बाधा पाइया। एइजन्य तिनि ताँहार निषेध उठाइया लइबार जन्य व्यग्र हइयाछिलेन। तिनि कहिलेन, "केन, राधे, एखन थाकबे केन।"

सुचरिता कहिल, "नइले मा भारि विरक्त हये उठवेन।"

परेश भाबिया देखिलेन, से-कथा ठिक।

सतीश घरे ढुकिया सुचरितार काने काने की कहिल। सुचरिता कहिल, "ना, भाइ बक्तियार, एखन ना। काल हबे।"

सतीश विमर्ष हइया कहिल, "काल ये आमार इस्कुल आछे।"

परेश स्नेहहास्य हासिया कहिलेन, "की, सतीश, की चाइ।"

सुचरिता कहिल, "ओर एकटा—"

सतीश व्यस्त हइया उठिया सुचरितार मुखे हात चापा दिया कहिल, "ना ना, बोलो ना, बोलो ना।"

परेशबाबु कहिलेन, "यदि गोपन कथा हय ता हले सुचरिता बलबे केन।"

सुचरिता कहिल, "ना, बाबा, निश्चय ओर भारि इच्छे याते एइ गोपन कथाटा तोमार काने ओठे।"

सतीश उच्चैःस्वरे बलिया उठिल, "कक्खनो ना, निश्चय ना।"

बलिया से दौड़ दिल।

विनय ताहार ये-रचनार एत प्रशंसा करियाछिल, सेइ रचनाटा सुचरिताके देखाइबार कथा छिल। बला बाहुल्य, परेशेर सामने सेइ कथाटा सुचरितार काने काने स्मरण कराइया दिबार उद्देश्यटा ये की ताहा सुचरिता ठिक ठाओराइया-छिल। एमन-सकल गभीर मनेर अभिप्राय संसारे ये एत सहजे धरा पड़िया याय, बेचारा सतीशेर ताहा जाना छिल ना।

४७

चारि दिन परे एकखानि चिठि हाते करिया हारानबाबु वरदासुन्दरीर काछे आसिया उपस्थित हइलेन। आजकाल परेशबाबुर आशा तिनि एकेबारेइ परित्याग करियाछेन।

हारानबाबु चिठिखानि वरदासुन्दरीर हाते दिया कहिलेन, "आमि प्रथम हतेइ आपनादेर सावधान करे दिते अनेक चेष्टा करेछि। सेजन्ये आपनादेर अप्रियओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हयेछि। एखन एइ चिठि थेकेइ बुझते पारबेन, भितरे भितरे व्यापारटा कतदूर एगिये पड़ेछे।"

शैलबालाके ललिता ये-चिठि लिखियाछिल सेइ चिठिखानि वरदासुन्दरी पाठ करिलेन। कहिलेन, "केमन करे जानब बलुन। कखनो या मनेओ करते पारि नि ताइ घटछे। एर जन्ये किन्तु आमाके दोष देबेन ना, ता आमि बले राखछि। सुचरिताके ये आपनारा सकले मिले बड्डो भालो भालो करे एकेबारे तार माथा घुरिये दियेछेन—ब्राह्मसमाजे अमन मेये आर हय ना—एखन आपनादेर ओइ आदर्श ब्राह्म मेयेटिर कीर्ति सामलान। विनय-गौरके तो उनिइ ए बाड़िते एनेछेन। आमि तबु विनयके अनेकटा आमादेर पथेइ टेने आनछिलुम, तार परे कोथा थेके उनि ओंर एक मासिके एने आमादेरइ घरे ठाकुर-पुजो शुरु करे दिलेन, विनयकेओ एमनि बिगड़े दिलेन ये, से एखन आमाके देखलेइ पालाय। एखन ए-सब या-किछु घटछे आपनादेर ओइ सुचरिताइ एर गोड़ाय। ओ-मेये ये केमन मेये से आमि बराबरइ जानतुम; किन्तु कखनओ कोनो कथाटि कइ नि, बराबर ओके एमन करेइ मानुष करे एसेछि ये केउ टेर पाय नि, ओ आमार आपन मेये नय—आज तार बेश फल पाओया गेल। एखन आमाके ए चिठि मिथ्या देखाच्छेन—आपनारा या हय करुन।"

हारानबाबु ये एकसमय वरदासुन्दरीके भुल बुझियाछिलेन, सेकथा आज स्पष्ट स्वीकार करिया अत्यन्त उदारभावे अनुताप प्रकाश करिलेन। अवशेषे परेशबाबुके डाकिया आना हइल।

"एइ देखो" बलिया वरदासुन्दरी चिठिखाना ताँहार सम्मुखे टेबिलेर उपर फेलिया दिलेन। परेशबाबु दु-तिनबार चिठिखाना पड़िया कहिलेन, "ता, की हयेछे।"

वरदासुन्दरी उत्तेजित हइया कहिलेन, "की हयेछे! आर की हओया चाइ! आर बाकि रइलइ वा की! ठाकुरपुजो, जात मेने चला, सबइ हल; एखन केवल हिन्दुर घरे तोमार मेयेर बिये हलेइ हय। तार परे तुमि प्रायश्चित्त करे हिन्दुसमाजे ढुकबे—आमि किन्तु बले राखछि—"

परेश ईषत् हासिया कहिलेन, "तोमाके किछुइ बलते हबे ना। अन्तत एखनओ बलबार समय हय नि। कथा हच्छे एइ ये, तोमरा केन ठिक करे बसे आछ, हिन्दुर घरेइ ललितार विवाह स्थिर हये गेछे। ए चिठिते तो सेरकम किछुइ देखछि ने।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "की हले ये तुमि देखते पाओ से तो आज पर्यन्त बुझते पारलुम ना। समयमतो यदि देखते पेते ता हले आज एत काण्ड घटत ना। चिठिते मानुष एर चेये आर कत खुले लिखबे बलो तो।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारानबाबु कहिलेन, "आमार बोध हय, ललिताके एइ चिठिखानि देखिये तार अभिप्राय की ताकेइ जिज्ञासा करा उचित। आपनारा यदि अनुमति करेन ता हले आमिइ ताके जिज्ञासा करते पारि।"

एमन समय ललिता झड़ेर मतो घरेर मध्ये प्रवेश करिया कहिल, "बाबा, एइ देखो, ब्राह्मसमाज थेके आजकाल एइरकम अजाना चिठि आसछे।"

परेश चिठि पड़िया देखिलेन। विनयेर सङ्गे ललितार विवाह ये गोपने स्थिर हइया गियाछे, पत्रलेखक ताहा निश्चित धरिया लइया नानाप्रकार भर्त्सना ओ उपदेश द्वारा चिठि पूर्ण करियाछे। सेइ सङ्गे, विनयेर मतलब ये भालो नय, से ये दुइ दिन परेइ ताहार ब्राह्म स्त्रीके परित्याग करिया पुनराय हिन्दुघरे विवाह करिबे, ए-समस्त आलोचनाओ छिल।

परेशेर पड़ा हइले पर हारान चिठिखानि लइया पड़िलेन; कहिलेन, "ललिता, एइ चिठि पड़े तोमार राग हच्छे। किन्तु, एइरकम चिठि लेखबार हेतु कि तुमिइ घटाओ नि। तुमि निजेर हाते एइ चिठि केमन करे लिखले बलो देखि।"

ललिता मुहूर्तकाल स्तब्ध थाकिया कहिल, "शैलर सङ्गे आपनार बुझि एइ सम्बन्धे चिठिपत्र चलछे?"

हारान ताहार स्पष्ट उत्तर ना दिया कहिलेन, "ब्राह्मसमाजेर प्रति कर्तव्य स्मरण करे शैल तोमार एइ चिठि पाठिये दिते बाध्य हयेछे।"

ललिता शक्त हइया दाँड़ाइया कहिल, "एखन ब्राह्मसमाज की बलते चान बलुन।"

हारान कहिलेन, "विनयबाबु ओ तोमार सम्बन्धे समाजे एइ-ये जनरव राष्ट्र हयेछे ए आमि कोनोमतेइ विश्वास करते पारि ने, किन्तु तबु तोमार मुख थेके आमि एर स्पष्ट प्रतिवाद शुनते चाइ।"

ललितार दुइ चक्षु आगुनेर मतो ज्वलिते लागिल; से एकटा चौकिर पिठ कम्पित हस्ते चापिया धरिया कहिल, "केन कोनोमतेइ विश्वास करते पारेन ना।"

परेश ललितार पिठे हात बुलाइया कहिलेन, "ललिता, एखन तोमार मन स्थिर नेइ, ए कथा परे आमार सङ्गे हबे—एखन थाक्।"

हारान कहिलेन, "परेशबाबु, आपनि कथाटाके चापा देबार चेष्टा करबेन ना।"

ललिता पुनर्वार ज्वलिया उठिया कहिल, "चापा देबार चेष्टा बाबा करबेन! आपनादेर मतो बाबा सत्यके भय करेन ना—सत्यके बाबा ब्राह्मसमाजेर चेयेओ बड़ो बले जानेन। आमि आपनाके बलछि, विनयबाबुर सङ्गे विवाहके आमि किछुमात्र असम्भव वा अन्याय बले मने करि ने।"

हारान बलिया उठिलेन, "किन्तु, तिनि कि ब्राह्मधर्मे दीक्षा ग्रहण करबेन स्थिर हयेछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता कहिल, "किछुइ स्थिर हय नि, आर दीक्षा ग्रहण करतेइ हबे एमनि वा की कथा आछे।"

वरदासुन्दरी एतक्षण कोनो कथा बलेन नाइ। ताँर मने मने इच्छा छिल, आज येन हारानबाबुर जित हय एवं निजेर अपराध स्वीकार करिया परेशबाबुके अनुताप करिते हय ; तिनि आर थाकिते पारिलेन ना, बलिया उठिलेन, "ललिता, तुइ पागल हयेछिस ना कि। बलछिस की।"

ललिता कहिल, "ना, मा, पागलेर कथा नय—या बलछि विवेचना करेइ बलछि। आमाके ये एमन करे चार दिक थेके बाँधते आसबे, से आमि सह्य करते पारब ना—आमि हारानबाबुदेर एइ समाजेर थेके मुक्त हब।"

हारान कहिलेन, "उच्छृङ्खलताके तुमि मुक्ति बल !"

ललिता कहिल, "ना, नीचतार आक्रमण थेके, असत्येर दासत्व थेके मुक्तिकेइ आमि मुक्ति बलि। येखाने आमि कोनो अन्याय कोनो अधर्म देखछि ने, सेखाने ब्राह्मसमाज आमाके केन स्पर्श करबे, केन बाधा देबे।"

हारान स्पर्धा प्रकाशपूर्वक कहिलेन, "परेशबाबु, एइ देखुन। आमि जानतुम, शेषकाले एरकम एकटा काण्ड घटबे। आमि यतटा पेरेछि आपनादेर सावधान करबार चेष्टा करेछि, कोनो फल हय नि।"

ललिता कहिल, "देखुन, पानुबाबु, आपनाकेओ सावधान करे देवार एकटा विषय आछे—आपनार चेये याँरा सकल विषयेइ बड़ो ताँदेर सावधान करे देबार अहंकार आपनि मने राखबेन ना।"

एइ कथा बलियाइ ललिता घर हइते बाहिर हइया गेल।

वरदासुन्दरी कहिलेन, "ए-सब की काण्ड हच्छे ! एखन की करते हबे परामर्श करो।"

परेशबाबु कहिलेन, "या कर्तव्य ताइ पालन करते हबे। किन्तु, एरकम क'रे गोलमाल क'रे, परामर्श क'रे, कर्तव्य स्थिर हय ना। आमाके एकटु माप करते हबे। ए-सम्बन्धे आमाके एखन किछु बोलो ना। आमि एकटु एकला थाकते चाइ।"

४८

सुचरिता भाविते लागिल, ललिता ए की काण्ड बाधाइया बसिल। किछुक्षण चुप करिया थाकिया ललितार गला धरिया कहिल, "आमार किन्तु, भाइ, भय हच्छे।"

ललिता जिज्ञासा करिल, "किसेर भय।"

सुचरिता कहिल, "ब्राह्मसमाजे तो चारि दिके हुलस्थूल पड़े गेछे—किन्तु, शेषकाले विनयबाबु यदि राजि ना हन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता मुख निचु करिया दृढ़स्वरे कहिल, "तिनि राजि हबेनइ।"

सुचरिता कहिल, "तुइ तो जानिस, पानुबाबु माके ओइ आश्वास दिये गेछेन ये, विनय कखनोइ तादेर समाज परित्याग करे एइ बिये करते राजि हबे ना। ललिता, केन तुइ सब दिक ना भेबे पानुबाबुर काछे कथाटा अमन करे बले फेलिलि।"

ललिता कहिल, "बलेछि बले आमार एखनओ अनुताप हच्छे ना। पानुबाबु मने करेछिलेन, तिनि एवं ताँर समाज आमाके शिकारेर जन्तुर मतो ताड़ा करे एकेबारे अतल समुद्रेर धार पर्यन्त निये एसेछेन, एइखाने आमाके धरा दितेइ हबे। तिनि जानेन ना, एइ समुद्रे लाफिये पड़ते आमि भय करि ने, ताँर शिकारि कुकुरेर ताड़ाय ताँर पिञ्जरेर मध्ये ढुकतेइ आमार भय।"

सुचरिता कहिल, "एकबार बाबार सङ्गे परामर्श करे देखि।"

ललिता कहिल, "बाबा कखनो शिकारेर दले योग देबेन ना, ए आमि तोमाके निश्चय बलछि। तिनि तो कोनोदिन आमादेर शिकले बाँधते चान नि। ताँर मतेर सङ्गे यखन कोनोदिन आमादेर किछु अनैक्य घटेछे, तिनि कि कखनओ एकटुओ राग प्रकाश करेछेन। ब्राह्मसमाजेर नामे ताड़ा दिये आमादेर मुख बन्ध करे दिते चेष्टा करेछेन? एइ निये मा कतदिन विरक्त हयेछेन, किन्तु बाबार केवल एकटिमात्र एइ भय छिल, पाछे आमरा निजे चिन्ता करवार साहस हाराइ। एमन करे यखन तिनि आमादेर मानुष करे तुलेछेन तखन शेषकाले कि तिनि पानुबाबुर मतो समाजेर जेल-दारोगार हाते आमाके समर्पण करे देबेन।"

सुचरिता कहिल, "आच्छा बेश, बाबा येन कोनो बाधा दिलेन ना, तार परे की करा याबे बल्।"

ललिता कहिल, "तोमरा यदि किछु ना कर ता हले आमि निजे——"

सुचरिता व्यस्त हइया उठिया कहिल, "ना ना, तोके किछु करते हबे ना, भाइ। आमि एकटा उपाय करछि।"

सुचरिता परेशबाबुर काछे याइबार जन्य प्रस्तुत हइतेछिल, एमन-समय परेशबाबु स्वयं सन्ध्याकाले ताहार काछे आसिया उपस्थित हइलेन। एइ समये परेशबाबु प्रतिदिन ताँहार बाड़िर बागाने एकला माथा निचु करिया आपन मने भाबिते भाबिते पायचारि करिया थाकेन; सन्ध्यार पवित्र अन्धकारटिके धीरे धीरे मनेर उपर बुलाइया कर्मेर दिनेर समस्त दागगुलिके येन मुछिया फेलेन एवं अन्तरेर मध्ये निर्मल शान्ति सञ्चय करिया रात्रिर विश्रामेर जन्य प्रस्तुत हइते थाकेन—आज परेशबाबु सेइ ताँहार सन्ध्यार निभृत ध्यानेर शान्तिसम्भोग परित्याग करिया यखन चिन्तितमुखे सुचरितार घरे आसिया दाँड़ाइलेन तखन, ये-शिशुर खेला करा उचित छिल सेइ शिशु पीड़ित हइया चुप करिया पड़िया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थाकिले मार मने येमन व्यथा बाजे, सुचरितार स्नेहपूर्ण चित्त तेमनि व्यथित हइया उठिल।

परेशबाबु मृदुस्वरे कहिलेन, "राधे, सब शुनेछ तो ?"

सुचरिता कहिल, "हाँ, बाबा, सब शुनेछि, किन्तु तुमि अत भावछ केन।"

परेशबाबु कहिलेन, "आमि तो आर-किछु भाबि ने, आमार भावना एइ ये, ललिता ये-झड़टा जागिये तुलेछे तार समस्त आघात सइते-पारबे तो ? उत्तेजनार मुखे अनेक समय आमादेर मने अन्ध स्पर्धा आसे, किन्तु एके एके यखन तार फल फलते आरम्भ हय तखन तार भार वहन करबार शक्ति चले याय। ललिता कि समस्त फलाफलेर कथा बेश भालो क'रे चिन्ता क'रे येटा तार पक्षे श्रेय सेइटेइ स्थिर करेछे।"

सुचरिता कहिल, "समाजेर तरफ थेके कोनो उत्पीड़न ललिताके कोनोदिन परास्त करते पारबे ना, ए आमि तोमाके जोर करे बलते पारि।"

परेश कहिलेन, "आमि एइ कथाटा खुब निश्चय करे जानते चाइ ये, ललिता केवल रागेर माथाय विद्रोह करे औद्धत्य प्रकाश करछे ना।"

सुचरिता मुख निचु करिया कहिल, "ना, बाबा, ता यदि हत ता हले आमि तार कथाय एकेबारे कानइ दितुम ना। ओर मनेर मध्ये ये-कथाटा गभीर भावे छिल सेइटेइ हठात् घा खेये एकेबारे बेरिये एसेछे। एखन एके कोनोरकमे चापाचुपि दिते गेले ललितार मतो मेयेर पक्षे भालो हबे ना। बाबा, विनयबाबु लोक तो खुब भालो।"

परेशबाबु कहिलेन, "आच्छा, विनय कि ब्राह्मसमाजे आसते राजि हबे।"

सुचरिता कहिल, "ता ठिक बलते पारि ने। आच्छा, बाबा, एकबार गौरबाबुर मार काछे याब ?"

परेशबाबु कहिलेन, "आमिओ भावछिलुम, तुमि गेले भालो हय।"

४९

आनन्दमयीर बाड़ि हइते रोज सकालवेलाय विनय एकबार बासाय आसित। आज सकाले आसिया से एकखानि चिठि पाइल। चिठिते काहारओ नाम नाइ। ललिताके विवाह करिले विनयेर पक्षे कोनोमतेइ ताहा सुखेर हइते पारे ना एवं ललितार पक्षे ताहा अमङ्गलेर कारण हइबे, एइ कथा लइया चिठिते दीर्घ उपदेश आछे एवं सकलेर शेषे आछे ये, ए-सत्त्वेओ यदि विनय ललिताके विवाह करिते निवृत्त ना हय तबे एकटा कथा से येन चिन्ता करिया देखे, ललितार फुस्फुस् दुर्बल, डाक्तारेरा यक्ष्मार सम्भावना आशङ्का करेन।

विनय एरूप चिठि पाइया हतबद्धि हइया गेल। एमनतरो कथार ये मिथ्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करियाओ सृष्टि हइते पारे, विनय कखनओ ताहा मने करे नाइ। कारण, समाजेर बाधाय ललितार सङ्गे विनयेर विवाह ये कोनोक्रमे सम्भव हइते पारे ना, इहा तो काहारओ काछे अगोचर नाइ। एइजन्यइ तो ललितार प्रति ताहार हृदयेर अनुरागके एतदिन से अपराध बलियाइ गण्य करिया आसितेछिल। किन्तु, एमनतरो चिठि यखन ताहार हाते आसिया पौंछियाछे तखन समाजेर मध्ये ए सम्बन्धे निःसन्देह विस्तर आलोचना हइया गियाछे। इहाते समाजेर लोकेर काछे ललिता ये किरूप अपमानित हइतेछे ताहा चिन्ता करिया ताहार मन अत्यन्त क्षुब्ध हइया उठिल। ताहार नामेर सङ्गे ललितार नाम जड़ित हइया प्रकाश्य-भावे लोकेर मुखे सञ्चरण करितेछे, इहाते से अत्यन्त लज्जित ओ संकुचित हइया उठिल। ताहार केवलइ मने हइते लागिल, ताहार सङ्गे परिचयके ललिता अभिशाप ओ धिक्कार दितेछे। मने हइते लागिल, ताहार दृष्टिमात्रओ ललिता आर कोनोदिन सह्य करिते पारिबे ना।

हाय रे, मानवहृदय! एइ अत्यन्त धिक्कारेर मध्येओ विनयेर चित्तेर मध्ये एकटि निविड़ गभीर सूक्ष्म ओ तीव्र आनन्द एक प्रान्त हइते आर-एक प्रान्ते सञ्चरण करितेछिल, ताहाके थामाइया राखा याइतेछिल ना, समस्त लज्जा समस्त अपमानके से अस्वीकार करितेछिल। सेइटेकेइ कोनोमते किछुमात्र प्रश्रय ना दिबार जन्य ताहार बारान्दाय से द्रुतवेगे पायचारि करिया बेड़ाइते लागिल—किन्तु सकालवेलार आलोकेर भितर दिया एकटा मदिरता ताहार मने सञ्चारित हइल; रास्ता दिया फेरिओयाला हाँकिया याइतेछिल, ताहार सेइ हाँकेर सुरओ ताहार हृदयेर मध्ये एकटा गभीर चाञ्चल्य जागाइल। बाहिरेर लोकनिन्दाइ येन ललिताके वन्यार मतो भासाइया विनयेर हृदयेर डाङार उपर तुलिया दिया गेल; ललितार एइ समाज हइते भासिया आसार मूर्तिटिके से आर ठेकाइया राखिते पारिल ना। ताहार मन केवलइ बलिते लागिल, 'ललिता आमार, एकलाइ आमार।' अन्य कोनो दिन ताहार मन दुर्दाम हइया एत जोरे ए कथा बलिते साहस करे नाइ; आज बाहिरे यखन एइ ध्वनिटा एमन करिया हठात् उठिल तखन विनय कोनोमतेइ निजेर मनके आर 'चुप चुप' बलिया थामाइया राखिते पारिल ना।

विनय एमनि चञ्चल हइया यखन बारान्दाय बेड़ाइतेछे एमन समय देखिल, हारानबाबु रास्ता दिया आसितेछेन। तत्क्षणात् बुझिते पारिल, तिनि ताहारइ काछे आसितेछेन, एवं अनामा चिठिटार पश्चाते ये एकटा बृहत् आलोड़न आछे ताहाओ निश्चय जानिल।

अन्य दिनेर मतो विनय ताहार स्वभावसिद्ध प्रगल्भता प्रकाश करिल ना; से हारानबाबके चौकिते बसाइया नीरवे ताँहार कथार प्रतीक्षा करिया रहिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारानबाबु कहिलेन, "विनयबाबु, आपनि तो हिन्दु ?"

विनय कहिल, "हाँ, हिन्दु बइ कि।"

हारानबाबु कहिलेन, "आमार ए प्रश्ने राग करबेन ना। अनेक समय आमरा चारि दिकेर अवस्था विवेचना ना करे अन्ध हये चलि—ताते संसारे दुःखेर सृष्टि करे। एमन स्थले, आमरा की, आमादेर सीमा कोथाय, आमादेर आचरणेर फल कतदूर पर्यन्त पौंछय, ए-समस्त प्रश्न यदि केउ उत्थापन करे तबे ता अप्रिय हलेओ ताके बन्धु बले मने जानबेन।"

विनय हासिबार चेष्टा करिया कहिल, "वृथा आपनि एतटा भूमिका करछेन। अप्रिय प्रश्ने क्षिप्त हये उठे आमि ये कोनोप्रकार अत्याचार करब, आमार सेरकम स्वभाव नय। आपनि निरापदे आमाके सकल प्रकार प्रश्न करते पारेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "आमि आपनार प्रति इच्छाकृत कोनो अपराधेर दोषा-रोप करते चाइ ने। किन्तु, विवेचनार त्रुटिर फलओ विषमय हये उठते पारे, ए कथा आपनाके बला बाहुल्य।"

विनय मने मने विरक्त हइया उठिया कहिल, "या बाहुल्य ता नाइ बललेन—आसल कथाटा बलुन।"

हारानबाबु कहिलेन, "आपनि यखन हिन्दुसमाजे आछेन एवं समाज छाड़ाओ यखन आपनार पक्षे असम्भव तखन परेशबाबुर परिवारे कि आपनार एमनभावे गतिविधि करा उचित याते समाजे ताँर मेयेदेर सम्बन्धे कोनो कथा उठते पारे।"

विनय गम्भीर हइया किछुक्षण नीरवे थाकिया कहिल, "देखुन, पानुबाबु, समाजेर लोक किसेर थेके कोन् कथार सृष्टि करबे सेटा अनेकटा ताँदेर स्वभावेर उपर निर्भर करे, तार समस्त दायित्व आमि निते पारि ने। परेशबाबुर मेयेदेर सम्बन्धेओ यदि आपनादेर समाजे कोनोप्रकार आलोचना ओठा सम्भव हय, तबे ताँदेर ताते लज्जार विषय तेमन नेइ येमन आपनादेर समाजेर।"

हारानबाबु कहिलेन, "कोनो कुमारीके तार मायेर सङ्ग परित्याग करे यदि बाइरेर पुरुषेर सङ्गे एकला एक जाहाजे भ्रमण करते प्रश्रय देओया हय, तबे से-सम्बन्धे कोन् समाजेर आलोचना करबार अधिकार नेइ जिज्ञासा करि।"

विनय कहिल, "बाइरेर घटनाके भितरेर अपराधेर सङ्गे आपनाराओ यदि एक आसन दान करेन, तबे हिन्दुसमाज त्याग करे आपनादेर ब्राह्मसमाजे आसबार की दरकार छिल। याइ होक, पानुबाबु, ए- समस्त कथा निये तर्क करबार कोनो दरकार देखि ने। आमार पक्षे कर्तव्य की से आमि चिन्ता करे स्थिर करब, आपनि ए-सम्बन्धे आमाके कोनो साहाय्य करते पारबेन ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "आमि आपनाके बेशि किछु बलते चाइ ने, आमार केवल शेष बलबार कथाटि एइ, आपनाके एखन दूरे थाकते हबे। नइले अत्यन्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्याय हबे। आपनारा परेशबाबुर परिवारेर मध्ये प्रवेश करे केवल एकटा अशान्तिर सृष्टि करे तुलछेन, ताँदेर मध्ये की अनिष्ट विस्तार करेछेन ता आपनारा जानेन ना।"

हारानबाबु चलिया गेले विनयेर मनेर मध्ये एकटा वेदना शूलेर मतो बिँधिते लागिल। सरलहृदय उदारचित्त परेशबाबु कत समादरेर सहित ताहादेर दुइ जनके ताँहार घरेर मध्ये डाकिया लइयाछिलेन—विनय हयतो ना बुझिया एइ ब्राह्मपरिवारेर मध्ये आपन अधिकारेर सीमा पदे पदे लङ्घन करितेछिल, तबु ताँहार स्नेह ओ श्रद्धा हइते से एकदिनओ वञ्चित हय नाइ; एइ परिवारेर मध्ये विनयेर प्रकृति एमन एकटि गभीरतर आश्रय लाभ करियाछे येमनटि से आर-कोथाओ पाय नाइ, उँहादेर सङ्गे परिचयेर पर विनय येन निजेर एकटि विशेष सत्ताके उपलब्धि करियाछे; एइ ये एत आदर, एत आनन्द, एमन आश्रय येखाने पाइयाछे सेइ परिवारे विनयेर स्मृति चिरदिन काँटार मतो बिँधिया थाकिबे! परेशबाबुर मेयेदेर उपर से एकटा अपमानेर कालिमा आनिया दिल! ललितार समस्त भविष्यत् जीवनेर उपरे से एतबड़ो एकटा लाञ्छना आँकिया दिल! इहार की प्रतीकार हइते पारे। हाय रे हाय, समाज वलिया जिनिसटा सत्येर मध्ये कतबड़ो एकटा विरोध जागाइया तुलियाछे! ललितार सङ्गे विनयेर मिलनेर कोनो सत्य बाधा नाइ; ललितार सुख ओ मङ्गलेर जन्य विनय निजेर समस्त जीवन उत्सर्ग करिया दिते किरूप प्रस्तुत आछे ताहा सेइ देवताइ जानेन यिनि उभयेर अन्तर्यामी—तिनिइ तो विनयके प्रेमेर आकर्षणे ललितार एत निकटे आनिया दियाछेन, ताँहार शाश्वत धर्मविधिते तो कोथाओ बाधे नाइ। तबे ब्राह्मसमाजेर ये-देवताके पानुबाबुर मतो लोके पूजा करेन तिनि कि आर-एकजन केह। तिनि कि मानवचित्तेर अन्तरतर विधाता नन। ललितार सङ्गे ताहार मिलनेर माझ-खाने यदि कोनो निषेध कराल दन्त मेलिया दाँड़ाइया थाके, यदि से केवल समाजकेइ माने आर सर्वमानवेर प्रभुर दोहाइ ना माने, तबे ताहाइ कि पाप निषेध नहे। किन्तु हाय, ए निषेध हयतो ललितार काछेओ बलवान। ता छाड़ा, ललिता हयतो विनयके—कत संशय आछे। कोथाय इहार मीमांसा पाइबे।

५०

यखन विनयेर बासाय हारानबाबुर आविर्भाव हइयाछे सेइ समयेइ अविनाश आनन्दमयीर काछे गिया खबर दियाछे ये, विनयेर सङ्गे ललितार विवाह स्थिर हइया गेछे।

आनन्दमयी कहिलेन, "ए कथा कखनोइ सत्य नय।"

अविनाश कहिल, "केन सत्य नय। विनयेर पक्षे ए कि असम्भव।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "से आमि जानि ने, किन्तु एतबड़ो कथाटा विनय कखनोइ आमार काछे लुकिये राखत ना।"

अविनाश ये ब्राह्मसमाजेर लोकेर काछेइ एइ संवाद शुनियाछे, एवं इहा सम्पूर्ण विश्वासयोग्य, ताहा से बार बार करिया बलिल। विनयेर ये एइरूप शोचनीय परिणाम घटिबेइ अविनाश ताहा बहुपूर्वेइ जानित, एमन-कि गोराके ए-सम्बन्धे से सतर्क करिया दियाछिल—इहाइ आनन्दमयीर निकट घोषणा करिया से महा आनन्दे नीचेर तलाय महिमेर काछे एइ संवाद दिया गेल।

आज विनय यखन आसिल ताहार मुख देखियाइ आनन्दमयी बुझिलेन ये, ताहार अन्तःकरणेर मध्ये विशेष एकटा क्षोभ जन्मियाछे। ताहाके आहार कराइया निजेर घरेर मध्ये डाकिया आनिया बसाइलेन। जिज्ञासा करिलेन, "विनय, की हयेछे तोर बल तो।"

विनय कहिल, "मा, एइ चिठिखाना पड़े देखो।"

आनन्दमयीर चिठि पड़ा हइले विनय कहिल, "आज सकाले पानुबाबु आमार बासाय एसेछिलेन—तिनि आमाके खुब भर्त्सना करे गेलेन।"

आनन्दमयी जिज्ञासा करिलेन, "केन।"

विनय कहिल, "तिनि बलेन, आमार आचरणे ताँदेर समाजे परेशबाबुर मेयेर सम्बन्धे निन्दार कारण घटेछे।"

आनन्दमयी कहिलेन, "लोके बलछे, ललितार सङ्गे तोर विवाह स्थिर हये गेछे—एते आमि तो निन्दार कोनो विषय देखछि ने।"

विनय कहिल, "विवाह हबार जो थाकले निन्दार कोनो विषय थाकत ना। किन्तु, येखाने तार कोनो सम्भावना नेइ सेखाने एरकम गुजब रटानो कत बड़ो अन्याय। विशेषत ललितार सम्बन्धे एरकम रटना करा अत्यन्त कापुरुषता।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तोर यदि किछुमात्र पौरुष थाके, विनु, ता हले एइ कापुरुषतार हात थेके तुइ अनायासेइ ललिताके रक्षा करते पारिस।"

विनय विस्मित हइया कहिल, "केमन क'रे, मा!"

आनन्दमयी कहिलेन, "केमन क'रे की। ललिताके बिये क'रे।"

विनय कहिल, "की बल, मा। तोमार विनयके तुमि की ये मने कर ता तो बुझते पारि ने। तुमि भावछ, विनय यदि एकबार केवल बले ये 'आमि बिये करब' ता हले जगते तार उपरे आर कोनो कथाइ उठते पारे ना; केवल आमार इशारार अपेक्षातेइ समस्त ताकिये बसे आछे।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तोर तो अतशत कथा भाबबार दरकार देखि ने। तोर तरफ थेके तुइ येटुकु करते पारिस सेइटुकु करलेइ चुके गेल। तुइ बलते पारिस 'आमि विवाह करते प्रस्तुत आछि'।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "आमि एमन असंगत कथा बलले सेटा ललितार पक्षे कि अपमानकर हबे ना।"

आनन्दमयी कहिलेन, "असंगत केन बलछिस। तोदेर विवाहेर गुजब यखन उठे पड़ेछे तखन निश्चयइ सेटा संगत बलेइ उठेछे। आमि तोके बलछि, तोर किछु संकोच करते हबे ना।"

विनय कहिल, "किन्तु मा, गोरार कथाओ तो भावते हय।"

आनन्दमयी दृढ़स्वरे कहिलेन, "ना, बाछा, एर मध्ये गोरार कथा भाववार कथाइ नय। आमि जानि, से राग करबे; आमि चाइ ने ये, से तोर उपरे राग करे। किन्तु, की करबि। ललितार प्रति यदि तोर श्रद्धा थाके तबे तार सम्बन्धे चिरकाल समाजे एकटा अपमान थेके याबे, ए तो तुइ घटते दिते पारिस ने।"

किन्तु, ए ये बड़ो शक्त कथा। कारादण्डे दण्डित ये-गोरार प्रति विनयेर प्रेम आरओ येन द्विगुण वेगे धावित हइतेछे ताहार जन्य से एतबड़ो एकटा आघात प्रस्तुत करिया राखिते पारे कि। ता छाड़ा, संस्कार! समाजके बुद्धिते लङ्घन करा सहज, किन्तु काजे लङ्घन करिबार बेलाय छोटोबड़ो कत जायगाय टान पड़े। एकटा अपरिचितेर आतङ्क, एकटा अनभ्यस्तेर प्रत्याख्यान, बिना युक्तिते केवलइ पिछनेर दिके ठेलिते थाके।

विनय कहिल, "मा, तोमाके यतइ देखछि आश्चर्य हये याच्छि। तोमार मन एकेबारे एमन साफ हल की करे। तोमाके कि पाये चलते हय ना। ईश्वर तोमाके कि पाखा दियेछेन। तोमार कोनो जायगाय किछु ठेके ना।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "ईश्वर आमार ठेकाबार मतो किछुइ राखेन नि। समस्त एकेबारे परिष्कार करे दियेछेन।"

विनय कहिल, "किन्तु, मा, आमि मुखे याइ बलि मनटाते ठेके ये। एत ये बुझिसुझि, पड़िशुनि, तर्क करि, हठात् देखते पाइ, मनटा नितान्त मूर्खइ रये गेछे।"

एमन समय महिम घरे ढुकियाइ विनयके ललिता सम्बन्धे एमन नितान्त रूढ़रकम करिया प्रश्न करिलेन ये ताहार हृदय संकोचे पीड़ित हइया उठिल। से आत्मदमन करिया मुख निचु करिया निरुत्तरे बसिया रहिल। तखन महिम सकल पक्षेर प्रति तीक्ष्ण खोंचा दिया नितान्त अपमानकर कथा कतकगुला बलिया चलिया गेलेन। तिनि बुझाइया गेलेन, 'विनयके एइरूप फाँदे फेलिया सर्वनाश करिबार जन्यइ परेशबाबुर घरे एकटा निर्लज्ज आयोजन चलितेछिल, विनय निर्बोध बलियाइ एमन फाँदे से आटका पड़ियाछे—भोलाक् देखि ओरा गोराके, तबे तो बुझि। से बड़ो शक्त जायगा।'

विनय चारि दिकेइ एइरूप लाञ्छनार मूर्ति देखिया स्तब्ध हइया बसिया रहिल। आनन्दमयी कहिलेन, "जानिस, विनय, तोर की कर्तव्य?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय मुख तुलिया ताँहार मुखेर दिके चाहिल। आनन्दमयी कहिलेन, "तोर उचित एकबार परेशबाबुर काछे याओया। ताँर सङ्गे कथा हलेइ समस्त परिष्कार हये याबे।"

५१

सुचरिता हठात् आनन्दमयीके देखिया आश्चर्य हइया कहिल, "आमि ये एखनइ आपनार ओखाने याब बले प्रस्तुत हच्छिलुम।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "तुमि ये प्रस्तुत हच्छिले ता आमि जानतुम ना, किन्तु येजन्ये प्रस्तुत हच्छिले सेइ खबरटा पेये आमि थाकते पारलुम ना—चले एलुम।"

आनन्दमयी खबर पाइयाछेन शुनिया सुचरिता आश्चर्य हइया गेल। आनन्दमयी कहिलेन, "मा, विनयके आमि आमार आपन छेलेर मतोइ जानि। सेइ विनयेर सम्पर्क थेकेइ, तोमादेर यखन नाओ जेनेछि तखनइ तोमादेर मने मने कत आशीर्वाद करेछि। तोमादेर प्रति कोनो अन्याय हच्छे, ए कथा शुने आमि स्थिर थाकते पारि कइ। आमार द्वारा तोमादेर कोनो उपकार हते पारबे कि ना ता तो जानि ने—किन्तु, मनटा केमन करे उठल, ताइ तोमादेर काछे छुटे एलुम। मा, विनयेर तरफे कि कोनो अन्याय घटेछे।"

सुचरिता कहिल, "किछुमात्र ना। ये-कथाटा निये खुब बेशि आन्दोलन हच्छे ललिताइ तार जन्ये दायी। ललिता ये हठात् काउके किछु ना बले स्टिमारे चले याबे, विनयबाबु ता कखनो कल्पनाओ करेन नि। लोके एमनभावे कथा कच्छे येन ओदेर दुजनेर मध्ये गोपने परामर्श हये गियेछिल। आबार ललिता एमनि तेजस्विनी मेये, से ये प्रतिवाद करबे किंवा कोनोरकमे बुझिये बलबे आसल घटनाटा की घटेछिल, से तार द्वारा कोनोमतेइ हबार जो नेइ।"

आनन्दमयी कहिलेन, "एर तो एकटा उपाय करते हच्छे। एइ-सब कथा शुने अवधि विनयेर मने तो किछुमात्र शान्ति नेइ; से तो निजेकेइ अपराधी बले ठाउरे बसे आछे।"

सुचरिता ताहार आरक्तिम मुख एकटुखानि निचु करिया बलिल, "आच्छा, आपनि कि मने करेन, विनयबाबु—"

आनन्दमयी संकोचपीड़िता सुचरिताके ताहार कथा शेष करिते ना दिया कहिलेन, "देखो, बाछा, आमि तोमाके बलछि, ललितार जन्ये विनयके या करते बलबे से ताइ करबे। विनयके छेलेवेला थेके देखे आसछि। ओ यदि एकबार आत्मसमर्पण करल, तबे ओ आर किछु हाते राखते पारे ना। सेइजन्ये आमाके बड़ो भये भयेइ थाकते हय, ओर पाछे एमन जायगाय मन याय येखान थेके ओर किछुइ फिरे पाबार कोनो आशा नेइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरितार मन हइते एकटा बोझा नामिया गेल। से कहिल, "ललितार सम्मतिर जन्ये आपनाके किछुइ भावते हबे ना, आमि तार मन जानि। किन्तु, विनयबाबु कि ताँर समाज परित्याग करते राजि हबेन।"

आनन्दमयी कहिलेन, "समाज हयतो ताके परित्याग करते पारे, किन्तु से आगेभागे गाये प'ड़े समाज परित्याग करते याबे केन, मा। तार कि कोनो प्रयोजन आछे।"

सुचरिता कहिल, "बलेन की, मा। विनयबाबु हिन्दुसमाजे थेके ब्राह्म-घरेर मेये बिये करबेन?"

आनन्दमयी कहिलेन, "से यदि करते राजि हय ताते तोमादेर आपत्ति की।"

सुचरितार अत्यन्त गोल ठेकिल ; से कहिल, "से केमन करे सम्भव हबे आमि तो बुझते पारछि ने।"

आनन्दमयी कहिलेन, "आमार काछे ए तो खुबइ सहज ठेकछे, मा। देखो, आमार बाड़िते ये-नियम चले से-नियमे आमि चलते पारि ने ; सेइजन्य आमाके कत लोके खृस्टान बले। कोनो क्रियाकर्मेर समये आमि इच्छा करेइ तफात हये थाकि। तुमि शुने हासबे, मा—गोरा आमार घरे जल खाय ना। किन्तु, ताइ बले आमि केन बलते याब, 'ए घर आमार घर नय, ए समाज आमार समाज नय।' आमि तो बलते पारिइ नें। समस्त गालमन्द माथाय करे नियेइ आमि एइ घर एइ समाज निये आछि, ताते तो आमार एमन किछु बाधछे ना। यदि एमन बाधे ये आर चले ना, तबे ईश्वर ये-पथ देखाबेन सेइ पथ धरब—किन्तु शेष पर्यन्तइ या आमार ताके आमारइ बलब, तारा यदि आमाके स्वीकार ना करे तबे से तारा बुझुक।"

सुचरितार काछे एखनो परिष्कार हइल ना ; से कहिल, "किन्तु, देखुन, ब्राह्मसमाजेर या मत विनयबाबुर यदि—"

आनन्दमयी कहिलेन, "तार मतओ तो सेइरकमइ। ब्राह्मसमाजेर मत तो एकटा सृष्टिछाड़ा मत नय। तोमादेर कागजे ये-सब उपदेश बेरोय, ओ तो आमाके प्रायइ सेगुलि पड़े शोनाय ; कोनोखाने तफात बुझते तो पारि ने।"

एमन समय 'सुचिदिदि' बलिया घरे प्रवेश करियाइ आनन्दमयीके देखिया ललिता लज्जाय लाल हइया उठिल। से सुचरितार मुख देखियाइ बुझिल, एतक्षण ताहारइ कथा हइतेछिल। घर हइते पालाइते पारिलेइ से येन रक्षा पाइत, किन्तु तखन आर पालाइबार उपाय छिल ना।

आनन्दमयी बलिया उठिलेन, "एसो, ललिता, मा, एसो।" बलिया ललितार हात धरिया ताहाके एकटु विशेष काछे टानिया लइया बसाइलेन, येन ललिता ताँहार एकटु विशेष आपन हइया उठियाछे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताँहार पूवकथार अनुवृत्तिस्वरूप आनन्दमयी सुचरिताके कहिलेन, "देखो, मा, भालोर सङ्गे मन्द मेलाइ सब चेये कठिन, किन्तु तबु पृथिवीते ताओ मिलछे, आर तातेओ सुखे दुःखे चले याच्छे—सब समये ताते मन्दइ हय ताओ नय, भालोओ हय। एओ यदि सम्भव हल तबे केवल मतेर एकटुखानि अमिल निये दुजन मानुष ये केन मिलते पारबे ना, आमि तो ता बुझतेइ पारि ने। मानुषेर आसल मिल कि मते।"

सुचरिता मुख निचु करिया बसिया रहिल। आनन्दमयी कहिलेन, "तोमादेर ब्राह्मसमाजओ कि मानुषेर सङ्गे मानुषके मिलते देबे ना। ईश्वर भितरे यादेर एक करेछेन तोमादेर समाज बाहिर थेके तादेर तफात करे राखबे? मा, ये-समाजे छोटो अमिलके माने ना, बड़ो मिले सबाइके मिलिये देय, से-समाज कि कोथाओ नेइ। ईश्वरेर सङ्गे मानुष कि केवल एमनि झगड़ा करेइ चलबे। समाज जिनिसटा कि केवल एइजन्येइ हयेछे।"

आनन्दमयी ये एइ विषयटि लइया एत आन्तरिक उत्साहेर सङ्गे आलोचनाय प्रवृत्त हइयाछेन से कि केवल ललितार सङ्गे विनयेर विवाहेर बाधा दूर करिबार जन्यइ। सुचरितार मने ए-सम्बन्धे एकटु द्विधार भाव अनुभव करिया सेइ द्विधाटुकु भाङिया दिबार जन्य ताँहार समस्त मन ये उद्यत हइया उठिल, इहार मध्ये आर-एकटा उद्देश्य कि छिल ना। सुचरिता यदि एमन संस्कारे जड़ित थाके तबे से ये कोनोमतेइ चलिबे ना। विनय ब्राह्म ना हइले विवाह घटिते पारिबे ना एइ यदि सिद्धान्त हय, तबे बड़ो दुःखेर समयेओ एइ कयदिन आनन्दमयी ये-आशा गड़िया तुलितेछिलेन से ये धूलिसात् हय। आजइ विनय ए प्रश्न ताँहाके जिज्ञासा करियाछिल ; बलियाछिल, "मा, ब्राह्मसमाजे कि नाम लेखाते हबे। सेओ स्वीकार करब?"

आनन्दमयी बलियाछिलेन, "ना ना, तार तो कोनो दरकार देखि ने।"

विनय बलिल, "यदि ताँरा पीड़ापीड़ि करेन।"

आनन्दमयी अनेकक्षण चुप करिया थाकिया कहियाछिलेन, "ना, एखाने पीड़ापीड़ि खाटबे ना।"

सुचरिता आनन्दमयीर आलोचनाय योग दिल ना ; से चुप करियाइ रहिल। तिनि बुझिलेन, सुचरितार मन एखनो साय दितेछे ना।

आनन्दमयी मने मने भाबिते लागिलेन, 'आमार मन ये समाजेर समस्त संस्कार काटाइयाछे से तो केवल ओइ गोरार स्नेहे। तबे कि गोरार 'परे सुचरितार मन पड़े नाइ। यदि पड़ित तबे तो एइ छोटो कथाटाइ एत बड़ो हइया उठित ना।'

आनन्दमयीर मन एकटुखानि विमर्ष हइया गेल। कारागार हइते गोरार बाहिर हइते आर दिन दुयेक बाकि आछे मात्र। तिनि मने भाबितेछिलेन, ताहार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्य एकटा सुखेर क्षेत्र प्रस्तुत हइया रहियाछे। एबारे येमन करिया होक गोराके बाँधितेइ हइबे, नहिले से ये कोथाय की विपदे पड़िबे ताहार ठिकाना नाइ। किन्तु, गोराके बाँधिया फेला तो ये-से मेयेर कर्म नय। ए दिके, कोनो हिन्दु-समाजेर मेयेर सङ्गे गोरार विबाह देओया अन्याय हइबे—सेइजन्य एतदिन नाना कन्यादायग्रस्तेर दरखास्त एकेबारे नामञ्जुर करियाछेन। गोरा बले 'आमि विवाह करिब ना'—तिनि मा हइया एकदिनेर जन्य प्रतिवाद करेन नाइ, इहाते लोके आश्चर्य हइया याइत। एबारे गोरार दुइ-एकटा लक्षण देखिया तिनि मने मने उत्फुल्ल हइयाछिलेन। सेइजन्यइ सुचरितार नीरव विरुद्धता ताँहाके अत्यन्त आघात करिल। किन्तु, तिनि सहजे हाल छाड़िबार पात्री नन; मने मने कहिलेन, 'आच्छा, देखा याक।'

५२

परेशबाबु कहिलेन, "विनय, तुमि ललिताके एकटा संकट थेके उद्धार करबार जन्ये एकटा दुःसाहसिक काज करबे, एरकम आमि इच्छा करि ने। समाजेर आलोचनार बेशि मूल्य नेइ; आज या निये गोलमाल चलछे दु दिन बादे ता कारओ मने थाकबे ना।"

ललितार प्रति कर्तव्य करिबार जन्यइ ये विनय कोमर बाँधिया आसियाछिल, से-विषये विनयेर मने सन्देहमात्र छिल ना। से जानित, एरूप विवाहे समाजे असुविधा घटिबे, एवं ताहार चेयेओ बेशि, गोरा बड़ोइ राग करिबे, किन्तु केवल कर्तव्यबुद्धिर दोहाइ दिया एइ सकल अप्रिय कल्पनाके से मन हइते खेदाइया राखियाछिल। एमन समय परेशबाबु हठात् यखन सेइ कर्तव्यबुद्धिके एकेबारे बरखास्त करिते चाहिलेन तखन विनय ताहाके छाड़िते चाहिल ना।

से कहिल, "आपनादेर स्नेहऋण आमि कोनोदिन शोध करते पारब ना। आमाके उपलक्ष्य करे आपनादेर परिवारे दु दिनेर जन्येओ यदि लेशमात्र अशान्ति घटे तबे सेओ आमार पक्षे असह्य।"

परेशबाबु कहिलेन, "विनय, तुमि आमार कथाटा ठिक बुझते पारछ ना। आमादेर प्रति तोमार ये-श्रद्धा आछे ताते आमि खुब खुशि हयेछि, किन्तु सेइ श्रद्धार कर्तव्य शोध करबार जन्येइ ये तुमि आमार कन्याके विवाह करते प्रस्तुत हयेछ एटा आमार कन्यार पक्षे श्रद्धेय नय। सेइजन्येइ आमि तोमाके बलछिलुम ये, संकट एमन गुरुतर नय ये एर जन्ये तोमार किछुमात्र त्याग स्वीकार करार प्रयोजन आछे।"

याक, विनय कर्तव्यदाय हइते मुक्ति पाइल। किन्तु, खाँचार द्वार खोला पाइले पाखि येमन झट्पट् करिया उड़िया याय तेमन करिया ताहार मन तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निष्कृतिर अवारित पथे दौड़ दिल ना। एखनओ से ये नड़िते चाय ना। कर्तव्य-बुद्धिके उपलक्ष करिया से ये अनेक दिनेर संयमेर बाँधके अनावश्यक बलिया भाङिया दिया बसिया आछे। मन आगे येखाने भये भये पा बाड़ाइत एवं अपराधीर मतो ससंकोचे फिरिया आसित सेखाने से ये घर जुड़िया बसिया लङ्काभाग करिया लइयाछे—एखन ताहाके फेरानो कठिन। ये-कर्तव्यबुद्धि ताहाके हाते धरिया ए जायगाटाते आनियाछे से यखन बलितेछे 'आर दरकार नाइ, चलो, भाइ, फिरि' मन बले, 'तोमार दरकार ना थाके तुमि फेरो, आमि एइखानेइ रहिया गेलाम।'

परेश यखन कोथाओ कोनो आड़ाल राखिते दिलेन ना, तखन विनय बलिया उठिल, "आमि ये कर्तव्येर अनुरोधे एकटा कष्ट स्वीकार करते याच्छि एमन कथा मनेओ करबेन ना। आपनारा यदि सम्मति देन तबे आमार पक्षे एमन सौभाग्य आर किछुइ हते पारे ना, केवल आमार भय हय पाछे—"

सत्यप्रिय परेशबाबु असंकोचे कहिलेन, "तुमि या भय करछ तार कोनो हेतु नेइ। आमि सुचरितार काछ थेके शुनेछि, ललितार मन तोमार प्रति विमुख नय।"

विनयेर मनेर मध्ये एकटा आनन्देर विद्युत खेलिया गेल। ललितार मनर एकटि गूढ़ कथा सुचरितार काछे व्यक्त हइयाछे। कबे व्यक्त हइल, केमन करिया व्यक्त हइल। दुइ सखीर काछे एइ ये आभासे अनुमाने एकटा जानाजानि हइयाछे, इहार सुतीव्र रहस्यमय सुख विनयके येन विद्ध करिते लागिल।

विनय बलिया उठिल, "आमाके यदि आपनारा योग्य मने करेन तबे तार चेये आनन्देर कथा आमार पक्षे आर किछुइ हते पारे ना।"

परेशबाबु कहिलेन, "तुमि एकटु अपेक्षा करो। आमि एकबार उपर थेके आसि।"

तिनि वरदासुन्दरीर मत लइते गेलेन। वरदासुन्दरी कहिलेन, "विनयके तो दीक्षा निते हबे।"

परेशबाबु कहिलेन, "ता निते हबे बइ कि।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "सेटा आगे ठिक करो। विनयके एइखानेइ डाकाओ-ना।"

विनय उपरे आसिले वरदासुन्दरी कहिलेन, "ता हले दीक्षार दिन तो एकटा ठिक करते हय।"

विनय कहिल, "दीक्षार कि दरकार आछे।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "दरकार नेइ? बल की। नइले ब्राह्मसमाजे तोमार विवाह हबे की करे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय चुप करिया माथा हेँट करिया बसिया रहिल। विनय ताँहार घरे विवाह करिते सम्मत हइयाछे शुनियाइ परेशबाबु धरिया लइयाछिलेन ये, से दीक्षा ग्रहण करिया ब्राह्मसमाजे प्रवेश करिबे।

विनय कहिल, "ब्राह्मसमाजेर धर्ममतेर प्रति आमार तो श्रद्धा आछे एवं ए-पर्यन्त आमार व्यवहारेओ तार अन्यथाचरण हय नि। तबे कि विशेषभावे दीक्षा नेओयार दरकार आछे।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "यदि मतेइ मिल थाके तबे दीक्षा नितेइ वा क्षति की।"

विनय कहिल, "आमि ये हिन्दुसमाजेर केउ नइ, ए कथा बला आमार पक्षे असम्भव।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "ता हले ए कथा निये आलोचना कराइ आपनार अन्याय हयेछे। आपनि कि आमादेर उपकार करार जन्ये दया करे आमार मेयेके बिये करते राजि हयेछेन।"

विनय अत्यन्त आघात पाइल; देखिल, ताहार प्रस्तावटा इँहादेर पक्षे सत्यइ अपमानजनक हइया उठियाछे।

किछुकाल हइल सिभिल विवाहेर आइन पास हइया गेछे। से-समये गोरा ओ विनय कागजे ओइ आइनेर विरुद्धे तीव्रभावे आलोचना करियाछे। आज सेइ सिभिल विवाह स्वीकार करिया विनय निजेके 'हिन्दु नय' बलिया घोषणा करिबे, एओ तो बड़ो शक्त कथा।

विनय हिन्दुसमाजे थाकिया ललिताके विवाह करिबे, ए प्रस्ताव परेश मनेर मध्ये ग्रहण करिते पारिलेन ना। दीर्घनिश्वास फेलिया विनय उठिया दाँड़ाइल एवं उभयके नमस्कार करिया कहिल, "आमाके माप करबेन, आमि आर अपराध बाड़ाब ना।"

बलिया घर हइते बाहिर हइया गेल। सिँड़िर काछे आसिया देखिल, सम्मुखेर बारान्दाय एक कोणे एकटि छोटो डेस्क लइया ललिता एकला बसिया चिठि लिखितेछे। पायेर शब्दे चोख तुलिया ललिता विनयेर मुखेर दिके चाहिल। सेइ ताहार क्षणकालेर दृष्टिटुकु विनयेर समस्त चित्तके एक मुहूर्ते मथित करिया तुलिल। विनयेर सङ्गे तो ललितार नूतन परिचय नय—कतबार से ताहार मुखेर दिके चोख तुलियाछे, किन्तु आज ताहार दृष्टिर मध्ये की रहस्य प्रकाश हइल। सुचरिता ललितार एकटि मनेर कथा जानियाछे—सेइ मनेर कथाटि आज ललितार कालो चोखेर पल्लवेर छायाय करुणाय भरिया उठिया एकखानि सजल स्निग्ध मेघेर मतो विनयेर चोखे देखा दिल। विनयेरओ एक मुहूर्तेर चाहनिते ताहार हृदयेर वेदना विद्युतेर मतो छुटिया गेल; से ललिताके नमस्कार करिया बिना सम्भाषणे सिँड़ि दिया नामिया चलिया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५३

गोरा जेल हइते बाहिर हइयाइ देखिल, परेशबाबु एवं विनय द्वारेर बाहिरे ताहार जन्य अपेक्षा करितेछेन।

एक मास किछु दीर्घकाल नहे। एक मासेर चेये बेशिदिन गोरा आत्मीय-बन्धुदेर निकट हइते विच्छिन्न हइया भ्रमण करियाछे, किन्तु जेलेर एक मास विच्छेद हइते बाहिर हइयाइ से यखन परेश ओ विनयके देखिल तखन ताहार मने हइल, येन पुरातन बान्धवदेर परिचित संसारे से पुनर्जन्म लाभ करिल। सेइ राजपथे खोला आकाशेर नीचे प्रभातेर आलोके परेशेर शान्त स्नेहपूर्ण स्वभाव-सौम्य मुख देखिया से येमन भक्तिर आनन्दे ताँहार पायेर धुला लइल, एमन आर-कोनोदिन करे नाइ। परेश ताहार सङ्गे कोलाकुलि करिलेन।

विनयेर हात धरिया गोरा हासिया कहिल, "विनय, इस्कुल थेके आरम्भ करे एकसङ्गेइ तोमार सङ्गे समस्त शिक्षा लाभ करे एसेछि, किन्तु एइ विद्यालयटाते तोमार चेये फाँकि दिये एगिये नियेछि।"

विनय हासितेओ पारिल ना, कोनो कथाओ बलिते पारिल ना। जेलखानार दुःखरहस्येर भितर दिया ताहार बन्धु ताहार काछे बन्धुर चेये आरओ येन अनेक बड़ो हइया बाहिर हइयाछे। गभीर सम्भ्रमे से चुप करिया रहिल। गोरा जिज्ञासा करिल, "मा केमन आछेन।"

विनय कहिल, "मा भालोइ आछेन।"

परेशबाबु कहिलेन, "एसो, बाबा, तोमार जन्ये गाड़ि अपेक्षा करे आछे।"

तिन जने यखन गाड़िते उठिते याइबेन एमन समय हाँपाइते हाँपाइते अविनाश आसिया उपस्थित। ताहार पिछने छेलेर दल।

अविनाशके देखियाइ गोरा ताड़ाताड़ि गाड़िते उठिया पड़िबार उपक्रम करिल; किन्तु तत्पूर्वेइ से आसिया पथरोध करिया कहिल, "गौरमोहनबाबु एकटु दाँड़ान।"

बलिते बलितेइ छेलेरा चीत्कार-शब्दे गान धरिल—

दुख-निशीथिनी हल आजि भोर।
काटिल काटिल अधीनता-डोर।

गोरार मुख लाल हइया उठिल; से ताहार वज्रस्वरे गर्जन करिया कहिल, "चुप करो।"

छेलेरा विस्मित हइया चुप करिल। गोरा कहिल, "अविनाश, ए-समस्त व्यापार की!"

अविनाश ताहार शालेर भितर हइते कलापाताय मोड़ा एकटा कुन्द-फुलेर मोटा गोड़ेमाला बाहिर करिल एवं ताहार अनुवर्ती एकटि अल्पवयस्क छेले एकखानि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोनार जले छापानो कागज हइते मिहिसुरे दम-देओया आगिनेर मतो द्रुतवेगे कारामुक्तिर अभिनन्दन पड़िया याइते आरम्भ करिल।

अविनाशेर माला सबले प्रत्याख्यान करिया गोरा अवरुद्ध क्रोधेर कण्ठे कहिल, "एखन बुझि तोमादेर अभिनय शुरु हल ? आज रास्तार धारे आमाके तोमादेर यात्रार दले सङ साजाबार जन्ये बुझि एइ एक मास धरे महला दिच्छिले ?"

अनेकदिन हइते अविनाश एइ प्ल्यान करियाछिल ; से भावियाछिल, भारि एकटा ताक लागाइया दिबे। आमरा ये-समयेर कथा बलितेछि तखन एरूप उपद्रव प्रचलित छिल ना। अविनाश विनयकेओ मन्त्रणार मध्ये लय नाइ ; एइ अपूर्व व्यापारेर समस्त बाहादुरि से निजेइ लइबे बलिया लुब्ध हइयाछिल। एमन-कि, खबरेर कागजेर जन्य इहार विवरण से निजेइ लिखिया ठिक करिया राखियाछिल ; फिरिया गियाइ ताहार दुइ-एकटा फाँक पूरण करिया पाठाइया दिबे स्थिर छिल।

गोरार तिरस्कारे अविनाश क्षुब्ध हइया कहिल, "आपनि अन्याय बलछेन। आपनि कारावासे ये-दुःख भोग करेछेन आमरा तार चेये किछुमात्र कम सह्य करि नि। एइ एकमास काल प्रतिमुहूर्त तुषानले आमादेर वक्षेर पञ्जर दग्ध हयेछे।"

गोरा कहिल, "भुल करछ, अविनाश—एकटु ताकिये देखलेइ देखते पाबे तुषगुलो एखनो समस्तइ गोटा आछे, वक्षेर पञ्जरेओ मारात्मक-रकम लोकसान हय नि।"

अविनाश दमिल ना ; कहिल, "राजपुरुष आपनार अपमान करेछे, किन्तु आज समस्त भारतभूमिर मुखपात्र हये आमरा एइ सम्मानेर माल्य—"

गोरा बलिया उठिल, "आर तो सह्य हय ना।"

अविनाश ओ ताहार दलके एकपाशे सराइया दिया गोरा कहिल, "परेशबाबु, गाड़िते उठुन।"

परेशबाबु गाड़िते उठिया हाँप छाड़िया बाँचिलेन। गोरा ओ विनय ताँहार अनुसरण करिल।

स्टिमारयोगे यात्रा करिया परदिन प्रातःकाले गोरा बाड़ि आसिया पौँछिल। देखिल बाहिर-बाड़िते ताहार दलेर विस्तर लोक जटला करियाछे। कोनोक्रमे ताहादेर हात हइते निष्कृति लइया गोरा अन्तःपुरे आनन्दमयीर काछे गिया उपस्थित हइल। तिनि आज सकाल-सकाल स्नान सारिया प्रस्तुत हइया बसिया छिलेन। गोरा आसिया ताँहार पाये पड़िया प्रणाम करितेइ आनन्दमयीर दुइ चक्षु दिया जल पड़िते लागिल। एतदिन ये-अश्रु तिनि अवरुद्ध राखिया-छिलेन आज आर कोनोमतेइ ताहा बाधा मानिल ना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृष्णदयाल गङ्गास्नान करिया फिरिया आसितेइ गोरा ताँहार सहित देखा करिल। दूर हइतेइ ताँहाके प्रणाम करिल, ताँहार पादस्पर्श करिल ना। कृष्णदयाल ससंकोचे दूरे आसने बसिलेन। गोरा कहिल, "बाबा, आमि एकटा प्रायश्चित्त करते चाइ।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "तार तो कोनो प्रयोजन देखि ने।"

गोरा कहिल, "जेले आमि आर-कोनो कष्ट गण्यइ करि नि, केवल निजेके अत्यन्त अशुचि बले मने हत ; सेइ ग्लानि एखनो आमार याय नि, प्रायश्चित्त करतेइ हबे।"

कृष्णदयाल व्यस्त हइया कहिलेन, "ना ना, तोमार अत बाड़ाबाड़ि करते हबे ना। आमि तो ओते मत दिते पारछि ने।"

गोरा कहिल, "आच्छा, आमि नाहय ए-सम्बन्धे पण्डितदेर मत नेब।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "कोनो पण्डितेर मत निते हबे ना। आमि तोमाके विधान दिच्छि, तोमार प्रायश्चित्तेर प्रयोजन नेइ।"

कृष्णदयालेर मतो अमन आचारशुचिवायुग्रस्त लोक गोरार पक्षे कोनोप्रकार नियम-संयम ये केन स्वीकार करिते चान ना—शुधु स्वीकार करेन ना ता नय, एकेबारे ताहार विरुद्धे जेद धरिया बसेन, आज पर्यन्त गोरा ताहार कोनो अर्थइ बुझिते पारे नाइ।

आनन्दमयी आज भोजनस्थले गोरार पाशेइ विनयेर पात करियाछिलेन। गोरा कहिल, "मा, विनयेर आसनटा एकटु तफात करे दाओ।"

आनन्दमयी आश्चर्य हइया कहिलेन, "केन, विनयेर अपराध की हल।"

गोरा कहिल, "विनयेर किछु हय नि, आमारइ हयेछे। आमि अशुद्ध आछि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ता होक, विनय अत शुद्धाशुद्ध माने ना।"

गोरा कहिल, "विनय माने ना, आमि मानि।"

आहारेर पर दुइ बन्धु यखन ताहादेर उपरेर तलेर निभृत घरे गिया बसिल तखन ताहारा केह कोनो कथा खुँजिया पाइल ना। एइ एक मासेर मध्ये विनयेर काछे ये एकटिमात्र कथा सकलेर चेये बड़ो हइया उठियाछे सेटा आज केमन करिया ये गोरार काछे पाड़िबे ताहा से भाबियाइ पाइतेछिल ना। परेशबाबुर बाड़िर लोकदेर सम्बन्धे गोरार मनेओ एकटा जिज्ञासा जागितेछिल, किन्तु से किछुइ बलिल ना। विनय कथाटा पाड़िबे बलिया से अपेक्षा करितेछिल। अवश्य बाड़िर मेयेरा सकले केमन आछेन से-कथा गोरा परेशबाबुके जिज्ञासा करियाछिल, किन्तु से तो केवल भद्रतार प्रश्न। ताहारा सकले भालो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आछे, एइटुकु खबरेर चेयेओ आरओ विस्तारित विवरण जानिबार जन्य ताहार मनेर मध्ये औत्सुक्य छिल।

एमन समय महिम घरेर मध्ये आसिया आसन ग्रहण करिया सिँड़ि उठार श्रमे किछुक्षण हाँपाइया लइलेन। ताहार परे कहिलेन, "विनय, एतदिन तो गोरार जन्ये अपेक्षा करा गेल। एखन आर तो कोनो कथा नेइ। एबार दिनक्षण ठिक करे फेला याक। की बल, गोरा। बुझेछ तो की कथाटा हच्छे?"

गोरा कोनो कथा ना बलिया एकटुखानि हासिल।

महिम कहिलेन, "हासछ ये? तुमि भावछ, आजओ दादा से-कथाटा भोले नि। किन्तु, कन्याटि तो स्वप्न नय—स्पष्टइ देखते पाच्छि, से एकटि सत्य पदार्थ—भोलबार जो की। हासि नय, गोरा, एबारे या हय ठिक करे फेलो।"

गोरा कहिल, "ठिक करबार कर्ता यिनि तिनि तो स्वयं उपस्थित रयेछेन।"

महिम कहिलेन, "सर्वनाश! ओँर निजेर ठिक नेइ, उनि ठिक करबेन! तुमि एसेछ, एखन तोमार उपरेइ समस्त भार।"

आज विनय गम्भीर हइया चुप करिया रहिल, ताहार स्वभावसिद्ध परिहासेर छलेओ से कोनो कथा बलिबार चेष्टा करिल ना।

गोरा बुझिल, एकटा गोल आछे; से कहिल, "निमन्त्रण करते याबार भार निते पारि, मिठाइ फरमाश देबारओ भार नेओया याय, परिवेषण करतेओ राजि आछि, किन्तु विनय ये तोमार मेयेके बिये करबेनइ से-भार आमि निते पारब ना। याँर निर्बन्धे संसारे एइ-समस्त काज हय ताँर सङ्गे आमार विशेष चेनाशोना नेइ; बराबर आमि ताँके दूरे थेकेइ नमस्कार करेछि।"

महिम कहिलेन, "तुमि दूरे थाकलेइ ये तिनिओ दूरे थाकेन ता मनेओ कोरो ना। हठात् कबे चमक लागाबेन किछु बला याय ना। तोमार सम्बन्धे ताँर मतलब की ता ठिक बलते पारछि ने, किन्तु एँर सम्बन्धे भारि गोल ठेकछे। एकला प्रजापति ठाकुरेर उपरेइ सब बरात ना दिये तुमि यदि निजेओ उद्योगी ना हओ ता हले हयतो अनुताप करते हबे, ए आमि बले राखछि।"

गोरा कहिल, "ये भार आमार नय से-भार ना निये अनुताप करते राजि आछि, किन्तु निये अनुताप करा आरओ शक्त। सेइटे थेके रक्षा पेते चाइ।"

महिम कहिलेन, "ब्राह्मणेर छेले जात कुल मान समस्त खोयाबे, आर तुमि बसे थेके देखबे? देशेर लोकेर हिंदुयानि रक्षार जन्ये तोमार आहारनिद्रा बन्ध, ए दिके निजेर परम बन्धुइ यदि जात भासिये दिये ब्राह्मर घरे बिये करे बसे ता हले मानुषेर काछे ये मुख देखाते पारबे ना। विनय, तुमि बोध हय राग करछ, किन्तु ढेर लोक तोमार असाक्षातेइ एइ-सब कथा गोराके बलत—तारा बलबार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्ये छट्फट् करछे—आमि सामनेइ बले गेलुम—ताते सकल पक्षे भालोइ हबे। गुजबटा यदि मिथ्याइ हय ता हले से-कथा बललेइ चुके याबे, यदि सत्यि हय ता हले बोझापड़ा करे नाओ।"

महिम चलिया गेलेन, विनय तखनो कोनो कथा कहिल ना। गोरा जिज्ञासा करिल, "की, विनय, व्यापारटा की।"

विनय कहिल, "शुधु केवल गोटाकतक खबर दिये अवस्थाटा ठिक बोझानो भारि शक्त; ताइ मने करेछिलुम, आस्ते आस्ते तोमाके समस्त व्यापारटा बुझिये बलब। किन्तु पृथिवीते आमादेर सुविधामतो धीरेसुस्थे किछुइ घटते चाय ना; घटनागुलोओ शिकारि बाघेर मतो प्रथमटा गुँड़ि मेरे मेरे निःशब्दे चले, तार परे हठात् एक समय घाड़ेर उपर लाफ दिये एसे पड़े; आबार तार संवादओ आगुनेर मतो प्रथमटा चापा थाके, तार परे हठात् दाउदाउ करे ज्वले उठे, तखन ताके आर सामलानो याय ना। सेइजन्येइ एक-एकसमय मने हय, कर्ममात्रइ त्याग करे एकेबारे स्थाणु हये बसे थाकाइ मानुषेर पक्षे मुक्ति।"

गोरा हासिया कहिल, "तुमि एकला स्थाणु हये बसे थाकलेइ वा मुक्ति कोथाय। सेइ सङ्गे जगतसुद्ध यदि स्थाणु हये ना ओठे ता हले तोमाके स्थिर थाकते देबे केन। से आरओ उल्टो विपद हबे। जगत् यखन काज करछे तखन तुमिओ यदि काज ना कर ता हले ये केवलइ ठकबे। सेइजन्ये एइटे देखते हबे, घटना येन तोमार सतर्कताके डिङिये ना याय—एटा ना हय ये, आर-समस्तइ चलछे केवल तुमिइ प्रस्तुत नेइ।"

विनय कहिल, "ओइ कथाटाइ ठिक। आमिइ प्रस्तुत थाकि ने। एबारेओ आमि प्रस्तुत छिलुम ना। कोन् दिक दिये की घटछे ता बुझतेइ पारि नि। किन्तु, यखन घटे उठल तखन तार दायित्व तो ग्रहण करतेइ हबे। येटा गोड़ाते ना घटलेइ भालो छिल सेटाके आज अप्रिय हलेओ तो अस्वीकार करा याय ना।"

गोरा कहिल, "घटनाटा की ना जेने सेटार सम्बन्धे तत्त्वालोचनाय योग देओया आमार पक्षे कठिन।"

विनय खाड़ा हइया बसिया बलिया फेलिल, "अनिवार्य घटनाक्रमे ललितार सङ्गे आमार सम्बन्ध एमन जायगाय एसे दाँड़ियेछे ये, ताके यदि आमि विवाह ना करि तबे चिरजीवन समाजे ताके अन्याय एवं अमूलक अपमान सह्य करते हबे।"

गोरा कहिल, "की रकमटा दाँड़ियेछे शुनि।"

विनय कहिल, "से अनेक कथा। से क्रमे तोमाके बलब, किन्तु ओटुकु तुमि मेनेइ नाओ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "आच्छा, मेनेइ निच्छि। ओ-सम्बन्धे आमार वक्तव्य एइ ये, घटना यदि अनिवार्य हय तार दुःखओ अनिवार्य। समाजे यदि ललिताके अपमान भोग करतेइ हय तो तार उपाय नेइ।"

विनय कहिल, "किन्तु, सेटा निवारण करा तो आमार हाते आछे।"

गोरा कहिल, "यदि थाके तो भालोइ। किन्तु, गायेर जोरे से-कथा बलले तो हबे ना। अभावे पड़ले चुरि करा, खुन कराओ तो मानुषेर हाते आछे, किन्तु सेटा कि सत्यि आछे। ललिताके विवाह करे तुमि ललितार प्रति कर्तव्य करते चाओ, किन्तु सेइटेइ कि तोमार चरम कर्तव्य। समाजेर प्रति कर्तव्य नेइ?"

समाजेर प्रति कर्तव्य स्मरण करियाइ विनय ब्राह्मविवाहे सम्मत हय नाइ, से-कथा से बलिल ना; ताहार तर्क चड़िया उठिल। से कहिल, "ओइ जायगाय तोमार सङ्गे बोध हय आमार मिल हबे ना। आमि तो व्यक्तिर दिके टेने समाजेर विरुद्धे कथा बलछि ने। आमि बलछि, व्यक्ति एवं समाज दुइयेर उपरेइ एकटि धर्म आछे—सेइटेर उपरे दृष्टि रेखे चलते हबे। येमन व्यक्तिके बाँचानोइ आमार चरम कर्तव्य नय तेमनि समाजके बाँचानोओ आमार चरम कर्तव्य नय, एकमात्र धर्मके बाँचानोइ आमार चरम श्रेय।"

गोरा कहिल, "व्यक्तिओ नेइ, समाजओ नेइ, अथच धर्म आछे, एमन धर्मके आमि मानि ने।"

विनयेर रोख चड़िया उठिल। से कहिल, "आमि मानि। व्यक्ति ओ समाजेर भित्तिर उपरे धर्म नय, धर्मेर भित्तिर उपरेइ व्यक्ति ओ समाज। समाज येटाके चाय सेइटेकेइ यदि धर्म बले मानते हय ता हले समाजेरइ माथा खाओया हय। समाज यदि आमार कोनो न्यायसंगत धर्मसंगत स्वाधीनताय बाधा देय ता हले सेइ असंगत बाधा लङ्घन करलेइ समाजेर प्रति कर्तव्य करा हय। ललिताके विवाह करा यदि आमार अन्याय ना हय, एमन-कि, उचित हय, तबे समाज प्रतिकूल बलेइ तार थेके निरस्त हओया आमार पक्षे अधर्म हबे।"

गोरा कहिल, "न्याय अन्याय कि एकला तोमार मध्येइ बद्ध। एइ विवाहेर द्वारा तोमार भावी सन्तानदेर तुमि कोथाय दाँड़ कराच्छ से-कथा भाबबे ना?"

विनय कहिल, "सेइरकम करे भावते गियेइ तो मानुष सामाजिक अन्यायके चिरस्थायी करे तोले। साहेब-मनिबेर लाथि खेये ये-केरानि अपमान चिरदिन वहन करे ताके तुमि दोष दाओ केन। सेओ तो तार सन्तानदेर कथाइ भावे।"

गोरार सङ्गे तर्के विनय ये जायगाय आसिया पौँछिल पूर्वे सेखाने से छिल ना। एकटु आगेइ समाजेर सङ्गे विच्छेदेर सम्भावनातेइ ताहार समस्त चित्त संकुचित हइयाछिल। ए सम्बन्धे से निजेर सङ्गे कोनोप्रकार तर्कइ करे नाइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं गोरार सङ्गे तर्क यदि उठिया ना पड़ित तबे विनयेर मन आपन चिरन्तन संस्कार अनुसारे उपस्थित प्रवृत्तिर उल्टा दिकेइ चलित। किन्तु, तर्क करिते करिते ताहार प्रवृत्ति कर्तव्यबुद्धिके आपनार सहाय करिया लइया प्रबल हइया उठिते लागिल।

गोरार सङ्गे खुब तर्क बाधिया गेल। एइरूप आलोचनाय गोरा प्रायइ युक्तिप्रयोगेर दिके याय ना, से खुब जोरेर सङ्गे आपनार मत बले। तेमन जोर अल्प लोकेरइ देखा याय। एइ जोरेर द्वाराइ आज से विनयेर सब कथा ठेलिया भूमिसात् करिया चलिबार चेष्टा करिल, किन्तु आज से बाधा पाइते लागिल। यतदिन एक दिके गोरा, आर-एक दिके विनयेर मत मात्र छिल, ततदिन विनय हार मानियाछे—किन्तु आज दुइ दिकेइ दुइ वास्तव मानुष ; गोरा आज वायु-बाणेर द्वारा वायुबाणके ठेकाइतेछिल ना, आज बाण येखाने आसिया बाजितेछिल सेखाने वेदनापूर्ण मानुषेर हृदय।

शेषकाले गोरा कहिल, "आमि तोमार सङ्गे कथा-काटाकाटि करते चाइ ने। एर मध्ये तर्केर कथा बेशि किछु नेइ, एर मध्ये हृदय दिये एकटि बोझबार कथा आछे। ब्राह्म मेयेके विये करे तुमि देशेर सर्वसाधारणेर सङ्गे निजेके ये पृथक करे फेलते चाओ सेइटेइ आमार काछे अत्यन्त वेदनार विषय। ए काज तुमि पार, आमि किछुतेइ पारि ने—एइखानेइ तोमाते आमाते प्रभेद, ज्ञाने नय, बुद्धिते नय। आमार प्रेम येखाने तोमार प्रेम सेखाने नेइ। तुमि येखाने छुरि मेरे निजेके मुक्त करते चाच्छ सेखाने तोमार दरद किछुइ नेइ। आमार सेखाने नाड़िर टान। आमि आमार भारतवर्षके चाइ—ताके तुमि यत दोष दाओ, यत गाल दाओ, आमि ताकेइ चाइ ; तार चेये बड़ो करे आमि आपनाके किंवा अन्य कोनो मानुषके चाइ ने। आमि लेशमात्र एमन कोनो काज करते चाइ ने याते आमार भारतवर्षेर सङ्गे चुलमात्र विच्छेद घटे।"

विनय की एकटा उत्तर दिबार उपक्रम करितेइ गोरा कहिल, "ना, विनय, तुमि वृथा आमार सङ्गे तर्क करछ। समस्त पृथिवी ये-भारतवर्षके त्याग करेछे, याके अपमान करेछे, आमि तारइ सङ्गे एक अपमानेर आसने स्थान निते चाइ—आमार एइ जातिभेदेर भारतवर्ष, आमार एइ कुसंस्कारेर भारतवर्ष, आमार एइ पौत्तलिक भारतवर्ष। तुमि एर सङ्गे यदि भिन्न हते चाओ तबे आमार सङ्गेओ भिन्न हबे।"

एइ बलिया गोरा उठिया घर हइते बाहिर हइया छाते वेड़ाइते लागिल। विनय चुप करिया बसिया रहिल। बेहारा आसिया गोराके खबर दिल अनेक-गुलि बाबु ताहार सङ्गे देखा करिबार जन्य बाहिरे अपेक्षा करितेछे। पलायनेर एकटा उपलक्ष पाइया गोरा आराम बोध करिल ; से चलिया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाहिरे आसिया देखिल, अन्यान्य नाना लोकेर मध्ये अविनाशओ आसियाछे। गोरा स्थिर करियाछिल, अविनाश राग करियाछे। किन्तु, रागेर कोनो लक्षण प्रकाश पाइल ना। से आरओ उच्छ्वसित प्रशंसा-वाक्ये ताहार गतकल्यकार प्रत्याख्यान-व्यापार सकलेर काछे वर्णना करितेछिल। से कहिल, "गौरमोहन-बाबुर प्रति आमार भक्ति अनेक बेड़े गेछे ; एतदिन आमि जानतुम उनि असामान्य लोक, किन्तु काल जानते पेरेछि उनि महापुरुष। आमरा काल ओँके सम्मान देखाते गियेछिलुम ; उनि येरकम प्रकाश्यभावे सेइ सम्मानके उपेक्षा करलेन सेरकम आजकालकार दिने कजन लोक पारे। ए कि साधारण कथा।"

एके गोरार मन विकल हइया छिल, ताहार उपरे अविनाशेर एइ उच्छ्वासे ताहार गा ज्वलिते लागिल ; से असहिष्णु हइया कहिल, "देखो, अविनाश, तोमरा भक्तिर द्वाराइ मानुषके अपमान कर—रास्तार धारे आमाके निये तोमार सङे नाचन नाचाते चाओ, सेटा प्रत्याख्यान करते पारि एतटुकु लज्जाशरम तोमरा आमार काछे प्रत्याशा कर ना ! एकेइ तोमरा बल महापुरुषेर लक्षण ! आमादेर एइ देशटाके कि तोमरा केवलमात्र एकटा यात्रार दल बले ठिक करे रेखेछ। सकलेइ प्याला नेबार जन्ये केवल नेचे बेड़ाच्छे ! केउ एतटुकु सत्य काज करछे ना ! सङ्गे योग दिते चाओ भालो, झगड़ा करते चाओ सेओ भालो, किन्तु दोहाइ तोमादेर, अमन करे वाहवा दियो ना।"

अविनाशेर भक्ति आरओ चड़िते लागिल। से सहास्यमुखे उपस्थित व्यक्तिवर्गेर मुखेर दिके चाहिया गोरार वाक्यगुलिर चमत्कारितार प्रति सकलेर मन आकर्षण करिबार भाव देखाइल। कहिल, "आशीर्वाद करुन, आपनार मतो ओइरकम निष्कामभावे भारतवर्षेर सनातन गौरव रक्षार जन्ये आमरा जीवन समर्पण करते पारि।"

एइ बलिया पायेर धुला लइबार जन्य अविनाश हस्त प्रसारण करितेइ गोरा सरिया गेल।

अविनाश कहिल, "गौरमोहनबाबु, आपनि तो आमादेर काछ थेके कोनो सम्मान नेबेन ना। किन्तु, आमादेर आनन्द दिते विमुख हलेओ चलबे ना। आपनाके निये एकदिन आमरा सकले मिले आहार करब, एइ आमरा परामर्श करेछि—एटिते आपनाके सम्मति दितेइ हबे।"

गोरा कहिल, "आमि प्रायश्चित्त ना करे तोमादेर सकलेर सङ्गे खेते बसते पारब ना।"

प्रायश्चित्त ! अविनाशेर दुइ चक्षु दीप्त हइया उठिल। से कहिल, "ए कथा आमादेर कारओ मनेओ उदय हय नि, किन्तु हिन्दुधर्मेर कोनो विधान गौरमोहनबाबुके किछुते एड़ाते पारबे ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकले कहिल, ता बेश कथा। प्रायश्चित्त उपलक्ष्येइ सकले एकत्रे आहार करा याइबे। सेदिन देशेर बड़ो बड़ो अध्यापक-पण्डितदेर निमन्त्रण करिते हइबे ; हिन्दुधर्म ये आजओ किरूप सजीव आछे ताहा गौरमोहनबाबुर एइ प्रायश्चित्तेर निमन्त्रणे प्रचार हइबे।

प्रायश्चित्तसभा कबे कोथाय आहूत हइबे से प्रश्नओ उठिल। गोरा कहिल, ए बाड़िते सुविधा हइबे ना। एकजन भक्त ताहार गङ्गार धारेर बागाने एइ क्रिया सम्पन्न करार प्रस्ताव करिल। इहार खरचओ दलेर लोके सकले मिलिया वहन करिबे स्थिर हइया गेल।

विदायग्रहणेर समय अविनाश उठिया दाँड़ाइया वक्तृतार छाँदे हात नाड़िया सकलके सम्बोधन करिया कहिल, "गौरमोहनबाबु विरक्त हते पारेन, किन्तु आज आमार हृदय यखन परिपूर्ण हये उठेछे तखन ए कथा ना बलेओ आमि थाकते पारछि ने, वेद-उद्धारेर जन्ये आमादेर एइ पुण्यभूमिते अवतार जन्मग्रहण करेछिलेन—तेमनि हिन्दुधर्मके उद्धार करबार जन्येइ आज आमरा एइ अवतारके पेयेछि। पृथिवीते केवल आमादेर देशेर षड़् ऋतु आछे, आमादेर एइ देशेइ काले काले अवतार जन्मेछेन एवं आरओ जन्माबेन। आमरा धन्य ये सेइ सत्य आमादेर काछे प्रमाण हये गेल। बलो भाइ, गौरमोहनेर जय।"

अविनाशेर वाग्मिताय विचलित हइया सकले मिलिया गौरमोहनेर जयध्वनि करिते लागिल। गोरा मर्मान्तिक पीड़ा पाइया सेखान हइते छुटिया चलिया गेल।

आज जेलखाना हइते मुक्तिर दिने प्रबल एकटा अवसाद गोरार मनके आक्रमण करिल। नूतन उत्साहे देशेर जन्य काज करिबे बलिया गोरा जेलेर अवरोधे अनेक दिन कल्पना करियाछे। आज से निजेके केवल एइ प्रश्न करिते लागिल, 'हाय, आमार देश कोथाय। देश कि केवल आमार एकलार काछे। आमार जीवनेर समस्त संकल्प याहार सङ्गे आलोचना करिलाम सेइ आमार आशैशवेर बन्धु आज एतदिन परे केवल एकजन स्त्रीलोकके विवाह करिबार उपलक्षे ताहार देशेर समस्त अतीत ओ भविष्यतेर सङ्गे एक मुहूर्ते एमन निर्ममभावे पृथक हइते प्रस्तुत हइल। आर, याहादिगके सकले आमार दलेर लोक बले, एतदिन ताहादिगके एत बुझानोर परओ ताहारा आज एइ स्थिर करिल ये आमि केवल हिंदुयानि उद्धार करिबार जन्य अवतार हइया जन्मग्रहण करियाछि। आमि केवल मूर्तिमान शास्त्रेर वचन! आर, भारतवर्ष कोनोखाने स्थान पाइल ना! षड़् ऋतु! भारतवर्षे षड़् ऋतु आछे! सेइ षड़् ऋतुर षड़यन्त्रे यदि अविनाशेर मतो एमन फल फलिया थाके तबे दुइ-चारिटा ऋतु कम थाकिले क्षति छिल ना।'

बेहारा आसिया खबर दिल, मा गोराके डाकितेछेन। गोरा येन हठात् चमकिया उठिल। से आपनार मने बलिया उठिल, 'मा डाकितेछेन।' एइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खबरटाके से येन एकटा नूतन अर्थ दिया शुनिल। से कहिल, 'आर याइ हउक, आमार मा आछेन। एवं तिनिइ आमाके डाकितेछेन। तिनिइ आमाके सकलेर सङ्गे मिलाइया दिबेन; काहारओ सङ्गे तिनि कोनो विच्छेद राखिबेन ना; आमि देखिब, याहारा आमार आपन ताहारा ताँहार घरे बसिया आछे। जेलेर मध्येओ मा आमाके डाकियाछिलेन, सेखाने ताँहार देखा पाइयाछि; जेलेर बाहिरेओ मा आमाके डाकितेछेन, सेखाने आमि ताँहाके देखिते यात्रा करिलाम।' एइ बलिया गोरा सेइ शीतमध्याह्नेर आकाशेर दिके बाहिरे चाहिया देखिल। एक दिके विनय ओ आर-एक दिके अविनाशेर तरफ हइते ये विरोधेर सुर उठियाछिल ताहा यत्सामान्य हइया काटिया गेल। एइ मध्याह्नसूर्येर आलोके भारतवर्ष येन ताहार बाहु उद्‌घाटित करिया दिल। ताहार आसमुद्र-विस्तृत नदी पर्वत लोकालय गोरार चक्षेर सम्मुखे प्रसारित हइया गेल; अनन्तेर दिक हइते एकटि मुक्त निर्मल आलोक आसिया एइ भारतवर्षके सर्वत्र येन ज्योतिर्मय करिया देखाइल। गोरार वक्ष भरिया उठिल, ताहार दुइ चक्षु ज्वलिते लागिल, ताहार मनेर कोथाओ लेशमात्र नैराश्य रहिल ना; भारतवर्षेर ये-काज अन्तहीन, ये-काजेर फल बहुदूरे, ताहार जन्य ताहार प्रकृति आनन्देर सहित प्रस्तुत हइल; भारतवर्षेर ये-महिमा से ध्याने देखियाछे ताहाके निजेर चक्षे देखिया याइते पारिबे ना बलिया ताहार किछुमात्र क्षोभ रहिल ना, से मने मने बार बार करिया बलिल, 'मा आमाके डाकितेछेन—चलिलाम येखाने अन्नपूर्णा, येखाने जगद्धात्री बसिया आछेन, सेइ सुदूर कालेइ अथच एइ निमेषेइ, सेइ मृत्युर परप्रान्तेइ अथच जीवनेर मध्येइ—सेइ ये महामहिमान्वित भविष्यत् आज आमार एइ दीनहीन वर्तमानके सम्पूर्ण सार्थक करिया उज्ज्वल करिया रहियाछे—आमि चलिलाम सेइखानेइ—सेइ अतिदूरे सेइ अतिनिकटे मा आमाके डाकितेछेन।' एइ आनन्देर मध्ये गोरा येन विनय एवं अविनाशेरओ सङ्ग पाइल—ताहाराओ ताहार पर हइया रहिल ना—अद्यकार समस्त छोटो विरोधगुलि एकटा प्रकाण्ड चरितार्थताय कोथाय मिलाइया गेल।

गोरा यखन आनन्दमयीर घरेर मध्ये प्रवेश करिल तखन ताहार मुख आनन्देर आभाय दीप्यमान, तखन ताहार चक्षु येन सम्मुखस्थित समस्त पदार्थेर पश्चाते आर-एकटि कोन् अपरूप मूर्ति देखितेछे। प्रथमेइ हठात् आसिया से येन भालो करिया चिनिते पारिल ना, घरे ताहार मार काछे के बसिया आछे।

सुचरिता उठिया दाँड़ाइया गोराके नमस्कार करिल। गोरा कहिल, "एइ-ये, आपनि एसेछेन, बसुन।"

गोरा एमन करिया बलिल 'आपनि एसेछेन', येन सुचरितार आसा एकटा साधारण घटनार मध्ये नय, ए येन एकटा विशेष आविर्भाव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकदिन सुचरितार संस्रव हइते गोरा पलायन करियाछिल। यतदिन पर्यन्त से नाना कष्ट एवं काज लइया भ्रमण करितेछिल ततदिन सुचरितार कथा मन थेके अनेकटा दूरे राखिते पारियाछिल। किन्तु जेलेर अवरोधेर मध्ये सुचरितार स्मृतिके से कोनोमतेइ ठेकाइया राखिते पारे नाइ। एमन एक दिन छिल, यखन भारतवर्षे ये स्त्रीलोक आछे से-कथा गोरार मने उदयइ हय नाइ। एइ सत्यटि एतकाल परे से सुचरितार मध्ये नूतन आविष्कार करिल; एकेबारे एक मुहूर्ते एतबड़ो एकटा पुरातन एवं प्रकाण्ड कथाके हठात् ग्रहण करिया ताहार समग्र बलिष्ठ प्रकृति इहार आघाते कम्पित हइया उठिल। जेलेर मध्ये बाहिरेर सूर्यालोक एवं मुक्त वातासेर जगत् यखन ताहार मनेर मध्ये वेदना सञ्चार करित तखन सेइ जगत्टिके केवल से निजेर कर्मक्षेत्र एवं केवल सेटाके पुरुषसमाज बलिया देखित ना—येमन करियाइ से ध्यान करित बाहिरेर एइ सुन्दर जगत्संसारे से केवल दुटि अधिष्ठात्री देवतार मुख देखिते पाइत, सूर्यचन्द्र तारार आलोक विशेष करिया ताहादेरइ मुखेर उपर पड़ित, स्निग्ध नीलिमा मण्डित आकाश ताहादेरइ मुखके वेष्टन करिया थाकित—एकटि मुख ताहार आजन्मपरिचित मातार, बुद्धिते उद्भासित आर-एकटि नम्र सुन्दर मुखेर सङ्गे ताहार नूतन परिचय।

जेलेर निरानन्द संकीर्णतार मध्ये गोरा एइ मुखेर स्मृतिर सङ्गे विरोध करिते पारे नाइ। एइ ध्यानेर पुलकटुकु ताहार जेलखानार मध्ये एकटि गभीरतर मुक्तिके आनिया दित। जेलखानार कठिन बन्धन ताहार काछे येन छायामय मिथ्या स्वप्नेर मतो हइया याइत। स्पन्दित हृदयेर अतीन्द्रिय तरङ्गगुलि जेलेर समस्त प्राचीर अबाधे भेद करिया, आकाशे मिशिया, सेखानकार पुष्प-पल्लवे हिल्लोलित एवं संसार-कर्मक्षेत्रे लीलायित हइते थाकित।

गोरा मने करियाछिल, कल्पनामूर्तिके भय करिबार कोनो कारण नाइ। एइजन्य एकमासकाल इहाके एकेबारेइ से पथ छाड़िया दियाछिल। गोरा जानित, भय करिबार विषय केवलमात्र वास्तव पदार्थ।

जेल हइते बाहिर हइवामात्र गोरा यखन परेशबाबुके देखिल, तखन ताहार मन आनन्दे उच्छ्वसित हइया उठियाछिल। से ये केवल परेशबाबुके देखार आनन्द ताहा नहे, ताहार सङ्गे गोरार एइ कयदिनेर सङ्गिनी कल्पनाओ ये कतटा निजेर माया मिश्रित करियाछिल ताहा प्रथमटा गोरा बुझिते पारे नाइ। किन्तु, क्रमेइ बुझिल। स्टिमारे आसिते आसिते से स्पष्टइ अनुभव करिल, परेशबाबु ये ताहाके आकर्षण करितेछेन से केवल ताँहार निजगुणे नहे।

एतदिन परे गोरा आवार कोमर बाँधिल। बलिल, 'हार मानिब ना।' स्टिमारे वसिया बसिया, आवार दूरे याइबे, कोनोप्रकार सूक्ष्म बन्धनेओ से निजेर मनके बाँधिते दिबे ना, एइ संकल्प मने आँटिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एमन समय विनयेर सङ्गे ताहार तर्क बाधिया गेल। विच्छेदेर पर बन्धुर सङ्गे एइ प्रथम मिलनेइ तर्क एमन प्रबल हइत ना। किन्तु, आज एइ तर्केर मध्ये ताहार निजेर सङ्गेओ तर्क छिल। एइ तर्क-उपलक्षे निजेर प्रतिष्ठाभूमिके गोरा निजेर काछेओ स्पष्ट करिया लइतेछिल। एइजन्यइ गोरा आज एत विशेष जोर दिया कथा बलितेछिल, सेइ जोरटुकुते तार निजेरइ विशेष प्रयोजन छिल। यखन ताहार आजिकार एइ जोर विनयेर मने विरुद्ध जोरकेइ उत्तेजित करिया दियाछिल, यखन से मन मने गोरार कथाके केवलइ खण्डन करितेछिल एवं गोरार निर्बन्धके अन्याय गोँड़ामि बलिया यखन ताहार समस्त चित्त विद्रोही हइया उठितेछिल, तखन विनय कल्पनाओ करे नाइ ये, गोरा निजकेइ यदि आघात ना करित तबे आज ताहार आघात हयतो एत प्रबल हइत ना।

विनयेर सङ्गे तर्केर पर गोरा ठिक करिल, 'युद्धक्षेत्रेर बाहिरे गेले चलिबे ना। आमि यदि निजेर प्राणेर भये विनयके फेलिया याइ, तबे विनय रक्षा पाइबे ना।'

५४

गोरार मन तखन भावे आविष्ट छिल—सुचरिताके से तखन एकटि व्यक्ति-विशेष बलिया देखितेछिल ना, ताहाके एकटि भाव बलिया देखितेछिल। भारतेर नारीप्रकृति सुचरिता-मूर्तिते ताहार सम्मुखे प्रकाशित हइल। भारते गृहके पुण्ये सौन्दर्ये ओ प्रेमे मधुर ओ पवित्र करिबार जन्यइ इँहार आविर्भाव। ये-लक्ष्मी भारतेर शिशुके मानुष करेन, रोगीके सेवा करेन, तापीके सान्त्वना देन, तुच्छकेओ प्रेमेर गौरवे प्रतिष्ठादान करेन—यिनि दुःखे दुर्गतितेओ आमादेर दीनतमके त्याग करेन नाइ, अवज्ञा करेन नाइ—यिनि आमादेर पूजार्हा हइयाओ आमादेर अयोग्यतमकेओ एकमने पूजा करिया आसियाछेन, याँहार निपुण सुन्दर हात दुइखानि आमादेर काजे उत्सर्ग करा एवं याँहार चिरसहिष्णु क्षमापूर्ण प्रेम अक्षय दानरूपे आमरा ईश्वरेर काछ हइते लाभ करियाछि, सेइ लक्ष्मीरइ एकटि प्रकाशके गोरा ताहार मातार पार्श्वे प्रत्यक्ष आसीन देखिया गभीर आनन्दे भरिया उठिल। ताहार मने हइते लागिल, एइ लक्ष्मीर दिके आमरा ताकाइ नाइ, इँहाकेइ आमरा सकलेर पिछने ठेलिया राखियाछिलाम, आमादेर एमन दुर्गतिर लक्षण आर किछुइ नाइ। गोरार तखन मने हइल, देश बलितेइ इनि, समस्त भारतेर मर्मस्थाने प्राणेर निकेतने शतदल पद्मेर उपर इनि बसिया आछेन, आमराइ इँहार सेवक। देशेर दुर्गतिते इँहारइ अवमानना—सेइ अवमाननाय उदासीन आछि बलियाइ आमादेर पौरुष आज लज्जित।

गोरा निजेर मने निजे आश्चर्य हइया गेछे। यतदिन भारतवर्षेर नारी ताहार अनुभवगोचर छिल ना ततदिन भारतवर्षके से ये किरूप असम्पूर्ण करिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपलब्धि करितेछिल इतिपूर्वे ताहा से जानितइ ना। गोरार काछे नारी यखन अत्यन्त छायामय छिल तखन देश सम्बन्धे ताहार ये-कर्तव्यबोध छिल ताहाते की एकटा अभाव छिल। येन शक्ति छिल किन्तु ताहाते प्राण छिल ना, येन पेशी छिल किन्तु स्नायु छिल ना। गोरा एक मुहूर्तेइ बुझिते पारिल ये, नारीके यतइ आमरा दूर करिया, क्षुद्र करिया जानियाछि, आमादेर पौरुषओ ततइ शीर्ण हइया मरियाछे।

ताइ गोरा यखन सुचरिताके कहिल, 'आपनि एसेछेन', तखन सेटा केवल एकटा प्रचलित शिष्टसम्भाषणरूपे ताहार मुख हइते बाहिर हय नाइ—ताहार जीवनेर एकटि नूतनलब्ध आनन्द ओ विस्मय एइ अभिवादनेर मध्ये पूर्ण हइया छिल।

कारावासेर किछु किछु चिह्न गोरार शरीरे छिल। पूर्वेर चेये से अनेकटा रोगा हइया गेछे। जेलेर अन्ने ताहार अश्रद्धा ओ अरुचि थाकाते एइ एकमासकाल से प्राय उपवास करिया छिल। ताहार उज्ज्वल शुभ्र वर्णओ पूर्वेर चेये किछु म्लान हइयाछे। ताहार चुल अत्यन्त छोटो करिया छाँटा हओयाते मुखेर कृशता आरओ बेशि करिया देखा याइतेछे।

गोरार देहेर एइ शीर्णताइ सुचरितार मने विशेष करिया एकटि वेदनापूर्ण सम्भ्रम जागाइया दिल। ताहार इच्छा करिते लागिल, प्रणाम करिया गोरार पायेर धुला ग्रहण करे। ये उद्दीप्त आगुनेर धोंओया एवं काठ आर देखा याय ना, गोरा सेइ विशुद्ध अग्निशिखाटिर मतो ताहार काछे प्रकाश पाइल। एकटि करुणामिश्रित भक्तिर आवेगे सुचरितार बुकेर भितरटा काँपिते लागिल। ताहार मुख दिया कोनो कथा बाहिर हइल ना।

आनन्दमयी कहिलेन, "आमार मेये थाकले ये की सुख हत एबार ता बुझते पेरेछि, गोरा। तुइ ये कटा दिन छिलि ने, सुचरिता ये आमाके कत सान्त्वना दियेछे से आर आमि की बलब। आमार सङ्गे तो एँदेर पूर्वे परिचय छिल ना—किन्तु दुःखेर समय पृथिवीर अनेक बड़ो जिनिस, अनेक भालो जिनिसेर सङ्गे परिचय घटे, दुःखेर एइ एकटि गौरव एबार बुझेछि। दुःखेर सान्त्वना ये ईश्वर कोथाय कत जायगाय रेखेछेन ता सब समय जानते पारि ने बलेइ आमरा कष्ट पाइ। मा, तुमि लज्जा करछ, किन्तु तुमि आमार दुःसमये आमाके कत सुख दियेछ से-कथा आमि तोमार सामने ना बलेइ वा बाँचि की करे।"

गोरा गभीर कृतज्ञतापूर्ण दृष्टिते सुचरितार लज्जित मुखेर दिके एकबार चाहिया आनन्दमयीके कहिल, "मा, तोमार दुःखेर दिने उनि तोमार दुःखेर भाग निते एसेछिलेन, आबार आज तोमार सुखेर दिनेओ तोमार सुखके बाड़ाबार जन्ये एसेछेन—हृदय याँदेर बड़ो ताँदेरइ एइरकम अकारण सौहृद्य।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय सुचरितार संकोच देखिया कहिल, "दिदि, चोर धरा पड़े गेले चतुर्दिक थेके शास्ति पाय। आज तुमि एँदेर सकलेर काछेइ धरा पड़े गेछ, तारइ फल भोग करछ। एखन पालाबे कोथाय। आमि तोमाके अनेक दिन थेकेइ चिनि ; किन्तु कारओ काछे किछु फाँस करि नि, चुप करे बसे आछि, मने मने जानि, बेशि-दिन किछुइ चापा थाके ना।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "तुमि चुप करे आछ बइ-कि। तुमि चुप करे थाकबार छेले कि ना। येदिन थेके ओ तोमादेर जेनेछे सेइदिन थेके तोमादेर गुणगान करे करे ओर आर आश किछुतेइ मिटछे ना।"

विनय कहिल, "शुने राखो, दिदि। आमि ये गुणग्राही एवं आमि ये अकृतज्ञ नइ, तार साक्ष्य प्रमाण हाजिर।"

सुचरिता कहिल, "ओते केवल आपनारइ गुणेर परिचय दिच्छेन।"

विनय कहिल, "आमार गुणेर परिचय किन्तु आमार काछे किछु पाबेन ना। पेते चान तो मार काछे आसबेन, स्तम्भित हये याबेन, ओंर मुखे यखन शुनि आमि निजेइ आश्चर्य हये याइ। मा यदि आमार जीवनचरित लेखेन ता हले आमि सकाल-सकाल मरते राजि आछि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "शुनछ एकबार छेलेर कथा!"

गोरा कहिल, "विनय, तोमार बाप-मा सार्थक तोमार नाम रेखेछिलेन।"

विनय कहिल, "आमार काछे बोध हय ताँरा आर-कोनो गुण प्रत्याशा करेन नि बलेइ विनय गुणटिर जन्ये दोहाइ पेड़े गियेछेन, नइले संसारे हास्यास्पद हते हत।"

एमनि करिया प्रथम आलापेर संकोच काटिया गेल।

विदाय लइबार समय सुचरिता विनयके बलिल, "आपनि एकबार आमादेर ओदिके याबेन ना?"

सुचरिता विनयके याइते बलिल, गोराके बलिते पारिल ना। गोरा ताहार ठिक अर्थटा बुझिल ना, ताहार मनेर मध्ये एकटा आघात बाजिल। विनय ये सहजेइ सकलेर माझखाने आपनार स्थान करिया लइते पारे आर गोरा ताहा पारे ना, एजन्य गोरा इतिपूर्वे कोनोदिन किछुमात्र खेद अनुभव करे नाइ—आज निजेर प्रकृतिर एइ अभावके अभाव बलिया बुझिल।

५५

ललितार सङ्गे ताहार विवाहप्रसङ्ग आलोचना करिबार जन्यइ ये सुचरिता विनयके डाकिया गेल, विनय ताहा बुझियाछिल। एइ प्रस्तावटिके से शेष करिया दियाछे बलियाइ तो व्यापारटा शेष हइया याय नाइ। ताहार यतक्षण आयु आछे ततक्षण कोनो पक्षेर निष्कृति थाकिते पारे ना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतदिन विनयेर सकलेर चेये बड़ो भावना छिल, 'गोराके आघात दिब की करिया।' गोरा बलिते शुधु ये गोरा मानुषटि ताहा नहे; गोरा ये-भाव, ये-विश्वास, ये-जीवनके आश्रय करिया आछे सेटाओ बटे। इहारइ सङ्गे बराबर निजेके मिलाइया चलाइ विनयेर अभ्यासेर एवं आनन्देर विषय छिल; इहार सङ्गे कोनोप्रकार विरोध येन ताहार निजेरइ सङ्गे विरोध।

किन्तु, सेइ आघातेर प्रथम संकोचटा काटिया गेछे। ललितार प्रसङ्ग लइया गोरार सङ्गे एकटा स्पष्ट कथा हइया याओयाते विनय जोर पाइल। फोड़ा काटाइबार पूर्वे रोगीर भय ओ भावनार अवधि छिल ना; किन्तु अस्त्र यखन पड़िल तखन रोगी देखिल, वेदना आछे बटे किन्तु आरामओ आछे एवं जिनिसटाके कल्पनाय यत सांघातिक बलिया मने हइयाछिल ततटाओ नहे।

एतक्षण विनय निजेर मनेर सङ्गे तर्कओ करिते पारितेछिल ना, एखन ताहार तर्केर द्वारओ खुलिया गेल। एखन मने मने गोरार सङ्गे ताहार उत्तरप्रत्युत्तर चलिते लागिल। गोरार दिक हइते ये-सकल युक्तिप्रयोग सम्भव सेइगुलि मनेर मध्ये उत्थापित करिया ताहादिगके नाना दिक हइते खण्डन करिते लागिल। यदि गोरार सङ्गे मुखे मुखे समस्त तर्क चलिते पारित ताहा हइले उत्तेजना येमन जागित तेमनि निवृत्ति हइयाओ याइत; किन्तु विनय देखिल, ए-विषये गोरा शेष पर्यन्त तर्क करिबे ना। इहातेओ विनयेर मने एकटा उत्ताप जागिल; से भाबिल, 'गोरा बुझिबे ना, बुझाइबे ना, केवलइ जोर करिबे। जोर! जोरेर काछे माथा हेंट करिते पारिब ना।' विनय कहिल, 'याहाइ घटुक, आमि सत्येर पक्षे।' एइ बलिया 'सत्य' बलिया एकटि शब्दके दुइ हाते से बुकेर मध्ये आँकड़िया धरिल। गोरार प्रतिकूले एकटि खुब प्रबल पक्षके दाँड़ कराना दरकार; एइ-जन्य, सत्यइ ये विनयेर चरम अवलम्बन इहाइ से बार बार करिया निजेर मनके बलिते लागिल। एमन कि, सत्यकेइ से ये आश्रय करिते पारियाछे इहाइ मने करिया निजेर प्रति ताहार भारि एकटा श्रद्धा जन्मिल। एइजन्य विनय अपराह्णे सुचरितार बाड़िर दिके यखन गेल तखन बेश एकटु माथा तुलिया गेल। सत्येर दिकेइ झुँकियाछे बलिया ताहार एत जोर ना झोंकटा आर-किछुर दिके, से-कथा विनयेर बुझिबार अवस्था छिल ना।

हरिमोहिनी तखन रन्धनेर उद्योग करितेछिलेन। विनय सेखाने रन्धन-शालार द्वारे ब्राह्मणतनयेर मध्याह्नभोजनेर दाबि मञ्जुर कराइया उपरे चलिया गेल।

सुचरिता एकटा सेलाइयेर काज लइया सेइ दिके चोख नामाइया अंगुलिचालना करिते करिते आलोच्य कथाटा पाड़िल। कहिल, "देखुन, विनयबाबु, भितरकार बाधा येखाने नेइ सेखाने बाइरेर प्रतिकूलताके कि मेने चलते हबे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरार सङ्गे यखन तर्क हइयाछिल तखन विनय विरुद्ध युक्ति प्रयोग करियाछे। आबार सुचरितार सङ्गे यखन आलोचना हइते लागिल तखनओ से उल्टा पक्षेर युक्ति प्रयोग करिल। तखन गोरार सङ्गे ताहार ये कोनो मतविरोध आछे एमन कथा के मने करिते पारिबे।

विनय कहिल, "दिदि, बाइरेर बाधाके तोमराओ तो खाटो करे देखछ ना।"

सुचरिता कहिल, "तार कारण आछे, विनयबाबु। आमादेर बाधाटा ठिक बाइरेर बाधा नय। आमादेर समाज ये आमादेर धर्म विश्वासेर उपरे प्रतिष्ठित। किन्तु, आपनि ये-समाजे आछेन सेखाने आपनार बन्धन केवलमात्र सामाजिक बन्धन। एइजन्ये यदि ललिताके ब्राह्मसमाज परित्याग करे येते हय तार सेटाते यत गुरुतर क्षति, आपनार समाजत्यागे आपनार ततटा क्षति नय।"

धर्म मानुषेर व्यक्तिगत साधनार जिनिस, ताहाके कोनो समाजेर सङ्गे जड़ित करा उचित नहे, एइ बलिया विनय तर्क करिते लागिल।

एमन समय सतीश एकखानि चिठि ओ एकटि इंराजि कागज लइया घरे प्रवेश करिल। विनयके देखिया से अत्यन्त उत्तेजित हइया उठिल ; शुक्रवारके कोनो उपाये रविबार करिया तुलिबार जन्य ताहार मन व्यस्त हइते लागिल। देखिते देखिते विनय एवं सतीशे मिलिया सभा जमिया गेल। एदिके ललितार चिठि एवं तत्सह प्रेरित कागजखानि सुचरिता पड़िते लागिल।

एइ ब्राह्म कागजटिते एकटि खबर छिल ये, कोनो विख्यात ब्राह्मपरिवारे हिन्दुसमाजेर सहित विवाह-सम्बन्ध घटिबार येआशङ्का हइयाछिल ताहा हिन्दु-युवकेर असम्मति-वशत काटिया गियाछे। एइ उपलक्षे उक्त हिन्दुयुवकेर निष्ठार सहित तुलना करिया ब्राह्मपरिवारेर शोचनीय दुर्बलता सम्बन्धे आक्षेप प्रकाश करा हइयाछे।

सुचरिता मने मने कहिल, येमन करिया हउक विनयेर सहित ललितार विवाह घटाइतेइ हइबे। किन्तु से तो एइ युवकेर सङ्गे तर्क करिया हइबे ना। ललिताके सुचरिता ताहार बाड़िते आसिबार जन्य चिठि लिखिया दिल ; ताहाते बलिल ना ये, विनय एखाने आछे।

कोनो पञ्जिकातेइ कोनो ग्रहनक्षत्रेर समावेशे शुक्रवारे रविवार पड़िबार व्यवस्था ना थाकाय सतीशके इस्कुले याइते प्रस्तुत हइवार जन्य उठिते हइल। सुचरिताओ स्नान करिते याइते हइबे बलिया किछुक्षणेर जन्य अवकाश प्रार्थना करिया चलिया गेल।

तर्केर उत्तेजना यखन काटिया गेल तखन सुचरितार सेइ एकला घरटिते बसिया विनयेर भितरकार युवापुरुषटि जागिया उठिल। वेला तखन नयटा, साड़े नयटा। गलिर भितरे जनकोलाहल नाइ। सुचरितार लिखिवार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टेबिलेर उपर एकटि छोटो घड़ि टिक्टिक् करिया चलितेछे। घरेर एकटि प्रभाव विनयके आविष्ट करिया धरिते लागिल। चारि दिकेर छोटोखाटो गृहसज्जागुलि विनयेर सङ्गे येन आलाप जुड़िया दिल। टेबिलेर उपरकार पारिपाट्य, सेलाइयेर काज-करा चौकि-ढाकाटि, चौकिर निचे पादस्थानेर काछे बिछानो एकटा हरिणेर चामड़ा, देयाले झोलानो दुटि-चारटि छबि, पश्चाते लाल सालु दिया मोड़ा बइ-साजानो बइयेर छोटो शेल्फ्टि, समस्तइ विनयेर चित्तेर मध्ये एकटि गभीरतर सुर बाजाइया तुलिते लागिल। एइ घरेर भितरटिते एकटि कि सुन्दर रहस्य सञ्चित हइया आछे। एइ घरे निर्जन मध्याह्ने सखीते सखीते ये-सकल मनेर कथा आलोचना हइया गेछे ताहादेर सलज्ज सुन्दर सत्ता एखनओ येन इतस्तत प्रच्छन्न हइया आछे; कथा आलोचना करिबार समय कोन्खाने के बसियाछिल, केमन करिया बसियाछिल, ताहा विनय कल्पनाय देखिते लागिल। ओइ-ये सेदिन विनय परेशबाबुर काछे शुनियाछिल 'आमि सुचरितार काछे शुनियाछि ललितार मन तोमार प्रति विमुख नहे', एइ कथाटिके से नाना भावे नाना रूपे नाना प्रकार छबिर मतो करिया देखिते पाइल। एकटा अनिर्वचनीय आवेग विनयेर मनेर मध्ये अत्यन्त करुण उदास रागिणीर मतो बाजिते लागिल। ये-सब जिनिसके एमनतरो निविड़ गभीर रूपे मनेर गोपनतार मध्ये भाषाहीन आभासेर मतो पाओया याय ताहादिगके कोनोमते प्रत्यक्ष करिया तुलिबार क्षमता नाइ बलिया अर्थात् विनय कवि नय, चित्रकार नय बलिया ताहार समस्त अन्तःकरण चञ्चल हइया उठिल। से येन की एकटा करिते पारिले बाँचे अथच सेटा करिबार कोनो उपाय नाइ, एमनि ताहार मने हइते लागिल। ये एकटा पर्दा ताहार सम्मुखे झुलितेछे, याहा अति निकटे ताहाके निरतिशय दूर करिया राखियाछे, सेइ पर्दाटाके कि एइ मुहूर्ते उठिया दाँड़ाइया जोर करिया छिँड़िया फेलिबार शक्ति विनयेर नाइ!

हरिमोहिनी घरे प्रवेश करिया जिज्ञासा करिलेन, विनय एखन किछु जल खाइबे कि ना। विनय कहिल, "ना।"

तखन हरिमोहिनी आसिया घरे बसिलेन।

हरिमोहिनी यतदिन परेशबाबुर बाड़िते छिलेन ततदिन विनयेर प्रति ताँहार खुब एकटा आकर्षण छिल। किन्तु, यखन हइते सुचरिताके लइया ताँहार स्वतन्त्र घरकन्ना हइयाछे तखन हइते इहादेर यातायात ताँहार काछे अत्यन्त अरुचिकर हइया उठियाछिल। आजकाल आचारे विचारे सुचरिता ये सम्पूर्ण ताँहाके मानिया चले ना, एइसकल लोकेर सङ्गदोषकेइ तिनि ताहार कारण बलिया ठिक करियाछिलेन। यदिओ तिनि जानितेन विनय ब्राह्म नहे, तबु विनयेर मनेर मध्ये ये कोनो हिन्दुसंस्कारेर दृढ़ता नाइ ताहा तिनि स्पष्ट अनुभव करितेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताइ एखन तिनि पूर्वेर न्याय उत्साहेर सहित एइ ब्राह्मणतनयके डाकिया लइया ठाकुरेर प्रसादेर अपव्यय करितेन ना।

आज प्रसङ्गक्रमे हरिमोहिनी विनयके जिज्ञासा करिलेन, "आच्छा, बाबा, तुमि तो ब्राह्मणेर छेले, किन्तु सन्ध्या-अर्चना किछुइ कर ना ?"

विनय कहिल, "मासि, दिनरात्रि पड़ा मुखस्थ करे करे गायत्री सन्ध्या समस्तइ भुले गेछि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "परेशबाबुओ तो लेखापड़ा शिखेछेन। उनि तो निजेर धर्म मेने सकाले सन्ध्याय एकटा किछु करेन।"

विनय कहिल, "मासि, उनि या करेन ता केवल मन्त्र मुखस्थ करे करा याय ना। ओंर मतो यदि कखनओ हइ तबे ओंर मतो चलब।"

हरिमोहिनी किछु तीव्रस्वरे कहिलेन, "ततदिन नाहय बाप-पितामहर मतोइ चलो-ना। ना एदिक ना ओदिक कि भालो। मानुषेर एकटा तो धर्मेर परिचय आछे। ना राम ना गङ्गा—मा गो, ए केमनतरो !"

एमन समय ललिता घरे प्रवेश करियाइ विनयके देखिया चमकिया उठिल। हरिमोहिनीके जिज्ञासा करिल, "दिदि कोथाय ?"

हरिमोहिनी कहिलेन, "राधारानी नाइते गेछे।"

ललिता अनावश्यक जवाबदिहिर स्वरूप कहिल, "दिदि आमाके डेके पाठिये-छिल।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ततक्षण बोसो-ना, एखनइ एल ब'ले।"

ललितार प्रतिओ हरिमोहिनीर मन अनुकूल छिल ना। हरिमोहिनी एखन सुचरिताके ताहार पूर्वेर समस्त परिवेष्टन हइते छाड़ाइया लइया सम्पूर्ण निजेर आयत्त करिते चान। परेशबाबुर अन्य मेयेरा एखाने तेमन घन घन आसे ना, एकमात्र ललिताइ यखन-तखन आसिया सुचरिताके लइया आलाप-आलोचना करिया थाके, सेटा हरिमोहिनीर भालो लागे ना। प्राय तिनि उभयेर आलापे भङ्ग दिया सुचरिताके कोनो एकटा काजे डाकिया लइया याइबार चेष्टा करेन ; अथवा, आजकाल पूर्वेर मतो सुचरितार पड़ाशुना अव्याघाते चलितेछे ना बलिया आक्षेप प्रकाश करेन। अथच, सुचरिता यखन पड़ाशुनाय मन देय तखन अधिक पड़ाशुना ये मेयेदेर पक्षे अनावश्यक एवं अनिष्टकर से-कथाओ बलिते छाड़ेन ना। आसल कथा, तिनि येमन करिया सुचरिताके अत्यन्त घिरिया लइते चान किछुतेइ ताहा पारितेछेन ना बलिया कखनओ वा सुचरितार सङ्गीदेर प्रति कखनओ वा ताहार शिक्षार प्रति केवलइ दोषारोप करितेछेन।

ललिता ओ विनयके लइया बसिया थाका ये हरिमोहिनीर पक्षे सुखकर ताहा नहे, तथापि ताहादेर उभयेर प्रति राग करियाइ तिनि बसिया रहिलेन। तिनि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुझियाछिलेन ये, विनय ओ ललितार माझखाने एकटि रहस्यमय सम्बन्ध छिल। ताइ तिनि मने मने कहिलेन, 'तोमादेर समाजे येमन विधिइ थाक्, आमार ए-बाड़िते एइ-समस्त निर्लज्ज मेलामेशा, एइ-सब खृस्टानि काण्ड घटिते दिब ना।'

एदिके ललितार मनेओ एकटा विरोधेर भाव कण्टकित हइया उठियाछिल। काल सुचरितार सङ्गे आनन्दमयीर बाड़िते याइते सेओ संकल्प करियाछिल, किन्तु किछुतेइ याइते पारिल ना। गोरार प्रति ललितार प्रचुर श्रद्धा आछे, किन्तु विरुद्धताओ अत्यन्त तीव्र। गोरा ये सर्वप्रकारे ताहार प्रतिकूल, ए कथा से किछुतेइ मन हइते ताड़ाइते पारे ना। एमन कि, येदिन गोरा कारामुक्त हइयाछे सेइदिन हइते विनयेर प्रतिओ ताहार मनोभावेर एकटा परिवर्तन घटियाछे। कयेकदिन पूर्वओ, विनयेर प्रति ये ताहार एकटा जोर दखल आछे ए कथा से खुब स्पर्धा करियाइ मने करियाछिल। किन्तु गोरार प्रभावके विनय कोनोमतेइ काटाइया उठिते पारिबे ना इहा कल्पनामात्र करियाइ से विनयेर विरुद्धे कोमर बाँधिया दाँड़ाइल।

ललिताके घरे प्रवेश करिते देखिबामात्र विनयेर मनेर मध्ये एकटा आन्दोलन प्रबल हइया उठिल। ललिता सम्बन्धे विनय कोनो मतेइ सहज भाव रक्षा करिते पारे ना। यखन हइते ताहादेर दुइ जनेर विवाहेर सम्भावनार जनश्रुति समाजे रटिया गेछे तखन हइते ललिताके देखिबामात्र विनयेर मन वद्युतचञ्चल चुम्बकशलार मतो स्पन्दित हइते थाके।

घरे विनयके बसिया थाकिते देखिया सुचरितार प्रति ललितार राग हइल। से बुझिल, अनिच्छुक विनयेर मनके अनुकूल करिबार जन्यइ सुचरिता ताहाके लइया उठिया पड़िया लागियाछे एवं एइ बाँकाके सोजा करिबार जन्यइ ललिताके आज डाक पड़ियाछे।

से हरिमोहिनीर दिके चाहिया कहिल, "दिदिके बोलो एखन आमि थाकते पारछि ने। आर-एक समय आमि आसब।"

एइ बलिया विनयेर प्रति कटाक्षपातमात्र ना करिया द्रुत वेगे से चलिया गेल। तखन विनयेर काछे हरिमोहिनीर आर बसिया थाका अनावश्यक हओयाते तिनिओ गृहकार्य उपलक्षे उठिया गेलेन।

ललितार एइ चापा आगुनेर मतो मुखेर भाव विनयेर काछे अपरिचित छिल ना। किन्तु अनेकदिन एमन चेहारा से देखे नाइ। सेइ ये एक समये विनयेर सम्बन्धे ललिता ताहार अग्निबाण उद्यत करियाइ छिल, सेइ दुर्दिन एकेबारे काटिया गियाछे बलियाइ विनय निश्चिन्त हइयाछिल, आज देखिल सेइ पुरातन बाण अस्त्रशाला हइते आबार बाहिर हइयाछे। ताहाते एकटुओ मरिचार चिह्न पड़े नाइ। राग सह्य करा याय, किन्तु घृणा सह्य करा विनयेर मतो लोकेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पक्षे बड़ो कठिन। ललिता एकदिन ताहाके गोराग्रहेर उपग्रहमात्र मने करिया ताहार प्रति किरूप तीव्र अवज्ञा अनुभव करियाछिल ताहा विनयेर मने पड़िल। आजओ विनयेर द्विधाय विनय ललितार काछे ये कापुरुष बलिया प्रतीयमान हइतेछे एइ कल्पनाय ताहाके अस्थिर करिया तुलिल। ताहार कर्तव्यबुद्धिर संकोचके ललिता भीरुता बलिया मने करिबे, अथच ए-सम्बन्धे निजेर हइया दुटो कथा बलिबारओ सुयोग ताहार घटिबे ना, इहा विनयेर काछे असह्य बोध हइल। विनयके तर्क करिबार अधिकार हइते बञ्चित करिले विनयेर पक्षे गुरुतर शास्ति हय। कारण, विनय जाने से तर्क करिते पारे, कथा गुछाइया बलिते एवं कोनो एकटा पक्ष समर्थन करिते ताहार असामान्य क्षमता। किन्तु ललिता यखन ताहार सङ्गे लड़ाइ करियाछे तखन ताहाके कोनोदिन युक्ति प्रयोग करिबार अवकाश देय नाइ, आजओ से-अवकाश ताहार घटिबे ना।

सेइ खबरेर कागजखाना पड़िया छिल। विनय चञ्चलतार आक्षेपे सेटा टानिया लइया हठात् देखिल, एक जायगाय पेन्सिलेर दाग दिया चिह्नित। पड़िल, एवं बुझिल एइ आलोचना एवं नीति-उपदेश ताहादेर दुइ जनकेइ उपलक्ष करिया। ललिता ताहार समाजेर लोकेर काछे प्रतिदिन ये किरूप अपमानित हइतेछे ताहा विनय स्पष्ट बुझिते पारिल। अथच एइ अवमानना हइते विनय ताहाके रक्षा करिबार कोनो चेष्टा करितेछे ना, केवल समाजतत्त्व लइया सूक्ष्म तर्क करिते उद्यत हइयाछे, इहाते ललितार मतो तेजस्विनी रमणीर काछे से ये अवज्ञाभाजन हइबे ताहा विनयेर काछे समुचित बलियाइ बोध हइल। समाजके सम्पूर्ण उपेक्षा करिते ललितार ये किरूप साहस ताहा स्मरण करिया एवं एइ दृप्त नारीर सङ्गे निजेर तुलना करिया से लज्जा अनुभव करिते लागिल।

स्नान सारिया एवं सतीशके आहार कराइया इस्कुले पाठाइया सुचरिता यखन विनयेर काछे आसिल तखन विनय निस्तब्ध हइया बसिया आछे। सुचरिता पूर्वप्रसङ्ग उत्थापन करिल ना। विनय अन्न आहार करिते बसिल किन्तु तत्पूर्वे गण्डूष करिल ना।

हरिमोहिनी कहिलेन, "आच्छा बाछा, तुमि तो हिँदुयानिर किछुइ मान ना— ता हले तुमि ब्राह्म हलेइ वा दोष की छिल।"

विनय मने मने किछु आहत हइया कहिल, "हिँदुयानिके येदिन केवल छोंओया-खाओयार निरर्थक नियम बलेइ जानब सेदिन ब्राह्म बल, खृस्टान बल, मुसलमान बल, या हय एकटा किछु हब। एखनो हिँदुयानिर उपर तत अश्रद्धा हय नि।"

विनय यखन सुचरितार बाड़ि हइते बाहिर हइल तखन ताहार मन अत्यन्त विकल हइया छिल। से येन चारि दिक हइतेइ धाक्का खाइया एकटा आश्रयहीन शून्येर मध्ये आसिया पड़ियाछिल। गोरार पाशे से आपनार पुरातन स्थानटि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिकार करिते पारितेछे ना, ललिताओ ताहाके दूरे ठेलिया राखितेछे—एमन-कि, हरिमोहिनीर सङ्गेओ ताहार हृद्यतार सम्बन्ध अति अल्प समयेर मध्येइ विच्छिन्न हइबार उपक्रम हइयाछे; एकसमय वरदासुन्दरी ताहाके आन्तरिक स्नेह करियाछेन, परेशबाबु एखनो ताहाके स्नेह करेन, किन्तु स्नेहेर परिवर्ते से ताँहादेर घरे एमन अशान्ति आनियाछे ये सेखानेओ ताहार आज आर स्थान नाइ। याहादिगके भालोबासे ताहादेर श्रद्धा ओ आदरेर जन्य विनय चिरदिन काङाल, नानाप्रकारे ताहादेर सौहृद्य आकर्षण करिबार शक्तिओ ताहार यथेष्ट आछे। सेइ विनय आज अकस्मात् ताहार स्नेहप्रीतिर चिराभ्यस्त कक्षपथ हइते एमन करिया विक्षिप्त हइया पड़िल केन, एइ कथाइ से निजेर मने चिन्ता करिते लागिल। एइ-ये सुचरितार बाड़ि हइते बाहिर हइल, एखन कोथाय याइबे ताहा भाबिया पाइतेछे ना। एक समय छिल यखन कोनो चिन्ता ना करिया सहजेइ से गोरार बाड़िर पथे चलिया याइत, किन्तु आज सेखाने याओया ताहार पक्षे पूर्वेर न्याय तेमन स्वाभाविक नहे; यदि याय तबे गोरार सम्मुखे उपस्थित हइया ताहाके चुप करिया थाकिते हइबे—से-नीरवता अत्यन्त दुःसह। ए दिके परेशबाबुर बाड़िओ ताहार पक्षे सुगम नहे।

'केन ये एमन एकटा अस्वाभाविक स्थाने आसिया पौंछिलाम' इहाइ चिन्ता करिते करिते माथा हेंट करिया विनय धीरपदे रास्ता दिया चलिते लागिल। हेदुया पुष्करिणीर काछे आसिया सेखाने एकटा गाछेर तलाय से बसिया पड़िल। ए-पर्यन्त ताहार जीवने छोटोबड़ो ये-कोनो समस्या आसिया उपस्थित हइयाछे बन्धुर सङ्गे आलोचना करिया, तर्क करिया, ताहार मीमांसा करिया लइयाछे; आज से-पन्था नाइ, आज ताहाके एकलाइ भाबिते हइबे।

विनयेर आत्मविश्लेषणशक्तिर अभाव नाइ। बाहिरेर घटनार उपरेइ समस्त दोष चापाइया निजे निष्कृति लओया ताहार पक्षे सहज नहे। ताइ से एकला बसिया बसिया निजेकेइ दायिक करिल। विनय मने मने कहिल, "जिनिसटिओ राखिब मूल्यटिओ दिब ना एमन चतुरता पृथिवीते खाटे ना। एकटा-किछु बाछिया लइते गेलेइ अन्यटाके त्याग करितेइ हय। ये-लोक कोनोटाकेइ मन स्थिर करिया छाड़िते पारे ना, ताहारइ आमार दशा हय, समस्तइ ताहाके खेदाइया देय। पृथिवीते याहारा निजेर जीवनेर पथ जोरेर सङ्गे बाछिया लइते पारियाछे ताहाराइ निश्चिन्त हइयाछे। ये-हतभागा ए-पथओ भालो-बासे ओ-पथओ भालोबासे, कोनोटा हइतेइ निजेके वञ्चित करिते पारे ना, से गम्यस्थान हइतेइ वञ्चित हय—से केवल पथेर कुकुरेर मतोइ घुरिया बेड़ाय।"

व्याधि निरुपण करा कठिन, किन्तु निरुपण हइलेइ ये ताहार प्रतिकार करा सहज हय ताहा नहे। विनयेर बुझिबार शक्ति खुब तीक्ष्ण, करिबार शक्तिरइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभाव ; एइजन्य ए-पर्यन्त से निजेर चेये प्रबल इच्छाशक्ति-सम्पन्न बन्धुर प्रतिइ निर्भर करिया आसियाछे। अवशेषे अत्यन्त संकटेर समय आज से हठात् आविष्कार करियाछे, इच्छाशक्ति निजेर ना थाकिलेओ छोटोखाटो प्रयोजने धारे-बराते काज चालाइया लओया याय, किन्तु आसल दरकारेर बेलाय परेर तहबिल लइया कोनोमतेइ कारबार चले ना।

सूर्य हेलिया पड़ितेइ येखाने छाया छिल सेखाने रौद्र आसिया पड़िल। तखन तरुतल छाड़िया आबार रास्ताय बाहिर हइल। किछु दूरे याइतेइ हठात् शुनिल, "विनयबाबु, विनयबाबु।" परक्षणेइ सतीश आसिया ताहार हात धरिल। विद्यालयेर पड़ा शेष करिया सतीश तखन बाड़ि फिरितेछिल।

सतीश कहिल, "चलुन, विनयबाबु, आमार सङ्गे बाड़ि चलुन।"

विनय कहिल, "से कि हय सतीशबाबु।"

सतीश कहिल, "केन हबे ना।"

विनय कहिल, "एत घन घन गेले तोमार बाड़िर लोके आमाके सह्य करते पारबे केन।"

सतीश विनयेर एइ युक्तिके एकेबारे प्रतिवादेर अयोग्य ज्ञान करिया केवल कहिल, "ना, चलुन।"

ताहादेर परिवारेर सङ्गे विनयेर ये-सम्बन्ध आछे सेइ सम्बन्धे ये कतबड़ो एकटा विप्लव घटियाछे ताहा बालक किछुइ जाने ना, से केवल विनयके भालोबासे, एइ कथा मने करिया विनयेर हृदय अत्यन्त विचलित हइल। परेशबाबुर परिवार ताहार काछे ये एकटि स्वर्गलोक सृष्टि करियाछिल ताहार मध्ये केवल एइ बालकटितेइ आनन्देर सम्पूर्णता अक्षुण्ण आछे ; एइ प्रलयेर दिने ताहार चित्ते कोनो संशयेर मेघ छाया फेले नाइ, कोनो समाजेर आघात भाङन धराइते चेष्टा करे नाइ। सतीशेर गला धरिया विनय कहिल, "चलो भाइ, तोमाके तोमादेर बाड़िर दरजा पर्यन्त पौंछे दिइ।"

सतीशेर जीवने शिशुकाल हइते सुचरिता ओ ललितार ये स्नेह ओ आदर सञ्चित हइया आछे सतीशके बाहु द्वारा वेष्टन करिया विनय येन सेइ माधुर्येर स्पर्श लाभ करिल।

समस्त पथ सतीश ये बहुतर अप्रासङ्गिक कथा अनर्गल बकिया गेल ताहा विनयेर काने मधुवर्षण करिते लागिल। बालकेर चित्तेर सरलतार संस्रवे ताहार निजेर जीवनेर जटिल समस्याके किछुक्षणेर जन्य से एकेबारे भुलिया थाकिते पारिल।

परेशबाबुर बाड़िर सम्मुख दियाइ सुचरितार बाड़ि याइते हय। परेशबाबुर एकतलार बसिबार घर रास्ता हइतेइ देखिते पाओया याय। सेइ घरेर सम्मुखे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसितेइ विनय से दिके एकबार मुख ना तुलिया थाकिते पारिल ना ; देखिल ताँहार टेबिलेर सम्मुखे परेशबाबु बसिया आछेन, कोनो कथा कहितेछेन किना बुझा गेल ना ; आर ललिता रास्तार दिके पिठ करिया परेशबाबुर चौकिर काछे एकटि छोटो बेतेर मोड़ार उपर छात्रीटिर मतो निस्तब्ध हइया आछे ।

सुचरितार बाड़ि हइते फिरिया आसिया ये-क्षोभे ललितार हृदयके असह्यरूपे अशान्त करिया तुलियाछिल से ताहा निवृत्त करिबार आर कोनो उपायइ जानित ना, से ताइ आस्ते आस्ते परेशबाबुर काछे आसिया बसियाछिल । परेशबाबुर मध्ये एमनि एकटि शान्तिर आदर्श छिल ये असहिष्णु ललिता निजेर चाञ्चल्य दमन करिबार जन्य माझे माझे ताँहार काछे आसिया चुप करिया बसिया थाकित । परेशबाबु जिज्ञासा करितेन, "की ललिता ।" ललिता कहित, "किछु नय बाबा । तोमार एइ घरटि बेश ठाण्डा ।"

आज ललिता आहत हृदयटि लइया ताँहार काछे आसियाछे, ताहा परेशबाबु स्पष्ट बुझियाछिलेन । ताँहार निजेर मध्येओ एकटि वेदना प्रच्छन्न हइया छिल । ताइ तिनि धीरे धीरे एमन एकटि कथा पाड़ियाछिलेन याहाते व्यक्तिगत जीवनेर तुच्छ सुखदुःखेर भारके एकेबारे हालका करिया दिते पारे ।

पिता ओ कन्यार एइ विश्रब्ध आलोचनार दृश्यटि देखिया मुहूर्तेर जन्य विनयेर गतिरोध हइया गेल––सतीश की बलितेछिल ताहा ताहार काने गेल ना । सतीश तखन ताहाके युद्धविद्या सम्बन्धे एकटा अत्यन्त दुरूह प्रश्न जिज्ञासा करियाछिल । एक दल बाघके अनेकदिन धरिया शिक्षा दिया स्वपक्षेर सैन्यदलेर प्रथम सारे राखिया युद्ध करिले ताहाते जयेर सम्भावना किरूप, इहाइ ताहार प्रश्न छिल । एतक्षण ताहादेर प्रश्नोत्तर अबाधे चलिया आसितेछिल, हठात् एइबार बाधा पाइया सतीश विनयेर मुखेर दिके चाहिल, ताहार परे विनयेर दृष्टि लक्ष्य करिया परेशबाबुर घरेर दिके चाहियाइ से उच्चैःस्वरे बलिया उठिल, "ललितादिदि, ललितादिदि, एइ देखो आमि विनयबाबुके रास्ता थेके धरे एनेछि ।"

विनय लज्जाय घामिया उठिल ; घरेर मध्ये एक मुहूर्ते ललिता चौकि छाड़िया उठिया दाँड़ाइल, परेशबाबु रास्तार दिके मुख फिराइया देखिलेन–– सबसुद्ध एकटा काण्ड हइया गेल ।

तखन विनय सतीशके विदाय करिया परेशबाबुर बाड़िते उठिल । ताँहार घरे प्रवेश करिया देखिल, ललिता चलिया गेछे । ताहाके सकलेइ शान्तिभङ्गकारी दस्युर मतो देखितेछे एइ मने करिया से संकुचित हइया चौकिते बसिल ।

शारीरिक स्वास्थ्य इत्यादि सम्बन्धे साधारण शिष्टालाप शेष हइतेइ विनय एकेबारेइ आरम्भ करिल, "आमि यखन हिन्दुसमाजेर आचार-विचारके श्रद्धार सङ्गे मानिने एवं प्रतिदिनइ ता लङ्घन करे थाकि तखन ब्राह्मसमाजे आश्रय ग्रहण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कराइ आमार कर्तव्य बले मने करछि। आपनार काछ थेकेइ दीक्षा ग्रहण करि, एइ आमार वासना।"

एइ वासना एइ संकल्प आर पनेरो मिनिट पूर्वेओ विनयेर मने स्पष्ट आकारे छिल ना। परेशबाबु क्षणकाल स्तब्ध थाकिया कहिलेन, "भालो करे सकल कथा चिन्ता करे देखेछ तो?"

विनय कहिल, "एर मध्ये आर तो किछु चिन्ता करबार नेइ, केवल न्याय-अन्यायटाइ भेबे देखबार विषय। सेटा खुब सादा कथा। आमरा ये-शिक्षा पेयेछि ताते केवल आचारविचारकेइ अलङ्घनीय धर्म बले आमि कोनोमतेइ अकपटचित्ते मानते पारि ने। सेइजन्येइ आमार व्यवहारे पदेपदे नाना असंगति प्रकाश पाय, यारा श्रद्धार सङ्गे हिँदुयानिके आश्रय करे आछे तादेर सङ्गे जड़ित थेके आमि तादेर केवल आघातइ दिइ। एटा ये आमार पक्षे नितान्त अन्याय हच्छे ताते आमार मने कोनो सन्देह नेइ। एमन स्थले आर-कोनो कथा चिन्ता ना करे एइ अन्याय परिहार करबार जन्येइ आमाके प्रस्तुत हते हबे। नइले निजेर प्रति सम्मान राखते पारब ना।"

परेशबाबुके बुझाइबार जन्य एत कथार प्रयोजन छिल ना, किन्तु ए-सब कथा निजेकेइ जोर दिबार जन्य। से ये एकटा न्याय-अन्यायेर युद्धेर मध्येइ पड़िया गेछे एवं एइ युद्धे समस्त परित्याग करिया न्यायेर पक्षेइ ताहाके जयी हइते हइबे, एइ कथा बलिया ताहार वक्ष प्रसारित हइया उठिल। मनुष्यत्वेर मर्यादा तो राखिते हइबे।

परेशबाबु जिज्ञासा करिलेन, "धर्मविश्वास सम्बन्धे ब्राह्मसमाजेर सङ्गे तोमार मतेर ऐक्य आछे तो?"

विनय एकटुक्षण चुप करिया थाकिया कहिल, "आपनाके सत्य कथा बलि, आगे मने करतुम आमार बुझि एकटा किछु धर्मविश्वास आछे; ता निये अनेक लोकेर सङ्गे अनेक झगड़ाओ करेछि, किन्तु आज आमि निश्चय जेनेछि धर्मविश्वास आमार जीवनेर मध्ये परिणति लाभ करे नि। एटुकु ये बुझेछि से आपनाके देखे। धर्मे आमार जीवनेर कोनो सत्य प्रयोजन घटे नि एवं तार प्रति आमार सत्य विश्वास जन्मे नि बलेइ आमि कल्पना एवं युक्तिकौशल दिये एतदिन आमादेर समाजेर प्रचलित धर्मके नानाप्रकार सूक्ष्म व्याख्या द्वारा केवलमात्र तर्कनैपुण्ये परिणत करेछि। कोन् धर्म ये सत्य ता भावबार आमार कोनो दरकारइ हय ना; ये-धर्मके सत्य बलले आमार जित हय आमि ताकेइ सत्य बले प्रमाण करे बेड़ियेछि। यतइ प्रमाण करा शक्त हयेछे ततइ प्रमाण करे अहंकार बोध करेछि। कोनोदिन आमार मने धर्मविश्वास सम्पूर्ण सत्य ओ स्वाभाविक हये उठबे किना ता आजओ आमि बलते पारि ने, किन्तु अनुकूल अवस्था एवं दृष्टान्तेर मध्ये पड़ले से दिके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमार अग्रसर हबार सम्भावना आछे ए कथा निश्चित। अन्तत ये जिनिस भितरे भितरे आमार बुद्धिके पीड़ित करे चिरजीवन तारइ जयपताका वहन करे बेड़ाबार हीनता थेके उद्धार पाब।"

परेशबाबुर सङ्गे कथा कहिते कहितेइ विनय निजेर वर्तमान अवस्थार अनुकूल युक्तिगुलिके आकार दान करिया तुलिते लागिल। एमनि उत्साहेर सङ्गे करिते लागिल येन अनेकदिनेर तर्कवितर्केर पर से एइ स्थिर सिद्धान्ते आसिया दृढ़ प्रतिष्ठा लाभ करियाछे।

तबु परेशबाबु ताके आरओ किछुदिन समय लइबार जन्य पीड़ापीड़ि करिलेन। ताहाते विनय भाबिल, ताहार दृढ़तार उपर परेशबाबुर बुझि संशय आछे। सुतरां ताहार जेद ततइ बाड़िया उठिते लागिल। ताहार मन ये एकटि निःसन्दिग्ध क्षेत्रे आसिया दाँड़ाइयाछे, किछुतेइ ताहार आर किछुमात्र हेलिबार टलिबार सम्भावना नाइ, इहाइ बार बार करिया जानाइल। उभय पक्ष हइतेइ ललितार सङ्गे विवाहेर कोनो प्रसङ्गइ उठिल ना।

एमन समय गृहकर्म उपलक्षे वरदासुन्दरी सेखाने प्रवेश करिलेन। येन विनय घरे नाइ, एमनि भावे काज सारिया तिनि चलिया याइबार उपक्रम करिलेन। विनय मने करियाछिल, परेशबाबु एखनइ वरदासुन्दरीके डाकिया विनयेर नूतन खबरटि ताँहाके जानाइबेन। किन्तु परेशबाबु किछुइ बलिलेन ना। वस्तुत एखनो बलिबार समय हइयाछे बलिया तिनि मनेइ करेन नाइ। ए कथाटि सकलेर काछेइ गोपन राखिते तिनि इच्छुक छिलेन। किन्तु वरदासुन्दरी विनयेर प्रति यखन सुस्पष्ट अवज्ञा ओ क्रोध प्रकाश करिया चलिया याइते उद्यत हइलेन, तखन विनय आर थाकिते पारिल ना। से गमनोन्मुख वरदासुन्दरीर पायेर काछे माथा नत करिया प्रणाम करिल एवं कहिल, "आमि ब्राह्मसमाजे दीक्षा नेबार प्रस्ताव निये आज आपनादेर काछे एसेछि। आमि अयोग्य किन्तु आपनारा आमाके योग्य करे नेबेन, एइ आमार भरसा।"

शुनिया विस्मित वरदासुन्दरी फिरिया दाँड़ाइलेन एवं धीरे धीरे घरे आसिया प्रवेश करिया बसिलेन। तिनि जिज्ञासु दृष्टिते परेशबाबुर मुखेर दिके चाहिलेन।

परेश कहिलेन, "विनय दीक्षा ग्रहण करबार जन्ये अनुरोध करछेन।"

शुनिया वरदासुन्दरीर मने एकटा जयलाभेर गर्व उपस्थित हइल बटे, किन्तु सम्पूर्ण आनन्द हइल ना केन। ताँहार भितरे भितरे भारि एकटा इच्छा हइयाछिल, एबार येन परेशबाबुर रीतिमतो एकटा शिक्षा हय। ताँहार स्वामीके प्रचुर अनुताप करिते हइबे एइ भविष्यद्वाणी तिनि खुब जोरेर सङ्गे बार बार घोषणा करियाछिलेन, सेइजन्य सामाजिक आन्दोलने परेशबाबु यथेष्ट विचलित हइते-छिलेन ना देखिया वरदासुन्दरी मने मने अत्यन्त असहिष्णु हइया उठितेछिलेन;

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हेनकाले समस्त संकटेर एमन सुचारुरूपे मीमांसा हइया याइबे इहा वरदासुन्दरीर काछे विशुद्ध प्रीतिकर हय नाइ। तिनि मुख गम्भीर करिया कहिलेन, "एइ दीक्षार प्रस्तावटा आर-किछुदिन आगे यदि हत ता हले आमादेर एत अपमान एत दुःख पेते हत ना।"

परेशबाबु कहिलेन, "आमादेर दुःखकष्ट-अपमानेर तो कोनो कथा हच्छे ना, विनय दीक्षा निते चाच्छेन।"

वरदासुन्दरी बलिया उठिलेन, "शुधु दीक्षा ?"

विनय कहिलेन, "अन्तर्यामी जानेन आपनादेर दुःख-अपमान समस्तइ आमार।"

परेश कहिलेन, "देखो विनय, तुमि धर्मे दीक्षा निते ये चाच्छ सेटाके एकटा अवान्तर विषय कोरो ना। आमि तोमाके पूर्वेओ एकदिन बलेछि, आमरा एकटा कोनो सामाजिक संकटे पड़ेछि कल्पना करे तुमि कोनो गुरुतर व्यापारे प्रवृत्त होयो ना।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "से तो ठिक कथा। किन्तु ताओ बलि, आमादेर सकलके जाले जड़िये फेले चुप करे बसे थाकाओ ओंर कर्तव्य नय।"

परेशबाबु कहिलेन, "चुप करे ना थेके चञ्चल हये उठले जाले आरओ बेशि करे ग्रन्थि पड़े। किछु एकटा कराकेइ ये कर्तव्य बले ता नय, अनेक समये किछु ना कराइ हच्छ सकलेर चेये बड़ो कर्तव्य।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "ता हबे, आमि मूर्ख मानुष, सब कथा भालो बुझते पारि ने। एखन की स्थिर हल सेइ कथाटा जेने येते चाइ——आमार अनेक काज आछे।"

विनय कहिल, "परशु रविवारेइ आमि दीक्षा ग्रहण करब। आमार इच्छा यदि परेशबाबु——"

परेशबाबु कहिलेन, "ये-दीक्षार कोनो फल आमार परिवार आशा करते पारे से-दीक्षा आमार द्वारा हते पारबे ना। ब्राह्म-समाजे तोमाके आवेदन करते हबे।"

विनयेर मन तत्क्षणात् संकुचित हइया गेल। ब्राह्मसमाजे दस्तुरमत दीक्षार जन्य आवेदन करार मतो मनेर अवस्था तो ताहार नहे——विशेषत ललिताके लइया ये-ब्राह्मसमाजे ताहार सम्बन्धे एत आलोचना हइया गेछे। कोन् लज्जाय की भाषाय से चिठि लिखिबे। से-चिठि यखन ब्राह्म-पत्रिकाय प्रकाशित हइबे तखन से केमन करिया माथा तुलिबे। से-चिठि गोरा पड़िबे, आनन्दमयी पड़िबेन। से-चिठिर सङ्गे आर तो कोनो इतिहास थाकिबे ना——ताहाते केवल एइ कथाटुकुइ प्रकाश पाइबे ये, ब्राह्मधर्मे दीक्षा ग्रहण करिबार जन्य विनयेर चित्त अकस्मात् पिपासु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हइया उठियाछे। कथाटा तो एतखानि सत्य नहे—ताहाके आरओ किछुर सङ्गे जड़ित करिया ना देखिले ताहार तो लज्जारक्षार आवरणटुकु थाके ना।

विनयके चुप करिया थाकिते देखिया वरदासुन्दरी भय पाइलेन। तिनि कहिलेन, "उनि ब्राह्मसमाजेर तो काउके चेनेन ना, आमराइ सब बन्दोबस्त करे देब। आमि आज एखनइ पानुबाबुके डेके पाठाच्छि। आर तो समय नेइ, परशु ये रविवार।"

एमन समय देखा गेल, सुधीर घरेर सामने दिया उपरेर तलाय याइतेछे। वरदासुन्दरी ताहाके डाकिया कहिलेन, "सुधीर, विनय परशु आमादेर समाजे दीक्षा नेबेन।"

सुधीर अत्यन्त खुशि हइया उठिल। सुधीर मने मने विनयेर एकजन विशेष भक्त छिल; विनयके ब्राह्मसमाजे पाओया याइबे शुनिया ताहार भारि उत्साह हइल। विनय येरकम चमत्कार इंरेजि लिखिते पारे, ताहार येरकम विद्याबुद्धि, ताहाते ब्राह्मसमाजे योग ना देओयाइ ताहार पक्षे अत्यन्त असंगत बलिया सुधीरेर बोध हइत। विनयेर मतो लोक ये कोनोमतेइ ब्राह्मसमाजेर बाहिरे थाकिते पारे ना, इहारइ प्रमाण पाइया ताहार वक्ष स्फीत हइया उठिल। से कहिल, "किन्तु परशु रविवारेर मध्येइ कि हये उठबे। अनेकेइ खबर जानते पारबे ना।"

सुधीरेर इच्छा, विनयेर एइ दीक्षाके एकटा दृष्टान्तेर मतो सर्वसाधारणेर सम्मुखे घोषणा करा हय।

वरदासुन्दरी कहिलेन, "ना ना, एइ रविवारेइ हये याबे। सुधीर, तुमि दौड़े याओ, पानुबाबुके शीघ्र डेके आनो।"

ये-हतभाग्येर दृष्टान्तेर द्वारा सुधीर ब्राह्मसमाजके अजेय-शक्तिशाली बलिया सर्वत्र प्रचार करिबार कल्पनाय उत्तेजित हइया उठितेछिल, ताहार चित्त तखन संकुचित हइया एकेबारे विन्दुवत् हइया आसियाछिल। ये-जिनिसटा मने मने केवल तर्के युक्तिते विशेष किछुइ नहे ताहारइ बाह्य चेहाराटा देखिया विनय व्याकुल हइया पड़िल।

पानुबाबुके डाक पड़ितेइ विनय उठिया पड़िल। वरदासुन्दरी कहिलेन, "एकटु बोसो, पानुबाबु एखनइ आसबेन, देरि हबे ना।"

विनय कहिल, "ना। आमाके माप करबेन।"

से एइ वेष्टन हइते दूरे सरिया गिया फाँकाय सकल कथा भालो करिया चिन्ता करिबार अवसर पाइले बाँचे।

विनय उठितेइ परेशबाबु उठिलेन एवं ताहार काँधेर उपर एकटा हात राखिया कहिलेन, "विनय, ताड़ाताड़ि किछु कोरो ना—शान्त हये स्थिर हये सकल कथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिन्ता करे देखो। निजेर मन सम्पूर्ण ना बुझे जीवनेर एत बड़ो एकटा व्यापारे प्रवृत्त होयो ना।"

वरदासुन्दरी ताँहार स्वामीर प्रति मने मने अत्यन्त असन्तुष्ट हइया कहिलेन, "गोड़ाय केउ भेबेचिन्ते काज करे ना, अनर्थ बाधिये बसे, तार परे यखन एकेबारे दम आटके आसे तखन बलेन, 'बसे बसे भाबो।' तोमरा स्थिर हये बसे भाबते पार, किन्तु आमादेर ये प्राण बेरिये गेल।"

विनयेर सङ्गे सङ्गे सुधीर रास्ताय बाहिर हइया पड़िल। रीतिमत आहारे बसिया खाइबार पूर्वेइ चाखिबार इच्छा येमन, सुधीरेर सेइरूप चञ्चलता उपस्थित हइयाछे। ताहार इच्छा एखनइ विनयके बन्धुसमाजे धरिया लइया गिया सुसंवाद दिया आनन्द-उत्सव आरम्भ करिया देय, किन्तु सुधीरेर एइ आनन्द-उच्छ्वासेर अभिघाते विनयेर मन आरओ दमिया याइते लागिल। सुधीर यखन प्रस्ताव करिल, "विनयबाबु, आसुन-ना आमरा दुजने मिलेइ पानुबाबुर काछे याइ", तखन से-कथाय कर्णपात ना करिया जोर करिया ताहार हात छाड़ाइया विनय चलिया गेल।

किछु दूरे याइतेइ देखिल, अविनाश ताहार दलेर दुइ-एकजन लोकेर सङ्गे हन हन करिया कोथाय चलियाछे। विनयके देखियाइ अविनाश कहिल, "एइ-ये विनयबाबु, बेश हयेछे। चलुन आमादेर सङ्गे।"

विनय जिज्ञासा करिल, "कोथाय याच्छ।"

अविनाश कहिल, "काशिपुरेर बागान ठिक करते याच्छि। सेइखाने गौरमोहनबाबुर प्रायश्चित्तेर सभा बसबे।"

विनय कहिल, "ना, आमार एखन याबार जो नेइ।"

अविनाश कहिल, "से की कथा। आपनारा कि बुझते पारछेन एटा कत बड़ो एकटा व्यापार हच्छे। नइले गौरमोहनबाबु कि एमन एकटा अनावश्यक प्रस्ताव करतेन। एखनकार दिने हिन्दुसमाजके निजेर जोर प्रकाश करते हबे। एइ गौरमोहनबाबुर प्रायश्चित्ते देशेर लोकेर मने कि एकटा कम आन्दोलन हबे। आमरा देशविदेश थेके बड़ो बड़ो ब्राह्मण पण्डित सबाइके निमन्त्रण करे आनब। एते समस्त हिन्दुसमाजेर उपरे खुब एकटा काज हबे। लोके बुझते पारबे, एखनो आमरा बेंचे आछि। बुझते पारबे, हिन्दुसमाज मरबार नय।"

अविनाशेर आकर्षण एड़ाइया विनय चलिया गेल।

५६

हारानबाबुके यखन वरदासुन्दरी डाकिया सकल कथा बलिलेन तखन तिनि किछुक्षण गम्भीर हइया बसिया रहिलेन एवं कहिलेन, "ए-सम्बन्धे एकबार ललितार सङ्गे आलोचना करे देखा कर्तव्य।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता आसिले हारानबाबु ताँहार गाम्भीर्येर मात्रा शेष सप्तक पर्यन्त चड़ाइया कहिलेन, "देखो ललिता, तोमार जीवने खुब एकटा दायित्वेर समय एसे उपस्थित हयेछे। एक दिके तोमार धर्म, आर-एक दिके तोमार प्रवृत्ति, एर मध्ये तोमाके पथ निर्वाचिन करे निते हबे।"

एइ बलिया एकटु थामिया हारानबाबु ललितार मुखेर दिके दृष्टि स्थापन करिलेन। हारानबाबु जानितेन, ताँहार एइ न्यायाग्निदीप्त दृष्टिर सम्मुखे भीरुता कम्पित हय, कपटता भस्मीभूत हइया याय—ताँहार एइ तेजोमय आध्यात्मिक दृष्टि ब्राह्मसमाजेर एकटि मूल्यवान सम्पत्ति।

ललिता कोनो कथा बलिल ना, चुप करिया रहिल।

हारानबाबु कहिलेन, "तुमि बोध हय शुनेछ, तोमार अवस्थार प्रति दृष्टि करे अथवा ये कारणेइ होक, विनयबाबु अवशेषे आमादेर समाजे दीक्षा निते राजि हयेछेन।"

ललिता ए संवाद पूर्वे शुने नाइ, शुनिया ताहार मने की भाव हइल ताहाओ प्रकाश करिल ना। ताहार दुइ चक्षु दीप्त हइया उठिल, से पाथरेर मूर्तिर मतो स्थिर हइया बसिया रहिल।

हारानबाबु कहिलेन, "निश्चयइ परेशबाबु विनयेर एइ बाध्यताय खुबइ खुशि हयेछेन। किन्तु, एते यथार्थ खुशि हबार कोनो विषय आछे कि ना से-कथा तोमाकेइ स्थिर करते हबे। सेइजन्य आज आमि तोमाके ब्राह्मसमाजेर नामे अनुरोध करछि, निजेर उन्मत्त प्रवृत्तिके एक पाशे सरिये राखो एवं केवलमात्र धर्मेर दिके दृष्टिरक्षा करे निजेर हृदयके एइ प्रश्न जिज्ञासा करो, एते खुशि हवार कि यथार्थ कारण आछे।"

ललिता एखनो चुप करिया रहिल। हारानबाबु मने करिलेन, खुब काज हइतेछे। द्विगुण उत्साहेर सहित बलिलेन, "दीक्षा! दीक्षा ये जीवनेर कि पवित्र मुहूर्त से कि आज आमाके बलते हबे! सेइ दीक्षाके कलुषित करबे! सुख सुविधा वा आसक्तिर आकर्षणे आमरा ब्राह्मसमाजे असत्यके पथ छेड़े देब—कपटताके आदर करे आह्वान करे आनब! बलो ललिता, तोमार जीवनेर सङ्गे ब्राह्मसमाजेर एइ दुर्गतिर इतिहास कि चिरदिनेर जन्ये जड़ित हये थाकबे।"

एखनो ललिता कोनो कथा बलिल ना, चौकिर हातटा मुठा दिया चापिया धरिया स्थिर हइया बसिया रहिल। हारानबाबु कहिलेन, "आसक्तिर छिद्र दिये दुर्बलता ये मानुषके किरकम दुर्निवारभावे आक्रमण करे ता अनेक देखेछि एवं मानुषेर दुर्बलताके ये किरकम करे क्षमा करते हय ताओ आमि जानि, किन्तु ये-दुर्बलता केवल निजेर जीवनके नय, शतसहस्र लोकेर जीवनेर आश्रयके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकेबारे भित्तिते गिये आघात करे, तुमिइ बलो ललिता, ताके कि एक मुहूर्तेर जन्य क्षमा करा याय। ताके क्षमा करबार अधिकार कि ईश्वर आमादेर दियेछेन।"

ललिता चौकि छाड़िया उठिया कहिल, "ना ना, पानुबाबु, आपनि क्षमा करबेन ना। आपनार आक्रमणेइ पृथिवीसुद्ध लोकेर अभ्यास हये गेछे—आपनार क्षमा बोध हय सकलेर पक्षे एकेबारे असह्य हबे।"

एइ बलिया घर छाड़िया ललिता चलिया गेल।

वरदासुन्दरी हारानबाबुर कथाय उद्विग्न हइया उठिलेन। तिनि कोनो-मतेइ एखन विनयके छाड़िया दिते पारेन ना। तिनि हारानबाबुर काछे अनेक व्यर्थ अनुनयविनय करिया, अवशेषे क्रुद्ध हइया, ताँहाके विदाय दिलेन। ताँहार मुशकिल हइल एइ ये, परेशबाबुकेओ तिनि निजेर पक्षे पाइलेन ना, आबार हारान-बाबुकेओ ना। एमन अभावनीय अवस्था केह कखनो कल्पनाओ करिते पारित ना। हारानबाबुर सम्बन्धे पुनराय वरदासुन्दरीर मत परिवर्तन करिबार समय आसिल।

यतक्षण दीक्षाग्रहणेर व्यापारटा विनय झापसा करिया देखितेछिल ततक्षण खुब जोरेर सङ्गेइ से आपनार संकल्प प्रकाश करितेछिल। किन्तु यखन देखिल एजन्य ब्राह्मसमाजे ताहाके आवेदन करिते हइबे, एवं हारानबाबुर सङ्गे ए लइया परामर्श चलिबे, तखन एइ अनावृत प्रकाश्यतार विभीषिका ताहाके एकान्त कुण्ठित करिया तुलिल। कोथाय गिया काहार सङ्गे से ये परामर्श करिबे किछुइ भाबिया पाइल ना, एमन-कि आनन्दमयीर काछे याओयाओ ताहार पक्षे असम्भव हइल। रास्ताय घुरिया बेड़ाइबार मतो शक्तिओ ताहार छिल ना। ताइ से आपनार जनहीन बासार मध्ये गिया उपरेर घरे तक्तपोशेर उपर शुइया पड़िल।

सन्ध्या हइया आसियाछे। अन्धकार घरे चाकर बाति आनितेइ ताहाके वारण करिबे मने करितेछे एमन समये विनय नीचे हइते आह्वान शुनिल, "विनयबाबु, विनयबाबु!"

विनय येन बाँचिया गेल। से येन मरुभूमिते तृष्णार जल पाइल। एइ मुहूर्ते एकमात्र सतीश छाड़ा आर-केहइ ताहाके आराम दिते पारित ना। विनयेर निर्जीवता छुटिया गेल। "की भाइ सतीश" बलिया से बिछाना हइते लाफाइया उठिया जुता पाये ना दियाइ द्रुतपदे सिँड़ि दिया नीचे नामिया गेल।

देखिल, ताहार छोटो उठानटिते सिँड़िर सामनेइ सतीशेर सङ्गे वरदासुन्दरी दाँड़ाइया आछेन; आबार सेइ समस्या, सेइ लड़ाइ। शशव्यस्त हइया विनय सतीश ओ वरदासुन्दरीके उपरेर घरे लइया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वरदासुन्दरी सतीशके कहिलेन, "सतीश, या तुइ ओइ बारान्दाय गिये एकटु ब'स् गे या।"

सतीशेर एइ निरानन्द निर्वासनदण्डे व्यथित हइया विनय ताहाके कतकगुला छबिर बइ बाहिर करिया दिया पाशेर घरे आलो ज्वालिया बसाइया दिल।

वरदासुन्दरी यखन बलिलेन, "विनय, तुमि तो ब्राह्मसमाजेर काउके जान ना; आमार हाते एकखाना चिठि लिखे दाओ, आमि काल सकालेइ निजे गिये सम्पादक-महाशयके दिये समस्त बन्दोबस्त करे देब, याते परशु रविवारेइ तोमार दीक्षा हये याय। तोमाके आर-किछुइ भावते हबे ना"—तखन विनय कोनो कथाइ बलिते पारिल ना। से ताँहार आदेश अनुसारे एकखानि चिठि लिखिया वरदासुन्दरीर हाते दिया दिल। याहा हउक एकटा कोनो पथे एमन करिया बाहिर हइया पड़ा ताहार दरकार हइयाछिल ये, फिरिबार वा द्विधा करिबार कोनो उपायमात्र ना थाके।

ललितार सङ्गे विवाहेर कथाटाओ वरदासुन्दरी एकटुखानि पाड़िया राखिलेन।

वरदासुन्दरी चलिया गेले विनयेर मने भारि एकटा येन वितृष्णा बोध हइते लागिल। एमन-कि, ललितार स्मृतिओ ताहार मनेर मध्ये केमन एकटु बेसुरे बाजिते लागिल। ताहार मने हइते लागिल, येन वरदासुन्दरीर एइ अशोभन व्यस्ततार सङ्गे ललितारओ एकटा कोथाओ योग आछे। निजेर प्रति श्रद्धाह्रासेर सङ्गे सङ्गे सकलेरइ प्रति ताहार श्रद्धा येन नामिया पड़िते लागिल।

वरदासुन्दरी बाड़ि फिरिया आसियाइ मने करिलेन, ललिताके तिनि आज खुशि करिया दिबेन। ललिता ये विनयके भालोबासे ताहा तिनि निश्चय बुझियाछिलेन। सेइजन्यइ ताहादेर विवाह लइया समाजे गोल बाधियाछिल। तखन तिनि निजे छाड़ा आर-सकलकेइ एजन्य अपराधी करियाछिलेन। ललितार सङ्गे कयदिन तिनि कथावार्ता एकरकम बन्ध करिया दियाछिलेन। सेइजन्य आज यखन एकटा किनारा हइल सेटा ये अनेकटा ताँहार जन्यइ हइल एइ गौरवटुकु ललितार काछे प्रकाश करिया ताहार सङ्गे सन्धि स्थापन करिते व्यस्त हइया उठिलेन। ललितार बाप तो समस्त माटि करियाइ दियाछिलेन। ललिता निजेओ तो विनयके सिधा करिते पारे नाइ। पानुबाबुर काछ हइतेओ तो कोनो साहाय्य पाओया गेल ना। एकला वरदासुन्दरी समस्त ग्रन्थि छेदन करियाछेन। हाँ हाँ! एकजन मेयेमानुष याहा पारे पाँच जन पुरुषे ताहा पारे ना।

वरदासुन्दरी बाड़ि फिरिया आसिया शुनिलेन, ललिता आज सकाल सकाल शुइते गेछे; ताहार शरीर तेमन भालो नाइ। तिनि मने मने हासिया कहिलेन, 'शरीर भालो करिया दितेछि।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकटा बाति हाते करिया ताहार अन्धकार शयनगृहे प्रवेश करिया देखिलेन, ललिता बिछानाय एखनो शोय नाइ एकटा केदाराय हेलान दिया पड़िया आछे।

ललिता तत्क्षणात् उठिया बसिया जिज्ञासा करिल, "मा, तुमि कोथाय गियेछिले।"

ताहार स्वरेर मध्ये एकटा तीव्रता छिल। से खबर पाइयाछिल तिनि सतीशके लइया विनयेर बासाय गियाछिलेन।

वरदासुन्दरी कहिलेन, "आमि विनयेर ओखाने गियेछिलेम।"

"केन।"

केन! वरदासुन्दरीर मने मने एकटु राग हइल। 'ललिता मने करे आमि केवल ओर शत्रुताइ करितेछि! अकृतज्ञ!'

वरदासुन्दरी कहिलेन, "एइ देखो केन।" बलिया विनयेर सेइ चिठिखाना ललितार चोखेर सामने मेलिया धरिलेन। से-चिठि पड़िया ललितार मुख लाल हइया उठिल। वरदासुन्दरी निजेर कृतित्व-प्रचारेर जन्य किछु अत्युक्ति करियाइ जानाइलेन ये, ए चिठि कि विनयेर हात हइते सहजे बाहिर हइते पारित। तिनि जाँक करिया बलिते पारेन, ए काज आर-कोनो लोकेरइ साध्येर मध्येइ छिल ना।

ललिता दुइ हाते मुख ढाकिया ताहार केदाराय शुइया पड़िल। वरदासुन्दरी मने करिलेन, ताँहार सम्मुखे प्रबल हृदयावेग प्रकाश करिते ललिता लज्जा करितेछे। घर हइते बाहिर हइया गेलेन।

परदिन सकालवेलाय चिठिखानि लइया ब्राह्मसमाजे याइबार समय देखिलेन से-चिठि के टुकरा टुकरा करिया छिँड़िया राखियाछे।

५७

अपराह्ने सुचरिता परेशबाबुर काछे याइबे बलिया प्रस्तुत हइतेछिल एमन समय बेहारा आसिया खबर दिल एकजन बाबु आसियाछेन।

"के बाबु? विनयबाबु?"

बेहरा कहिल, "ना, खुब गौरवर्ण, लम्बा एकटि बाबु।"

सुचरिता चमकिया उठिया कहिल, "बाबुके उपरेर घरे एने बसाओ।"

आज सुचरिता की कापड़ परियाछे ओ केमन करिया परियाछे एतक्षण ताहा चिन्ताओ करे नाइ। एखन आयनार सम्मुखे दाँड़ाइया कापड़खाना किछुतेइ ताहार पछन्द हइल ना। तखन बदलाइबार समय छिल ना। कम्पित हस्ते कापड़ेर आँचले, चुले, एकटु-आधटु पारिपाट्य साधन करिया स्पन्दित हृत्पिण्ड लइया सुचरिता घरेर मध्ये प्रवेश करिल। ताहार टेबिलेर उपर गोरार रचनावली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़िया छिल, से-कथा ताहार मनेइ छिल ना। ठिक सेइ टेबिलेर सम्मुखेइ चौकिते गोरा बसिया आछे। बइगुलि निर्लज्जभावे ठिक गोरार चोखेर उपरे पड़िया आछे—सेगुलि ढाका दिवार वा सराइबार कोनो उपायमात्र नाइ।

"मासिमा आपनार सङ्गे देखा करबार जन्य अनेकदिन थेके व्यस्त हये रयेछेन, ताँके खबर दिइ गे।" बलिया सुचरिता घरे प्रवेश करियाइ चलिया गेल—से एकला गोरार सङ्गे आलाप करिबार मतो जोर पाइल ना।

किछुक्षण परे सुचरिता हरिमोहिनीके सङ्गे करिया लइया आसिल। किछु-काल हइते हरिमोहिनी विनयेर काछ हइते गोरार मत विश्वास ओ निष्ठा एवं ताहार जीवनेर कथा शुनिया आसितेछेन। प्राय माझे माझे ताँहार अनुरोधे सुचरिता मध्याह्ने ताँहाके गोरार लेखा पड़िया शुनाइयाछेन। यदिओ से-सब लेखा तिनि ये समस्तइ ठिक बुझिते पारितेन ताहा नहे एवं ताहाते ताँहार निद्राकर्षणेरइ सुविधा करिया दित, तबु एटुकु मोटामुटि बुझिते पारितेन ये, शास्त्र ओ लोकाचारेर पक्ष लइया गोरा एखनकार कालेर आचारहीनतार विरुद्धे लड़ाइ करितेछे। आधुनिक इंरेजि-शेखा छेलेर पक्षे इहा अपेक्षा आश्चर्य एवं इहा अपेक्षा गुणेर कथा आर की हइते पारे। ब्राह्मपरिवारेर मध्ये प्रथम यखन विनयके देखियाछिलेन तखन विनयइ ताँहाके यथेष्ट तृप्तिदान करियाछिल। किन्तु क्रमे सेटुकु अभ्यास हइया याओयार पर निजेर बाड़िते यखन तिनि विनयके देखिते लागिलेन तखन ताहार आचारेर छिद्रगुलिइ ताँहाके बेशि करिया बाजिते लागिल। विनयेर उपर तिनि अनेकटा निर्भर स्थापन करियाछिलेन बलियाइ ताहार प्रति धिक्कार ताँहार प्रतिदिन बाड़िया उठितेछे। सेइजन्यइ अत्यन्त उत्सुकचित्ते तिनि गोरार प्रतीक्षा करितेछिलेन।

गोरार दिके नेत्रपात करियाइ हरिमोहिनी एकेबारे आश्चर्य हइया गेलेन। एइ तो ब्राह्मण बटे! येन एकेबारे होमेर आगुन। येन शुभ्रकाय महादेव। ताँहार मने एमन एकटि भक्तिर सञ्चार हइल ये, गोरा यखन ताँहाके प्रणाम करिल तखन से-प्रणाम ग्रहण करिते हरिमोहिनी कुण्ठित हइया उठिलेन।

हरिमोहिनी कहिलेन, "तोमार कथा अनेक शुनेछि, बाबा। तुमिइ गौर! गौरइ बटे। ओइ ये कीर्तनेर गान शुनेछि—

चाँदेर अमिया सने चन्दन बाँटिया गो
के माजिल गोरार देहखानि—

आज ताइ चक्षे देखलुम। कोन् प्राणे तोमाके जेले दियेछिल आमि सेइ कथाइ भावि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा हासिया कहिल, "आपनारा यदि म्याजिस्ट्रेट हतेन ता हले जेलखानाय इँदुर-बादुड़ेर बासा हत।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ना बाबा, पृथिवीते चोर-जुयाचोरेर अभाव की। म्याजिस्ट्रेटेर कि चोख छिल ना। तुमि ये ये-से केउ नओ, तुमि ये भगवानेर लोक, से तो मुखेर दिके ताकालेइ टेर पाओया याय। जेलखाना आछे बलेइ कि जेले दिते हबे! बाप रे! ए केमन विचार।"

गोरा कहिल, "मानुषेर मुखेर दिके ताकाले पाछे भगवानेर रूप चोखे पड़े ताइ म्याजिस्ट्रेट केवल आइनेर बइयेर दिके ताकिये काज करे। नइले मानुषके चाबुक जेल द्वीपान्तर फाँसि दिये कि तादेर चोखे घुम थाकत ना मुखे भात रुचत।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "यखनइ फुरसत पाइ राधारानीर काछ थेके तोमार बइ पड़िये शुनि। कबे तोमार निजेर मुख थेके भालो भालो सब कथा शुनते पाब मने एइ प्रत्याशा करे एतदिन छिलुम। आमि मूर्ख मेयेमानुष आर बड़ो दु:खिनी, सब कथा बुझिओ ने, आबार सब कथाय मनओ दिते पारि ने। किन्तु बाबा, तोमार काछ थेके किछु ज्ञान पाब, ए आमार खुब विश्वास हयेछे।"

गोरा विनयसहकारे ए कथार कोनो प्रतिवाद ना करिया चुप करिया रहिल।

हरिमोहिनी कहिलेन, "बाबा, तोमाके किछु खेये येते हबे। तोमार मतो ब्राह्मणेर छेलेके आमि अनेक दिन खाओयाइ नि। आजकेर या आछे ताइ दिये मिष्टिमुख करे याओ किन्तु आर-एकदिन आमार घरे तोमार निमन्त्रण रइल।"

एइ बलिया हरिमोहिनी यखन आहारेर व्यवस्था करिते गेलेन तखन सुचरितार बुकेर भितर तोलपाड़ करिते लागिल।

गोरा एकेबारे आरम्भ करिया दिल, "विनय आज आपनार एखाने एसेछिल?"

सुचरिता कहिल, "हाँ।"

गोरा कहिल, "तार परे विनयेर सङ्गे आमार देखा हय नि, किन्तु आमि जानि केन से एसेछिल।"

गोरा एकटु थामिल, सुचरिताओ चुप करिया रहिल।

गोरा कहिल, "आपनारा ब्राह्ममते विनयेर विवाह देबार चेष्टा करछेन। एटा कि भालो करछेन?"

एइ खोंचाटुकु खाइया सुचरितार मन हइते लज्जा-संकोचेर जड़ता एकेबारे दूर हइया गेल। से गोरार मुखेर दिके चोख तुलिया कहिल, "ब्राह्ममते विवाहके भालो काज बले मने करब ना, एइ कि आपनि आमार काछ थेके प्रत्याशा करेन।"

गोरा कहिल, "आपनार काछे आमि कोनोरकम छोटो प्रत्याशा करि ने, ए आपनि निश्चय जानबेन। सम्प्रदायेर लोकेर काछ थेके मानुष येटुकु प्रत्याशा करते पारे आमि आपनार काछ थेके तार चेये अनेक बेशि करि। कोनो एकटा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दलके संख्याय बड़ो करे तोलाइ ये-समस्त कुलिर सर्दारेर काज आपनि से-श्रेणीर नन, ए आमि खुब जोर करे बलते पारि। आपनि निजेओ याते निजेके ठिकमतो बुझते पारेन एइटे आमार इच्छा। अन्य पाँचजनेर कथाय भुले आपनि निजेके छोटो बले जानबेन ना। आपनि कोनो एकटि दलेर लोकमात्र नन, ए कथाटा आपनाके निजेर मनेर मध्ये थेके निजे स्पष्ट बुझते हबे।"

सुचरिता मनेर समस्त शक्तिके जागाइया सतर्क हइया शक्त हइया बसिल। कहिल, "आपनिओ कि कोनो दलेर लोक नन।"

गोरा कहिल, "आमि हिन्दु। हिन्दु तो कोनो दल नय। हिन्दु एकटा जाति। ए जाति एत बृहत् ये किसे एइ जातिर जातित्व ता कोनो संज्ञार द्वारा सीमाबद्ध करे बलाइ याय ना। समुद्र येमन ढेउ नय, हिन्दु तेमनि दल नय।"

सुचरिता कहिल, "हिन्दु यदि दल नय तबे दलादलि करे केन।"

गोरा कहिल, "मानुषके मारते गेले से ठेकाते याय केन। तार प्राण आछे बले। पाथरइ सकलरकम आघाते चुप करे पड़े थाके।"

सुचरिता कहिल, "आमि याके धर्म बले ज्ञान करछि हिन्दु यदि ताके आघात बले गण्य करे, तबे से-स्थले आमाके आपनि की करते बलेन।"

गोरा कहिल, "तखन आमि आपनाके बलब ये, येटाके आपनि कर्तव्य मने करछेन सेटा यखन हिन्दुजाति बले एतबड़ो एकटि विराट सत्तार पक्षे वेदनाकर आघात तखन आपनाके खुब चिन्ता करे देखते हबे, आपनार मध्ये कोनो भ्रम कोनो अन्धता आछे कि ना, आपनि सब दिक सकल रकम करे चिन्ता करे देखेछेन कि ना। दलेर लोकेर संस्कारके केवलमात्र अभ्यास वा आलस्य-वशत सत्य बले धरे निये एतबड़ो एकटा उत्पात करते प्रवृत्त हओया ठिक नय। इँदुर यखन जाहाजेर खोल काटते थाके तखन इँदुरेर सुविधा ओ प्रवृत्तिर हिसाब थेकेइ से काज करे; देखे ना एतबड़ो एकटा आश्रये छिद्र करले तार येटुकु सुविधा तार चेये सकलेर कतबड़ो क्षति। आपनाकेओ तेमनि भेबे देखते हबे, आपनि कि केवल आपनार दलटिर कथा भाबछेन ना समस्त मानुषेर कथा भाबछेन। समस्त मानुष बलले कतटा बोझाय ता जानेन? तार कत रकमेर प्रकृति, कत रकमेर प्रवृत्ति, कत रकमेर प्रयोजन? सब मानुष एक पथे एक जायगाय दाँड़िये नेइ--कारओ सामने पाहाड़, कारओ सामने समुद्र, कारओ सामने प्रान्तर। अथच कारओ बसे थाकबार जो नेइ, सकलकेइ चलते हबे। आपनि केवल आपनार दलेर शासनटिकेइ सकलेर उपर खाटाते चान? चोख बुजे मने करते चान, मानुषेर मध्ये कोनो वैचित्र्यइ नेइ, केवल ब्राह्मसमाजेर खाताय नाम लेखाबार जन्येइ सकले पृथिवीते जन्मग्रहण करेछे? ये-सकल दस्युजाति पृथिवीर समस्त जातिकेइ युद्धे जय करे निजेर एकच्छत्र राजत्व विस्तार कराकेइ पृथिवीर एकमात्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कल्याण बले कल्पना करे, अन्यान्य जातिर विशेषत्व ये विश्वहितेर पक्षे बहुमूल्य विधान निजेर बल-गर्वे ता यारा स्वीकार करे ना एवं पृथिवीते केवल दासत्व विस्तार करे, तादेर सङ्गे आपनादेर प्रभेद कोन्खाने।"

सुचरिता क्षणकालेर जन्य तर्कयुक्ति समस्तइ भुलिया गेल। गोरार वज्रगम्भीर कण्ठस्वर एकटि आश्चर्य प्रबलतार द्वारा ताहार समस्त अन्तःकरणके आन्दोलित करिया तुलिल। गोरा ये कोनो-एकटा विषय लइया तर्क करितेछे ताहा सुचरितार मने रहिल ना, ताहार काछे केवल एइ सत्यटुकुइ जागिते लागिल ये गोरा बलितेछे।

गोरा कहिल, "आपनादेर समाजइ भारतेर बिश कोटि लोकके सृष्टि करे नि ; कोन् पन्था एइ बिश कोटि लोकेर पक्षे उपयोगी--कोन् विश्वास कोन् आचार एदेर सकलके खाद्य देबे, शक्ति देबे, ता बेंधे देबार भार जोर करे निजेर उपर निये एतबड़ो भारतवर्षके एकेबारे एकाकार समतल करे दिते चान की ब'ले। एइ असाध्य-साधने यतइ बाधा पाच्छेन ततइ देशेर उपर आपनादेर राग हच्छे, अश्रद्धा हच्छे, ततइ यादेर हित करते चान तादेर घृणा करे पर करे तुलछेन। अथच ये-ईश्वर मानुषके विचित्र करे सृष्टि करेछेन एवं विचित्रइ राखते चान, ताँकेइ आपनारा पूजा करेन, एइ कथा कल्पना करेन। यदि सत्यइ आपनारा ताँके मानेन तबे ताँर विधानके आपनारा स्पष्ट करे देखते पान ना केन, निजेर बुद्धिर एवं दलेर अहंकारे केन एर तात्पर्यटि ग्रहण करछेन ना।"

सुचरिता किछुमात्र उत्तर दिबार चेष्टा ना करिया चुप करिया गोरार कथा शुनिया याइतेछे देखिया गोरार मने करुणार सञ्चार हइल। से एकटुखानि थामिया गला नामाइया कहिल, "आमार कथागुलो आपनार काछे हयतो कठोर शोनाच्छे--किन्तु आमाके एकटा विरुद्धपक्षेर मानुष बले मने कोनो विद्रोह राखबेन ना। आमि यदि आपनाके विरुद्धपक्ष बले मने करतुम ता हले कोनो कथाइ बलतुम ना। आपनार मने ये एकटि स्वाभाविक उदार शक्ति आछे सेटा दलेर मध्ये संकुचित हच्छे बले आमि कष्ट बोध करछि।"

सुचरितार मुख आरक्तिम हइल ; से कहिल, "ना ना, आमार कथा आपनि किछु भावबेन ना। आपनि बले यान, आमि बोझबार चेष्टा करछि।"

गोरा कहिल, "आमार आर-किछुइ बलबार नेइ--भारतवर्षके आपनि आपनार सहज बुद्धि सहज हृदय दिये देखुन, एके आपनि भालोबासुन। भारतवर्षेर लोकके यदि आपनि अब्राह्म बले देखेन, ता हले तादेर विकृत करे देखबेन एवं तादेर अवज्ञा करबेन ; ता हले तादेर केवलइ भुल बुझते थाकबेन ; येखान थेके देखले तादेर सम्पूर्ण देखा याय सेखान थेके तादेर देखाइ हबे ना। ईश्वर एदेर मानुष करे सृष्टि करेछेन, एरा नानारकम करे भावे, नानारकम करे चले,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एदेर विश्वास एदेर संस्कार नानारकम––किन्तु समस्तेरइ भित्तिते एकटि मनुष्यत्व आछे ; समस्तेरइ भितरे एमन एकटि जिनिस आछे या आमार जिनिस, या आमार एइ भारतवर्षेर जिनिस, यार प्रति ठिक सत्यदृष्टि निक्षेप करले तार समस्त क्षुद्रता––असम्पूर्णतार आवरण भेद करे एकटि आश्चर्य महत्सत्ता चोखेर उपरे पड़े ; अनेक दिनेर अनेक साधना तार मध्ये प्रच्छन्न देखा याय, देखते पाइ अनेक कालेर होमेर अग्नि भस्मेर मध्ये एखनो ज्वलछे एवं सेइ अग्नि एकदिन आपनार क्षुद्र देशकालके छाड़िये उठे पृथिवीर माझखाने तार शिखाके जागिये तुलबे ताते किछुमात्र सन्देह थाके ना ; एइ भारतवर्षेर मानुष अनेक दिन थेके अनेक बड़ो कथा बलेछे, अनेक बड़ो काज करेछे, से-समस्तइ एकेबारे मिथ्या हये गेछे ए कथा कल्पना कराओ सत्येर प्रति अश्रद्धा, सेइ तो नास्तिकता।"

सुचरिता मुख निचु करिया शुनितेछिल। से मुख तुलिया कहिल, "आपनि आमाके की करते बलेन।"

गोरा कहिल, "आर किछु बलि ने––आमि केवल बलि आपनाके एइ कथाटा बुझे देखते हबे ये, हिन्दुधर्म मायेर मतो नाना भावेर नाना मतेर लोकके कोल देबार चेष्टा करेछे ; अर्थात् केवल हिन्दुधर्मइ जगते मानुषके मानुष बलेइ स्वीकार करेछे, दलेर लोक बले गण्य करे नि। हिन्दुधर्म मूढ़केओ माने, ज्ञानीकेओ माने––एवं केवलमात्र ज्ञानेर एक मूर्तिकेइ माने ना, ज्ञानेर बहुप्रकार विकाशके माने। खृस्टानरा वैचित्र्यके स्वीकार करते चाय ना ; तारा बले, एक पारे खृस्टानधर्म आर-एक पारे अनन्त विनाश, एर माझखाने कोनो विचित्रता नेइ। आमरा सेइ खृस्टानेर काछ थेकेइ पाठ नियेछि, ताइ हिन्दुधर्मेर वैचित्र्येर जन्ये लज्जा पाइ। एइ वैचित्र्येर भितर दियेइ हिन्दुधर्म ये एकके देखबार जन्ये साधना करछे सेटा आमरा देखते पाइ ने। एइ खृस्टानि शिक्षार पाक मनेर चारि दिक थेके खुले फेले मुक्तिलाभ ना करले आमरा हिन्दुधर्मेर सत्यपरिचय पेये गौरवेर अधिकारी हब ना।"

केवल गोरार कथा शोना नहे, सुचरिता येन गोरार कथा सम्मुखे देखितेछिल, गोरार चोखेर मध्ये दूर-भविष्यत्-निबद्ध ये एकटि ध्यानदृष्टि छिल सेइ दृष्टि एवं वाक्य सुचरितार काछे एक हइया देखा दिल। लज्जा भुलिया, आपनाके भुलिया, भावेर उत्साहे उद्दीप्त गोरार मुखेर दिके सुचरिता चोख तुलिया चाहिया रहिल। एइ मुखेर मध्ये सुचरिता एमन एकटि शक्ति देखिल ये-शक्ति पृथिवीते बड़ो बड़ो संकल्पके येन योगबले सत्य करिया तोले। सुचरिता ताहार समाजेर अनेक विद्वान ओ बुद्धिमान लोकेर काछे अनेक तत्त्वालोचना शुनियाछे, किन्तु गोरार ए तो आलोचना नहे, ए येन सृष्टि। इहा एमन एकटा प्रत्यक्ष व्यापार याहा एककाले समस्त शरीर-मनके अधिकार करिया बसे। सुचरिता आज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वज्रपाणि इन्द्रके देखितेछिल—वाक्य यखन प्रबलमन्द्रे कर्णे आघात करिया ताहार वक्ष:कपाटके स्पन्दित करितेछिल सेइ सङ्गे विद्युतेर तीव्रच्छटा ताहार रक्तेर मध्ये क्षणे क्षणे नृत्य करिया उठितेछिल। गोरार मतेर सङ्गे ताहार मतेर कोथाय की परिमाण मिल आछे वा मिल नाइ, ताहा स्पष्ट करिया देखिबार शक्ति सुचरितार रहिल ना।

एमन समय सतीश घरे प्रवेश करिल। गोराके से भय करित, ताइ ताहाके एड़ाइया से ताहार दिदिर पाश घेंषिया दाँड़ाइल एवं आस्ते आस्ते बलिल, "पानुबाबु एसेछेन।"

सुचरिता चमकिया उठिल—ताहाके के येन मारिल। पानुबाबुर आसाटाके से कोनोप्रकारे ठेलिया सराइया, चापा दिया एकेबारे विलुप्त करिया दिते पारिले बाँचे एमनि ताहार अवस्था हइल। सतीशेर मृदु कण्ठस्वर गोरा शुनिते पाय नाइ मने करिया सुचरिता ताड़ाताड़ि उठिया पड़िल। से एकेबारे सिँड़ि बाहिया नीचे नामिया हारानबाबुर सम्मुखे उपस्थित हइयाइ कहिल, "आमाके माप करबेन, आज आपनार सङ्गे कथावार्तार सुविधा हबे ना।"

हारानबाबु जिज्ञासा करिलेन, "केन सुविधा हबे ना।"

सुचरिता ए प्रश्नेर उत्तर ना दिया कहिल, "काल सकाले आपनि यदि बाबार ओखाने आसेन ता हले आमार सङ्गे देखा हबे।"

हारानबाबु कहिलेन, "आज बुझि तोमार घरे लोक आछे?"

ए प्रश्नओ एड़ाइया सुचरिता कहिल, "आज आमार अवसर हबे ना, आज आपनि दया करे माप करबेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "किन्तु, रास्ता थेके गौरमोहनबाबुर गलार स्वर शुनलुम ये, तिनि आछेन बुझि?"

ए प्रश्नके सुचरिता आर चापा दिते पारिल ना, मुख लाल करिया बलिल, "हाँ, आछेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "भालोइ हयेछे, ताँर सङ्गेओ आमार कथा छिल। तोमार हाते यदि विशेष कोनो काज थाके ता हले आमि ततक्षण गौरमोहनबाबुर सङ्गे आलाप करब।"

बलिया सुचरितार काछ हइते कोनो सम्मतिर प्रतीक्षा ना करिया तिनि सिँड़ि दिया उठिते लागिलेन। सुचरिता पार्श्ववर्ती हारानबाबुर प्रति कोनो लक्ष्य ना करिया घरे प्रवेश करिया गोराके कहिल, "मासि आपनार जन्ये खाबार तैरि करते गेछेन, आमि ताँके एकवार देखे आसि।" एइ बलिया से द्रुतपदे बाहिर हइया गेल एवं हारानबाबु गम्भीर मुखे एकटा चौकि अधिकार करिया बसिलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हारानबाबु कहिलेन, "किछु रोगा देखछि येन।"

गोरा कहिल, "आज्ञा हाँ, किछुदिन रोगा हबार चिकित्साइ चलछिल।"

हारानबाबु कण्ठस्वर स्निग्ध करिया कहिलेन, "ताइ तो, आपनाके खुब कष्ट पेते हयेछे।"

गोरा कहिल, "येरकम आशा करा याय तार चेये बेशि किछुइ नय।"

हारानबाबु कहिलेन, "विनयबाबुर सम्बन्धे आपनार सङ्गे किछु आलोचना करबार आछे। आपनि बोध हय शुनेछेन, आगामी रविवारे ब्राह्मसमाजे दीक्षा नेबार जन्ये तिनि आयोजन करेछेन।"

गोरा कहिल, "ना, आमि शुनि नि।"

हारानबाबु जिज्ञासा करिलेन, "आपनार एते सम्मति आछे?"

गोरा कहिल, "विनय तो आमार सम्मति चाय नि।"

हारानबाबु कहिलेन, "आपनि कि मने करेन विनयबाबु यथार्थ विश्वासेर सङ्गे एइ दीक्षा ग्रहण करते प्रस्तुत हयेछेन।"

गोरा कहिल, "यखन तिनि दीक्षा निते राजि हयेछेन तखन आपनार ए प्रश्न सम्पूर्ण अनावश्यक।"

हारानबाबु कहिलेन, "प्रवृत्ति यखन प्रबल हये ओठे तखन आमरा की विश्वास करि आर की करि ने ता चिन्ता करे देखबार अवसर पाइ ने। आपनि तो मानवचरित्र जानेन।"

गोरा कहिल, "ना। मानवचरित्र निये आमि अनावश्यक आलोचना करि ने।"

हारानबाबु कहिलेन, "आपनार सङ्गे आमार मतेर एवं समाजेर मिल नेइ, किन्तु आपनाके आमि श्रद्धा करि। आमि निश्चय जानि, आपनार या विश्वास, सेटा सत्य होक आर मिथ्याइ होक, कोनो प्रलोभने तार थेके आपनाके टलाते पारबे ना। किन्तु—"

गोरा बाधा दिया कहिल, "आमार प्रति आपनार ओइ-ये एकटुखानि श्रद्धा बाँचिये रेखेछेन तार एमनि की मूल्य ये तार थेके वञ्चित हओया विनयेर पक्षे भारि एकटा क्षति! संसारे भालो मन्द बले जिनिस अवश्यइ आछे, किन्तु आपनार श्रद्धा ओ अश्रद्धार द्वारा यदि तार मूल्य निरूपण करेन तो करुन, तबे किना पृथिवीर लोकके सेटा ग्रहण करते बलबेन ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "आच्छा वेश, ओ-कथाटार मीमांसा एखन ना हलेओ चलबे। किन्तु आमि आपनाके जिज्ञासा करछि, विनय ये परेशबाबुर घरे विवाह करबार चेष्टा करछेन आपनि कि ताते बाधा देबेन ना।"

गोरा लाल हइया उठिया कहिल, "हारानबाबु, विनयेर सम्बन्धे ए-समस्त आलोचना कि आमि आपनार सङ्गे करते पारि। आपनि सर्वदाइ यखन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मानव-चरित्र निये आछेन तखन एटाओ आपनार बोझा उचित छिल ये, विनय आमार बन्धु एवं से आपनार बन्धु नय।"

हारानबाबु कहिलन, "एइ व्यापारेर सङ्गे ब्राह्मसमाजेर योग आछे बलेइ आमि ए कथा तुलेछि, नइले——"

गोरा कहिल, "किन्तु आमि तो ब्राह्मसमाजेर केउ नइ, आमार काछे आपनार एइ दुश्चिन्तार मूल्य की आछे।"

एमन समय सुचरिता घरे प्रवेश करिल। हारानबाबु ताहाके कहिलेन, "सुचरिता, तोमार सङ्गे आमार एकटु विशेष कथा आछे।"

एटुकु बलिबार ये कोनो आवश्यक छिल ताहा नहे। गोरार काछे सुचरितार सङ्गे विशेष घनिष्ठता प्रकाश करिबार जन्यइ हारानबाबु गाये पड़िया कथाटा बलिलेन। सुचरिता ताहार कोनो उत्तरइ करिल ना ; गोरा निजेर आसने अटल हइया बसिया रहिल, हारानबाबुके विश्रम्भालापेर अवकाश दिबार जन्य से उठिबार कोनोप्रकार लक्षण देखाइल ना।

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरिता, एकबार ओ-घरे चलो तो, एकटा कथा बले निइ।"

सुचरिता ताहार उत्तर ना दिया गोरार दिके चाहिया जिज्ञासा करिल, "आपनार मा भालो आछेन ?"

गोरा कहिल, "मा भालो नेइ एमन तो कखनो देखि नि।"

सुचरिता कहिल, "भालो थाकबार शक्ति ये ताँर पक्षे कत सहज ता आमि देखेछि।"

गोरा यखन जेले छिल तखन आनन्दमयीके सुचरिता देखियाछिल सेइ कथा स्मरण करिल।

एमन समय हारानबाबु हठात् टेबिलेर उपर हइते एकटा बइ तुलिया लइलेन, एवं सेटा खुलिया प्रथमे लेखकेर नाम देखिया लइलेन, ताहार परे बइखाना येखाने-सेखाने खुलिया चोख बुलाइते लागिलेन।

सुचरिता लाल हइया उठिल। बइखानि की ताहा गोरा जानित, ताइ गोरा मने मने एकटु हासिल।

हारानबाबु जिज्ञासा करिलेन, "गौरमोहनबाबु, आपनार ए बुझि छेलेवेलाकार लेखा ?"

गोरा हासिया कहिल, "से छेलेवेला एखनो चलछे। कोनो कोनो प्राणीर छेलेवेला अति अल्पदिनेइ फुरिये याय, कारओ कारओ छेलेवेला किछु दीर्घकाल-स्थायी हय।"

सुचरिता चौकि हइते उठिया कहिल, "गौरमोहनबाबु, आपनार खाबार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतक्षणे तैरि हयेछे। आपनि ता ह्ले ओ घरे एकबार चलुन। मासि आबार पानुबाबुर काछे बेर हबेन ना, तिनि हयतो आपनार जन्ये अपेक्षा करछेन।"

एइ शेष कथाटा सुचरिता हारानबाबुके विशेष करिया आघात करिबार जन्यइ बलिल। से आज अनेक सहियाछे, किछु फिराइया ना दिया थाकिते पारिल ना।

गोरा उठिल। अपराजित हारानबाबु कहिलेन, "आमि तबे अपेक्षा करि।"

सुचरिता कहिल, "केन मिथ्या अपेक्षा करबेन, आज आर समय हये उठबे ना।"

किन्तु हारानबाबु उठिलेन ना। सुचरिता ओ गोरा घर हइते बाहिर हइया गेल।

गोराके ए बाड़िते देखिया ओ ताहार प्रति सुचरितार व्यवहार लक्ष्य करिया हारानबाबुर मन सशस्त्र जागिया उठिल। ब्राह्मसमाज हइते सुचरिता कि एमनि करिया स्खलित हइया याइबे। ताहाके रक्षा करिबार केहइ नाइ? येमन करिया होक इहार प्रतिरोध करितेइ हइबे।

हारानबाबु एकखाना कागज टानिया लइया सुचरिताके पत्र लिखिते बसिलेन। हारानबाबुर कतकगुलि बाँधा विश्वास छिल। ताहार मध्ये एओ एकटि ये, सत्येर दोहाइ दिया यखन तिनि भर्त्सना प्रयोग करेन तखन ताँहार तेजस्वी वाक्य निष्फल हइते पारे ना। शुधु वाक्यइ एकमात्र जिनिस नहे, मानुषेर मन बलिया एकटा पदार्थ आछे से-कथा तिनि चिन्ताइ करेन ना।

आहारान्ते हरिमोहिनीर सङ्गे अनेकक्षण आलाप करिया गोरा ताहार लाठि लइबार जन्य यखन सुचरितार घरे आसिल तखन सन्ध्या हइया आसियाछे। सुचरितार डेस्केर उपरे बाति ज्वलितेछे। हारानबाबु चलिया गेछेन। सुचरितार नाम-लेखा एकखानि चिठि टेबिलेर उपर शयान रहियाछे, सेखानि घरे प्रवेश करिले चोखे पड़े।

सेइ चिठि देखियाइ गोरार बुकेर भितरटा अत्यन्त शक्त हइया उठिल। चिठि ये हारानबाबुर लेखा ताहाते सन्देह छिल ना। सुचरितार प्रति हारान-बाबुर ये एकटा विशेष अधिकार आछे ताहा गोरा जानित; सेइ अधिकारेर ये कोनो व्यत्यय घटियाछे ताहा से जानित ना। आज यखन सतीश सुचरितार काने काने हारानबाबुर आगमनवार्ता ज्ञापन करिल एवं सुचरिता सचकित हइया द्रुतपदे नीचे चलिया गेल ओ अल्पकाल परेइ निजे ताँहाके सङ्गे करिया उपरे लइया आसिल तखन गोरार मने खुब एकटा बेसुर बाजियाछिल। ताहार परे हारानबाबुके यखन घरे एकला फेलिया सुचरिता गोराके खाइते लइया गेल तखन से-व्यवहारटा कड़ा ठेकियाछिल बटे, किन्तु घनिष्ठतार स्थले एरूप रूढ़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यवहार चलिते पारे मने करिया गोरा सेटाके आत्मीयतार लक्षण बलियाइ स्थिर करियाछिल। ताहार परे टेबिलेर उपर एइ चिठिखाना देखिया गोरा खुब एकटा धाक्का पाइल। चिठि बड़ो एकटा रहस्यमय पदार्थ। बाहिरे केवल नामटुकु देखाइया सब कथाइ से भितरे राखिया देय बलिया से मानुषके नितान्त अकारणे नाकाल करिते पारे।

गोरा सुचरितार मुखेर दिके चाहिया कहिल, "आमि काल आसब।"

सुचरिता आनतनेत्रे कहिल, "आच्छा।"

गोरा विदाय लइते उन्मुख हइया हठात् थामिया दाँड़ाइया बलिया उठिल, "भारतवर्षेर सौरमण्डलेर मध्येइ तोमार स्थान—तुमि आमार आपन देशेर—कोनो धूमकेतु एसे तोमाके ये तार पुच्छ दिय झेंटिये निये शून्येर मध्ये चले याबे से कोनोमतेइ हते पारबे ना। येखाने तोमार प्रतिष्ठा सेइखानेइ तोमाके दृढ़ करे प्रतिष्ठित करब, तबे आमि छाड़ब। से जायगाय तोमार सत्य तोमार धर्म तोमाके परित्याग करबे एइ कथा एरा तोमाके बुझियेछे ; आमि तोमाके स्पष्ट करे जानिये देब, तोमार सत्य तोमार धर्म केवल तोमार किंवा आर दु-चार जनेर मत वा वाक्य नय ; से चारि दिकेर सङ्गे असंख्य प्राणेर सूत्रे जड़ित, ताके इच्छा करलेइ वन थेके उपड़े निये टबेर मध्ये पोंता याय ना—यदि ताके उज्ज्वल क'रे सजीव क'रे राखते चाओ, यदि ताके सर्वाङ्गीणरूपे सार्थक करे तुलते चाओ, तबे तोमार जन्मेर बहु पूर्वे ये-लोकसमाजेर हृदयेर मध्ये तोमार स्थान निर्दिष्ट हये गेछे सेइखाने तोमाके आसन नितेइ हबे ; कोनो मतेइ बलते पारबे ना, 'आमि ओर पर, ओ आमार केउ नय।' ए कथा यदि बल तबे तोमार सत्य, तोमार धर्म, तोमार शक्ति एकेबारे छायार मतो म्लान हये याबे। भगवान तोमाके ये-जायगाय पाठिये दियेछेन से-जायगा येमनि होक, तोमार मत यदि सेखान थेके तोमाके टेने सरिये निये याय, तबे ताते करे कखनोइ तोमार मतेर जय हबे ना, एइ कथाटा आमि तोमाके निश्चय बुझिये देब। आमि काल आसब।"

एइ बलिया गोरा चलिया गेल। घरेर भितरकार वातास येन अनेकक्षण धरिया काँपिते लागिल। सुचरिता मूर्तिर मतो निस्तब्ध हइया बसिया रहिल।

५८

विनय आनन्दमयीके कहिल, "देखो मा, आमि तोमाके सत्य बलछि, यतबार आमि ठाकुरके प्रणाम करेछि आमार मनेर भितरे केमन लज्जा वोध हयेछे। से-लज्जा आमि चेपे दियेछि—उल्टे आरओ ठाकुरपूजार पक्ष निये भालो भालो प्रबन्ध लिखेछि। किन्तु सत्य तोमाके बलछि, आमि यखन प्रणाम करेछि आमार मनेर भितरटा तखन साय देय नि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "तोर मन कि सहज मन ! तुइ तो मोटामुटि करे किछुइ देखते पारिस ने। सब तातेइ एकटा किछु सूक्ष्म कथा भाबिस। सेइ जन्यइ तोर मन थेके खुँत-खुँत आर घोचे ना।"

विनय कहिल, "ओइ कथाइ तो ठिक। अति सूक्ष्म बुद्धि बलेइ आमि या विश्वास ना करि ताओ चुलचेरा युक्तिर द्वारा प्रमाण करते पारि। सुविधामतो निजेके एवं अन्यके भोलाइ। एतदिन आमि धर्म सम्बन्धे ये-समस्त तर्क करेछि से धर्मेर दिक थेके करि नि, दलेर दिक थेके करेछि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "धर्मेर दिके यखन सत्यकार टान ना थाके तखन ओइरकमइ घटे। तखन धर्मटाओ वंश मान टाका-कड़िर मतोइ अहंकार करवार सामग्री हये दाँड़ाय।"

विनय। हाँ, तखन एटा ये धर्म से-कथा भाबि ने, एटा आमादेर धर्म एइ कथा मने नियेइ युद्ध करे बेड़ाइ। आमिओ एतकाल ताइ करेछि। तबुओ आमि निजके ये निःशेषे भोलाते पेरेछि ता नय ; येखाने आमार विश्वास पौंचच्छे ना सेखाने आमि भक्तिर भान करेछि ब'ले बराबर आमि निजेर काछे निजे लज्जित हयेछि।

आनन्दमयी कहिलेन, "से कि आर आमि बुझि ने। तोरा ये साधारण लोकेर चेये ढेर बेशि बाड़ाबाड़ि करिस तार थेके स्पष्ट बोझा याय, मनेर भितरटाते फाँक आछे बले सेइटे बोजाते तोदेर अनेक मसला खरच करते हय। भक्ति सहज हले अत दरकार करे ना।"

विनय कहिल, "ताइ तो आमि तोमाके जिज्ञासा करते एसेछि, या आमि विश्वास करि ने ताके विश्वास करवार भान करा कि भालो।"

आनन्दमयी कहिलेन, "शोनो एकवार ! एमन कथाओ जिज्ञासा करते हय नाकि।"

विनय कहिल, "मा, आमि परशु दिन ब्राह्मसमाजे दीक्षा नेब।"

आनन्दमयी विस्मित हइया कहिलेन, "से कि कथा विनय। दीक्षा नेबार की एमन दरकार हयेछे।"

विनय कहिल, "की दरकार हयेछे सेइ कथाइ तो एतक्षण बलछिलुम, मा।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तोर या विश्वास ता निये कि तुइ आमादेर समाजे थाकते पारिस ने।"

विनय कहिल, "थाकते गेले कपटता करते हय।"

आनन्दमयी कहिलेन, "कपटता ना क'रे थाकबार साहस नेइ ? समाजेर लोके कष्ट देबे—ता, कष्ट सह्य करे थाकते पारबि ने ?"

विनय कहिल, "मा, आमि यदि हिन्दुसमाजेर मते ना चलि ता हले—"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी कहिलेन, "हिन्दुसमाजे यदि तिन-श तेत्रिश कोटि मत चलते पारे तबे तोमार मतइ वा चलबे ना केन।"

विनय कहिल, "किन्तु मा, आमादेर समाजेर लोक यदि बले 'तुमि हिन्दु नओ' ता हले आमि कि जोर करे बललेइ हल 'आमि हिन्दु'।"

आनन्दमयी कहिलेन, "आमाके तो आमादेर समाजेर लोके बले खृस्टान—आमि तो काज-कर्मे तादेर सङ्गे एकत्रे बसे खाइ ने। तबुओ तारा आमाके खृस्टान बललेइ से-कथा आमाके मेने निते हबे, एमन तो आमि बुझि ने। येटाके उचित बले जानि सेटार जन्ये कोथाओ पालिये बसे थाका आमि अन्याय मने करि।"

विनय इहार उत्तर दिते याइतेछिल। आनन्दमयी ताहाके किछु बलिते ना दियाइ कहिलेन, "विनय, तोके आमि तर्क करते देब ना, ए तर्केर कथा नय। तुइ आमार काछे कि किछु ढाकते पारिस। आमि ये देखते पाच्छि, तुइ आमार सङ्गे तर्क करबार छुतो धरे जोर करे आपनाके भोलाबार चेष्टा करछिस। किन्तु एतबड़ो गुरुतर व्यापारे ओरकम फाँकि चालाबार मतलब करिस ने।"

विनय माथा निचु करिया कहिल, "किन्तु मा, आमि तो चिठि लिखे कथा दिये एसेछि, काल आमि दीक्षा नेब।"

आनन्दमयी कहिलेन, "से हते पारबे ना। परेशबाबुके यदि बुझिये बलिस तिनि कखनोइ पीड़ापीड़ि करबेन ना।"

विनय कहिल, "परेशबाबुर ए दीक्षाय कोनो उत्साह नेइ, तिनि ए अनुष्ठाने योग दिच्छेन ना।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तबे तोके किछु भाबते हबे ना।"

विनय कहिल, "ना मा, कथा ठिक हये गेछे, एखन आर फेरानो याबे ना। कोनोमतेइ ना।"

आनन्दमयी कहिलेन, "गोराके बलेछिस ?"

विनय कहिल, "गोरार सङ्गे आमार देखा हय नि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "केन—गोरा एखन बाड़िते नेइ ?"

विनय कहिल, "ना, खबर पेलुम से सुचरितार बाड़िते गेछे।"

आनन्दमयी विस्मित हइया कहिलेन, "सेखाने तो से काल गियेछिल।"

विनय कहिल, "आजओ गेछे।"

एमन समय प्राङ्गणे पालकिर बेहारार आओयाज पाओया गेल। आनन्दमयीर कोनो कुटुम्ब स्त्रीलोकेर आगमन कल्पना करिया विनय बाहिरे चलिया गेल।

ललिता आसिया आनन्दमयीके प्रणाम करिल। आज आनन्दमयी कोनोमतेइ ललितार आगमन प्रत्याशा करेन नाइ। तिनि विस्मित हइया ललितार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मखेर दिके चाहितेइ बुझिलेन, विनयेर दीक्षा प्रभृति व्यापार लइया ललितार एकटा कोथाओ संकट उपस्थित हइयाछे, ताइ से ताँहार काछे आसियाछे।

तिनि कथा पाड़िबार सुविधा करिया दिबार जन्य कहिलेन, "मा, तुमि एसेछ बड़ो खुशि हलुम। एइमात्र विनय एखाने छिलेन; काल तिनि तोमादेर समाजे दीक्षा नेबेन, आमार सङ्गे सेइ कथाइ हच्छिल।"

ललिता कहिल, "केन तिनि दीक्षा निते याच्छेन। तार कि कोनो प्रयोजन आछे।"

आनन्दमयी आश्चर्य हइया कहिलेन, "प्रयोजन नेइ, मा?"

ललिता कहिल, "आमि तो किछु भेबे पाइ ने।"

आनन्दमयी ललितार अभिप्राय बुझिते ना पारिया चुप करिया ताहार मुखेर दिके चाहिया रहिलेन।

ललिता मुख निचु करिया कहिल, "हठात् एरकम भावे दीक्षा निते आसा ताँर पक्षे अपमानकर। ए अपमान तिनि किसेर जन्ये स्वीकार करते याच्छेन।"

किसेर जन्ये! से कथा कि ललिता जाने ना। इहार मध्ये ललितार पक्षे कि आनन्देर कथा किछुइ नाइ।

आनन्दमयी कहिलेन, "काल दीक्षार दिन, से पाका कथा दियेछे—एखन आर परिवर्तन करबार जो नेइ, विनय तो एइ रकमइ बलछिल।"

ललिता आनन्दमयीर मुखेर दिके ताहार दृष्टि राखिया कहिल, "ए-सब विषये पाका कथार कोनो माने नेइ, यदि परिवर्तन आवश्यक हय ता हले करतेइ हबे।"

आनन्दमयी कहिलेन, "मा, तुमि आमार काछे लज्जा कोरो ना, सब कथा तोमाके खुले बलि। एइ एतक्षण आमि विनयके बोझाच्छिलुम, तार धर्मविश्वास येमनइ थाक्, समाजके त्याग करा तार उचितओ ना, दरकारओ ना। मुखे याइ बलुक सेओ ये से कथा बोझे ना ताओ बलते पारि ने। किन्तु मा, तार मनेर भाव तोमार काछे तो अगोचर नेइ। से निश्चय जाने, समाज परित्याग ना करले तोमादेर सङ्गे तार योग हते पारबे ना। लज्जा कोरो ना मा, ठिक करे बलो देखि, ए कथाटा कि सत्य ना।"

ललिता आनन्दमयीर मुखेर दिके मुख तुलियाइ कहिल, "मा, तोमार काछे आमि किछुइ लज्जा करब ना; आमि तोमाके बलछि, आमि ए-सब मानि ने। आमि खुब भालो करेइ भेबे देखेछि, मानुषेर धर्म-विश्वास समाज याइ थाक्-ना, से-समस्त लोप करे दियेइ तबे मानुषेर परस्परेर सङ्गे योग हबे, ए कखनो हतेइ पारे ना। ता हले तो हिन्दुते खृष्टाने बन्धुत्वओ हते पारे ना। ता हले तो बड़ो बड़ो पाँचिल तुले दिये एक-एक सम्प्रदायके एक-एक बेड़ार मध्येइ रेखे देओया उचित।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी मुख उज्ज्वल करिया कहिलेन, "आहा, तोमार कथा शुने बड़ो आनन्द हल। आमि तो ओइ कथाइ बलि। एक मानुषेर सङ्गे आर-एक मानुषेर रूप गुण स्वभाव किछुइ मेले ना, तबु तो सेजन्ये दुइ मानुषेर मिलने बाधे ना—आर, मत विश्वास नियेइ वा बाधबे केन। मा, तुमि आमाके बाँचाले, आमि विनयेर जन्ये बड़ो भावछिलुम। ओर मन ओ समस्तइ तोमादेर दियेछे, से आमि जानि; तोमादेर सङ्गे सम्बन्धे यदि ओर कोथाओ किछु घा लागे से तो विनय कोनोमतेइ सइते पारबे ना। ताइ ओके बाधा दिते आमार मने ये की रकम बाजछिल से अन्तर्यामीइ जानेन। किन्तु ओर की सौभाग्य। ओर एमन संकट एमन सहजे काटिये दिले, ए कि कम कथा। एकटा कथा जिज्ञासा करि, परेशबाबुर सङ्गे कि ए कथा किछु हयेछे।"

ललिता लज्जा चापिया कहिल, "ना, हय नि। किन्तु आमि जानि, तिनि सब कथा ठिक बुझबेन।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ताइ यदि ना बुझबेन तबे एमन बुद्धि एमन मनेर जोर तुमि पेले कोथा थेके। मा, आमि विनयके डेके आनि, तार सङ्गे निजेर मुखे तोमार बोझापड़ा करे नेओया उचित। एइवेला आमि एकटा कथा तोमाके बले निइ मा, विनयके आमि एतटुकु वेला थेके देखे आसछि—ओ छेले एमन छेले ये ओर जन्ये यत दुःखइ तोमरा स्वीकार करे नाओ से-समस्त दुःखकेइ ओ सार्थक करबे, ए आमि जोर करे बलछि। आमि कतदिन भेबेछि, विनयके ये लाभ करबे एमन भाग्यवती के आछे। माझे माझे सम्बन्ध एसेछे, काउके आमार पछन्द हय नि। आज देखते पाच्छि, ओरओ भाग्य बड़ो कम नय।"

एइ बलिया आनन्दमयी ललितार चिबुक हइते चुम्बन ग्रहण करिया लइलेन ओ विनयके डाकिया आनिलेन। कौशले लछमियाके घरेर मध्ये बसाइया तिनि ललितार आहारेर आयोजन उपलक्ष करिया अन्यत्र चलिया गेलेन।

आज आर ललिता ओ विनयेर मध्ये संकोचेर अवकाश छिल ना। ताहादेर उभयेर जीवने ये-एकटि कठिन संकटेर आविर्भाव हइयाछे ताहारइ आह्वाने ताहारा परस्परेर सम्बन्धके सहज करिया ओ बड़ो करिया देखिल—ताहादेर माझखाने कोनो आवेशेर वाष्प आसिया रङिन आवरण फेलिया दिल ना। ताहादेर दुइ जनेर हृदय ये मिलियाछे एवं ताहादेर दुइ जीवनेर धारा गङ्गायमुनार मतो एकटि पुण्यतीर्थे एक हइबार जन्य आसन्न हइयाछे, ए सम्बन्धे कोनो आलोचनामात्र ना करिया ए कथाटि ताहारा विनीत गम्भीर भावे नीरवे अकुण्ठितचित्ते मानिया लइल। समाज ताहादेर दुइ जनके डाके नाइ, कोनो मत ताहादेर दुइ जनके मेलाय नाइ, ताहादेर बन्धन कोनो कृत्रिम बन्धन नहे, एइ कथा स्मरण करिया ताहारा निजेदेर मिलनके एमन एकटि धर्मेर मिलन बलिया अनुभव करिल ये-धर्म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अत्यन्त बृहत् भावे सरल, याहा कोनो छोटो कथा लइया विवाद करे ना, याहाके कोनो पञ्चायेतेर पण्डित बाधा दिते पारे ना। ललिता ताहार मुख-चक्षु दीप्तिमान करिया कहिल, 'आपनि ये हेंट हइया निजेके खाटो करिया आमाके ग्रहण करिते आसिबेन, ए अगौरव आमि सह्य करिते पारिब ना। आपनि येखाने आछेन सेइखानेइ अविचलित हइया थाकिबेन, एइ आमि चाइ।'

विनय कहिल, 'आपनार येखाने प्रतिष्ठा आपनिओ सेखाने स्थिर थाकिबेन, किछुमात्र आपनाके नड़िते हइबे ना। प्रीति यदि प्रभेदके स्वीकार करिते ना पारे, तबे जगते कोनो प्रभेद कोथाओ आछे केन।'

उभये प्राय बिश मिनिट धरिया ये कथावार्ता कहियाछिल ताहार सारमर्मटुकु एइ दाँड़ाय। ताहारा हिन्दु कि ब्राह्म ए कथा ताहारा भुलिल, ताहारा ये दुइ मानवात्मा एइ कथाइ ताहादेर मनेर मध्ये निष्कम्प प्रदीपशिखार मतो ज्वलिते लागिल।

५९

परेशबाबु उपासनार पर ताँहार घरेर सम्मुखेर बारान्दाय स्तब्ध हइया बसिया छिलेन। सूर्य सद्य अस्त गियाछे।

एमन समय ललिताके सङ्गे लइया विनय सेखाने प्रवेश करिल ओ भूमिष्ठ हइया प्रणाम करिया परेशेर पदधूलि लइल।

परेश उभयके एभावे प्रवेश करिते देखिया किछु विस्मित हइलेन। काछे बसिते दिबार चौकि छिल ना ; ताइ बलिलेन, "चलो, घरे चलो।" विनय कहिल, "ना, आपनि उठबेन ना।" बलिया सेइखाने भूमितलेइ बसिल। ललिताओ एकटु सरिया परेशेर पायेर काछे बसिया पड़िल।

विनय कहिल, "आमरा दुजने एकत्रे आपनार आशीर्वाद निते एसेछि। सेइ आमादेर जीवनेर सत्यदीक्षा हबे।"

परेशबाबु विस्मित हइया ताहार मुखेर दिके चाहिया रहिलेन।

विनय कहिल, "बाँधा नियमे बाँधा कथाय समाजे प्रतिज्ञाग्रहण आमि करब ना। ये-दीक्षाय आमादेर दुजनेर जीवन नत हये सत्यबन्धने बद्ध हबे सेइ दीक्षा आपनार आशीर्वाद। आमादेर दुजनेरइ हृदय भक्तिते आपनारइ पायेर काछे प्रणत हयेछे, आमादेर या मङ्गल ता ईश्वर आपनार हात दियेइ देबेन।"

परेशबाबु किछुक्षण कोनो कथा ना बलिया स्थिर हइया रहिलेन। परे कहिलेन, "विनय, तुमि ता हले ब्राह्म हबे ना ?"

विनय कहिल, "ना।"

परेशबाबु जिज्ञासा करिलेन, "तुमि हिन्दुसमाजेइ थाकते चाओ ?"

विनय कहिल, "हाँ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेशबाबु ललितार मुखेर दिके चाहिलेन। ललिता ताँहार मनेर भाव बुझिया कहिल, "बाबा, आमार या धर्म ता आमार आछे एवं बराबर थाकबे। आमार असुविधा हते पारे, कष्टओ हते पारे, किन्तु यादेर सङ्गे आमार मतेर एमन-कि आचरणेर अमिल आछे तादेर पर करे दिये तफाते ना सरिये राखले आमार धर्मे बाधबे, ए कथा आमि कोनोमतेइ मने करते पारि ने।"

परेशबाबु चुप करिया रहिलेन। ललिता कहिल, "आगे आमार मने हत ब्राह्मसमाजइ येन एकमात्र जगत्, एर बाइरे येन सब छाया। ब्राह्मसमाज थेके विच्छेद येन समस्त सत्य थेके विच्छेद। किन्तु एइ कयदिने से-भाव आमार एकेबारे चले गेछे।"

परेशबाबु म्लानभावे एकटु हासिलेन।

ललिता कहिल, "बाबा, आमि तोमाके जानाते पारि ने आमार कतबड़ो एकटा परिवर्तन हये गेछे। ब्राह्मसमाजेर मध्ये आमि ये-सब लोक देखछि तादेर अनेकेर सङ्गे आमार धर्ममत एक हलेओ तादेर सङ्गे तो आमि कोनोमतेइ एक नइ—तबु ब्राह्मसमाज ब'ले एकटा नामेर आश्रय निये तादेरइ आमि विशेष करे आपन बलब, आर पृथिवीर अन्य सब लोककेइ दूरे रेखे देब, आजकाल आमि एर कोनो माने बुझते पारि ने।"

परेशबाबु ताँहार विद्रोही कन्यार पिठे धीरे धीरे हात बुलाइया कहिलेन "व्यक्तिगत कारणे मन यखन उत्तेजित थाके तखन कि विचार ठिक हय। पूर्व-पुरुष थेके सन्तानसन्तति पर्यन्त मानुषेर ये एकटा पूर्वापरता आछे तार मङ्गल देखते गेले समाजेर प्रयोजन हय—से प्रयोजन तो कृत्रिम प्रयोजन नय। तोमादेर भावी वंशेर मध्ये ये दूरव्यापी भविष्यत् रयेछे तार भार यार उपरे स्थापित सेइ तोमादेर समाज, तार कथा कि भावबे ना।"

विनय कहिल, "हिन्दुसमाज तो आछे।"

परेशबाबु कहिलेन, "हिन्दुसमाज तोमादेर भार यदि ना नेय, यदि ना स्वीकार करे?"

विनय आनन्दमयीर कथा स्मरण करिया कहिल, "ताके स्वीकार करावार भार आमादेर निते हबे। हिन्दुसमाज तो बराबरइ नूतन नूतन सम्प्रदायके आश्रय दियेछे, हिन्दुसमाज सकल धर्मसम्प्रदायेरइ समाज हते पारे।"

परेशबाबु कहिलेन, "मुखेर तर्के एकटा जिनिसके एकरकम करे देखानो येते पारे किन्तु काजे सेरकमटि पाओया याय ना। नइले केउ इच्छा करे कि पुरातन समाजके छाड़ते पारे। ये-समाज मानुषेर धर्मबोधके बाह्य आचारेर बेड़ि दिये एकइ जायगाय बन्दी करे बसिये राखते चाय, ताके मानते गेले निजेदेर चिरदिनेर मतो काठेर पुतुल करे राखते हय।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "हिन्दुसमाजेर यदि सेइ संकीर्ण अवस्थाइ हये थाके तबे सेटा थेके मुक्ति देबार भार आमादेर निते हबे ; येखाने घरेर जानला -दरजा बाड़िये दिलेइ घरे आलो-वातास आसे सेखाने केउ राग करे पाका बाड़ि भूमिसात् करते चाय ना।"

ललिता बलिया उठिल, "बाबा, आमि ए-समस्त कथा बुझते पारि ने। कोनो समाजेर उन्नतिर भार नेबार जन्ये आमार कोनो संकल्प नेइ। किन्तु, चारि दिक थेके एमन एकटा अन्याय आमाके ठेला दिच्छे ये आमार प्राण येन हाँपिये उठछे। कोनो कारणेइ ए-समस्त सह्य करे माथा निचु करे थाका आमार उचित नय। उचित-अनुचितओ आमि भालो बुझि ने--किन्तु बाबा, आमि पारब ना।"

परेशबाबु स्निग्धस्वरे कहिलेन, "आरओ किछु समय निले भालो हय ना ? एखन तोमार मन चञ्चल आछे।"

ललिता कहिल, "समय निते आमार कोनो आपत्ति नेइ। किन्तु आमि निश्चय जानि, असत्य कथा ओ अन्याय अत्याचार बेड़े उठतेइ थाकबे। ताइ आमार भारि भय हय, असह्य हये पाछे हठात् एमन किछु करे फेलि याते तुमिओ कष्ट पाओ। तुमि ए कथा मने कोरो ना बाबा, आमि किछुइ भाबि नि। आमि बेश करे चिन्ता करे देखेछि ये, आमार येरकम संस्कार ओ शिक्षा ताते ब्राह्म-समाजेर बाइरे हयतो आमाके अनेक संकोच ओ कष्ट स्वीकार करते हबे--किन्तु आमार मन किछुमात्र कुण्ठित हच्छे ना, वरञ्च मनेर भितरे एकटा जोर उठछे, एकटा आनन्द हच्छे। आमार एकटि मात्र भावना, बाबा, पाछे आमार कोनो काजे तोमाके किछुमात्र कष्ट देय।"

एइ बलिया ललिता आस्ते आस्ते परेशबाबुर पाये हात बुलाइते लागिल।

परेशबाबु ईषत् हासिया कहिलेन, "मा, निजेर बुद्धिर उपरेइ यदि आमि एकमात्र निर्भर करतुम ता हले आमार इच्छा ओ मतेर विरोधे कोनो काज हले दुःख पेतुम। तोमादेर मने ये-आवेग उपस्थित हयेछे सेटा ये सम्पूर्ण अमङ्गल, से आमि जोर करे बलते पारि ने। आमिओ एकदिन विद्रोह करे घर छेड़े बेरिये एसेछिलुम, कोनो सुविधा-असुविधार कथा चिन्ताइ करि नि। समाजेर उपर आजकाल एइ-ये क्रमागत घातप्रतिघात चलछे एते बोझा याच्छे, ताँरइ शक्तिर काज चलछे। तिनि ये नाना दिक थेके भेङे गड़े शोधन करे कोन् जिनिसटाके की भावे दाँड़ करिये तुलबेन आमि तार की जानि। ब्राह्मसमाजइ कि आर हिन्दुसमाजइ कि, तिनि देखछेन मानुषके।"

एइ बलिया परेशबाबु मुहूर्तकालेर जन्य चोख बुजिया निजेर अन्तःकरणेर निभृतेर मध्ये निजेके येन स्थिर करिया लइलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किछुक्षण स्तब्ध थाकिया परेशबाबु कहिलेन, "देखो विनय, धर्ममतेर सङ्गे आमादेर देशे समाज सम्पूर्ण जड़ित हये आछे, एइ जन्ये आमादेर समस्त सामाजिक क्रियाकर्मेर सङ्गे धर्मानुष्ठानेर योग आछे। धर्ममतेर गण्डिर बाइरेर लोकके समाजेर गण्डिर मध्ये कोनोमते नेओया हबे ना ब'लेइ तार द्वार राखा हय नि, सेटा तोमरा केमन करे एड़ाबे आमि तो भेबे पाच्छिने।"

ललिता कथाटा भालो बुझिते पारिल ना, कारण अन्य समाजेर प्रथार सहित ताहादेर समाजेर प्रभेद से कोनोदिन प्रत्यक्ष करे नाइ। ताहार धारणा छिल, मोटेर उपर आचार-अनुष्ठाने परस्परे खुब बेशि पार्थक्य नाइ। विनयेर सङ्गे ताहादेर अनैक्य येमन अनुभवगोचर नय, समाजे समाजेओ येन सेइरूप। वस्तुत हिन्दु विवाह-अनुष्ठानेर मध्ये ताहार पक्षे ये विशेष कोनो बाधा आछे ताहा से जानितइ ना।

विनय कहिल, "शालग्राम रेखे आमादेर विवाह हय, आपनि सेइ कथा बलछेन ?"

परेशबाबु ललितार दिके एकबार चाहिया कहिलेन, "हाँ। ललिता कि सेटा स्वीकार करते पारबे ?"

विनय ललितार मुखेर दिके चाहिया देखिल। बुझिते पारिल, ललितार समस्त अन्तःकरण संकुचित हइया उठियाछे।

ललिता हृदयेर आवेगे एमन एकटि स्थाने आसिया पड़ियाछे याहा ताहार पक्षे सम्पूर्ण अपरिचित ओ संकटमय। इहाते विनयेर मने अत्यन्त एकटि करुणा उपस्थित हइल। समस्त आघात निजेर उपर लइया इहाके बाँचाइते हइबे। एत बड़ो तेज पराभूत हइया फिरिया याइबे सेओ येमन असह्य, जयी हइबार दुर्दम उत्साहे ए ये मृत्युबाण बुक पातिया लइबे सेओ तेमनि निदारुण। इहाके जयीओ करिते हइबे, इहाके रक्षाओ करिते हइबे।

ललिता माथा निचु करिया किछुक्षण बसिया रहिल। ताहार पर एकबार मुख तुलिया करुणचक्षे विनयेर दिके चाहिया कहिल, "आपनि कि सत्य-सत्य मनेर सङ्गे शालग्राम मानेन।"

विनय तत्क्षणात् कहिल, "ना, मानि ने। शालग्राम आमार पक्षे देवता नय, आमार पक्षे एकटा सामाजिक चिह्नमात्र।"

ललिता कहिल, "मने मने याके चिह्न बले जानेन, बाइरे ताके तो देवता बले स्वीकार करते हय ?"

विनय परेशेर दिके चाहिया कहिल, "शालग्राम आमि राखब ना।"

परेश चौकि छाड़िया उठिया कहिलेन, "विनय, तोमरा सब कथा परिष्कार करे चिन्ता करे देखछ ना। तोमार एकलार वा आरकारओ मतामत निये कथा हच्छे ना। विवाह तो केवल व्यक्तिगत नय, एटा एकटा सामाजिक कार्य, से-कथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भुलले चलबे केन। तोमरा किछुदिन समय निये भेबे देखो, एखनइ मत स्थिर करे फेलो ना।"

एइ बलिया परेश घर छाड़िया बागाने बाहिर हइया गेलेन एवं सेखाने एकला पायचारि करिते लागिलेन।

ललिताओ घर हइते बाहिर हइबार उपक्रम करिया एकटु थामिल एवं विनयेर दिके पश्चात् करिया कहिल, "आमादेर इच्छा यदि अन्याय इच्छा ना हय एवं से इच्छा यदि कोनो एकटा समाजेर विधानेर सङ्गे आगागोड़ा ना मिले याय ता हलेइ आमादेर माथा हेंट करे फिरे येते हबे, ए आमि कोनोमतेइ बुझते पारि ने। समाजे मिथ्या व्यवहारेर स्थान आछे आर स्थान नेइ न्यायसङ्गत आचरणेर ?"

विनय धीरे धीरे ललितार काछे आसिया दाँड़ाइया कहिल, "आमि कोनो समाजकेइ भय करि ने, आमरा दुजने मिले यदि सत्यके आश्रय करि ता हले आमादेर समाजेर तुल्य एतबड़ो समाज आर कोथाय पाओया याबे।"

वरदासुन्दरी झड़ेर मतो ताहादेर दुइजनार सम्मुखे आसिया कहिलेन, "विनय, शुनलुम नाकि तुमि दीक्षा नेबे ना ?"

विनय कहिल, "दीक्षा आमि उपयुक्त गुरुर काछ थेके नेब, कोनो समाजेर काछ थेके नेब ना।"

वरदासुन्दरी अत्यन्त क्रुद्ध हइया कहिलेन, "तोमादेर ए-सब षड़यन्त्र ए-सब प्रवञ्चनार माने की। दीक्षा नेब भान क'रे एइ दुदिन आमाके आर ब्राह्मसमाज-सुद्ध लोकके भुलिये काण्डटा की करले बलो देखि। ललितार तुमि की सर्वनाश करते बसेछ से-कथा एकबार भेबे देखले ना ?"

ललिता कहिल, "विनयबाबुर दीक्षाय तोमादेर ब्राह्मसमाजेर सकलेर तो सम्मति नेइ। कागजे तो पड़े देखेछ! एमन दीक्षा नेबार दरकार की।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "दीक्षा ना निले विवाह हबे की करे।"

ललिता कहिल, "केन हबे ना।"

वरदासुन्दरी कहिलेन, "हिन्दुमते हबे नाकि।"

विनय कहिल, "ता हते पारे। येटुकु बाधा आछे से आमि दूर करे देब।"

वरदासुन्दरीर मुख दिया किछुक्षण कथा बाहिर हइल ना। ताहार परे रुद्धकण्ठे कहिलेन, "विनय, याओ, तुमि याओ। ए बाड़िते तुमि एसो ना।"

६०

गोरा ये आज आसिबे सुचरिता ताहा निश्चय जानित। भोरबेला हइते ताहार बुकेर भितरटा काँपिया उठितेछिल। सुचरितार मने गोरार आगमन-प्रत्याशार आनन्देर सङ्गे येन एकटा भय जड़ित छिल। केनना गोरा ताहाके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

येदिके टानितेछिल एवं आशैशव ताहार जीवन आपनार शिकड़ ओ समस्त डाल-पाला लइया येदिके बाड़िया उठियाछे, दुयेर मध्ये पदे पदे संग्राम ताहाके अस्थिर करियाछिल।

ताइ, काल यखन मासिर घरे गोरा ठाकुरके प्रणाम करिल तखन सुचरितार मने येन छुरि बिंधिल। नाहय गोरा प्रणामइ करिल, नाहय गोरार एइरूपइ विश्वास, ए कथा बलिया से कोनोमतेइ निजेर मनके शान्त करिते पारिल ना।

गोरार आचरणे यखन से एमन किछु देखे याहार सङ्गे ताहार धर्म विश्वासेर मूलगत विरोध, तखन सुचरितार मन भये काँपिते थाके। ईश्वर ए की लड़ाइयेर मध्ये ताहाके फेलियाछेन।

हरिमोहिनी नव्यमताभिमानी सुचरिताके सुदृष्टान्त देखाइबार जन्य आजओ गोराके ताँहार ठाकुरघरे लइया गेलेन एवं आजओ गोरा ठाकुरके प्रणाम करिल।

सुचरितार बसिबार घरे गोरा नामिया आसिबामात्रइ सुचरिता ताहाके जिज्ञासा करिल, "आपनि कि एइ ठाकुरके भक्ति करेन।"

गोरा एकटु येन अस्वाभाविक जोरेर सङ्गे कहिल, "हाँ, भक्ति करि बइ-कि।"

शुनिया सुचरिता माथा हेंट करिया चुप करिया बसिया रहिल। सुचरितार सेइ नम्र नीरव वेदनाय गोरा मनेर मध्ये एकटा आघात पाइल। से ताड़ाताड़ि कहिल, "देखो, आमि तोमाके सत्य कथा बलब। आमि ठाकुरके भक्ति करि कि ना ठिक बलते पारि ने, किन्तु आमि आमार देशेर भक्तिके भक्ति करि। एतकाल धरे समस्त देशेर पूजा येखाने पौंचेछे आमार काछे से पूजनीय। आमि कोनोमतेइ खृस्टान मिशनारिर मतो सेखाने विषदृष्टिपात करते पारि ने।"

सुचरिता मने मने की चिन्ता करिते करिते गोरार मुखेर दिके चाहिया रहिल। गोरा कहिल, "आमार कथा ठिकमतो बोझा तोमार पक्षे खुब कठिन, से आमि जानि। केनना, सम्प्रदायेर भितरे मानुष हये ए-सब जिनिसेर प्रति सहज दृष्टिपात करबार शक्ति तोमादेर चले गियेछे। तुमि यखन तोमार मासिर घरे ठाकुरके देख तुमि केवल पाथरकेइ देख, आमि तोमार मासिर भक्तिपूर्ण करुण हृदयकेइ देखि। से देखे आमि कि आर राग करते पारि, अवज्ञा करते पारि। तुमि कि मने कर ओइ हृदयेर देवता पाथरेर देवता।"

सुचरिता कहिल, "भक्ति कि करलेइ हल। काके भक्ति करछि किछुइ विचार करते हबे ना?"

गोरा मनेर मध्ये एकटु उत्तेजित हइया कहिल, "अर्थात्, तुमि मने करछ एकटा सीमाबद्ध पदार्थके ईश्वर बले पूजा करा भ्रम। किन्तु केवल देशकालेर दिक थेकेइ कि सीमा निर्णय करते हबे। मने करो ईश्वरेर सम्बन्धे कोनो एकटि शास्त्रेर वाक्य स्मरण करले तोमार खुब भक्ति हय; सेइ वाक्यटि ये-पाताय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेखा आछे सेइ पाताटा मेपे तार अक्षर कयटा गुनेइ कि तुमि सेइ वाक्येर महत्त्व स्थिर करबे। भावेर असीमता विस्तृतिर असीमतार चेये ये ढेर बड़ो जिनिस। चन्द्रसूर्यताराखचित अनन्त आकाशेर चेये ओइ एतटुकु ठाकुरटि ये तोमार मासिर काछे यथार्थ असीम। परिमाणगत असीमके तुमि असीम बल, सेइ जन्येइ चोख बुजे तोमाके असीमेर कथा भाबते हय, जानि ने ताते कोनो फल पाओ किना। किन्तु हृदयेर असीमके चोख मेले एतटुकु पदार्थेर मध्येओ पाओया याय। ताइ यदि ना पाओया येत तबे तोमार मासिर यखन संसारेर समस्त सुख नष्ट हये गेल तखन तिनि ओइ ठाकुरटिके एमन करे आँकड़े धरते पारतेन कि। हृदयेर अत बड़ो शून्यता कि खेलाच्छले एक टुकरो पाथर दिये भरानो याय। भावेर असीमता ना हले मानुषेर हृदयेर फाँका भरे ना।"

एमन सकल सूक्ष्म तर्केर उत्तर देओया सुचरितार असाध्य, अथच इहाके सत्य बलिया मानिया याओयाओ ताहार पक्षे एकेबारे असम्भव। एइजन्य केवल भाषाहीन प्रतिकारहीन वेदना ताहार मने बाजिते थाके।

विरुद्ध पक्षेर सहित तर्क करिबार समय गोरार मने कोनोदिन एतटुकु दयार सञ्चार हय नाइ। वरञ्च ए-सम्बन्धे शिकारि जन्तुर मतो ताहार मने एकटा कठोर हिंस्रता छिल। किन्तु सुचरितार निरुत्तर पराभवे आज ताहार मन केमन व्यथित हइते लागिल। से कण्ठस्वरके कोमल करिया कहिल, "तोमादेर धर्ममतेर विरुद्धे आमि कोनो कथा बलते चाइ ने। आमार कथाटुकु केवल एइ, तुमि याके ठाकुर बले निन्दा करछ सेइ ठाकुरटि ये की ता शुधु चोखे देखे जानाइ याय ना; ताते यार मन स्थिर हयेछे, हृदय तृप्त हयेछे, यार चरित्र आश्रय पेयेछे, सेइ जाने से-ठाकुर मृन्मय कि चिन्मय, ससीम कि असीम। आमि तोमाके बलछि, आमादेर देशेर कोनो भक्तइ ससीमेर पूजा करे ना; सीमार मध्ये सीमाके हारिये फेला, ओइ तो तादेर भक्तिर आनन्द।"

सुचरिता कहिल, "किन्तु सबाइ तो भक्त नय।"

गोरा कहिल, "ये भक्त नय से किसेर पूजा करे ताते कार की आसे याय। ब्राह्मसमाजे ये-लोक भक्तिहीन से की करे। तार समस्त पूजा अतलस्पर्श शून्यतार मध्ये गिये पड़े। ना, शून्यतार चेये भयानक––दलादलिइ तार देवता, अहंकार तार पुरोहित। एइ रक्तपिपासु देवतार पूजा तोमादेर समाजे कि कखनो देखनि।"

एइ कथार कोनो उत्तर ना दिया सुचरिता गोराके जिज्ञासा करिल, "धर्म सम्बन्धे आपनि एइ या सब बलछेन ए कि आपनि निजेर अभिज्ञतार थेके बलछेन।"

गोरा ईषत् हासिया कहिल, "अर्थात्, तुमि जानते चाओ, आमि कोनोदिनइ ईश्वरके चेयेछि किना। ना, आमार मन ओ-दिकेइ याय नि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरितार पक्षे ए कथा खुशि हइबार कथा नहे, किन्तु तबु ताहार मन येन हाँप छाड़िया बाँचिल। एइखाने जोर करिया कोनो कथा बलिबार अधिकार ये गोरार नाइ, इहाते से एकप्रकार निश्चिन्त हइल।

गोरा कहिल, "काउके धर्मशिक्षा दिते पारि एमन दाबि आमार नेइ। किन्तु आमार देशेर लोकेर भक्तिके तोमरा ये उपहास करबे, एओ आमि कोनोदिन सह्य करते पारब ना। तुमि तोमार देशेर लोकके डेके बलछ 'तोमरा मूढ़, तोमरा पौत्तलिक'; आमि तादेर सबाइके आह्वान करे जानाते चाइ, 'ना, तोमरा मूढ़ नओ, तोमरा पौत्तलिक नओ, तोमरा ज्ञानी, तोमरा भक्त।' आमादेर धर्मतत्त्वे ये-महत्त्व आछे, भक्तितत्त्वे ये-गभीरता आछे, श्रद्धाप्रकाशेर द्वारा सेइखानेइ आमार देशेर हृदयके आमि जाग्रत करते चाइ; येखाने तार सम्पद आछे सेइखाने तार अभिमानके आमि उद्यत करे तुलते चाइ। आमि तार माथा हेंट करे देब ना, निजेर प्रति तार धिक्कार जन्मिये निजेर सत्येर प्रति ताके अन्ध करे तुलब ना। एइ आमार पण। तोमार काछेओ आज आमि एइ जन्येइ एसेछि। तोमाके देखे अवधि एकटि नूतन कथा दिनरात्रि आमार माथाय घुरछे। एतदिन से-कथा आमि भाबि नि। केवलइ आमार मने हच्छे, केवल पुरुषेर दृष्टितेइ तो भारतवर्ष सम्पूर्ण प्रत्यक्ष हबेन ना। आमादेर मेयेदेर चोखेर सामने येदिन आविर्भूत हबेन सेइदिनइ ताँर प्रकाश पूर्ण हबे। तोमार सङ्गे एकसङ्गे एक दृष्टिते आमि आमार देशके सम्मुखे देखब, एइ एकटि आकांक्षा येन आमाके दग्ध करछे। आमार भारतवर्षेर जन्य आमि पुरुष तो केवलमात्र खेटे मरते पारि, किन्तु तुमि ना हले प्रदीप ज्वेले ताँके वरण करबे के। भारतवर्षेर सेवा सुन्दर हबे ना, तुमि यदि ताँर काछ थेके दूरे थाक।"

हाय, कोथाय छिल भारतवर्ष। कोन् सुदूरे छिल सुचरिता। कोथा हइते आसिल भारतवर्षेर एइ साधक, एइ भावे-भोला तापस। सकलके ठेलिया केन से ताहारइ पाशे आसिया दाँड़ाइल। सकलके छाड़िया केन से ताहाकेइ आह्वान करिल। कोनो संशय करिल ना, बाधा मानिल ना। बलिल, 'तोमाके नहिले चलिबे ना, तोमाके लइबार जन्य आसियाछि, तुमि निर्वासित हइया थाकिले यज्ञ सम्पूर्ण हइबे ना।' सुचरितार दुइ चक्षु दिया झर झर करिया जल पड़िते लागिल, केन ताहा से बुझिते पारिल ना।

गोरा सुचरितार मुखेर दिके चाहिल। सेइ दृष्टिर सम्मुखे सुचरिता ताहार अश्रुविगलित दुइ चक्षु नत करिल ना। चिन्ताविहीन शिशिरमण्डित फुलेर मतो ताहा नितान्त आत्मविस्मृतभावे गोरार मुखेर दिके फुटिया रहिल।

सुचरितार सेइ संकोचविहीन संशयविहीन अश्रुधाराप्लावित दुइ चक्षुर सम्मुखे, भूमिकम्पे पाथरेर राजप्रासाद येमन टले तेमनि करिया गोरार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समस्त प्रकृति येन टलिते लागिल। गोरा प्राणपण बले आपनाके संवरण करिया लइबार जन्य मुख फिराइया जानालार बाहिरेर दिके चाहिल। तखन सन्ध्या हइया गियाछे। गलिर रेखा संकीर्ण हइया येखाने बड़ो रास्ताय पड़ियाछे सेखाने खोला आकाशे कालो पाथरेर मतो अन्धकारेर उपर तारा देखा याइतेछे। सेइ आकाश-खण्ड, सेइ क'टि तारा गोरार मनके आज कोथाय वहन करिया लइया गेल——संसारेर समस्त दाबि हइते, एइ अभ्यस्त पृथिवीर प्रतिदिनेर सुनिर्दिष्ट कर्मपद्धति हइते कत दूरे। राज्य-साम्राज्येर कत उत्थानपतन, युगयुगान्तरेर कत प्रयास ओ प्रार्थनाके बहु दूरे अतिक्रम करिया ओइटुकु आकाश एवं ओइ क'टि तारा सम्पूर्ण निर्लिप्त हइया अपेक्षा करिया आछे; अथच अतलस्पर्श गभीरतार मध्य हइते एक हृदय यखन आर-एक हृदयके आह्वान करे तखन निभृत जगत्-प्रान्तेर सेइ वाक्यहीन व्याकुलता येन ओइ दूर आकाश एवं दूर ताराके स्पन्दित करिते थाके। कर्मरत कलिकातार पथे गाड़ि-घोड़ा ओ पथिकेर चलाचल एइ मुहूर्ते गोरार चक्षे छायाछविर मतो वस्तुहीन हइया गेल; नगरेर कोलाहल किछुइ ताहार काछे आर पौंछिल ना; निजेर हृदयेर दिके चाहिया देखिल——सेओ ओइ आकाशेर मतो निस्तब्ध निभृत अन्धकार, एवं सेखाने जले-भरा दुइटि सरल सकरुण चक्षु निमेष हाराइया येन अनादि काल हइते अनन्त कालेर दिके ताकाइया आछे।

हरिमोहिनीर कण्ठ शुनिया गोरा चमकिया उठिया मुख फिराइल।

"बाबा, किछु मिष्टिमुख करे याओ।"

गोरा ताड़ाताड़ि बलिया उठिल, "आज किन्तु नय। आज आमाके माप करते हबे——आमि एखनि याच्छि।"

बलिया गोरा आर-कोनो कथार अपेक्षा ना करिया द्रुतवेगे बाहिर हइया चलिया गेल।

हरिमोहिनी विस्मित हइया सुचरितार मुखेर दिके चाहिलेन। सुचरिता घर हइते बाहिर हइया गेल। हरिमोहिनी माथा नाड़िया भाविते लागिलेन——ए आबार की काण्ड।

अनतिकाल परेइ परेशबाबु आसिया उपस्थित हइलेन। सुचरितार घरे सुचरिताके देखिते ना पाइया हरिमोहिनीके गिया जिज्ञासा करिलेन, "राधारानी कोथाय।"

हरिमोहिनी विरक्तिर कण्ठे कहिलेन, "की जानि, एतक्षण तो गौरमोहनेर सङ्गे बसबार घरे आलाप चलछिल, तार परे एखन बोध हय छाते एकला पायचारि हच्छे।"

परेश आश्चर्य हइया जिज्ञासा करिलेन, "एइ ठाण्डाय एत रात्रे छाते?"

22

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिमोहिनी कहिलेन, "एकटु ठाण्डा हयेइ निक। एखनकार मेयेदेर ठाण्डाय अपकार हबे ना।"

हरिमोहिनीर मन आज खाराप हइया गियाछे बलिया तिनि राग करिया सुचरिताके खाइते डाकेन नाइ। सुचरितारओ आज समयेर ज्ञान छिल ना।

हठात् स्वयं परेशबाबुके छाते आसिते देखिया सुचरिता अत्यन्त लज्जित हइया उठिल। कहिल, "बाबा, चलो, नीचे चलो--तोमार ठाण्डा लागबे।"

घरे आसिया प्रदीपेर आलोके परेशेर उद्‌विग्न मुख देखिया सुचरितार मने खुब एकटा घा लागिल। एतदिन यिनि पितृहीनार पिता एवं गुरु छिलेन, आशैशवेर समस्त बन्धन विच्छिन्न करिया ताँहार काछ हइते के आज सुचरिताके दूरे टानिया लइया याइतेछे। सुचरिता किछुतेइ येन निजेके क्षमा करिते पारिल ना। परेश क्लान्तभावे चौकिते बसिले पर दुर्निवार अश्रुके गोपन करिबार जन्य सुचरिता ताँहार चौकिर पश्चाते दाँड़ाइया धीरे धीरे ताँहार पक्व केशेर मध्ये अंगुलिचालना करिया दिते लागिल।

परेश कहिलेन, "विनय दीक्षा ग्रहण करते असम्मत हयेछेन।"

सुचरिता कोनो उत्तर करिल ना। परेश कहिलेन, "विनयेर दीक्षाग्रहणेर प्रस्तावे आमार मने यथेष्ट संशय छिल, सेइ जन्ये आमि एते विशेष क्षुण्ण हइ नि--किन्तु ललितार कथार भावे बुझते पारछि, दीक्षा ना हलेओ विनयेर सङ्गे विवाहे से कोनो बाधा अनुभव करछे ना।"

सुचरिता हठात् खुब जोरेर सहित बलिया उठिल, "ना बाबा, से कखनोइ हते पारबे ना। किछुतेइ ना।"

सुचरिता सचराचर एमन अनावश्यक व्यग्रता प्रकाश करिया कथा कय ना, सेइ जन्य ताहार कण्ठस्वरे एइ आकस्मिक आवेगेर प्रवलताय परेश मने मने एकटु आश्चर्य हइलेन एवं जिज्ञासा करिलेन, "की हते पारबे ना।"

सुचरिता कहिल, "विनय ब्राह्म ना हले कोन् मते बिये हबे।"

परेश कहिलेन, "हिन्दुमते।"

सुचरिता सवेगे घाड़ नाड़िया कहिल, "ना, ना, आजकाल ए-सब की कथा हच्छे। एमन मनेओ आना उचित नय। शेषकाले ठाकुरपुजो करे ललितार बिये हबे! ए किछुतेइ हते दिते पारब ना।"

गोरा ना कि सुचरितार मन टानिया लइयाछे ताइ से आज हिन्दुमते विवाहेर कथाय एमन एकटा अस्वाभाविक आक्षेप प्रकाश करितेछे। एइ आक्षेपेर भितरकार आसल कथाटा एइ ये, परेशके सुचरिता एक जायगाय दृढ़ करिया धरिया बलितेछे, 'तोमाके छाड़िब ना, आमि एखनो तोमार समाजेर, तोमार मतेर, तोमार शिक्षार बन्धन कोनोमतेइ छिँड़िते दिब ना।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेश कहिलेन, "विवाह-अनुष्ठाने शालग्रामेर संस्रव बाद दिते विनय राजि हयेछे।"

सुचरिता चौकिर पिछन हइते आसिया परेशेर सम्मुखे चौकि लइया बसिल। परेश ताहाके जिज्ञासा करिलेन, "एते तुमि की बल।"

सुचरिता एकटु चुप करिया कहिल, "आमादेर समाज थेके ललिताके ता हले बेरिये येते हबे!"

परेश कहिलेन, "एइ कथा निये आमाके अनेक चिन्ता करते हयेछे। कोनो मानुषेर सङ्गे समाजेर यखन विरोध बाधे तखन दुटो कथा भेबे देखबार आछे, दुइ पक्षेर मध्ये न्याय कोन् दिके एवं प्रबल के। समाज प्रबल ताते सन्देह नेइ; अतएव विद्रोहीके दुःख पेते हबे। ललिता बारम्बार आमाके बलछे, दुःख स्वीकार करते से ये शुधु प्रस्तुत ता नय, एते से आनन्द बोध करछे। ए कथा यदि सत्य हय ता हले अन्याय ना देखले आमि ताके बाधा देब की करे।"

सुचरिता कहिल, "किन्तु, बाबा, ए की रकम हबे!"

परेश कहिलेन, "जानि एते एकटा संकट उपस्थित हबे। किन्तु ललितार सङ्गे विनयेर विवाहे यखन दोष किछु नेइ, एमन-कि, सेटा उचित, तखन समाजे यदि बाधे तबे से-बाधा माना कर्तव्य नय बले आमार मन बलछे। मानुषकेइ समाजेर खातिरे संकुचित हये थाकते हबे, ए कथा कखनोइ ठिक नय; समाजकेइ मानुषेर खातिरे निजेके केवलइ प्रशस्त करे तुलते हबे। सेजन्ये यारा दुःख स्वीकार करते राजि आछे आमि तो तादेर निन्दा करते पारब ना।"

सुचरिता कहिल, "बाबा, एते तोमाकेइ सब चेये वेशि दुःख पेते हबे।"

परेश कहिलेन, "से-कथा भावबार कथाइ नय।"

सुचरिता जिज्ञासा करिल, "बाबा, तुमि कि सम्मति दियेछ।"

परेश कहिलेन, "ना, एखनो दिइ नि। किन्तु दितेइ हबे। ललिता ये-पथे याच्छे से-पथे आमि छाड़ा के ताके आशीर्वाद करबे, आर ईश्वर छाड़ा के तार सहाय आछेन।"

परेशबाबु यखन चलिया गेलेन तखन सुचरिता स्तम्भित हइया बसिया रहिल। से जानित परेश ललिताके मने मने कत भालोबासेन, सेइ ललिता बाँधा पथ छाड़िया दिया एतबड़ो एकटा अनिर्देश्येर मध्ये प्रवेश करिते चलियाछे, इहाते ताँहार मन ये कत उद्विग्न ताहा ताहार बुझिते बाकि छिल ना, तत्सत्त्वे एइ वयसे तिनि एमन एकटा विप्लवे सहायता करिते चलियाछेन, अथच इहार मध्ये विक्षोभ कतइ अल्प। निजेर जोर तिनि कोथाओ किछुमात्र प्रकाश करेन नाइ, किन्तु ताँहार मध्ये कतबड़ो जोर अनायासेइ आत्मगोपन करिया आछे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वे हइले परेशेर प्रकृतिर एइ परिचय ताहार काछे विचित्र बलिया ठेकित ना, केनना परेशके शिशुकाल हइतेइ तो से देखिया आसितेछे। किन्तु आजइ, किछुक्षण पूर्वेइ ना कि सुचरितार समस्त अन्तःकरण गोरार अभिघात सह्य करियाछे, सेइ जन्य एइ दुइ श्रेणीर स्वभावेर सम्पूर्ण पार्थक्य से मने मने सुस्पष्ट अनुभव ना करिया थाकिते पारिल ना। गोरार काछे ताहार निजेर इच्छा की प्रचण्ड। एवं सेइ इच्छाके सवेगे प्रयोग करिया से अन्यके केमन करिया अभिभूत करिया फेले। गोरार सहित ये-केह ये-कोनो सम्बन्ध स्वीकार करिबे गोरार इच्छार काछे ताहाके नत हइते हइबे। सुचरिता आज नत हइयाछे एवं नत हइया आनन्दओ पाइयाछे, आपनाके विसर्जन करिया एकटा बड़ो जिनिस पाइयाछे बलिया अनुभव करियाछे, किन्तु तबु आज परेश यखन ताहार घरेर दीपालोक हइते धीरपदे चिन्तानत मस्तके बाहिरेर अन्धकारे चलिया गेलेन तखन यौवन-तेजोदीप्त गोरार सङ्गे विशेषभावे तुलना करियाइ सुचरिता अन्तरेर भक्ति-पुष्पाञ्जलि विशेष करिया परेशेर चरणे समर्पण करिल एवं कोलेर उपर दुइ करतल जुड़िया अनेकक्षण पर्यन्त शान्त हइया चित्रार्पितेर मतो बसिया रहिल।

६१

आज सकाल हइते गोरार घरे खुब एकटा आन्दोलन उठियाछे। प्रथमे महिम ताँहार हुँका टानिते टानिते आसिया गोराके जिज्ञासा करिलेन, "ता हले, एतदिन परे विनय शिक्‌लि काटल बुझि!"

गोरा कथाटा बुझिते पारिल ना, महिमेर मुखेर दिके चाहिया रहिल। महिम कहिलेन, "आमादेर काछे आर भाँड़िये की हबे बलो। तोमार बन्धुर खबर तो आर चापा रइल ना—ढाक बेजे उठेछे। एइ देखो-ना।"

बलिया महिम गोरार हाते एकखाना बांला खबरेर कागज दिलेन। ताहाते अद्य रविवारे विनयेर ब्राह्मसमाजे दीक्षाग्रहणेर संवाद उपलक्ष करिया एक तीव्र प्रबन्ध बाहिर हइयाछे। गोरा यखन जेले छिल सेइ समये ब्राह्मसमाजेर कन्यादाय-ग्रस्त कोनो विशिष्ट सभ्य एइ दुर्बलचित्त युवकके गोपन प्रलोभने वश करिया सनातन हिन्दुसमाज हइते विच्छिन्न करिया लइयाछे बलिया लेखक ताँहार रचनाय विस्तर कटु भाषा विस्तार करियाछेन।

गोरा यखन बलिल, से ए संवाद जाने ना, तखन महिम प्रथमे विश्वास करिलेन ना, तार परे विनयेर एइ गभीर छद्मव्यवहारे बार बार विस्मय प्रकाश करिते लागिलेन। एवं बलिया गेलेन, स्पष्ट वाक्ये शशिमुखीके विवाहे सम्मति दिया ताहार परेओ यखन विनय कथा नड़चड़ करिते लागिल तखनइ आमादेर बोझा उचित छिल ताहार सर्वनाशेर सूत्रपात हइयाछे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अविनाश हाँपाइते हाँपाइते आसिया कहिल, "गौरमोहनबाबु, ए की काण्ड। ए ये आमादेर स्वप्नेर अगोचर। विनयबाबुर शेषकाले--"

अविनाश कथा शेष करितेइ पारिल ना। विनयेर एइ लाञ्छनाय ताहार मने एत आनन्द बोध हइतेछिल ये, दुश्चिन्तार भान करा ताहार पक्षे दुरूह हइया उठियाछिल।

देखिते देखिते गोरार दलेर प्रधान प्रधान सकल लोकइ आसिया जुटिल। विनयके लइया ताहादेर मध्ये खुब एकटा उत्तेजनापूर्ण आलोचना चलिते लागिल। अधिकांश लोकइ एकवाक्ये बलिल--वर्तमान घटनाय विस्मयेर विषय किछुइ नाइ, कारण विनयेर व्यवहारे ताहारा बराबरइ एकटा द्विधा एवं दुर्बलतार लक्षण देखिया आसियाछे ; वस्तुत ताहादेर दलेर मध्ये विनय कोनोदिनइ कायमनोवाक्ये आत्मसमर्पण करे नाइ। अनेकेइ कहिल---विनय गोड़ा हइतेइ निजेके कोनोक्रमे गौरमोहनेर समकक्ष बलिया चालाइया दिते चेष्टा करित, इहा ताहादेर असह्य बोध हइत। अन्य सकले येखाने भक्तिर संकोचे गौरमोहनेर सहित यथोचित दूरत्व रक्षा करिया चलित सेखाने विनय गाये पड़िया गोरार सङ्गे एमन एकटा माखामाखि करित येन से आर-सकलेर सङ्गे पृथक एवं गोरार ठिक समश्रेणीर लोक ; गोरा ताहाके स्नेह करित बलियाइ ताहार एइ अद्‌भुत स्पर्धा सकले सह्य करिया याइत--सेइप्रकार अबाध अहंकारेरइ एइरूप शोचनीय परिणाम हइया थाके।

ताहारा कहिल, 'आमरा विनयबाबुर मतो विद्वान नइ, आमादेर अत अत्यन्त बेशि बुद्धिओ नाइ, किन्तु बापु, आमरा बराबर या-हय एकटा प्रिन्सिपल धरिया चलियाछि ; आमादेर मने एक मुखे आर नाइ ; आमादेर द्वारा आज एकरकम काल अन्यरकम असम्भव--इहाते आमादिगके मूर्खइ बल, निर्बोधइ बल, आर याइ बल।'

गोरा ए-सब कथाय एकटि कथाओ योग करिल ना, स्थिर हइया बसिया रहिल।

वेला हइया गेले यखन एके एके सकले चलिया गेल तखन गोरा देखिल, विनय ताहार घरे प्रवेश ना करिया पाशेर सिँड़ि दिया उपरे चलिया याइतेछे। गोरा ताड़ाताड़ि घर हइते बाहिर हइया आसिल ; डाकिल, "विनय।"

विनय सिँड़ि हइते नामिया गोरार घरे प्रवेश करितेइ गोरा कहिल, "विनय, आमि कि ना-जेने तोमार प्रति कोनो अन्याय करेछि, तुमि आमाके येन त्याग करेछ बले मने हच्छे।"

आज गोरार सङ्गे एकटा झगड़ा बाधिबे, ए कथा विनय आगेभागेइ स्थिर करिया मनटाके कठिन करियाइ आसियाछिल। एमन समय विनय आसिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरार मुख यखन विमर्ष देखिल एवं ताहार कण्ठस्वरे एकटा स्नेहेर वेदना यखन अनुभव करिल, तखन से जोर करिया मनके ये बाँधिया आसियाछिल ताहा एकमुहूर्तेइ छिन्नविच्छिन्न हइया गेल ।

से बलिया उठिल, "भाइ गोरा, तुमि आमाके भुल बुझो ना । जीवने अनेक परिवर्तन घटे, अनेक जिनिस त्याग करते हय, किन्तु ताइ बले बन्धुत्व केन त्याग करब ।"

गोरा किछुक्षण चुप करिया थाकिया कहिल, "विनय, तुमि कि ब्राह्मसमाजे दीक्षा ग्रहण करेछ ।"

विनय कहिल, "ना गोरा, करि नि, एवं करबओ ना । किन्तु सेटार उपर आमि कोनो जोर दिते चाइ ने ।"

गोरा कहिल, "तार माने की ।"

विनय कहिल, "तार माने एइ ये, आमि ब्राह्मधर्मे दीक्षा निलुम कि ना-निलुम, सेइ कथाटाके अत्यन्त तुमुल करे तोलबार मतो मनेर भाव आमार एखन आर नेइ ।"

गोरा जिज्ञासा करिल, "पूर्वेइ वा मनेर भाव किरकम छिल, आर एखनइ वा किरकम हयेछे जिज्ञासा करि ।"

गोरार कथार सुरे विनयेर मन आबार एकबार युद्धेर जन्य कोमर बाँधिते बसिल । से कहिल, "आगे यखन शुनतुम केउ ब्राह्म हते याच्छे मनेर मध्ये खुब एकटा राग हत, से येन विशेषरूप शास्ति पाय एइ आमार इच्छा हत । किन्तु एखन आमार ता हय ना । आमार मने हय, मतके मत दिये, युक्तिके युक्ति दियेइ बाधा देओया चले, किन्तु बुद्धिर विषयके क्रोध दिये दण्ड देओया बर्बरता ।"

गोरा कहिल, "हिन्दु ब्राह्म हच्छे देखले एखन आर राग हबे ना, किन्तु ब्राह्म प्रायश्चित्त करे हिन्दु हते याच्छे देखले रागे तोमार अङ्ग ज्वलते थाकबे, पूर्वेर सङ्गे तोमार एइ प्रभेदटा घटेछे ।"

विनय कहिल, "एटा तुमि आमार उपर राग करे बलछ, विचार करे बलछ ना ।"

गोरा क़हिल, "आमि तोमार 'परे श्रद्धा करेइ बलछि, एइरकम हओयाइ उचित छिल ; आमि हलेओ एइरकम हत । बहुरूपी येरकम रङ बदलाय धर्ममत ग्रहण ओ त्याग यदि सेइरकम आमादेर चामड़ार उपरकार जिनिस हत, ता हले कोनो कथाइ छिल ना, किन्तु सेटा मर्मेर जिनिस बलेइ सेटाके हालका करते पारि नि । यदि कोनो-रकम बाधा ना थाके, यदि दण्डेर माशुल ना दिते हय, ता हले गुरुतर विषये एकटा मत ग्रहण वा परिवर्तनेर समय मानुष निजेर समस्त बुद्धिके जागाबे केन । सत्यके यथार्थ सत्य बलेइ ग्रहण करछि किना मानुषके तार परीक्षा देओया चाइ । दण्ड स्वीकार करतेइ हबे । मूल्यटा एड़िये रत्नटुकु पाबे, सत्येर कारबार एमन शौखिन कारबार नय ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तर्केर मुखे आर-कोनो वल्गा रहिल ना। कथार उपरे कथा बाणेर उपरे बाणेर मतो आसिया पड़िया परस्पर संघाते अग्निस्फुलिङ्ग वर्षण करिते लागिल।

अवशेषे अनेकक्षण वाग्युद्धेर पर विनय उठिया दाँड़ाइया कहिल, "गोरा, तोमार एवं आमार प्रकृतिर मध्ये एकटा मूलगत प्रभेद आछे। सेटा एतदिन कोनोमते चापा छिल, यखनइ माथा तुलते चेयेछे आमिइ ताके नत करेछि, केनना आमि जानतुम, येखाने तुमि कोनो पार्थक्य देख सेखाने तुमि सन्धि करते जान ना, एकेबारे तलोयार हाते छुटते थाक। ताइ तोमार बन्धुत्वके रक्षा करते गिये आमि चिरदिनइ निजेर प्रकृतिके खर्ब करे एसेछि। आज बुझते पारछि, एते मङ्गल हय नि एवं मङ्गल हते पारे ना।"

गोरा कहिल, "एखन, तोमार अभिप्राय की आमाके खुले बलो।"

विनय कहिल, "आज आमि एकला दाँड़ालुम। समाज ब'ले राक्षसेर काछे प्रतिदिन मानुष-बलि दिये कोनोमते ताके ठाण्डा करे राखते हबे एवं येमन करे होक तारइ शासनपाश गलाय बेंधे बेड़ाते हबे, ताते प्राण थाक् आर ना थाक्, ए आमि कोनोमतेइ स्वीकार करते पारब ना।"

गोरा कहिल, "महाभारतेर सेइ ब्राह्मणशिशुटिर मतो खड़के निये बकासुर वध करते बेरबे ना कि।"

विनय कहिल, "आमार खड़केते बकासुर मरबे किना ता जानि ने, किन्तु आमाके चिबिये खेये फेलबार अधिकार ये तार काछे ए कथा आमि कोनोमतेइ मानब ना—यखन से चिबिये खाच्छे तखनो ना।"

गोरा कहिल, "ए-समस्त तुमि रूपक दिये कथा बलछ, बोझा कठिन हये उठछे।"

विनय कहिल, "बोझा तोमार पक्षे कठिन नय, मानाइ तोमार पक्षे कठिन। मानुष येखाने स्वभावत स्वाधीन, धर्मत स्वाधीन, आमादेर समाज सेखाने तार खाओया शोओया वसाकेओ नितान्त अर्थहीन बन्धने बेंधेछे, ए कथा तुमि आमार चेये कम जान ता नय; किन्तु एइ जबरदस्तिके तुमि जबरदस्तिर द्वाराइ मानते चाओ। आमि आज बलछि, एखाने आमि कारओ जोर मानब ना। समाजेर दाबिके आमि ततक्षण पर्यन्त स्वीकार करब यतक्षण से आमार उचित दाबिके रक्षा करबे। से यदि आमाके मानुष बले गण्य ना करे, आमाके कलेर पुतुल करे वानाते चाय, आमिओ ताके फुलचन्दन दिये पूजा करब ना, लोहार कल बलेइ गण्य करब।"

गोरा कहिल, "अर्थात्, संक्षेपे तुमि ब्राह्म हबे।"

विनय कहिल, "ना।"

गोरा कहिल, "ललिताके तुमि बिये करबे?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनय कहिल, "हाँ।"

गोरा जिज्ञासा करिल, "हिन्दुविवाह ?"

विनय कहिल, "हाँ।"

गोरा। परेशबाबु ताते सम्मत आछेन ?

विनय। एइ ताँर चिठि।

गोरा परेशेर चिठि दुइबार करिया पड़िल। ताहार शेष अंशे छिल--

'आमार भालो मन्द लागार कोनो कथा तुलिब ना, तोमादेर सुविधा-असुविधार कोनो कथाओ पाड़िते चाइ ना। आमार मत-विश्वास की, आमार समाज की, से तोमरा जान, ललिता छेलेवेला हइते की शिक्षा पाइयाछे एवं की संस्कारेर मध्ये मानुष हइयाछे ताओ तोमादेर अविदित नाइ। ए-समस्तइ जानिया शुनिया तोमादेर पथ तोमरा निर्वाचन करिया लइयाछ। आमार आर-किछुइ बलिबार नाइ। मने करियो ना, आमि किछुइ ना भाबिया अथवा भाबिया ना पाइया हाल छाड़िया दियाछि। आमार यतदूर शक्ति आमि चिन्ता करियाछि। इहा बुझियाछि, तोमादेर मिलनके बाधा दिबार कोनो धर्मसंगत कारण नाइ, केनना तोमार प्रति आमार सम्पूर्ण श्रद्धा आछे। ए स्थले समाजे यदि कोनो बाधा थाके तबे ताहाके स्वीकार करिते तोमरा बाध्य नओ। आमार केवल एइटुकुमात्र बलिबार आछे, समाजके यदि तोमरा लङ्घन करिते चाओ तबे समाजेर चेये तोमादिगके बड़ो हइते हइबे। तोमादेर प्रेम, तोमादेर सम्मिलित जीवन, केवल येन प्रलयशक्तिर सूचना ना करे, ताहाते सृष्टि ओ स्थितिर तत्त्व थाके येन। केवल एइ एकटा काजेर मध्ये हठात् एकटा दुःसाहसिकता प्रकाश करिले चलिबे ना ; इहार परे तोमादेर जीवनेर समस्त काजके वीरत्वेर सूत्रे गाँथिया तुलिते हइबे, नहिले तोमरा अत्यन्त नामिया पड़िबे। केनना बाहिर हइते समाज तोमादिगके सर्वसाधारणेर समान क्षेत्रे आर वहन करिया राखिबे ना-- तोमरा निजेर शक्तिते एइ साधारणेर चेये बड़ो यदि ना हओ तबे साधारणेर चेये तोमादिगके नामिया याइते हइबे। तोमादेर भविष्यत् शुभाशुभेर जन्य आमार मने यथेष्ट आशङ्का रहिल। किन्तु एइ आशङ्कार द्वारा तोमादिगके बाधा दिबार कोनो अधिकार आमार नाइ ; कारण, पृथिवीते याहारा साहस करिया निजेर जीवनेर द्वारा नव नव समस्यार मीमांसा करिते प्रस्तुत हय ताहाराइ समाजके बड़ो करिया तुले। याहारा केवलइ विधि मानिया चले ताहारा समाजके वहन करे मात्र, ताहाके अग्रसर करे ना। अतएव आमार भीरुता आमार दुश्चिन्ता लइया तोमादेर पथ आमि रोध करिब ना। तोमरा याहा भालो बुझियाछ समस्त प्रतिकलतार विरुद्धे ताहा पालन करो, ईश्वर तोमादेर सहाय हउन। ईश्वर कोनो-एक अवस्थार मध्ये ताँहार सृष्टिके शिकल दिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाँधिया राखेन ना, ताहाके नव नव परिणतिर मध्ये चिरनवीन करिया जागाइया तुलितेछेन ; तोमरा ताँहार सेइ उद्बोधनेर दूतरूपे निजेर जीवनके मशालेर मतो ज्वालाइया दुर्गम पथे अग्रसर हइते चलियाछ, यिनि विश्वेर पथचालक तिनि तोमादिगके पथ देखान--आमार पथेइ तोमादिगके चिरदिन चलिते हइबे एमन अनुशासन आमि प्रयोग करिते पारिब ना। तोमादेर वयसे आमराओ एकदिन घाट हइते रशि खुलिया झड़ेर मुखे नौका भासाइयाछिलाम, काहारओ निषेध शुनि नाइ। आजओ ताहार जन्य अनुताप करि ना। यदिइ अनुताप करिबार कारण घटित ताहातेइ वा की। मानुष भुल करिबे, व्यर्थओ हइबे, दुःखओ पाइबे, किन्तु बसिया थाकिबे ना ; याहा उचित बलिया जानिबे ताहार जन्य आत्मसमर्पण करिबे ; एमनि करियाइ पवित्रसलिला संसारनदीर स्रोत चिरदिन प्रवहमान हइया विशुद्ध थाकिबे। इहाते माझे माझे क्षणकालेर जन्य तीर भाङिया क्षति करिते पारे, एइ आशङ्का करिया चिरदिनेर जन्य स्रोत बाँधिया दिले मारीके आह्वान करिया आना हइबे, इहा आमि निश्चय जानि ; अतएव ये शक्ति तोमादिगके दुर्निवार वेगे सुखस्वच्छन्दता ओ समाज-विधिर बाहिरे आकर्षण करिया लइया चलियाछेन ताँहाकेइ भक्तिर सहित प्रणाम करिया ताँहारइ हस्ते तोमादेर दुइ जनके समर्पण करिलाम, तिनिइ तोमादेर जीवने समस्त निन्दा-ग्लानि ओ आत्मीय-विच्छेदके सार्थक करिया तुलुन। तिनिइ तोमादिगके दुर्गम पथे आह्वान करियाछेन, तिनिइ तोमादिगके गम्यस्थाने लइया याइवेन।'

गोरा एइ चिठि पड़िया किछुक्षण चुप करिया थाकिले पर विनय कहिल, "परेशबाबु ताँर दिक थेके येमन सम्मति दियेछेन, तेमनि तोमार दिक थेकेओ गोरा तोमाके सम्मति दिते हबे।"

गोरा कहिल, "परेशबाबु सम्मति दिते पारेन, केनना नदीर ये-धारा कूल भाङ्छे सेइ धाराइ ताँदेर। आमि सम्मति दिते पारि ने, केनना आमादेर धारा कूलके रक्षा करे। आमादेर एइ कूले कत शतसहस्र वत्सरेर अभ्रभेदी कीर्ति रयेछे, आमरा कोनोमतेइ बलते पारब ना, एखाने प्रकृतिर नियमइ काज करते थाक्। आमादेर कूलके आमरा पाथर दियेइ बाँधिये राखब--ताते आमादेर निन्दाइ कर आर याइ कर। ए आमादेर पवित्र प्राचीन पुरी--एर उपरे वत्सरे वत्सरे नूतन माटिर पलि पड़बे, आर चाषार दले लाङल निये एर जमि चषबे, एटा आमादेर अभिप्रेत नय--ताते आमादेर या लोकसान हय होक। ए आमादेर वास करबार, ए चाष करबार नय। अतएव तोमादेर कृषिविभाग थेके आमादेर एइ पाथरगुलोके यखन कठिन बले निन्दा कर, तखन ताते आमरा मर्मान्तिक लज्जा बोध करि ने।"

विनय कहिल, "अर्थात्, संक्षेपे, तुमि आमादेर एइ विवाहके स्वीकार करबे ना ?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "निश्चय करब ना।"

विनय कहिल, "एवं—"

गोरा कहिल, "एवं तोमादेर त्याग करब।"

विनय कहिल, "आमि यदि तोमार मुसलमान बन्धु हतुम।"

गोरा कहिल, "ता हले अन्य कथा हत। गाछेर आपन डाल भेङे प'ड़े यदि पर हये याय तबे गाछ ताके कोनोमतेइ पूर्बेर मतो आपन करे फिरे निते पारे ना—किन्तु बाइरे थेके ये-लता एगिये आसे ताके से आश्रय दिते पारे, एमन-कि, झड़े भेङे पड़ले आबार ताके तुले निते कोनो बाधा थाके ना। आपन यखन पर हय तखन ताके सम्पूर्ण त्याग करा छाड़ा अन्य कोनो गति नेइ। सेइ जन्येइ तो एत विधिनिषेध, एत प्राणपण टानाटानि।"

विनय कहिल, "सेइ जन्येइ तो त्यागेर कारण अत हालका एवं त्यागेर विधान अत सुलभ हओया उचित छिल ना। हात भाङ्ले आर जोड़ा लागे ना बटे, सेइ जन्येइ कथाय कथाय हात भाङेओ ना। तार हाड़ खुब मजबुत। ये-समाजे अति सामान्य घा लागलेइ विच्छेद घटे एवं से-विच्छेद चिरविच्छेद हये दाँड़ाय, से-समाजे मानुषेर पक्षे स्वच्छन्दे चलाफेरा काजकर्म करार पक्षे बाधा कत से-कथा कि चिन्ता करे देखबे ना।"

गोरा कहिल, "से चिन्तार भार आमार उपर नेइ। समाज एमन समग्र-भावे एमन बड़ोरकम करे चिन्ता करछे ये आमि टेरओ पाच्छि ने से भावछे। हाजार-हाजार वत्सर धरे से भेबेओछे एवं आपनाके रक्षाओ करे एसेछे, एइ आमार भरसा। पृथिवी सूर्येर चारि दिके बेंके चलछे कि सोजा चलछे, भुल करछे कि करछे ना, से येमन आमि भाबि ने एवं ना भेबे आज पर्यन्त आमि ठकि नि—आमार समाज सम्बन्धेओ आमार सेइ भाव।"

विनय हासिया कहिल, "भाइ गोरा, ठिक एइ-सब कथा आमिओ एतदिन एमनि करेइ बले एसेछि—आज आबार आमाकेओ से-कथा शुनते हबे ता के जानत। कथा बानिये बलबार शास्ति आज आमाके भोग करते हबे, से आमि बेश बुझते पेरेछि। किन्तु तर्क करे कोनो लाभ नेइ। केनना एकटा कथा आमि आज खुब निकटेर थेके देखते पेयेछि, सेटि पूर्वे देखि नि ; आज बुझेछि, मानुषेर जीवनेर गति महानदीर मतो, से आपनार वेगे अभावनीय रूपे एमन नूतन नूतन दिके पथ करे नेय येदिके पूर्वे तार स्रोत छिल ना—एइ तार गतिर वैचित्र्य, तार अभावनीय परिणतिइ विधातार अभिप्राय—से काटा खाल नय, ताके बाँधा पथे राखा चलबे ना। निजेर मध्येइ यखन ए कथाटा एकेबारे प्रत्यक्ष हयेछे तखन कोनो साजानो कथाय आर आमाके कोनोदिन भोलाते पारबे ना।"

गोरा कहिल, "पतङ्ग यखन वह्निर मुखे पड़ते चले सेओ तखन तोमार मतो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठिक ओइरकम तर्कइ करे--अतएव तोमाके आमिओ आज बोझाबार कोनो वृथा चेष्टा करब ना।"

विनय चौकि हइते उठिया कहिल, "सेइ भालो--तबे चललुम--एकबार मार सङ्गे देखा करे आसि।"

विनय चलिया गेल, महिम धीरे धीरे घरे आसिया प्रवेश करिलेन। पान चिबाइते चिबाइते जिज्ञासा करिलेन, "सुविधा हल ना बुझि? हबेओ ना। कतदिन थेके बले आसछि, सावधान हओ, बिगड़बार लक्षण देखा याच्छे--कथाटा कानेइ आनले ना। सेइ समये जोरजार करे कोनोमते शशिमुखीर सङ्गे ओर बियेटा दिये दिते पारले कोनो कथाइ थाकत ना। किन्तु का कस्य परिवेदना। बलि वा काके। निजे येटि बुझबे ना से तो माथा खुँड़ेओ बुझानो याबे ना। एखन विनयेर मतो छेले तोमार दल भेङे गेल, ए कि कम आपसोसेर कथा।"

गोरा कोनो उत्तर करिल ना। महिम कहिलेन, "ता हले विनयके फेराते पारले ना? ता याक, किन्तु शशिमुखीर सङ्गे ओर विवाहेर कथाटा निये किछु बेशि गोलमाल हये गेछे। एखन शशीर बिये दिते आर देरि करले चलबे ना। जानइ तो आमादेर समाजेर गतिक, यदि एकटा मानुषके कायदाय पेले तबे ताके नाकेर जले चोखेर जले करे छाड़े। ताइ एकटि पात्र--ना, तोमार भय नेइ, तोमाके घटकालि करते हबे ना। से आमि निजेइ ठिकठाक करे नियेछि।"

गोरा जिज्ञासा करिल, "पात्रटि के।"

महिम कहिलेन, "तोमादेर अविनाश।"

गोरा कहिल, "से राजि हयेछे?"

महिम कहिल, "राजि हबे ना! ए कि तोमार विनय पेयेछ। ना, याइ बल देखा गेल, तोमार दलेर मध्ये ओइ अविनाश छेलेटि तोमार भक्त बटे। तोमार परिवारेर सङ्गे तार योग हबे, ए कथा शुने से तो आह्लादे नेचे उठल। बलले, 'ए आमार भाग्य, ए आमार गौरव।' टाकाकड़िर कथा जिज्ञासा करलुम, से अमनि काने हात दिये बलले, 'माप करबेन, ओ-सब कथा आमाके किछुइ बलबेन ना।' आमि बललुम 'आच्छा, से-सब कथा तोमार बाबार सङ्गे हबे।' तार बापेर काछेओ गियेछिलुम। छेलेर सङ्गे बापेर अनेक तफात देखा गेल। टाकार कथाय बाप मोटेइ काने हात दिले ना, वरञ्च एमनि आरम्भ करले ये आमारइ काने हात ओठवार जो हल। छेलेटिओ देखलुम, ए-सकल विषये अत्यन्त पितृभक्त, एकबारे पिता हि परमं तपः--ताके मध्यस्थ रेखे कोनो फल हबे ना। एबारे कोम्पानिर कागजटा ना भाङिये काज सारा हल ना। ता याइ होक, तुमिओ अविनाशके दुइ-एक कथा बले दियो। तोमार मुख थेके उत्साह पेले--"

गोरा कहिल, "टाकार अङ्क ताते किछु कमबे ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिम कहिलेन, "ता जानि—पितृभक्तिटा यखन काजे लागबार मतो हय तखन सामलानो शक्त।"

गोरा जिज्ञासा करिल, "कथाटा पाका हये गेछे ?"

महिम कहिलेन, "हाँ।"

गोरा। दिनक्षण एकेबारे स्थिर ?

महिम। स्थिर बइ कि, माघेर पूर्णिमातिथिते। से आर बेशि देरि नेइ। बाप बलेछेन हीरेमानिके काज नेइ, किन्तु खुब भारि सोनार गयना चाइ। एखन, की करले सोनार दर ना बाड़िये सोनार भार बाड़ाते पारि सेकरार सङ्गे किछुदिन तारइ परामर्श करते हबे।

गोरा कहिल, "किन्तु एत बेशि ताड़ाताड़ि करबार की दरकार आछे। अविनाश ये अल्पदिनेर मध्ये ब्राह्मसमाजे ढुकबे एमन आशङ्का नेइ।"

महिम कहिलेन, "ता नेइ बटे, किन्तु बाबार शरीर इदानीं बड़ो खाराप हये उठेछे सेटा तोमरा लक्ष्य करे देखछ ना। डाक्तारेरा यतइ आपत्ति करछे ओंर नियमेर मात्रा आरओ ततइ बाड़िये तुलछेन। आजकाल ये-संन्यासी ओंर सङ्गे जुटेछे से ओंके तिन वेला स्नान कराय, तार उपरे आबार एमनि हठयोग लागियेछे ये चोखेर तारा भुरु निश्वासप्रश्वास नाड़िटाड़ि समस्त एकेबारे उल्टोपाल्टा हबार जो हयेछे। बाबा बेंचे थाकते थाकते शशिर बियेटा हये गेलेइ सुविधा हय ; ओंर पेन्शनेर जमा टाकाटा ओङ्कारानन्द स्वामीर हाते पड़बार पूर्वेइ काजटा सारते पारले आमाके बेशि भावते हय ना। बाबार काछे कथाटा काल पेड़ेओछिलुम—देखलुम बड़ो सहज व्यापार नय। भेवेछि ओइ संन्यासी बेटाके किछुदिन खुब कषे गाँजा खाइये वश करे निये ओरइ द्वारा काज उद्धार करते हबे। यारा गृहस्थ, यादेर टाकार दरकार सब चेये बेशि, बाबार टाका तादेर भोगे आसबे ना एटा तुमि निश्चय जेनो। आमार मुशकिल हयेछे एइ ये, अन्येर बाबा कषे टाका तलब करे आर निजेर बाबा टाका देबार कथा शुनलेइ प्राणायाम करते बसे याय। आमि एखन ओइ एगारो बछरेर मेयेटाके गलाय बेंधे कि जले डुब दिये मरब।"

६२

हरिमोहनी जिज्ञासा करिलेन, "राधारानी, काल रात्रे तुमि किछु खेले ना केन।"

सुचरिता विस्मित हइया कहिल, "केन, खेयेछि बइ-कि।"

हरिमोहिनी ताहार ढाका खाबार देखाइया कहिलेन, "कोथाय खेयेछ। ओइ ये पड़े रयेछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तखन सुचरिता बुझिल, काल खाबार कथा ताहार मनेइ छिल ना।

हरिमोहिनी रुक्ष स्वरे कहिलेन, "ए-सब तो भालो कथा नय। आमि तोमादेर परेशबाबुके यतदूर जानि, तिनि ये एतदूर सब बाड़ाबाड़ि भालोबासेन ता तो आमार मने हय ना; ताँके देखले मानुषेर मन शान्त हय। तोमार आजकालकार भावगतिक तिनि यदि सब जानते पारेन ता हल की बलबेन बलो देखि।"

हरिमोहिनीर कथार लक्ष्यटा की ताहा सुचरितार बुझिते बाकि रहिल ना। प्रथमटा मुहूर्तकालेर जन्य ताहार मनेर मध्ये संकोच आसियाछिल। गोरार सहित ताहार सम्बन्धके नितान्त साधारण स्त्रीपुरुषेर सम्बन्धेर सहित समान करिया एमनतरो एकटा अपवादेर कटाक्ष ये ताहादेर उपरे पड़िते पारे, ए कथा से कखनो चिन्ताइ करे नाइ। सेइजन्य हरिमोहिनीर वक्रोक्तिते से कुण्ठित हइया पड़िल। किन्तु परक्षणेइ हातेर काज फेलिया से खाड़ा हइया बसिल एवं हरिमोहिनीर मुखेर दिके चोख तुलिया चाहिल।

गोरार कथा लइया से मनेर मध्ये काहारओ काछे कोनो लज्जा राखिबे ना, इहा मुहूर्तेर मध्ये से स्थिर करिल एवं कहिल, "मासि, तुमि तो जान, काल गौरमोहनबाबु एसेछिलेन। ताँर सङ्गे आलापेर विषयटि आमार मनके खुब अधिकार करे बसेछिल, सेइ जन्ये आमि खाबारेर कथा भुलेइ गियेछिलुम। तुमि थाकले काल अनेक कथा शुनते पेते।"

हरिमोहिनी येमन कथा शुनिते चान गोरार कथा ठिक तेमनटि नहे। भक्तिर कथा शुनितेइ ताँहार आकांक्षा। गोरार मुखे भक्तिर कथा तेमन सरल ओ सरस हइया बाजिया ओठे ना। गोरार सम्मुखे बराबर येन एकजन प्रतिपक्ष आछे; ताहार विरुद्धे गोरा केवलइ लड़ाइ करितेछे। याहारा माने ना ताहादिगके से मानाइते चाय, किन्तु ये माने ताहाके से की बलिबे। याहा लइया गोरार उत्तेजना हरिमोहिनी ताहाते सम्पूर्ण उदासीन। ब्राह्मसमाजेर लोक यदि हिन्दुसमाजेर सहित ना मिलिया निजेर मत लइया थाके ताहाते ताँहार आन्तरिक क्षोभ किछुइ नाइ, ताँहार निजेर प्रियजनगुलिर सहित ताँहार विच्छेदेर कोनो कारण ना घटिलेइ तिनि निश्चिन्त थाकेन। एइ जन्य गोरार सङ्गे आलाप करिया ताँहार हृदय लेशमात्र रस पाय नाइ। इहार परे हरिमोहिनी यखनइ अनुभव करिलेन गोराइ सुचरितार मनके अधिकार करियाछे, तखनइ गोरार कथावार्ता ताँहार काछे आरओ बेशि अरुचिकर ठेकिते लागिल। सुचरिता आर्थिक विषये सम्पूर्ण स्वाधीन एवं मते विश्वासे आचरणे सम्पूर्ण स्वतन्त्र; एइ जन्य सुचरिताके कोनो दिक दिया हरिमोहिनी सर्वतोभावे आयत्त करिते पारेन नाइ—अथच सुचरिताइ शेषवयसे हरिमोहिनीर एकटिमात्र अवलम्बन—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एइ कारणेइ सुचरितार प्रति परेशबाबुर छाड़ा आर-काहारओ कोनोप्रकार अधिकार हरिमोहिनीके नितान्त विक्षुब्ध करिया तोले। हरिमोहिनीर केवलइ मने हइते लागिल, गोरार आगागोड़ा समस्तइ कृत्रिमता, ताहार आसल मनेर लक्ष्य कोनोरकम छले सुचरितार चित्त आकर्षण करा। एमन-कि सुचरितार निजेर ये विषयसम्पत्ति आछे ताहार प्रतिओ मुख्यभावे गोरार लुब्धता आछे बलिया हरिमोहिनी कल्पना करिते लागिलेन। गोराकेइ हरिमोहिनी ताँहार प्रधान शत्रु स्थिर करिया ताहाके बाधा दिबार जन्य मने मने कोमर बाँधिया दाँड़ाइलेन।

सुचरितार बाड़िते आज गोरार याइबार कोनो कथा छिल ना, कोनो कारणओ छिल ना। किन्तु गोरार स्वभावे द्विधा जिनिसटा अत्यन्त कम। से यखन किछुते प्रवृत्त हय तखन से सम्बन्धे से चिन्ताइ करे ना। एकेबारे तीरेर मतो सोजा चलिया याय।

आज प्रातःकाले सुचरितार घरे गिया गोरा यखन उठिल तखन हरिमोहिनी पूजाय प्रवृत्त छिलेन। सुचरिता ताहार बसिबार घरे टेबिलेर उपरकार बइ खाता कागज प्रभृति परिपाटी करिया गुछाइया राखितेछिल, एमन समय सतीश आसिया यखन खबर दिल गौरबाबु आसियाछेन तखन सुचरिता विशेष विस्मय अनुभव करिल ना। से येन मने करियाछिल, आज गोरा आसिबे।

गोरा चौकिते बसिया कहिल, "शेषकाले विनय आमादेर त्याग करले।"

सुचरिता कहिल, "केन, त्याग करबेन केन ; तिनि तो ब्राह्मसमाजे योग देन नि।"

गोरा कहिल, "ब्राह्मसमाजे बेरिये गेले तिनि एर चेये आमादेर बेशि काछे थाकतेन। तिनि हिन्दुसमाजके आँकड़े धरे आछेन बलेइ एके सब चेये बेशि पीड़न करछेन। एर चेये आमादेर समाजके सम्पूर्ण निष्कृति दिलेइ तिनि भालो करतेन।"

सुचरिता मनेर मध्ये एकटा कठिन वेदना पाइया कहिल, "आपनि समाजके एमन अतिशय एकान्त करे देखेन केन ? समाजेर उपर आपनि एत बेशि विश्वास स्थापन करेछेन, ए कि आपनार पक्षे स्वाभाविक। ना अनेकटा निजेर उपर जोर प्रयोग करेन ?"

गोरा कहिल, "एखनकार अवस्थाय एइ जोर प्रयोग कराटाइ ये स्वाभाविक। पायेर नीचे यखन माटि टलते थाके तखन प्रत्येक पदेइ पायेर उपर बेशि करे जोर दिते हय। एखन ये चारि दिकेइ विरुद्धता, सेइ जन्य आमादेर वाक्ये एवं व्यवहारे एकटा बाड़ाबाड़ि प्रकाश पाय। सेटा अस्वाभाविक नय।"

सुचरिता कहिल, "चारि दिके ये विरुद्धता देखछेन सेटाके आपनि आगागोड़ा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्याय एवं अनावश्यक केन मने करछेन। समाज यदि कालेर गतिके बाधा देय ताहले समाजके ये आघात पेतेइ हबे।"

गोरा कहिल, "कालेर गति हच्छे जलेर ढेउयेर मतो, ताते डाङाके भाङते थाके; किन्तु सेइ भाङनके स्वीकार करे नेओयाइ ये डाङार कर्तव्य आमि ता मने करि ने। तुमि मने कोरो ना, समाजेर भालोमन्द आमि किछुइ विचार करि ने। से-रकम विचार करा एतइ सहज ये एखनकार कालेर षोलो बछरेर बालकओ विचारक हये उठेछे। किन्तु शक्त हच्छे समग्र जिनिसके श्रद्धार दृष्टिते समग्र भावे देखते पाओया।"

सुचरिता कहिल, "श्रद्धार द्वारा आमरा कि केवल सत्यकेइ पाइ। ताते करे मिथ्याकेओ तो आमरा अविचारे ग्रहण करि। आमि आपनाके एकटा कथा जिज्ञासा करि--आमरा कि पौत्तलिकताकेओ श्रद्धा करते पारि। आपनि कि ए-समस्त सत्य बलेइ विश्वास करेन।"

गोरा एकटुखानि चुप करिया थाकिया कहिल, "आमि तोमाके ठिक सत्य कथाटा बलबार चेष्टा करब। आमि गोड़ातेइ एगुलिके सत्य बले धरे नियेछि। युरोपीय संस्कारेर सङ्गे एदेर विरोध आछे बलेइ एवं एदेर विरुद्धे कतकगुलि अत्यन्त सस्ता युक्ति प्रयोग करा याय बलेइ आमि ताड़ाताड़ि एदेर जवाब दिये बसि नि। धर्म सम्बन्धे आमार निजेर कोनो विशेष साधना नेइ; किन्तु साकार पूजा एवं पौत्तलिकता ये एकइ, मूर्तिपूजातेइ ये भक्तितत्त्वेर एकटि चरम परिणति नेइ, ए कथा आमि नितान्त अभ्यस्त वचनेर मतो चोख बुजे आओड़ाते पारब ना। शिल्पे साहित्ये एमन-कि विज्ञाने इतिहासेओ मानुषेर कल्पना-वृत्तिर स्थान आछे, एकमात्र धर्मेर मध्ये तार कोनो काज नेइ ए कथा आमि स्वीकार करब ना। धर्मेर मध्येइ मानुषेर सकल वृत्तिर चूड़ान्त प्रकाश। आमादेर देशेर मूर्तिपूजाय ज्ञान ओ भक्तिर सङ्गे कल्पनार सम्मिलन हवार ये चेष्टा हयेछे सेटाते करेइ आमादेर देशेर धर्म कि मानुषेर काछे अन्य देशेर चेये सम्पूर्णतर सत्य हये ओठे नि।"

सुचरिता कहिल, "ग्रीसे रोमेओ तो मूर्तिपूजा छिल।"

गोरा कहिल, "सेखानकार मूर्तिते मानुषेर कल्पना सौन्दर्यबोधके यतटा आश्रय करेछिल ज्ञानभक्तिके ततटा नय, आमादेर देशे कल्पना ज्ञान ओ भक्तिर सङ्गे गभीररूपे जड़ित। आमादेर कृष्णराधाइ बल, हरपार्वतीइ बल, केवलमात्र ऐतिहासिक पूजार विषय नय; तार मध्ये मानुषेर चिरन्तन तत्त्वज्ञानेर रूप रयेछे। सेइ जन्यइ रामप्रसादेर चैतन्यदेवेर भक्ति एइ-समस्त मूर्तिके अवलम्बन करे प्रकाश पेयेछे। भक्तिर एमन एकान्त प्रकाश ग्रीस-रोमेर इतिहासे कबे देखा दियेछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "कालेर परिवर्तनेर सङ्गे सङ्गे धर्म ओ समाजेर कोनो परिवर्तन आपनि एकेबारे स्वीकार करते चान ना ?"

गोरा कहिल, "केन चाइब ना। किन्तु परिवर्तन तो पागलामि हले चलबे ना। मानुषेर परिवर्तन मनुष्यत्वेर पथेइ घटे--छेलेमानुष क्रमे बुड़ोमानुष हये ओठे, किन्तु मानुष तो हठात् कुकुर-बिड़ाल हय ना। भारतवर्षेर परिवर्तन भारतवर्षेर पथेइ हओया चाइ, हठात् इंराजि इतिहासेर पथ धरले आगागोड़ा समस्त पण्ड ओ निरर्थक हये याबे। देशेर शक्ति देशेर ऐश्वर्य देशेर मध्येइ सञ्चित हये आछे, सेइटे आमि तोमादेर जानाबार जन्यइ आमार जीवन उत्सर्ग करेछि। आमार कथा बुझते पारछ ?"

सुचरिता कहिल, "हाँ बुझते पारछि। किन्तु ए-सब कथा आमि कखनो पूर्वे शुनि नि एवं भाबि नि। नतुन जायगाय गिये पड़ले खुब स्पष्ट जिनिसेरओ परिचय हते येमन विलम्ब घटे आमार तेमनि हच्छे। बोध हय आमि स्त्रीलोक बलेइ आमार उपलब्धिते जोर पौंछच्छे ना।"

गोरा बलिया उठिल, "कखनोइ ना। आमि तो अनेक पुरुषके जानि, एइ-सब आलाप-आलोचना आमि तादेर सङ्गे अनेकदिन धरे करे आसछि--तारा निःसंशये ठिक करे बसे आछे तारा खुब बुझेछे, किन्तु आमि तोमाके निश्चय बलछि, तोमार मनेर सामने तुमि आज येटि देखते पाच्छ तारा एकटि लोकओ तार एकटुओ देखे नि। तोमार मध्ये सेइ गभीर दृष्टिशक्ति आछे, से आमि तोमाके देखेइ अनुभव करेछिलुम ; सेइजन्येइ आमि आमार एतकालेर हृदयेर समस्त कथा निये तोमार काछे एसेछि आमार समस्त जीवनके तोमार सामने मेले दियेछि, किछुमात्र संकोच बोध करि नि।"

सुचरिता कहिल, "आपनि अमन करे यखन बलेन आमार मनेर मध्ये भारि एकटा व्याकुलता बोध हय। आमार काछ थेके आपनि की आशा करछेन, आमि तार की दिते पारि, आमाके की काज करते हब, आमार मध्ये ये एकटा भावेर आवेग आसछे तार प्रकाश ये किरकम, आमि किछुइ बुझते पारछि ने। आमार केवलइ भय हते थाके, आमार उपरे आपनि ये विश्वास रेखेछेन से पाछे समस्तइ भुल बले एकदिन आपनार काछे धरा पड़े।"

गोरा मेघगम्भीर कण्ठे कहिल, "सेखाने भुल कोथाओ नेइ। तोमार भितरे ये कत बड़ो शक्ति आछे से आमि तोमाके देखिये देब। तुमि किछुमात्र उत्कण्ठा मने रेखो ना--तोमार ये योग्यता से प्रकाश करे तोलबार भार आमार उपरे रयेछे, आमार उपरे तुमि निर्भर करो।"

सुचरिता कोनो कथा कहिल ना, किन्तु निर्भर करिते ताहार ये किछुइ बाकि नाइ एइ कथाटि निःशब्दे व्यक्त हइल। गोराओ चुप करिया रहिल ; घरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनेकक्षण कोनो शब्दइ रहिल ना, बाहिरे गलिते पुरानो-बासन-ओयाला पितलेर पात्रे झन् झन् शब्द करिया द्वारेर सम्मुख दिया हाँकिते हाँकिते चलिया गेल।

हरिमोहिनी ताँहार पूजाह्निक शेष करिया पाकशालाय याइते छिलेन। सुचरितार निःशब्द घरे ये कोनो लोक आछे ताहा ताँहार मनेओ हय नाइ——किन्तु घरेर दिके हठात् चाहिया हरिमोहिनी यखन देखिलेन सुचरिता ओ गोरा चुप करिया बसिया भाबितेछे, उभये कोनो प्रकार शिष्टालापमात्रओ करितेछे ना, तखन एक मुहूर्ते ताँहार क्रोधेर शिखा ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त येन विद्युद्वेगे ज्वलिया उठिल। आत्मसंवरण करिया तिनि द्वारे दाँड़ाइया डाकिलेन, "राधारानी।"

सुचरिता उठिया ताँहार काछे आसिले तिनि मृदुस्वरे कहिलेन, "आज एकादशी, आमार शरीर भालो नेइ, याओ तुमि रान्नाघरे गिये उनानटा धराओ गे——आमि ततक्षण गौरबाबुर काछे एकटु बसि।"

सुचरिता मासिर भाव देखिया उद्विग्न हइया रान्नाघरे चलिया गेल। हरिमोहिनी घरे प्रवेश करिते गोरा ताँहाके प्रणाम करिल। तिनि कोनो कथा ना कहिया चौकिते बसिलेन। किछुक्षण ठोंट चापिया चुप करिया थाकिया कहिलेन, "तुमि तो बाबा, ब्राह्म नओ?"

गोरा कहिल, "ना।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "आमादेर हिन्दुसमाजके तुमि तो मान?"

गोरा कहिल, "मानि बइ कि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "तबे तोमार ए की रकम व्यवहार।"

गोरा हरिमोहिनीर अभियोग किछुइ बुझिते ना पारिया चुप करिया ताँहार मुखेर दिके चाहिया रहिल।

हरिमोहिनी कहिलेन, "राधारानीर वयस हयेछे; तोमरा तो ओर आत्मीय नओ, ओर सङ्गे तोमादेर एत की कथा। ओ मेयेमानुष, घरेर काजकर्म करबे, ओरइ वा ए-सब कथाय थाकबार दरकार की। ओते ये ओर मन अन्य दिके निये याय। तुमि तो ज्ञानी लोक——देशसुद्ध सकलेइ तोमार प्रशंसा करे——किन्तु ए-सब आमादेर देशे कबेइ वा छिल, आर कोन् शास्त्रेइ वा लेखे।"

गोरा हठात् एकटा मस्त धाक्का पाइल। सुचरितार सम्बन्धे एमन कथा ये कोनो पक्ष हइते उठिते पारे ताहा से चिन्ताओ करे नाइ। से एकटु चुप करिया थाकिया कहिल, "इनि ब्राह्मसमाजे आछेन, बराबर एँके एइरकम सकलेर सङ्गे मिशते देखेछि, सेइजन्ये आमार किछु मने हय नि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "आच्छा, ओइ नाहय ब्राह्मसमाजे आछे किन्तु तुमि तो ए-सब कखनो भालो बल ना। तोमार कथा शुने आजकालकार कत लोकेर चैतन्य हच्छे, आर तोमार व्यवहार एरकम हले लोके तोमाके मानबे केन। एइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये काल रात्रि पर्यन्त ओर सङ्गे तुमि कथा कये गेले, तातेओ तोमार कथा शेष हल ना, आबार आज सकालेइ एसेछ ! सकाल थेके ओ आज ना गेल भाँड़ारे, ना गेल रान्नाघरे—आज एकादशीर दिने आमाके ये एकटु साहाय्य करबे ताओ ओर मने हल ना, ए ओर की रकम शिक्षा हच्छे। तोमादेर निजेर घरेओ तो मेये आछे—तादेर निये कि समस्त काजकर्म बन्ध करे तुमि एइरकम शिक्षा दिच्छ ना आर-केउ दिले तुमि भालो बोध कर ?"

गोरार तरफे ए-सब कथार कोनो उत्तर छिल ना। से केवल कहिल, "इनि एइरकम शिक्षातेइ मानुष हयेछेन बले आमि एँर सम्बन्धे किछु विवेचना करि नि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ओ ये-शिक्षाइ पेये थाक् यतदिन आमार काछे आछे आर आमि बेंचे आछि ए-सब चलबे ना। ओके आमि अनेकटा फिरिये एनेछि। ओ यखन परेशबाबुर बाड़िते छिल तखनइ तो आमार सङ्गे मिशे ओ हिंदु हये गेछे रव उठेछिल। तार परे ए बाड़िते एसे तोमादेर विनयेर सङ्गे की जानि की सब कथावार्ता हते लागल, आबार सब उलटे गेल। तिनि तो आज ब्राह्मघरे विये करते याच्छेन। याक्, अनेक कष्टे विनयके तो विदाय करेछि। तार परे हारानबाबु बले एकटि लोक आसत ; से एलेइ आमि राधारानीके निये आमार उपरेर घरे बसतुम, से आर आमल पेल ना। एमनि करे अनेक दुःखे ओर आज-काल आबार येन एकटु मति फिरेछे बले बोध हच्छे। ए बाड़िते एसे ओ आबार सकलेर छोंया खेते आरम्भ करेछिल, काल देखलुम सेटा बन्ध करेछे। काल रान्नाघर थेके निजेर भात निजेइ निये गेल, बेहाराके जल आनते वारण करे दिले। एखन, बापु, तोमार काछे जोड़-हाते आमार एइ मिनति, तोमरा ओके आर माटि कोरो ना। संसारे आमार ये-केउ छिल सब मरे झरे केवल ओइ एकटिते एसे ठेकेछे, ओरओ ठिक आपन बलते आमि छाड़ा आर-केउ नेइ। ओके तोमरा छेड़े दाओ। ओदेर घरे आरओ तो ढेर बड़ो बड़ो मेये आछे—ओइ लावण्य आछे, लीला आछे, ताराओ बुद्धिमती, पड़ाशुना करेछे ; यदि तोमार किछु बलबार थाके ओदेर काछे गिये बलो गे, केउ तोमाके माना करबे ना।"

गोरा एकेबारे स्तम्भित हइया बसिया रहिल। हरिमोहिनी किछुक्षण चुप करिया थाकिया पुनराय कहिलेन, "भेबे देखो, ओके तो वियेथाओया करते हबे, वयस तो यथेष्ट हयेछे। तुमि कि बल, ओ चिरदिन एइरकम आइबुड़ो हयेइ थाकबे। गृहधर्म कराटा तो मेयेमानुषेर दरकार।"

साधारणभावे ए सम्बन्धे गोरार कोनो संशय छिल ना, ताहारओ एइ मत बटे, किन्तु सुचरिता सम्बन्धे निजेर मतके से मने मनेओ कखनो प्रयोग करिया देखे नाइ। सुचरिता गृहिणी हइया कोनो एक गृहस्थ-घरेर अन्तःपुरे घरकन्नाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नियुक्त आछे ए-कल्पना ताहार मनेओ उठे ना। येन सुचरिता आजओ येमन आछे बराबर ठिक एमनिइ थाकिबे।

गोरा जिज्ञासा करिल, "आपनार बोनझिर विवाहेर कथा किछु भेबेछेन नाकि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "भाबते हय बइ कि, आमि ना हले आर भाबबे के।"

गोरा प्रश्न करिल, "हिन्दु समाजे कि ओंर विवाह हते पारबे।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "से-चेष्टा तो करते हबे। ओ यदि आर गोल ना करे, बेश ठिकमतो चले, ता हले ओके बेश चालिये दिते पारब। से आमि मने मने सब ठिक करे रेखेछि, एतदिन ओर येरकम गतिक छिल साहस करे किछु करे उठते पारि नि। एखन आबार दु दिन थेके देखछि ओर मनटा नरम हये आसछे, ताइ भरसा हच्छे।"

गोरा भाबिल, ए सम्बन्धे आर बेशि किछु जिज्ञासा करा उचित नय, किन्तु किछुतेइ थाकिते पारिल ना; प्रश्न करिल, "पात्र कि काउके मने मने ठिक करेछेन।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ता करेछि। पात्रटि बेश भालोइ—कैलास, आमार छोटो देवर। किछुदिन हल तार बउटि मारा गेछे; मनेर मतो बड़ो मेये पाय नि बलेइ एतदिन बसे आछे, नइले से-छेले कि पड़ते पाय। राधारानीर सङ्गे ठिक मानाबे।"

मनेर मध्ये गोरार यतइ छुँच फुटिते लागिल ततइ से कैलासेर सम्बन्धे प्रश्न करिते लागिल।

हरिमोहिनीर देवरदेर मध्ये कैलासइ निजेर विशेष यत्ने किछुदूर लेखापड़ा करियाछिल—कत दूर ताहा हरिमोहिनी बलिते पारेन ना। परिवारेर मध्ये ताहारइ विद्वान बलिया ख्याति आछे। ग्रामेर पोस्ट्मास्टारेर विरुद्धे सदरे दरखास्त करिबार समय कैलासइ एमन आश्चर्य इंराजि भाषाय समस्तटा लिखिया दयाछिल ये, पोस्ट-आपिसेर कोन्-एक बड़ोबाबु स्वयं आसिया तदन्त करिया गयाछिलेन। इहाते ग्रामवासी सकलेइ कैलासेर क्षमताय विस्मय अनुभव करियाछे। एत शिक्षा सत्त्वेओ आचारे धर्मे कैलासेर निष्ठा किछुमात्र ह्रास हय नाइ।

कैलासेर इतिवृत्त समस्त बला हइले गोरा उठिया दाँड़ाइल, हरिमोहिनीके णाम करिल एवं कोनो कथा ना बलिया घर हइते बाहिर हइया गेल।

सिँड़ि दिया गोरा यखन प्राङ्गणे नामिया आसितेछे तखन प्राङ्गणेर अपर प्रान्ते पाकशालाय सुचरिता कर्मे व्यापृत छिल। गोरार पदशब्द शुनिया से द्वारेर काछे आसिया दाँड़ाइल। गोरा कोनो दिके दृष्टिपात ना करिया बाहिरे चलिया गेल। सुचरिता एकटि दीर्घनिश्वास फेलिया पुनराय पाकशालार काजे आसिया नियुक्त हइल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा गलिर मोड़ेर काछे आसितेइ हारानबाबुर सङ्गे ताहार देखा हइल। हारानबाबु एकटु हासिया कहिलेन, "आज सकालइ ये !"

गोरा ताहार कोनो उत्तर करिल ना। हारानबाबु पुनराय एकटु हासिया जिज्ञासा करिलेन, "ओखाने गियेछिलेन बुझि ! सुचरिता बाड़ि आछे तो !"

गोरा कहिल, "हाँ।" बलियाइ से हन्हन् करिया चलिया गेल।

हारानबाबु एकेबारेइ सुचरितार बाड़िते ढुकिया रान्नाघरेर मुक्त द्वार दिया ताहाके देखिते पाइलेन ; सुचरितार पालाइबार पथ छिल ना, मासिओ निकटे छिलेन ना।

हारानबाबु जिज्ञासा करिलेन, "गौरमोहनबाबुर सङ्गे एइमात्र देखा हल। तिनि एखानेइ एतक्षण छिलेन बुझि ?"

सुचरिता ताहार कोनो जवाब ना करियाँ हठात् हाँड़िकुँड़ि लइया अत्यन्त व्यस्त हइया उठिल ; येन एखन ताहार निश्वास फेलिबार अवकाश नाइ एइरकम भावटा जानाइल। किन्तु हारानबाबु ताहाते निरस्त हइलेन ना। तिनि घरेर बाहिरे सेइ प्राङ्गणे दाँड़ाइया कथावार्ता आरम्भ करिया दिलेन। हरिमोहिनी सिँड़िर काछे आसिया दुइ-तिनबार काशिलेन, ताहातेओ किछुमात्र फल हइल ना। हरिमोहिनी हारानबाबुर सम्मुखेइ आसिते पारितेन किन्तु तिनि निश्चय बुझिया-छिलेन, एकबार यदि तिनि हारानबाबुर सम्मुखे बाहिर हन तबे ए बाड़िते एइ उद्यमशील युवकेर अदम्य उत्साह हइते तिनि एवं सुचरिता कोथाओ आत्मरक्षा करिते पारिबेन ना। एइजन्य हारानबाबुर छाया देखिलेओ तिनि एतटा परिमाणे घोमटा टानिया देन ये ताहा ताँहार वधू वयसेओ ताँहार पक्षे अतिरिक्त बलिया गण्य हइते पारित।

हारानबाबु कहिलेन, "सुचरिता, तोमरा कोन् दिके चलेछ बलो देखि। कोथाय गिये पौंछबे। बोध हय शुनेछ ललितार सङ्गे विनयबाबुर हिन्दुमते बिये हबे ? तुमि जान एजन्ये के दायी ?"

सुचरितार निकट कोनो उत्तर ना पाइया हारानबाबु स्वर नत करिया गम्भीर-भावे कहिलेन, "दायी तुमि।"

हारानबाबु मने करियाछिलेन, एतबड़ो एकटा सांघातिक अभियोगेर आघात सुचरिता सह्य करिते पारिबे ना। किन्तु से बिना वाक्यव्यये काज करिते लागिल ; देखिया तिनि स्वर आरओ गम्भीर करिया सुचरितार प्रति ताँहार तर्जनी प्रसारित ओ कम्पित करिया कहिलेन, "सुचरिता, आमि आवार बलछि, दायी तुमि। बुकेर उपरे डान हात रेखे कि बलते पार ये, एजन्ये ब्राह्मसमाजेर काछे तोमाके अपराधी हते हबे ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता उनानेर उपरे नीरवे तेलेर कड़ा चापाइया दिल एवं तेल चड़् बड़् शब्द करिते लागिल।

हारान बलिते लागिलेन, "तुमिइ विनयबाबुके एवं गौरमोहनबाबुके तोमादेर घरे एनेछ एवं तादेर एत दूर पर्यन्त प्रश्रय दियेछ ये, आज तोमादेर ब्राह्मसमाजेर समस्त मान्य बन्धुदेर चेये एरा दुजनेइ तोमादेर काछे बड़ो हये उठेछे। तार फल की हयेछे देखते पाच्छ? आमि कि प्रथम थेकेइ बार बार सावधान करे दिइ नि। आज की हल। आज ललिताके के निवृत्त करबे। तुमि भावछ ललितार उपर दियेइ विपदेर अवसान हये गेल। ता नय। आमि आज तोमाके सावधान करे दिते एसेछि। एबार तोमार पाला। आज ललितार दुर्घटनाय तुमि निश्चयइ मने मने अनुताप करछ, किन्तु एमन दिन अनतिदूरे एसेछे येदिन निजेर अधःपतने तुमि अनुतापमात्रओ करबे ना। किन्तु सुचरिता, एखनो फेरबार समय आछे। एकबार भेबे देखो, एकदिन कत बड़ो महत् आशार मध्ये आमरा दुजने मिलेछिलुम, आमादेर सामने जीवनेर कर्तव्य की उज्ज्वल छिल, ब्राह्मसमाजेर भविष्यत् की उदारभावेइ प्रसारित हयेछिल, आमादेर कत संकल्प छिल एवं कत पाथेय आमरा प्रतिदिनइ संग्रह करेछि। से-समस्तइ कि नष्ट हयेछे मने कर। कखनोइ ना। आमादेर सेइ आशार क्षेत्र आजओ तेमनि प्रस्तुत हये आछे। एकबार मुख फिरिये केवल चाओ। एकबार फिरे एस।"

तखन फुटन्त तेलेर मध्ये अनेकखानि शाक तरकारि छ्याँक् छ्याँक् करितेछिल एवं खोन्ता दिया सुचरिता ताहाके विधिमते नाड़ा दितेछिल; यखन हारानबाबु ताँहार आह्वानेर फल जानिबार जन्य चुप करिलेन तखन सुचरिता आगुनेर उपर हइते कड़ा नीचे नामाइया मुख फिराइल एवं दृढ़स्वरे कहिल, "आमि हिन्दु।"

हारानबाबु एकेबारे हतबुद्धि हइया कहिलेन, "तुमि हिन्दु!"

सुचरिता कहिल, "हाँ, आमि हिन्दु।"

बलिया कड़ा आबार उनाने चड़ाइया सवेगे खोन्ता चालनाय प्रवृत्त हइल।

हारानबाबु क्षणकाल धाक्का सामलाइया लइया तीव्रस्वरे कहिलेन, "गौरमोहनबाबु ताइ बुझि सकाल नेइ सन्ध्या नेइ तोमाके दीक्षा दिच्छिलेन?"

सुचरिता मुख ना फिराइयाइ कहिल, "हाँ, आमि ताँर काछ थेकेइ दीक्षा नियेछि, तिनिइ आमार गुरु।"

हारानबाबु एक काले निजेकेइ सुचरितार गुरु बलिया जानितेन। आज यदि सुचरितार काछे तिनि शुनितेन ये से गोराके भालोबासे, ताहाते ताँहार तेमन कष्ट हइत ना—किन्तु ताँहार गुरुर अधिकार आज गोरा काड़िया लइयाछे, सुचरितार मुखे ए कथा ताँहाके शेलेर मतो बाजिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिनि कहिलेन, "तोमार गुरु यत बड़ो लोकइ होन ना केन, तुमि कि मने कर हिन्दुसमाज तोमाके ग्रहण करबे।"

सुचरिता कहिल, "से कथा आमि बुझि ने, आमि समाजओ जानि ने, आमि जानि आमि हिन्दु।"

हारानबाबु कहिलेन, "तुमि जान एत दिन तुमि अविवाहित रयेछ केवलमात्र एतेइ हिन्दुसमाजे तोमार जात गियेछे?"

सुचरिता कहिल, "से कथा निये आपनि वृथा चिन्ता करबेन ना, किन्तु आमि आपनाके बलछि आमि हिन्दु।"

हारानबाबु कहिलेन, "परेशबाबुर काछे ये धर्म शिक्षा पेयेछिले ताओ तोमार नतुन गुरुर पायेर तलाय विसर्जन दिले!"

सुचरिता कहिल, "आमार धर्म आमार अन्तर्यामी जानेन, से-कथा निये आमि कारओ सङ्गे कोनो आलोचना करते चाइ ने। किन्तु आपनि जानबेन आमि हिन्दु।"

हारानबाबु तखन नितान्त असहिष्णु हइया बलिया उठिलेन, "तुमि यत बड़ो हिन्दुइ हओ-ना केन——ताते कोनो फल पाबे ना, एओ आमि तोमाके बले याच्छि। तोमार गौरमोहनबाबुके विनयबाबु पाओ नि। तुमि निजेके 'हिन्दु हिन्दु' बले गला फाटिये म'लेओ गौरबाबु ये तोमाके ग्रहण करबेन एमन आशाओ कोरो ना। शिष्यके निये गुरुगिरि करा सहज, किन्तु ताइ बले तोमाके घरे निये घरकन्ना करबेन ए कथा स्वप्नेओ मने कोरो ना।"

सुचरिता रान्नाबान्ना समस्त भुलिया विद्युद्वेगे फिरिया दाँड़ाइया कहिल, "ए-सब आपनि की बलछेन।"

हारानबाबु कहिलेन, "आमि बलछि, गौरमोहनबाबु कोनोदिन तोमाके विवाह करबेन ना।"

सुचरिता दुइ चक्षु दीप्त करिया कहिल, "विवाह? आमि कि आपनाके बलि नि तिनि आमार गुरु?"

हारानबाबु कहिलेन, "ता तो बलेछ। किन्तु ये-कथाटा बल नि सेटाओ तो आमरा बुझते पारि।"

सुचरिता कहिल, "आपनि यान एखान थेके। आमाके अपमान करबेन ना। आमि आज एइ आपनाके बले राखछि, आज थेके आपनार सामने आमि आर बार हब ना।"

हारानबाबु कहिलेन, "बार हबे की करे बलो! एखन ये तुमि जेनेना! हिन्दु रमणी! असूर्यम्पश्यरूपा! परेशबाबुर पापेर भरा एइबार पूर्ण हल। एइ बुड़ो वयसे ताँर कृतकर्मेर फल भोग करते थाकुन, आमरा विदाय हलुम।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता सशब्दे रान्नाघरेर दरजा बन्ध करिया मेझेर उपर बसिया पड़िल एवं मुखेर मध्ये आँचलेर कापड़ गुँजिया उच्छ्वसित क्रन्दनेर शब्दके प्राणपणे निरुद्ध करिल। हारानबाबु मुख कालि करिया बाहिर हइया गेलेन।

हरिमोहिनी उभयेर कथोपकथन समस्त शुनियाछिलेन। आज तिनि सुचरितार मुखे याहा शुनिलेन ताहा ताहार आशार अतीत। ताँहार वक्ष स्फीत हइया उठिल, तिनि कहिलेन, 'हबे ना! आमि ये एकमने आमार गोपीवल्लभेर पूजा करिया आसिलाम, से कि समस्तइ वृथा याइबे।'

हरिमोहिनी तत्क्षणात् ताँहार पूजागृहे गिया मेझेर उपरे साष्टाङ्गे लुटाइया ताँहार ठाकुरके प्रणाम करिलेन एवं आज हइते भोग आरओ बाड़ाइया दिबेन बलिया प्रतिश्रुत हइलेन। एतदिन ताँहार पूजा शोकेर सान्त्वनारूपे शान्तभावे छिल, आज ताहा स्वार्थेर साधनरूप धरितेइ अत्यन्त उग्र उत्तप्त क्षुधातुर हइया उठिल।

६३

सुचरितार सम्मुखे गोरा येमन करिया कथा कहियाछे एमन आर-काहारओ काछे कहे नाइ। एतदिन से ताहार श्रोतादेर काछे निजेर मध्य हइते केवल वाक्यके मतके उपदेशके बाहिर करिया आसियाछे, आज सुचरितार सम्मुखे से निजेर मध्य हइते निजेकेइ बाहिर करिल। एइ आत्मप्रकाशेर आनन्दे, शुधु शक्तिते नहे, एकटा रसे ताहार समस्त मत ओ संकल्प परिपूर्ण हइया उठिल। एकटि सौन्दर्यश्री ताहार जीवनके वेष्टन करिया धरिल। ताहार तपस्यार उपर येन सहसा देवतारा अमृत वर्षण करिलेन।

एइ आनन्देर आवेगेइ गोरा किछुइ ना भाबिया कयदिन प्रत्यहइ सुचरितार काछे आसियाछे, किन्तु आज हरिमोहिनीर कथा शुनिया हठात् ताहार मने पड़िया गेल, अनुरूप मुग्धताय विनयके से एकदिन यथेष्ट तिरस्कार ओ परिहास करियाछे। आज येन निजेर अज्ञातसारे निजेके सेइ अवस्थार मध्ये दाँड़ाइते देखिया से चमकिया उठिल। अस्थाने असम्वृत निद्रित व्यक्ति धाक्का खाइले येमन धड़फड़ करिया उठिया पड़े गोरा सेइरूप निजेर समस्त शक्तिते निजेके सचेतन करिया तुलिल। गोरा बराबर एइ कथा प्रचार करिया आसियाछे ये, पृथिवीते अनेक प्रबल जातिर एकेबारे ध्वंस हइयाछे—भारत केवलमात्र संयमेइ, केवल दृढ़भावे नियम पालन करियाइ, एत शताब्दीर प्रतिकूल संघातेओ आज पर्यन्त आपनाके बाँचाइया आसियाछे। सेइ नियमे कुत्रापि गोरा शैथिल्य स्वीकार करिते चाय ना। गोरा बले, भारतवर्षेर आर-समस्तइ लुटपाट हइया याइतेछे, किन्तु ताहार ये प्राणपुरुषके से एइ-समस्त कठिन नियम-संयमेर मध्ये प्रच्छन्न करिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राखियाछे ताहार गाये कोन अत्याचारी राजपुरुषेर हस्तक्षेप करिबार साध्यइ नाइ। यतदिन आमरा परजातिर अधीन हइया आछि ततदिन निजेदेर नियमके दृढ़ करिया मानिते हइबे। एखन भालोमन्द विचारेर समय नय। ये-व्यक्ति स्रोतेर टाने पड़िया मृत्युर मुखे भासिया याइतेछे से याहार द्वाराइ निजेके धरिया राखिते पारे ताहाकेइ आँकड़ाइया थाके, से जिनिसटा सुन्दर कि कुश्री विचार करे ना। गोरा बराबर एइ कथा बलिया आसियाछे—आजओ इहाइ ताहार बलिबार कथा। हरिमोहिनी सेइ गोरार यखन आचरणेर निन्दा करिलेन तखन गजराजके अंकुशे विद्ध करिल।

गोरा यखन बाड़ि आसिया पौंछिल तखन द्वारेर सम्मुखे रास्तार उपर बेञ्चि पातिया खोला गाये महिम तामाक खाइतेछिलेन। आज ताँहार आपिसेर छुटि। गोराके भितरे ढुकिते देखिया तिनिओ ताहार पश्चाते गिया ताहाके डाकिया कहिलेन, "गोरा, शुने याओ, एकटि कथा आछे।"

गोराके निजेर घरे लइया गिया महिम कहिलेन, "राग कोरो ना भाइ, आगे जिज्ञासा करछि, तोमाकेओ विनयेर छोंयाच लेगेछे नाकि। ओ-अञ्चले ये बड़ो घन घन याओया-आसा चलछे!"

गोरार मुख रक्तवर्ण हइया उठिल। से कहिल, "भय नेइ।"

महिम कहिलेन, "येरकम गतिक देखछि, किछु तो बला याय ना। तुमि भाबछ, ओटा एकटा खाद्यद्रव्य दिव्यि गिले फेले तार परे आबार घरे फिरे आसबे। किन्तु बँड़शिटि भितरे आछे, से तोमार बन्धुर दशा देखलेइ बुझते पारबे। आरे, याओ कोथाय! आसल कथाटाइ एखनो हय नि। ओदिके ब्राह्म मेयेर सङ्गे विनयेर बिये तो एकेबारे पाका हये गेछे शुनते पाच्छि। तार पर किन्तु ओंर सङ्गे आमादेर कोनोरकम व्यवहार चलबे ना, से आमि तोमाके आगे थाकतेइ बले राखछि।"

गोरा कहिल, "से तो चलबेइ ना।"

महिम कहिलेन, "किन्तु मा यदि गोलमाल करेन ता हले सुविधा हबे ना। आमरा गृहस्थ मानुष, अमनितेइ मेयेछेलेर बिये दिते जिब बेरिये पड़े, तार परे यदि घरेर मध्ये ब्राह्मसमाज बसाओ ता हले आमाके किन्तु एखान थेके वास ओठाते हबे।"

गोरा कहिल, "ना, से किछुतेइ हबे ना।"

महिम कहिलेन, "शशिर विवाहेर प्रस्तावटा घनिये आसछे। आमादेर बेहाइ यतटुकु परिमाण मेये घरे नेबेन सोना तार चेये बेशि ना निये छाड़बेन ना, कारण तिनि जानेन मानुष नश्वर पदार्थ, सोना तार चेये बेशि दिन टेंके। ओषुधेर चेये अनुपानटार दिकेइ ताँर झोंक बेशि। बेहाइ बलले ताँके खाटो करा हय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकेबारे बेहाया। किछु खरच हबे बटे, किन्तु लोकटार काछे आमार अनेक शिक्षा हल, छेलेर बियेर समय काजे लागबे। भारि लोभ हच्छिल, आर एकबार एकाले जन्मग्रहण करे बाबाके माझखाने बसिये रेखे निजेर बियेटा एकबार विधिमतो पाकिये तुलि, पुरुषजन्म ये ग्रहण करेछि सेटाके एकेबारे षोलो आना सार्थक करे निइ। एकेइ तो बले पौरुष। मेयेर बापके एकेबारे धराशायी करे देओया। कम कथा! याइ बल, तोमार सङ्गे योग दिये ये निशिदिन हिन्दुसमाजेर जयध्वनि करब, किछुतेइ ताते जोर पाच्छि ने भाइ, गला उठते चाय ना, एकेबारे काहिल करे फेलेछे। आमार तिनकड़ेटार वयस एखन सबे चौद्द मास—गोड़ाय कन्या जन्म दिये शेषे तार भ्रम संशोधन करते सहधर्मिणी दीर्घकाल समय नियेछेन। या होक, ओरइ विवाहेर समयटा पर्यन्त गोरा तोमरा सकले मिले हिन्दुसमाजटाके ताजा रेखो, तार पर देशेर लोक मुसलमान होक, खृस्टान होक, आमि कोनो कथा कब ना।"

गोरा उठिया दाँड़ाइतेइ महिम कहिलेन, "ताइ आमि बलछिलुम, शशिर विवाहेर सभाय तोमादेर विनयके निमन्त्रण करा चलबे ना। तखन ये एइ कथा निये आबार एकटा काण्ड बाधिये तुलबे से हबे ना। माके तुमि एखन थेके सावधान करे रेखे दियो।"

मातार घरे आसिया गोरा देखिल, आनन्दमयी मेझेर उपर बसिया चशमा चोखे आँटिया एकटा खाता लइया किसेर फर्द करितेछेन। गोराके देखिया तिनि चशमा खुलिया खाता बन्ध करिया कहिलेन, "बोस्।"

गोरा बसिले आनन्दमयी कहिलेन, "तोर सङ्गे आमार एकटा परामर्श आछे। विनयेर बियेर खबर तो पेयेछिस ?"

गोरा चुप करिया रहिल। आनन्दमयी कहिलेन, "विनयेर काका राग करेछेन, ताँरा केउ आसबेन ना। आबार परेशबाबुर बाड़ितेओ ए बिये हय किना सन्देह। विनयकेइ समस्त बन्दोबस्त करते हबे। ताइ आमि बलछिलुम, आमादेर बाड़िर उत्तर-भागटार एकतला तो भाड़ा देओया हयेछे—ओर दोतलार भाड़ाटेओ उठे गेछे। ओइ दोतलातेइ यदि विनयेर बियेर बन्दोबस्त करा याय ता हले सुविधा हय।"

गोरा जिज्ञासा करिल, "की सुविधा हय।"

आनन्दमयी कहिलेन, "आमि ना थाकले ओर बियेते देखाशुना करबे के। ओ ये महा विपदे पड़े याबे। ओखाने यदि बियेर ठिक हय ता हले आमि एइ वाड़ि थेकेइ समस्त जोगाड़यन्त्र करे दिते पारि, कोनो हाङ्गाम करते हय ना।"

गोरा कहिल, "से हबे ना, मा।"

आनन्दमयी कहिलेन, "केन हबे ना। कर्ताके आमि राजि करेछि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "ना मा, ए बिये एखाने हते पारबे ना—आमि बलछि, आमार कथा शोनो।"

आनन्दमयी कहिलेन, "केन, विनय तो ओदेर मते बिये करछे ना।"

गोरा कहिल, "ओ-समस्त तर्केर कथा। समाजेर सङ्गे ओकालति चलबे ना। विनय या खुशि करुक, ए बिये आमरा मानते पारि ने। कोलकाता शहरे बाड़िर अभाव नेइ। तार निजेरइ तो बासा आछे।"

बाड़ि अनेक मेले, आनन्दमयी ताहा जानितेन। किन्तु विनय ये आत्मीय-बन्धु सकलेर द्वारा परित्यक्त हइया नितान्त लक्ष्मीछाड़ार मतो कोनो गतिके बासाय बसिया विवाहकर्म सारिया लइबे, इहा ताँहार मने बाजितेछिल। सेइजन्य तिनि ताँहादेर बाड़िर ये-अंश भाड़ा दिबार जन्य स्वतन्त्र रहियाछे सेइखाने विनयेर विवाह दिबार कथा मने मने स्थिर करियाछिलेन। इहाते समाजेर सङ्गे कोनो विरोध ना बाधाइया ताँहादेर आपन बाड़िते शुभकर्मेर अनुष्ठान करिया तिनि तृप्तिलाभ करिते पारितेन।

गोरार दृढ़ आपत्ति देखिया दीर्घनिश्वास फेलिया कहिलेन, "तोमादेर यदि एते एतइ अमत ता हले अन्य जायगातेइ बाड़ि भाड़ा करते हबे। किन्तु ताते आमार उपरे भारि टानाटानि पड़बे। ता होक, यखन एटा हतेइ पारबे ना तखन ए निये आर भेबे की हबे!"

गोरा कहिल, "मा, ए विवाहे तुमि योग दिले चलबे ना।"

आनन्दमयी कहिलेन, "से की कथा गोरा, तुइ बलिस की! आमादेर विनयेर बियेते आमि योग देब ना तो के देबे!"

गोरा कहिल, "से किछुतेइ हबे ना, मा।"

आनन्दमयी कहिलेन, "गोरा, विनयेर सङ्गे तोर मतेर मिल ना हते पारे, ताइ बले की तार सङ्गे शत्रुता करते हबे।"

गोरा एकटु उत्तेजित हइया उठिया कहिल, "मा, ए कथा तुमि अन्याय बलछ। आज विनयेर बियेते आमि ये आमोद करे योग दिते पारछि ने, ए कथा आमार पक्षे सुखेर कथा नय। विनयके आमि ये कतखानि भालोबासि से आर केउ ना जाने तो तुमि जान। किन्तु मा, ए भालोबासार कथा नय, एर मध्ये शत्रुता मित्रता किछुमात्र नेइ। विनय एर फलाफल समस्त जेनेशुनेइ ए काजे प्रवृत्त हयेछे। आमरा ताके परित्याग करि नि, सेइ आमादेर परित्याग करेछे, सुतरां एखन ये विच्छेद घटेछे सेजन्ये से एमन कोनो आघात पाबे ना या तार प्रत्याशार अतीत।"

आनन्दमयी कहिलेन, "गोरा, विनय जाने, एइ बियेते तोमार सङ्गे तार कोनोरकम योग थाकबे ना, से कथा ठिक। किन्तु एओ से निश्चय जाने, शुभकर्मे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमि ताके कोनोमतेइ परित्याग करते पारब ना। विनयेर बउके आमि आशीर्वाद करे ग्रहण करब ना ए कथा विनय यदि मने करत ता हले आमि बलछि, से प्राण गेलेओ ए बिये करते पारत ना। आमि कि विनयेर मन जानि ने।"

बलिया आनन्दमयी चोखेर कोण हइते एक फोंटा अश्रु मुछिया फेलिलेन। विनयेर जन्य गोरार मनेर मध्ये ये गभीर वेदना छिल ताहा आलोड़ित हइया उठिल। तबु से बलिल, "मा, तुमि समाजे आछ एवं समाजेर काछे तुमि ऋणी, ए कथा तोमाके मने राखते हबे।"

आनन्दमयी कहिलेन, "गोरा, आमि तो तोमाके बार बार बलेछि, समाजेर सङ्गे आमार योग अनेकदिन थेकेइ केटे गेछे। सेजन्ये समाज आमाके घृणा करे, आमिओ तार थेके दूरे थाकि।"

गोरा कहिल, "मा, तोमार एइ कथाय आमि सब चेये आघात पाइ।"

आनन्दमयी ताँहार अश्रु-छलछल स्निग्ध दृष्टि द्वारा गोरार सर्वाङ्ग येन स्पर्श करिया कहिलेन, "बाछा, ईश्वर जानेन तोके ए आघात थेके बाँचाबार साध्य आमार नेइ।"

गोरा उठिया दाँड़ाइया कहिल, "ता हले आमाके की करते हबे तोमाके बलि। आमि विनयेर काछे चललुम, ताके आमि बलब, तोमाके तार विवाह-व्यापारे जड़ित करे समाजेर सङ्गे तोमार विच्छेदके से येन आर बाड़िये ना तोले—केनना ए तार पक्षे अत्यन्त अन्याय एवं स्वार्थपरतार काज हबे।"

आनन्दमयी हासिया कहिलेन, "आच्छा, तुइ या करते पारिस करिस—ताके बल् गे या, तार परे आमि देखब एखन।"

गोरा चलिया गेले आनन्दमयी अनेकक्षण बसिया चिन्ता करिलेन। ताहार पर धीरे धीरे उठिया ताँहार स्वामीर महले चलिया गेलेन।

आज एकादशी, सुतरां आज कृष्णदयालेर स्वपाकेर कोनो आयोजन नाइ। तिनि घेरण्डसंहितार एकटि नूतन बांला अनुवाद पाइयाछिलेन; सेइटि हाते लइया एकखानि मृगचर्मेर उपर बसिया पाठ करितेछिलेन।

आनन्दमयीके देखिया तिनि व्यस्त हइया उठिलेन। आनन्दमयी ताँहार सहित यथेष्ट दूरत्व राखिया घरेर चौकाठेर उपर बसिया कहिलेन, "देखो, बड़ो अन्याय हच्छे।"

कृष्णदयाल सांसारिक न्याय-अन्यायेर बाहिरे आसिया पड़ियाछिलेन; एइजन्ये उदासीनभावे जिज्ञासा करिलेन, "की अन्याय।"

आनन्दमयी कहिलेन, "गोराके किन्तु आर एक दिनओ भुलिये राखा उचित हच्छे ना, क्रमेइ बाड़ाबाड़ि हये पड़छे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा येदिन प्रायश्चित्तेर कथा तुलियाछिल सेदिन कृष्णदयालेर मने ए कथा उठियाछिल ; ताहार परे योगसाधनार नानाप्रकार प्रक्रियार मध्ये पड़िया से कथा चिन्ता करिबार अवकाश पान नाइ।

आनन्दमयी कहिलेन, "शशिमुखीर बियेर कथा हच्छे ; बोध हय एइ फाल्गुन मासेइ हबे। एर आगे बाड़िते यतबार सामाजिक क्रियाकर्म हयेछे आमि कोनो-ना-कोनो छुताय गोराके सङ्गे करे अन्य जायगाय गेछि। तेमन बड़ो कोनो काजओ तो एर मध्ये हय नि। किन्तु एबार शशिर विवाहे ओके निये की करबे बलो। अन्याय रोजइ बाड़छे, आमि भगवानेर काछे दुवेला हात जोड़ करे माप चाच्छि, तिनि शास्ति या दिते चान सब आमाकेइ येन देन, किन्तु आमार केवल भय हच्छे--आर बुझि ठेकिये राखते पारा याबे ना, गोराके निये विपद हबे। एइबार आमाके अनुमति दाओ, आमार कपाले या थाके ओके आमि सब कथा खुले बलि।"

कृष्णदयालेर तपस्या भाङिबार जन्य इन्द्रदेव ए की विघ्न पाठाइतेछेन। तपस्याओ सम्प्रति खुब घोरतर हइया उठियाछे--निश्वास लइया असाध्य साधन हइतेछे, आहारेर मात्राओ क्रमे एतटा कमियाछे ये पेटके पिठेर सहित एक करिबार पण रक्षा हइते आर बड़ो विलम्ब नाइ। एमन समय ए की उत्पात।

कृष्णदयाल कहिलेन, "तुमि कि पागल हयेछ! ए कथा आज प्रकाश हले आमाके ये विषम जवाबदिहिते पड़ते हबे--पेन्शन तो बन्ध हबेइ, हयतो पुलिसे टानाटानि करबे। या हये गेछे ता हये गेछे, यतटा सामले चलते पार चलो--ना पार तातेओ विशेष कोनो दोष हबे ना।"

कृष्णदयाल ठिक करिया राखियाछिलेन, ताँहार मृत्युर पर या हय ता होक, इतिमध्ये तिनि निजे स्वतन्त्र हइया थाकिबेन। तार परे अज्ञातसारे अन्येर की घटितेछे सेदिके दृष्टिपात ना करिलेइ एकरकम चलिया याइबे।

की करा कर्तव्य किछुइ स्थिर करिते ना पारिया विमर्षमुखे आनन्दमयी उठिलेन। क्षणकाल दाँड़ाइया कहिलेन, "तोमार शरीर किरकम हये याच्छे देखछ ना?"

आनन्दमयीर एइ मूढ़ताय कृष्णदयाल अत्यन्त उच्चभावे एकटुखानि हास्य करिलेन एवं कहिलेन, "शरीर!"

ए सम्बन्धे आलोचना कोनो सन्तोषजनक सिद्धान्ते आसिया पौंछिल ना, एवं कृष्णदयाल पुनश्च घेरण्डसंहिताय मनोनिवेश करिलेन। एदिके ताँहार संन्यासीटिके लइया महिम तखन बाहिरेर घरे बसिया अत्यन्त उच्च अङ्गेर परमार्थ-तत्त्व आलोचनाय प्रवृत्त छिलेन। गृहीदेर मुक्ति आछे किना, अतिशय विनीत व्याकुलस्वरे एइ प्रश्न तुलिया तिनि करजोड़े अवहित हइया एमनि एकान्त भक्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओ आग्रहेर भावे ताहार उत्तर शुनिते बसियाछिलेन येन मुक्ति पाइबार जन्य ताँहार याहा किछु आछे समस्तइ तिनि निःशेषे पण करिया बसियाछेन। गृहीदेर मुक्ति नाइ किन्तु स्वर्ग आछे, एइ कथा बलिया संन्यासी महिमके कोनोप्रकारे शान्त करार चेष्टा करितेछेन किन्तु महिम किछुतेइ सान्त्वना मानितेछेन ना। मुक्ति ताँहार नितान्तइ चाइ, स्वर्गे ताँहार कोनो प्रयोजन नाइ। कोनोमते कन्याटार विवाह दिते पारिलेइ संन्यासीर पदसेवा करिया तिनि मुक्तिर साधनाय उठिया-पड़िया लागिबेन ; काहार साध्य आछे इहा हइते ताँहाके निरस्त करे। किन्तु कन्यार विवाह तो सहज व्यापार नय--एक यदि बाबा दया करेन।

६४

माझखाने निजेर एकटुखानि आत्मविस्मृति घटियाछिल, एइ कथा स्मरण करिया गोरा पूर्वेर चेये आरओ बेशि कड़ा हइया उठिल। से ये समाजके भुलिया प्रबल एकटा मोहे अभिभूत हइयाछिल, नियमपालनेर शैथिल्यकेइ से ताहार कारण बलिया स्थिर करियाछिल।

सकालवेलाय सन्ध्याह्निक सारिया गोरा घरेर मध्ये आसितेइ देखिल, परेशबाबु बसिया आछेन। ताहार बुकेर भितरे येन एकटा विद्युत् खेलिया गेल ; परेशेर सङ्गे कोनो-एक सूत्रे ताहार जीवनेर ये एकटा निगूढ़ आत्मीयतार योग आछे ताहा गोरार शिरास्नायुगुला पर्यन्त ना मानिया थाकिते पारिल ना। गोरा परेशके प्रणाम करिया बसिल।

परेश कहिलेन, "विनयेर विवाहेर कथा तुमि अवश्य शुनेछ ?"

गोरा कहिल, "हाँ।"

परेश कहिलेन, "से ब्राह्ममते विवाह करते प्रस्तुत नय।"

गोरा कहिल, "ता हले तार ए विवाह कराइ उचित नय।"

परेश एकटु हासिलेन, ए कथा लइया कोनो तर्के प्रवृत्त हइलेन ना। तिनि कहिलेन, "आमादेर समाजे ए विवाहे केउ योग देबे ना ; विनयेर आत्मीयेराओ केउ आसबेन ना शुनछि। आमार कन्यार दिके एकमात्र केवल आमि आछि—विनयेर दिके बोध हय तुमि छाड़ा आर केउ नेइ, एइजन्य ए सम्बन्धे तोमार सङ्गे परामर्श करते एसेछि।"

गोरा माथा नाड़िया कहिल, "ए सम्बन्धे आमार सङ्गे परामर्श की करे हबे। आमि तो एर मध्ये नेइ।"

परेश विस्मित हइया गोरार मुखेर दिके क्षणकाल दृष्टि राखिया कहिलेन, "तुमि नेइ !"

परेशेर एइ विस्मये गोरा मुहूर्तकालेर जन्य एकटा संकोच अनुभव करिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकोच अनुभव करिल बलियाइ परक्षणे द्विगुण दृढ़तार सहित कहिल, "आमि एर मध्ये केमन करे थाकब !"

परेशबाबु कहिलेन, "आमि जानि तुमि तार बन्धु ; बन्धुर प्रयोजन एखनइ कि सब चेये बेशि नय।"

गोरा कहिल, "आमि तार बन्धु, किन्तु सेइटेइ तो संसारे आमार एकमात्र बन्धन एवं सकलेर चेये बड़ो बन्धन नय।"

परेशबाबु जिज्ञासा करिलेन, "गौर, तुमि कि मने कर विनयेर आचरणे कोनो अन्याय अधर्म प्रकाश पाच्छे।"

गोरा कहिल, "धर्मेर दुटो दिक आछे ये। एकटा नित्य दिक, आर-एकटा लौकिक दिक। धर्म येखाने समाजेर नियमे प्रकाश पाच्छेन सेखानेओ ताँके अवहेला करते पारा याय ना ; ता करले संसार छारखार हये याय।"

परेशबाबु कहिलेन, "नियम तो असंख्य आछे, किन्तु सकल नियमेइ ये धर्म प्रकाश पाच्छेन एटा कि निश्चित धरे निते हबे।"

परेशबाबु गोरार एमन एकटा जायगाय घा दिलेन येखाने ताहार मने आपनिइ एकटा मन्थन चलितेछिल एवं सेइ मन्थन हइते से एकटि सिद्धान्तओ लाभ करियाछिल—एइजन्यइ ताहार अन्तरे-सञ्चित वाक्येर वेगे परेशबाबुर काछेओ ताहार कोनो कुण्ठा रहिल ना। ताहार मोट कथाटा एइ ये, नियमेर द्वारा आमरा निजेके यदि समाजेर सम्पूर्ण बाध्य ना करि तबे समाजेर भितरकार गभीरतम उद्देश्यके बाधा दिइ ; कारण सेइ उद्देश्य निगूढ़, ताहाके स्पष्ट करिया देखिबार साध्य प्रत्येक लोकेर नाइ। एइजन्य विचार ना करियाओ समाजके मानिया याइबार शक्ति आमादेर थाका चाइ।

परेशबाबु स्थिर हइया शेष पर्यन्त गोरार समस्त कथाइ शुनिलेन, से यखन थामिया गिया निजेर प्रगल्भताय मनेर मध्ये एकटु लज्जा बोध करिल तखन परेश कहिलेन, "तोमार गोड़ार कथाटा आमि मानि ; ए कथा सत्य ये प्रत्येक समाजेर मध्येइ विधातार एकटि विशेष अभिप्राय आछे। सेइ अभिप्राय ये सकलेर काछे सुस्पष्ट ताओ नय। किन्तु ताकेइ स्पष्ट करे देखबार चेष्टा कराइ तो मानुषेर काज, गाछपालार मतो अचेतन भावे नियम मेने याओया तार सार्थकता नय।"

गोरा कहिल, "आमार कथाटा एइ ये, आगे समाजके सब दिक थेके सम्पूर्ण मेने चलले तबेइ समाजेर यथार्थ उद्देश्य सम्बन्धे आमादेर चेतना निर्मल हते पारे। तार सङ्गे विरोध करले ताके ये केवल बाधा दिइ ता नय, ताके भुल बुझि।"

परेशबाबु कहिलेन, "विरोध ओ बाधा छाड़ा सत्येर परीक्षा हतेइ पारे ना। सत्येर परीक्षा ये कोनो एक प्राचीन काले एक दल मनीषीर काछे एकबार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हये गिये चिरकालेर मतो चुकेबुके याय ता नय, प्रत्येक कालेर लोकेर काछेइ बाधार भितर दिये आघातेर भितर दिये सत्यके नूतन करे आविष्कृत हते हबे। याइ होक, ए-सब कथा निये आमि तर्क करते चाइ ने, आमि मानुषेर व्यक्तिगत स्वाधीनताके मानि। व्यक्तिर सेइ स्वाधीनतार द्वारा आघात करेइ आमरा ठिकमतो जानते पारि कोनटा नित्य सत्य, आर कोन्टा नश्वर कल्पना—सेइटे जाना एवं जानबार चेष्टार उपरेइ समाजेर हित निर्भर करछे।"

एइ बलिया परेश उठिलेन ; गोराओ चौकि छाड़िया उठिल। परेश कहिलेन, "आमि भेबेछिलुम, ब्राह्मसमाजेर अनुरोधे एइ विवाह हते आमाके हयतो एकटुखानि सरे थाकते हबे, तुमि विनयेर बन्धु हये समस्त कर्म सुसम्पन्न करे देबे। एइखानेइ आत्मीयेर चेये बन्धुर एकटु सुविधा आछे, समाजेर आघात ताके सइते हय ना। किन्तु तुमिओ यखन विनयके परित्याग कराइ कर्तव्य मने करछ तखन आमार उपरेइ समस्त भार पड़ल, ए काज आमाकेइ एकला निर्वाह करते हबे।"

एकला बलिते परेशबाबु ये कतखानि एकला गोरा तखन ताहा जानित ना। वरदासुन्दरी ताँहार विरुद्धे दाँड़ाइयाछिलेन, बाड़िर मेयेरा प्रसन्न छिल ना, हरिमोहिनीर आपत्ति आशङ्का करिया परेश सुचरिताके एइ विवाहेर परामर्शे आह्वानमात्रओ करेन नाइ। ओदिके ब्राह्मसमाजेर सकलेइ ताँहार प्रति खड़्ग-हस्त हइया उठियाछिल एवं विनयेर खुड़ार पक्ष हइते तिनि ये दुइ-एकखानि पत्र पाइयाछिलेन ताहाते ताँहाके कुटिल कुचक्री छेलेधरा बलिया गालि देओया हइयाछिल।

परेश बाहिर हइया याइतेइ अविनाश एवं गोरार दलेर आरओ दुइ-एक जन घरेर मध्ये प्रवेश करिया परेशबाबुके लक्ष्य करिया हास्य-परिहास करिबार उपक्रम करिल। गोरा बलिया उठिल, "यिनि भक्तिर पात्र ताँके भक्ति करबार मतो क्षमता यदि ना थाके अन्तत ताँके उपहास करबार क्षुद्रता थेके निजेके रक्षा कोरो।"

गोराके आवार ताहार दलेर लोकेर माझखाने ताहार पूर्वाभ्यस्त काजेर मध्ये आसिया पड़िते हइल। किन्तु विस्वाद, समस्तइ विस्वाद। ए किछुइ नय। इहाके कोनो काजइ बला चले ना। इहाते कोथाओ प्राण नाइ। एमनि करिया केवल लिखिया पड़िया, कथा कहिया, दल बाँधिया ये कोनो काज हइतेछे ना, वरं विस्तर अकाज सञ्चित हइतेछे, ए कथा गोरार मने इतिपूर्वे कोनोदिन एमन करिया आघात करे नाइ। नूतनलब्ध शक्ति द्वारा विस्फारित ताहार जीवन आपनाके पूर्णभावे प्रवाहित करिबार अत्यन्त एकटि सत्य पथ चाहितेछे, ए-समस्त किछुइ ताहार भालो लागितेछे ना।

एदिके प्रायश्चित्तसभार आयोजन चलितेछे। एइ आयोजने गोरा एकटु विशेष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्साह बोध करियाछे। एइ प्रायश्चित्त केवल जेलखानार अशुचितार प्रायश्चित्त नहे, एइ प्रायश्चित्तेर द्वारा सकल दिकेइ सम्पूर्ण निर्मल हइया आबार एकबार येन नूतन देह लइया से आपनार कर्मक्षेत्रे नवजन्म लाभ करिते चाय। प्रायश्चित्तेर विधान लओया हइयाछे, दिनस्थिरओ हइया गेछे, पूर्व ओ पश्चिम वङ्गे विख्यात अध्यापक-पण्डितदिगके निमन्त्रणपत्र दिबार उद्‌योग चलितेछे—गोरार दले धनी याहारा छिल ताहारा टाकाओ संग्रह करिया तुलियाछे—दलेर लोके सकलेइ मने करितेछे, देशे अनेक दिन परे एकटा काजेर मतो काज हइतेछे। अविनाश गोपने आपन सम्प्रदायेर सकलेर सङ्गे परामर्श करियाछे, सेइदिन सभाय समस्त पण्डितदिगके दिया गोराके धान्यदूर्वा फुलचन्दन प्रभृति विविध उपचारे 'हिन्दुधर्मप्रदीप' उपाधि देओया हइबे। एइ सम्बन्धे संस्कृत कयेकटि श्लोक लिखिया, ताहार निम्ने समस्त ब्राह्मणपण्डितेर नामस्वाक्षर कराइया, सोनार जलेर कालिते छापाइया, चन्दनकाष्ठेर बाक्सेर मध्ये राखिया ताहाके उपहार दिते हइबे; सेइ सङ्गे म्याक्स्‌मूलरेर द्वारा प्रकाशित एकखण्ड ऋग्वेदग्रन्थ बहुमूल्य मरक्को चामड़ाय बाँधाइया, सकलेर चेये प्राचीन ओ मान्य अध्यापकेर हात दिया ताहाके भारतवर्षेर आशीर्वादीस्वरूप दान करा हइबे—इहाते आधुनिक धर्मभ्रष्टतार दिने गोराइ ये सनातन वेदविहित धर्मेर यथार्थ रक्षाकर्ता एइ भावटि अति सुन्दररूपे प्रकाशित हइबे।

एइरूपे सेदिनकार कर्मप्रणालीके अत्यन्त हृद्य एवं फलप्रद करिया तुलिबार जन्य गोरार अगोचरे ताहार दलेर लोकेर मध्ये प्रत्यहइ मन्त्रणा चलिते लागिल।

६५

हरिमोहिनी ताँहार देवर कैलासेर निकट हइते पत्र पाइयाछेन। तिनि लिखितेछेन, 'श्रीचरणाशीर्वादे अत्रस्थ मङ्गल, आपनकार कुशल-समाचारे आमादेर चिन्ता दूर करिबेन।'

बला बाहुल्य, हरिमोहिनी ताहादेर बाड़ि परित्याग करार पर हइतेइ एइ चिन्ता ताहारा वहन करिया आसितेछे, तथापि कुशल-समाचारेर अभाव दूर करिबार जन्य ताहारा कोनोप्रकार चेष्टा करे नाइ। खुदि, पटल, भजहरि प्रभृति सकलेर संवाद निःशेष करिया उपसंहारे कैलास लिखितेछे—

'आपनि ये पात्रीटिर कथा लिखियाछेन ताहार समस्त खबर भालो करिया जानाइबेन। आपनि बलियाछिलेन, ताहार वयस बारो-तेरो हइबे, किन्तु बाड़न्त मेये, देखिते किछु डागर देखाय, ताहाते विशेष क्षति हइबे ना। ताहार ये-सम्पत्तिर कथा लिखियाछेन ताहाते ताहार जीवनस्वत्व अथवा चिरस्वत्व ताहा भालो करिया खोंज करिया लिखिले अग्रजमहाशयदिगके जानाइया ताँहादेर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मत लइब। बोध करि, ताँहादेर अमत ना हइते पारे। पात्रीटिर हिन्दुधर्मे निष्ठा आछे शुनिया निश्चिन्त हइलाम, किन्तु एत दिन से ब्राह्मघरे मानुष हइयाछे ए कथा याहाते प्रकाश ना हइते पारे सेजन्य चेष्टा करिते हइबे—अतएव ए कथा आर-काहाकेओ जानाइबेन ना। आगामी पूर्णिमाय चन्द्रग्रहणे गङ्गास्नानेर योग आछे, यदि सुविधा पाइ सेइ समये गिया कन्या देखिया आसिब।'

एतदिन कलिकाताय कोनोप्रकारे काटियाछिल, किन्तु श्वशुरघरे फिरिबार आशा येमनि एकटु अंकुरित हइया उठिल अमनि हरिमोहिनीर मन आर धैर्य मानिते चाहिल ना। निर्वासनेर प्रत्येक दिन ताहार पक्षे असह्य बोध हइते लागिल। ताँहार इच्छा करिते लागिल, 'एखनइ सुचरिताके बलिया दिन स्थिर करिया काज सारिया फेलि।' तबु ताड़ाताड़ि करिते ताँहार साहस हइल ना। सुचरिताके यतइ तिनि निकटे करिया देखितेछेन ततइ तिनि इहा बुझितेछेन ये ताहाके तिनि बुझिते पारेन नाइ।

हरिमोहिनी अवसर प्रतीक्षा करिते लागिलेन एवं पूर्वेर चेये सुचरितार प्रति बेशि करिया सतर्कता प्रयोग करिलेन। आगे पूजाह्निके ताँहार यत समय लागित एखन ताहा कमिया आसिबार उपक्रम हइल—तिनि सुचरिताके आर चोखेर आड़ाल करिते चान ना।

सुचरिता देखिल गोरार आसा हठात् बन्ध हइया गेल। से बुझिल हरिमोहिनी ताँहाके किछु बलियाछेन। से कहिल, 'आच्छा बेश, तिनि नाइ आसिलेन, किन्तु तिनिइ आमार गुरु, आमार गुरु।'

सम्मुखे ये-गुरु थाकेन ताहार चेये अप्रत्यक्ष गुरुर जोर अनेक बेशि। केनना निजेर मन तखन गुरुर विद्यमानतार अभाव आपनार भितर हइते पुराइया लय। गोरा सामने थाकिले सुचरिता येखाने तर्क करित एखन सेखाने गोरार रचना पड़िया ताहार वाक्यगुलिके बिना प्रतिवादे ग्रहण करे। ना बुझिते पारिले बले, तिनि थाकिले निश्चय बुझाइया दितेन।

किन्तु गोरार सेइ तेजस्वी मूर्ति देखिबार एवं ताहार सेइ वज्रगर्भ मेघगर्जनेर मतो वाक्य शुनिबार क्षुधा किछुतेइ कि मिटिते चाय! एइ ताहार निवृत्तिहीन आन्तरिक औत्सुक्य एकेबारे निरन्तर हइया ताहार शरीरके येन क्षय करिते लागिल। थाकिया थाकिया सुचरिता अत्यन्त व्यथार सहित मने करे, कत लोक अति अनायासेइ रात्रिदिन गोरार दर्शन पाइतेछे किन्तु गोरार दर्शनेर कोनो मूल्य ताहारा जाने ना।

ललिता आसिया सुचरितार गला जड़ाइया धरिया एकदिन अपराह्णे कहिल, "भाइ सुचिदिदि।"

सुचरिता कहिल, "की भाइ ललिता।"

24

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ललिता कहिल, "सब ठिक हये गेछे।"

सुचरिता जिज्ञासा करिल, "कबे दिन ठिक हल।"

ललिता कहिल, "सोमवार।"

सुचरिता प्रश्न करिल, "कोथाय।"

ललिता माथा नाड़ा दिया कहिल, "से-सब आमि जानि ने, बाबा जानेन।"

सुचरिता बाहुर द्वारा ललितार कटि वेष्टन करिया कहिल, "खुशि हयेछिस, भाइ ?"

ललिता कहिल, "खुशि केन हब ना !"

सुचरिता कहिल, "या चेयेछिलि सबइ पेलि, एखन कारओ सङ्गे कोनो झगड़ा करबार किछुइ रइल ना, सेइ जन्ये मने हय पाछे तोर उत्साह कमे याय।"

ललिता हासिया कहिल, "केन, झगड़ा करबार लोकेर अभाव हबे केन। एखन आर बाइरे खुँजते हबे ना।"

सुचरिता ललितार कपोले तर्जनीर आघात करिया कहिल, "एइ बुझि ! एखन थेके बुझि एइ-समस्त मतलब आँटा हच्छे। आमि विनयके बले देब, एखनो समय आछे, बेचारा सावधान हते पारे।"

ललिता कहिल, "तोमार बेचारार आर सावधान हबार समय नेइ गो। आर तार उद्धार नेइ। कुष्ठिते फाँड़ा या छिल ता फले गेछे, एखन कपाले कराघात आर क्रन्दन !"

सुचरिता गम्भीर हइया कहिल, "आमि ये कत खुशि हयेछि से आर की बलब, ललिता। विनयेर मतो स्वामीर येन तुइ योग्य हते पारिस, एइ आमि प्रार्थना करि।"

ललिता कहिल, "इस ! ताइ बइ-कि। आर आमार योग्य बुझि काउके हते हबे ना। ए सम्बन्धे एकबार ताँर सङ्गे कथा कयेइ देखो ना। ताँर मतटा एकबार शुने राखो, ता हले तोमारओ मने अनुताप हबे ये एतबड़ो आश्चर्य लोकटार आदर आमरा एतदिन किछुइ बुझि नि, की अन्ध हयेइ छिलुम।"

सुचरिता कहिल, "या होक, एतदिने तो एकटा जहरि जुटेछे। दाम या दिते चाच्छे ताते आर दुःख करबार नेइ, एखन आर आमादेर मतो आनाड़िर काछ थेके आदर याचबार दरकारइ हबे ना।"

ललिता कहिल, "हबे ना बइ-कि ! खुब हबे।"

बलिया खुब जोरे सुचरितार गाल टिपिया दिल, से "उः" करिया उठिल। "तोमार आदर आमार बराबर चाइ, सेटा फाँकि दिये आर-काउके दिते गेले चलबे ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता ललितार कपोलेर उपर कपोल राखिया कहिल, "काउके देब ना, काउके देब ना।"

ललिता कहिल, "काउके ना ? एकेबारे काउकेइ ना ?"

सुचरिता शुधु माथा नाड़िल। ललिता तखन एकटु सरिया बसिया कहिल, "देखो भाइ सुचिदिदि, तुमि तो भाइ जान, तुमि आर-काउके आदर करले आमि कोनोदिन सइते पारतुम ना। एतदिन आमि तोमाके बलि नि, आज बलछि, यखन गौरमोहनबाबु आमादेर बाड़ि आसतेन-ना दिदि, अमन करले चलबे ना, आमार या बलबार आछे आमि ता आज बलबइ--तोमार काछे आमि कोनोदिन किछुइ लुकोइ नि, किन्तु केन जानि ने ओइ एकटा कथा आमि किछुतेइ बलते पारि नि, बराबर सेजन्य आमि कष्ट पेयेछि। सेइ कथाटि ना बले आमि तोमार काछ थेके विदाय हये येते पारब ना। यखन गौरमोहनबाबु आमादेर बाड़ि आसतेन आमार भारि राग हत--केन रागतुम। तुमि मने करेछिले किछु बुझते पारि नि ? आमि देखेछिलुम, तुमि आमार काछे ताँर नामओ करते ना, ताते आमार आरओ मने राग हत। तुमि ये आमार चेये ताँके भालोबासबे ए आमार असह्य बोध हत--ना भाइ दिदि, आमाके बलते दिते हबे--सेजन्ये ये आमि कत कष्ट पेयेछि से आर तोमाके की बलब ! आजओ तुमि आमार काछे से-कथा किछु बलबे ना से आमि जानि, ता नाइ बलले, आमार आर राग नेइ--आमि ये कत खुशि हब भाइ, यदि तोमार--"

सुचरिता ताड़ाताड़ि ललितार मुखे हात चापा दिया कहिल, "ललिता, तोर पाये पड़ि, भाइ, ओ-कथा मुखे आनिस ने ! ओ-कथा शुनले आमार माटिते मिशिये येते इच्छा करे।"

ललिता कहिल, "केन भाइ, तिनि कि--"

सुचरिता व्याकुल हइया बलिया उठिल, "ना ना ना। पागलेर मतो कथा बलिस ने, ललिता। ये कथा मने करा याय ना से कथा मुखे आनते नेइ।"

ललिता सुचरितार एइ संकोचे विरक्त हइया कहिल, "ए किन्तु भाइ, तोमार बाड़ाबाड़ि। आमि खुब लक्ष्य करे देखेछि आर आमि तोमाके निश्चय बलते पारि--"

सुचरिता ललितार हात छाड़ाइया लइया घर हइते बाहिर हइया गेल। ललिता ताहार पश्चात् छुटिया गिया ताहाके धरिया आनिया कहिल, "आच्छा आच्छा, आर आमि बलब ना।"

सुचरिता कहिल, "कोनोदिन ना !"

ललिता कहिल, "अतबड़ो प्रतिज्ञा करते पारब ना। यदि आमार दिन आसे तो बलब, नइले नय, एइटुकु कथा दिलुम।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ए-कयदिन हरिमोहिनी क्रमागतइ सुचरिताके चोखे चोखे राखितेछिलेन, ताहार काछे काछे फिरितेछिलेन, सुचरिता ताहा बुझिते पारियाछिल एवं हरिमोहिनीर एइ सन्देहपूर्ण सतर्कता ताहार मनेर उपर एकटा बोझार मतो चापिया छिल। इहाते भितरे भितरे से छट्फट् करितेछिल अथच कोनो कथा बलिते पारितेछिल ना। आज ललिता चलिया गेले अत्यन्त क्लान्त मन लइया सुचरिता टेबिलेर उपरे दुइ हातेर मध्ये माथा राखिया काँदितेछिल। बेहारा घरे आलो दिते आसियाछिल, ताहाके निषेध करियां दियाछे। तखन हरिमोहिनीर सायंसन्ध्यार समय। तिनि उपर हइते ललिताके चलिया याइते देखिया असमये नामिया आसिलेन एवं सुचरितार घरे प्रवेश करियाइ डाकिलेन, "राधारानी।"

सुचरिता गोपने चोख मुछिया ताड़ाताड़ि उठिया दाँड़ाइल।

हरिमोहिनी कहिलेन, "की हच्छे।"

सुचरिता ताहार कोनो उत्तर करिल ना। हरिमोहिनी कठोर स्वरे कहिलेन, "ए-समस्त की हच्छे आमि तो किछु बुझते पारछि ने।"

सुचरिता कहिल, "मासि, केन तुमि दिनरात्रि आमार उपरे एमन करे दृष्टि रेखेछ।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "केन रेखेछि ता कि बुझते पार ना। एइ-ये खाओयादाओया नेइ, कान्नाकाटि चलछे, ए-सब की लक्षण। आमि तो शिशू ना, आमि कि एइटुकु बुझते पारि ने।"

सुचरिता कहिल, "मासि, आमि तोमाके बलछि, तुमि किछुइ बोझ नि। तुमि एमन भयानक अन्याय भुल बुझछ ये, से प्रति मुहूर्ते आमार पक्षे असह्य हये उठछे।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "बेश तो, भुल यदि बुझे थाकि तुमि भालो करे बुझियेइ बलो-ना।"

सुचरिता दृढ़बले, समस्त संकोच अधःकृत करिया कहिल, "आच्छा, तबे बलि। आमि आमार गुरुर काछ थेके एमन एकटि कथा पेयेछि या आमार काछे नतुन, सेटिके सम्पूर्ण ग्रहण करते खुब शक्तिर दरकार, आमि तारइ अभाव बोध करछि—आपनार सङ्गे केवलइ लड़ाइ करे पेरे उठछि ने। किन्तु मासि, तुमि आमादेर सम्बन्धके विकृत करे देखेछ ; तुमि ताँके अपमानित करे विदाय करे दियेछ—तुमि ताँके या बलेछ समस्त भुल, तुमि आमाके या भावछ समस्त मिथ्या, तुमि अन्याय करेछ। ताँर मतो लोकके निचु करते पार तोमार एमन साध्य नेइ, किन्तु केन तुमि आमार उपरे एमन अत्याचार करले, आमि तोमार की करेछि।"

बलिते बलिते सुचरितार स्वर रुद्ध हइया गेल, से अन्य घरे चलिया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिमोहिनी हतबुद्धि हइया गेलेन। तिनि मने मने कहिलेन, 'ना बापु, एमन सब कथा आमि सात जन्मे शुनि नाइ।'

सुचरिताके किछु शान्त हइते समय दिया किछुक्षण परे ताहाके आहारे डाकिया लइया गेलेन। से खाइते बसिले ताहाके बलिलेन, "देखो राधारानी, आमार तो वयस नितान्त कम हय नि। हिन्दुधर्मे या बले ता तो शिशुकाल थेके करे आसछि, आर शुनेओछि विस्तर। तुमि ए-सब किछुइ जान ना, सेइजन्येइ गौरमोहन तोमार गुरु हये तोमाके केवल भोलाच्छे। आमि तो ओंर कथा किछु किछु शुनेछि—ओर मध्ये आदत कथा किछुइ नेइ, ओ शास्त्र ओंर निजेर तैरि—ए-सब आमादेर काछे धरा पड़े, आमरा गुरु-उपदेश पेयेछि। आमि तोमाके बलछि राधारानी, तोमाके ए-सब किछुइ करते हबे ना; यखन समय हबे, आमार यिनि गुरु आछेन तिनि तो एमन फाँकि नन, तिनिइ तोमाके मन्त्र देबेन। तोमार कोनो भय नेइ, आमि तोमाके हिन्दुसमाजे ढुकिये देब। ब्राह्मघरे छिले, नाहय छिले। केइ वा से-खबर जानबे। तोमार वयस किछु बेशि हयेछे बटे, ता एमन बाड़न्त मेये ढेर आछे। केइ वा तोमार कुष्ठि देखछे। आर, टाका यखन आछे तखन किछुतेइ बाधबे ना, सबइ चले याबे। कैवर्तेर छेले कायस्थ बले चले गेल, से तो आमि निजेर चक्षे देखेछि। आमि हिन्दुसमाजे एमन सद्-ब्राह्मणेर घरे तोमाके चालिये देब, कारओ साध्य थाकबे ना कथा बले; ताराइ हल समाजेर कर्ता। एजन्ये तोमाके एत गुरुर साध्यसाधना एत कान्नाकाटि करे मरते हबे ना।"

एइ-सकल कथा हरिमोहिनी यखन विस्तारित करिया फलाइया फलाइया बलितेछिलेन, सुचरितार तखन आहारे रुचि चलिया गियाछिल, ताहार गला दिया येन ग्रास गलितेछिल ना। किन्तु से नीरवे अत्यन्त जोर करियाइ खाइल; कारण, से जानित, ताहार कम खाओया लइयाइ एमन आलोचनार सृष्टि हइबे याहा ताहार पक्षे किछुमात्र उपादेय हइबे ना।

हरिमोहिनी यखन सुचरितार काछे विशेष कोनो साड़ा पाइलेन ना तखन तिनि मने मने कहिलेन, 'गड़ करि, इहादिगके गड़ करि। ए दिके हिन्दु-हिन्दु करिया काँदिया-काटिया अस्थिर, ओ दिके एतबड़ो एकटा सुयोगेर कथाय कर्णपात नाइ। प्रायश्चित्त करिते हइबे ना, कोनो कैफियतटि दिते हइबे ना, केवल ए-दिके ओ-दिके अल्पस्वल्प किछु टाका खरच करिया अनायासेइ समाजे चलिया याइबे—इहातेओ याहार उत्साह हय ना से आपनाके बले किना हिन्दु!' गोरा ये कतबड़ो फाँकि हरिमोहिनीर ताहा बुझिते बाकि रहिल ना; एमनतरो विड़म्बनार उद्देश्य की हइते पारे ताहा चिन्ता करिते गिया सुचरितार अर्थइ समस्त अनर्थेर मूल बलिया ताँहार मने हइल, एवं सुचरितार रूपयौवन। यत शीघ्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोम्पानिर कागजादि-सह कन्याटिके उद्धार करिया ताँहार श्वाशुरिक दुर्गे आवद्ध करिते पारेन ततइ मङ्गल। किन्तु मन आर-एकटु नरम ना हइले चलिबे ना। सेइ नरम हइबार प्रत्याशाय तिनि दिनरात्रि सुचरितार काछे ताँहार श्वशुरबाड़िर व्याख्या करिते लागिलेन। ताहादेर क्षमता किरूप असामान्य, समाजे ताहारा किरूप असाध्यसाधन करिते पारे, नाना दृष्टान्त-सह ताहार वर्णना करिते लागिलेन। ताहादेर प्रतिकूलता करिते गिया कत निष्कलङ्क लोक समाजे निग्रह भोग करियाछे एवं ताहादेर शरणापन्न हइया कत लोक मुसलमानेर रान्ना मुर्गि खाइयाओ हिन्दु-समाजेर अति दुर्गम पथ हास्यमुखे उत्तीर्ण हइयाछे, नामधाम-विवरण द्वारा तिनि से सकल घटनाके विश्वासयोग्य करिया तुलिलेन।

सुचरिता ताँहादेर बाड़िते यातायात ना करे वरदासुन्दरीर ए इच्छा गोपन छिल ना, कारण, निजेर स्पष्ट व्यवहार सम्बन्धे ताँहार एकटा अभिमान छिल। अन्येर प्रति असंकोचे कठोराचरण करिबार समय तिनि निजेर एइ गुणटि प्रायइ घोषणा करितेन। अतएव वरदासुन्दरीर घरे सुचरिता ये कोनोप्रकार समादर प्रत्याशा करिते पारिबे ना, इहा सहजबोध्य भाषातेइ ताहार निकट व्यक्त हइयाछे। सुचरिता इहाओ जानित ये, से ताँहादेर बाड़िते याओया-आसा करिले परेशके घरेर मध्ये अत्यन्त अशान्ति भोग करिते हइत। एइजन्य से नितान्त प्रयोजन ना हइले ओ-बाड़िते याइत ना एवं एइजन्यइ परेश प्रत्यह एकबार वा दुइबार स्वयं सुचरितार बाड़िते आसिया ताहार सङ्गे देखा करिया याइतेन।

कयदिन परेशबाबु नाना चिन्ता ओ काजेर ताड़ाय सुचरितार ओखाने आसिते पारेन नाइ। एइ कयदिन सुचरिता प्रत्यह व्यग्रतार सहित परेशेर आगमन प्रत्याशाओ करियाछे, अथच ताहार मनेर मध्ये एकटा संकोच एवं कष्टओ हइयाछे। परेशेर सङ्गे ताहार गभीरतर मङ्गलेर सम्बन्ध कोनोकालेइ छिन्न हइते पारे ना ताहा से निश्चय जाने, किन्तु बाहिरेर दुइ-एकटा बड़ो बड़ो सूत्रे ये टान पड़ियाछे इहार वेदनाओ ताहाके विश्राम दितेछे ना। ए दिके हरिमोहिनी ताहार जीवनके अहरह असह्य करिया तुलियाछेन। एइजन्य सुचरिता आज वरदासुन्दरीर अप्रसन्नताओ स्वीकार करिया परेशेर बाड़िते आसिया उपस्थित हइल। अपराह्ण-शेषेर सूर्य तखन पार्श्ववर्ती पश्चिम दिकेर तेतला बाड़िर आड़ाले पड़िया सुदीर्घ छाया विस्तार करियाछे; एवं सेइ छायाय परेश तखन शिर नत करिया एकला ताँहार बागानेर पथे धीरे धीरे पदचारणा करितेछिलेन।

सुचरिता ताँहार पाशे आसिया योग दिल। कहिल, "बाबा, तुमि केमन आछ।"

परेशबाबु हठात् ताँहार चिन्ताय बाधा पाइया क्षणकालेर जन्य स्थिर हइया दाँड़ाइया राधारानीर मुखेर दिके चाहिलेन एवं कहिलेन, "भालो आछि, राधे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुइ जने बेड़ाइते लागिलेन। परेशबाबु कहिलेन, "सोमवारे ललितार विवाह।"

सुचरिता भाबितेछिल, एइ विवाहे ताहाके कोनो परामर्शे वा सहायताय डाका हय नाइ केन, ए कथा से जिज्ञासा करिबे। किन्तु कुण्ठित हइया उठितेछिल, केनना ताहार तरफेओ एबार एक जायगाय एकटा की बाधा आसिया पड़ियाछिल। आगे हइले से तो डाकिबार अपेक्षा राखित ना।

सुचरितार मने एइ ये एकटि चिन्ता चलितेछिल परेश ठिक सेइ कथाटाइ आपनि तुलिलेन, कहिलेन, "तोमाके एबार डाकते पारि नि, राधे।"

सुचरिता जिज्ञासा करिल, "केन, बाबा।"

सुचरितार एइ प्रश्ने परेश कोनो उत्तर ना दिया ताहार मुखेर दिके निरीक्षण करिया रहिलेन। सुचरिता आर थाकिते पारिल ना। से मुख नत करिया कहिल, "तुमि भाबछिले, आमार मनेर मध्ये एकटा परिवर्तन घटेछे।"

परेश कहिलेन, "हाँ, ताइ भाबछिलुम, आमि तोमाके कोनोरकम अनुरोध करे संकोचे फेलब ना।"

सुचरिता कहिल, "बाबा, आमि तोमाके सब कथा बलब मने करेछिलुम, किन्तु तोमार ये देखा पाइ नि। सेइजन्येइ आज आमि एसेछि। आमि ये तोमाके बेश भालो करे आमार मनेर भाव बलते पारब, आमार से क्षमता नेइ। आमार भय हय, पाछे ठिकटि तोमार काछे बला ना हय।"

परेश कहिलेन, "आमि जानि, ए-सब कथा स्पष्ट करे बला सहज नय। तुमि एकटा जिनिस तोमार मने केवल भावेर मध्ये पेयेछ, ताके अनुभव करछ, किन्तु तार आकारप्रकार तोमार काछे परिचित हये ओठे नि।"

सुचरिता आराम पाइया कहिल, "हाँ, ठिक ताइ। किन्तु आमार अनुभव एमन प्रबल, से आमि तोमाके की बलब। आमि ठिक येन एकटा नूतन जीवन पेयेछि, से एकटा नूतन चेतना। आमि एमन दिक थेके एमन करे निजेके कखनो देखि नि। आमार सङ्गे एतदिन आमार देशेर अतीत एवं भविष्यत् कालेर कोनो सम्बन्धइ छिल ना—किन्तु सेइ मस्तबड़ो सम्बन्धटा ये कत बड़ो सत्य जिनिस, आज सेइ उपलब्धि आमार हृदयेर मध्ये एमनि आश्चर्य करे पेयेछि ये, से आर किछुते भुलते पारछि ने। देखो बाबा, आमि तोमाके सत्य बलछि, आमि हिन्दु ए कथा आगे कोनोमते आमार मुख दिये बेर हते पारत ना। किन्तु एखन आमार मन खुब जोरेर सङ्गे असंकोचे बलछे 'आमि हिन्दु'। एते आमि खुब एकटा आनन्द बोध करछि।"

परेशबाबु कहिलेन, "ए कथाटार अङ्गप्रत्यङ्ग अंश-प्रत्यंश समस्तइ कि भेबे देखेछ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "समस्त भेबे देखबार शक्ति कि आमार निजेर आछे। किन्तु एइ कथा निये आमि अनेक पड़ेछि, अनेक आलोचनाओ करेछि। एइ जिनिसटाके यखन आमि एमन बड़ो करे देखते शिखि नि तखनइ हिन्दु बलते या बोझाय केवल तार समस्त छोटोखाटो खुँटिनाटिकेइ बड़ो करे देखेछि––ताते समस्तटार प्रति आमार मनेर मध्ये भारि एकटा घृणा बोध हत।"

परेशबाबु ताहार कथा शुनिया विस्मय अनुभव करिलेन ; तिनि स्पष्टइ बुझिते पारिलेन, सुचरितार मनेर मध्ये एकटा बोधसञ्चार हइयाछे, से एकटा किछु सत्यवस्तु लाभ करियाछे बलिया निःसंशये अनुभव करितेछे––से ये मुग्धेर मतो किछुइ ना बुझिया केवल एकटा अस्पष्ट आवेगे भासिया याइतेछे ताहा नहे।

सुचरिता कहिल, "बाबा, आमि ये आमार देश थेके जात थेके विच्छिन्न एकजन क्षुद्र मानुष, एमन कथा आमि केन बलब। आमि केन बलते पारब ना 'आमि हिन्दु'।"

परेश हासिया कहिलेन, "अर्थात् मा, तुमि आमाकेइ जिज्ञासा करछ, आमि केन निजेके हिन्दु बलि ने। भेबे देखते गेले तार ये खुब गुरुतर कोनो कारण आछे ता नय। एकटा कारण हच्छे, हिन्दुरा आमाके हिन्दु ब'ले स्वीकार करे ना ; आर-एकटा कारण, यादेर सङ्गे आमार धर्ममते मेले तारा निजेके हिन्दु ब'ले परिचय देय ना।"

सुचरिता चुप करिया भाविते लागिल। परेश कहिलेन, "आमि तो तोमाके बलेइछि, एगुलि गुरुतर कारण नय, एगुलि बाह्य कारण मात्र। ए बाधागुलोके ना मानलेओ चले। किन्तु भितरेर एकटा गभीर कारण आछे। हिन्दुसमाजे प्रवेशेर कोनो पथ नेइ। अन्तत सदर रास्ता नेइ, खिड़किर दरजा थाकतेओ पारे। ए समाज समस्त मानुषेर समाज नय––दैववशे यारा हिन्दु हये जन्माबे ए समाज केवलमात्र तादेर।"

सुचरिता कहिल, "सब समाजइ तो ताइ।"

परेश कहिलेन, "ना, कोनो बड़ो समाजइ ता नय। मुसलमान-समाजेर सिंहद्वार समस्त मानुषेर जन्ये उद्‌घाटित, खृस्टान-समाजओ सकलकेइ आह्वान करछे। येसकल समाज खृस्टान-समाजेर अङ्ग तादेर मध्येओ सेइ विधि। यदि आमि इंरेज हते चाइ तबे से एकेबारे असम्भव नय––इंलण्डे वास करे आमि नियम पालन करे चलले इंरेजसमाजभुक्त हते पारि, एमन कि सेजन्ये आमार खृस्टान हवारओ दरकार नेइ। अभिमन्यु व्यूहेर मध्ये प्रवेश करते जानत, बेरते जानत ना––हिन्दु ठिक तार उल्टो। तार समाजे प्रवेश करबार पथ एकेबारे बन्ध, बेरबार पथ शतसहस्र।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "तबु तो बाबा, एत दिनेओ हिन्दुर क्षय हय नि—से तो टिँके आछे।"

परेश कहिलेन, "समाजेर क्षय बुझते समय लागे। इतिपूर्वे हिन्दुसमाजेर खिड़किर दरजा खोला छिल। तखन ए देशेर अनार्य जाति हिन्दुसमाजेर मध्ये प्रवेश करे एकटा गौरव बोध करत। ए दिके मुसलमानेर आमले देशेर प्राय सर्वत्रइ हिन्दु राजा ओ जमिदारेर प्रभाव यथेष्ट छिल, एइजन्य समाज थेके कारओ सहजे बेरिये याबार विरुद्धे शासन ओ बाधार सीमा छिल ना। एखन इंरेज-अधिकारे सकलकेइ आइनेर द्वारा रक्षा करछे, सेरकम कृत्रिम उपाये समाजेर द्वार आगले थाकबार जो एखन आर तेमन नेइ—सेइजन्य किछुकाल थेके केवल देखा याच्छे, भारतवर्षेर हिन्दु कमछे आर मुसलमान बाड़छे ; एरकम भावे चलले क्रमे ए देश मुसलमानप्रधान हये उठबे, तखन एके हिन्दुस्थान बलाइ अन्याय हबे।"

सुचरिता व्यथित हइया उठिया कहिल, "बाबा, एटा कि निवारण कराइ आमादेर सकलेर उचित हबे ना। आमराओ कि हिन्दुके परित्याग करे तार क्षयके बाड़िये तुलब। एखनइ तो ताके प्राणपण शक्तिते आँकड़े थाकबार समय।"

परेशबाबु सस्नेहे सुचरितार पिठे हात बुलाइया कहिलेन, "आमरा इच्छा करलेइ कि काउके आँकड़े धरे बाँचिये राखते पारि। रक्षा पाबार जन्य एकटा जागतिक नियम आछे—सेइ स्वभावेर नियमके ये परित्याग करे सकलेइ ताके स्वभावतइ परित्याग करे। हिन्दुसमाज मानुषके अपमान करे, वर्जन करे ; एइजन्ये एखनकार दिने आत्मरक्षा करा तार पक्षे प्रत्यहइ कठिन हये उठछे। केनना, एखन तो आर से आड़ाले बसे थाकते पारबे ना—एखन पृथिवीर चार दिके रास्ता खुले गेछे, चार दिक थेके मानुष तार उपरे एसे पड़छे—एखन शास्त्र-संहिता दिये बाँध बेंधे प्राचीर तुले से आपनाके सकलेर संस्रव थेके कोनोमते ठेकिये राखते पारबे ना। हिन्दुसमाज एखनो यदि निजेर मध्ये संग्रह करबार शक्ति ना जागाय, क्षयरोगकेइ प्रश्रय देय, ता हले बाहिरेर मानुषेर एइ अबाध संस्रव तार पक्षे एकटा सांघातिक आघात हये दाँड़ाबे।"

सुचरिता वेदनार सहित बलिया उठिल, "आमि ए-सब किछु बुझि ने, किन्तु एइ यदि सत्य हय एके आज सबाइ त्याग करते बसेछे, ता हले एमन दिने एके आमि तो त्याग करते बसब ना। आमरा एर दुर्दिनेर सन्तान बलेइ तो एर शियरेर काछे आमादेर आज दाँड़िये थाकते हबे।"

परेशबाबु कहिलेन, "मा, तोमार मने ये-भाव जेगे उठेछे, आमि तार विरुद्धे कोनो कथा तुलब ना। तुमि उपासना क'रे, मन स्थिर क'रे, तोमार मध्ये ये-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सत्य आछे—ये श्रेयेर आदर्श आछे—तारइ सङ्गे मिलिये सब कथा विचार करे देखो ; क्रमे क्रमे तोमार काछे समस्त परिष्कार हये उठबे। यिनि सकलेर चेये बड़ो ताँके देशेर काछे किंवा कोनो मानुषेर काछे खाटो कोरो ना—ताते तोमारओ मङ्गल ना, देशेरओ ना। आमि एइ मने करे एकान्तचित्ते ताँरइ काछे आत्मसमर्पण करते चाइ ; ता हलेइ देशेर एवं प्रत्येक लोकेर सम्बन्धेइ आमि सहजेइ सत्य हते पारब।"

एमन समय एकजन लोक परेशबाबुर हाते एकखानि चिठि आनिया दिल। परेशबाबु कहिलेन, "चशमाटा नेइ, आलोओ कमे गेछे—चिठिखाना पड़े देखो देखि।"

सुचरिता चिठि पड़िया ताँहाके शुनाइल। ब्राह्मसमाजेर एक कमिटि हइते ताँहार काछे पत्रटि आसियाछे, नीचे अनेकगुलि ब्राह्मेर नाम सहि करा आछे। पत्रेर मर्म एइ ये, परेश अब्राह्ममते ताँहार कन्यार विवाहे सम्मति दियाछेन एवं सेइ विवाहे निजेओ योग दिते प्रस्तुत हइयाछेन। एरूप अवस्थाय ब्राह्मसमाज कोनोमतेइ ताँहाके सभ्यश्रेणीर मध्ये गण्य करिते पारेन ना। निजेर पक्षे यदि ताँहार किछु बलिबार थाके तबे आगामी रविवारेर पूर्वे से-सम्बन्धे कमिटिर हस्ते ताँहार पत्र आसा चाइ—सेइदिन आलोचना हइया अधिकांशेर मते चूड़ान्त निष्पत्ति हइबे।

परेश चिठिखाना लइया पकेटे राखिलेन। सुचरिता ताहार स्निग्ध हस्ते ताँहार डान हातखानि धरिया निःशब्दे ताँहार सङ्गे सङ्गे बेड़ाइते लागिल। क्रमे सन्ध्यार अन्धकार घनीभूत हइया आसिल, बागानेर दक्षिण पार्श्वेर गलिते रास्तार एकटि आलो ज्वलिया उठिल। सुचरिता मृदुकण्ठे कहिल, "बाबा, तोमार उपासनार समय हयेछे, आमि तोमार सङ्गे आज उपासना करब।"

एइ बलिया सुचरिता हात धरिया ताँहाके ताँहार उपासनार निभृत घरटिर मध्ये लइया गेल—सेखाने यथानियमे आसन पाता छिल एवं एकटि मोमबाति ज्वलितेछिल। परेश आज अनेकक्षण पर्यन्त नीरवे उपासना करिलेन। अवशेषे एकटि छोटो प्रार्थना करिया तिनि उठिया आसिलेन।

बाहिरे आसितेइ देखिलेन, उपासना-घरेर द्वारेर काछे बाहिरे ललिता ओ विनय चुप करिया बसिया आछे। ताँहाके देखियाइ ताहारा दुइ जने प्रणाम करिया ताँहार पायेर धुला लइल। तिनि ताहादेर माथाय हात राखिया मने मने आशीर्वाद करिलेन। सुचरिताके कहिलेन, "मा, आमि काल तोमादेर बाड़िते याब, आज आमार काजटा सेरे आसि गे।"

बलिया ताँहार घरे चलिया गेलेन।

तखन सुचरितार चोख दिया जल पड़ितेछिल। से निस्तब्ध प्रतिमार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मतो नीरवे बारान्दाय अन्धकारे दाँड़ाइया रहिल। ललिता एवं विनयओ अनेकक्षण किछु कथा कहिल ना।

सुचरिता यखन चलिया याइवार उपक्रम करिल विनय तखन ताहार सम्मुखे आसिया मृदुस्वरे कहिल, "दिदि, तुमि आमादेर आशीर्वाद करबे ना?"

एइ बलिया ललिताके लइया सुचरिताके प्रणाम करिल—सुचरिता अश्रुरुद्ध-कण्ठे याहा बलिल ताहा ताहार अन्तर्यामीइ शुनिते पाइलेन।

परेशबाबु ताँहार घरे आसिया ब्राह्मसमाज-कमिटिर निकट पत्र लिखिलेन; ताहाते लिखिलेन—

'ललितार विवाह आमाकेइ सम्पादन करिते हइबे। इहाते आमाके यदि त्याग करेन ताहाते आपनादेर अन्याय विचार हइबे ना। एक्षणे ईश्वरेर काछे आमार एइ एकटिमात्र प्रार्थना रहिल, तिनि आमाके समस्त समाजेर आश्रय हइते बाहिर करिया लइया ताँहारइ पदप्रान्ते स्थान दान करुन।'

६६

सुचरिता परेशेर काछे ये कथा कयटि शुनिल, ताहा गोराके बलिबार जन्य ताहार मन अत्यन्त व्याकुल हइया उठिल। ये-भारतवर्षेर अभिमुखे ताहार दृष्टिके प्रसारित एवं चित्तके प्रवल प्रेमे आकृष्ट करियाछे, एतदिन परे सेइ भारतवर्षे कालेर हस्त पड़ियाछे, सेइ भारतवर्ष क्षयेर मुखे चलियाछे, से कथा कि गोरा चिन्ता करेन नाइ। एतदिन भारतवर्ष निजेके बाँचाइया राखियाछे ताहार आभ्यन्तरिक व्यवस्थार बले—सेजन्य भारतवासीके सतर्क हइया चेष्टा करिते हय नाइ। आर कि तेमन निश्चिन्त हइया बाँचिबार समय आछे। आज कि पूर्वेर मतो केवल पुरातन व्यवस्थाके आश्रय करिया घरेर मध्ये बसिया थाकिते पारि।

सुचरिता भाविते लागिल, 'इहार मध्ये आमारओ तो एकटा काज आछे—से-काज की।' गोरार उचित छिल एइ समये ताहार सम्मुखे आसिया ताहाके आदेश करा, ताहाके पथ देखाइया देओया। सुचरिता मने मने कहिल, 'आमाके तिनि यदि आमार समस्त बाधा ओ अज्ञता हइते उद्धार करिया आमार यथास्थाने दाँड़ कराइया दिते पारितेन तबे कि समस्त क्षुद्र लोकलज्जा ओ निन्दा-अपवादके छाड़ाइयाओ ताहार मूल्य छापाइया उठित ना।' सुचरितार मन आत्मगौरवे पूर्ण हइया दाँड़ाइल। से बलिल, गोरा केन ताहाके परीक्षा करिलेन ना, केन ताहाके असाध्य साधन करिते बलिलेन ना—गोरार दलेर समस्त पुरुषेर मध्ये एमन एकटि लोक के आछे ये सुचरितार मतो एमन अनायासे निजेर याहा किछु आछे समस्त उत्सर्ग करिते पारे। एमन एकटा आत्मत्यागेर आकांक्षा ओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्तिर कि कोनो प्रयोजन गोरा देखिल ना। इहाके लोकलज्जार-बेड़ा-देओया कर्महीनतार मध्ये फेलिया दिया गेले ताहाते देशेर किछुमात्र क्षति नाइ? सुचरिता एइ अवज्ञाके सम्पूर्ण अस्वीकार करिया दूरे सराइया दिल। से कहिल, 'आमाके एमन करिया त्याग करिबेन ए कखनोइ हइते पारिबे ना। आमार काछे ताँहाके आसितेइ हइबे, आमाके ताँहार सन्धान करितेइ हइबे, समस्त लज्जा संकोच ताँहाके परित्याग करितेइ हइबे—तिनि यतबड़ो शक्तिमान पुरुष होन, आमाके ताँहार प्रयोजन आछे, ए कथा ताँहार निजेर मुखे एकदिन आमाके बलियाछेन— आज अति तुच्छ जल्पनाय ए कथा केमन करिया भुलिलेन।'

सतीश छुटिया आसिया सुचरितार कोलेर काछे दाँड़ाइया कहिल, "दिदि।"

सुचरिता ताहार गला जड़ाइया कहिल, "की भाइ बक्तियार।"

सतीश कहिल, "सोमवारे ललितादिर बिये—ए क'दिन आमि विनयबाबुर बाड़िते गिये थाकब। तिनि आमाके डेकेछेन।"

सुचरिता कहिल, "मासिके बलेछिस?"

सतीश कहिल, "मासिके बलेछिलुम, तिनि राग करे बललेन, 'आमि ओ-सब किछु जानि ने, तोमार दिदिके बलो, तिनि या भालो बोझेन ताइ हबे।' दिदि, तुमि वारण कोरो ना। सेखाने आमार पड़ाशुनार किछु क्षति हबे ना, आमि रोज पड़ब, विनयबाबु आमार पड़ा बले देबेन।"

सुचरिता कहिल, "काजकर्मेर बाड़िते तुइ गिये सकलके अस्थिर करे दिबि।"

सतीश व्यग्र हइया कहिल, "ना दिदि, आमि किछु अस्थिर करब ना।"

सुचरिता कहिल, "तोर खुदे कुकुरटाके सेखाने निये याबि नाकि?"

सतीश कहिल, "हाँ, ताके निये येते हबे, विनयबाबु विशेष करे बले दियेछेन। तार नामे लाल चिठिर कागजे छापानो एकटा आलादा निमन्त्रण-चिठि एसेछे— ताते लिखेछे, ताके सपरिजने गिये जलयोग करे आसते हबे।"

सुचरिता कहिल, "परिजनटि के।"

सतीश ताड़ाताड़ि कहिल, "केन, विनयबाबु बलेछेन, आमि। तिनि आमादेर सेइ आर्गिनटाओ निये येते बलेछेन दिदि, सेटा आमाके दियो—आमि भाङब ना।"

सुचरिता कहिल, "भाङलेइ ये आमि बाँचि; एतक्षणे ता हले बोझा गेल— ताँर बियेते आर्गिन वाजाबार जन्येइ बुझि तोर बन्धु तोके डेकेछेन? रोशन-चौकिओयालाके बुझि एकेबारे फाँकि देबार मतलब?"

सतीश अत्यन्त उत्तेजित हइया उठिया कहिल, "ना, कक्खनो ना। विनयबाबु बलेछेन, आमाके ताँर मित्वर करबेन। मित्वरके की करते हय दिदि।"

सुचरिता कहिल, "समस्त दिन उपोस करे थाकते हय।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतीश एकथा सम्पूर्ण अविश्वास करिल। तखन सुचरिता सतीशके कोलेर काछे दृढ़ करिया टानिया कहिल, "आच्छा, भाइ बक्तियार, तुइ बड़ो हले की हबि बल् देखि।"

इहार उत्तर सतीशेर मनेर मध्ये प्रस्तुत छिल। ताहार क्लासेर शिक्षकइ ताहार काछे अप्रतिहत क्षमता ओ असाधारण पाण्डित्येर आदर्शस्थल छिल—से पूर्व हइतेइ मने मने स्थिर करिया राखियाछिल, से बड़ो हइले मास्टारमशाय हइबे।

सुचरिता ताहाके कहिल, "अनेक काज करबार आछे भाइ। आमादेर दुइ भाइबोनेर काज आमरा दुजने मिले करब। की बलिस, सतीश। आमादेर देशके प्राण दिये बड़ो करे तुलते हबे। बड़ो करब की! आमादेर देशेर मतो बड़ो आर की आछे। आमादेर प्राणकेइ बड़ो करे तुलते हबे। जानिस? बुझते पेरेछिस?"

बुझिते पारिल ना ए कथा सतीश सहजे स्वीकार करिबार पात्र नय। से जोरेर सहित बलिल, "हाँ।"

सुचरिता कहिल, "आमादेर ये-देश, आमादेर ये-जात, से कतबड़ो ता जानिस? से आमि तोके बोझाब केमन करे। ए एक आश्चर्य देश। एइ देशके पृथिवीर सकलेर चूड़ार उपरे बसाबार जन्ये कत हाजार हाजार वत्सर धरे विधातार आयोजन हयेछे, देशविदेश थेके कत लोक एसे एइ आयोजने योग दियेछे, ए देशे कत महापुरुष जन्मेछेन, कत महायुद्ध घटेछे, कत महावाक्य एइखान थेके बला हयेछे, कत महातपस्या एइखाने साधन करा हयेछे, धर्मके ए देश कत दिक थेके देखेछे एवं जीवनेर समस्यार कतरकम मीमांसा एइ देशे हयेछे! सेइ आमादेर एइ भारतवर्ष! एके खुब महत् बलेइ जानिस, भाइ—एके कोनोदिन भुलेओ अवज्ञा करिस ने। तोके आज आमि या बलछि एकदिन से-कथा तोके बुझतेइ हबे—आजओ तुइ ये किछु बुझते पारिस नि आमि ता मने करि ने। एइ कथाटि तोके मने राखते हबे, खुब एकटा बड़ो देशे तुइ जन्मेछिस, समस्त हृदय दिये एइ बड़ो देशके भक्ति करबि आर समस्त जीवन दिये एइ बड़ो देशेर काज करबि।"

सतीश एकटुखानि चुप करिया थाकिया कहिल, "दिदि, तुमि की करबे।"

सुचरिता कहिल, "आमिओ एइ काज करब। तुइ आमाके साहाय्य करबि तो।"

सतीश तत्क्षणात् बुक फुलाइया कहिल, "हाँ, करब।"

सुचरितार हृदय पूर्ण करिया ये-कथा जमिया उठितेछिल ताहा बलिबार लोक बाड़िते केहइ छिल ना। ताइ आपनार एइ छोटो भाइटिके काछे पाइया ताहार समस्त आवेग उच्छ्वसित हइया उठिल। से ये-भाषाय याहा बलिल ताहा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालकेर काछे बलिबार नहे—किन्तु सुचरिता ताहाते संकुचित हइल ना। ताहार मनेर एइरूप उत्साहित अवस्थाय एइ ज्ञानटि से पाइयाछिल ये, याहा निजे बुझियाछि, ताहाके पूर्णभावे बलिले तवेइ छेलेबुड़ा सकले आपन आपन शक्ति अनुसारे ताहाके एकरकम बुझिते पारे, ताहाके अन्येर बुद्धिर उपयोगी करिया हाते राखिया बुझाइते गेलेइ सत्य आपनि विकृत हइया याय।

सतीशेर कल्पनावृत्ति उत्तेजित हइया उठिल ; से कहिल, "बड़ो हले आमार यखन अनेक अनेक टाका हबे तखन—"

सुचरिता कहिल, "ना ना ना, टाकार कथा मुखे आनिस ने, आमादेर दुजनेर टाकार दरकार नेइ, बक्तियार—आमरा ये-काज करब ताते भक्ति चाइ, प्राण चाइ।"

एमन समय घरेर मध्ये आनन्दमयी आसिया प्रवेश करिलेन। सुचरितार बुकेर भितरे रक्त नृत्य करिया उठिल—से आनन्दमयीके प्रणाम करिल। प्रणाम करा सतीशेर भालो आसे ना ; से लज्जितभावे कोनोमते काजटा सारिया लइल।

आनन्दमयी सतीशके कोलेर काछे टानिया लइया ताहार शिरश्चुम्बन करिलेन, एवं सुचरिताके कहिलेन, "तोमार सङ्गे एकटु परामर्श करते एलुम, मा—तुमि छाड़ा आर काउके देखि ने। विनय बलछिल, 'बिये आमार वासातेइ हबे।' आमि बललुम, 'से किछुतेइ हबे ना—तुमि मस्त नवाब हयेछ कि ना, आमादेर मेये अमनि सेधे गिये तोमार घरे एसे बिये करे याबे!' से हबे ना। आमि एकटा बासा ठिक करेछि, से तोमादेर ए बाड़ि थेके बेशि दूर हबे ना। आमि एइमात्र सेखान थेके आसछि। परेशबाबुके बले तुमि राजि करिये नियो।"

सुचरिता कहिल, "बाबा राजि हबेन।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तार परे, तोमाकेओ मा, सेखाने येते हच्छे। एइ तो सोमवारे बिये। एइ क'दिन सेखाने थेके आमादेर तो समस्त गुछिये-गाछिये निते हबे। समय तो बेशि नेइ। आमि एकलाइ समस्त करे निते पारि, किन्तु तुमि एते ना थाकले विनयेर भारि कष्ट हबे। से मुख फुटे तोमाके अनुरोध करते पारछे ना, एमन कि, आमार काछेओ से तोमार नाम करे नि—तातेइ आमि बुझते पारछि, ओखाने तार खुब एकटा व्यथा आछे। तुमि किन्तु सरे थाकले चलबे ना, मा—ललिताकेओ से बड़ो बाजबे।"

सुचरिता एकटु विस्मित हइया कहिल, "मा, तुमि एइ बियेते योग दिते पारबे?"

आनन्दमयी कहिलेन, "बल की, सुचरिता। योग देओया की बलछ। आमि कि बाइरेर लोक ये शुधु केवल योग देब। ए ये विनयेर बिये। ए तो आमाकेइ समस्त करते हबे। आमि किन्तु विनयके बले रेखेछि, 'ए बियेते आमि तोमार केउ नय, आमि कन्यापक्षे'—आमार घरे से ललिताके बिये करते आसछे।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मा थाकितेओ शुभकर्मे ललिताके ताहार मा परित्याग करियाछेन, से करुणाय आनन्दमयीर हृदय पूर्ण हइया रहियाछे। सेइ कारणेइ एइ विवाहे याहाते कोनो अनादर-अश्रद्धार लक्षण ना थाके सेइजन्य तिनि एकान्तमने चेष्टा करितेछेन। तिनि ललितार मायेर स्थान लइया निजेर हाते ललिताके साजाइया दिबेन, वरके वरण करिया लइबार व्यवस्था करिबेन—यदि निमन्त्रित दुइ-चारि जन आसे ताहादेर आदर-अभ्यर्थनार लेशमात्र त्रुटि ना हय ताहा देखिबेन, एवं एइ नूतन बासाबाड़िके एमन करिया साजाइया तुलिबेन याहाते ललिता इहाके एकटा वासस्थान बलिया अनुभव करिते पारे, इहाइ ताँहार संकल्प।

सुचरिता कहिल, "एते तोमाके निये कोनो गोलमाल हबे ना ?"

बाड़िते महिम ये तोलपाड़ बाधाइयाछे ताहा स्मरण करिया आनन्दमयी कहिलेन, "ता हते पारे, ताते की हबे। गोलमाल किछु हयेइ थाके ; चुप करे सये थाकले आबार किछुदिन परे समस्त केटेओ याय।"

सुचरिता जानित एइ विवाहे गोरा योग देय नाइ। आनन्दमयीके बाधा दिबार जन्य गोरार कोनो चेष्टा छिल किना इहाइ जानिबार जन्य सुचरितार औत्सुक्य छिल। से-कथा से स्पष्ट करिया पाड़िते पारिल ना, एवं आनन्दमयी गोरार नाममात्रओ उच्चारण करिलेन ना।

हरिमोहिनी खबर पाइयाछिलेन। धीरे सुस्थे हातेर काज सारिया तिनि घरेर मध्ये आसिलेन एवं कहिलेन, "दिदि, भालो आछ तो ? देखाइ नेइ, खबरइ नाओ ना !"

आनन्दमयी सेइ अभियोगेर उत्तर ना करिया कहिलेन, "तोमार बोनझिके निते एसेछि।"

एइ बलिया ताँहार उद्देश्य व्यक्त करिया बलिलेन। हरिमोहिनी अप्रसन्न मुखे किछुक्षण चुप करिया रहिलेन ; परे कहिलेन, "आमि तो एर मध्ये येते पारब ना।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ना बोन, तोमाके आमि येते बलि ने। सुचरितार जन्ये तुमि भेबो ना—आमि तो ओर सङ्गेइ थाकब।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "तबे बलि। राधारानी तो लोकेर काछे बलछेन उनि हिन्दु। एखन ओंर मतिगति हिंदुयानिर दिके फिरेछे। ता उनि यदि हिन्दुसमाजे चलते चान, ता हले ओंके सावधान हते हबे। अमनितेइ तो ढेर कथा उठबे, ता से आमि काटिये दिते पारब, किन्तु एखन थेके किछुदिन ओंके सामले चला चाइ। लोके तो प्रथमेइ जिज्ञासा करे, एत वयस हल ओंर बियेथाओया हल ना केन—से एकरकम करे चापाचुपि दिये राखा चले—भालो पात्रओ ये चेष्टा करले जोटे ना ता नय—किन्तु उनि यदि आवार ओंर सावेक चाल धरेन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ता हले आमि कत दिके सामलाब बलो। तुमि तो हिंदुघरेर मेये, तुमि तो सब बोझ, तुमिइ वा एमन कथा बल कोन् मुखे। तोमार निजेर मेये यदि थाकत ताके कि एइ बियेते पाठाते पारते। तोमाके तो भाबते हत, मेयेर बिये देबे केमन करे ?"

आनन्दमयी विस्मित हइया सुचरितार मुखेर दिके चाहिलेन—ताहार मुख रक्तवर्ण हइया झाँ झाँ करिते लागिल। आनन्दमयी कहिलेन, "आमि कोनो जोर करते चाइ ने। सुचरिता यदि आपत्ति करेन तबे आमि—"

हरिमोहिनी बलिया उठिलेन, "आमि तो तोमादेर भाव किछुइ बुझे उठते पारि ने। तोमारइ तो छेले ओंके हिन्दुमते लइयेछेन, तुमि हठात् आकाश थेके पड़ले चलबे केन।"

परेशबाबुर बाड़िते सर्वदाइ अपराधभीरुर मतो ये-हरिमोहिनी छिलेन, यिनि कोनो मानुषके ईषत्-मात्र अनुकूल बोध करिलेइ एकान्त आग्रहेर सहित अवलम्बन करिया धरितेन, से-हरिमोहिनी कोथाय। निजेर अधिकार रक्षा करिबार जन्य इनि आज बाघिनीर मतो दाँड़ाइयाछेन ; ताँहार सुचरिताके ताँहार काछ हइते भाङाइया लइबार जन्य चारि दिके नाना विरुद्ध शक्ति काज करितेछे, एइ सन्देहे तिनि सर्वदाइ कण्टकित हइया आछेन ; के स्वपक्ष, के विपक्ष, ताहा बुझितेइ पारितेछेन ना—एइजन्य ताँहार मने आज आर स्वच्छन्दता नाइ। पूर्वे समस्त संसारके शून्य देखिया ये-देवताके व्याकुलचित्ते आश्रय करियाछिलेन सेइ देवपूजातेओ ताँहार चित्त स्थिर हइतेछे ना। एकदिन तिनि घोरतरो संसारी छिलेन, निदारुण शोके यखन ताँहार विषये वैराग्य जन्मियाछिल तखन तिनि मनेओ करिते पारेन नाइ ये आबार कोनोदिन ताँहार टाकाकड़ि घरबाड़ि आत्मीयपरिजनेर प्रति किछुमात्र आसक्ति फिरिया आसिबे। किन्तु आज हृदयक्षतेर एकटु आरोग्य हइतेइ संसार पुनराय ताँहार सम्मुखे आसिया ताँहार मनके टानाटानि करिते आरम्भ करियाछे—आबार समस्त आशा-आकांक्षा ताहार अनेक-दिनेर क्षुधा लइया पूर्वेर मतोइ जागिया उठितेछे ; याहा त्याग करिया आसियाछिलेन सेइ दिके पुनर्वार फिरिबार वेग एमनि उग्र हइया उठियाछे ये, संसारे यखन छिलेन तखनो ताँहाके एत चञ्चल करिते पारे नाइ। अल्प कयदिनेइ हरिमोहिनीर मुखे चक्षे, भावे भङ्गीते, कथाय व्यवहारे एइ अभावनीय परिवर्तनेर लक्षण देखिया आनन्दमयी एकेबारे आश्चर्य हइया गेलेन, एवं सुचरितार जन्य ताँहार स्नेहकोमल हृदये अत्यन्त व्यथा बोध करिते लागिलेन। एमन ये एकटा संकट प्रच्छन्न हइया आछे ताहा जानिले तिनि कखनोइ सुचरिताके डाकिते आसितेन ना। एखन की करिले सुचरिताके आघात हइते बाँचाइते पारिबेन, से ताँहार पक्षे एकटा समस्यार विषय हइया उठिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरार प्रति लक्ष्य करिया यखन हरिमोहिनी कथा कहिलेन तखन सुचरिता मुख नत करिया नीरवे घर हइते उठिया चलिया गेल ।

आनन्दमयी कहिलेन, "तोमार भय नेइ, बोन । आमि तो आग जानतुम ना । ता, आर ओके पीड़ापीड़ि करब ना । तुमिओ ओके आर किछु बोलो ना । ओ आगे एकरकम करे मानुष हयेछे, हठात् ओके यदि बेशि चाप दाओ से आबार सइबे ना ।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "से कि आमि बुझि ने, आमार एत वयस हल ! तोमार मुखेर सामनेइ बलुक-ना, आमि कि ओके कोनोदिन किछु कष्ट दियेछि । ओर या खुशि ताइ तो करछे, आमि कखनो एकटि कथा कइ ने ; बलि, भगवान ओके बाँचिये राखुन, सेइ आमार ढेर—ये आमार कपाल, कोन्‌दिन की घटे सेइ भये घुम हय ना ।"

आनन्दमयी याइबार समय सुचरिता ताहार घर हइते बाहिर हइया ताँहाके प्रणाम करिल । आनन्दमयी सकरुण स्नेहे ताहाके स्पर्श करिया कहिलेन, "आमि आसब, मा, तोमाके सब खबर दिये याब—कोनो विघ्न हबे ना, ईश्वरेर आशीर्वादे शुभकर्म सम्पन्न हये याबे ।"

सुचरिता कोनो कथा कहिल ना ।

परदिन प्राते आनन्दमयी लछमियाके लइया यखन सेइ बासाबाड़िर बहुदिन-सञ्चित धूलि क्षय करिबार जन्य एकेबारे जलप्लावन बाधाइया दियाछेन एमन समय सुचरिता आसिया उपस्थित हइल । आनन्दमयी ताड़ाताड़ि झाँटा फेलिया दिया ताहाके बुके टानिया लइलेन ।

तार परे धोओयामोछा जिनिसपत्र-नाड़ाचाड़ा ओ साजानोर घुम पड़िया गेल । परेशबाबु खरचेर जन्य सुचरितार हाते उपयुक्त परिमाण टाका दिया-छिलेन—सेइ तहबिल लइया उभये मिलिया बार बार करिया कत फर्द तैरि एवं ताहार संशोधने प्रवृत्त हइलेन ।

अनतिकाल परे परेश स्वयं ललिताके लइया सेखाने उपस्थित हइलेन । ललितार पक्षे ताहार बाड़ि असह्य हइया उठियाछिल । केह ताहाके कोनो कथा बलिते साहस करित ना, किन्तु ताहादेर नीरवता पदे पदे ताहाके आघात करिते लागिल । अवशेषे वरदासुन्दरीर प्रति समवेदना प्रकाश करिबार जन्य यखन ताँहार बन्धुबान्धवगण दले दले बाड़िते आसिते लागिल, तखन परेश ललिताके ए बाड़ि हइते लइया याओयाइ श्रेय ज्ञान करिलेन । ललिता विदाय हइबार समय वरदासुन्दरीके प्रणाम करिते गेल ; तिनि मुख फिराइया बसिया रहिलेन एवं से चलिया गेले अश्रुपात करिते लागिलेन । ललितार विवाह-व्यापारे लावण्य ओ लीलार मने मने यथेष्ट औत्सुक्य छिल—कोनो उपाये यदि ताहारा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छुटि पाइत तबे विवाह-आसरे छुटिया याइते एक मुहूर्त विलम्ब करित ना। किन्तु ललिता यखन विदाय हइया गेल तखन ब्राह्म-परिवारेर कठोर कर्तव्य स्मरण करिया ताहारा मुख अत्यन्त गम्भीर करिया रहिल। दरजार काछे सुधीरेर सङ्गे चकितेर मतो ललितार देखा हइल ; किन्तु सुधीरेर पश्चातेइ ताहादेर समाजेर आरओ कयेकजन प्रवीण व्यक्ति छिलेन, एइ कारणे ताहार सङ्गे कोनो कथा हइतेइ पारिल ना। गाड़िते उठिया ललिता देखिल, आसनेर एक कोणे कागजे मोड़ा की एकटा रहियाछे। खुलिया देखिल, जर्मान रौप्येर एकटि फुलदानि, ताहार गाये इंरेजि भाषाय खोदा रहियाछे 'आनन्दित दम्पतिके ईश्वर आशीर्वाद करुन' एवं एकटि कार्डे इंराजिते सुधीरेर केवल नामेर आद्यक्षरटि छिल। ललिता आज हृदयके कठिन करिया पण करियाछिल, से चोखेर जल फेलिबे ना। किन्तु पितृगृह हइते विदायमुहूर्ते बाल्यबन्धुर एइ एकटिमात्र स्नेहोपहार हाते लइया ताहार दुइ चक्षु दिया झर् झर् करिया जल झरिया पड़िते लागिल। परेशबाबु चक्षु मुद्रित करिया स्थिर हइया बसिया रहिलेन।

आनन्दमयी "एसो एसो, मा एसो" बलिया ललितार दुइ हात धरिया ताहाके घरे लइया आसिलेन, येन एखनइ ताहार जन्य तिनि प्रतीक्षा करिया छिलेन।

परेशबाबु सुचरिताके डाकाइया आनिया कहिलेन, "ललिता आमार घर थेके एकेवारे विदाय निये एसेछे।"

परेशेर कण्ठस्वर कम्पित हइया गेल।

सुचरिता परेशेर हात धरिया कहिल, "एखाने ओर स्नेहयत्नेर कोनो अभाव हबे ना, बाबा।"

परेश यखन चलिया याइते उद्यत हइयाछेन एमन समये आनन्दमयी माथार उपर कापड़ टानिया ताँहार सम्मुखे आसिया ताँहाके नमस्कार करिलेन। परेश व्यस्त हइया ताँहाके प्रतिनमस्कार करिलेन। आनन्दमयी कहिलेन, "ललितार जन्ये आपनि कोनो चिन्ता मने राखबेन ना। आपनि यार हाते ओके समर्पण करछेन तार द्वारा ओ कखनो कोनो दुःख पावे ना, आर भगवान एतकाल परे आमार एइ एकटि अभाव दूर करे दिलेन—आमार मेये छिल ना, आमि मेये पेलुम। विनयेर बउटिके निये आमार कन्यार दुःख घुचबे, अनेक दिन धरे एइ आशापथ चेये बसे छिलुम—ता अनेक देरिते येमन ईश्वर आमार कामना पूरण करे दिलेन, तेमनि एमन मेये दिलेन आर एमन आश्चर्य रकम करे दिलेन ये, आमि आमार एमन भाग्य कखनो मने चिन्ताओ करते पारतुम ना।"

ललितार विवाहेर आन्दोलन आरम्भ हओयार पर हइते एइ प्रथम परेशबाबुर चित्त संसारेर मध्ये एक जायगाय एकटा कूल देखिते पाइल एवं यथार्थ सान्त्वना लाभ करिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६७

कारागार हइते बाहिर हओयार पर हइते गोरार काछे समस्त दिन एत लोकसमागम हइते लागिल ये ताहादेर स्तवस्तुति ओ आलाप-आलोचनार निश्वासरोधकर अजस्र वाक्यराशिर मध्ये बाड़िते वास करा ताहार पक्षे असाध्य हइया उठिल।

गोरा ताइ पूर्वेर मतो पुनर्वार पल्लिभ्रमण आरम्भ करिल।

सकालवेलाय किछु खाइया बाड़ि हइते बाहिर हइत, एकेबारे रात्रे फिरिया आसित। ट्रेने करिया कलिकातार काछाकाछि कोनो-एकटा स्टेशने नामिया पल्लिग्रामेर मध्ये गिया प्रवेश करित। सेखाने कलु कुमार कैवर्त प्रभृतिदेर पाड़ाय से आतिथ्य लइत। एइ गौरवर्ण प्रकाण्डकाय ब्राह्मणटि केन ये ताहादेर बाड़िते एमन करिया घुरितेछे, ताहादेर सुखदुःखेर खबर लइतेछे, ताहा ताहारा किछुइ बुझिते पारित ना, एमन कि, ताहादेर मने नानाप्रकार सन्देह जन्मित। किन्तु गोरा ताहादेर समस्त संकोच-सन्देह ठेलिया ताहादेर मध्ये विचरण करिते लागिल। माझे माझे से अप्रिय कथाओ शुनियाछे, ताहातेओ निरस्त हय नाइ।

यतइ इहादेर भितर प्रवेश करिल ततइ एकटा कथा केवलइ ताहार मनेर मध्ये घुरिया बेड़ाइते लागिल। से देखिल, एइ सकल पल्लीते समाजेर बन्धन शिक्षित भद्रसमाजेर चेये अनेक बेशि। प्रत्येक घरेर खाओयादाओया शोओयाबसा काजकर्म समस्तइ समाजेर निमेषविहीन चोखेर उपरे दिनरात्रि रहियाछे। प्रत्येक लोकेरइ लोकाचारेर प्रति अत्यन्त एकटि सहज विश्वास, से-सम्बन्धे ताहादेर कोनो तर्कमात्र नाइ। किन्तु समाजेर बन्धने आचारे-निष्ठाय इहादिगके कर्मक्षेत्रे किछुमात्र बल दितेछे ना। इहादेर मतो एमन भीत असहाय आत्महितविचारे-अक्षम जीव जगते कोथाओ आछे किना सन्देह। आचारके पालन करिया चला छाड़ा आर-कोनो मङ्गलके इहारा सम्पूर्ण मनेर सङ्गे चेनेओ ना, बुझाइलेओ बुझे ना। दण्डेर द्वारा दलादलिर द्वारा निषेधटाकेइ ताहारा सबचेये बड़ो करिया बुझियाछे ; की करिते नाइ एइ कथाटाइ पदे पदे नाना शासनेर द्वारा ताहादेर प्रकृतिके येन आपादमस्तक जाले बाँधियाछे—किन्तु ए जाल ऋणेर जाल, ए बाँधन महाजनेर बाँधन, राजार बाँधन नहे। इहार मध्ये एमन कोनो बड़ो ऐक्य नाइ याहा सकलके विपदे सम्पदे पाशापाशि दाँड़ कराइते पारे। गोरा ना देखिया थाकिते पारिल ना ये एइ आचारेर अस्त्रे मानुष मानुषेर रक्त शोषण करिया ताहाके निष्ठुरभावे निःस्वत्व करितेछे। कतवार से देखियाछे, समाजे क्रियाकर्मे केह काहाकेओ दयामात्रओ करे ना। एकजनेर बाप दीर्घकाल रोगे भुगितेछिल, सेइ बापेर चिकित्सा पथ्य प्रभृतिते बेचारा सर्वस्वान्त हइयाछे, से-सम्बन्धे काहारओ निकट हइते ताहार कोनो साहाय्य नाइ—ए दिके ग्रामेर लोके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धरिया पड़िल ताहार पिताके अज्ञात-पातकजनित चिररुग्णतार जन्य प्रायश्चित्त करिते हइबे। से-हतभाग्येर दारिद्र्य असामर्थ्य काहारओ अगोचर छिल ना, किन्तु क्षमा नाइ। सकलप्रकार क्रियाकर्मेइ एइरूप। येमन डाकातिर अपेक्षा पुलिस-तदन्त ग्रामेर पक्षे गुरुतर दुर्घटना, तेमनि मा-बापेर मृत्युर अपेक्षा मा-बापेर श्राद्ध सन्तानेर पक्षे गुरुतर दुर्भाग्येर कारण हइया उठे। अल्प आय अल्प शक्तिर दोहाइ केहइ मानिबे ना—येमन करिया हउक सामाजिकतार हृदयहीन दाबि षोलो आना पूरण करिते हइबे। विवाह उपलक्ष्ये कन्यार पितार बोझा याहाते दुःसह हइया उठे एइजन्य वरेर पक्षे सर्वप्रकार कौशल अवलम्बन करा हय, हत-भाग्येर प्रति लेशमात्र करुणा नाइ। गोरा देखिल, एइ समाज मानुषके प्रयोजनेर समय साहाय्य करे ना, विपदेर समय भरसा देय ना, केवल शासनेर द्वारा नति स्वीकार कराइया विपन्न करे।

शिक्षित समाजेर मध्ये गोरा ए कथा भुलियाछिल—कारण, से-समाजे साधारणेर मङ्गलेर जन्य एक हइया दाँड़ाइबार शक्ति बाहिर हइते काज करितेछे। एइ समाजे एकत्रे मिलिबार नानाप्रकार उद्योग देखा दितेछे। एइ-सकल मिलित चेष्टा पाछे परेर अनुकरणरूपे आमादिगके निष्फलतार दिके लइया याय, सेखाने इहाइ केवल भाबिबार विषय।

किन्तु पल्लीर मध्ये येखाने बाहिरेर शक्तिसंघात तेमन करिया काज करितेछे ना, सेखानकार निश्चेष्टतार मध्ये गोरा स्वदेशेर गभीरतर दुर्बलतार ये मूर्ति ताहाइ एकेबारे अनावृत देखिते पाइल। ये-धर्म सेवारूपे, प्रेमरूपे, करुणारूपे, आत्मत्यागरूपे एवं मानुषेर प्रति श्रद्धारूपे सकलके शक्ति देय, प्राण देय, कल्याण देय, कोथाओ ताहाके देखा याय ना—ये-आचार केवल रेखा टाने, भाग करे, पीड़ा देय, याहा बुद्धिकेओ कोथाओ आमल दिते चाय ना, याहा प्रीतिकेओ दूरे खेदाइया राखे, ताहाइ सकलके चलिते-फिरिते उठिते-बसिते सकल विषयेइ केवल बाधा दिते थाके—पल्लीर मध्ये एइ मूढ़ बाध्यतार अनिष्टकर कुफल एत स्पष्ट करिया एत नानारकमे गोरार चोखे पड़िते लागिल, ताहा मानुषेर स्वास्थ्यके ज्ञानके धर्मबुद्धिके कर्मके एत दिके एत प्रकारे आक्रमण करियाछे देखिते पाइल ये, निजेके भावुकतार इन्द्रजाले भुलाइया राखा गोरार पक्षे असम्भव हइया उठिल।

गोरा प्रथमेइ देखिल, ग्रामेर नीचजातिर मध्ये स्त्रीसंख्यार अल्पतावशत अथवा अन्य ये-कारणवशत हउक अनेक पण दिया तबे विवाहेर जन्य मेये पाओया याय। अनेक पुरुषके चिरजीवन एवं अनेकके अधिक वयस पर्यन्त अविवाहित थाकिते हय। ए दिके विधवार विवाह सम्बन्धे कठिन निषेध। इहाते घरे घरे समाजेर स्वास्थ्य दूषित हइया उठितेछे एवं इहार अनिष्ट ओ असुविधा समाजेर प्रत्येक लोकइ अनुभव करितेछे ; एइ अकल्याण चिरदिन वहन करिया चलिते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकलेइ बाध्य, किन्तु इहार प्रतिकार करिबार उपाय कोथाओ काहारओ हाते नाइ। शिक्षित-समाजे ये-गोरा आचारके कोथाओ शिथिल हइते दिते चाय ना सेइ गोरा एखाने आचारके आघात करिल। से इहादेर पुरोहितदिगके वश करिल, किन्तु समाजेर लोकदेर सम्मति कोनोमतेइ पाइल ना। ताहारा गोरार प्रति क्रुद्ध हइया उठिल ; कहिल, 'बेश तो, ब्राह्मणेरा यखन विधवाविवाह दिबेन आमराओ तखन दिब।'

ताहादेर राग हइबार प्रधान कारण एइ ये ताहारा मने करिल, गोरा ताहादिगके हीनजाति बलिया अवज्ञा करितेछे, ताहादेर मतो लोकेर पक्षे नितान्त हीन आचार अवलम्बन कराइ ये श्रेय इहाइ गोरा प्रचार करिते आसियाछे।

पल्लीर मध्ये विचरण करिया गोरा इहाओ देखियाछे, मुसलमानदेर मध्ये सेइ जिनिसटि आछे याहा अवलम्बन करिया ताहादिगके एक करिया दाँड़ करानो याय। गोरा लक्ष्य करिया देखियाछे, ग्रामे कोनो आपदविपद हइले मुसलमानेरा येमन निविड़भावे परस्परेर पार्श्वे आसिया समवेत हय हिन्दुरा एमन हय ना। गोरा बार बार चिन्ता करिया देखियाछे, एइ दुइ निकटतम प्रतिवेशी समाजेर मध्ये एतबड़ो प्रभेद केन हइल। ये-उत्तरटि ताहार मने उदित हय से-उत्तरटि किछुतेइ ताहार मानिते इच्छा हय ना। ए कथा स्वीकार करिते ताहार समस्त हृदय व्यथित हइया उठिते लागिल ये, धर्मेर द्वारा मुसलमान एक, केवल आचारेर द्वारा नहे। एक दिके येमन आचारेर बन्धन ताहादेर समस्त कर्मके अनर्थक बाँधिया राखे नाइ, अन्य दिके तेमनि धर्मेर बन्धन ताहादेर मध्ये एकान्त घनिष्ठ। ताहारा सकले मिलिया एमन एकटि जिनिसके ग्रहण करियाछे याहा 'ना'-मात्र नहे, याहा 'हाँ' ; याहा ऋणात्मक नहे, याहा धनात्मक ; याहार जन्य मानुष एक आह्वाने एक मुहूर्ते एकसङ्गे दाँड़ाइया अनायासे प्राणविसर्जन करिते पारे।

शिक्षित-समाजे गोरा यखन लिखियाछे, तर्क करियाछे, वक्तृता दियाछे, तखन से अन्यके बुझाइबार जन्य, अन्यके निजेर पथे आनिबार जन्य स्वभावतइ निजेर कथागुलिके कल्पनार द्वारा मनोहर वर्णे रञ्जित करियाछे, याहा स्थूल ताहाके सूक्ष्म व्याख्यार द्वारा आवृत करियाछे, याहा अनावश्यक भग्नावशेषमात्र ताहाकेओ भावेर चन्द्रालोके मोहमय छबिर मतो करिया देखाइयाछे। देशेर एकदल लोक देशेर प्रति विमुख बलियाइ, देशेर समस्तइ ताहारा मन्द देखे बलियाइ, स्वदेशेर प्रति प्रबल अनुराग-वशत गोरा एइ ममत्वविहीन दृष्टिपातेर अपमान हइते बाँचाइबार जन्य स्वदेशेर समस्तकेइ अत्युज्ज्वल भावेर आवरणे ढाकिया राखिते अहोरात्र चेष्टा करियाछे। इहाइ गोरार अभ्यस्त हइया गियाछिल। सबइ भालो, याहाके दोष बलितेछ ताहा कोनो एकभावे गुण, इहा ये गोरा केवल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उकिलेर मतो प्रमाण करित ताहा नहे, इहाइ से समस्त मन दिया विश्वास करित। नितान्त असम्भव स्थानेओ एइ विश्वासके स्पर्धार सहित जयपताकार मतो दृढ़ मुष्टिते समस्त परिहासपरायण शत्रुपक्षेर सम्मुखे से एका खाड़ा करिया दाँड़ाइयाछे। ताहार केवल एकटिमात्र कथा छिल, स्वेदेशेर प्रति स्वदेशवासीर श्रद्धा से फिराइया आनिबे, ताहार परे अन्य काज।

किन्तु यखन से पल्लीर मध्ये प्रवेश करे तखन तो ताहार सम्मुखे कोनो श्रोता थाके ना, तखन तो ताहार प्रमाण करिबार किछुइ नाइ, अवज्ञा ओ विद्वेषके नत करिया दिबार जन्य ताहार समस्त विरुद्ध शक्तिके जाग्रत करिया तुलिबार कोनो प्रयोजन थाके ना—एइजन्य सेखाने सत्यके से कोनोप्रकार आवरणेर भितर दिया देखे ना। देशेर प्रति ताहार अनुरागेर प्रबलताइ ताहार सत्यदृष्टिके असामान्यरूपे तीक्ष्ण करिया देय।

६८

गाये तसरेर चायना कोट, कोमरे एकटा चादर जड़ानो, हाते एकटा क्याम्बिसेर ब्याग—स्वयं कैलास आसिया हरिमोहिनीके प्रणाम करिल। ताहार वयस पँयत्रिशेर काछाकाछि हइबे, बेंटेखाटो आँटसाँट मजबुत गोछेर चेहारा, कामानो गोंपदाड़ि किछुदिन क्षौरकर्मेर अभावे कुशाग्रेर न्याय अंकुरित हइया उठियाछे।

अनेक दिन परे श्वशुरबाड़िर आत्मीयके देखिया आनन्दित हइया हरिमोहिनी बलिया उठिलेन, "ए की, ठाकुरपो ये! बोसो, बोसो।"

बलिया ताड़ाताड़ि एकखानि मादुर पातिया दिलेन। जिज्ञासा करिलेन, "हात-पा धोबे?"

कैलास कहिल, "ना, दरकार नेइ। ता, शरीर तो बेश भालोइ देखा याच्छे।"

शरीर भालो थाकाटाके एकटा अपवाद ज्ञान करिया हरिमोहिनी कहिलेन, "भालो आर कइ आछे।"

बलिया नानाप्रकार व्याधिर तालिका दिलेन, ओ कहिलेन, "ता, पोड़ा शरीर गेलेइ ये बाँचि, मरण तो हय ना।"

जीवनेर प्रति एइरूप उपेक्षाय कैलास आपत्ति प्रकाश करिल एवं यदिच दादा नाइ तथापि हरिमोहिनी थाकाते ताहादेर ये एकटा मस्त भरसा आछे ताहारइ प्रमाणस्वरूपे कहिल, "एइ देखो-ना केन, तुमि आछ बलेइ कलकाताय आसा हल—तबु एकटा दाँड़ाबार जायगा पाओया गेल।"

आत्मीयस्वजनेर ओ ग्रामवासीदेर समस्त संवाद आद्योपान्त विवृत करिया कैलास हठात् चारि दिके चाहिया जिज्ञासा करिल, "ए बाड़िटा बुझि तारइ?"

हरिमोहिनी कहिलेन, "हाँ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैलास कहिल, "पाका बाड़ि देखछि।"

हरिमोहिनी ताहार उत्साहके उद्दीपित करिया कहिलेन, "पाका बइ कि! समस्तइ पाका।"

घरेर कड़िगुला बेश मजबुत शालेर, एवं दरजा-जानलागुलो आम काठेर नय, इहाओ से लक्ष्य करिया देखिल। बाड़िर देयाल देड़खाना इँटेर गाँथनि कि दुइखाना इँटेर ताहाओ ताहार दृष्टि एड़ाइल ना। उपरे नीचे सर्वसमेत कयटि घर ताहाओ से प्रश्न करिया जानिया लइल। मोटेर उपर जिनिसटा ताहार काछे बेश सन्तोषजनक बलियाइ बोध हइल। बाड़ि तैरि करिते कत खरच पड़ियाछे ताहा आन्दाज करा ताहार पक्षे शक्त; कारण, ए-सकल माल-मसलार दर ताहार ठिक जाना छिल ना—चिन्ता करिया, पायेर उपर पा नाड़िते नाड़िते मने मने कहिल, 'किछु ना होक दश-पनेरो हाजार टाका तो हबेइ।' मुखे एकटु कम करिया बलिल, "की बल बउठाकरुन, सात-आट हाजार टाका हते पारे।"

हरिमोहिनी कैलासेर ग्राम्यताय विस्मय प्रकाश करिया कहिलेन, "बल की ठाकुरपो, सात-आट हाजार टाका की! बिश हाजार टाकार एक पयसा कम हबे ना।"

कैलास अत्यन्त मनोयोगेर सहित चारि दिकेर जिनिसपत्र नीरवे निरीक्षण करिते लागिल। एखनइ सम्मतिसूचक एकटा माथा नाड़िलेइ एइ शाल काठेर कड़िबरगा ओ सेगुन काठेर जानला-दरजा समेत पाका इमारतटिर एकेश्वर प्रभु से हइते पारे, एइ कथा चिन्ता करिया से खुब एकटा परितृप्ति बोध करिल। जिज्ञासा करिल, "सब तो हल, किन्तु मेयेटि?"

हरिमोहिनी ताड़াताड़ि कहिलेन, "तार पिसिर बाड़िते हठात् तार निमन्त्रण हयेछे ताइ गेछे, दु-चार दिन देरि हते पारे।"

कैलास कहिल, "ता हले देखार की हबे। आमार ये आबार एकटा मकद्दमा आछे, कालइ येते हबे।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "मकद्दमा तोमार एखन थाक्। एखानकार काज सारा ना हले तुमि येते पारछ ना।"

कैलास किछुक्षण चिन्ता करिया शेषकाले स्थिर करिल, 'नाहय मकद्दमाटा एक-तरफा डिग्रि हये फेंसे याबे। ता याक गे।' एखाने ये ताहार क्षतिपूरणेर आयोजन आछे ताहा आर-एकबार चारि दिक निरीक्षण करिया विचार करिया लइल। हठात् चोखे पड़िल, हरिमोहिनीर पूजार घरेर कोणे किछु जल जमिया आछे। ए घरे जल-निकाशेर कोनो प्रणाली छिल ना—अथच हरिमोहिनी सर्वदाइ जल दिया ए घर धोओयामोछा करेन, सेइजन्य किछु जल एकटा कोणे बाधियाइ थाके। कैलास व्यस्त हइया कहिल, "बउठाकुरुन, ओटा तो भालो हच्छे ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिमोहिनी कहिलेन, "केन, की हयेछे।"

कैलास कहिल, "ओइ ये ओखाने जल बसछे, ओ तो कोनोमते चलबे ना।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "की करब, ठाकुरपो।"

कैलास कहिल, "ना ना, से हच्छे ना। छात ये एकेबारे जखम हये याबे। ता बलछि बउठाकरुन, ए घरे तोमार जल-ढालाढालि चलबे ना।"

हरिमोहिनीके चुप करिया याइते हइल। कैलास तखन कन्याटिर रूप सम्बन्धे कौतूहल प्रकाश करिल।

हरिमोहिनी कहिलेन, "से तो देखलेइ टेर पाबे, ए-पर्यन्त बलते पारि तोमादेर घरे एमन बउ कखनो हय नि।"

कैलास कहिल, "बल की! आमादेर मेजबउ——"

हरिमोहिनी बलिया उठिलेन, "किसे आर किसे! तोमादेर मेजबउ तार काछे दाँड़ाते पारे!"

मेजबउकेइ ताहादेर बाड़िर सुरूपेर आदर्श बलाते हरिमोहिनी विशेष सन्तोष बोध करेन नाइ——"तोमरा ये याइ बल बापु, मेजबउयेर चेये आमार किन्तु न-बउके ढेर बेशि पछन्द हय।"

मेजबउ ओ न-बउयेर सौन्दर्येर तुलनाय कैलास किछुमात्र उत्साह बोध करिल ना। से मने मने कोनो एकटि अदृष्टपूर्व मूर्तिते पटल-चेरा चोखेर सङ्गे बाँशिर मतो नासिका योजना करिया आगुल्फविलम्बित केशराशिर मध्ये निजेर कल्पनाके दिग्भ्रान्त करिया तुलितेछिल।

हरिमोहिनी देखिलेन, ए पक्षेर अवस्थाटि सम्पूर्ण आशाजनक। एमन कि ताँहार बोध हइल, कन्यापक्षे ये-सकल गुरुतर सामाजिक त्रुटि आछे ताहाओ दुस्तर विघ्न बलिया गण्य ना हइते पारे।

६९

गोरा आजकाल सकालेइ बाड़ि हइते बाहिर हइया याय, विनय ताहा जानित, एइजन्य अन्धकार थाकितेइ सोमवार दिन प्रत्युषे से ताहार बाड़िते गिया उपस्थित हइल; एकेबारे उपरे उठिया ताहार शयनगृहे गेल। सेखाने गोराके देखिते ना पाइया चाकरेर काछे सन्धान लइया जानिल, से ठाकुरघरे आछे। इहाते से मने मने किछु आश्चर्य हइल। ठाकुरघरेर द्वारेर काछे आसिया देखिल, गोरा पूजार भावे बसिया आछे; एकटि गरदेर धुति परा, गाये एकटि गरदेर चादर, किन्तु ताहार विपुल शुभ्रदेहेर अधिकांशइ अनावृत। विनय गोराके पूजा करिते देखिया आरओ आश्चर्य हइया गेल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जुतार शब्द पाइया गोरा पिछन फिरिया देखिल ; विनयके देखिया गोरा उठिया पड़िल एवं व्यस्त हइया कहिल, "ए घरे एसो ना।"

विनय कहिल, "भय नेइ, आमि याब ना। तोमार काछेइ आमि एसेछिलुम।"

गोरा तखन बाहिर हइया कापड़ छाड़िया तेतलार घरे विनयके लइया बसिल।

विनय कहिल, "भाइ गोरा, आज सोमवार।"

गोरा कहिल, "निश्चयइ सोमवार—पाँजिर भुल हतेओ पारे, किन्तु आजकेर दिन सम्बन्धे तोमार भुल हबे ना। अन्तत आज मङ्गलवार नय, सेटा ठिक।"

विनय कहिल, "तुमि हयतो याबे ना, जानि—किन्तु आजकेर दिने तोमाके एकबार ना बले ए काजे आमि प्रवृत्त हते पारब ना। ताइ आज भोरे उठेइ प्रथम तोमार काछे एसेछि।"

गोरा कोनो कथा ना बलिया स्थिर हइया बसिया रहिल।

विनय कहिल, "ता हले आमार विवाहेर सभाय येते पारबे ना, ए कथा निश्चय स्थिर ?"

गोरा कहिल, "ना विनय, आमि येते पारब ना।"

विनय चुप करिया रहिल। गोरा हृदयेर वेदना सम्पूर्ण गोपन करिया हासिया कहिल, "आमि नाइबा गेलुम, ताते की। तोमारइ तो जित हयेछे। तुमि तो माके टेने निये गेछ। एत चेष्टा करलुम, ताँके तो किछुते धरे राखते पारलुम ना। शेषे आमार माके नियेओ तोमार काछे आमार हार मानते हल। विनय, एके एके 'सब लाल हो जायगा' नाकि! आमार मानचित्रटाते केवल आमिइ एकला एसे ठेकब!"

विनय कहिल, "भाइ, आमाके दोष दियो ना किन्तु। आमि ताँके खुब जोर करेइ बलेछिलुम—मा, आमार बियेते तुमि किछुतेइ येते पाबे ना। मा बललेन, 'देख, विनु, तोर बियेते यारा याबे ना तारा तोर निमन्त्रण पेलेओ याबे ना, आर यारा याबे तादेर तुइ माना करलेओ याबे—सेइजन्येइ तोके बलि, तुइ काउके निमन्त्रणओ करिस ने, मानाओ करिस ने, चुप करे थाक्।' गोरा, तुमि कि आमार काछे हार मेनेछ। तोमार मार काछे तोमार हार, सहस्रवार हार। अमन मा कि आर आछे।"

गोरा यदिच आनन्दमयीके बद्ध करिवार जन्य सम्पूर्ण चेष्टा करियाछिल, तथापि तिनि ये ताहार कोनो बाधा ना मानिया, ताहार क्रोध ओ कष्टके गण्य ना करिया, विनयेर विवाहे चलिया गेलेन, इहाते गोरा ताहार अन्तरतर हृदयेर मध्ये वेदना बोध करे नाइ, वरञ्च एकटा आनन्द लाभ करियाछिल। विनय ताहार मातार अपरिमेय स्नेहेर ये अंश पाइयाछिल, गोरार सहित विनयेर यत बड़ो विच्छेदइ हउक, सेइ गभीर स्नेहसुधार अंश हइते ताहाके किछुतेइ वञ्चित करिते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पारिबे ना, इहा निश्चय जानिया गोरार मनेर भितरे एकटा येन तृप्ति ओ शान्ति जन्मिल। आर-सब दिकेइ विनयेर काछ हइते से बहु दूरे याइते पारे, किन्तु एइ अक्षय मातृस्नेहेर एक बन्धने अति निगूढ़रूपे एइ दुइ चिरबन्धु चिरदिनइ परस्परेर निकटतम हइया थाकिबे।

विनय कहिल, "भाइ, आमि तबे उठि। नितान्त ना येते पार येयो ना, किन्तु मनेर मध्ये अप्रसन्नता रेखो ना, गोरा। एइ मिलने आमार जीवन ये कत बड़ो एकटा सार्थकता लाभ करेछे, ता यदि मनेर मध्ये अनुभव करते पार ता हले कखनो तुमि आमादेर एइ विवाहके तोमार सौहृद्य थेके निर्वासित करते पारबे ना ; से आमि तोमाके जोर करेइ बलछि।"

एइ बलिया विनय आसन हइते उठिया पड़िल। गोरा कहिल, "विनय, बोसो। तोमादेर लग्न तो सेइ रात्रे, एखन थेकेइ एत ताड़ा किसेर।"

विनय गोरार एइ अप्रत्याशित सस्नेह अनुरोधे विगलितचित्ते तत्क्षणात् बसिया पड़िल।

तार पर अनेक दिन परे आज एइ भोरवेलाय दुइ जने पूर्वकालेर मतो विश्रम्भालापे प्रवृत्त हइल। विनयेर हृदयवीणाय आजकाल ये-तारटि पञ्चम सुरे बाँधा छिल, गोरा सेइ तारेइ आघात करिल। विनयेर कथा आर फुराइते चाहिल ना। कत नितान्त छोटो छोटो घटना, याहाके सादा कथाय लिखिते गेले अकिञ्चित्कर, एमन कि हास्यकर बलिया बोध हइबे, ताहारइ इतिहास विनयेर मुखे येन गानेर तानेर मतो बारम्बार नव नव माधुर्ये उच्छ्वसित हइया उठिते लागिल। विनयेर हृदयक्षेत्रे आजकाल ये एकटि आश्चर्य लीला चलितेछे, ताहारइ समस्त अपरूप रसवैचित्र्य विनय आपनार निपुण भाषाय अति सूक्ष्म अथच गभीरभावे हृदयंगम करिया वर्णना करिते लागिल। जीवनेर ए की अपूर्व अभिज्ञता। विनय ये अनिर्वचनीय पदार्थटिके हृदय पूर्ण करिया पाइयाछे, ए कि सकले पाय! इहाके ग्रहण करिबार शक्ति कि सकलेर आछे। संसारे साधारणत स्त्रीपुरुषेर ये मिलन देखा याय, विनय कहिल, ताहार मध्ये एइ उच्चतम सुरटि तो बाजिते शुना याय ना। विनय गोराके बार बार करिया कहिल, अन्य-सकलेर सङ्गे से येन ताहादेर तुलना ना करे। विनयेर मने हइतेछे, ठिक एमनटि आर-कखनो घटियाछे किना सन्देह। एमन यदि सचराचर घटिते पारित तबे वसन्तेर एक हाओयातेइ येमन समस्त वन नव नव पुष्पपल्लवे पुलकित हइया उठे, समस्त समाज तेमनि प्राणेर हिल्लोले चारि दिके चञ्चल हइया उठित। ताहा हइले लोके एमन करिया खाइया-दाइया, घुमाइया, दिव्य तैलचिक्कण हइया काटाइते पारित ना। ताहा हइले याहार मध्ये यत सौन्दर्य यत शक्ति आछे स्वभावतइ नाना वर्णे नाना आकारे दिके दिके उन्मीलित हइया उठित। ए ये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोनार काठि—इहार स्पर्शके उपेक्षा करिया असाड़ हइया के पड़िया थाकिते पारे। इहाते सामान्य लोककेओ ये असामान्य करिया तोले। सेइ प्रबल असामान्यतार स्वाद मानुष जीवने यदि एकबारओ पाय तबे जीवनेर सत्य परिचय से लाभ करे।

विनय कहिल, "गोरा, आमि तोमाके निश्चय बलितेछि, मानुषेर समस्त प्रकृतिके एक मुहूर्ते जाग्रत करिबार उपाय एइ प्रेम—ये कारणेइ हउक आमादेर मध्ये एइ प्रेमेर आविर्भाव दुर्बल, सेइ जन्यइ आमरा प्रत्येकेइ आमादेर सम्पूर्ण उपलब्धि हइते वञ्चित, आमादेर की आछे ताहा आमरा जानि ना, याहा गोपने आछे ताहाके प्रकाश करिते पारितेछि ना, याहा सञ्चित आछे ताहाके व्यय करा आमादेर असाध्य; सेइजन्यइ चारि दिके एमन निरानन्द, एमन निरानन्द। सेइजन्यइ आमादेर निजेर मध्ये ये कोनो माहात्म्य आछे, ताहा केवल तोमादेर मतो दुइ-एक जनेइ बोझे, साधारणेर चित्ते ताहार कोनो चेतना नाइ।'

महिम सशब्दे हाइ तुलिया बिछाना हइते उठिया यखन मुख धुइते गेलेन ताँहार पदशब्दे विनयेर उत्साहप्रवाह बन्ध हइया गेल; से गोरार काछे विदाय लइया चलिया गेल।

गोरा छातेर उपर दाँड़ाइया पूर्वदिकेर रक्तिम आकाशे चाहिया एकटि दीर्घनिश्वास फेलिल। अनेक क्षण धरिया छाते बेड़ाइल, आज ताहार आर ग्रामे याओया हइल ना।

आजकाल गोरा निजेर हृदयेर मध्ये ये एकटि आकांक्षा, ये एकटि पूर्णतार अभाव अनुभव करितेछे, कोनोमतेइ कोनो काज दियाइ ताहा से पूरण करिते पारितेछे ना। शुधु से निजे नहे, ताहार समस्त काजओ येन ऊर्ध्वेर दिके हात बाड़ाइया बलितेछे, 'एकटा आलो चाइ, उज्ज्वल आलो, सुन्दर आलो।' येन आर-समस्त उपकरण प्रस्तुत आछे, येन हीरामानिक सोनारुपा दुर्मूल्य नय, येन लौहवज्र वर्मचर्म दुर्लभ नय, केवल आशा ओ सान्त्वनाय उद्भासित स्निग्धसुन्दर अरुणरागमण्डित आलो कोथाय! याहा आछे ताहाके आरओ बाड़ाइया तुलिबार जन्य कोनो प्रयासेर प्रयोजन नाइ, किन्तु ताहाके समुज्ज्वल करिया लावण्यमय करिया प्रकाशित करिया तुलिबार ये अपेक्षा आछे।

विनय यखन बलिल, कोनो कोनो माहेन्द्रक्षणे नरनारीर प्रेमके आश्रय करिया एकटि अनिर्वचनीय असामान्यता उद्भासित हइया उठे, तखन गोरा पूर्वेर न्याय से-कथाके हासिया उड़ाइया दिते पारिल ना। गोरा मने मने स्वीकार करिल, ताहा सामान्य मिलन नहे, ताहा परिपूर्णता, ताहार संस्रवे सकल जिनिसेरइ मूल्य बाड़िया याय; ताहा कल्पनाके देह दान करे ओ देहके प्राणे पूर्ण करिया तोले; ताहा प्राणेर मध्ये प्राणन ओ मनेर मध्य मननके केवल ये द्विगुणित करे ताहा नहे, ताहाके एकटि नूतन रसे अभिषिक्त करिया देय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनयेर सङ्गे आज सामाजिक विच्छेदेर दिने विनयेर हृदय गोरार हृदयेर 'परे एकटि अखण्ड एकतान संगीत बाजाइया दिया गेल। विनय चलिया गेल, वेला बाड़िते लागिल, किन्तु से-संगीत कोनो मतेइ थामिते चाहिल ना। समुद्र-गामिनी दुइ नदी एकसङ्गे मिलिले येमन हय, तेमनि विनयेर प्रेमेर धारा आज गोरार प्रेमेर उपरे आसिया पड़िया तरङ्गेर द्वारा तरङ्गके मुखरित करिते लागिल। गोरा याहाके कोनोप्रकारे बाधा दिया, आड़ाल दिया, क्षीण करिया, निजेर अगोचर राखिबार चेष्टा करितेछिल, ताहाइ आज कूल छापाइया आपनाके सुस्पष्ट ओ प्रबल मूर्तिते व्यक्त करिया दिल। ताहाके अवैध बलिया निन्दा करिबे, ताहाके तुच्छ बलिया अवज्ञा करिबे, एमन शक्ति आज गोरार रहिल ना।

समस्त दिन एमन करिया काटिल; अवशेषे अपराह्न यखन सायाह्ने विलीन हइते चलियाछे तखन गोरा एकखाना चादर पाड़िया लइया काँधेर उपर फेलिया पथेर मध्ये बाहिर हइया पड़िल। गोरा कहिल, 'ये आमारइ ताहाके आमि लइब। नहिले पृथिवीते आमि असम्पूर्ण, आमि व्यर्थ हइया याइब।'

समस्त पृथिवीर माझखाने सुचरिता ताहारइ आह्वानेर जन्य अपेक्षा करिया आछे, इहाते गोरार मने लेशमात्र संशय रहिल ना। आजइ एइ सन्ध्यातेइ एइ अपेक्षाके से पूर्ण करिबे।

जनाकीर्ण कलिकातार रास्ता दिया गोरा वेगे चलिया गेल; केहइ येन, किछुतेइ येन ताहाके स्पर्श करिल ना। ताहार मन ताहार शरीरके अतिक्रम करिया एकाग्र हइया कोथाय चलिया गियाछे।

सुचरितार बाड़िर सम्मुखे आसिया गोरा येन हठात् सचेतन हइया थामिया दाँड़ाइल। एतदिन आसियाछे कखनो द्वार बन्ध देखे नाइ, आज देखिल दरजा खोला नहे। ठेलिया देखिल, भितर हइते बन्ध। दाँड़ाइया एकटु चिन्ता करिल; ताहार परे द्वारे आघात करिया दुइ-चारिवार शब्द करिल।

बेहारा द्वार खुलिया बाहिर हइया आसिल। से सन्ध्यार अस्पष्ट आलोके गोराके देखितेइ कोनो प्रश्नेर अपेक्षा ना करियाइ कहिल, दिदिठाकरुन बाड़िते नाइ।

कोथाय ?

तिनि ललितादिदिर विवाहेर आयोजने कयदिन हइते अन्यत्र व्यापृत रहियाछेन।

क्षणकालेर जन्य गोरा मने करिल, से विनयेर विवाहसभातेइ याइबे। एमन समय बाड़िर भितर हइते एकटि अपरिचित बाबु बाहिर हइया कहिल, "की महाशय, की चान ?"

गोरा ताहाके आपादमस्तक निरीक्षण करिया कहिल, "ना, किछु चाइ ने।"

कैलास कहिल, "आसुन-ना एकटु बसबेन, एकटु तामाक इच्छा करुन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सङ्गीर अभावे कैलासेर प्राण बाहिर हइया याइतेछे। ये होक एकजन काहाकेओ घरेर मध्ये टानिया लइया गल्प जमाइते पारिले से बाँचे। दिनेर वेलाय हुँका हाते गलिर मोड़ेर काछे दाँड़ाइया रास्तार लोक-चलाचल देखिया ताहार समय एकरकम काटिया याय किन्तु सन्ध्यार समय घरेर मध्ये ताहार प्राण हाँपाइया उठे। हरिमोहिनीर सङ्गे ताहार याहा किछु आलोचना करिबार छिल ताहा सम्पूर्ण निःशेष हइया गेछे—हरिमोहिनीर आलाप करिबार शक्तिओ अत्यन्त संकीर्ण। एइजन्य कैलास नीचेर तलाय बाहिर-दरजार पाशे एकटि छोटो घरे तक्तपोशे हुँका लइया बसिया माझे माझे बेहाराटाके डाकिया ताहार सङ्गे गल्प करिया समय यापन करितेछे।

गोरा कहिल, "ना, आमि एखन बसते पारछि ने।"

कैलासेर पुनश्च अनुरोधेर सूत्रपातेइ, चोखेर पलक ना फेलितेइ, से एकेबारे गलि पार हइया गेल।

गोरार एकटि संस्कार ताहार मनेर मध्ये दृढ़ हइया छिल ये ताहार जीवनेर अधिकांश घटनाइ आकस्मिक नहे, अथवा केवलमात्र ताहार निजेर व्यक्तिगत इच्छार द्वारा साधित हय ना। से ताहार स्वदेश-विधातार एकटि-कोनो अभिप्राय सिद्ध करिबार जन्यइ जन्मग्रहण करियाछे।

एइजन्य गोरा निजेर जीवनेर छोटो छोटो घटनारओ एकटा विशेष अर्थ बुझिते चेष्टा करित। आज यखन से आपनार मनेर एत बड़ो एकटा प्रबल आकांक्षावेगेर मुखे हठात् आसिया सुचरितार दरजा बन्ध देखिल एवं दरजा खुलिया यखन शुनिल सुचरिता नाइ, तखन से इहाके एकटि अभिप्रायपूर्ण घटना बलियाइ ग्रहण करिल। ताहाके यिनि चालना करितेछेन तिनि गोराके आज एमनि करिया निषेध जानाइलेन। ए जीवने सुचरितार द्वार ताहार पक्षे रुद्ध, सुचरिता ताहार पक्षे नाइ। गोरार मतो मानुषके निजेर इच्छा लइया मुग्ध हइले चलिबे ना, ताहार निजेर सुखदुःख नाइ। से भारतवर्षेर ब्राह्मण, भारतवर्षेर हइया देवतार आराधना ताहाके करिते हइबे, भारतवर्षेर हइया तपस्या ताहारइ काज। आसक्ति-अनुरक्ति ताहार नहे। गोरा मने मने कहिल, 'विधाता आसक्तिर रूपटा आमार काछे स्पष्ट करिया देखाइया दिलेन ; देखाइलेन ताहा शुभ्र नहे, शान्त नहे, ताहा मदेर मतो रक्तवर्ण ओ मदेर मतो तीव्र ; ताहा बुद्धिके स्थिर थाकिते देय ना, ताहा एकके आर करिया देखाय—आमि संन्यासी, आमार साधनार मध्ये ताहार स्थान नाइ।'

७०

अनेक दिन पीड़नेर पर एकयेक दिन आनन्दमयीर काछे सुचरिता येमन आराम पाइल एमन से कोनोदिन पाय नाइ। आनन्दमयी एमनि सहजे ताहाके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एत काछे टानिया लइयाछेन ये, कोनोदिन ये तिनि ताहार अपरिचिता वा दूर छिलेन ताहा सुचरिता मनेओ करिते पारे ना। तिनि केमन एकरकम करिया सुचरितार समस्त मनटा येन बुझिया लइयाछेन एवं कोनो कथा ना कहियाओ तिनि सुचरिताके येन एकटा गभीर सान्त्वना दान करितेछेन। 'मा' शब्दटाके सुचरिता ताहार समस्त हृदय दिया एमन करिया आर कखनो उच्चारण करे नाइ। कोनो प्रयोजन ना थाकिलेओ से आनन्दमयीके केवलमात्र 'मा' बलिया डाकिया लइबार जन्य नाना उपलक्ष्य सृजन करिया ताँहाके डाकित। ललितार विवाहेर समस्त कर्म यखन सम्पन्न हइया गेल तखन क्लान्तदेहे बिछानाय शुइया पड़िया ताहार केवल एइ कथाइ मने आसिते लागिल, एइबार आनन्दमयीके छाड़िया से केमन करिया चलिया याइबे! से आपना-आपनि बलिते लागिल, 'मा, मा, मा!' बलिते बलिते ताहार हृदय स्फीत हइया उठिया दुइ चक्षु दिया अश्रु झरिते लागिल। एमन समय हठात् देखिल, आनन्दमयी ताहार मशारि उद्घाटन करिया बिछानार मध्ये प्रवेश करिलेन। तिनि ताहार गाये हात बुलाइया कहिलेन, "आमाके डाकछिले कि।"

तखन सुचरितार चेतना हइल, से 'मा मा' बलितेछिल। सुचरिता कोनो उत्तर करिते पारिल ना, आनन्दमयीर कोले मुख चापिया काँदिते लागिल। आनन्दमयी कोनो कथा ना बलिया धीरे धीरे ताहार गाये हात बुलाइया दिते लागिलेन। से-रात्रे तिनि ताहार काछेइ शयन करिलेन।

विनयेर विवाह हइया याइतेइ तखनइ आनन्दमयी विदाय लइते पारिलेन ना। तिनि बलिलेन, 'इहारा दुइ जनेइ आनाड़ि—इहादेर घरकन्ना एकटुखानि गुछाइया ना दिया आमि याइ केमन करिया।'

सुचरिता कहिल, "मा, तबे ए क'दिन आमिओ तोमार सङ्गे थाकब।"

ललिताओ उत्साहित हइया कहिल, "हाँ मा, सुचिदिदिओ आमादेर सङ्गे किछुदिन थाक्।"

सतीश एइ परामर्श शुनिते पाइया छुटिया आसिया सुचरितार गला धरिया लाफाइते लाफाइते कहिल, "हाँ दिदि, आमिओ तोमादेर सङ्गे थाकब।"

सुचरिता कहिल, "तोर ये पड़ा आछे, बक्तियार।"

सतीश कहिल, "विनयबाबु आमाके पड़ाबेन।"

सुचरिता कहिल, "विनयबाबु एखन तोर मास्टारि करते पारबेन ना।"

विनय पाशेर घर हइते बलिया उठिल, "खुब पारब। एक दिने एमनि कि अशक्त हये पड़ेछि ता तो बुझते पारछि ने। अनेक रात जेगे लेखापड़ा येटुकु शिखेछिलुम ताओ ये एक रात्रे समस्त भुले बसे आछि एमन तो बोध हय ना।"

आनन्दमयी सुचरिताके कहिलेन, "तोमार मासि कि राजि हबेन।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कहिल, "आमि ताँके एकटा चिठि लिखछि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "तुमि लिखो ना। आमिइ लिखब।"

आनन्दमयी जानितेन, सुचरिता यदि थाकिते इच्छा करे तबे हरिमोहिनीर ताहाते अभिमान हइबे। किन्तु तिनि अनुरोध जानाइले राग यदि करेन तबे ताँहार उपरेइ करिबेन—ताहाते क्षति नाइ।

आनन्दमयी पत्रे जानाइलेन, ललितार नूतन घरकन्ना ठिकठाक करिया दिबार जन्य किछुकाल ताँहाके विनयेर बाड़िते थाकिते हइबे। सुचरिताओ यदि ए-कयदिन ताँहार सङ्गे थाकिते अनुमति पाय तबे ताँहार विशेष सहायता हय।

आनन्दमयीर पत्रे हरिमोहिनी केवल य क्रुद्ध हइलेन ताहा नहे, ताँहार मने विशेष एकटा सन्देह उपस्थित हइल। तिनि भाविलेन, छेलेके तिनि बाड़ि आसिते बाधा दियाछेन, एबार सुचरिताके फाँदे फेलिबार जन्य मा कौशलजाल विस्तार करितेछे! तिनि स्पष्टइ देखिते पाइलेन, इहाते मातापुत्रेर परामर्श आछे। आनन्दमयीर भावगतिक देखिया गोड़ातेइ ये ताँहार भालो लागे नाइ, से कथाओ तिनि स्मरण करिलेन।

आर किछुमात्र विलम्ब ना करिया यत शीघ्र सम्भव सुचरिताके एकबार विख्यात रायगोष्ठीर अन्तर्गत करिया निरापद करिया तुलिते पारिले तिनि बाँचेन। कैलासकेइ वा एमन करिया कतदिन बसाइया राखा याय। से बेचारा ये अहोरात्र तामाक टानिया टानिया बाड़िर देयालगुला कालि करिबार जो करिल।

येदिन चिठि पाइलेन, हरिमोहिनी ताहार परदिन सकालेइ पाल्किते करिया बेहाराके सङ्गे लइया स्वयं विनयेर बासाय आसिया उपस्थित हइलेन। तखन नीचेर घरे सुचरिता ललिता ओ आनन्दमयी रान्नाबान्नार आयोजने बसिया गेछेन। उपरेर घरे बानान समेत इंराजि शब्द ओ ताहार बांला प्रतिशब्द मुखस्थ करार उपलक्षे सतीशेर कण्ठस्वरे समस्त पाड़ा सचकित हइया उठियाछे। बाड़िते ताहार गलार एत जोर अनुभव करा याइत ना—किन्तु एखाने से ये ताहार पड़ाशुनाय किछुमात्र अवहेला करितेछे ना इहाइ निःसंशये प्रमाण करिबार जन्य ताहाके अनेकटा उद्यम ताहार कण्ठस्वरे अनावश्यक प्रयोग करिते हइतेछे।

हरिमोहिनीके आनन्दमयी विशेष समादरेर सहित अभ्यर्थना करिलेन। से-समस्त शिष्टाचारेर प्रति मनोयोग ना करिया तिनि एकेबारेइ कहिलेन, "आमि राधारानीके निते एसेछि।"

आनन्दमयी कहिलेन, "ता, बेश तो, निये याबे, एकटु बोसो।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ना, आमार पूजा-आर्चा समस्तइ पड़े रयेछे, आमार आह्निक सारा हय नि, आमि एखन एखाने बसते पारब ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुचरिता कोनो कथा ना कहिया अलाबुच्छेदने नियुक्त छिल। हरिमोहिनी ताहाकेइ सम्बोधन करिया कहिलेन, "शुनछ? वेला हये गेल।"

ललिता एवं आनन्दमयी नीरवे बसिया रहिलेन। सुचरिता ताहार काज राखिया उठिया पड़िल एवं कहिल, "मासि, एसो।"

हरिमोहिनी पाल्किर अभिमुखे याइबार उपक्रम करिले सुचरिता ताँहार हात धरिया कहिल, "एसो, एकबार ए घरे एसो।"

घरेर मध्ये लइया गिया सुचरिता दृढ़स्वरे कहिल, "तुमि यखन आमाके निते एसेछ तखन सकल लोकेर सामनेइ तोमाके अमनि फिरिये देब ना; आमि तोमार सङ्गेइ याच्छि, किन्तु आज दुपुरवेलाइ आमि एखाने आबार फिरे आसब।"

हरिमोहिनी विरक्त हइया कहिलेन, "ए आबार केमन कथा। ता हले बलो-ना केन, एइखानेइ चिरकाल थाकबे।"

सुचरिता कहिल, "चिरकाल तो थाकते पाब ना। सेइजन्यइ यतदिन ओंर काछे थाकते पाइ, आमि ओंके छाड़ब ना।"

एइ कथाय हरिमोहिनीर गा ज्वलिया गेल, किन्तु एखन कोनो कथा बला तिनि सुयुक्ति बलिया बोध करिलेन ना।

सुचरिता आनन्दमयीर काछे आसिया हास्यमुखे कहिल, "मा, आमि तबे एकबार बाड़ि हये आसि।"

आनन्दमयी कोनो प्रश्न ना करिया कहिलेन, "ता, एसो मा।"

सुचरिता ललितार काने काने कहिल, "आज आबार दुपुरवेला आमि आसब।"

पाल्किर सामने दाँड़ाइया सुचरिता कहिल, "सतीश?"

हरिमोहिनी कहिलेन, "सतीश थाक्-ना।"

सतीश बाड़ि गेले विघ्नस्वरूप हइया उठिते पारे, एइ मने करिया सतीशेर दूरे अवस्थानइ तिनि सुयोग बलिया गण्य करिलेन।

दुइ जने पाल्किते चड़िले पर हरिमोहिनी भूमिका फाँदिबार चेष्टा करिलेन। कहिलेन, "ललितार तो बिये हये गेल। ता बेश हल, एकटि मेयेर जन्ये तो परेशबाबु निश्चिन्त हलेन।"

एइ बलिया, घरेर मध्ये अविवाहित मेये ये कत बड़ो एकटा दाय, अभिभावक-गणेर पक्षे ये किरूप दुःसह उत्कण्ठार कारण ताहा प्रकाश करिलेन।

"की बलब तोमाके, आमार आर अन्य भावना नेइ। भगवानेर नाम करते करते ओइ चिन्ताइ मने एसे पड़े। सत्य बलछि, ठाकुर-सेवाय आमि आगेकार मतो तेमन मन दितेइ पारि ने। आमि बलि, गोपीवल्लभ, सब केड़ेकुड़े निये ए आबार आमाके की नूतन फाँदे जड़ाले।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिमोहिनीर ए ये केवलमात्र सांसारिक उत्कण्ठा ताहा नहे, इहाते ताँहार मुक्तिपथेर विघ्न हइतेछे। तबु एत बड़ो गुरुतर संकटेर कथा शुनियाओ सुचरिता चुप करिया रहिल ; ताहार ठिक मनेर भावटि की हरिमोहिनी ताहा बुझिते पारिलेन ना। मौन सम्मतिलक्षण बलिया ये एकटि बाँधा कथा आछे सेइटेकेइ तिनि निजेर अनुकूले ग्रहण करिलेन। ताँहार मने हइल, सुचरितार मन येन एकटु नरम हइयाछे।

सुचरितार मतो मेयेर पक्षे हिन्दुसमाजे प्रवेशेर न्याय एत बड़ो दुरूह व्यापारके हरिमोहिनी नितान्तइ सहज करिया आनियाछेन, एरूप तिनि आभास दिलेन। एमन एकटि सुयोग एकेबारे आसन्न हइयाछे ये, बड़ो बड़ो कुलीनेर घरे निमन्त्रणे एक पङ्क्तिते आहारेर उपलक्ष्ये केह ताहाके टुँशब्द करिते साहस करिबे ना।

भूमिका एइ पर्यन्त अग्रसर हइतेइ पाल्कि बाड़िते आसिया पौंछिल। उभये द्वारेर काछे नामिया बाड़िते प्रवेश करिया उपरे याइबार समय सुचरिता देखिते पाइल, द्वारेर पाशेर घरे एकटि अपरिचित लोक बेहाराके दिया प्रबल करताड़नशब्द-सहयोगे तैल मर्दन करितेछे। से ताहाके देखिया कोनो संकोच मानिल ना, विशेष कौतूहलेर सहित ताहार प्रति दृष्टिपात करिल।

उपरे गिया हरिमोहिनी ताँहार देवरेर आगमन-संवाद सुचरिताके जानाइलेन। पूर्वेर भूमिकार सहित मिलाइया लइया सुचरिता एइ घटनाटिर अर्थ ठिकमतोइ बुझिल। हरिमोहिनी ताहाके बुझाइबार चेष्टा करिलेन, बाड़िते अतिथि आसियाछे, एमन अवस्थाय ताहाके फेलिया आजइ मध्याह्ने चलिया याओया ताहार पक्षे भद्राचार हइबे ना।

सुचरिता खुब जोरेर सङ्गे घाड़ नाड़िया कहिल, "ना मासि, आमाके येतेइ हबे।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ता बेश तो, आजकेर दिनटा थेके तुमि काल येयो।"

सुचरिता कहिल, "आमि एखनइ स्नान करेइ बाबार ओखाने खेते याब, सेखान थेके ललितार बाड़ि याब।"

तखन हरिमोहिनी स्पष्ट करियाइ कहिलेन, "तोमाकेइ ये देखते एसेछे।"

सुचरिता मुख रक्तिम करिया कहिल, "आमाके देखे लाभ की !"

हरिमोहिनी कहिलेन, "शोनो एकबार! एखनकार दिने ना देखे कि ए-सब काज हबार जो आछे। से वरञ्च सेकाले चलत। तोमार मेसो शुभदृष्टिर पूर्वे आमाके देखेन नि।"

एइ बलियाइ एइ स्पष्ट इङ्गितेर उपरे ताड़ाताड़ि आरओ कतकगुला कथा चापाइया दिलेन। विवाहेर पूर्वे कन्या देखिबार समय ताँहार पितृगृहे सुविख्यात राय-परिवार हइते अनाथबन्धु-नामधारी ताँहादेर वंशेर पुरातन कर्मचारी ओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठाकुरदासी-नाम्नी प्रवीणा झि, दुइ जन पागड़ि-परा दण्डधारी दारोयानके लइया किरूपे कन्या देखिते आसियाछिल एवं सेदिन ताँहार अभिभावकदेर मन किरूप उद्‌विग्न हइया उठियाछिल एवं राय-वंशेर एइ-सकल अनुचरके आहारे ओ आदरे परितुष्ट करिबार जन्य सेदिन ताँहादेर बाड़िते किरूप व्यस्तता पड़िया गियाछिल, ताहा वर्णना करिया दीर्घनिश्वास फेलिलेन एवं कहिलेन, एखन दिनक्षण अन्य-रकम पड़ियाछे।

हरिमोहिनी कहिलेन, "विशेष किछुइ उत्पात नेइ, एकबार केवल पाँच मिनिटेर जन्ये देखे याबे।"

सुचरिता कहिल, "ना।"

से 'ना' एतइ प्रबल एवं स्पष्ट ये हरिमोहिनीके एकटु हटिते हइल। तिनि कहिलेन, "आच्छा बेश, ता नाइ हल। देखार तो कोनो दरकार नेइ, तबे कैलास आजकालकार छेले, लेखापड़ा शिखेछे, तोमादेरइ मतो ओ तो किछुइ माने ना, बले 'पात्री निजेर चक्षे देखब'। ता, तोमरा सबार सामनेइ बेरोओ ताइ बललुम, 'देखबे से आर बेशि कथा की, एकदिन देखा करिये देब।' ता, तोमार लज्जा हय तो देखा नाइ हल।"

एइ बलिया कैलास ये किरूप आश्चर्य लेखापड़ा करियाछे, से ये ताहार कलमेर एक आँचड़ मात्रे ताँहार ग्रामेर पोस्टमास्टारके किरूप विपन्न करियाछिल—निकटवर्ती चारि दिकेर ग्रामेर ये-काहारोइ मामला-मकद्दमा करिते हय, दरखास्त लिखिते हय, कैलासेर परामर्श व्यतीत ये काहारओ एक पा चलिबार जो नाइ, इहा तिनि विवृत करिया बलिलेन। आर उहार स्वभावचरित्रेर कथा बेशि करिया बलाइ बाहुल्य। ओर स्त्री मरार पर ओ तो किछुतेइ विवाह करिते चाय नाइ; आत्मीयस्वजन सकले मिलिया अत्यन्त बल प्रयोग कराते ओ केवल गुरुजनेर आदेश पालन करिते प्रवृत्त हइयाछे। उपस्थित प्रस्तावे सम्मत करिते हरिमोहिनीकेइ कि कम कष्ट पाइते हइयाछे। ओ कि कर्णपात करिते चाय। ओरा ये मस्त वंश। समाजे ओदेर ये भारि मान।

सुचरिता एइ मान खर्व करिते किछुतेइ स्वीकार करिल ना। कोनोमतेइ ना। से निजेर गौरव ओ स्वार्थेर प्रति दृक्‌पातमात्र करिल ना। एमन कि, हिन्दुसमाजे ताहार स्थान यदि नाओ हय तथापि से लेशमात्र विचलित हइबे ना, एइरूप ताहार भाव देखा गेल। कैलासके बहु चेष्टाय विवाहे राजि करानोते सुचरितार पक्षे अल्प सम्मानेर कारण हय नाइ, ए कथा से मूढ़ किछुतेइ उपलब्धि करिते पारिल ना; उलटिया से इहाके अपमानेर कारण बलिया गण्य करिया बसिल। आधुनिक कालेर एइ-समस्त विपरीत व्यापारे हरिमोहिनी सम्पूर्ण हतबुद्धि हइया गेलेन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तखन तिनि मनेर आक्रोशे बार बार गोरार प्रति इङ्गित करिया खोंचा दिते लागिलेन। गोरा यतइ निजेके हिन्दु बलिया बड़ाइ करुक-ना केन, समाजेर मध्ये उहार स्थान की। उहाके के माने। ओ यदि लोभे पड़िया ब्राह्मघरेर कोनो टाकाओयाला मेयेके विवाह करे, तबे समाजेर शासन हइते ओ परित्राण लाभ करिबे किसेर जोरे। तखन दशेर मुख बन्ध करिया दिबार जन्य टाका ये समस्त फुँकिया दिते हइबे। इत्यादि।

सुचरिता कहिल, "मासि, ए-सब कथा तुमि केन बलछ। तुमि जान ए-सब कथार कोनो मूल नेइ।"

हरिमोहिनी तखन बलिलेन, ताँहार ये-वयस हइयाछे से-वयसे कथा दिया ताँहाके भोलानो काहारओ पक्षे साध्य नहे। तिनि चोख-कान खुलियाइ आछेन; देखेन शोनेन बुझेन समस्तइ, केवल निःशब्दे अवाक हइया रहियाछेन। गोरा ये ताहार मातार सङ्गे परामर्श करिया सुचरिताके विवाह करिबार चेष्टा करितेछे, से-विवाहेर गूढ़ उद्देश्यओ ये महत् नहे, एवं रायगोष्ठीर सहयोगे यदि तिनि सुचरिताके रक्षा करिते ना पारेन तबे काले ये ताहाइ घटिबे, से-सम्बन्धे तिनि ताँहार निःसंशय विश्वास प्रकाश करिलेन।

सहिष्णुस्वभाव सुचरितार पक्षे असह्य हइया उठिल; से कहिल, "तुमि याँदेर कथा बलछ आमि ताँदेर भक्ति करि। ताँदेर सङ्गे आमार ये-सम्बन्ध से यखन तुमि कोनोमतेइ ठिकभावे बुझबे ना, तखन आमार आर-कोनो उपाय नेइ—आमि एखनइ एखान थेके चललुम, यखन तुमि शान्त हबे एवं बाड़िते तोमार सङ्गे एकला एसे वास करते पारब, तखन आमि फिरे आसब।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "गौरमोहनेर प्रतिइ यदि तोर मन नेइ, यदि तार सङ्गे तोर बिये हबेइ ना एमन कथा थाके, तबे एइ पात्रटि दोष करेछे की। तुमि तो आइबुड़ो थाकबे ना।"

सुचरिता कहिल, "केन थाकब ना। आमि विवाह करब ना।"

हरिमोहिनी चक्षु विस्फारित करिया कहिलेन, "बुड़ोवयस पर्यन्त एमनि—"

सुचरिता कहिल, "हाँ, मृत्यु पर्यन्त।"

७१

एइ आघाते गोरार मने एकटा परिवर्तन आसिल। सुचरितार द्वारा गोरार मन ये आक्रान्त हइयाछे, ताहार कारण से भाबिया देखिल—से इहादेर सङ्गे मिशियाछे, कखन निजेर अगोचरे से इहादेर सङ्गे निजेके जड़ित करिया फेलियाछे। येखाने निषेधेर सीमा टाना छिल सेइ सीमा गोरा दम्भभरे लङ्घन करियाछे। इहा आमादेर देशेर पद्धति नहे। प्रत्येके निजेर सीमा रक्षा करिते ना पारिले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से ये केवल जानिया एवं ना जानिया निजेरइ अनिष्ट करिया फेले ताहा नहे, अन्येरओ हित करिबार विशुद्ध शक्ति ताहार चलिया याय। संसर्गेर द्वारा नानाप्रकार हृदयवृत्ति प्रबल हइया उठिया ज्ञानके निष्ठाके शक्तिके आबिल करिया तुलिते थाके।

केवल ब्राह्मघरेर मेयेदेर सङ्गे मिशिते गियाइ से एइ सत्य आविष्कार करियाछे ताहा नहे। गोरा जनसाधारणेर सङ्गे ये मिलिते गियाछिल सेखानेओ एकटा येन आवर्तेर मध्ये पड़िया निजेके निजे हाराइबार उपक्रम करियाछिल। केनना, ताहार पदे पदे दया जन्मितेछिल, एइ दयार वशे से केवलइ भावितेछिल, एटा मन्द, एटा अन्याय, एटाके दूर करिया देओया उचित। किन्तु एइ दयावृत्तिइ कि भालो-मन्द-सुविचारेर क्षमताके विकृत करिया देय ना। दया करिबार झोंकटा आमादेर यतइ बाड़िया उठे निर्विकारभावे सत्यके देखिबार शक्ति आमादेर ततइ चलिया याय—प्रधूमित करुणार कालिमा माखाइया याहा नितान्त फिका ताहाके अत्यन्त गाढ़ करिया देखि।

गोरा कहिल, एइजन्यइ, याहार प्रति समग्रेर हितेर भार ताहार निर्लिप्त थाकिबार विधि आमादेर देशे चलिया आसियाछे। प्रजार सङ्गे एकेबारे घनिष्ठ-भावे मिशिले तबेइ ये प्रजापालन करा राजार पक्षे सम्भव हय, ए कथा सम्पूर्ण अमूलक। प्रजादेर सम्बन्धे राजार येरूप ज्ञानेर प्रयोजन संस्रवेर द्वारा ताहा कलुषित हय। एइ कारणे, प्रजारा निजेइ इच्छा करिया ताहादेर राजाके दूरत्वेर द्वारा वेष्टन करिया राखियाछे। राजा ताहादेर सहचर हइलेइ राजार प्रयोजन चलिया याइबे।

ब्राह्मणओ सेइरूप सुदूरस्थ, सेइरूप निर्लिप्त। ब्राह्मणके अनेकेर मङ्गल करिते हइबे, एइजन्यइ अनेकेर संसर्ग हइते ब्राह्मण वञ्चित।

गोरा कहिल, 'आमि भारतवर्षेर सेइ ब्राह्मण।' दश जनेर सङ्गे जड़ित हइया, व्यवसायेर पङ्के लुण्ठित हइया, अर्थेर प्रलोभने लुब्ध हइया, ये-ब्राह्मण शूद्रत्वेर फाँस गलाय बाँधिया उद्बन्धने मरितेछे, गोरा ताहादिगके ताहार स्वदेशेर सजीव पदार्थेर मध्ये गण्य करिल ना ; ताहादिगके शूद्रेर अधम करिया देखिल, कारण, शूद्र आपन शूद्रत्वेर द्वाराइ बाँचिया आछे, किन्तु इहारा ब्राह्मणत्वेर अभावे मृत, सुतरां इहारा अपवित्र। भारतवर्ष इहादेर जन्य आज एमन दीनभावे अशौच-यापन करितेछे।

गोरा निजेर मध्ये सेइ ब्राह्मणेर सञ्जीवन-मन्त्र साधना करिबे बलिया मनके आज प्रस्तुत करिल। कहिल, 'आमाके निरतिशय शुचि हइते हइबे। आमि सकलेर सङ्गे समान भूमिते दाँड़ाइया नाइ। बन्धुत्व आमार पक्षे प्रयोजनीय सामग्री नहे ; नारीर सङ्ग याहादेर पक्षे एकान्त उपादेय आमि सेइ सामान्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रेणीर मानुष नइ ; एवं देशेर इतर साधारणेर घनिष्ठ सहवास आमार पक्षे सम्पूर्ण वर्जनीय। पृथिवी सुदूर आकाशेर दिके वृष्टिर जन्य येमन ताकाइया आछे, ब्राह्मणेर दिके इहारा तेमनि करिया ताकाइया आछे—आमि काछे आसिया पड़िले इहादिगके बाँचाइबे के।'

इतिपूर्वे देवपूजाय गोरा कोनोदिन मन देय नाइ। यखन हइते ताहार हृदय क्षुब्ध हइया उठियाछे, किछुतेइ से आपनाके बाँधिया राखिते पारितेछे ना, काज ताहार काछे शून्य बोध हइतेछे, एवं जीवनटा येन आधखाना हइया काँदिया मरितेछे, तखन हइते गोरा पूजाय मन दिते चेष्टा करितेछे। प्रतिमार सम्मुखे स्थिर हइया बसिया सेइ मूर्तिर मध्ये गोरा निजेर मनके एकेबारे निविष्ट करिया दिते चेष्टा करे। किन्तु कोनो उपायेइ से आपनार भक्तिके जाग्रत करिया तुलिते पारे ना। देवताके से बुद्धिर द्वारा व्याख्या करे, ताहाके रूपक करिया ना तुलिया कोनोमतेइ ग्रहण करिते पारे ना। किन्तु रूपकके हृदयेर भक्ति देओया याय ना। आध्यात्मिक व्याख्याके पूजा करा याय ना। वरञ्च मन्दिरे बसिया पूजार चेष्टा ना करिया घरे बसिया निजेर मने अथवा काहारओ सङ्गे तर्कोपलक्ष्ये यखन भावेर स्रोते मनके ओ वाक्यके भासाइया दित, तखन ताहार मनेर मध्ये एकटा आनन्द ओ भक्तिरसेर सञ्चार हइत। तबु गोरा छाड़िल ना ; से यथानियमे प्रतिदिन पूजाय बसिते लागिल, इहाके से नियमस्वरूपेइ ग्रहण करिल। मनके एइ बलिया बुझाइल, येखाने भावेर सूत्रे सकलेर सङ्गे मिलिबार शक्ति ना थाके, सेखाने नियमसूत्रइ सर्वत्र मिलन रक्षा करे। गोरा यखनइ ग्रामे गेछे सेखानकार देवमन्दिरे प्रवेश करिया मने मने गभीरभावे ध्यान करिया बलियाछे, 'एइखानेइ आमार विशेष स्थान ; एक दिके देवता ओ एक दिके भक्त, ताहारइ माझखाने ब्राह्मण सेतुस्वरूप उभयेर योग रक्षा करिया आछे।' क्रमे गोरार मने हइल, ब्राह्मणेर पक्षे भक्तिर प्रयोजन नाइ। भक्ति जनसाधारणेरइ विशेष सामग्री। एइ भक्त ओ भक्तिर विषयेर माझखाने ये सेतु ताहा ज्ञानेरइ सेतु। एइ सेतु येमन उभयेर योग रक्षा करे तेमनि उभयेर सीमा रक्षाओ करे। भक्त एवं देवतार माझखाने यदि विशुद्ध ज्ञान व्यवधानेर मतो ना थाके तबे समस्तइ विकृत हइया याय। एइजन्य भक्तिविह्वलता ब्राह्मणेर सम्भोगेर सामग्री नहे, ब्राह्मण ज्ञानेर चूड़ाय बसिया एइ भक्तिर रसके सर्वसाधारणेर भोगार्थे विशुद्ध करिया राखिबार जन्य तपस्यारत। संसारे येमन ब्राह्मणेर जन्य आरामेर भोग नाइ, देवार्चनातेओ तेमनि ब्राह्मणेर जन्य भक्तिर भोग नाइ। इहाइ ब्राह्मणेर गौरव। संसारे ब्राह्मणेर जन्य नियमसंयम, एवं धर्मसाधनाय ब्राह्मणेर जन्य ज्ञान।

हृदय गोराके हार मानाइयाछिल, हृदयेर प्रति सेइ अपराधे गोरा निर्वासनदण्ड विधान करिल। किन्तु निर्वासने ताहाके लइया याइबे के। से-सैन्य आछे कोथाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७२

गङ्गार धारेर बागाने प्रायश्चित्तसभार आयोजन हइते लागिल।

अविनाशेर मने एकटा आक्षेप बोध हइतेछिल ये, कलिकातार बाहिरे अनुष्ठानटा घटितेछे, इहाते लोकेर चक्षु तेमन करिया आकृष्ट हइबे ना। अविनाश जानित, गोरार निजेर जन्य प्रायश्चित्तेर कोनो प्रयोजन नाइ, प्रयोजन देशेर लोकेर जन्य। मराल एफेक्ट्! एइजन्य भिड़ेर मध्येइ ए काज दरकार।

किन्तु गोरा राजि हइल ना। से येरूप बृहत् होम करिया वेदमन्त्र पड़िया ए काज करिते चाय, कलिकाता शहरेर मध्ये तेमनटा मानाय ना। इहार जन्य तपोवनेर प्रयोजन। स्वाध्यायमुखरित होमाग्निदीप्त निभृत गङ्गातीरे, ये प्राचीन भारतवर्ष जगतेर गुरु ताँहाकेइ गोरा आवाहन करिबे, एवं स्नान करिया पवित्र हइया ताँहार निकट हइते से नवजीवनेर दीक्षा ग्रहण करिबे। गोरा मराल एफेक्टेर जन्य व्यस्त नहे।

अविनाश तखन अनन्यगति हइया खबरेर कागजेर आश्रय ग्रहण करिल। से गोराके ना जानाइयाइ एइ प्रायश्चित्तेर संवाद समस्त खबरेर कागजे रटना करिया दिल। शुधु ताइ नहे; सम्पादकीय कोठाय से बड़ो बड़ो प्रबन्ध लिखिया दिल; ताहाते से एइ कथाइ विशेष करिया जानाइल ये, गोरार मतो तेजस्वी पवित्र ब्राह्मणके कोनो दोष स्पर्श करिते पारे ना, तथापि गोरा वर्तमान पतित भारतवर्षेर समस्त पातक निजेर स्कन्धे लइया समस्त देशेर हइया प्रायश्चित्त करितेछे। से लिखिल, 'आमादेर देश येमन निजेर दुष्कृतिर फले विदेशीर बन्दीशालाय आज दुःख पाइतेछे, गोराओ तेमनि निजेर जीवने सेइ बन्दीशालाय वासदुःख स्वीकार करिया लइयाछे। एइरूपे देशेर दुःख से येमन निजे वहन करियाछे, एमनि करिया देशेर अनाचारेर प्रायश्चित्तओ से निजे अनुष्ठान करिते प्रस्तुत हइयाछे, अतएव भाइ बाङालि, भाइ भारतेर पञ्चविंशतिकोटि दुःखी सन्तान, तोमरा'—इत्यादि इत्यादि।

गोरा एइ-समस्त लेखा पड़िया विरक्तिते अस्थिर हइया पड़िल। किन्तु अविनाशके पारिबार जो नाइ। गोरा ताहाके गालि दिलेओ से गाये लय ना, वरञ्च खुशि हय। 'आमार गुरु अत्युच्च भावलोकेइ विहार करेन, ए-समस्त पृथिवीर कथा किछुइ बोझेन ना। तिनि बैकुण्ठवासी नारदेर मतो वीणा बाजाइया विष्णुके विगलित करिया गङ्गार सृष्टि करितेछेन, किन्तु सेइ गङ्गाके मर्ते प्रवाहित करिया सगरसन्तानेर भस्मराशि सञ्जीवित करिबार काज पृथिवीर भगीरथेर— से स्वर्गेर लोकेर कर्म नय। ए दुइ काज एकेबारे स्वतन्त्र।' अतएव अविनाशेर उत्पाते गोरा यखन आगुन हइया उठे तखन अविनाश मने मने हासे, गोरार प्रति ताहार भक्ति बाड़िया उठे। से मने मने बले, 'आमादेर गुरुर चेहाराओ येमन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिवेर मतो तेमनि भावेओ तिनि ठिक भोलानाथ। किछुइ बोझेन ना, काण्डज्ञान मात्रइ नाइ, कथाय कथाय रागिया आगुन हन, आबार राग जुड़ाइतेओ बेशिक्षण लागे ना।'

अविनाशेर चेष्टाय गोरार प्रायश्चित्तेर कथाटा लइया चारि दिके भारि एकटा आन्दोलन उठिया पड़िल। गोराके ताहार बाड़िते आसिया देखिबार जन्य, ताहार सङ्गे आलाप करिबार जन्य लोकेर जनता आरओ बाड़िया उठिल। प्रत्यह चारि दिक हइते ताहार एत चिठि आसिते लागिल ये चिठि पड़ा से बन्ध करियाइ दिल। गोरार मने हइते लागिल, एइ देशव्याप्त आलोचनार द्वारा ताहार प्रायश्चित्तेर सात्त्विकता येन क्षय हइया गेल, इहा एकटा राजसिक व्यापार हइया उठिल। इहा कालेरइ दोष।

कृष्णदयाल आजकाल खबरेर कागज स्पर्शओ करेन ना, किन्तु जनश्रुति ताँहार साधनाश्रमेर मध्येओ गिया प्रवेश करिल। ताँहार उपयुक्त पुत्र गोरा महासमारोहे प्रायश्चित्त करिते बसियाछे, एवं से ये ताहार पितारइ पवित्र पदाङ्क अनुसरण करिया एक काले ताँहार मतोइ सिद्धपुरुष हइया दाँड़ाइबे, एइ संवाद ओ एइ आशा कृष्णदयालेर प्रसादजीवीरा ताँहार काछे विशेष गौरवेर सहित व्यक्त करिल।

गोरार घरे कृष्णदयाल कतदिन ये पदार्पण करेन नाइ ताहार ठिक नाइ। ताँहार पट्टवस्त्र छाड़िया, सुतार कापड़ परिया, आज एकेबारे ताहार घरे गिया प्रवेश करिलेन। सेखाने गोराके देखिते पाइलेन ना।

चाकरके जिज्ञासा करिलेन। चाकर जानाइल, गोरा ठाकुरघरे आछे।

अ्याँ! ठाकुरघरे ताहार की प्रयोजन।

तिनि पूजा करेन।

कृष्णदयाल शशव्यस्त हइया ठाकुरघरे उपस्थित हइया देखिलेन, सत्यइ गोरा पूजाय बसिया गेछे।

कृष्णदयाल बाहिर हइते डाकिलेन, "गोरा!"

गोरा ताहार पितार आगमने आश्चर्य हइया उठिया दाँड़ाइल। कृष्णदयाल ताँहार साधनाश्रमे विशेषभावे निजेर इष्टदेवतार प्रतिष्ठा करियाछेन। इँहादेर परिवार वैष्णव, किन्तु तिनि शक्तिमन्त्र लइयाछेन, गृहदेवतार सङ्गे ताँहार प्रत्यक्ष योग अनेक दिन हइतेइ नाइ।

तिनि गोराके कहिलेन, "एसो एसो, बाइरे एसो।"

गोरा बाहिर हइया आसिल। कृष्णदयाल कहिलेन, "ए की काण्ड! एखाने तोमार की काज!"

गोरा कोनो उत्तर करिल ना। कृष्णदयाल कहिलेन, "पूजारि ब्राह्मण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आछे, से तो प्रत्यह पूजा करे, तातेइ बाड़िर सकलेरइ पूजा हच्छे—तुमि केन एर मध्ये एसेछ।"

गोरा कहिल, "ताते कोनो दोष नेइ।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "दोष नेइ! बल की! विलक्षण दोष आछे। यार याते अधिकार नेइ तार से काजे याबार दरकार की। ओते ये अपराध हच्छे। शुधु तोमार नय, बाड़िसुद्ध आमादेर सकलेर।"

गोरा कहिल, "यदि अन्तरेर भक्तिर दिक दिये देखेन ता हले देवतार सामने बसबार अधिकार अति अल्प लोकेरइ आछे। किन्तु आपनि कि बलेन, आमादेर ओइ रामहरि ठाकुरेर एखाने पूजा करबार ये-अधिकार आछे आमार से-अधिकारओ नेइ?"

कृष्णदयाल गोराके की ये जवाब दिबेन, हठात् भाबिया पाइलेन ना। एकटु चुप करिया थाकिया कहिलेन, "देखो, पूजा कराइ रामहरिर जातव्यावसा। व्यावसाते ये अपराध हय देवता सेटा नेन ना। ओ जायगाय त्रुटि धरते गेले व्यावसा बन्धइ करते हय, ता हले समाजेर काज चले ना। किन्तु तोमार तो से ओजर नेइ। तोमार ए घरे ढोकबार दरकार की।"

गोरार मतो आचारनिष्ठ ब्राह्मणेर पक्षेओ ठाकुरघरे प्रवेश करिले अपराध हय, ए कथा कृष्णदयालेर मतो लोकेर मुखे नितान्त असंगत शुनाइल ना। सुतरां गोरा इहा सह्य करिया गेल, किछुइ बलिल ना।

तखन कृष्णदयाल कहिलेन, "आर-एकटा कथा शुनछि, गोरा। तुमि नाकि प्रायश्चित्त करबार जन्ये सब पण्डितदेर डेकेछ?"

गोरा कहिल, "हाँ।"

कृष्णदयाल अत्यन्त उत्तेजित हइया उठिया कहिलेन, "आमि बेंचे थाकते ए कोनोमतेइ हते देब ना।"

गोरार मन विद्रोही हइया उठिबार उपक्रम करिल; से कहिल, "केन।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "केन की। आमि तोमाके आर-एकदिन बलेछि, प्रायश्चित्त हते पारबे ना।"

गोरा कहिल, "बले तो छिलेन, किन्तु कारण तो किछु देखान नि।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "कारण देखाबार आमि कोनो दरकार देखि ने। आमरा तो तोमार गुरुजन, मान्यव्यक्ति; ए-समस्त शास्त्रीय क्रियाकर्म आमादेर अनुमति व्यतीत करबार विधिइ नेइ। ओते ये पितृपुरुषेर श्राद्ध करते हय, ता जान?"

गोरा विस्मित हइया कहिल, "ताते बाधा की।"

कृष्णदयाल क्रुद्ध हइया उठिया कहिलेन, "सम्पूर्ण बाधा आछे। से आमि हते दिते पारब ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा हृदये आघात पाइया कहिल, "देखुन, ए आमार निजेर काज। आमि निजेर शुचितार जन्यइ एइ आयोजन करछि—ए निये वृथा आलोचना करे आपनि केन कष्ट पाच्छेन।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "देखो गोरा, तुमि सकल कथाय केवल तर्क करते येयो ना। ए-समस्त तर्केर विषयइ नय। एमन ढेर जिनिस आछे या एखनो तोमार बोझबार साध्यइ नेइ। आमि तोमाके फेर बले याच्छि—हिन्दुधर्मे तुमि प्रवेश करते पेरेछ एइटे तुमि मने करछ, किन्तु से तोमार सम्पूर्णइ भुल। से तोमार साध्यइ नेइ। तोमार प्रत्येक रक्तेर कणा, तोमार माथा थेके पा पर्यन्त तार प्रतिकूल। हिन्दु हठात् हबार जो नेइ, इच्छा करलेओ जो नेइ। जन्म-जन्मान्तरेर सुकृति चाइ।"

गोरार मुख रक्तवर्ण हइया उठिल। से कहिल, "जन्मान्तरेर कथा जानि ने, किन्तु आपनादेर वंशेर रक्तधाराय ये-अधिकार प्रवाहित हये आसछे आमि कि तारओ दाबि करते पारब ना।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "आबार तर्क! आमार मुखेर उपर प्रतिवाद करते तोमार संकोच हय ना! ए दिके बल हिन्दु! विलाति झाँज याबे कोथाय! आमि या बलि ताइ शोनो। ओ-समस्त बन्ध करे दाओ।"

गोरा नतशिरे चुप करिया दाँड़ाइया रहिल। एकटु परे कहिल, "यदि प्रायश्चित्त ना करि ता हले किन्तु शशिमुखीर विवाहे आमि सकलेर सङ्गे बसे खेते पारब ना।"

कृष्णदयाल उत्साहित हइया बलिया उठिलेन, "वेश तो। तातेइ वा दोष की। तोमार जन्ये नाहय आलादा आसन करे देबे।"

गोरा कहिल, "समाजे ता हले आमाके स्वतन्त्र हयेइ थाकते हबे।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "से तो भालोइ।"

ताँहार एइ उत्साहे गोराके विस्मित हइते देखिया कहिलेन, "एइ देखो-ना, आमि कारओ सङ्गे खाइ ने, निमन्त्रण हलेओ ना। समाजेर सङ्गे आमार योग कीइ वा आछे। तुमि ये-रकम सात्त्विकभावे जीवन काटाते चाओ तोमारओ तो एइरकम पन्थाइ अवलम्बन करा श्रेय। आमि तो देखछि, एतेइ तोमार मङ्गल।"

मध्याह्ने अविनाशके डाकाइया कृष्णदयाल कहिलेन, "तोमराइ बुझि सकले मिले गोराके नाचिये तुलेछ।"

अविनाश कहिलेन, "बलेन की! आपनार गोराइ तो आमादेर सकलके नाचाय। वरञ्च से निजेइ नाचे कम।"

कृष्णदयाल कहिलेन, "किन्तु बाबा, आमि बलछि, तोमादेर ओ-सब प्रायश्चित्त-टित्त हबे ना। आमार ओते एकेबारेइ मत नेइ। एखनइ सब बन्ध करे दाओ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अविनाश भाविल, बुड़ार ए की रकम जेद ! इतिहासे बड़ो बड़ो लोकेर बापरा निजेर छेलेर महत्त्व बुझिते पारे नाइ एमन दृष्टान्त ढेर आछे, कृष्णदयालओ सेइ जातेरइ बाप। कतकगुला बाजे संन्यासीर काछे दिनरात ना थाकिया कृष्णदयाल यदि ताँहार छेलेर काछे शिक्षा ग्रहण करिते पारितेन, ताहा हइले ताँहार ढेर उपकार हइत।

अविनाश कौशली लोक ; येखाने वादप्रतिवाद करिया फल नाइ, एमन कि, मराल एफेक्टेरओ सम्भावना अल्प, सेखाने से वृथा वाक्यव्यय करिबार लोक नय। से कहिल, "बेश तो मशाय, आपनार यदि मत ना थाके तो हबे ना। तबे किना, उद्योग-आयोजन समस्तइ हयेछे,निमन्त्रणपत्रओ बेरिये गेछे,ए दिके आर विलम्बओ नेइ, ता नय एक काज करा याबे—गोरा थाकुन, सेदिन आमराइ प्रायश्चित्त करब—देशेर लोकेर पापेर तो अभाव नेइ।"

अविनाशेर एइ आश्वासवाक्ये कृष्णदयाल निश्चिन्त हइलेन।

कृष्णदयालेर कोनो कथाय कोनोदिन गोरार विशेष श्रद्धा छिल ना। आजओ से ताँहार आदेश पालन करिबे बलिया मनेर मध्ये स्वीकार करिल ना। सांसारिक जीवनेर चेये बड़ो ये जीवन सेखाने गोरा पितामातार निषेधके मान्य करिते निजेके बाध्य मने करे ना। किन्तु तबु आज समस्त दिन ताहार मनेर मध्ये भारि एकटा कष्ट बोध हइते लागिल। कृष्णदयालेर समस्त कथार मध्ये येन की एकटा सत्य प्रच्छन्न आछे, ताहार मनेर भितरे एइ रकमेर एकटा अस्पष्ट धारणा जन्मितेछिल। एकटा येन आकारहीन दुःस्वप्न ताहाके पीड़न करितेछिल, ताहाके कोनोमतेइ ताड़ाइते पारितेछिल ना। ताहार केमन एकरकम मने हइल, के येन सकल दिक हइतेइ ताहाके ठेलिया सराइया फेलिबार चेष्टा करितेछे। निजेर एकाकित्व ताहाके आज अत्यन्त एकटा बृहत् कलेवर धरिया देखा दिल। ताहार सम्मुखे कर्मक्षेत्र अति विस्तीर्ण, काजओ अतिप्रकाण्ड, किन्तु ताहार पाशे केहइ दाँड़ाइया नाइ।

७३

काल प्रायश्चित्तसभा बसिबे, आज रात्रि हइतेइ गोरा बागाने गिया वास करिबे एइरूप स्थिर आछे। यखन से यात्रा करिबार उपक्रम करितेछे एमन समय हरिमोहिनी आसिया उपस्थित। ताँहाके देखिया गोरा प्रसन्नता अनुभव करिल ना। गोरा कहिल, "आपनि एसेछेन—आमाके ये एखनइ बेरते हबे—माओ तो कयेकदिन बाड़िते नेइ। यदि ताँर सङ्गे प्रयोजन थाके ता हले—"

हरिमोहिनी कहिलेन, "ना बाबा, आमि तोमार काछेइ एसेछि। एकटु तोमाके बसतेइ हबे, बेशिक्षण ना।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा बसिल। हरिमोहिनी सुचरितार कथा पाड़िलेन। कहिलेन, गोरार शिक्षागुणे ताहार विस्तर उपकार हइयाछे। एमन कि, से आजकाल यार-तार हातेर छोंओया जल खाय ना, एवं सकल दिकेइ ताहार सुमति जन्मियाछे। —"बाबा, ओर जन्ये कि आमार कम भावना छिल। ओके तुमि पथे एने आमार की उपकार करेछ से आमि तोमाके एक मुखे बलते पारि ने। भगवान तोमाके राजराजेश्वर करुन। तोमार कुलमानेर योग्य एकटि लक्ष्मी मेये भालो घर थेके बिये करे आनो, तोमार घर उज्ज्वल होक, धने पुत्रे लक्ष्मीलाभ होक।"

ताहार परे कथा पाड़िलेन, सुचरितार वयस हइयाछे, विवाह करिते ताहार एक मुहूर्त विलम्ब करा उचित नय, हिन्दुघरे थाकिले एतदिने सन्तानेर द्वारा ताहार कोल भरिया उठित। विवाहे विलम्ब कराय ये कतबड़ो अवैध काज हइयाछे से-सम्बन्धे गोरा निश्चयइ ताँहार सङ्गे एकमत हइबेन। हरिमोहिनी दीर्घकाल धरिया सुचरितार विवाहसमस्या सम्बन्धे असह्य उद्वेग भोग करिया अवशेषे बहु साध्यसाधना-अनुनयविनये ताँहार देवर कैलासके राजि करिया कलिकाताय आनियाछेन। ये-समस्त गुरुतर बाधाविघ्नेर आशङ्का करियाछिलेन ताहा समस्तइ ईश्वरेच्छाय काटिया गियाछे। समस्तइ स्थिर, वरपक्षे एक पयसा पण पर्यन्त लइबे ना एवं सुचरितार पूर्व-इतिहास लइयाओ कोनो आपत्ति प्रकाश करिबे ना—हरिमोहिनी विशेष कौशले एइ-समस्त समाधान करिया दियाछेन—एमन समय, शुनिले लोके आश्चर्य हइबे, सुचरिता एकेबारे बाँकिया दाँड़ाइयाछे। की ताहार मनेर भाव तिनि जानेन ना ; केह ताहाके किछु बुझाइयाछेन किना, आर-कारओ दिके ताहार मन पड़ियाछे किना, ताहा भगवान जानेन।—

"किन्तु बापु, तोमाके आमि खुलेइ बलि, ओ-मेये तोमार योग्य नय। पाड़ागाँये ओर बिये हले ओर कथा केउ जानतेइ पारबे ना, से एकरकम करे चले याबे। किन्तु तोमरा शहरे थाक, ओके यदि बिये कर ता हले शहरेर लोकेर काछे मुख देखाते पारबे ना।"

गोरा क्रुद्ध हइया उठिया कहिल, "आपनि ए-सब कथा की बलछेन। के आपनाके बलेछे ये, आमि ताँके विवाह करबार जन्ये ताँर सङ्गे बोझा पड़ा करते गेछि।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "आमि की करे जानब बाबा। कागजे बेरिये गेछे, सेइ शुनेइ तो लज्जाय मरछि।"

गोरा बुझिल, हारानबाबु अथवा ताँहार दलेर केह एइ कथा लइया कागजे आलोचना करियाछे। गोरा मुष्टि बद्ध करिया कहिल, "मिथ्या कथा।"

हरिमोहिनी ताहार गर्जन-शब्दे चमकिया उठिया कहिलेन, "आमिओ तो ताइ जानि। एखन आमार एकटि अनुरोध तोमाके राखतेइ हबे। एकबार तुमि राधारानीर काछे चलो।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा जिज्ञासा करिल, "केन।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "तुमि ताके एकबार बुझिये बलबे।"

गोरार मन एइ उपलक्षटि अवलम्बन करिया तखनइ सुचरितार काछे याइबार जन्य उद्यत हइल। ताहार हृदय बलिल, 'आज एकबार शेष देखा देखिया आसिबे चलो। काल तोमार प्रायश्चित्त––ताहार पर हइते तुमि तपस्वी। आज केवल एइ रात्रिटुकुमात्र समय आछे—इहारइ मध्ये केवल अति अल्पक्षणेर जन्य। ताहाते कोनो अपराध हइबे ना। यदि हय तो काल समस्त भस्म हइया याइबे।'

गोरा एकटु चुप करिया थाकिया जिज्ञासा करिल, "ताँके की बोझाते हबे बलुन।"

आर किछु नय––हिन्दु आदर्श अनुसारे सुचरितार मतो वयस्था कन्यार अविलम्बे विवाह करा कर्तव्य एवं हिन्दुसमाजे कैलासेर मतो सत्पात्रलाभ सुचरितार अवस्थार मेयेर पक्षे अभावनीय सौभाग्य।

गोरार बुकेर मध्ये शेलेर मतो बिँधिते लागिल। ये लोकटिके गोरा सुचरितार बाड़िर द्वारेर काछे देखियाछिल ताहाके स्मरण करिया गोरा वृश्चिकदंशने पीड़ित हइल। सुचरिताके से लाभ करिबे, एमन कथा कल्पना कराओ गोरार पक्षे असह्य। ताहार मन वज्रनादे बलिया उठिल, ना, ए कखनोइ हइते पारे ना।

आर-काहारओ सङ्गे सुचरितार मिलन हओया असम्भव ; बुद्धि ओ भावेर गभीरताय परिपूर्ण सुचरितार निस्तब्ध गभीर हृदयटि पृथिवीते गोरा छाड़ा द्वितीय कोनो मानुषेर सामने एमन करिया प्रकाशित हय नाइ एवं आर-काहारओ काछे कोनोदिनइ एमन करिया प्रकाशित हइते पारे ना। से की आश्चर्य। से की अपरूप। रहस्यनिकेतनेर अन्तरतम कक्षे से कोन् अनिर्वचनीय सत्ताके देखा गेछे। मानुषके एमन करिया कयबार देखा याय एवं कयजनके देखा याय। दैवेर योगेइ सुचरिताके ये-व्यक्ति एमन प्रगाढ़ सत्यरूपे देखियाछे, निजेर समस्त प्रकृति दिया ताहाके अनुभव करियाछे, से तो सुचरिताके पाइयाछे। आर-केह आर-कखनो ताहाके पाइबे केमन करिया।

हरिमोहिनी कहिलेन, "राधारानी कि चिरदिन एमनि आइबुड़ो थेकेइ याबे। एओ कि कखनो हय।"

सेओ तो बटे। काल ये गोरा प्रायश्चित्त करिते याइतेछे। ताहार परे से ये सम्पूर्ण शुचि हइया ब्राह्मण हइबे। तबे सुचरिता कि चिरदिन अविवाहितइ थाकिबे। ताहार उपरे चिरजीवनव्यापी एइ भार चापाइबार अधिकार काहार आछे। स्त्रीलोकेर पक्षे एतबड़ो भार आर की हइते पारे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिमोहिनी कत की बकिया याइते लागिलेन। गोरार काने ताहा पौंछिल ना। गोरा भाबिते लागिल, 'बाबा ये एत करिया आमाके प्रायश्चित्त ग्रहण करिते निषेध करितेछेन, ताँहार से-निषेधेर कि कोनो मूल्य नाइ। आमि आमार ये-जीवन कल्पना करितेछि से हयतो आमार कल्पनामात्र, से आमार स्वाभाविक नय। सेइ कृत्रिम बोझा वहन करिते गिया आमि पंगु हइया याइब। सेइ बोझार निरन्तर भारे आमि जीवनेर कोनो काज सहजे सम्पन्न करिते पारिब ना। एइ ये देखितेछि, आकांक्षा हृदय जुड़िया रहियाछे! ए पाथर नड़ाइया राखिब कोन्‌खाने! बाबा केमन करिया जानियाछेन, अन्तरेर मध्ये आमि ब्राह्मण नइ, आमि तपस्वी नइ, सेइ जन्यइ तिनि एमन जोर करिया आमाके निषेध करियाछेन।'

गोरा मने करिल, 'याइ ताँर काछे। आज एखनइ एइ सन्ध्यावेलातेइ आमि ताँहाके जोर करिया जिज्ञासा करिब, तिनि आमार मध्ये की देखिते पाइया-छेन। प्रायश्चित्तेर पथओ आमार काछे रुद्ध, एमन कथा तिनि केन बलिलेन। यदि आमाके बुझाइया दिते पारेन तबे से दिक हइते छुटि पाइब। छुटि!'

हरिमोहिनीके गोरा कहिल, "आपनि एकटुखानि अपेक्षा करुन, आमि एखनइ आसछि।"

ताड़ाताड़ि गोरा ताहार पितार महलेर दिके गेल। ताहार मने हइल, कृष्णदयाल एखनइ ताहाके निष्कृति दिते पारेन एमन एकटा कथा ताँहार जाना आछे।

साधनाश्रमेर द्वार बन्ध। दुइ-एकबार धाक्का दिल; खुलिल ना, केह साड़ाओ दिल ना। भितर हइते धूपधुनार गन्ध आसितेछे। कृष्णदयाल आज संन्यासीके लइया अत्यन्त गूढ़ एवं अत्यन्त दुरूह एकटि योगेर प्रणाली समस्त द्वार रुद्ध करिया अभ्यास करितेछेन; आज समस्त रात्रि से दिके काहारओ प्रवेश करिबार अधिकार नाइ।

७४

गोरा कहिल, 'ना। प्रायश्चित्त काल ना। आजइ आमार प्रायश्चित्त आरम्भ हयेछे। कालकेर चेये ढेर बड़ो आगुन आज ज्वलेछे। आमार नवजीवनेर आरम्भे खुब एकटा बड़ो आहुति आमाके दिते हबे बलेइ विधाता आमार मने एतबड़ो एकटा प्रबल वासनाके जागिये तुलेछेन। नइले एमन अद्‌भुत घटना घटल केन। आमि छिलुम कोन् क्षेत्रे। एदेर सङ्गे आमार मेलबार कोनो लौकिक सम्भावना छिल ना। आर एमन विरुद्ध भावेर मिलनओ पृथिवीते सचराचर घटे ना। आबार सेइ मिलने आमार मतो उदासीन लोकेर चित्तेओ ये एतबड़ो दुर्जय एकटा वासना जागते पारे, से कथा केउ कल्पनाओ करते पारत ना। ठिक आजइ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आमार एइ वासनार प्रयोजन छिल। आज पर्यन्त आमि देशके या दिये एसेछि ता अति सहजेइ दियेछि, एमन दान किछु करते हय नि याते आमाके कष्टबोध करते हयेछे। आमि भेबेइ पेतुम ना, लोके देशेर जन्ये कोनो जिनिस त्याग करते किछुमात्र कृपणता बोध करे केन। किन्तु बड़ यज्ञ एमन सहज दान चाय ना। दु:खइ चाइ! नाड़ी छेदन करे तबे आमार नवजीवन जन्मग्रहण करबे। काल प्राते जनसमाजेर काछे आमार लौकिक प्रायश्चित्त हबे। ठिक तार पूर्वरात्रेइ आमार जीवनविधाता एसे आमार द्वारे आघात करेछेन। अन्तरेर मध्ये आमार अन्तरतम प्रायश्चित्त ना हले काल आमि शुद्धि ग्रहण करब केमन करे। ये-दान आमार पक्षे सकलेर चेये कठिन दान, सेइ दान आमार देवताके आज सम्पूर्ण उत्सर्ग करे दिये तबेइ आमि सम्पूर्ण पवित्ररूपे नि:स्व हते पारब, तबेइ आमि ब्राह्मण हब।'

गोरा हरिमोहिनीर सम्मुखे आसितेइ तिनि बलिया उठिलेन, "बाबा, एकबार तुमि आमार सङ्गे चलो। तुमि गेले, तुमि मुखेर एकटि कथा बललेइ सब हये याबे।"

गोरा कहिल, "आमि केन याब। ताँर सङ्गे आमार की योग। किछुइ ना।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "से ये तोमाके देवतार मतो भक्ति करे, तोमाके गुरु बले माने।"

गोरार हृत्पिण्डेर एक दिक हइते आर-एक दिके विद्युत्तप्त वज्रसूची बिँधिया गेल।

गोरा कहिल, "आमार याबार प्रयोजन देखि ने। ताँर सङ्गे आमार देखा हबार आर कोनो सम्भावना नेइ।"

हरिमोहिनी खुशि हइया कहिलेन, "से तो बटेइ। अतबड़ो मेयेर सङ्गे देखासाक्षात् हओयाटा तो भालो नय। किन्तु, बाबा, आजकेर आमार एइ काजटि ना करे दिये तो तुमि छाड़ा पाबे ना। तार परे आर कखनो यदि तोमाके डाकि तखन बोलो।"

गोरा बार बार करिया माथा नाड़िल। आर ना, किछुते ना। शेष हइया गेछे। ताहार विधाताके निवेदन करा हइया गेछे। ताहार शुचिताय एखन से आर कोनो चिह्न फेलिते पारिबे ना। से देखा करिते याइबे ना।

हरिमोहिनी यखन गोरार भावे बुझिलेन ताहाके टलानो सम्भव हइबे ना, तखन तिनि कहिलेन, "नितान्तइ यदि ना येते पार तबे एक काज करो, बाबा। एकटा चिठि ताके लिखे दाओ।"

गोरा माथा नाड़िल। से हइतेइ पारे ना। चिठिपत्र नय।

हरिमोहिनी कहिलेन, "आच्छा, तुमि आमाकेइ दु लाइन लिखे दाओ। तुमि सब शास्त्रइ जान, आमि तोमार काछे विधान निते एसेछि।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा जिज्ञासा करिल, "किसेर विधान।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "हिन्दुघरेर मेयेर उपयुक्त वयसे विवाह करे गृहधर्म पालन कराइ सकलेर चेये बड़ो धर्म किना।"

गोरा किछुक्षण चुप करिया थाकिया कहिल, "देखुन, आपनि ए-समस्त व्यापारे आमाके जड़ाबेन ना। विधान देबार पण्डित आमि नइ।"

हरिमोहिनी तखन एकटु तीव्रभावे कहिलेन, "तोमार मनेर भितरकार इच्छाटा ता हले खुलेइ बलो-ना। गोड़ाते फाँस जड़ियेछ तुमिइ, एखन खोलबार वेलाय बल 'आमाके जड़ाबेन ना'। एर मानेटा की। आसल कथा, इच्छेटा तोमार नय ये ओर मन परिष्कार हये याय।"

अन्य कोनो समय हइले गोरा आगुन हइया उठित। एमनतरो सत्य अपवादओ से सह्य करिते पारित ना। किन्तु आज ताहार प्रायश्चित्त आरम्भ हइयाछे; से राग करिल ना। से मनेर मध्ये तलाइया देखिल, हरिमोहिनी सत्य कथाइ बलितेछेन। से सुचरितार सङ्गे बड़ो बाँधनटा काटिया फेलिबार जन्य निर्मम हइया उठियाछे, किन्तु एकटि सूक्ष्म सूत्र, येन देखिते पाय नाइ एमनि छल करिया, से राखिते चाय। से सुचरितार सहित सम्बन्धके एकेबारे सम्पूर्ण-रूपे त्याग करिया दिते एखनो पारे नाइ।

किन्तु कृपणता घुचाइते हइबे। एक हात दिया दान करिया आर-एक हात दिया धरिया राखिले चलिबे ना।

से तखन कागज बाहिर करिया जोरेर सङ्गे बड़ो अक्षरे लिखिल, "विवाहइ नारीर जीवने साधनार पथ, गृहधर्मइ ताहार प्रधान धर्म। एइ विवाह इच्छा-पूरणेर जन्य नहे, कल्याणसाधनेर जन्य। संसार सुखेरइ हउक आर दुःखेरइ हउक, एकमने सेइ संसारकेइ वरण करिया सती साध्वी पवित्र हइया धर्मकेइ रमणी गृहेर मध्ये मूर्तिमान करिया राखिबेन, एइ ताँहादेर व्रत।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "अमनि आमादेर कैलासेर कथाटा एकटुखानि लिखे दिले भालो करते, बाबा।"

गोरा कहिल, "ना, आमि ताँके जानि ने। ताँर कथा लिखते पारब ना।"

हरिमोहिनी कागजखानि यत्न करिया मुड़िया, आँचले बाँधिया, बाड़ि फिरिया आसिलेन। सुचरिता तखनो आनन्दमयीर निकट ललितार बाड़िते छिल। सेखाने आलोचनार सुविधा हइबे ना एवं ललिता ओ आनन्दमयीर निकट हइते विरुद्ध कथा शुनिया ताहार मने द्विधा जन्मिते पारे आशङ्का करिया सुचरिताके बलिया पाठाइलेन, परदिन मध्याह्ने से येन ताँहार निकटे आसिया आहार करे। विशेष प्रयोजनीय कथा आछे—आबार अपराह्णेइ से चलिया याइते पारे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परदिन मध्याह्ने सुचरिता मनके कठिन करियाइ आसिल। से जानित, ताहार मासि ताहाके एइ विवाहेर कथाइ आबार आर-कोनोरकम करिया बलिबेन। से आज ताँहाके अत्यन्त शक्त जवाब दिया कथाटा एकेबारेइ शेष करिया दिबे, एइ ताहार संकल्प छिल।

सुचरितार आहार शेष हइले हरिमोहिनी कहिलेन, "काल सन्ध्यार समय आमि तोमार गुरुर ओखाने गियेछिलुम।"

सुचरितार अन्तःकरण कुण्ठित हइया पड़िल। मासि आबार कि ताहार कोनो कथा तुलिया ताँहाके अपमान करिया आसियाछेन।

हरिमोहिनी कहिलेन, "भय नेइ राधारानी, आमि ताँर सङ्गे झगड़ा करते याइ नि। एकला छिलुम, भाबलुम, याइ ताँर काछे दुटो भालो कथा शुने आसि गे। कथाय कथाय तोमार कथाइ उठल। ता देखलुम, ताँरओ ओइ मत। मेयेमानुष ये बेशिदिन आइबुड़ो हये थाके, एटा तो तिनि भालो बलेन ना। तिनि बलेन, शास्त्रमते ओटा अधर्म। ओटा साहेबदेर घरे चले, हिन्दुर घरे ना। आमि ताँके आमादेर कैलासेर कथाओ खुले बलेछि। देखलुम लोकटि ज्ञानी बटे।"

लज्जाय कष्टे सुचरिता मर्मे मरिते लागिल। हरिमोहिनी कहिलेन, "तुमि तो ताँके गुरु बले मान। ताँर कथाटा तो पालन करते हबे।"

सुचरिता चुप करिया रहिल। हरिमोहिनी कहिलेन, "आमि ताँके बललुम, 'बाबा, तुमि निजे एसे ताके बुझिये याओ, से आमादेर कथा माने ना।' तिनि बललेन, 'ना, तार सङ्गे आमार आर देखा हओया उचित हबे ना; ओटा आमादेर हिन्दु-समाजे बाधे।' आमि बललुम, 'तबे उपाय की।' तखन तिनि आमाके निजेर हाते लिखे दिलेन। एइ देखो-ना।"

एइ बलिया हरिमोहिनी धीरे धीरे आँचल हइते कागजटि खुलिया लइया ताहार भाँज खुलिया सुचरितार सम्मुखे मेलिया दिलेन।

सुचरिता पड़िल। ताहार येन निःश्वास रुद्ध हइया आसिल। से काठेर पुतुलेर मतो आड़ष्ट हइया बसिया रहिल।

लेखाटिर मध्ये एमन किछुइ छिल ना याहा नूतन वा असंगत। कथागुलिर सहित सुचरितार मतेर ये अनैक्य आछे ताहाओ नहे। किन्तु हरिमोहिनीर हात दिया विशेष करिया एइ लिखनटि ताहाके पाठाइया देओयार ये-अर्थ ताहाइ सुचरिताके नाना प्रकारे कष्ट दिल। गोरार काछ हइते ए आदेश आज केन। अवश्य, सुचरितारओ समय उपस्थित हइबे, ताहाकेओ एकदिन विवाह करिते हइबे—सेजन्य गोरार पक्षे एत त्वरान्वित हइबार कि कारण घटियाछे। ताहार सम्बन्धे गोरार काज एकेबारे शेष हइया गेछे। से कि गोरार कर्तव्ये कोनो हानि करियाछे। ताहार जीवनेर पथे कोनो बाधा घटाइयाछे? ताँहाके गोरार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दान करिबार एवं ताहार निकट प्रत्याशा करिबार आर किछुइ नाइ? से किन्तु एमन करिया भाबे नाइ, से किन्तु एखनो पथ चाहिया छिल। सुचरिता निजेर भितरकार एइ असह्य कष्टेर विरुद्धे लड़ाइ करिबार जन्य प्राणपणे चेष्टा करिते लागिल, किन्तु से मनेर मध्ये कोथाओ किछुमात्र सान्त्वना पाइल ना।

हरिमोहिनी सुचरिताके अनेकक्षण भाबिबार समय दिलेन। तिनि ताँहार नित्यनियम-मतो एकटुखानि घुमाइयाओ लइलेन। घुम भाङिया सुचरितार घरे आसिया देखिलेन, से येमन बसिया छिल तेमनिइ चुप करिया बसिया आछे।

तिनि कहिलेन, "राधु, अत भाबछिस केन बल् देखि। एर मध्ये भाबबार अत की कथा आछे। केन, गौरमोहनबाबु अन्याय किछु लिखेछेन?"

सुचरिता शान्तस्वरे कहिल, "ना, तिनि ठिकइ लिखेछेन।"

हरिमोहिनी अत्यन्त आश्वस्त हइया बलिया उठिलेन, "तबे आर देरि करे की हबे, बाछा।"

सुचरिता कहिल, "ना, देरि करते चाइ ने; आमि एकबार बाबार ओखाने याब।"

हरिमोहिनी कहिलेन, "देखो राधु, तोमार ये हिन्दुसमाजे विवाह हबे, ए तोमार बाबा कखनो इच्छा करबेन ना। किन्तु तोमार गुरु यिनि तिनि—"

सुचरिता असहिष्णु हइया बलिया उठिल, "मासि, केन तुमि बार बार ओइ एक कथा निये पड़ेछ। विवाह निये बाबार सङ्गे आमि कोनो कथा बलते याच्छि ने। आमि ताँर काछे अमनि एकबार याब।"

परेशेर सान्निध्यइ य सुचरितार सान्त्वनार स्थल छिल। परेशेर बाड़ि गिया सुचरिता देखिल, तिनि एकटा काठेर तोरङ्गे कापड़चोपड़ गोछाइते व्यस्त।

सुचरिता जिज्ञासा करिल, "बाबा, ए की।"

परेश एकटु हासिया कहिलेन, "मा, आमि सिमला पाहाड़े बेड़ाते याच्छि, काल सकालेर गाड़िते रओना हब।"

परेशेर एइ हासिटुकुर मध्ये मस्त एकटा विप्लवेर इतिहास प्रच्छन्न छिल, ताहा सुचरितार अगोचर रहिल ना। घरेर मध्ये ताँहार स्त्री कन्या ओ बाहिरे ताँहार बन्धुबान्धवेरा ताँहाके एकटुओ शान्तिर अवकाश दितेछिल ना। किछु-दिनेर जन्यओ यदि तिनि दूरे काटाइया ना आसेन, तबे घरे केवलइ ताँहाके केन्द्र करिया एकटा आवर्त घुरिते थाकिबे। काल तिनि विदेशे याइबार संकल्प करियाछेन, अथच आज ताँहार आपनार लोक केहइ ताँहार कापड़ गुछाइया दिते आसिल ना, ताँहार निजेकेइ ए काज करिते हइतेछे, एइ दृश्य देखिया सुचरितार मने खुब एकटा आघात लागिल। से परेशबाबुके निरस्त करिया प्रथमे ताँहार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोरङ्ग सम्पूर्ण उजाड़ करिया फेलिल। ताहार परे विशेष यत्ने भाँज करिया कापड़गुलिके निपुण हस्ते तोरङ्गेर मध्ये आबार साजाइते लागिल, एवं ताँहार सर्वदापाठ्य बइगुलिके एमन करिया राखिल याहाते नाड़ाचाड़ातेओ ताहादेर आघात ना लागे। एइरूपे बाक्स गुछाइते गुछाइते सुचरिता आस्ते आस्ते जिज्ञासा करिल, "बाबा, तुमि कि एकलाइ याबे।"

परेश सुचरितार एइ प्रश्नेर मध्ये वेदनार आभास पाइया कहिलेन, "ताते आमार तो कोनो कष्ट नेइ, राधे।"

सुचरिता कहिल, "ना, बाबा, आमि तोमार सङ्गे याब।"

परेश सुचरितार मुखेर दिके चाहिया छिलेन। सुचरिता कहिल, "बाबा, आमि तोमाके किछु विरक्त करव ना।"

परेश कहिलेन, "से कथा केन बलछ। आमाके तुमि कबे विरक्त करेछ, मा।"

सुचरिता कहिल, "तोमार काछे ना थाकले आमार भालो हबे ना, बाबा। आमि अनेक कथाइ बुझते पारि ने। तुमि आमाके बुझिये ना दिले आमि किनारा पाब ना। बाबा, तुमि ये आमाके आमार निजेर बुद्धिर उपरे निर्भर करते बल, आमार से बुद्धि नेइ, आमि मनेर मध्ये से जोरओ पाच्छि ने। तुमि आमाके तोमार सङ्गे निये चलो, बाबा।"

एइ बलिया से परेशेर दिके पिठ करिया अत्यन्त नतशिरे तोरङ्गेर कापड़ लइया पड़िल। ताहार चोख दिया टप् टप् करिया जल पड़िते लागिल।

७५

गोरा लिखनटि लिखिया यखन हरिमोहिनीर हाते दिल तखन ताहार मने हइल, सुचरिता सम्बन्धे से येन त्यागपत्र लिखिया दिल। किन्तु दलिल लिखिया दिलेइ तो तखनइ काज शेष हय ना। ताहार हृदय ये से दलिलके एकेबारे अग्राह्य करिया दिल। से दलिले केवल गोरार इच्छाशक्ति जोर कलमे नाम सइ करिया दियाछिल बटे, किन्तु ताहार हृदयेर स्वाक्षर तो ताहाते छिल ना, हृदय ताइ अबाध्य हइयाइ रहिल। एमनि घोरतरो अबाध्यता ये, सेइ रात्रेइ गोराके एकबार सुचरितार बाड़िर दिके दौड़ कराइयाछिल आर कि। किन्तु ठिक सेइ मुहूर्तेइ गिर्जार घड़िते दशटा बाजिल एवं गोरार चैतन्य हइल, एखन काहारओ बाड़िते गिया देखा करिबार समय नय। ताहार परे गिर्जार प्राय सकल घड़िइ गोरा शुनियाछे। कारण, बालिर बागाने से-रात्रे ताहार याओया घटिल ना। परदिन प्रत्युषे याइबे बलिया संवाद पाठाइयाछे।

प्रत्युषेइ बागाने गेल, किन्तु ये-प्रकार निर्मल ओ बलशाली मन लइया से प्रायश्चित्त ग्रहण करिबे स्थिर करियाछिल सेरकम मनेर अवस्था ताहार कोथाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्यापक-पण्डितेरा अनेके आसियाछेन। आरओ अनेकेर आसिबार कथा। गोरा सकलेर संवाद लइया सकलके शिष्टसम्भाषण करिया आसिल। ताँहारा गोरार सनातन धर्मेर प्रति अचल निष्ठार कथा बलिया बार बार साधुवाद करिलेन।

बागान क्रमेइ कोलाहले पूर्ण हइया उठिल। गोरा चारि दिक तत्त्वावधान करिया बेड़ाइते लागिल। किन्तु समस्त कोलाहल एवं काजेर व्यस्ततार मध्ये गोरार हृदयेर निगूढ़तले एकटा कथा केवलइ बाजितेछिल, के येन बलितेछे, 'अन्याय करेछ, अन्याय करेछ।' अन्यायटा कोन्खाने ताहा तखन स्पष्ट करिया चिन्ता करिया देखिबार समय छिल ना, किन्तु किछुतेइ से ताहार गभीर हृदयेर मुख बन्ध करिते पारिल ना। प्रायश्चित्त-अनुष्ठानेर विपुल आयोजनेर माझखाने ताहार हृदयवासी कोन् गृहशत्रु ताहार विरुद्धे आज साक्ष्य दितेछिल, बलितेछिल, 'अन्याय रहिया गेल।' ए अन्याय नियमेर त्रुटि नहे, मन्त्रेर भ्रम नहे, शास्त्रेर विरुद्धता नहे; ए अन्याय प्रकृतिर भितरे घटियाछे—एइ जन्य गोरार समस्त अन्तःकरण एइ अनुष्ठानेर उद्योग हइते मुख फिराइया छिल।

समय निकटवर्ती हइल, बाहिरे बाँशेर घेर दिया पाल टाङाइया सभास्थान प्रस्तुत हइयाछे। गोरा गङ्गाय स्नान करिया उठिया कापड़ छाड़ितेछे, एमन समय जनतार मध्ये एकटा चञ्चलता अनुभव करिल। एकटा येन उद्वेग क्रमश चारि दिके छड़ाइया पड़ियाछे। अवशेषे अविनाश मुख विमर्ष करिया कहिल, "आपनार बाड़ि थेके खबर एसेछे; कृष्णदयालबाबुर मुख दिये रक्त उठछे। तिनि सत्वर आपनाके आनबार जन्ये गाड़िते करे लोक पाठियेछेन।"

गोरा ताड़ाताड़ि चलिया गेल। अविनाश ताहार सङ्गे याइते उद्यत हइल। गोरा कहिल, "ना, तुमि सकलेर अभ्यर्थनाय थाको—तुमि गेले चलबे ना।"

गोरा कृष्णदयालेर घरे प्रवेश करिया देखिल, तिनि बिछानाय शुइया आछेन एवं आनन्दमयी ताँहार पायेर काछे बसिया धीरे धीरे ताँहार पाये हात बुलाइया दितेछेन। गोरा उद्विग्न हइया उभयेर मुखेर दिके चाहिल। कृष्णदयाल इङ्गित करिया पार्श्ववर्ती चौकिते ताहाके बसिते बलिलेन। गोरा बसिल।

गोरा माके जिज्ञासा करिल, "एखन केमन आछेन।"

आनन्दमयी कहिलेन, "एखन एकटु भालोइ आछेन। साहेब-डाक्तार डाकते गेछे।"

घरे शशिमुखी एवं एकजन चाकर छिल। कृष्णदयाल हात नाड़िया ताहादिगके विदाय करिया दिलेन।

यखन देखिलेन सकले चलिया गेल, तखन तिनि नीरवे आनन्दमयीर मुखेर दिके चाहिलेन एवं गोराके मृदुकण्ठे कहिलेन, "आमार समय हये एसेछे। एतदिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोमार काछे या गोपन छिल, आज तोमाके ता ना बले गेले आमार मुक्ति हबे ना।"

गोरार मुख विवर्ण हइया गेल। से स्थिर हइया बसिया रहिल। अनेकक्षण केह कोनो कथा कहिल ना।

कृष्णदयाल कहिलेन, "गोरा, तखन आमि किछु मानतुम ना, सेइजन्यइ एतबड़ो भुल करेछि। तार परे आर भ्रमसंशोधनेर पथ छिल ना।"

एइ बलिया आबार चुप करिलेन। गोराओ कोनो प्रश्न ना करिया निश्चल हइया बसिया रहिल।

कृष्णदयाल कहिलेन, "मने करेछिलुम, कोनोदिनइ तोमाके बलबार आवश्यक हबे ना, येमन चलेछे एमनिइ चले याबे। किन्तु एखन देखछि, से हबार जो नेइ। आमार मृत्युर परे तुमि आमार श्राद्ध करबे की करे।"

एरूप प्रमादेर सम्भावना मात्रे कृष्णदयाल येन शिहरिया उठिलेन। आसल कथाटि की ताहा जानिबार जन्य गोरा अधीर हइया उठिल। से आनन्दमयीर दिके चाहिया कहिल, "मा, तुमि बलो, कथाटा की। श्राद्ध करबार अधिकार आमार नेइ?"

आनन्दमयी एतक्षण मुख नत करिया स्तब्ध हइया बसिया छिलेन। गोरार प्रश्न शुनिया तिनि माथा तुलिलेन, एवं गोरार मुखेर उपर दृष्टि स्थिर राखिया कहिलेन, "ना, बाबा, नेइ।"

गोरा चकित हइया उठिया कहिल, "आमि ओंर पुत्र नइ?"

आनन्दमयी कहिलेन, "ना।"

अग्निगिरिर अग्नि-उच्छ्वासेर मतो तखन गोरार मुख दिया बाहिर हइल, "मा, तुमि आमार मा नओ?"

आनन्दमयीर बुक फाटिया गेल; तिनि अश्रुहीन रोदनेर कण्ठे कहिलेन, "बाबा, गोरा, तुइ ये आमार पुत्रहीनार पुत्र, तुइ ये गर्भेर छेलेर चेये अनेक बेशि, बाबा।"

गोरा तखन कृष्णदयालेर मुखेर दिके चाहिया कहिल, "आमाके तबे तोमरा कोथाय पेले?"

कृष्णदयाल कहिलेन, "तखन मिउटिनि। आमरा एटोयाते। तोमार मा सिपाहिदेर भये पालिये एसे रात्रे आमादेर बाड़िते आश्रय नियेछिलेन। तोमार बाप तार आगेर दिनेइ लड़ाइये मारा गियेछिलेन। ताँर नाम छिल——"

गोरा गर्जन करिया बलिया उठिल, "दरकार नेइ ताँर नाम। आमि नाम जानते चाइ ने।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृष्णदयाल गोरार एइ उत्तेजनाय विस्मित हइया थामिया गेलेन। तार पर बलिलेन, "तिनि आइरिश्म्यान छिलेन। सेइ रात्रेइ तोमार मा तोमाके प्रसव करे मारा गेलेन। तार पर थेकेइ तुमि आमादेर घरे मानुष हयेछ।"

एक मुहूर्तेइ गोरार काछे ताहार समस्त जीवन अत्यन्त अद्भुत एकटा स्वप्नेर मतो हइया गेल। शैशव हइते एत वत्सर ताहार जीवनेर ये भित्ति गड़िया उठियाछिल ताहा एकेबारेइ विलीन हइया गेल। से ये की, से ये कोथाय आछे, ताहा येन बुझितेइ पारिल ना। ताहार पश्चाते अतीतकाल बलिया येन कोनो पदार्थइ नाइ एवं ताहार सम्मुखे ताहार एतकालेर एमन एकाग्रलक्ष्यवर्ती सुनिर्दिष्ट भविष्यत् एकेबारे विलुप्त हइया गेछे। से येन केवल एक-मुहूर्त मात्रेर पद्मपत्रे शिशिरबिन्दुर मतो भासितेछे। ताहार मा नाइ, बाप नाइ, देश नाइ, जाति नाइ, नाम नाइ, गोत्र नाइ, देवता नाइ। ताहार समस्तइ एकटा केवल 'ना'। से की धरिबे, की करिबे, आबार कोथा हइते शुरु करिबे, आबार कोन् दिके लक्ष्य स्थिर करिबे, आबार दिने दिने क्रमे क्रमे कर्मेर उपकरणसकल कोथा हइते केमन करिया संग्रह करिया तुलिबे! एइ दिक्चिह्नहीन अद्भुत शून्येर मध्ये गोरा निर्वाक हइया बसिया रहिल। ताहार मुख देखिया केह ताहाके आर द्वितीय कथाटि बलिते साहस करिल ना।

एमन समय परिवारेर बाङालि चिकित्सकेर सङ्गे साहेब-डाक्तार आसिया उपस्थित हइल। डाक्तार येमन रोगीर दिके ताकाइल तेमनि गोरार दिकेओ ना ताकाइया थाकिते पारिल ना ; भाबिल, 'ए मानुषटा के!' तखनो गोरार कपाले गङ्गामृत्तिकार तिलक छिल एवं स्नानेर परे से ये गरद परियाछिल ताहा परियाइ आसियाछे। गाये जामा नाइ, उत्तरीयेर अवकाश दिया ताहार प्रकाण्ड देह देखा याइतेछे।

पूर्वे हइले इंरेज डाक्तार देखिवामात्र गोरार मने आपनिइ एकटा विद्वेष उत्पन्न हइत। आज यखन डाक्तार रोगीके परीक्षा करितेछिल तखन गोरा ताहार प्रति विशेष एकटा औत्सुक्येर सहित दृष्टिपात करिल। निजेर मनके बार बार करिया प्रश्न जिज्ञासा करिते लागिल, 'एइ लोकटाइ कि एखाने आमार सकलेर चेये आत्मीय।'

डाक्तार परीक्षा करिया ओ प्रश्न करिया कहिल, "कइ, विशेष तो कोनो मन्द लक्षण देखि ना। नाड़ीओ शङ्काजनक नहे, एवं शरीरयन्त्रेरओ कोनो विकृति घटे नाइ। ये उपसर्ग घटियाछे सावधान हइलेइ ताहार पुनरावृत्ति हइबे ना।"

डाक्तार विदाय लइया गेले किछु ना बलिया गोरा चौकि हइते उठिबार उपक्रम करिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दमयी डाक्तारेर आगमने पाशेर घरे चलिया गियाछिलेन। तिनि द्रुत आसिया गोरार हात चापिया धरिया कहिलेन, "बाबा, गोरा, आमार उपर तुइ राग करिस ने, ता हले आमि आर बाँचब ना।"

गोरा कहिल, "तुमि एतदिन आमाके बल नि केन। बलले तोमार कोनो क्षति हत ना।"

आनन्दमयी निजेर घाड़े समस्त दोष लइलेन, कहिलेन, "बाप, तोके पाछे हाराइ एइ भयेइ आमि एत पाप करेछि। शेषे यदि ताइ घटे, तुइ यदि आज आमाके छेड़े यास, ता हले काउके दोष दिते पारब ना गोरा, किन्तु से आमार मृत्युदण्ड हबे ये बाप!"

गोरा शुधु केवल कहिल, "मा!"

गोरार मुखे सेइ सम्बोधन शुनिया एतक्षण परे आनन्दमयीर रुद्ध अश्रु उच्छ्‌वसित हइया उठिल।

गोरा कहिल, "मा, एखन आमि एकबार परेशबाबुर बाड़ि याब।"

आनन्दमयीर बुकेर भार लाघव हइया गेल। तिनि कहिलेन, "याओ बाबा।"

ताँहार आशु मरिबार आशङ्का नाइ, अथच गोरार काछे कथाटा प्रकाश हइया पड़िल, इहाते कृष्णदयाल अत्यन्त त्रस्त हइया उठिलेन; कहिलेन, "देखो गोरा, कथाटा कारओ काछे प्रकाश करबार तो दरकार देखि ने। केवल, तुमि एकटु बुझेसुझे बाँचिये चललेइ येमन चलछिल तेमनि चले याबे, केउ टेरओ पाबे ना।"

गोरा ताहार कोनो उत्तर ना दिया बाहिर हइया गेल। कृष्णदयालेर सङ्गे ताहार कोनो सम्बन्ध नाइ, इहा स्मरण करिया से आराम पाइल।

महिमेर हठात् आपिस कामाइ करिबार कोनो उपाय छिल ना। तिनि डाक्तार प्रभृतिर समस्त बन्दोबस्त करिया दिया एकबार केवल साहेबके बलिया छुटि लइते गियाछिलेन। गोरा येइ बाड़ির बाहिर हइतेछे एमन समये महिम आसिया उपस्थित हइलेन; कहिलेन, "गोरा, याच्छ कोथाय।"

गोरा कहिल, "भालो खबर। डाक्तार एसेछिल। बलले, कोनो भय नेइ।"

महिम अत्यन्त आराम पाइया कहिलेन, "बाँचाले। परशु एकटा दिन आछे, शशिमुखीर बिये आमि सेइ दिनइ दिये देब। गोरा, तोमाके किन्तु एकटु उद्योगी हते हबे। आर देखो, विनयके किन्तु आगे थाकते सावधान करे दियो, से येन सेदिन ना एसे पड़े। अविनाश भारि हिंदु, से विशेष करे बले दियेछे! तार बियेते येन ओरकम लोक ना आसते पाय। आरएकटि कथा तोमाके बले राखि भाइ, सेदिन आमार आपिसेर बड़ो साहेबदेर निमन्त्रण करे आनब, तुमि येन तादेर तेड़े मारते येयो ना। आरकिछु नय, केवल एकटुखानि घाड़टा नेड़े 'गुड ईभिनिं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्यर' बलले तोमादेर हिंदुशास्त्र असिद्ध हये याबे ना—वरञ्च पण्डितदेर काछे विधान नियो। बुझेछ, भाइ? ओरा राजार जात, ओखाने तोमार अहंकार एकटु खाटो करले ताते अपमान हबे ना।"

महिमेर कथार कोनो उत्तर ना करिया गोरा चलिया गेल।

७६

सुचरिता यखन चोखेर जल लुकाइबार जन्य तोरङ्गेर 'परे झुँकिया पड़िया कापड़ साजाइते व्यस्त छिल एमन समय खबर आसिल, गौरमोहनबाबु आसियाछेन।

सुचरिता ताड़ाताड़ि चोख मुछिया ताहार काज फेलिया उठिया पड़िल। एवं तखनइ गोरा घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल।

गोरार कपाले तिलक तखनो रहिया गेछे, से सम्बन्धे ताहार खेयालइ छिल ना। गायेओ ताहार तेमनि पट्टवस्त्र परा। एमन वेशे सचराचर केह काहारओ बाड़िते देखा करते आसे ना। सेइ प्रथम गोरार सङ्गे येदिन देखा हइयाछिल सेइ दिनेर कथा सुचरितार मने पड़िया गेल। सुचरिता जानित, सेदिन गोरा विशेष करिया युद्धेर वेशे आसियाछिल—आजओ कि एइ युद्धेर साज!

गोरा आसियाइ एकेबारे माटिते माथा ठेकाइया परेशके प्रणाम करिल एवं ताँहार पायेर धुला लइल। परेश व्यस्त हइया ताहाके तुलिया धरिया कहिलेन, "एसो, एसो बाबा, बोसो।"

गोरा बलिया उठिल, "परेशबाबु, आमार कोनो बन्धन नेइ।"

परेशबाबु आश्चर्य हइया कहिलेन, "किसेर बन्धन!"

गोरा कहिल, "आमि हिन्दु नइ।"

परेशबाबु कहिलेन, "हिन्दु नओ!"

गोरा कहिल, "ना, आमि हिन्दु नइ। आज खबर पेयेछि, आमि मिउटिनिर समयकार कुड़ोनो छेले, आमार बाप आइरिश्‌म्यान। भारतवर्षेर उत्तर थेके दक्षिण पर्यन्त समस्त देवमन्दिरेर द्वार आज आमार काछे रुद्ध हये गेछे—आज समस्त देशेर मध्ये कोनो पङ्क्तिते कोनो जायगाय आमार आहारेर आसन नेइ।"

परेश ओ सुचरिता स्तम्भित हइया बसिया रहिलेन। परेश ताहाके की बलिबेन भाबिया पाइलेन ना।

गोरा कहिल, "आमि आज मुक्त, परेशबाबु। आमि ये पतित हब, व्रात्य हब, से-भय आर आमार नेइ। आमाके आर पदे पदे माटिर दिके चेये शुचिता बाँचिये चलते हबे ना।"

सुचरिता गोरार प्रदीप्त मुखेर दिके एकदृष्टिते चाहिया रहिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोरा कहिल, "परेशबाबु, एतदिन आमि भारतवर्षके पावार जन्ये समस्त प्राण दिये साधना करेछि ; एकटा ना एकटा जायगाय बेधेछे, सेइ-सब बाधार सङ्गे आमार श्रद्धार मिल करबार जन्य आमि समस्त जीवन दिनरात केवलइ चेष्टा करे एसेछि—एइ श्रद्धार भित्तिकेइ खुब पाका करे तोलबार चेष्टाय आमि आर-कोनो काजइ करते पारि नि, सेइ आमार एकटिमात्र साधना छिल। सेइ जन्येइ वास्तव भारतवर्षेर प्रति सत्यदृष्टि मेले तार सेवा करते गिये आमि बार बार भये फिरे एसेछि। आमि एकटि निष्कण्टक निर्विकार भावेर भारतवर्ष गड़े तुले सेइ अभेद्य दुर्गेर मध्ये आमार भक्तिके सम्पूर्ण निरापदे रक्षा करबार जन्ये एतदिन आमार चारि दिकेर सङ्गे की लड़ाइ ना करेछि ! आज एक मुहूर्तेइ आमार सेइ भावेर दुर्ग स्वप्नेर मतो उड़े गेछे। आमि एकेबारे छाड़ा पेये हठात् एकटा बृहत् सत्येर मध्ये एसे पड़ेछि। समस्त भारतवर्षेर भालोमन्द सुखदु:ख ज्ञान-अज्ञान एकेबारेइ आमार बुकेर काछे एसे पौँचेछे। आज आमि सत्यकार सेवार अधिकारी हयेछि, सत्यकार कर्मक्षेत्र आमार सामने एसे पड़ेछे—से आमार मनेर भितरकार क्षेत्र नय—से एइ बाइरेर पञ्चविंशति कोटि लोकेर यथार्थ कल्याणक्षेत्र।"

गोरार एइ नवलब्ध अनुभूतिर प्रवल उत्साहेर वेग परेशकेओ येन आन्दोलित करिते लागिल ; तिनि आर बसिया थाकिते पारिलेन ना, चौकि छाड़िया उठिया दाँड़ाइलेन।

गोरा कहिल, "आमार कथा कि आपनि ठिक बुझते पारछेन। आमि या दिनरात्रि हते चाच्छिलुम अथच हते पारछिलुम ना, आज आमि ताइ हयेछि। आमि आज भारतवर्षीय। आमार मध्ये हिन्दु मुसलमान खृस्टान कोनो समाजेर कोनो विरोध नेइ। आज एइ भारतवर्षेर सकलेर जातइ आमार जात, सकलेर अन्नइ आमार अन्न। देखुन, आमि बांलार अनेक जेलाय भ्रमण करेछि, खुब नीच पल्लीतेओ आतिथ्य नियेछि—आमि केवल शहरेर सभाय वक्तृता करेछि, ता मने करबेन ना—किन्तु कोनोमतेइ सकल लोकेर पाशे गिये बसते पारि नि ; एतदिन आमि आमार सङ्गे सङ्गेइ एकटा अदृश्य व्यवधान निये घुरेछि, किछुतेइ सेटाके पेरोते पारि नि। से जन्ये आमार मनेर भितरे खुब एकटा शून्यता छिल। एइ शून्यताके नाना उपाये केवलइ अस्वीकार करते चेष्टा करेछि ; एइ शून्यतार उपरे नानाप्रकार कारुकार्य दिये ताकेइ आरओ विशेषरूप सुन्दर करे तुलते चेष्टा करेछि। केनना भारतवर्षके आमि ये प्राणेर चेये भालोबासि—आमि ताके ये-अंशटिते देखते पेतुम से-अंशेर कोथाओ ये आमि किछुमात्र अभियोगेर अवकाश एकेबारे सह्य करते पारतुम ना। आज सेइ समस्त कारुकार्य बानाबार वृथा चेष्टा थेके निष्कृति पेये आमि बेंचे गेछि परेशबाबु।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परेश कहिलेन, "सत्यके यखन पाइ तखन से तार समस्त अभाव-अपूर्णता नियेओ आमादेर आत्माके तृप्त करे ; ताके मिथ्या उपकरण दिये साजिये तोलबार इच्छामात्रइ हय ना।"

गोरा कहिल, "देखुन परेशबाबु, काल रात्रे आमि विधातार काछे प्रार्थना करेछिलुम ये, आज प्रातःकाले आमि येन नूतन जीवन लाभ करि ; एतदिन शिशुकाल थेके आमाके ये-किछु मिथ्या ये-किछु अशुचिता आवृत करे छिल आज येन ता निःशेषे क्षय हये गिये आमि नवजन्म लाभ करि। आमि ठिक ये-कल्पनार सामग्रीटि प्रार्थना करेछिलुम ईश्वर से-प्रार्थनाय कर्णपात करेन नि—तिनि ताँर निजेर सत्य हठात् एकेबारे आमार हाते एने दिये आमाके चम्किये दियेछेन। तिनि ये एमन करे आमार अशुचिताके एकेबारे समूले घुचिये देबेन ता आमि स्वप्नेओ जानतुम ना। आज आमि एमन शुचि हये उठेछि ये चण्डालेर घरेओ आमार आर अपवित्रतार भय रइल ना। परेशबाबु, आज प्रातःकाले सम्पूर्ण अनावृत चित्तखानि निये एकेबारे आमि भारतवर्षेर कोलेर उपरे भूमिष्ठ हयेछि—मातृक्रोड़ ये काके बले, एतदिन परे ता आमि परिपूर्णभावे उपलब्धि करते पेरेछि।"

परेश कहिलेन, "गौर, तोमार मातृक्रोड़े तुमि ये-अधिकार पेयेछ सेइ अधिकारेर मध्ये तुमि आमादेरओ आह्वान करे निये याओ।"

गोरा कहिल, "आज मुक्तिलाभ करे प्रथमेइ आपनार काछे केन एसेछि जानेन?"

परेश कहिलेन, "केन।"

गौर कहिल, "आपनार काछेइ एइ मुक्तिर मन्त्र आछे। सेइ जन्येइ आपनि आज कोनो समाजेइ स्थान पान नि। आमाके आपनार शिष्य करुन। आपनि आमाके आज सेइ देवतारइ मन्त्र दिन यिनि हिन्दु मुसलमान खृस्टान ब्राह्म सकलेरइ, याँर मन्दिरेर द्वार कोनो जातिर काछे कोनो व्यक्तिर काछे कोनोदिन अवरुद्ध हय ना, यिनि केवलइ हिन्दुर देवता नन—यिनि भारतवर्षेर देवता।"

परेशबाबुर मुखेर उपर दिया एकटि भक्तिर गभीर माधुर्य स्निग्ध छाया बुलाइया गेल ; तिनि चक्षु नत करिया नीरवे दाँड़ाइया रहिलेन।

एतक्षण परे गोरा सुचरितार दिके फिरिल। सुचरिता ताहार चौकिर उपरे स्तब्ध हइया बसिया छिल।

गोरा हासिया कहिल, "सुचरिता, आमि आर तोमार गुरु नइ। आमि तोमार काछे एइ बले प्रार्थना जानाच्छि, आमार हात धरे तोमार ओइ गुरुर काछे आमाके निये याओ।"

एइ बलिया गोरा ताहार दिके दक्षिण हस्त प्रसारित करिया अग्रसर हइया गेल। सुचरिता चौकि हइते उठिया गिया निजेर हस्त ताहार हाते स्थापन करिल। तखन गोरा सुचरिताके लइया परेशके प्रणाम करिल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

गोरा सन्ध्यार पर बाड़ि फिरिया आसिया देखिल, आनन्दमयी ताँहार घरेर सम्मुखे बारान्दाय नीरवे बसिया आछेन। गोरा आसियाइ ताँहार दुइ पा टानिया लइया पायेर उपर माथा राखिल। आनन्दमयी दुइ हात दिया ताहार माथा तुलिया लइया चुम्बन करिलेन।

गोरा कहिल, "मा, तुमिइ आमार मा। ये माके खुँजे बेड़ाच्छिलुम तिनिइ आमार घरेर मध्ये एसे बसे छिलेन। तोमार जात नेइ, बिचार नेइ, घृणा नेइ—शुधु तुमि कल्याणेर प्रतिमा। तुमि आमार भारतवर्ष! ......मा, एइबार तोमार लछमियाके डाको। ताके बलो आमाके जल एने दिते।"

तखन आनन्दमयी अश्रुव्याकुलकण्ठे मृदुस्वरे गोरार कानेर काछे कहिलेन, "गोरा, एइबार एकबार विनयके डेके पाठाइ।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ का उपन्यास 'गोरा' नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। मूल बँगला ग्रंथ को ज्यों का त्यों हिन्दी में लिख दिया गया है। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिये उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिये बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है :

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेज़ी के 'not' में 'o'। बँगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो'-जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व-जैसा होता है, जैसे, 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच-जैसा होता है, जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है, जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला—बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है, जैसे, 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा, जैसे, क्षिति—खिति ; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा, जैसे, लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'व' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा जाय, लेकिन उसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है, लेकिन पढ़ा 'बिबश' जाएगा।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिये बँगला में 'ओय' लिखते हैं, जैसे, 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है, जैसे, यात्रा––जात्रा; योग––जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम––नियम; नयन––नयन; समय––समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है, जैसे, स्तब्ध––स्तब्ध; स्निग्ध––स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व होकर मकार का लोप कर देता है, जैसे, छद्म––छद्दँ; पद्म––पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता, जैसे, स्मरण––सँरण; स्मृति––सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व होकर यकार-वकार का लोप कर देगा, जैसे, भृत्य––भृत्त; नित्य––नित्त; वाद्य––बाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है, जैसे, द्वार––दार; ज्वाला––जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है, जैसे, सूर्य्य––सूर्ज्ज; धैर्य्य––धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत संग्रह में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए, जैसे, पाओया––पावा; खाओया––खावा; याओया––जावा।

बँगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-संबंधी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बँगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(क) क्रियारूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु-निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के वर्त्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है, जैसे, आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं : (१) साधु और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा', 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं : समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ्' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिये बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं, जैसे, कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती, जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं) ; छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं : भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं : प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं, जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं, जैसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है, जैसे, आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध, अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गए हैं। सहज तरीक़े से समझने के लिये उनका नामकरण निम्नलिखित ढंग से किया जाता है :

नाम	उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	—
		(साधु)			
काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इते-छिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इया-छिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है :

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप इस प्रकार होगा :

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित-जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, काटछिले, काटछिलि तथा काटछिलाम।

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप इस प्रकार होगा :

चलित रूप—काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है, जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया) तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं: कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आनेवाली कई विभक्तियाँ मुख्यत: कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं, जैसे, के, र, ते क्रमश: कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं:

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत-से स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है, जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी मिलता है, जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्ध कारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है, जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्रायः अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला', 'गुलो' अनादरसूचक हैं और'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक, जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (काग़ज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणतः व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिये होता है, जैसे, देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'य', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है : अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है, जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती, जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है, जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं, जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से वहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एरा का प्रयोग होता है, जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है, जिस पर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती, जैसे, डाक्तार डाक (डॉक्टर को बुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है; कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता, जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है, जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है, जैसे, देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते, जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग में कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है, जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग में भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है, जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्तिवाचक शब्दों के बहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता, जैसे, भृत्येर द्वारा, अश्वेर द्वारा, किन्तु साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये' का व्यवहार होता है, जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है, जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी बैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारक :

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है, जैसे, दरिद्रके धन दाओ [दरिद्र को (के लिये) धन दो]।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है, जैसे, सत्पात्रे, देवसेवाय आदि ।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते (ह'ते), थेके, अपेक्षा आदि हैं, जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनों से) ।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है, जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुँह से ऐसी बात नहीं निकलेगी) ।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है, जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुनी है) ।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के बाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं, जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध) ।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है, जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है) ।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्याँ हैं । साधारणतः शब्दों के अन्त में 'र' का योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है । 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों, जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का) ; 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का) ।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो, जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का); लेकिन शिव का शिवेर होगा, क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है ।

विशेषण-पदों में केवल 'र' का योग करते हैं, जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिये) ।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं, जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का) ।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं, जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का) । व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है, जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का), जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि ।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (सबेरे हमलोग टहला करते हैं)—यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार-अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थ :

ऐकदेशिक—ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते, जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है, जैसे, दिने घुमाइओ ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती, जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो), कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में), जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम—आमि (मैं), तुमि (तुम), से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम—ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कि (क्या,) के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम—ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम—केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम—निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम—उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं : उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य पुरुष कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्ताकारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं :

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक––तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक––से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक––ए, ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक––ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुंलिग-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है, जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति-सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष :

आमि (मैं)

(पुंलिग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक, आमादेर दिया, द्वारा
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

	एकवचन	बहुवचन
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर, मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर सकले, मोदिगे

तुमि (तुम)

मध्यम पुरुष :

(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे, तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में—तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना [श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी]।

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा संबंध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है।

आपनि (आप)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके,-देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर, -देर
आपनाते	—	आपनाते	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम पुरुष :

तिनि (वे)

	चलित रूप		साधु रूप	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	—	ताँहाते	—

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर,ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ये, याहा (जो) का रूप से, ताहा जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर,काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर,इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्रायः अप्रचलित हो गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रवीन्द्र-शताब्दी-समारोह के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की समस्त कृतियों में से विशिष्ट रचनाओं का संकलन देवनागरी लिपि में निम्न प्रकार से प्रकाशित करने का आयोजन किया है :

१. एकोत्तरशती (१०१ कविताएँ); २. गीत-पञ्चशती (५०० गीत); ३. एकविंशति (२१ कहानियाँ); ४. नाट्य-सप्तक (सात नाटक : विसर्जन, चित्रांगदा, चिरकुमार सभा, डाकघर, राजा, मुक्तधारा तथा रक्तकरबी); ५. तीन उपन्यास (गोरा, चोखेर बालि तथा योगायोग); ६. निबन्धमाला भाग १ : (दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सामयिक विषयों पर निबन्ध); ७. निबन्ध-माला भाग २ : (साहित्यिक विषयों पर निबन्ध, संस्मरण, यात्रा-वर्णन एवं पत्र आदि); ८. बाल-साहित्य (बालो-पयोगी चुनी हुई रचनाओं का संकलन)।

यह संकलन कई खण्डों में प्रकाशित होगा। प्रथम खण्ड 'एकोत्तरशती' और द्वितीय खण्ड 'गीत-पञ्चशती' प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त 'चोखेर बालि' भी प्रकाशित हो चुका है। इस पुस्तक में रवीन्द्रनाथ के उपन्यास 'गोरा' का देवनागरी लिप्यन्तर प्रस्तुत है।

'गोरा' रवीन्द्रनाथ ठाकुर का तो सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है ही वह कदाचित् भारतवर्ष का भी सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें भारतीय पुनर्जागरण की और भारत द्वारा अपनी गौरवमयी पुनरुपलब्धि की महान् कथा वर्णित है। 'गोरा' में हमारे राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जागरण के मूल स्रोतों का सूक्ष्म विश्लेषण है। इसमें एक आकर्षक प्रेम-कथा के माध्यम से नवजाग्रत भारत का चित्र उपस्थित किया गया है। इसीलिए उपन्यास की रोचकता अन्त तक बनी रहती है। प्राचीन एवं नवीन के संघर्ष को केन्द्र बना कर लेखक ने जिस कौतूहल और नाटकीयता की सृष्टि की है उसे उपन्यास में वर्णित अनेक चरित्रों का यथार्थ चित्रण बल प्रदान करता है। उपन्यास की रोचकता, स्फूर्ति और प्रेरणा के कारण 'गोरा' को समीक्षकों ने आधुनिक भारतीय साहित्य के गौरव-ग्रन्थों में स्थान दिया है।

इस पुस्तक का लिप्यन्तर श्रीमती डा० कणिका विश्वास ने किया है। पुस्तक के अन्त में पाठकों के लाभार्थ परिशिष्ट रूप से बँगला भाषा के व्याकरण और उच्चारण-वैशिष्टय पर एक टिप्पणी भी दी गई है जिसका सम्पादन डा० सुनीति-कुमार चट्टोपाध्याय तथा डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नें मिल-कर किया है।

इस शृंखला के अन्य खण्ड तैयार किये जा रहे हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। इस ग्रन्थमाला में संकलित सभी रचनाओं का प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh